

ترتیب شدہ جدید ایڈیشن

أَنَا خَاتَمُ النَّبِيِّينَ لَا نَبِيَّ بَعْدِي

میں خاتم النبیین ہوں، میرے بعد کوئی نبی نہیں



جلد پنجم

# تحفہ قادیانیت

حضرت مولانا محمد یوسف لدھیانوی شہید

عالمی مجلس تحفظ ختم نبوت کراچی

021-32780337, 021-32780340

اَنَا خَاتَمُ النَّبِيِّينَ لَا نَبِيَّ بَعْدِي

میں "خاتم النبیین" ہوں، میرے بعد کوئی نبی نہیں

# تحفہ قادیانیت

جلد پنجم

حضرت مولانا محمد یوسف لدھیانوی شہید

عالمی مجلس تحفظ ختم نبوت

جُمْلَةُ حُقُوقِ بَقِ نَاشِرِ مَحْفُوظِ هِي

نام کتاب : تحفة قاديانیت

مؤلف : حضرت مولانا محمد یونس لدھیانوی شہید

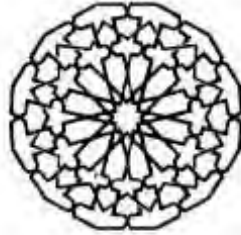
جدید اشاعت دسمبر 2010 :

ناشر

عالمی مجلس تحفظ ختم نبوت

دفتر ختم نبوت پرانی مناشس ایم اے جناح روڈ کراچی

02132780337-02132780340



اسٹاکسٹ

مکنتہ لدھیانوی

سلام کتب مارکیٹ بنوری ٹاؤن کراچی

Tel: 021-34130020 Cell: 0321-2115595, 0321-2115502

## فہرست

۵	مباہلے
۶	مباہلے کی حقیقت!
۱۰	ضمیمہ: دو دلچسپ مباہلے
۲۶	قادیانی جماعت کے امام مرزا طاہر احمد کے چیلنج کا جواب
۵۶	مرزا طاہر کے جواب میں
۷۴	مرزا طاہر پر آخری اتمام حجت
۱۱۷	قادیانی فیصلہ
۱۷۰	قادیانی اور فرضی مظالم کا پروپیگنڈا
۱۷۹	قادیانی شبہات اور جوابات
۱۸۰	قادیانی شبہات
۲۰۰	قادیانی شبہات کے جوابات
۲۳۲	قادیانی اعتراضات کے جوابات
۲۶۶	فریب خوردہ قادیانیوں کی خدمت میں
۲۷۰	ختم نبوت اور اجرائے نبوت سے متعلق شبہات کا جواب
۲۹۷	قادیانی دہشت گرد
۲۹۸	ربوہ سے تل ابیب تک (حصہ اول)
۳۲۳	ربوہ سے تل ابیب تک... جواب الجواب (حصہ دوم)
۳۷۹	قادیانی اور اسرائیل





# مباہلے

---

## مباہلے کی حقیقت!

سوال: ...مباہلے کی حقیقت کیا ہے؟ اس بارے میں کلام مجید کی کون کون سی آیات کا نزول ہوا ہے؟  
(اعجاز احمد خان)

جواب: ...مباہلے کا ذکر سورہ آل عمران (آیت: ۶۱) میں آیا ہے، جس میں نجران کے نصاریٰ کے بارے میں فرمایا گیا ہے:

”فَمَنْ حَاجَّكَ فِيهِ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَكَ مِنَ  
الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُوا أَبْنَاءَنَا وَأَبْنَاءَكُمْ وَنِسَاءَنَا  
وَنِسَاءَكُمْ وَأَنْفُسَنَا وَأَنْفُسَكُمْ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَعْنَتَ اللَّهِ  
عَلَى الْكَذِبِينَ۔“

ترجمہ: ...”پھر جو کوئی جھگڑا کرے تجھ سے اس قصے میں،  
بعد اس کے کہ آپ چکی تیرے پاس خبر پچی تو تو کہہ دے: آؤ! بلاویں ہم  
اپنے بیٹے، اور تمہارے بیٹے، اور اپنی عورتیں، اور تمہاری عورتیں، اور  
اپنی جان، اور تمہاری جان، پھر التجا کریں ہم سب، اور لعنت کریں  
اللہ کی ان پر، جو جھوٹے ہیں۔“  
(ترجمہ: شیخ الہند)

اس آیت کریمہ سے مباہلے کی حقیقت واضح ہو جاتی ہے کہ جب کوئی فریق حق  
واضح ہو جانے کے باوجود اس کو جھٹلاتا ہے تو اس کو دعوت دی جائے کہ آؤ! ہم دونوں فریق  
اپنی عورتوں اور بچوں سمیت ایک میدان میں جمع ہوں اور گڑ گڑا کر اللہ تعالیٰ سے دُعا کریں  
کہ اللہ تعالیٰ جھوٹوں پر اپنی لعنت بھیجے۔ رہا یہ کہ اس مباہلے کا نتیجہ کیا ہوگا؟ وہ مندرجہ ذیل  
احادیث سے معلوم ہوتا ہے:

\*...: مستدرک حاکم (ج: ۲ ص: ۵۹۴) میں ہے کہ نصاریٰ کے سید نے کہا کہ: ان صاحب سے... یعنی آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم... سے مباہلہ نہ کرو، اللہ کی قسم! اگر تم نے مباہلہ کیا تو دونوں میں سے ایک فریق زمین میں دھنسا دیا جائے گا۔

\*...: صحیح بخاری، مسلم، ترمذی اور نسائی میں ہے کہ جب آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے نصاریٰ نجران سے مباہلے کا ارادہ فرمایا تو عاقب اور سید میں سے ایک نے دوسرے سے کہا کہ: ”ان صاحب سے مباہلہ نہ کیا جائے، کیونکہ اگر یہ نبی ہیں تو نہ ہم فلاح پائیں گے، اور نہ ہمارے بعد ہماری اولاد۔“ (درمنثور ج: ۲ ص: ۳۸)

\*...: حافظ ابو نعیم کی ”دلائل النبوة“ میں ہے کہ سید نے عاقب سے کہا ”اللہ کی قسم! تم جانتے ہو کہ یہ صاحب نبی برحق ہیں، اور اگر تم نے اس سے مباہلہ کیا تو تمہاری جڑ کٹ جائے گی۔ کبھی کسی قوم نے کسی نبی سے مباہلہ نہیں کیا کہ پھر ان کا کوئی بڑا باقی رہا ہو، یا ان کے بچے بڑے ہوئے ہوں۔“ (ایضاً ص: ۲۹)

\*...: ابن جریر، عبد بن حمید اور ابو نعیم نے ”دلائل النبوة“ میں حضرت قتادہ کی روایت سے آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کا یہ ارشاد نقل کیا ہے کہ: ”اہل نجران پر عذاب نازل ہوا چاہتا تھا، اور اگر وہ مباہلہ کرتے تو زمین سے ان کا صفایا کر دیا جاتا۔“

\*...: ابن ابی شیبہ، سعید بن منصور، عبد بن حمید، ابن جریر اور حافظ ابو نعیم نے ”دلائل النبوة“ میں امام شعبی کی سند سے آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کا یہ ارشاد نقل کیا ہے کہ: ”میرے پاس فرشتہ اہل نجران کی ہلاکت کی خوشخبری لے کر آیا تھا، اگر وہ مباہلہ کر لیتے تو ان کے درختوں پر پرندے تک باقی نہ رہتے۔“

\*...: صحیح بخاری، ترمذی، نسائی اور مصنف عبد الرزاق وغیرہ میں حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہ کا ارشاد نقل کیا ہے کہ: ”اگر اہل نجران آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم سے مباہلہ کر لیتے تو اس حالت میں واپس جاتے کہ اپنے اہل و عیال اور مال میں سے کسی کو نہ پاتے۔“ (یہ تمام روایات درمنثور ج: ۲ ص: ۳۹ میں ہیں)۔

ان احادیث سے واضح ہوتا ہے کہ سچے نبی کے ساتھ مباہلہ کرنے والے عذاب



الہی میں اس طرح مبتلا ہو جاتے ہیں کہ ان کے گھر بار کا بھی صفایا ہو جاتا ہے اور ان کا ایک فرد بھی زندہ نہیں رہتا۔

یہ تو تھا سچے نبی کے ساتھ مباہلہ کرنے کا نتیجہ! اب اس کے مقابلے میں جھوٹے نبی کے ساتھ مباہلے کا نتیجہ بھی سن لیجئے...! ۱۰! ۱۱! ۱۲! ۱۳! ۱۴! ۱۵! ۱۶! ۱۷! ۱۸! ۱۹! ۲۰! ۲۱! ۲۲! ۲۳! ۲۴! ۲۵! ۲۶! ۲۷! ۲۸! ۲۹! ۳۰! ۳۱! ۳۲! ۳۳! ۳۴! ۳۵! ۳۶! ۳۷! ۳۸! ۳۹! ۴۰! ۴۱! ۴۲! ۴۳! ۴۴! ۴۵! ۴۶! ۴۷! ۴۸! ۴۹! ۵۰! ۵۱! ۵۲! ۵۳! ۵۴! ۵۵! ۵۶! ۵۷! ۵۸! ۵۹! ۶۰! ۶۱! ۶۲! ۶۳! ۶۴! ۶۵! ۶۶! ۶۷! ۶۸! ۶۹! ۷۰! ۷۱! ۷۲! ۷۳! ۷۴! ۷۵! ۷۶! ۷۷! ۷۸! ۷۹! ۸۰! ۸۱! ۸۲! ۸۳! ۸۴! ۸۵! ۸۶! ۸۷! ۸۸! ۸۹! ۹۰! ۹۱! ۹۲! ۹۳! ۹۴! ۹۵! ۹۶! ۹۷! ۹۸! ۹۹! ۱۰۰! ۱۰۱! ۱۰۲! ۱۰۳! ۱۰۴! ۱۰۵! ۱۰۶! ۱۰۷! ۱۰۸! ۱۰۹! ۱۱۰! ۱۱۱! ۱۱۲! ۱۱۳! ۱۱۴! ۱۱۵! ۱۱۶! ۱۱۷! ۱۱۸! ۱۱۹! ۱۲۰! ۱۲۱! ۱۲۲! ۱۲۳! ۱۲۴! ۱۲۵! ۱۲۶! ۱۲۷! ۱۲۸! ۱۲۹! ۱۳۰! ۱۳۱! ۱۳۲! ۱۳۳! ۱۳۴! ۱۳۵! ۱۳۶! ۱۳۷! ۱۳۸! ۱۳۹! ۱۴۰! ۱۴۱! ۱۴۲! ۱۴۳! ۱۴۴! ۱۴۵! ۱۴۶! ۱۴۷! ۱۴۸! ۱۴۹! ۱۵۰! ۱۵۱! ۱۵۲! ۱۵۳! ۱۵۴! ۱۵۵! ۱۵۶! ۱۵۷! ۱۵۸! ۱۵۹! ۱۶۰! ۱۶۱! ۱۶۲! ۱۶۳! ۱۶۴! ۱۶۵! ۱۶۶! ۱۶۷! ۱۶۸! ۱۶۹! ۱۷۰! ۱۷۱! ۱۷۲! ۱۷۳! ۱۷۴! ۱۷۵! ۱۷۶! ۱۷۷! ۱۷۸! ۱۷۹! ۱۸۰! ۱۸۱! ۱۸۲! ۱۸۳! ۱۸۴! ۱۸۵! ۱۸۶! ۱۸۷! ۱۸۸! ۱۸۹! ۱۹۰! ۱۹۱! ۱۹۲! ۱۹۳! ۱۹۴! ۱۹۵! ۱۹۶! ۱۹۷! ۱۹۸! ۱۹۹! ۲۰۰! ۲۰۱! ۲۰۲! ۲۰۳! ۲۰۴! ۲۰۵! ۲۰۶! ۲۰۷! ۲۰۸! ۲۰۹! ۲۱۰! ۲۱۱! ۲۱۲! ۲۱۳! ۲۱۴! ۲۱۵! ۲۱۶! ۲۱۷! ۲۱۸! ۲۱۹! ۲۲۰! ۲۲۱! ۲۲۲! ۲۲۳! ۲۲۴! ۲۲۵! ۲۲۶! ۲۲۷! ۲۲۸! ۲۲۹! ۲۳۰! ۲۳۱! ۲۳۲! ۲۳۳! ۲۳۴! ۲۳۵! ۲۳۶! ۲۳۷! ۲۳۸! ۲۳۹! ۲۴۰! ۲۴۱! ۲۴۲! ۲۴۳! ۲۴۴! ۲۴۵! ۲۴۶! ۲۴۷! ۲۴۸! ۲۴۹! ۲۵۰! ۲۵۱! ۲۵۲! ۲۵۳! ۲۵۴! ۲۵۵! ۲۵۶! ۲۵۷! ۲۵۸! ۲۵۹! ۲۶۰! ۲۶۱! ۲۶۲! ۲۶۳! ۲۶۴! ۲۶۵! ۲۶۶! ۲۶۷! ۲۶۸! ۲۶۹! ۲۷۰! ۲۷۱! ۲۷۲! ۲۷۳! ۲۷۴! ۲۷۵! ۲۷۶! ۲۷۷! ۲۷۸! ۲۷۹! ۲۸۰! ۲۸۱! ۲۸۲! ۲۸۳! ۲۸۴! ۲۸۵! ۲۸۶! ۲۸۷! ۲۸۸! ۲۸۹! ۲۹۰! ۲۹۱! ۲۹۲! ۲۹۳! ۲۹۴! ۲۹۵! ۲۹۶! ۲۹۷! ۲۹۸! ۲۹۹! ۳۰۰! ۳۰۱! ۳۰۲! ۳۰۳! ۳۰۴! ۳۰۵! ۳۰۶! ۳۰۷! ۳۰۸! ۳۰۹! ۳۱۰! ۳۱۱! ۳۱۲! ۳۱۳! ۳۱۴! ۳۱۵! ۳۱۶! ۳۱۷! ۳۱۸! ۳۱۹! ۳۲۰! ۳۲۱! ۳۲۲! ۳۲۳! ۳۲۴! ۳۲۵! ۳۲۶! ۳۲۷! ۳۲۸! ۳۲۹! ۳۳۰! ۳۳۱! ۳۳۲! ۳۳۳! ۳۳۴! ۳۳۵! ۳۳۶! ۳۳۷! ۳۳۸! ۳۳۹! ۳۴۰! ۳۴۱! ۳۴۲! ۳۴۳! ۳۴۴! ۳۴۵! ۳۴۶! ۳۴۷! ۳۴۸! ۳۴۹! ۳۵۰! ۳۵۱! ۳۵۲! ۳۵۳! ۳۵۴! ۳۵۵! ۳۵۶! ۳۵۷! ۳۵۸! ۳۵۹! ۳۶۰! ۳۶۱! ۳۶۲! ۳۶۳! ۳۶۴! ۳۶۵! ۳۶۶! ۳۶۷! ۳۶۸! ۳۶۹! ۳۷۰! ۳۷۱! ۳۷۲! ۳۷۳! ۳۷۴! ۳۷۵! ۳۷۶! ۳۷۷! ۳۷۸! ۳۷۹! ۳۸۰! ۳۸۱! ۳۸۲! ۳۸۳! ۳۸۴! ۳۸۵! ۳۸۶! ۳۸۷! ۳۸۸! ۳۸۹! ۳۹۰! ۳۹۱! ۳۹۲! ۳۹۳! ۳۹۴! ۳۹۵! ۳۹۶! ۳۹۷! ۳۹۸! ۳۹۹! ۴۰۰! ۴۰۱! ۴۰۲! ۴۰۳! ۴۰۴! ۴۰۵! ۴۰۶! ۴۰۷! ۴۰۸! ۴۰۹! ۴۱۰! ۴۱۱! ۴۱۲! ۴۱۳! ۴۱۴! ۴۱۵! ۴۱۶! ۴۱۷! ۴۱۸! ۴۱۹! ۴۲۰! ۴۲۱! ۴۲۲! ۴۲۳! ۴۲۴! ۴۲۵! ۴۲۶! ۴۲۷! ۴۲۸! ۴۲۹! ۴۳۰! ۴۳۱! ۴۳۲! ۴۳۳! ۴۳۴! ۴۳۵! ۴۳۶! ۴۳۷! ۴۳۸! ۴۳۹! ۴۴۰! ۴۴۱! ۴۴۲! ۴۴۳! ۴۴۴! ۴۴۵! ۴۴۶! ۴۴۷! ۴۴۸! ۴۴۹! ۴۵۰! ۴۵۱! ۴۵۲! ۴۵۳! ۴۵۴! ۴۵۵! ۴۵۶! ۴۵۷! ۴۵۸! ۴۵۹! ۴۶۰! ۴۶۱! ۴۶۲! ۴۶۳! ۴۶۴! ۴۶۵! ۴۶۶! ۴۶۷! ۴۶۸! ۴۶۹! ۴۷۰! ۴۷۱! ۴۷۲! ۴۷۳! ۴۷۴! ۴۷۵! ۴۷۶! ۴۷۷! ۴۷۸! ۴۷۹! ۴۸۰! ۴۸۱! ۴۸۲! ۴۸۳! ۴۸۴! ۴۸۵! ۴۸۶! ۴۸۷! ۴۸۸! ۴۸۹! ۴۹۰! ۴۹۱! ۴۹۲! ۴۹۳! ۴۹۴! ۴۹۵! ۴۹۶! ۴۹۷! ۴۹۸! ۴۹۹! ۵۰۰! ۵۰۱! ۵۰۲! ۵۰۳! ۵۰۴! ۵۰۵! ۵۰۶! ۵۰۷! ۵۰۸! ۵۰۹! ۵۱۰! ۵۱۱! ۵۱۲! ۵۱۳! ۵۱۴! ۵۱۵! ۵۱۶! ۵۱۷! ۵۱۸! ۵۱۹! ۵۲۰! ۵۲۱! ۵۲۲! ۵۲۳! ۵۲۴! ۵۲۵! ۵۲۶! ۵۲۷! ۵۲۸! ۵۲۹! ۵۳۰! ۵۳۱! ۵۳۲! ۵۳۳! ۵۳۴! ۵۳۵! ۵۳۶! ۵۳۷! ۵۳۸! ۵۳۹! ۵۴۰! ۵۴۱! ۵۴۲! ۵۴۳! ۵۴۴! ۵۴۵! ۵۴۶! ۵۴۷! ۵۴۸! ۵۴۹! ۵۵۰! ۵۵۱! ۵۵۲! ۵۵۳! ۵۵۴! ۵۵۵! ۵۵۶! ۵۵۷! ۵۵۸! ۵۵۹! ۵۶۰! ۵۶۱! ۵۶۲! ۵۶۳! ۵۶۴! ۵۶۵! ۵۶۶! ۵۶۷! ۵۶۸! ۵۶۹! ۵۷۰! ۵۷۱! ۵۷۲! ۵۷۳! ۵۷۴! ۵۷۵! ۵۷۶! ۵۷۷! ۵۷۸! ۵۷۹! ۵۸۰! ۵۸۱! ۵۸۲! ۵۸۳! ۵۸۴! ۵۸۵! ۵۸۶! ۵۸۷! ۵۸۸! ۵۸۹! ۵۹۰! ۵۹۱! ۵۹۲! ۵۹۳! ۵۹۴! ۵۹۵! ۵۹۶! ۵۹۷! ۵۹۸! ۵۹۹! ۶۰۰! ۶۰۱! ۶۰۲! ۶۰۳! ۶۰۴! ۶۰۵! ۶۰۶! ۶۰۷! ۶۰۸! ۶۰۹! ۶۱۰! ۶۱۱! ۶۱۲! ۶۱۳! ۶۱۴! ۶۱۵! ۶۱۶! ۶۱۷! ۶۱۸! ۶۱۹! ۶۲۰! ۶۲۱! ۶۲۲! ۶۲۳! ۶۲۴! ۶۲۵! ۶۲۶! ۶۲۷! ۶۲۸! ۶۲۹! ۶۳۰! ۶۳۱! ۶۳۲! ۶۳۳! ۶۳۴! ۶۳۵! ۶۳۶! ۶۳۷! ۶۳۸! ۶۳۹! ۶۴۰! ۶۴۱! ۶۴۲! ۶۴۳! ۶۴۴! ۶۴۵! ۶۴۶! ۶۴۷! ۶۴۸! ۶۴۹! ۶۵۰! ۶۵۱! ۶۵۲! ۶۵۳! ۶۵۴! ۶۵۵! ۶۵۶! ۶۵۷! ۶۵۸! ۶۵۹! ۶۶۰! ۶۶۱! ۶۶۲! ۶۶۳! ۶۶۴! ۶۶۵! ۶۶۶! ۶۶۷! ۶۶۸! ۶۶۹! ۶۷۰! ۶۷۱! ۶۷۲! ۶۷۳! ۶۷۴! ۶۷۵! ۶۷۶! ۶۷۷! ۶۷۸! ۶۷۹! ۶۸۰! ۶۸۱! ۶۸۲! ۶۸۳! ۶۸۴! ۶۸۵! ۶۸۶! ۶۸۷! ۶۸۸! ۶۸۹! ۶۹۰! ۶۹۱! ۶۹۲! ۶۹۳! ۶۹۴! ۶۹۵! ۶۹۶! ۶۹۷! ۶۹۸! ۶۹۹! ۷۰۰! ۷۰۱! ۷۰۲! ۷۰۳! ۷۰۴! ۷۰۵! ۷۰۶! ۷۰۷! ۷۰۸! ۷۰۹! ۷۱۰! ۷۱۱! ۷۱۲! ۷۱۳! ۷۱۴! ۷۱۵! ۷۱۶! ۷۱۷! ۷۱۸! ۷۱۹! ۷۲۰! ۷۲۱! ۷۲۲! ۷۲۳! ۷۲۴! ۷۲۵! ۷۲۶! ۷۲۷! ۷۲۸! ۷۲۹! ۷۳۰! ۷۳۱! ۷۳۲! ۷۳۳! ۷۳۴! ۷۳۵! ۷۳۶! ۷۳۷! ۷۳۸! ۷۳۹! ۷۴۰! ۷۴۱! ۷۴۲! ۷۴۳! ۷۴۴! ۷۴۵! ۷۴۶! ۷۴۷! ۷۴۸! ۷۴۹! ۷۵۰! ۷۵۱! ۷۵۲! ۷۵۳! ۷۵۴! ۷۵۵! ۷۵۶! ۷۵۷! ۷۵۸! ۷۵۹! ۷۶۰! ۷۶۱! ۷۶۲! ۷۶۳! ۷۶۴! ۷۶۵! ۷۶۶! ۷۶۷! ۷۶۸! ۷۶۹! ۷۷۰! ۷۷۱! ۷۷۲! ۷۷۳! ۷۷۴! ۷۷۵! ۷۷۶! ۷۷۷! ۷۷۸! ۷۷۹! ۷۸۰! ۷۸۱! ۷۸۲! ۷۸۳! ۷۸۴! ۷۸۵! ۷۸۶! ۷۸۷! ۷۸۸! ۷۸۹! ۷۹۰! ۷۹۱! ۷۹۲! ۷۹۳! ۷۹۴! ۷۹۵! ۷۹۶! ۷۹۷! ۷۹۸! ۷۹۹! ۸۰۰! ۸۰۱! ۸۰۲! ۸۰۳! ۸۰۴! ۸۰۵! ۸۰۶! ۸۰۷! ۸۰۸! ۸۰۹! ۸۱۰! ۸۱۱! ۸۱۲! ۸۱۳! ۸۱۴! ۸۱۵! ۸۱۶! ۸۱۷! ۸۱۸! ۸۱۹! ۸۲۰! ۸۲۱! ۸۲۲! ۸۲۳! ۸۲۴! ۸۲۵! ۸۲۶! ۸۲۷! ۸۲۸! ۸۲۹! ۸۳۰! ۸۳۱! ۸۳۲! ۸۳۳! ۸۳۴! ۸۳۵! ۸۳۶! ۸۳۷! ۸۳۸! ۸۳۹! ۸۴۰! ۸۴۱! ۸۴۲! ۸۴۳! ۸۴۴! ۸۴۵! ۸۴۶! ۸۴۷! ۸۴۸! ۸۴۹! ۸۵۰! ۸۵۱! ۸۵۲! ۸۵۳! ۸۵۴! ۸۵۵! ۸۵۶! ۸۵۷! ۸۵۸! ۸۵۹! ۸۶۰! ۸۶۱! ۸۶۲! ۸۶۳! ۸۶۴! ۸۶۵! ۸۶۶! ۸۶۷! ۸۶۸! ۸۶۹! ۸۷۰! ۸۷۱! ۸۷۲! ۸۷۳! ۸۷۴! ۸۷۵! ۸۷۶! ۸۷۷! ۸۷۸! ۸۷۹! ۸۸۰! ۸۸۱! ۸۸۲! ۸۸۳! ۸۸۴! ۸۸۵! ۸۸۶! ۸۸۷! ۸۸۸! ۸۸۹! ۸۹۰! ۸۹۱! ۸۹۲! ۸۹۳! ۸۹۴! ۸۹۵! ۸۹۶! ۸۹۷! ۸۹۸! ۸۹۹! ۹۰۰! ۹۰۱! ۹۰۲! ۹۰۳! ۹۰۴! ۹۰۵! ۹۰۶! ۹۰۷! ۹۰۸! ۹۰۹! ۹۱۰! ۹۱۱! ۹۱۲! ۹۱۳! ۹۱۴! ۹۱۵! ۹۱۶! ۹۱۷! ۹۱۸! ۹۱۹! ۹۲۰! ۹۲۱! ۹۲۲! ۹۲۳! ۹۲۴! ۹۲۵! ۹۲۶! ۹۲۷! ۹۲۸! ۹۲۹! ۹۳۰! ۹۳۱! ۹۳۲! ۹۳۳! ۹۳۴! ۹۳۵! ۹۳۶! ۹۳۷! ۹۳۸! ۹۳۹! ۹۴۰! ۹۴۱! ۹۴۲! ۹۴۳! ۹۴۴! ۹۴۵! ۹۴۶! ۹۴۷! ۹۴۸! ۹۴۹! ۹۵۰! ۹۵۱! ۹۵۲! ۹۵۳! ۹۵۴! ۹۵۵! ۹۵۶! ۹۵۷! ۹۵۸! ۹۵۹! ۹۶۰! ۹۶۱! ۹۶۲! ۹۶۳! ۹۶۴! ۹۶۵! ۹۶۶! ۹۶۷! ۹۶۸! ۹۶۹! ۹۷۰! ۹۷۱! ۹۷۲! ۹۷۳! ۹۷۴! ۹۷۵! ۹۷۶! ۹۷۷! ۹۷۸! ۹۷۹! ۹۸۰! ۹۸۱! ۹۸۲! ۹۸۳! ۹۸۴! ۹۸۵! ۹۸۶! ۹۸۷! ۹۸۸! ۹۸۹! ۹۹۰! ۹۹۱! ۹۹۲! ۹۹۳! ۹۹۴! ۹۹۵! ۹۹۶! ۹۹۷! ۹۹۸! ۹۹۹! ۱۰۰۰!

”مباہلہ کرنے والوں میں سے جو جھوٹا ہو، وہ سچے کی زندگی میں ہلاک ہو جاتا ہے۔“

(ملفوظات: مرزا غلام احمد قادیانی ج: ۹ ص: ۴۴۰)

مرزا کی موت پر اللہ تعالیٰ نے اپنے فعل سے گواہی دے دی کہ مرزا قادیانی جھوٹا تھا، اللہ تعالیٰ کے فرشتوں نے گواہی دی کہ مرزا جھوٹا تھا، خود مرزا نے... مندرجہ بالا عبارت میں... گواہی دی کہ میں جھوٹا ہوں، اس دن آسمان و زمین نے گواہی دی کہ مرزا جھوٹا تھا، تمام اہل علم اور اہل ایمان گواہی دیتے ہیں کہ مرزا جھوٹا تھا۔

مرزا قادیانی کے ماننے والوں میں... خواہ وہ قادیانی ہوں یا لاہوری... اگر حق و دیانت کی کوئی رمت ہوتی تو وہ ان عظیم الشان گواہیوں کو قبول کر کے مرزائیت سے فوراً توبہ کر لیتے، اور وہ خود بھی یہ سچی گواہی دیتے کہ مرزا جھوٹا تھا، لیکن افسوس! کہ قادیانیوں کے عوام ناواقف ہیں، حقیقت حال سے بے خبر ہیں، اور قادیانی لیڈر محض اپنے نفسانی جوش، اور اپنی گدی چلانے کے لئے حق و دیانت کی گواہی کو چھپاتے ہیں، اور دنیا کی آنکھوں میں دھول جھونکنے کے لئے مسلمانوں کو مباہلے کا چیلنج دے رہے ہیں۔ مرزا قادیانی نے ایسے

ہی لوگوں کے بارے میں لکھا تھا:

”دُنیا میں سب جانداروں سے زیادہ پلید اور کراہت کے  
لائق خنزیر ہے، مگر خنزیر سے زیادہ پلید وہ لوگ ہیں، جو اپنے نفسانی  
جوش کے لئے حق اور دیانت کی گواہی کو چھپاتے ہیں۔“

(ضمیمہ انجام آتھم ص: ۲۱، رُوحانی خزائن ج: ۱۱ ص: ۳۰۵)

عجیب بات یہ ہے کہ قادیانیوں میں کوئی شریف آدمی اپنے لیڈروں سے یہ نہیں  
پوچھتا کہ: حضور! مباہلہ تو ایک بار ہوتا ہے، بار بار نہیں ہوتا، جب ایک صدی پہلے مرزا  
غلام احمد قادیانی مباہلہ کر چکا، اور اس مباہلے کے نتیجے میں اللہ تعالیٰ نے فیصلہ دے دیا کہ  
مرزا جھوٹا تھا، تو دوبارہ مباہلے کی چیلنج بازی محض ہم لوگوں کو احمق بنانے کے لئے نہیں تو اور  
کیا ہے...؟

دوسرے یہ کہ مباہلے کے لئے قرآن کریم کی رُو سے دو فریقوں کا اپنی عورتوں  
اور بچوں سمیت ایک میدان میں جمع ہو کر مل کر دُعا و التجا کرنا ضروری ہے، آخر یہ کیسا مباہلہ  
ہے کہ آپ گھر بیٹھے بڑکیں مارتے ہیں، اور میدان مباہلہ میں نکلنے کی جرأت نہیں کرتے؟  
اَلَيْسَ مِنْكُمْ رَجُلٌ رَّشِيدٌ...؟

وَاٰخِرُ دَعْوَانَا اِنَّ الْحَمْدَ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ

وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی خَيْرِ خَلْقِهٖ مُحَمَّدٍ وَّآلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ اَجْمَعِيْنَ

## ضمیمہ دو دلچسپ مباہلے

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَسَلَامٌ عَلٰی عِبَادِهِ الَّذِیْنَ اصْطَفٰی

حق تعالیٰ شانہ کی عجیب شان ہے کہ نبوت کا جھوٹا دعویٰ کرنے والے دجالوں اور مکاروں کے مکرو فریب کا پول کھول دیتے ہیں، مرزا غلام احمد قادیانی آنجہانی نے بھی نبوت کا جھوٹا دعویٰ کر کے خلق خدا کو گمراہ کرنے اور دنیا کا کوڑا جمع کرنے کا بیڑا اٹھایا تھا، لیکن اللہ تعالیٰ نے اس کو قدم قدم پر ذلیل و رسوا کیا، چنانچہ مرزا قادیانی کے متعدد لوگوں سے مباہلے بھی ہوئے، اور اللہ تعالیٰ نے ہر مباہلے کا فیصلہ مرزا قادیانی کے خلاف صادر فرمایا، جس کے نتیجے میں مرزا قادیانی کا جھوٹا ہونا ہر خاص و عام کے سامنے واضح کر دیا، اس کے چند نمونے میرے رسالہ ”قادیانی مباہلہ“ میں آپ کی نظر سے گزر چکے ہیں، مثلاً:

۱:۔۔۔ مرزا قادیانی نے عبداللہ آتھم عیسائی کے مباہلے سے عاجز آ کر آخری دن

مباہلہ کے طور پر یہ پیش گوئی جڑ دی کہ ہم دونوں فریقوں میں سے جو جھوٹا ہے وہ پندرہ مہینے کے اندر اندر ہاویہ میں گرایا جائے گا، اور صاف صاف الفاظ میں یہ اقرار کیا کہ:

”میں اس وقت یہ اقرار کرتا ہوں کہ اگر یہ پیشین

گوئی جھوٹی نکلی یعنی وہ فریق جو خدا تعالیٰ کے نزدیک جھوٹ

پر ہے وہ پندرہ ماہ کے عرصے میں آج کی تاریخ سے سزائے

موت ہاویہ میں نہ پڑے تو میں ہر ایک سزا کے اٹھانے کے

لئے تیار ہوں، مجھ کو ذلیل کیا جاوے، رُوسیاہ کیا جاوے،  
میرے گلے میں رسہ ڈال دیا جاوے، مجھ کو پھانسی دیا جاوے  
..... اب ناحق ہنسنے کی جگہ نہیں اگر میں جھوٹا ہوں تو میرے  
لئے سولی تیار رکھو۔ اور تمام شیطانوں اور بدکاروں اور  
لعنتیوں سے زیادہ مجھے لعنتی قرار دو۔“

(خزان ج: ۱۶ ص: ۲۹۲، ۲۹۳)

اس مباہلہ کا نتیجہ سب کے سامنے آیا، مرزا کا حریف آتھم پادری پندرہ مہینے میں  
نہیں مرا، اس طرح اللہ تعالیٰ نے ایک پادری کے مقابلے میں مرزا کو ذلیل اور رُوسیاہ کیا،  
اور لوگ مرزا غلام احمد قادیانی کو خود اس کے اپنے الفاظ میں: ”تمام شیطانوں اور بدکاروں  
اور لعنتیوں سے زیادہ لعنتی“ سمجھنے پر مجبور ہوئے۔

۲: ... مرزا غلام احمد قادیانی نے مولانا عبدالحق غزنویؒ سے رُودرُوم مباہلہ کیا، اور  
مباہلہ کے بعد مرزا قادیانی، مولانا عبدالحق غزنویؒ کی زندگی میں ہلاک ہو گیا، جبکہ اس کا اپنا  
اقرار تھا کہ:

”مباہلہ کرنے والوں میں سے جو جھوٹا ہو وہ سچے کی  
زندگی میں ہلاک ہو جاتا ہے۔“

(مرزا قادیانی کے ملفوظات ج: ۹ ص: ۴۴۰)

مرزا قادیانی کے مولانا عبدالحق کی زندگی میں مرنے سے ثابت ہو گیا کہ مرزا  
قادیانی، مولانا عبدالحق غزنویؒ کے مقابلے میں جھوٹا تھا اور مولانا عبدالحق غزنویؒ نے اپنے  
مباہلہ میں جو دعویٰ کیا تھا کہ: ”مرزا قادیانی اور اس کے ماننے والے سب کے سب دجال  
و کذاب، کافر و ملحد اور بے ایمان ہیں۔“ ان کا یہ دعویٰ بالکل صحیح ثابت ہوا اور اللہ تعالیٰ نے  
اس پر مہر تصدیق ثبت کر دی۔

۳: ... مرزا غلام احمد قادیانی نے ۱۵ اپریل ۱۹۰۷ء مطابق یکم ربیع الاول



۱۳۲۵ھ کو ایک اشتہار شائع کیا، جس کا عنوان تھا:

”مولوی ثناء اللہ صاحب امرتسری کے ساتھ آخری فیصلہ“

اس اشتہار میں مرزا قادیانی نے مولانا ثناء اللہ امرتسری فاتح قادیان کو مخاطب کر کے لکھا کہ:

”اگر میں ایسا ہی کذاب اور مفتری ہوں جیسا کہ آپ اکثر اوقات آپ اپنے ہر ایک پرچے میں مجھے یاد کرتے ہیں تو میں آپ کی زندگی میں ہی ہلاک ہو جاؤں گا۔“

(مجموعہ اشتہارات مرزا غلام احمد قادیانی ج: ۳ ص: ۵۷۸)

اور پھر مرزا نے اللہ تعالیٰ کی بارگاہِ عالی سے فیصلہ طلب کرنے کے لئے یہ دُعا کی کہ:

”اگر یہ دعویٰ مسیح موعود ہونے کا محض میرے نفس کا افترا ہے، اور میں تیری نظر میں مفسد اور کذاب ہوں اور دن رات افترا کرنا میرا کام ہے، تو اے میرے پیارے مالک! میں عاجزی سے تیری جناب میں دُعا کرتا ہوں کہ مولوی ثناء اللہ کی زندگی میں مجھے ہلاک کر اور میری موت سے ان کو اور ان کی جماعت کو خوش کر دے..... اب میں تیرے ہی تقدس اور رحمت کا دامن پکڑ کر تیری جناب میں ملتی ہوں کہ مجھ میں اور ثناء اللہ میں سچا فیصلہ فرما اور وہ جو تیری نگاہ میں درحقیقت مفسد اور کذاب ہے اس کو صادق کی زندگی میں ہی دُنیا سے اٹھالے۔“ (مجموعہ اشتہارات مرزا غلام احمد قادیانی ج: ۳ ص: ۵۴۹)

اور اشتہار کے آخر میں مرزا قادیانی نے لکھا کہ:

”بالآخر مولوی صاحب سے میری التماس ہے کہ وہ میرے اس تمام مضمون کو اپنے پرچے میں چھاپ دیں، اور جو چاہیں اس کے نیچے لکھ دیں، اب فیصلہ خدا کے ہاتھ میں ہے۔“

چنانچہ مرزا قادیانی کی فرمائش کے مطابق مولانا ثناء اللہ امرتسری نے اپنے

پرچے ”اہل حدیث“ میں مرزا کا پورا اشتہار لفظ بلفظ چھاپ دیا، اور اس کے نیچے جو چاہا لکھ دیا۔ چونکہ مرزا قادیانی اپنا فیصلہ خدا کے ہاتھ میں دے چکا تھا، اس لئے مرزا کے اس اشتہار کے بعد مرزائیوں اور مسلمانوں کی نظریں اس پر لگی ہوئی تھیں کہ دیکھئے پردہ غیب سے کیا ظہور پذیر ہوتا ہے؟ بالآخر ایک سال بعد فیصلہ خداوندی کا اعلان ہوا، اور ۲۶ مئی ۱۹۰۸ء کو وبائی ہیضے سے مرزا غلام احمد قادیانی کو ہلاک کر دیا، اور مولانا ثناء اللہ امرتسریؒ اس کے اکتالیس سال بعد تک سلامت باکرامت رہے۔

اس فیصلہ خداوندی سے ایک بار پھر ثابت ہو گیا کہ مرزا قادیانی واقعی مفسد و کذاب اور مفتری تھا، جیسا کہ مولانا ثناء اللہ مرحومؒ ”اپنے ہر ایک پرچے میں اس کو یاد کرتے تھے۔“

آج کی صحبت میں ہم قارئین کو مرزا قادیانی کے دو مزید دلچسپ مباہلوں سے روشناس کراتے ہیں جن کے ذریعے اللہ تعالیٰ نے مرزا قادیانی کے دجال و کذاب ہونے کا واضح اعلان فرمایا۔

### پہلا مباہلہ

حافظ محمد یوسف اور مولانا عبدالحق غزنوی کے درمیان

حافظ محمد یوسف ضلع دار امرتسری پہلے فرقہ اہل حدیث کے ممتاز رکن تھے۔ حضرت مولانا عبد اللہ غزنویؒ سے خاص اعتقاد رکھتے تھے، لیکن کچھ عرصہ بعد مرزائی جال میں پھنس کر... نعوذ باللہ... مرتد ہو گیا۔ مرتد ہونے کے بعد مرزا قادیانی کا نہایت غالی معتقد ثابت ہوا، شب و روز مرزائیت کی تبلیغ اور نشر و اشاعت اس کا محبوب مشغلہ تھا، مرزا قادیانی نے ازالہ اوہام میں اس کے بارے میں لکھا:

”حافظ محمد یوسف صاحب جو ایک مرد صالح، بے ریا، متقی

اور متبع سنت اور اول درجے کے رفیق اور مخلص مولوی عبد اللہ

صاحب غزنوی ہیں۔“ (ازالہ اوہام، رُوحانی خزائن ج: ۳ ص: ۷۹)

۲۱ شوال ۱۳۱۰ھ (مطابق ۱۹ اپریل ۱۸۹۳ء) کی شب کو حافظ محمد یوسف

مرزائی نے مرزا قادیانی کی حقانیت پر مولانا عبدالحق غزنویؒ سے مباہلہ کیا، مباہلہ کا موضوع یہ تھا کہ مرزا قادیانی اور اس کے ماننے والے مرتد اور دجال و کذاب ہیں یا مسلمان ہیں۔ مولانا غزنویؒ کا موقف یہ تھا کہ مرزا اور مرزا کے چیلے حکیم نور الدین اور محمد احسن امروہی مسلمان نہیں، بلکہ مرتد اور دجال و کذاب ہیں، اور حافظ صاحب کا مباہلہ اس پر تھا کہ وہ مسلمان ہیں۔

اس مباہلہ کو ہوئے ابھی ایک ہفتہ نہیں گزرا تھا کہ مرزا قادیانی نے اپنے مرید حافظ محمد یوسف مرزائی کی تائید میں ۲۵ اپریل ۱۸۹۳ء (مطابق ۸ شوال ۱۳۱۰ھ) کو ایک اشتہار شائع کیا جس کا عنوان تھا:

”اشتہار مباہلہ“

”میاں عبدالحق غزنوی و حافظ محمد یوسف صاحب“

اس اشتہار میں (جو مرزا قادیانی کے مجموعہ اشتہارات کی جلد اول میں صفحہ: ۳۹۵ سے صفحہ: ۳۹۹ تک درج ہے) مرزا قادیانی نے اس مباہلہ کی تفصیل درج ذیل الفاظ میں قلم بند کی ہے:

”مجھ کو اس بات کے سننے سے بہت خوشی ہوئی ہے کہ ہمارے ایک معزز دوست حافظ محمد یوسف صاحب نے ایمانی جو انمردی اور شجاعت کے ساتھ ہم سے پہلے اس ثواب کو حاصل کیا۔ تفصیل اس اجمال کی یہ ہے کہ حافظ صاحب اتفاقاً ایک مجلس میں بیان کر رہے تھے کہ مرزا صاحب یعنی اس عاجز سے کوئی آمادہ مناظرہ یا مباہلہ نہیں ہوتا، اور اسی سلسلہ گفتگو میں حافظ صاحب نے یہ بھی فرمایا کہ عبدالحق نے جو مباہلہ کے لئے اشتہار دیا تھا اب اگر وہ اپنے شیخ سچا جانتا ہے تو میرے مقابلے پر آوے، میں اس سے مباہلہ کے لئے تیار ہوں، تب عبدالحق جو اسی جگہ کہیں موجود تھا، حافظ صاحب کے غیرت دلانے والے لفظوں سے طوعاً و کرہاً مستعد مباہلہ

ہو گیا۔ حافظ صاحب کا ہاتھ آ کر پکڑ لیا کہ میں تم سے اسی وقت مباہلہ کرتا ہوں، مگر مباہلہ فقط اس بارے میں کروں گا کہ میرا یقین ہے کہ مرزا غلام احمد و مولوی حکیم نور الدین اور مولوی محمد احسن یہ تینوں مرتدین اور کذابین اور دجالین ہیں۔ حافظ صاحب نے فی الفور بلا تامل منظور کر لیا کہ میں اس بارے میں مباہلہ کروں گا، کیونکہ میرا یقین ہے کہ یہ تینوں مسلمان ہیں۔ تب اسی بات پر حافظ صاحب نے عبدالحق سے مباہلہ کیا، اور گواہان مباہلہ منشی محمد یعقوب اور میاں نبی بخش صاحب اور میاں عبدالہادی صاحب اور میاں عبدالرحمن صاحب عمر پوری قرار پائے۔“ (مجموعہ اشتہارات ج: ۱ ص: ۳۹۶)

چونکہ مرزا قادیانی نے اس اشتہار میں مباہلہ کی تفصیل درج کرنے پر اکتفا نہیں کیا تھا بلکہ بہت سی غلط بیانیوں سے بھی کام لیا تھا اس لئے اس کے جواب میں مولانا عبدالحق غزنویؒ نے ۲۶/شوال ۱۳۱۰ھ کو ایک اشتہار شائع کیا (مولانا غزنویؒ کا یہ اشتہار مرزا قادیانی کے مجموعہ اشتہارات جلد اول کے حاشیہ میں صفحہ: ۴۲۰ سے ۴۲۵ تک درج ہے)۔ اس اشتہار میں مولانا غزنویؒ، مرزا غلام احمد قادیانی کی غلط بیانیوں اور لاف و گزاف کا پردہ چاک کرنے کے بعد لکھتے ہیں:

”حافظ کے مباہلہ کی تفصیل یہ ہے کہ حافظ محمد یوسف، جو مرزا کا اول درجے کا ناصر و موید و مددگار ہے، اس نے ۲/شوال بوقت شب مجھ سے بار بار درخواست مباہلہ کی، آخر الامر اس بات پر مباہلہ ہوا کہ مرزا (غلام احمد قادیانی) اور نور الدین و محمد احسن امروہی، یہ تینوں مرتد اور دجال اور کذاب ہیں۔

چونکہ ہنوز لعنت کا اثر ظاہر اس پر (یعنی حافظ محمد یوسف پر... ناقل) نمودار نہیں ہوا، لہذا پیر جی (یعنی مرزا قادیانی... ناقل) کو بھی گرمی آگئی اور عام طور پر اشتہار مباہلہ دے دیا، ذرا صبر تو کرو،



دیکھو! اللہ کیا کرتا ہے، وکل شیء عندہ بأجل مسئمی، انہ  
حکیم حمید۔

مجھ کو دو روز پیشتر محمد یوسف کے مباہلہ سے، دکھایا گیا کہ  
میں نے ایک شخص سے مباہلہ کی درخواست کی اور یہ شعر سنایا:  
بہ صورت بلبل و قمری اگر نہ گیری پند  
علاج کے کثمت، آخر الدوا الکی

(ترجمہ از ناقل: اگر تم بلبل اور قمری کی صورت میں  
نصیحت نہیں پکڑو گے، تو میں داغ دے کر تمہارا علاج کروں گا،  
کیونکہ مثل مشہور ہے کہ ”آخری علاج داغ دینا ہے۔“)  
اور بھی کچھ دیکھا جس کا بیان اس وقت مناسب نہیں۔  
میں خود حیران ہوا کہ یہ کیا بات ہے؟ دو دن بعد یہ مباہلہ درپیش  
ہوا۔“ (حاشیہ مجموعہ اشتہارات مرزا قادیانی ج: ۱ ص: ۴۲۴)

قارئین کرام نے مرزا غلام احمد قادیانی اور مولانا عبدالحق غزنوی دونوں کے  
مندرجہ بالا بیانات سے چند نکات نوٹ کر لئے ہوں گے:

۱: ... مباہلہ مرزا کے مرید حافظ محمد یوسف اور مولانا عبدالحق غزنوی کے درمیان ہوا۔  
۲: ... مباہلہ کا موضوع یہ تھا کہ مرزا قادیانی اور اس کے دونوں چیلے یعنی حکیم  
نور الدین اور محمد حسن امروہی مرتد اور دجال و کذاب ہیں یا نہیں؟

۳: ... یہ مباہلہ ۲ شوال ۱۳۱۰ھ مطابق ۱۹ اپریل ۱۸۹۳ء کی شب کو ہوا۔  
۴: ... مرزا غلام احمد قادیانی نے اپنے مرید کے مباہلہ کی نہ صرف بھرپور تصدیق  
کی بلکہ اس پر مسرت و شادمانی کے شادیاں بجا ئے، گویا اس مباہلہ کا جو نتیجہ بھی برآمد ہو،  
مرزا قادیانی نے اس کی ذمہ داری کو قبول کرنے کا اعلان کرنے کے لئے اشتہار دے دیا۔  
اب قارئین کرام بے چین ہوں گے کہ یہ تو ہوا مباہلہ! لیکن آخر ”مباہلہ کا انجام“  
کیا ہوا؟ اللہ تعالیٰ نے اس مباہلہ میں کس کو فتح دی؟ مباہلہ کا فیصلہ کس کے حق میں ہوا؟ اور

مباہلہ میں کون سچا نکلا اور کون جھوٹا ثابت ہوا؟

آہ کہ اس مباہلہ کے انجام کی خبر قادیانی اُمت کے لئے نہایت ہولناک اور ہوش رُبا ثابت ہوگی، جس کے سنتے ہی قادیانی قصرِ خلافت میں زلزلہ آجائے گا۔

### مباہلہ کا انجام

سنئے! اس مباہلہ کا انجام یہ نکلا کہ مباہلہ کے کچھ عرصہ بعد مولانا عبدالحق غزنویؒ کا حریف چاروں شانے چت ہوا:

۱:۔۔۔ حافظ محمد یوسف نے مرزائی ارتداد سے توبہ کر کے مولانا عبدالحق کے ہاتھ پر اسلام قبول کر لیا۔

۲:۔۔۔ اسلام لانے کے بعد حافظ صاحب مرزائیت کے بنجے اُدھیڑنے لگے، اور یہ اعلان کرنے لگے کہ مرزا قادیانی اور اس کے تمام چیلے مرتد اور دجال و کذاب ہیں۔

۳:۔۔۔ مولانا غزنویؒ نے حافظ صاحب کا ”مباہلہ“ کے ذریعے جو ”آخری علاج“ کیا تھا، وہ بحمد اللہ کارگر ثابت ہوا اور مولانا مرحوم کی الہامی بشارت سچی ثابت ہوئی۔ قارئینِ کرام کو شاید یہ خیال گزرے کہ میں بغیر کسی ثبوت کے یہ دعویٰ کر رہا ہوں کہ مباہلہ کے بعد حافظ محمد یوسف صاحب مرزائیت سے تائب ہو کر مسلمان ہو گئے تھے، لیجئے! میں اس کا ثبوت بھی مرزا قادیانی کی تحریر ہی سے پیش کئے دیتا ہوں:

### مرزا کا اشتہار بنام حافظ محمد یوسف

مرزا قادیانی کا رسالہ اربعین کھولئے، اس کے نمبر ۳ کے اشتہار کی پیشانی پر آپ کو جلی قلم سے یہ عبارت نظر آئے گی:

”اشتہار انعام پانسو روپیہ بنام حافظ محمد یوسف صاحب ضلع دارنہر۔ اور ایسا ہی اس اشتہار میں یہ تمام لوگ بھی مخاطب ہیں جن کا نام ذیل میں درج ہے۔“

(اربعین نمبر ۳ مندرجہ روحانی خزائن ج: ۱۷ ص: ۳۸۶)

اس اشتہار میں مرزا قادیانی نے حافظ محمد یوسف صاحب کے بارے میں جن

خیالات کا اظہار کیا ہے، ایک نظر ان پر بھی ڈال لیجئے، اشتہار کے آغاز میں مرزا قادیانی لکھتا ہے:

”واضح ہو کہ حافظ محمد یوسف صاحب ضلع دارنہر نے اپنے  
نافہم اور غلط کارمولویوں کی تعلیم سے ایک مجلس میں..... یہ بیان کیا۔“  
(روحانی خزائن ج: ۱ ص: ۳۸۷)

آگے چل کر لکھتا ہے:

”یاد رہے کہ یہ صاحب مولوی عبداللہ غزنوی کے گروہ  
میں ہیں اور بڑے موجد مشہور ہیں۔“ (ایضاً ص: ۳۹۰)  
مزید لکھتا ہے:

”اور حافظ صاحب..... نے اپنے چند قدیم رفیقوں کی  
رفاقت کی وجہ سے میرے من جانب اللہ ہونے کے دعوے کا انکار  
مناسب سمجھا۔“ (ص: ۳۹۱)  
مزید لکھا ہے:

”کچھ عقل و فکر میں نہیں آتا کہ حافظ صاحب کو کیا ہو گیا؟  
..... انسان کو اس سے کیا فائدہ کہ اپنی جسمانی زندگی کے لئے اپنی  
روحانی زندگی پر چھری پھیر دے، میں نے بہت دفعہ حافظ صاحب  
سے یہ بات سنی تھی کہ وہ میرے مصدقین میں سے ہیں، اور مکذّب  
کے ساتھ مباہلہ کرنے کو تیار ہیں، اور اسی میں بہت سا حصہ ان کی عمر  
کا گزر گیا، اور اس کی تائید میں وہ اپنی خوابیں بھی سناتے رہے، اور  
بعض مخالفوں سے انہوں نے مباہلہ بھی کیا۔“ (ایضاً ص: ۴۰۸)

مرزا قادیانی کے یہ اقتباسات اپنے مضمون میں بالکل واضح ہیں جن کا خلاصہ

یہ ہے:

- ۱: حافظ محمد یوسف صاحب ایک طویل عرصے تک مرزا کے پُر جوش مرید رہے۔
- ۲: حافظ صاحب نے مرزا کے بعض مخالفوں (مولانا عبدالحق غزنوی) سے

مرزا کے صدق و کذب پر مباہلہ بھی کیا۔

۳: ... اور مباہلہ کے بعد مرزا سے تائب ہو کر مسلمان ہو گئے، اور اس کو مفتتری اور دجال و کذاب کہنے لگے، یہاں تک کہ مرزا کو ان کے خلاف اربعین نمبر ۳ کا انعامی اشتہار شائع کرنا پڑا (یہ اشتہار مرزا کی کتاب تحفہ گوڑوہ کے شروع میں بھی بطور ضمیمہ درج ہے)۔ قارئین کرام! مرزائیوں سے دریافت کریں کہ اس مباہلہ کے بعد، جو مولانا عبدالحق غزنویؒ اور حافظ محمد یوسف ضلع دار کے درمیان ہوا تھا، اگر خدا نخواستہ مولانا عبدالحق، مرزا قادیانی پر ایمان لے آتے تو کیا مرزائی صاحبان اس کو مباہلہ کا نتیجہ قرار نہ دیتے؟ اور کیا اس کو مرزا قادیانی کی حقانیت کے طور پر پیش نہ کرتے؟ یقیناً ایسا کرتے؟ اب جبکہ مباہلہ کا نتیجہ الٹ ہوا کہ مولانا عبدالحق غزنویؒ نے اپنے حریف مباہلہ کو فتح کر لیا اور مولانا غزنویؒ کی طرح حافظ محمد یوسف صاحب بھی مرزا کو دجال و کذاب اور مفتری و مرتد سمجھنے اور کہنے لگے تو بتاؤ یہ مباہلہ کا نتیجہ ہے یا نہیں؟ اور اس مباہلہ کے نتیجے میں مرزا کا مرتد اور دجال و کذاب ہونا ثابت ہوایا نہیں؟

”بندہ پرور! منصفی کرنا خدا کو دیکھ کر“

دوسرا مباہلہ

مرزا غلام احمد قادیانی اور لیکھ رام

مرزا غلام احمد قادیانی نے ایک آریہ لالہ مرلی دھر سے مباحثہ کیا، جس کی تفصیل اس کی کتاب ”سرمہ چشم آریہ“ میں درج ہے، مرزا اپنے حریف کو مباحثے میں شکست دینے سے حسبِ عادت عاجز رہا، تو اس کتاب کے آخر میں آریوں کو دعوتِ مباہلہ دے ڈالی، مرزا کی دعوتِ مباہلہ کا متن ملاحظہ فرمایا جائے:

”اگر کوئی آریہ ہمارے اس تمام رسالے کو پڑھ کر پھر بھی

اپنی ضد چھوڑنا نہ چاہے اور اپنے کفریات سے باز نہ آئے تو ہم

خدائے تعالیٰ کی طرف سے اشارہ پا کر اس کو مباہلہ کی طرف بلاتے

ہیں۔“ (رسالہ سرمہ چشم آریہ مندرجہ روحانی خزائن ج: ۲ ص: ۲۳۲)



”آخر الحیل مباہلہ ہے جس کی طرف ہم پہلے اشارت کر آئے ہیں، مباہلہ کے لئے دیدخواں ہونا ضروری نہیں، ہاں باتمیز اور ایک باعزت اور نامور آریہ ضرور چاہئے جس کا اثر دوسروں پر بھی پڑ سکے، سوسب سے پہلے لالہ مرلید ہر صاحب اور پھر لالہ جیونداس صاحب سیکریٹری آریہ سماج لاہور اور پھر منشی اندرمن صاحب مراد آبادی اور پھر کوئی اور دوسرے صاحب آریوں میں سے جو معزز اور ذی علم تسلیم کئے گئے ہوں مخاطب کئے جاتے ہیں کہ اگر وہ وید کی ان تعلیموں کو جن کو کسی قدر ہم اس رسالے میں تحریر کر چکے ہیں۔ فی الحقیقت صحیح اور سچے سمجھتے ہیں اور ان کے مقابل جو قرآن شریف کے اصول و تعلیمیں اسی رسالے میں بیان کی گئی ہیں ان کو باطل اور دروغ خیال کرتے ہیں تو اس بارے میں ہم سے مباہلہ کر لیں اور کوئی مقام مباہلہ کا برضامندی فریقین قرار پا کر ہم دونوں فریق تاریخ مقررہ پر اس جگہ حاضر ہو جائیں اور ہر ایک فریق مجمع عام میں اٹھ کر اس مضمون مباہلہ کی نسبت جو اس رسالے کے خاتمے میں بطور نمونہ اقرار فریقین قلم جلی سے لکھا گیا ہے تین مرتبہ قسم کھا کر تصدیق کریں کہ ہم فی الحقیقت اس کو سچ سمجھتے ہیں اور اگر ہمارا بیان راستی پر نہیں ہم پر اسی دنیا میں وبال اور عذاب نازل ہو۔ غرض جو عبارتیں ہر دو کاغذ مباہلہ میں مندرج ہیں، جو جانہین کے اعتقاد میں بحالت دروغ گوئی عذاب مترتب ہونے کے شرط پر ان کی تصدیق کرنی چاہئے اور پھر فیصلہ آسمانی کے انتظار کے لئے ایک برس کی مہلت ہوگی، پھر اگر برس گزرنے کے بعد مؤلف رسالہ ہذا پر کوئی عذاب اور وبال نازل ہو یا حریف مقابل پر نازل نہ ہو اتوان دونوں صورتوں میں یہ عاجز قابل تاوان پانسو روپیہ

ٹھہرے گا۔ جس کو برضامندی فریقین خزانہ سرکاری میں یا جس جگہ بآسانی وہ روپیہ مخالف کو مل سکے داخل کر دیا جائے گا، اور درحالت غلبہ خود بخود اس روپیہ کے وصول کرنے کا فریق مخالف مستحق ہوگا، اور اگر ہم غالب آئے تو کچھ بھی شرط نہیں کرتے، کیونکہ شرط کے عوض میں وہی دُعا کے آثار کا ظاہر ہونا کافی ہے، اب ہم ذیل میں مضمون ہر دو کاغذ مباہلہ کو لکھ کر رسالہ طحا کو ختم کرتے ہیں،  
 وباللہ التوفیق۔“ (ایضاً ص: ۲۵۰، ۲۵۱)

قارئین کرام! مرزا کی اس طویل عبارت کو بغور پڑھیں اور درج ذیل تین نکات کو نوٹ کر لیں:

اول:۔۔۔ مرزا کی طرف سے تمام آریوں کو دعوتِ مباہلہ۔

دوم:۔۔۔ اس مباہلہ کا اثر ظاہر ہونے کے لئے ایک سال کی میعاد۔

سوم:۔۔۔ ایک سال کے عرصے میں اگر فریق مخالف پر مباہلہ کا اثر ظاہر نہ ہو، یا اس عرصے میں مرزا پر مباہلہ کا وبال نازل ہو جائے دونوں صورتوں میں مرزا جھوٹا ثابت ہوگا۔  
 اس کے بعد مرزا نے اپنی طرف سے مباہلہ کا ایک لمبا چوڑا مضمون لکھا ہے۔ اس کے اخیر پر بھی یہ فقرہ ہے:

”سوائے خدائے قادرِ مطلق تو ہم دونوں فریقوں میں سچا فیصلہ کر اور ہم دونوں میں سے جو شخص اپنے بیانات میں اور اپنے عقائد میں جھوٹا ہے..... اس پر تو اے قادرِ کبیر! ایک سال تک کوئی اپنا عذاب نازل کر۔“ (ایضاً ص: ۲۵۳، ۲۵۵، ملخصاً)

اس کے بعد مرزا نے آریہ کی طرف سے دُعا کے مباہلہ لکھی ہے اور اس کے اخیر میں بھی یہ فقرہ ہے:

”جو شخص تیری نظر میں کاذب اور دروغ گو ہے..... اس کو اے ایشر! ایسے دُکھ کی مار پہنچا..... کہ ایک سال کے عرصے

تک لعنت کا اثر اس کو پہنچ جائے۔“ (ایضاً ص: ۲۵۸ ملخصاً)

قارئین کرام دیکھ رہے ہیں کہ ان دو اقتباسوں پر مباہلہ کے اثر ظاہر ہونے کے لئے ایک سال کی معیاد مقرر کی گئی ہے۔

پنڈت لیکھ رام، مرزا کی دعوت مباہلہ کو قبول کرتا ہے  
مرزا کی کتاب ”سرمہ چشم آریہ“ (جس کے اقتباس اوپر نقل کئے گئے ہیں) کے  
جواب میں پنڈت لیکھ رام نے ”نسخہ خط احمدیہ“ کے نام سے ایک کتاب لکھی (ریس قادیانی  
ج: ۱ ص: ۱۲۱) جس میں مرزا کی دعوت مباہلہ کو قبول کرتے ہوئے پنڈت لیکھ رام نے درج  
ذیل الفاظ میں مباہلہ شائع کیا:

”اے پریشور! ہم دونوں میں سچا فیصلہ کر، اور جو تیرا  
ست دھرم ہے اس کو نہ تلواری سے بلکہ پیار سے معقولیت اور دلائل کے  
اظہار سے جاری کر، اور مخالف کے دل کو اپنے ست گیان سے  
پرکاش کر، تاکہ جہالت و تعصب، اور جو روستم کا ناش ہو، کیونکہ کاذب  
صادق کی طرح کبھی تیرے حضور میں عزت نہیں پاسکتا۔ راقم: آپ کا  
ازلی بندہ، لیکھ رام شرما سبھاسد، آریہ سماج پشاور۔“ (نسخہ خط احمدیہ  
ص: ۳۲ بحوالہ ”لیکھ رام اور مرزا“ ص: ۴، مصنف مولانا ثناء اللہ امرتسری)

مرزا قادیانی نے مباہلہ میں ہار جانے کی صورت میں پانسو روپیہ ہرجانہ دینے کا  
وعدہ کیا تھا (جیسا کہ اوپر کے اقتباس میں آپ پڑھ چکے ہیں)۔ اس پنج صدی انعام کے  
جواب میں پنڈت لیکھ رام نے لکھا:

”مرزا جی نے اپنی قدیم عادت کے بموجب پانسو  
روپیہ دینے کا وعدہ کیا ہے، مگر ہم ان کے وعدے کو اس شعر کا  
مصدق سمجھتے ہیں:

گر جاں طلبی مضائقہ نیست  
گر زر طلبی سخن دریں است

ہمیں ان کی جائیداد منقولہ و غیر منقولہ کا حال بخوبی معلوم ہے، اور قرض داری کا حال بھی ہم سے مخفی نہیں، پس ہم لینے دینے کے سر پر خاک ڈال کر وہ پانسو روپیہ مرزا صاحب کو ان کی نئی شادی<sup>(۱)</sup> کے لئے، جس کے متعلق ان کو ابھی ایک تازہ الہام ہوا ہے، بطور تمبول کے نذر کرتے ہیں۔“

(نسخہ خط احمدیہ، بحوالہ رئیس قادیان ج: ۱ ص: ۱۴۱)

پنڈت لیکھ رام کے ان دو اقتباسات میں سے دو باتیں واضح ہوئیں:  
اول: ... پنڈت جی نے مرزا کا مباہلہ کا چیلنج قبول کر لیا۔

دوم: ... مرزا نے اپنے ہارنے کی صورت میں پانسو روپیہ ہرجانہ دینے کی جو پیشکش کی تھی، پنڈت جی نے اسے محض ”مرزا کا زبانی جمع خرچ“ تصور کرتے ہوئے اس سے دست برداری کا اعلان کر دیا، اور بطور طنز اس زمانے کے لحاظ سے یہ خطیر رقم مرزا کی ”نئی الہامی شادی“ کے لئے بطور نذرانہ معاف کر دی۔

مرزا قادیانی کی تصدیق کہ لیکھ رام نے مباہلہ منظور کر لیا

مندرجہ بالا بیانات اگرچہ بالکل واضح ہیں، لیکن قارئین کے مزید اطمینان کے لئے مناسب ہوگا کہ خود مرزا قادیانی کی تصدیق بھی مثبت کرادی جائے کہ اس نے ”سرمہ چشم آریہ“ میں آریوں کو جو دعوت مباہلہ دی تھی، پنڈت لیکھ رام نے اس کو منظور کر لیا تھا، سنئے! مرزا قادیانی لکھتا ہے:

”واضح ہو کہ میں نے ”سرمہ چشم آریہ“ کے خاتمے میں

بعض آریہ صاحبوں کو مباہلہ کے لئے بلایا تھا..... میری اس تحریر پر

(۱) ”نئی شادی“ سے پنڈت جی کا اشارہ محمدی بیگم کی طرف ہے، جس کے الہامات مرزا کو ان دنوں بکثرت ہو رہے تھے، بلکہ یہ بھی ”تازہ الہام“ ہوا تھا کہ: ”زوجہ نکھا“ یعنی ”اے مرزا! ہم نے اس سے تیرا نکاح آسمان پر کر دیا ہے“ لیکن افسوس کہ یہ تمام الہامات فضائے آسمانی میں تحلیل ہو کر رہ گئے اور مرزا جی، مصرعہ ”اے بسا آرزو کہ خاک شدہ“ گنگناتے ہوئے دنیا سے بے نیل و مرام رخصت ہوئے۔

پنڈت لیکھ رام نے اپنی کتاب ”خط احمدیہ“ میں جو ۱۸۸۸ء میں اس نے شائع کی تھی..... میرے ساتھ مباہلہ کیا۔ چنانچہ وہ اپنی کتاب ”خط احمدیہ“ کے صفحہ: ۳۴۴ میں بطور تمہید یہ عبارت لکھتا ہے:

چونکہ ہمارے مکرم و معظم ماسٹر مرلی دھر صاحب ونشی جیون داس صاحب بہ سبب کثرت کام سرکاری کے عدیم الفرصت ہیں، بنا براں اپنے اوتشاہ اور ان کے ارشاد سے اس خدمت کو بھی نیاز مند نے اپنے ذمہ لیا، پس کسی دانا کے اس مقولے پر کہ ”دروغ گورا تابد روازہ باید رسانید“ عمل کر کے مرزا صاحب کی اس آخری التماس کو بھی (یعنی مباہلہ کو) منظور کرتا ہوں۔“

### مضمون مباہلہ

”میں نیاز التیام لیکھ رام ولد پنڈت تارا سنگھ صاحب شرما مصنف ”تکذیب براہین احمدیہ“ و رسالہ ہذا (یعنی نسخہ خط احمدیہ) اقرار صحیح بدرستی ہوش و حواس کر کے کہتا ہوں کہ میں نے اوّل سے آخر تک رسالہ ”سرمہ چشم آریہ“ کو پڑھ لیا، اور ایک بار نہیں، بلکہ کئی بار اس کے دلائل کو بخوبی سمجھ لیا، بلکہ ان کے بطلان کو بروئے ست دھرم رسالہ ہذا میں شائع کیا، میرے دل میں مرزا جی کی دلیلوں نے کچھ بھی اثر نہیں کیا، اور نہ وہ راستی کے متعلق ہیں۔“ (آگے طویل مضمون کے بعد اخیر میں لکھا ہے)

”اے پر میشر! ہم دونوں فریقوں میں سچا فیصلہ کر، کیونکہ کاذب، صادق کی طرح کبھی تیرے حضور میں عزت نہیں پاسکتا۔“

”راقم آپ کا ازلی بندہ لیکھ رام شرما سبھاسد آریہ سماج پشاور، حال اڈیٹر گزٹ فیروز پور پنجاب۔“

(روحانی خزائن ج: ۲۲ ص: ۳۲۶ تا ۳۲۷ ملخصاً)



## مباہلہ کا انجام

مرزا اور لیکھ رام کے مباہلہ کی پوری کہانی قارئین کے سامنے آچکی ہے، قارئین بڑی بے چینی سے یہ جاننے کے منتظر ہوں گے کہ مباہلہ کی یہ جنگ کس نے جیتی؟ کس کی فتح ہوئی؟ کس کو ذلت آمیز شکست کا منہ دیکھنا پڑا؟

قارئین! نتیجہ کا اعلان سننے سے پہلے مباہلہ کی شرائط ایک بار پھر پڑھ لیجئے:

۱:۔۔۔ اگر مرزا کے حریف پر ایک سال میں عذاب نازل ہو تو مرزا کی فتح اور اس کے حریف کی شکست تصور کی جائے گی۔

۲:۔۔۔ مرزا کی شکست کی دو صورتیں ہوں گی، اور دونوں صورتوں میں مرزا اپنے حریف کو پانسو روپیہ جرمانہ دے گا۔

الف:۔۔۔ مرزا پر وبال نازل ہو تب بھی مرزا کی شکست اور اس کے حریف کی فتح۔  
ب:۔۔۔ اور اگر ایک سال کے اندر حریف پر وبال نازل نہ ہو تب بھی مرزا کی شکست اور حریف کی فتح۔

۳:۔۔۔ مباہلہ کی میعاد صرف ایک سال ہے جو تماشا ہو گا وہ اسی ایک سال میں ہو گا، اس کے بعد نہیں۔

قارئین! پنڈت لیکھ رام نے ۱۸۸۸ء میں مرزا کی دعوت مباہلہ منظور کی تھی۔ آپ سوچ کر بتائیں کہ اس پر کب تک عذاب نازل ہونا چاہئے تھا؟ آپ کا ایک ہی جواب ہو گا:  
۱۸۸۹ء کے آخر تک

لیکن افسوس! کہ ۱۸۸۹ء کے آخر تک لیکھ رام پر کوئی عذاب نازل نہیں ہوا، وہ مارچ ۱۸۹۷ء تک زندہ سلامت رہا۔

قارئین کرام خود فیصلہ فرمائیں کہ مباہلہ میں کس کی جیت ہوئی؟ اور مرزائیوں سے بھی دریافت کریں۔ فیصلہ خداوندی کے مطابق مرزا غلام احمد قادیانی پنڈت لیکھ رام سے بھی بدتر ثابت ہوا کہ مرزا کے مقابلے میں اللہ تعالیٰ نے اس کو فتح دی۔

## قادیانی جماعت کے امام مرزا طاہر احمد کے چیلنج کا جواب

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ  
الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَسَلَامٌ عَلٰی عِبَادِهِ الَّذِیْنَ اصْطَفٰی  
جرمنی کے قادیانیوں نے مسلمانوں کے نام مرزا طاہر احمد کا ایک چیلنج شائع کیا  
ہے، جس کا عنوان ہے:  
”حضرت مرزا طاہر احمد صاحب امام جماعت احمدیہ کا“  
”مخالفین کو چیلنج“

یہ ایک صفحے کی تحریر ہے، جس میں مرزا طاہر احمد صاحب نے اپنی عادت کے  
مطابق ”لعنة الله على الكاذبين“ کی خوب گردان کی ہے۔ ہمارے احباب نے ہمیں یہ  
پرچہ بھجوایا، اور ساتھ ہی ذکر کیا کہ اس چیلنج کے بل بوتے پر قادیانیوں نے یہاں اودھم مچا رکھا  
ہے، مناسب ہے کہ اس کا جواب لکھا جائے۔

ہم نے اسے پڑھا تو معلوم ہوا کہ یہ پوری تحریر جھوٹ کا پلندہ ہے، اور اس کا ایک  
ایک فقرہ غلط ہے۔ ایسا لگتا ہے کہ مرزا طاہر احمد صاحب نے اس چیلنج کو اپنے مخالفین کے  
سامنے پیش کرنے سے پہلے شاید موکد بہ عذاب حلف اٹھایا تھا کہ:  
”یا اللہ! آپ گواہ رہے کہ میں اس چیلنج میں ایک حرف  
بھی سچ نہیں لکھوں گا۔“

اور پھر اپنے حلف کو خوب خوب نبھایا۔ ہمیں مرزا طاہر صاحب کے رویے سے نہ  
تعجب ہے، نہ شکایت، اس لئے کہ ایک ”جھوٹے نبی“ کے جھوٹے نائب کو جیسا ہونا

چاہئے، مرزا طاہر صاحب اس کا کامل و مکمل مرقع ہے، مرزا غلام احمد کی ایک ایک بات جھوٹ تھی، حتیٰ کہ وہ کلمہ طیبہ ”لا الہ الا اللہ محمد رسول اللہ“ میں بھی جھوٹ بولتا تھا (قارئین کرام کی خدمت میں ان شاء اللہ اس کا دلچسپ ثبوت پیش کروں گا) اس لئے مرزا طاہر کی ایک صفحے کی تحریر کا اگر ایک ایک فقرہ غلط اور جھوٹ ہو تو ذرا بھی تعجب نہیں کہ یہ اس کے باپ دادا کی میراث ہے۔ البتہ قادیانی صاحبان پر قدرے تعجب ضرور ہے کہ انہوں نے دین تو مرزا طاہر صاحب کے قدموں میں نچھاور کیا ہی تھا، عقل کو بھی مرزا طاہر صاحب کی خاطر خیر باد کہہ دیا؟ شاید ان صاحبان نے شیخ سعدیؒ کی حکایت پر عمل کیا ہوگا:

اگر شہ روز را گوید کہ شب است ایں

بہ باید گفت اینک ماہ و پروین

بہر حال مرزا طاہر کی تحریر کا ایک ایک فقرہ حرف بہ حرف نقل کر کے اس کا جواب لکھتا ہوں، اور دنیا بھر کے اہل عقل کو منصف بناتا ہوں کہ مرزا طاہر کے الزام اور میرے جواب کو واقعات کی روشنی میں پڑھیں، تاکہ ان کے سامنے جھوٹے کا جھوٹ عالم آشکارا ہو جائے۔ یقین ہے کہ مرزا طاہر کے جھوٹے چیلنج کی حقیقت معلوم ہو جانے کے بعد اہل انصاف بے اختیار بول اٹھیں گے: ”لعنہ اللہ علی الکاذبین۔“

نوٹ: مرزا طاہر کی عبارت اقتباس کی شکل میں دے کر ”جواب“ کے لفظ سے اس پر تبصرہ کیا گیا ہے۔

محمد یوسف لدھیانوی

۱۴۱۶/۲/۲۲ھ

مرزا طاہر اپنے چیلنج میں لکھتا ہے:

۱:۔۔۔ ”ہم بڑے فخر سے کہتے ہیں کہ حضرت مسیح موعود

(مرزا قادیانی) رسول اللہ کی پیش گوئیوں کے مطابق امتی نبی تھے۔“

جواب:۔۔۔ مرزا غلام احمد قادیانی کو آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی پیش گوئیوں کا

مصدق کہنا مرزا طاہر کا سب سے بڑا جھوٹ ہے، کیونکہ مرزا قادیانی پر آنحضرت صلی اللہ

علیہ وسلم کی پیش گوئیوں کا ایک حرف بھی صادق نہیں آتا، بطور مثال مرزا طاہر کے والد مرزا

محمود کی کتاب ”حقیقۃ النبوة“ ص: ۱۹۲ سے آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی پیش گوئی نقل

کرتا ہوں، جس کا ترجمہ خود مرزا محمود کے قلم سے درج ذیل ہے:

”انبیاء علاقہ بھائیوں کی طرح ہوتے ہیں، ان کی مائیں

تو مختلف ہوتی ہیں اور دین ایک ہوتا ہے، اور میں عیسیٰ بن مریم سے

سب سے زیادہ تعلق رکھنے والا ہوں، کیونکہ اس کے اور میرے

درمیان کوئی نبی نہیں، اور وہ نازل ہونے والا ہے۔ پس جب اسے

دیکھو تو پہچان لو، کہ وہ درمیانہ قامت، سرخی سفیدی ملا ہوا رنگ، زرد

رنگ کے کپڑے پہنے ہوئے، اس کے سر سے پانی ٹپک رہا ہوگا، گو سر

پر پانی نہ ہی ڈالا ہو، اور وہ صلیب کو توڑے گا، اور خنزیر کو قتل کرے گا،

اور جزیہ ترک کر دے گا، اور لوگوں کو اسلام کی طرف دعوت دے گا،

اس کے زمانہ میں سب مذاہب ہلاک ہو جائیں گے اور صرف اسلام

رہ جائے گا، اور شیر اونٹوں کے ساتھ، اور چیتے گائے بیلوں کے

ساتھ اور بھیڑیے بکریوں کے ساتھ چرتے پھریں گے، اور بچے

سانپوں سے کھیلیں گے، اور وہ ان کو نقصان نہ دیں گے، عیسیٰ بن

مریم چالیس سال رہیں گے، اور پھر فوت ہو جائیں گے، اور مسلمان

ان کے جنازہ کی نماز پڑھیں گے۔“ (حقیقۃ النبوة ص: ۱۹۲)

اس پیش گوئی کو مرزا کے حالات سے ملائیے اور دیکھئے کہ کیا اس پیش گوئی کا ایک حرف بھی مرزا قادیانی پر صادق آتا ہے؟ نہیں! ہرگز نہیں!!

ذرا درج ذیل سوالات پر غور کیجئے!

۱: کیا مرزا عیسیٰ بن مریم تھا؟ نہیں!

۲: کیا مرزا سرخ و سفید رنگت کا تھا؟ نہیں! (اگر مرزا طاہر کو یقین نہ آئے تو

آئینہ میں اپنی شکل دیکھ لیں، اور اندازہ کر لیں کہ ان کا دادا بھی ایسا ہی ہوگا)۔

۳: کیا مرزا زرد رنگ کے کپڑے پہنے ہوئے نازل ہوا تھا؟ نہیں!

۴: کیا اس کے سر سے پانی ٹپک رہا تھا؟ نہیں!

۵: کیا مرزا نے صلیب توڑ دی؟ نہیں!

۶: کیا خنزیر کو قتل کر دیا؟ نہیں!

۷: کیا مرزا کے زمانے میں اسلام کے سوا سارے مذاہب مٹ گئے، صرف

اسلام باقی رہ گیا؟ نہیں!

۸: کیا مرزا کے زمانے میں کسی نے شیر کو اونٹوں کے ساتھ، چیتے کو گائے بیلوں

کے ساتھ اور بھیڑیوں کو بکریوں کے ساتھ چرتے دیکھا؟ نہیں!

۹: کیا کسی نے قادیانی بچوں کو سانپوں کے ساتھ کھیلنے دیکھا؟ نہیں!

۱۰: کیا مرزا دعویٰ مسیحیت کے بعد چالیس سال زمین پر ٹھہرا؟ نہیں!

(بلکہ اس نے ۱۸۹۱ء میں مسیح ہونے کا دعویٰ کیا، اور ۲۶ مئی ۱۹۰۸ء کو مرگیا،

مدت قیام کل ۱۷ سال، ۴ مہینے، ۲۵ دن۔)

۱۱: کیا مسلمانوں نے اس کی نماز جنازہ پڑھی؟ نہیں!

معلوم ہوا کہ مرزا، آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی پیش گوئیوں کا مصداق نہیں تھا،

لہذا مرزا کا دعویٰ بھی جھوٹا، اور مرزا طاہر کا اس پر فخر بھی جھوٹا۔ اب وہ اپنے حق میں اپنے دادا

کے حق میں اور اس جھوٹے کو ماننے والوں کے حق میں جتنی بار چاہیں: "لعنة الله على



الکاذبین“ پڑھ لیں۔

۲: ”رسول اللہ کی پیش گوئیاں لازماً سچی ہیں۔“

جواب: ... آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی پیش گوئیاں بلاشبہ سچی ہیں، برحق ہیں، اور ہر مسلمان ان پر ایمان رکھتا ہے۔ لیکن مرزا طاہر کا آپ صلی اللہ علیہ وسلم کی پیش گوئیوں کو سچی کہنا اس کا جھوٹ ہے: ”واللہ یشہد ان المنافقین لکاذبون“ اس لئے کہ اگر وہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی اس پیش گوئی کو، جو ابھی نمبر ایک میں نقل کی گئی، سچی سمجھتا تو اپنے دادا مرزا غلام احمد کو ہرگز مسیح موعود نہ سمجھتا، بلکہ اس پر سو سو بار لعنت بھیجتا۔

اب آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی ایک اور پیش گوئی ملاحظہ فرمائیں:

”آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کا ارشاد ہے کہ حضرت عیسیٰ

علیہ السلام نازل ہونے کے بعد شادی کریں گے، اور ان کے اولاد

ہوگی، یتزوج ویولد لہ۔“ (مشکوٰۃ ص: ۴۸۰)

مرزا غلام احمد لکھتا ہے کہ اس پیش گوئی میں شادی سے خاص شادی اور اولاد سے خاص اولاد مراد ہے جو بطور نشان کے ہوگی، یعنی محمدی بیگم سے مرزا کی شادی ہوگی اور اس سے خاص اولاد پیدا ہوگی۔ (ملخصاً حاشیہ ضمیمہ انجام آقہم ص: ۵۳، روحانی خزائن ج: ۱۱ ص: ۳۳۷) دنیا جانتی ہے کہ مرزا کی محمدی بیگم سے یہ شادی نہیں ہوئی، اس سے خاص اولاد کے پیدا ہونے کا کیا سوال؟ نہ رہے بانس نہ بچے بانسری!

اگر مرزا طاہر آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی اس پیش گوئی کو سچی سمجھتا تو لازماً مرزا غلام احمد کو جھوٹا جانتا، کیونکہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی پیش گوئی مرزا قادیانی کے حق میں پوری نہیں ہوئی۔

معلوم ہوا کہ مرزا طاہر کو آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی پیش گوئیوں پر ایمان نہیں، اور اس کا یہ دعویٰ جھوٹا ہے کہ ”آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی پیش گوئیاں لازماً سچی ہیں۔“ اب وہ جتنی بار چاہے اپنے لئے ”لعنة الله على الكاذبين“ کا وظیفہ پڑھے، اور قادیانیوں

کو بھی چاہئے کہ مرزا طاہر کے حق میں یہ وظیفہ دن رات پڑھا کریں۔  
 ۳: ”کوئی مسیح سچا آ نہیں سکتا جب تک نبی اور رسول  
 ہونے کا دعویٰ نہ کرے۔“

جواب: ... حضرت عیسیٰ علیہ السلام جب نازل ہوں گے تو سب کو معلوم ہوگا کہ  
 یہ وہی عیسیٰ بن مریم رسول اللہ ہیں جو بنی اسرائیل کی طرف مبعوث ہوئے تھے، اس لئے نہ  
 ان کو نبوت و رسالت کا دعویٰ کرنے کی ضرورت ہوگی، نہ اپنی رسالت و نبوت منوانے کے  
 لئے کاغذی پتنگ اڑانے کی حاجت ہوگی۔ چنانچہ کسی حدیث سے ثابت نہیں کہ حضرت عیسیٰ  
 علیہ السلام نازل ہونے کے بعد یہ دعویٰ کریں گے:

”يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا“

معلوم ہوا کہ مرزا قادیانی کا رسالت و نبوت کے دعوے کرنا خالص جھوٹ تھا،  
 اور مرزا طاہر کا یہ کہنا کہ ”سچا مسیح نہیں آ سکتا جب تک کہ وہ رسول اور نبی ہونے کا دعویٰ نہ  
 کرے۔“ یہ بھی نرا جھوٹ ہے۔

اب اس جھوٹ پر مرزا طاہر اپنے اور اپنے دادا کے حق میں جتنی بار چاہے ”لعنة  
 الله على الكاذبين“ کا وظیفہ پڑھا کرے۔

۴: ... مرزا طاہر کی مندرجہ بالا عبارت سے یہ بھی معلوم ہوا کہ اس کے دادا (مرزا  
 غلام احمد قادیانی) نے نبی و رسول ہونے کا دعویٰ کیا۔

ادھر مرزا قادیانی کہتا ہے کہ مدعی نبوت ملعون ہے، کاذب ہے، کافر ہے اور دائرۃ  
 اسلام سے خارج ہے، چنانچہ اپنے اشتہار ۲۰ شعبان ۱۳۱۴ھ (مطابق ۲۵ جنوری  
 ۱۸۹۷ء) میں لکھتا ہے:

”ان پر واضح رہے کہ ہم بھی مدعی نبوت پر لعنت بھیجتے

ہیں۔“ (مجموعہ اشتہارات ج: ۲ ص: ۲۹۷)

۲ اکتوبر ۱۸۹۱ء کے اشتہار میں لکھتا ہے:

”سیدنا و مولانا محمد مصطفیٰ صلی اللہ علیہ وسلم ختم المرسلین کے بعد کسی دوسرے مدعی نبوت و رسالت کو کاذب اور کافر جانتا ہوں۔“  
(مجموعہ اشتہارات ج: ۱ ص: ۲۳۰)

اور اپنے رسالہ ”آسمانی فیصلہ“ میں لکھتا ہے:  
”میں نبوت کا مدعی نہیں، بلکہ ایسے مدعی کو اسلام سے خارج سمجھتا ہوں۔“  
(آسمانی فیصلہ ص: ۳)

گویا مرزا طاہر کے جھوٹے عقیدے کے مطابق اس کا دادا چونکہ مدعی نبوت تھا اس لئے ملعون تھا، کاذب تھا، کافر تھا اور دائرۃ اسلام سے خارج تھا۔ مرزا طاہر کو چاہئے کہ ایسے کاذب و کافر اور ملعون پر صبح و شام ایک ایک تسبیح ”لعنة الله على الكاذبين“ کی پڑھا کرے۔

۵: ”جب مباہلہ کا چیلنج دیں تو اس وقت تو یہ ہزار بہانے بنا کر بھاگتے ہیں۔“

جواب: .... یہ مرزا طاہر کا سفید جھوٹ ہے کہ ان کے مخالفین ان کا چیلنج قبول نہیں کرتے، بلکہ بہانے بنا کر بھاگ جاتے ہیں۔ امید ہے کہ اس سفید جھوٹ پر ان کو قادیانی بھی ہزار بار ”لعنة الله على الكاذبين“ کا تحفہ دیں گے۔

واقعہ یہ ہے کہ مرزا طاہر نے جون ۱۹۸۸ء میں مسلمانوں کو مباہلہ کا چیلنج دیا تھا، مسلمانوں نے اس چیلنج کو علی الاعلان قبول کیا، لیکن ”مرزا بھاگ گیا۔“ خود راقم الحروف کے نام بھی مرزا طاہر نے مباہلہ کے چیلنج کی ایک کاپی بھجوائی تھی، میں نے مرزا طاہر کے چیلنج کو قبول کرتے ہوئے ان کو لکھا کہ تمہارے ذمہ مباہلوں کا جو پچاس سالہ قرضہ ہے، پہلے تو اس کو ادا کیجئے۔ اور پھر وقت اور تاریخ کا اور جگہ کا تعین کر کے مجھے اطلاع فرمائیے، آپ جہاں کہیں گے، اور جب کہیں گے مباہلہ کے لئے حاضر ہو جاؤں گا، میرا یہ جواب ”مرزا طاہر کے نام“ سے چھپا ہوا موجود ہے، جس میں میں نے جلی قلم سے لکھا تھا:

”آئیے! اس فقیر کے مقابلہ میں میدان مباہلہ میں قدم رکھئے، اور پھر میرے مولائے کریم کی عزت و جلال اور قہری تجلّی کا کھلی آنکھوں سے تماشا دیکھئے۔ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے نصاریٰ نجران کے بارے میں فرمایا تھا کہ اگر وہ مباہلہ کے لئے نکل آتے تو ان کے درختوں پر ایک پرندہ بھی زندہ نہ بچتا۔ آئیے! آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے ایک ادنیٰ امتی کے مقابلے میں میدان مباہلہ میں نکل کر آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی ختم نبوت کا اعجاز ایک بار پھر دیکھ لیجئے۔“

مجھے یقین تھا کہ مرزا طاہر، محمد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے کسی ادنیٰ غلام کے مقابلہ میں بھی میدان مباہلہ میں اترنے کی کبھی جرأت نہیں کر سکتا، کیونکہ اس کو سو فیصد یقین ہے کہ وہ خود بھی، اس کا باپ بھی، اس کا دادا بھی، سب کے سب جھوٹے ہیں، اس لئے میں نے مرزا طاہر کی غیرت کو لاکارتے ہوئے مزید لکھا تھا:

”اس ناکارہ کا خیال ہے کہ آپ آگ کے اس سمندر میں کودنا کسی حال میں قبول نہیں کریں گے، اپنے باپ دادا کی طرح ذلت کی موت مرنا تو پسند کریں گے، لیکن آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے اس نالائق امتی کے مقابلہ میں میدان مباہلہ میں اترنے کی جرأت نہیں کریں گے۔“

مرزا طاہر کو اگر ذرا بھی غیرت ہوتی اور اس کو اپنی سچائی کا ذرا بھی خیال ہوتا تو میرے ان الفاظ کو پڑھ کر ممکن نہیں تھا کہ کم از کم میرے اس دعوے ہی کو جھوٹا ثابت کرنے کے لئے میدان مباہلہ میں نہ آتا، لیکن اللہ تعالیٰ نے اپنے محبوب صلی اللہ علیہ وسلم کے طفیل آپ کے ایک نالائق امتی کے الفاظ کی لاج رکھ لی، مرزا طاہر نے ذلت کی موت مرنا تو پسند کیا مگر اس نے میدان مباہلہ میں اترنے کی جرأت نہیں کی، اس طرح

میری پیش گوئی سچی نکلی۔

میرے اس خط کے جواب میں مرزا طاہر کے سیکرٹری کا جواب آیا کہ مباہلہ کے لئے میدان مباہلہ میں آمنے سامنے آنے کی ضرورت نہیں، تم بھی گھر بیٹھے مرزا طاہر کی طرح ”لعنة الله على الكاذبين“ کی پتنگ بازی کرتے رہو، بس اسی کا نام مباہلہ ہے۔

اس کے جواب میں اس ناکارہ نے ”مرزا طاہر پر اتمام حجت“ نامی رسالہ شائع کیا۔ جس میں قرآن و حدیث اور خود مرزا غلام احمد کی تحریروں سے ثابت کیا کہ مباہلہ کا مسنون اور صحیح طریقہ یہ ہے کہ دونوں فریق ایک میدان میں جمع ہوں اور مل کر ”لعنة الله على الكاذبين“ کہیں۔ میں نے اس رسالہ میں مرزا غلام احمد کی درج ذیل تحریر کا بھی حوالہ دیا کہ:

”اور میں پھر ان سب کو اللہ جل شانہ کی قسم دیتا ہوں کہ مباہلہ کے لئے تاریخ اور مقام مقرر کر کے جلد میدان مباہلہ میں آویں، اور اگر نہ آئے، اور نہ تکفیر و تکذیب سے باز آئے تو خدا کی لعنت کے نیچے مریں گے۔“

(انجام آتھم ص: ۶۹، روحانی خزائن ج: ۱۱ ص: ۶۹)

میں نے مرزا طاہر کو یہ بھی لکھا کہ اگر آپ پاکستان نہیں آ سکتے تو میں آپ کو سفر کی زحمت نہیں دیتا، چلئے اپنے ”لندن فی اسلام آباد“ ہی کو میدان مباہلہ قرار دے کر تاریخ کا اعلان کر دیجئے:

”یہ فقیر آپ کے مستقر پر حاضر ہو جائے گا۔ اور جتنے رفقا آپ فرمائیں گے، لاکھ دو لاکھ، دس بیس لاکھ، اپنے ساتھ لے آئے گا... دیکھئے! اب میں نے آپ کا کوئی عذر نہیں چھوڑا، اب آپ کو آپ کے دادا کے الفاظ میں غیرت دلاتا ہوں کہ:

”آپ کو اللہ جل شانہ کی قسم دیتا ہوں کہ مباہلہ کے لئے



تاریخ و مقام مقرر کر کے جلد مباہلہ کے میدان میں آویں، ورنہ خدا کی لعنت کے نیچے مریں گے۔“

میرے اس چیلنج کو سات سال گزر رہے ہیں، لیکن مرزا طاہر کو اب تک جرأت نہیں ہوئی کہ اس چیلنج کو قبول کر لے، میں آج تک اس کے جواب کا منتظر ہوں، لیکن وہ آج تک خدا کی لعنت کے نیچے ہے۔ اور ان شاء اللہ اسی خدائی لعنت کے نیچے مرے گا۔

مگر شاباش! مرزا طاہر کی اس غیرت و حیا پر کہ خود مباہلے سے راہ فرار اختیار کرتا پھرتا ہے اور دوسروں پر بھاگنے کا جھوٹا الزام لگاتا ہے۔ مرزا طاہر کو چاہئے کہ اپنے اس جھوٹ پر صبح و شام ”لعنة الله على الكاذبين“ پڑھا کرے۔ مرزا طاہر کی جماعت کے لوگوں کو چاہئے کہ میرے ان دونوں رسالوں ”مرزا طاہر کے جواب میں“ اور ”مرزا طاہر پر آخری اتمام حجت“ کا مطالعہ فرمائیں۔ اگر توفیق الہی دستگیری کرے تو مسلمان ہو جائیں، اور اگر اسلام ان کی قسمت میں نہیں تو کم سے کم مرزا طاہر کو مباہلہ پر آمادہ کر کے اسے خدائی لعنت کے نیچے سے نکالیں، ورنہ مرزا طاہر کے لئے صبح و شام ۳۱۳ مرتبہ ”لعنة الله على الكاذبين“ کا وظیفہ کم سے کم چالیس دن تو ضرور پڑھ لیں۔

۶:۔۔۔ ”یہ کہتے ہیں کہ جماعت احمدیہ انگریز کا خود کاشتہ

پودا ہے.... میں کہتا ہوں کہ یہ جھوٹ ہے۔ لعنة الله على الكاذبين۔“

جواب:۔۔۔ یہ جھوٹ خود مرزا طاہر کے دادا مرزا غلام احمد کا ہے۔ اس نے گورنمنٹ برطانیہ سے کہا تھا کہ میرا خاندان پچاس سال سے ٹوڈی اور انگریز کا خدمت گار چلا آتا ہے، لہذا گورنمنٹ:

”اس خود کاشتہ پودا کی نسبت نہایت حزم اور احتیاط اور تحقیق اور توجہ سے کام لے، اور اپنے ماتحت حکام کو اشارہ فرمائے کہ وہ اس خاندان کی ثابت شدہ وفاداری اور اخلاص کا لحاظ رکھ کر

مجھے اور میری جماعت کو ایک خاص عنایت اور مہربانی کی نظر سے دیکھیں۔“ (مجموعہ اشتہارات ج: ۳ ص: ۲۱)

اس عبارت میں مرزا قادیانی نے اپنے ”خود کاشتہ پودا“ ہونے کا اقرار کیا ہے اور اس کے حوالے سے اپنے لئے اور اپنی جماعت کے لئے انگریز سے ”خاص نظر عنایت“ اور مہربانی کی بھیک مانگی ہے۔ اب اگر یہ جھوٹ ہے تو مرزا طاہر اپنے دادا کا نام لے کر شوق سے کہیں: ”جھوٹے پر خدا کی لعنت۔“ اور قادیانی بھی مرزا طاہر کے ساتھ مل کر کہیں: ”لعنة الله على الكاذبين۔“

۷:۔۔۔ ”یہ کہتے ہیں کہ انہوں نے اسلامی جہاد منسوخ کر دیا میں کہتا ہوں کہ یہ جھوٹ ہے۔ لعنة الله على الكاذبين۔“  
جواب:۔۔۔ اسلامی جہاد کے منسوخ ہونے کا جھوٹ بھی مرزا غلام احمد نے بولا تھا، چنانچہ اس نے لکھا تھا کہ:

”حدیث میں ہے کہ مسیح کے وقت میں جہاد کا حکم منسوخ کر دیا جائے گا۔“ (تجلیات الہیہ ص: ۸ ملخصاً)  
اگر یہ جھوٹ ہے تو مرزا طاہر شوق سے اپنے دادا کا نام لے کر کہے کہ: ”جھوٹے پر خدا کی لعنت۔“ ”لعنة الله على الكاذبين۔“

۸:۔۔۔ ”یہ کہتے ہیں حضرت مسیح موعود (مرزا قادیانی) نے (ژرگز) کی تعلیم دی۔ میں کہتا ہوں یہ جھوٹ ہے۔ لعنة الله على الكاذبين۔“

جواب:۔۔۔ یہ مرزا طاہر کا سفید جھوٹ ہے۔ کسی مسلمان نے ایسا نہیں کہا، البتہ مسلمان یہ کہتے ہیں کہ مرزا غلام احمد پلو مرکی دکان سے ٹانک وائن منگواتا تھا۔

(خطوط امام بنام غلام ص: ۵)

اب اپنے اس جھوٹ پر مرزا طاہر شوق سے نعرہ بلند کریں کہ: ”جھوٹے پر خدا کی

لعنت۔“ اور قادیانی صاحبان بھی مرزا طاہر کی آواز میں آواز ملا کر کہیں: ”لعنة الله على الكاذبين“۔

۹:۔۔۔” یہ کہتے ہیں کہ آپ نے پچاس کتابیں اسلام کے خلاف لکھیں، میں کہتا ہوں یہ جھوٹ ہے۔ لعنة الله على الكاذبين“۔

جواب:۔۔۔ یہ بھی مرزا طاہر کا جھوٹ ہے، مرزا کی پچاس کتابیں کسی مسلمان نے نہیں لکھیں، البتہ مسلمان، مرزا غلام احمد کے اس اقرار کا حوالہ ضرور دیتے ہیں کہ: ”میری عمر کا اکثر حصہ اس سلطنت انگریزی کی تائید اور حمایت میں گزرا ہے، اور میں نے ممانعت جہاد اور انگریزی اطاعت کے بارے میں اس قدر کتابیں لکھی ہیں اور اشتہار شائع کئے ہیں کہ اگر وہ رسائل اور کتابیں اکٹھی کی جائیں تو پچاس الماریاں ان سے بھر سکتی ہیں۔“ (تریاق القلوب ص: ۱۵، روحانی خزائن ج: ۱۵ ص: ۱۵۵)

انگریز، اسلام کا بدترین دشمن تھا، ایسے دشمن اسلام کی تائید و حمایت کرنا، جہاد کی ممانعت کا فتویٰ دینا، اور انگریزی اطاعت کا درس دینا اسلام دشمنی تھی، مرزا غلام احمد کہتا ہے کہ اس نے اپنی عمر کا اکثر حصہ اسی اسلام دشمنی میں گزارا، اور اس نے رسالے اور کتابیں لکھ لکھ کر ”پچاس الماریاں“ بھر ڈالیں۔

مرزا طاہر اور اس کے ساتھ تمام قادیانی بڑی سریلی آواز میں یہ گیت گائیں: ”ایسے دشمن اسلام پر خدا کی لعنت۔“ ”لعنة الله على الكاذبين“۔

۱۰:۔۔۔” یہ کہتے ہیں کہ ان کی وفات ناپاک حالت میں

ہوئی۔ میں کہتا ہوں یہ جھوٹ ہے۔ لعنة الله على الكاذبين“۔

جواب:۔۔۔ ناپاک حالت سے شاید ہیضہ کی موت مراد ہے، جس میں دونوں راستوں سے نجاست خارج ہوتی ہے۔ مرزا قادیانی کی موت واقعی وبائی ہیضہ سے واقع

ہوئی، چنانچہ اس کے مرض الموت کے بارے میں دست اور قے کی روایت تو مرزا طاہر کے چچا مرزا بشیر احمد نے سیرۃ المہدی میں مرزا طاہر کی دادی کے حوالے سے درج ذیل نقل کی ہے:

”حضرت مسیح موعود (مرزا قادیانی) کو پہلا دست کھانا کھانے کے وقت آیا تھا... لیکن کچھ دیر کے بعد آپ کو پھر حاجت محسوس ہوئی، اور غالباً ایک یا دو دفعہ رفع حاجت کے لئے آپ پاخانہ تشریف لے گئے، اس کے بعد آپ نے زیادہ ضعف محسوس کیا تو اپنے ہاتھ سے مجھے جگایا، میں اٹھی تو آپ کو اتنا ضعف تھا کہ آپ میری چارپائی پر ہی لیٹ گئے... اتنے میں آپ کو ایک اور دست آیا... اس کے بعد ایک اور دست آیا، اور پھر آپ کو ایک قے آئی... اور حالت دگرگوں ہو گئی۔“ (سیرۃ المہدی ج: ۱ ص: ۱۱، ۱۲)

اور یہ دست اور قے کی بیماری وبائی ہیضہ تھا، چنانچہ شیخ یعقوب علی عرفانی نے ”حیات ناصر“ میں میر ناصر نواب کے حوالے سے خود مرزا غلام احمد قادیانی سے نقل کیا ہے کہ:

”حضرت صاحب (مرزا قادیانی) جس رات کو بیمار ہوئے اس رات، میں اپنے مقام پر جا کر سوچکا تھا۔ جب آپ کو بہت تکلیف ہوئی تو مجھے جگایا گیا تھا، جب میں حضرت صاحب (مرزا قادیانی) کے پاس پہنچا اور آپ کا حال دیکھا تو آپ نے مجھے مخاطب کر کے فرمایا ”میر صاحب! مجھے وبائی ہیضہ ہو گیا ہے۔“ اس کے بعد کوئی ایسی صاف بات میرے خیال میں نہیں فرمائی، یہاں تک کہ دوسرے روز دس بجے کے بعد آپ کا انتقال ہو گیا۔“ (حیات ناصر ص: ۱۴)

مرزا طاہر صاحب! آپ کے دادا مرزا قادیانی کا ”وبائی ہیضہ“ کی بیماری سے

انتقال کرنا اور دونوں راستوں سے نجاست کا خارج ہونا ہمارا الزام نہیں، بلکہ یہ آپ کے اپنے گھر کی روایت ہے اور اس کے راوی: ۱- آپ کے چچا۔ ۲- آپ کی دادی۔ ۳- دادی کے ابا اور ۴- خود آپ کے دادا۔ اگر یہ سب لوگ جھوٹے تھے تو ان کا نام لے کر صبح و شام ”لعنة الله على الكاذبين“ کا وظیفہ پڑھا کیجئے۔

میں نے اپنے رسالہ ”مرزا طاہر کے نام“ میں آپ کو چیلنج کیا تھا کہ:  
 ”کیا آپ یہ دعا کرنے کی جرأت کریں گے کہ آپ کو  
 آپ کے باپ اور دادا جیسی موت نصیب ہو؟“

اور پھر اپنے دوسرے رسالہ ”مرزا طاہر پر آخری اتمام حجت“ میں میں نے یاد دہانی کراتے ہوئے لکھا تھا:

”آپ نے میرا یہ چیلنج بھی قبول نہیں کیا، اور شاید آپ کو اس کی جرأت بھی نہ ہوگی کہ میرے سوال کا جواب اخباروں میں چھاپ کر دنیا کو ایک نیا تماشا شائے عبرت دیکھنے کا موقع فراہم کریں۔“  
 مرزا طاہر صاحب! اگر آپ کے باپ اور دادا کو موت ناپاک حالت میں نہیں ہوئی تو یہ دعا اخباروں اور رسالوں میں کیوں نہیں چھاپ دیتے کہ:

”یا اللہ! مجھے میرے باپ اور دادا جیسی موت نصیب فرما۔“

مرزا طاہر صاحب! آپ یہ دعا کبھی شائع نہیں کریں گے، کیونکہ آپ کو معلوم ہے کہ آپ کے باپ اور دادا کی موت ناپاک حالت میں ہوئی۔ یقیناً آپ خود بھی ان کو جھوٹا اور ان کی موت کو عبرت کا نشان سمجھتے ہیں۔ اس لئے کوئی مضائقہ نہیں کہ آپ اپنے جھوٹے باپ دادا کا نام لے کر ان پر ”لعنة الله على الكاذبين“ کا نعرہ بلند کیا کریں۔

۱۱:۔۔۔ ”یہ کہتے ہیں کہ آپ نے نبی رسول اور عیسیٰ ہونے کا

دعویٰ کیا، میں کہتا ہوں یہ سچ ہے۔ اللہ بچوں پر رحمت فرمائے۔“

جواب:۔۔۔ مرزا طاہر کا یہ سچ خالص جھوٹ ہے، کیونکہ اوپر جھوٹ نمبر: ۴ کے



ذیل میں لکھ چکا ہوں کہ مرزا مدعی نبوت کو کافرو کاذب اور دائرۃ اسلام سے خارج قرار دیتا ہے۔ جہاں تک عیسیٰ ہونے کے دعویٰ کا تعلق ہے، یہ بھی مرزا قادیانی کے بقول جھوٹ ہے، کیونکہ وہ لکھتا ہے:

”اس عاجز نے جو مثیل موعود ہونے کا دعویٰ کیا ہے جس کو کم فہم لوگ مسیح موعود خیال کر بیٹھے ہیں... میں نے یہ دعویٰ ہرگز نہیں کیا کہ میں مسیح بن مریم ہوں، جو شخص یہ الزام میرے پر لگاوے وہ سراسر مفتری اور کذاب ہے۔“

(ازالہ اوہام ص: ۱۹۰، روحانی خزائن ج: ۳ ص: ۱۹۲)

پس مرزا طاہر خود اپنے دادا کے فتویٰ کے مطابق مفتری اور کذاب ہے۔ سب کہیں ”جھوٹے پر خدا کی لعنت۔“ اور قادیانی صاحبان بھی مرزا طاہر کا نام لے کر بلند آواز سے کہیں: ”لعنة الله على الكاذبين۔“

۱۲: ”یہ کہتے ہیں کہ اللہ کے متعلق حضرت مسیح موعود

(مرزا قادیانی) نے لکھا ہے، شادی کرتا ہے، اور تعلقات جنسی قائم

کرتا ہے۔ میں کہتا ہوں کہ یہ جھوٹ ہے۔“

جواب: ... یہ بھی مرزا طاہر کا سفید جھوٹ ہے۔ کسی مسلمان نے یہ نہیں کہا۔

البتہ مسلمان یہ کہتے ہیں کہ مرزا کے ایک نام نہاد صحابی قاضی یار محمد نے اپنے رسالہ ”اسلامی قربانی“ میں لکھا ہے:

”حضرت مسیح موعود (مرزا قادیانی) نے ایک موقع پر اپنی

حالت یہ ظاہر فرمائی کہ کشف کی حالت آپ پر اس طرح طاری ہوئی

کہ گویا آپ عورت ہیں اور اللہ تعالیٰ نے رجولیت کی طاقت کا اظہار

فرمایا۔ سمجھے والے کے لئے اشارہ کافی ہے۔“

(ٹریکٹ ۳۴ اسلامی قربانی ص: ۱۴)

ہمارے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے تو سب صحابہ کرام عادل اور ثقہ ہیں، اگر مرزا طاہر کے نزدیک مرزا غلام احمد کا یہ صحابی جھوٹا ہے تو مرزا طاہر شوق سے کہیں کہ ”ایسے جھوٹے صحابی اور اس کے جھوٹے نبی پر خدا کی لعنت۔“ اور قادیانی صاحبان بھی مرزا طاہر کی لے میں لے ملا کر کہیں: ”لعنة الله على الكاذبين۔“

۱۳:۔۔۔ ”اور یہ بھی لکھا ہے کہ اللہ تعالیٰ برٹش تھا اور برٹش

ہونے کی حیثیت سے انگریزی بولتا تھا۔ میں کہتا ہوں یہ جھوٹ ہے:

لعنة الله على الكاذبين۔“

جواب:۔۔۔ یہ قطعاً جھوٹ ہے کہ کسی مسلمان نے اللہ تعالیٰ کو (نعوذ باللہ) انگریز

کہا ہو، البتہ مرزا طاہر کا دادا مرزا غلام احمد لکھتا ہے:

”پھر بعد اس کے بہت ہی زور سے جس سے بدن کانپ

گیا، یہ الہام ہوا:

”وی کین وہٹ وی ول ڈو“ اس وقت ایک ایسا لہجہ اور

تلفظ معلوم ہوا کہ گویا ایک انگریز ہے جو سر پر کھڑا ہوا بول رہا ہے۔“

(تذکرہ ص: ۶۴ طبع چہارم)

اس عبارت میں مرزا نے اللہ تعالیٰ کے بارے میں کہا ہے کہ وہ گویا انگریز ہے،

اور انگریزی بولتا ہے، چونکہ یہ مرزا طاہر کے نزدیک جھوٹ ہے، لہذا اس جھوٹ پر مرزا طاہر

اپنے دادا مرزا غلام احمد پر جتنی بار چاہے ”لعنة الله على الكاذبين“ پڑھے۔

۱۴:۔۔۔ ”کہتے ہیں کہ اللہ نے آپ پر (کرس) کیا، میں

کہتا ہوں یہ جھوٹ ہے، لعنة الله على الكاذبين۔“

جواب:۔۔۔ یہ بھی مرزا طاہر کا مسلمانوں پر غلط الزام ہے، یہ تحفہ تو وہ مرزا غلام

احمد کی خدمت میں خود پیش کرتے ہیں، جیسا کہ گزشتہ نمبروں سے معلوم ہو چکا ہے، چنانچہ

اوپر گزر چکا ہے کہ:

\*...: مرزا طاہر کہتے ہیں کہ مرزا غلام احمد نے نبوت کا دعویٰ کیا، ادھر مرزا غلام احمد لکھتا ہے کہ ”ہم بھی مدعی نبوت پر لعنت بھیجتے ہیں۔“ اب مرزا طاہر کے عقیدے کے مطابق مرزا غلام احمد ملعون ہوا۔

\*...: مرزا طاہر کہتے ہیں کہ مرزا غلام احمد نے نبوت و رسالت کے دعوے کئے، ادھر مرزا غلام احمد لکھتا ہے کہ ”آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم خاتم النبیین کے بعد جو شخص نبوت و رسالت کے دعوے کرے وہ کافر و کاذب اور دائرۃ اسلام سے خارج ہے۔“ اور کافروں اور جھوٹوں کا ملعون ہونا سب کو معلوم ہے، لہذا مرزا طاہر کے عقیدے کے مطابق مرزا غلام احمد ملعون ہوا۔

\*...: مرزا طاہر کہتے ہیں کہ مرزا غلام احمد مسیح موعود ہے۔ ادھر مرزا غلام احمد کہتا ہے کہ:

”اس عاجز نے جو مثیل موعود ہونے کا دعویٰ کیا ہے جس کو کم فہم لوگ مسیح موعود خیال کر بیٹھے ہیں... میں نے یہ دعویٰ ہرگز نہیں کیا کہ میں مسیح بن مریم ہوں، جو شخص یہ الزام میرے پر لگا دے وہ سراسر مفتری اور کذاب ہے۔“

لہذا مرزا طاہر کے عقیدے کے مطابق مرزا غلام احمد، کم فہم اور مفتری و کذاب ٹھہرا، اب جس قدر جی چاہے اس مفتری و کذاب غلام احمد پر لعنة الله على الكاذبین پڑھے۔

الغرض خدا کی لعنت تو غلام احمد پر خود مرزا طاہر برساتا ہے اور جھوٹا الزام مسلمانوں کو دیتا ہے:

”جو چاہیں سو آپ کریں ہم کو عبث بدنام کیا“

ہاں! یہ ضرور ہے کہ ہم بھی مفتری و کذاب اور دائرۃ اسلام سے خروج کرنے والے مرتد کو لعنت خداوندی کا مستحق سمجھتے ہیں۔

۱۵:۔۔۔ ”یہ کہتے ہیں آپ نے دعویٰ کیا کہ تمام انبیاء سے بشمول محمد رسول صلی اللہ علیہ وسلم قیامت تک کے لئے آپ افضل ہیں، میں کہتا ہوں یہ جھوٹ ہے، لعنة الله على الكاذبین۔“

جواب:۔۔۔ مرزا طاہر کا مسلمانوں پر یہ الزام بھی غلط ہے، واقعہ یہ ہے کہ تمام انبیائے کرام علیہم السلام سے افضل ہونے کا دعویٰ مرزا طاہر کے دادا مرزا غلام احمد نے کیا، ملاحظہ فرمائیے:

مرزا حضرت آدم علیہ السلام سے افضل:

”اللہ تعالیٰ نے آدم کو پیدا کر کے انہیں تمام ذی روح انس و جن پر سردار اور حاکم و امیر بنایا۔۔۔ پھر شیطان نے انہیں بہکایا اور جنتوں سے نکلوا یا۔ اس جنگ و جدال میں آدم کو ذلت و رسوائی نصیب ہوئی۔۔۔ پس اللہ تعالیٰ نے مسیح موعود کو پیدا کیا تا کہ آخر زمانے میں شیطان کو شکست دے۔“

(حاشیہ خطبہ البامیہ، روحانی خزائن ج: ۱۶ ص: ۳۱۲)

”آدم اس لئے آیا کہ نفوس کو اس دنیا کی زندگی کی طرف نکالے، اور ان کے درمیان اختلاف اور دشمنی کی آگ بھڑکائے، اور مسیح ام اس لئے آیا کہ ان کو دار فنا کی طرف لوٹائے اور ان سے اختلاف، لڑائی اور عداوت اور افتراق و پراگندگی کو دور کرے، اور انہیں اتحاد و محویت، نفی غیر اور خلوص کی طرف کھینچے۔“

(خطبہ البامیہ، روحانی خزائن ج: ۱۶ ص: ۳۰۸)

حضرت نوح علیہ السلام:

”اور خدا تعالیٰ میرے لئے اس کثرت سے نشان دکھلا رہا ہے کہ اگر نوح کے زمانے میں وہ نشان دکھلائے جاتے تو وہ لوگ

غرق نہ ہوتے۔“

(تتمہ حقیقۃ الوحی ص: ۱۳۷، روحانی خزائن ج: ۲۲ ص: ۵۷۵)

حضرت یوسف علیہ السلام سے افضل:

”پس اس اُمت کا یوسف یعنی یہ عاجز اسرائیلی یوسف سے بڑھ کر ہے۔ کیونکہ یہ عاجز قید کی دعا کر کے بھی قید سے بچایا گیا، مگر یوسف بن یعقوب قید میں ڈالا گیا، اور اس اُمت کے یوسف (مرزا قادیانی) کی بریت کے لئے پچیس برس پہلے ہی خدا نے آپ گواہی دے دی اور بھی نشان دکھلائے، مگر یوسف بن یعقوب اپنی بریت کے لئے انسانی گواہی کا محتاج ہوا۔“

(براہین پنجم ص: ۷۶، روحانی خزائن ج: ۲۱ ص: ۹۹)

حضرت عیسیٰ علیہ السلام سے افضل:

”خدا نے اس اُمت میں سے مسیح موعود بھیجا جو اس پہلے مسیح سے اپنی تمام شان میں بہت بڑھ کر ہے..... مجھے قسم ہے اس ذات کی جس کے ہاتھ میں میری جان ہے کہ اگر مسیح ابن مریم میرے زمانہ میں ہوتا تو وہ کام جو میں کر سکتا ہوں وہ ہرگز نہ کر سکتا، اور وہ نشان جو مجھ سے ظاہر ہو رہے ہیں وہ ہرگز نہ دکھلا سکتا۔“

(حقیقۃ الوحی ص: ۱۳۸، روحانی خزائن ج: ۲۲ ص: ۱۵۲)

”پھر جب کہ خدا نے اور اس کے رسول نے اور تمام نبیوں نے آخری زمانہ کے مسیح کو اس کے کارناموں کی وجہ سے افضل قرار دیا ہے تو پھر یہ شیطانی وسوسہ ہے کہ یہ کہا جائے کہ کیوں تم مسیح ابن مریم سے اپنے تئیں افضل قرار دیتے ہو۔“

(حقیقۃ الوحی ص: ۱۵۵، روحانی خزائن ج: ۲۲ ص: ۱۵۹)



”ابن مریم کے ذکر کو چھوڑو

اس سے بہتر غلام احمد ہے

یہ شاعرانہ بات نہیں، بلکہ واقعی ہیں، اگر تجربہ کی رو سے

خدا کی تائید مسیح بن مریم سے بڑھ کر میرے ساتھ نہ ہو تو میں جھوٹا

ہوں۔“ (دافع البلاء ص: ۲۰، روحانی خزائن ج: ۱۱ ص: ۲۴۰)

مرزا، خاتم النبیین:

”میں بارہا بتلا چکا ہوں کہ میں بموجب آیت و آخرین

منہم لما یلحقوا بہم بروزی طور پر وہی نبی خاتم الانبیاء ہوں،

اور خدا نے آج سے بیس برس پہلے براہین احمدیہ میں میرا نام محمد اور

احمد رکھا ہے، اور مجھے آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کا وجود قرار دیا ہے۔“

(ایک غلطی کا ازالہ ص: ۱۰، روحانی خزائن ج: ۱۸ ص: ۲۱۲)

”مبارک وہ جس نے مجھے پہچانا، میں خدا کی سب

راہوں میں سے آخری راہ ہوں، اور میں اس کے سب نوروں میں

سے آخری نور ہوں۔ بدقسمت ہے وہ جو مجھے چھوڑتا ہے کیونکہ

میرے بغیر سب تاریکی ہے۔“

(کشتی نوح ص: ۵۶، روحانی خزائن ج: ۱۹ ص: ۶۱)

مرزا، کمالات انبیاء کا مجموعہ:

”کمالات متفرقہ جو تمام دیگر انبیاء میں پائے جاتے تھے

وہ سب حضرت رسول کریم میں ان سے بڑھ کر موجود تھے اور اب وہ

سارے کمالات حضرت رسول کریم سے غلطی طور پر ہم کو عطا کئے گئے،

اور اسی لئے ہمارا نام آدم، ابراہیم، موسیٰ، نوح، داؤد، یوسف،

سلیمان، یحییٰ، عیسیٰ وغیرہ ہے... پہلے تمام انبیاء ظل تھے نبی کریم کی

خاص خاص صفات میں اور اب ہم ان تمام صفات میں نبی کریمؐ کے  
ظن ہیں۔“ (ملفوظات ج: ۳ ص: ۲۷۰ مطبوعہ ربوہ)

مرزا کا تخت سب سے اونچا:

”آسمان سے کئی تخت اترے مگر تیرا تخت سب سے اونچا  
بچھایا گیا۔“ (مرزا کا الہام، مندرجہ تذکرہ ص: ۳۴۶ طبع دوم)

ایک نفیس فائدہ:

حضرات انبیائے کرام علیہم السلام سب کے سب دیگر تمام انسانوں سے افضل  
ہیں، اور علم عقائد میں یہ اصول طے شدہ ہے کہ کوئی ولی، خواہ کتنا ہی بڑا ہو، کسی نبی کے رتبہ کو  
نہیں پہنچ سکتا، شرح عقائد نسفی میں ہے:

”وَلَا يَلِغُ وَلِي دَرَجَةُ الْأَنْبِيَاءِ لِأَنَّ الْأَنْبِيَاءَ  
مَعَصْرُمُونَ مَأْمُونُونَ عَنْ خَوْفِ الْخَاتِمَةِ مَكْرُمُونَ  
بِالْوَحْيِ وَمَشَاهِدَةُ الْمَلِكِ مَأْمُورُونَ بِتَبْلِيغِ الْأَحْكَامِ  
وَارْشَادِ الْأَتَامِ بَعْدَ الْإِتِّصَافِ بِكَمَالَاتِ الْأَوْلِيَاءِ۔“

(ص: ۱۶۴ مطبوعہ مکتبہ خیر کثیر کراچی)

ترجمہ: ”کوئی ولی انبیائے کرام علیہم السلام کے درجہ کو  
نہیں پہنچ سکتا، کیونکہ انبیائے کرام معصوم ہیں، ان کے حق میں سوء  
خاتمہ کا اندیشہ نہیں، وہ وحی الہی اور فرشتوں کے مشاہدہ سے مشرف  
ہیں، اور وہ اولیاء کے کمالات کے ساتھ متصف ہونے کے بعد تبلیغ  
احکام اور خلق خدا کی رہنمائی کے کام پر مامور ہوتے ہیں۔“

اسی طرح صحابیت کا شرف ایسی فضیلت ہے کہ جو حضرات صحابہ کرامؓ کے سوا کسی  
کو نصیب نہیں ہو سکتی۔ اسی بنا پر جمہور اہل سنت کا عقیدہ ہے کہ بعد کے اولیاء صحابہ کرامؓ کی  
فضیلت کو نہیں پہنچ سکتے۔

اہل عقل کا یہ مسئلہ اصول ہے کہ جب کسی فرد کا تقابل دوسرے افراد سے کیا جائے تو یہ تقابل ہمیشہ اسی کی نوع کے افراد کے درمیان ہوتا ہے۔ پس جو شخص جس جماعت یا گروہ میں شامل ہو اس کی افضلیت وغیر افضلیت کا تقابل اس کی اپنی ہی جماعت یا گروہ کے افراد کے ساتھ ہوگا، چنانچہ جو شخصیت انبیائے کرام علیہم الصلوٰۃ والسلام کی جماعت سے ہو، اس کی افضلیت کا تقابل اسی جماعت انبیاء کے افراد قدسیہ کے ساتھ ہوگا، غیر انبیاء کے ساتھ نہیں۔ بلکہ غیر انبیاء کے مقابلہ میں اس کی افضلیت کی بحث خلاف اصول اور خلاف عقل سمجھی جائے گی، کیونکہ غیر انبیاء کو انبیائے کرام علیہم الصلوٰۃ والسلام کے علوم مرتبہ اور رفعت شان سے کیا نسبت؟ اور نبی کا غیر نبی کے ساتھ کیا مقابلہ؟ اسی طرح کسی صحابی کی افضلیت دیگر صحابہ کرام رضوان اللہ علیہم اجمعین کے مقابلہ میں مراد ہوگی، چنانچہ جب کہا جائے کہ فلاں صحابی افضل ہیں، تو اس سے مراد یہ ہے کہ دیگر صحابہ کے مقابلہ میں افضل ہیں، ورنہ صحابی کا غیر صحابہ سے کیا مقابلہ؟ اور غیر صحابی کو صحابہ سے کیا نسبت؟ اسی طرح ولی کی افضلیت دیگر اولیائے عظام کے مقابلہ میں زیر بحث آئے گی، نہ کہ عوام الناس کے مقابلہ میں، پس جب کہا جائے کہ فلاں ولی افضل ہے، تو مراد یہ ہوگی کہ دیگر اولیاء کے مقابلہ میں افضل ہیں۔ علیٰ ہذا القیاس۔

جب مرزا غلام احمد قادیانی اپنے آپ کو انبیائے کرام علیہم الصلوٰۃ والسلام کی جماعت میں شامل کرتا ہے اور حضرت نوح اور حضرت عیسیٰ علیہما السلام جیسے اولوالعزم رسولوں سے افضل قرار دیتا ہے تو اس کے بیان کردہ مندرجہ ذیل الہام سے کہ:

”آسمان سے کئی تخت اترے، مگر تیرا تخت سب سے اونچا بچھایا گیا۔“

مذکورہ اصول کے مطابق ہر ذی شعور یہ سمجھے گا کہ آسمان سے اترنے والے تختوں سے حضرات انبیائے کرام علیہم السلام کے درجات و مراتب عالیہ مراد ہیں، اور ”تیرا تخت سب سے اونچا بچھایا گیا“ کے فقرہ سے انبیائے کرام علیہم السلام کے مقابلہ میں صاحب الہام کی افضلیت مراد ہے۔ چونکہ مرزا، تمام انبیائے کرام علیہم السلام کے کمالات کی

جامعیت کا مدعی ہے، اور چونکہ اس کو اولوالعزم رسولوں سے افضلیت کا دعویٰ ہے اس لئے ”اس کے تخت کا سب سے اونچا ہونا“ اس کے معنی اس کے سوا کچھ نہیں کہ اس الہام میں اس کو تمام انبیائے کرام علیہم السلام سے افضل قرار دیا گیا۔ نعوذ باللہ، استغفر اللہ! فخر اولین و آخرین:

روزنامہ الفضل قادیان مسلمانوں کو لاکارتے ہوئے کہتا ہے:

”اے مسلمان کہلانے والو! اگر تم واقعی اسلام کا بول بالا چاہتے ہو اور باقی دنیا کو اپنی طرف بلا تے ہو تو پہلے خود سچے اسلام کی طرف آ جاؤ (یعنی مسلمانوں کا اسلام جھوٹا ہے۔ نعوذ باللہ... ناقل)

جو مسیح موعود (مرزا قادیانی) میں ہو کر ملتا ہے، اسی کے طفیل آج برو تقویٰ کی راہیں کھلتی ہیں، اسی کی پیروی سے انسان فلاح و نجات کی منزل مقصود پر پہنچ سکتا ہے، وہ وہی فخر اولین و آخرین ہے، جو آج سے تیرہ سو برس پہلے رحمۃ للعالمین بن کر آیا تھا۔“

پہلے محمد رسول اللہ سے بڑھ کر:

الف: ”اور جس نے اس بات سے انکار کیا کہ نبی علیہ السلام کی بعثت چھٹے ہزار سے تعلق رکھتی ہے، جیسا کہ پانچویں ہزار سے تعلق رکھتی تھی، پس اس نے حق کا اور نص قرآن کا انکار کیا، بلکہ حق یہ ہے کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی روحانیت چھٹے ہزار کے آخر میں یعنی ان دنوں میں بہ نسبت ان سالوں کے اقویٰ اور اکمل اور اشد ہے بلکہ چودھویں رات کے چاند کی طرح ہے۔“

(خطبہ الہامیہ ص: ۱۸۱، روحانی خزائن ج: ۱۶ ص: ۲۷۱)

”امام اپنا عزیز و اس جہاں میں

غلام احمد ہوا دار الاماں میں

غلام احمد ہے عرش رب اکبر  
مکان اس کا ہے گویا لامکان میں  
غلام احمد رسول اللہ ہے برحق  
شرف پایا ہے نوع انس و جاں میں  
محمد پھر اتر آئے ہیں ہم میں  
اور آگے سے ہیں بڑھ کر اپنی شاں میں  
محمد دیکھنے ہوں جس نے اکمل  
غلام احمد کو دیکھئے قادیاں میں

(اخبار بدر قادیان ۲۵ اکتوبر ۱۹۰۶ء بحوالہ قادیانی مذہب ص: ۳۳۶)

ہلال اور بدر کی نسبت:

”اور اسلام ہلال کی طرح شروع ہوا، اور مقدر تھا کہ  
انجام کار آخری زمانہ میں بدر (چودھویں کا چاند) ہو جائے، خدا  
تعالیٰ کے حکم سے، پس خدا تعالیٰ کی حکمت نے چاہا کہ اسلام اس  
صدی میں بدر کی شکل اختیار کرے جو شمار کے رد سے بدر کی طرح  
مشابہ ہو (یعنی چودھویں صدی)۔“

(خطبہ الہامیہ ص: ۱۸۴، روحانی خزائن ج: ۱۶ ص: ۲۷۵)  
”آنحضرت کی بعثت اول میں آپ کے منکروں کو کافر  
اور دائرۃ اسلام سے خارج قرار دینا۔ لیکن ان کی بعثت ثانی میں آپ  
کے منکروں کو داخل اسلام سمجھنا یہ آنحضرت کی ہتک اور آیت اللہ  
سے استہزا ہے۔ حالانکہ خطبہ الہامیہ میں حضرت مسیح موعود نے  
آنحضرت کی بعثت اول و ثانی کی باہمی نسبت کو ہلال اور بدر کی  
نسبت سے تعبیر فرمایا ہے۔“ (اخبار الفضل قادیان ج: ۳ نمبر: ۱۰  
مورخہ ۱۵ جولائی ۱۹۱۵ء بحوالہ قادیانی مذہب ص: ۲۶۲)



## بڑی فتح مبین:

”اور ظاہر ہے کہ فتح مبین کا وقت ہمارے نبی کریم کے زمانے میں گزر گیا اور دوسری فتح باقی رہی جو کہ پہلے غلبہ سے بہت زیادہ بڑی اور زیادہ ظاہر ہے اور مقدر تھا کہ اس کا وقت مسیح موعود (مرزا غلام احمد قادیانی) کا وقت ہو۔“

(خطبہ الہامیہ ص: ۱۹۳، ۱۹۴، روحانی خزائن ج: ۱۶ ص: ۲۸۸)

## روحانی کمالات کی ابتدا اور انتہا:

”(یعنی مکی بعثت میں) اجمالی صفات کے ساتھ ظہور فرمایا اور وہ زمانہ اس روحانیت کی ترقیات کا انتہا نہ تھا، بلکہ اس کے کمالات کے معراج کے لئے پہلا قدم تھا پھر اس روحانیت نے چھٹے ہزار کے آخر میں یعنی اس وقت پوری طرح سے تجلی فرمائی۔“

(خطبہ الہامیہ ص: ۱۷۷، روحانی خزائن ج: ۱۶ ص: ۲۶۶)

## محمد عربی کا کلمہ پڑھنے والے کا فر:

الف: ”اب معاملہ صاف ہے اگر نبی کریم کا انکار کفر ہے تو مسیح موعود کا انکار بھی کفر ہونا چاہئے کیونکہ مسیح موعود نبی کریم سے الگ کوئی چیز نہیں ہے بلکہ وہی ہے اور اگر مسیح موعود کا منکر کافر نہیں تو نعوذ باللہ نبی کریم کا منکر بھی کافر نہیں کیونکہ یہ کس طرح ممکن ہے کہ پہلی بعثت میں تو آپ کا انکار کفر ہو مگر دوسری بعثت میں جس میں بقول حضرت مسیح موعود آپ کی روحانیت اقویٰ اور اکمل اور اشد ہے، آپ کا انکار کفر نہ ہو۔“ (کلمۃ الفصل ص: ۱۳۶، ۱۳۷، مندرجہ ریویو

آف ریلیجنز مارچ و اپریل ۱۹۱۵ء)

ب: ”ہر ایک ایسا شخص جو موسیٰ کو تو مانتا ہے مگر عیسیٰ کو

نہیں مانتا، یا عیسیٰ کو مانتا ہے مگر محمد کو نہیں مانتا، اور یا محمد کو مانتا ہے پر مسیح موعود کو نہیں مانتا وہ نہ صرف کافر بلکہ پکا کافر اور دائرۃ اسلام سے خارج ہے۔“ (کلمۃ الفصل ص: ۱۱۰ مرزا بشیر احمد ایم اے)

ج: ”... تحریک احمدیت اسلام کے ساتھ وہی رشتہ رکھتی ہے جو عیسائیت کا یہودیت کے ساتھ تھا۔“

(محمد علی لاہوری قادیانی، منقول از مباحثہ راولپنڈی ص: ۲۴۰)

د: ”... کل مسلمان، جو حضرت مسیح موعود (مرزا غلام احمد قادیانی) کی بیعت میں شامل نہیں ہوئے خواہ انہوں نے حضرت مسیح موعود (مرزا غلام احمد قادیانی) کا نام بھی نہیں سنا، وہ کافر اور دائرۃ اسلام سے خارج ہیں۔“ (آئینہ صداقت ص: ۱۳۵ از مرزا محمود احمد قادیانی)

ھ: ”... ہمارا یہ فرض ہے کہ ہم غیر احمدیوں کو مسلمان نہ سمجھیں اور ان کے پیچھے نماز نہ پڑھیں، کیونکہ ہمارے نزدیک وہ خدا کے ایک نبی کے منکر ہیں یہ دین کا معاملہ ہے، اس میں کسی کا اپنا اختیار نہیں کہ کچھ کر سکے۔“ (انوار خلافت ص: ۹۰ از مرزا محمود احمد قادیانی)

قارئین کرام ان حوالہ جات کو دیکھ کر محسوس کر سکتے ہیں کہ ان عبارتوں میں مرزا غلام احمد قادیانی نے انبیائے کرام سے افضل ہونے کا دعویٰ کیا ہے، دنیا کی کسی عدالت میں ان عبارتوں کو (لکھنے والے کا نام بتائے بغیر) رکھ دیجئے اور اس سے فیصلہ کرا لیجئے کہ ان عبارتوں میں انبیائے کرام سے افضل ہونے کا دعویٰ پایا جاتا ہے یا نہیں؟ عدالت یہ کہنے پر مجبور ہوگی کہ جس شخص کی یہ عبارتیں ہیں وہ انبیائے کرام پر اپنی فضیلت و برتری کا مدعی ہے۔ لیکن مرزا طاہر اس دعویٰ کو مسلمانوں کی طرف منسوب کر کے اسے جھوٹ قرار دیتا ہے اور اس پر ”لعنة الله على الكاذبين“ کہتا ہے۔

ہماری گزارش یہ ہے کہ یہ دعویٰ اگر جھوٹ ہے تو یہ سیاہ جھوٹ خود مرزا طاہر کے دادا

مرزا غلام احمد قادیانی کا تصنیف کردہ ہے۔ لہذا مرزا طاہر کو اگر ”لعنة الله على الكاذبين“ کی گردان کا شوق ہے تو وہ اپنے دادا ابا کا نام لے کر یہ شوق ضرور پورا فرما سکتے ہیں۔

خلاصہ:

قارئین کرام نے ملاحظہ فرمایا کہ مرزا طاہر نے جتنی باتیں مسلمانوں کی طرف منسوب کر کے ان کو جھوٹ کہا، اور ان پر لعنت کی گردان کی، وہ سب کی سب خود ان کے گھر سے برآمد ہوئیں، اس لئے مرزا طاہر احمد صاحب بالقابہ خود جھوٹ کے مرتکب اور اپنی لعنت بازی کے خود مورد ہوئے۔

اس ناکارہ نے اپنی اس پوری تحریر میں اپنی طرف سے ان پر لعنت نہیں کی بلکہ یہ بتایا ہے کہ ان کی لعنت خود انہی پر لوٹتی ہے۔

ایک لطیفہ اور یاد دہانی:

مرزا طاہر احمد صاحب، لعنت بازی کے عادی مریض ہیں، ان کی کوئی تحریر و تقریر مشکل ہی سے اس شغل سے خالی ہوا کرتی ہے، دراصل یہ ان کے خاندان کا — مراق کی طرح — موروثی مرض ہے، جو تین پشتوں سے مسلسل چلا آ رہا ہے، اور اب یہ ”داء الكلب“ کی طرح مرزا طاہر کے رگ و پے میں سرایت کر چکا ہے، جس سے بظاہر ان کا شفا یاب ہونا مشکل نظر آتا ہے، والامر بید الله!

اس ناکارہ نے ۱۸، ۱۹ سال پہلے انہیں مخلصانہ مشورہ دیا تھا کہ اول تو یہ اس ”لعنت بازی“ کا شغل ہی نہ فرمایا کریں، اور اگر اپنی ”خاندانی علت“ کی بنا پر مجبور ہوں تو کم سے کم اپنے اوپر اتنا احسان ضرور کریں کہ لعنت بازی کے لئے قرآن حکیم کی آیت: ”لعنة الله على الكاذبين“ نہ پڑھا کریں، کیونکہ وہ اس آیت شریفہ کو پڑھ کر دوسروں پر لعنت کرنے کی بجائے قرآن کریم کی زبان سے خود اپنے اوپر لعنت فرماتے ہیں۔ ان کے گھر میں لعنت کی پہلے بھی کچھ کمی نہیں، قرآن کی زبان سے اس میں مزید اضافہ نہ کیا کریں تو بہتر ہے۔

افسوس ہے کہ اس فقیر کی یہ خیر خواہانہ نصیحت مرزا طاہر پر کارگر نہ ہوئی، یہی وجہ ہے کہ ان کی یہ بیماری آج کل ”داء الکلب“ کی شکل اختیار کر چکی ہے۔ مناسب ہوگا کہ یہاں اپنی انیس سال قبل کی نصیحت نقل کر دوں، تاکہ اگر مرزا طاہر کو نہیں تو شاید ان کی جماعت کے کسی فرد کو نفع ہو جائے — وهو هذا:

قادیانی تحفہ:

”جھوٹ، بہتان، افترا اور لعنت کی گردان قادیانیوں کا خاص تحفہ ہے، جو ان کی جانب سے عطا کیا جاتا ہے، مرزا طاہر احمد صاحب نے بھی اپنے ”تبصرہ“ میں یہ قادیانی تحفہ بڑی فیاضی سے مولانا بنوری کو عطا فرمایا ہے۔ جھوٹ اور بہتان تو خیر مرزا صاحب کے گھر کی دولت ہے، اس رواں صدی میں قادیان اور ربوہ اس دولت کے سب سے بڑے معدن ہیں۔ وہ ساری دنیا پر بھی اسے تقسیم کر دیں تب بھی ختم نہ ہوگی۔ جہاں جھوٹ اور افترا کے چشمے اہلتے ہوں وہاں دو چار چلو اگر راہ چلتوں پر بھی پھینک دیئے جائیں تو کیا کمی واقع ہوتی ہے۔ دنیا کا سب سے بڑا جھوٹ، جھوٹی نبوت کا دعویٰ ہے، جو لوگ اس کو ہضم کر چکے ہوں، ظاہر ہے کہ جھوٹ ان کے گوشت، پوست میں سرایت کئے ہوئے ہوگا، اور انہیں ہر سو جھوٹ ہی جھوٹ نظر آئے گا۔

باقی رہی لعنت! تو یہ جھوٹ کا خاصہ لازمہ ہے، یہی وجہ ہے کہ مرزا آنجنمانی کے گھر اس کی بھی بڑی فراوانی تھی، اور اس کی داد و دہش میں بھی وہ بڑے سخی تھے، دس دس، بیس بیس لعنتیں تو معمولی بات پر ان کا معمول تھا اور کبھی موج میں آتے تو گن کر ہزار ہزار لعنتیں ایک سانس میں تقسیم کر کے اٹھتے، افسوس ہے کہ اس

دولت کی تقسیم میں مرزا آنجمانی جیسی فیاضی اب مرزائی خاندان میں نہیں رہی، غالباً یہ دولت مرزا صاحب کے خاندان اور متعلقین میں تقسیم ہو کر رہ گئی، جناب مرزا طاہر احمد صاحب کو بھی حصہ رسدی ملی ہوگی، اس لئے انہوں نے مولانا بنوری کو اس کا عطیہ دینے میں اپنے جد بزرگوار کی سی فیاضی کا مظاہرہ تو نہیں کیا، تاہم بخل سے بھی کام نہیں لیا۔ اپنی بساط اور مقدور کے موافق انہوں نے خوب لعنت برسائی ہے، دعا کرنی چاہئے کہ حق تعالیٰ ان کی اس خاندانی دولت میں دن دوئی رات چوگنی ترقی فرمائے، اور دنیا و آخرت میں انہیں اس بیش بہا دولت سے مالا مال رکھے۔

باران لعنت کے سلسلہ میں جناب مرزا طاہر احمد صاحب کو ایک بہت ہی مخلصانہ و نیازمندانہ مشورہ دینا چاہتا ہوں، مشورہ ذرا دقیق سا ہے، امید ہے اس پر توجہ فرمائیں گے۔ مشورہ یہ ہے کہ وہ لوگوں پر لعنت برسانے کا شوق تو ضرور فرمایا کریں کہ یہ ان کا آبائی ترکہ ہے، اور کسی کو حق نہیں کہ انہیں اس میراث سے محروم کر دے، مگر اس کے لئے قرآن کریم کی آیت: ”لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الْكَاذِبِينَ“ نہ پڑھا کریں۔ وجہ اس کی یہ ہے کہ حدیث میں آتا ہے:

”رَبِّ قَارِیْ قُرْآنٍ وَالْقُرْآنَ یَلْعَنُہُ۔“ (مشکوٰۃ)

ترجمہ: ”... بہت سے قرآن پڑھنے والے ایسے ہیں کہ

قرآن ان پر لعنت کرتا ہے۔“

اس حدیث کے مفہوم میں یہ بھی داخل ہے کہ ایک شخص خود ظالم ہے اور وہ قرآن مجید کی تلاوت کرتے ہوئے پڑھتا ہے: ”اَلَا لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِیْنَ۔“ (ظالموں پر خدا کی لعنت) تو



درحقیقت وہ قرآن کی زبان سے خود اپنے آپ پر لعنت کر رہا ہے۔ اسی طرح ایک شخص خود جھوٹا ہے اور وہ آیت کریمہ: "لعنة الله على الكاذبين" پڑھتا ہے تو نادانستہ اپنے پر لعنت کرتا ہے۔ یہ تو سب جانتے ہیں کہ مرزا آنجمانی کو نبی، مسیح، احمد اور محمد رسول اللہ کہنا یکسر خلاف واقعہ ہے (اسی کو جھوٹ کہتے ہیں) اس لئے ان عقائد کے باوجود صاحبزادہ صاحب کا اس آیت کی تلاوت کرنا حدیث بالا کا مصداق ہے۔ بزعم خود وہ یہ دولت دوسروں کو تقسیم کرتے ہیں مگر یہ آیت خود ان کے حق میں اس دولت کے اضافہ کا باعث بنتی ہے۔ گویا صاحبزادہ صاحب اس آیت کو پڑھ کر خود اپنے اوپر بدعا کرتے ہیں، میرے خیال میں یہ اچھی بات نہیں، امید ہے وہ یہ خیر خواہانہ مشورہ قبول کر کے آئندہ "لعنة الله على الكاذبين" کا مورد بننے سے احتراز فرمائیں گے، جتنی اب تک انہیں مل چکی ہے وہی بہت ہے۔"

وَاللّٰهُ يَقُولُ الْحَقُّ وَهُوَ يَهْدِي السَّبِيلَ

## مرزا طاہر کے جواب میں

”قادیانیوں میں جب مایوسی اور بے چینی کی لہر دوڑتی ہے تو ان کو مطمئن کرنے کے لئے قادیانی لیڈر کوئی نہ کوئی نیا شوشہ چھوڑنے کے عادی ہیں، جس کا نتیجہ بالآخر ان کی مزید ذلت و رسوائی کی شکل میں نکلتا ہے، حال ہی میں قادیانیوں کے لیڈر مرزا طاہر کی طرف سے ایک نئی حرکت مذہبی صادر ہوئی ہے، اور وہ ہے دُنیا بھر کے تمام مسلمانوں کو مباہلہ کا چیلنج، جس کا درج ذیل جواب راقم الحروف کی طرف سے مرزا طاہر کے نام بھیجا گیا۔“

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ  
الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَسَلَامٌ عَلٰی عِبَادِهِ الَّذِیْنَ اصْطَفٰی

جناب مرزا طاہر صاحب!

سلام علی من اتبع الهدی

گزشتہ دنوں آپ کی طرف سے مباہلہ کا چیلنج شائع ہوا، میں اسے شاید لائق التفات نہ سمجھتا، مگر طویل سفر سے واپسی پر ڈاک میں اس کی ایک کاپی موجود پائی، جس میں بطور خاص مجھے مخاطب کیا گیا تھا، جس کا جواب بطور خاص مجھ پر لازم ہوا۔ اس لئے جواباً چند نکات عرض کرتا ہوں:

۱:۔۔۔ سب سے پہلے اس پر آپ کا شکریہ ادا کرنا ضروری سمجھتا ہوں، کہ اس ناکارہ

کا نام دورِ حاضر کے میلہ کذاب مرزا غلام احمد قادیانی کے مخالفوں کی فہرست میں درج فرمایا۔ یہ دراصل بہت بڑا اعزاز ہے جسے قرآن کریم نے ان الفاظ میں ذکر فرمایا ہے:

”يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَنْ يَرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِينِهِ  
فَسَوْفَ يَأْتِيَ اللَّهُ بِقَوْمٍ يُحِبُّهُمْ وَيُحِبُّونَهُمْ، أَذِلَّةٌ عَلَى  
الْمُؤْمِنِينَ أَعِزَّةٌ عَلَى الْكَافِرِينَ، يُجَاهِدُونَ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَلَا  
يَخَافُونَ لَوْمَةَ لَائِمٍ، ذَلِكَ فَضْلُ اللَّهِ يُؤْتِيهِ مَنْ يَشَاءُ وَاللَّهُ  
وَاسِعٌ عَلِيمٌ۔“

ترجمہ: ”اے ایمان والو! جو شخص تم میں سے اپنے دین سے پھر جاوے تو اللہ تعالیٰ بہت جلد ایسی قوم کو پیدا کر دے گا جن سے اللہ تعالیٰ کو محبت ہوگی اور ان کو اللہ تعالیٰ سے محبت ہوگی، مہربان ہوں گے وہ مسلمانوں پر، تیز ہوں گے کافروں پر، جہاد کرتے ہوں گے اللہ کی راہ میں، اور وہ لوگ کسی ملامت کرنے والے کی ملامت کا اندیشہ نہ کریں گے، یہ اللہ تعالیٰ کا فضل ہے جس کو چاہیں عطا فرمائیں اور اللہ تعالیٰ بڑی وسعت والے ہیں، بڑے علم والے ہیں۔“

اس آیت کریمہ میں مرتدین سے مقابلہ کرنے والے حضرات کے چھ اوصاف عالیہ بیان فرمائے ہیں:

- \*...: اول یہ کہ وہ حق تعالیٰ شانہ کے محبوب بندے ہیں۔
- \*...: دوم یہ کہ وہ حق تعالیٰ شانہ کے سچے محب اور عاشق ہیں۔
- \*...: سوم یہ کہ وہ اہل ایمان کے حق میں نہایت پست اور متواضع ہیں۔
- \*...: چہارم یہ کہ وہ اہل کفر کے مقابلے میں نہایت سخت ہیں۔
- \*...: پنجم یہ کہ وہ اللہ تعالیٰ کے راستے میں جہاد کرتے ہیں اور امر بالمعروف اور نہی عن المنکر کا فریضہ بجالاتے ہیں۔

\*... ششم یہ کہ وہ دین کے معاملے میں کسی ملامت گر کی پروا نہیں کرتے۔  
آخر میں فرمایا کہ یہ حق تعالیٰ کا فضل خاص ہے جس کو چاہتے ہیں یہ فضل عطا فرمادیتے ہیں۔

اس آیت کریمہ کے اولین مصداق حضرت ابوبکر صدیق اور ان کے رفقاء رضی اللہ عنہم تھے، جنہوں نے مسلمانہ کذاب اور دیگر مرتدین کا مقابلہ کیا، اور اس دور میں اس آیت کریمہ کا مصداق وہ حضرات ہیں جو مسلمانہ پنجاب مرزا غلام احمد قادیانی مرتد اور اس کی ذریت کا مقابلہ کر رہے ہیں۔ پس آپ کا اس ناکارہ کو مرزا غلام احمد قادیانی کے مخالفین میں شمار کرنا، گویا اس امر کی شہادت ہے کہ یہ ناکارہ اس دور میں آیت کریمہ کا مصداق ہے، ظاہر ہے کہ یہ اس ناکارہ کے بارے میں حق تعالیٰ شانہ کے فضل عظیم کی شہادت و بشارت ہے، جس پر آپ کا جتنا شکر یہ ادا کروں کم ہے۔

یہ ناکارہ آنحضرت خاتم النبیین و سید المرسلین صلی اللہ علیہ وسلم کا ادنیٰ ترین اور نالائق ترین اُمتی ہے، اور اپنی رُوسیاہی و نالائقی میں پوری اُمت محمدیہ (علیٰ صاحبہا الف الف صلوٰۃ و سلام) میں شاید سب سے بڑھ کر ہے۔ ہمارے حضرت امام العصر مولانا محمد انور شاہ کشمیری نور اللہ مرقدہ کے بقول:

کس نیست دریں اُمت تو آنکہ چوں احقر

با رُوئے سیاہ آمدہ و موئے زریری

ایسے نالائق و ناکارہ اُمتی کے لئے اس سے بڑھ کر کیا اعزاز ہو سکتا ہے کہ اسے ”يُحِبُّهُمْ وَيُحِبُّونَهُ“ کا مصداق بنادیا جائے، آپ کی تحریر سے اس ناکارہ کو توقع ہو گئی ہے کہ ان شاء اللہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم اپنے اس ناکارہ و نالائق اُمتی کی شفاعت فرمائیں گے، جو قیامت کے دن ”با رُوئے سیاہ و موئے زریری“ حاضر ہوگا۔

جب کبھی شوریدگانِ عشق کا ہوتا ہے ذکر

اے زہے قسمت کہ ان کو یاد آ جاتا ہوں میں!

بہر حال آپ نے مرزا قادیانی کے مخالفوں میں اس فقیر کا نام شامل کر کے مجھے بڑا اعزاز بخشا ہے، ان شاء اللہ آپ کی یہ تحریر مجھے فردائے قیامت میں سند شفاعت کا کام دے گی، اس لئے آپ کے منہ میں کبھی شکر...

۲: ... مرزا غلام احمد قادیانی نے اپنے رسالے انجامِ آتھم میں اپنے اس عزم کا اظہار کیا تھا کہ آئندہ وہ علماء کو مخاطب نہیں کرے گا، مرزا کے الفاظ یہ ہیں:

”اليوم قضينا ما كان علينا من التبليغات ....

وازمعنا ان لا نخاطب العلماء بعد هذه التوضيحات

.... وهذه منا خاتمة المخاطبات.“ (ص: ۲۸۲)

ترجمہ: ... ”ہمارے ذمہ جو تبلیغ فرض تھی آج ہم نے اس کا

حق ادا کر دیا، اور اب ہمارا قصد یہ ہے کہ ان توضیحات کے بعد ہم

علماء کو مخاطب نہیں کریں گے، اور یہ ہماری طرف سے مخاطبات کا

خاتمہ ہے۔“

جب مرزا قادیانی ۱۸۹۷ء میں وعدہ کر چکا تھا کہ آئندہ ہم علماء کو خطاب نہیں

کریں گے، تو کیا نوے سال کے بعد یہ وعدہ... جو آپ کے عقیدے میں ”وما ينطق عن

الہوی ان هو الا وحی یوحی“ کا مصداق تھا... منسوخ ہو گیا یا آپ کے نزدیک مرزا

کے وعدے وعید اور قول و فعل ایسے نہیں جن کی طرف التفات کرنا مرزا کی ذریت کے لئے

ضروری ہو؟

۳: ... آپ نے علمائے اُمت کو مباہلہ کا چیلنج دیا ہے۔ مباہلہ، دو فریقوں کے

درمیان حق و باطل اور صدق و کذب کے جانچنے کا آخری معیار ہے۔ کیا آپ کے نزدیک

ایک صدی کا عرصہ گزر جانے کے باوجود مرزا غلام احمد قادیانی کا صدق و کذب اب تک

مشتبہ ہے کہ آپ اس کے لئے مباہلہ کرنے چلے ہیں...؟ آپ کو یا آپ کی جماعت کو اب

تک اس معاملے میں اشتباہ ہو تو ہو، لیکن الحمد للہ اُمتِ اسلامیہ کو اپور اُمت کے اس نالائق



ترین فرد کو مرزا قادیانی کے جھوٹا ہونے میں ادنیٰ سے ادنیٰ شبہ نہیں، اُمتِ اسلامیہ کا قطعی و اجماعی عقیدہ و ایمان ہے کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے بعد نبوت کا دعویٰ کرنے والا بلا شک و شبہ جھوٹا، مرتد اور زندیق ہے، اور وہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے ارشاد: ”ثلاثون كذابون كلهم يزعم انه رسول الله“ کی صف میں شامل ہے۔ حق تعالیٰ شانہ نے اپنی قدرتِ کاملہ اور حکمت بالغہ سے مرزا غلام احمد قادیانی مسیلمہ پنجاب کے جھوٹا ہونے پر ایسے بے شمار قطعی دلائل و شواہد جمع کر دیئے ہیں جن سے مرزا کا کذب آفتاب نصف النہار کی طرح عیاں ہو چکا ہے۔ ان دلائل کی روشنی میں مرزا کا کذاب ہونا کسی ایسے شخص پر مخفی نہیں رہ سکتا جس کے دل میں نورِ ایمان کی معمولی روشنی باقی ہو، اور جس کی دل کی آنکھیں یکسر بند نہ ہو گئی ہوں، ہاں! جو شخص ارشادِ خداوندی:

”وَمَنْ كَانَ فِي هَذِهِ أَعْمَىٰ فَهُوَ فِي الْآخِرَةِ  
أَعْمَىٰ وَأَضَلُّ سَبِيلًا“

ترجمہ: ”اور جو شخص دُنیا میں اندھا رہے گا، سو وہ آخرت میں بھی اندھا رہے گا، اور زیادہ راہِ گم کردہ ہوگا۔“

کا مصداق ہو، اس کے لئے سیاہ و سفید اور صدق و کذب کے درمیان امتیاز ممکن نہیں۔ مرزا کے جھوٹ کے لئے یہی کافی ہے کہ اس نے اپنی نام نہاد دوجی کے ذریعے اعلان کیا تھا کہ محترمہ محمدی بیگم کا آسمان پر اس سے نکاح ہو چکا ہے، اور وہ ۱۸۸۸ء سے لے کر ۱۹۰۷ء تک اس نکاح کی منادی کرتا رہا، اور اسی نکاح کو پکا ثابت کرنے کے لئے اس نے ضمیمہ انجامِ آتھم میں یہاں تک لکھ دیا:

”یاد رکھو کہ اگر اس پیش گوئی کی دوسری جزو پوری نہ ہوئی  
(یعنی محمدی بیگم بیوہ ہو کر مرزا کے نکاح میں نہ آئی) تو میں ہر ایک بد  
سے بدتر ٹھہروں گا۔ اے احمقو! یہ انسان کا افترا نہیں، یہ کسی خبیث  
مفتزی کا کاروبار نہیں، یقیناً سمجھو کہ یہ خدا کا سچا وعدہ ہے، وہی خدا

جس کی باتیں نہیں ملتیں، وہی ربِّ ذوالجلال جس کے ارادوں کو کوئی روک نہیں سکتا۔“

(ضمیمہ انجام آتھم ص: ۵۴، روحانی خزائن ج: ۱۱ ص: ۳۳۸)

ہمارا بھی ایمان ہے کہ خدا کی باتیں نہیں ملتیں، اس کے سب وعدے سچے ہوتے ہیں، ان میں کبھی تخلف نہیں ہو سکتا، اور اس کے ارادوں کو کوئی نہیں روک سکتا۔ لیکن ہم دیکھتے ہیں کہ پیش گوئی کی دوسری جزو پوری نہیں ہوئی اور اللہ تعالیٰ کے فضل و کرم سے محمدی بیگم کا سایہ دیکھنا بھی مرزا کو نصیب نہ ہوا۔ جس سے قطعی طور پر ثابت ہوا کہ یہ خبیث مفتری مرزا غلام احمد قادیانی کا افتراء تھا اور وہ اپنے اقرار کے بموجب ہر بد سے بدتر ہے۔ یہودی، نصرانی، ہندو، سکھ اور چوہڑے چمار بھی غیر مسلم ہیں، بُرے ہیں، مگر مرزا باقرار خود ان سے بھی بدتر ہے۔ کیا اس خدائی فیصلے اور مرزا کی اپنی تحریر کے بعد بھی مرزا کے جھوٹا، مفتری اور ہر بد سے بدتر ہونے میں کوئی شک رہ جاتا ہے...؟ یہ میں نے صرف ایک مثال ذکر کی ہے، ورنہ اللہ تعالیٰ نے مرزا کو جھوٹا اور رُوسیاہ کرنے کے لئے سینکڑوں نہیں ہزاروں دلائل جمع کر دیئے۔

۴: ... دیگر دلائل کے علاوہ مرزا غلام احمد قادیانی نے لوگوں سے مباہلہ بھی کئے، جن کے نتیجے میں اللہ تعالیٰ نے مرزا کا مسیح کذاب ہونا کھلے طور پر واضح فرمادیا، مثلاً:

الف: ... مرزا قادیانی نے ایک عیسائی پادری ڈپٹی آتھم سے پندرہ دن تک مناظرہ کیا، جب مرزا اپنے مضبوط حریف سے عہدہ برآ نہ ہو سکا تو جنابِ الہی سے فیصلے کا طالب ہوا، بقول اس کے خدا نے یہ فیصلہ کیا کہ دونوں فریقوں میں سے جو جھوٹ پر ہے وہ آج کی تاریخ (۵ جون ۱۸۹۳ء) سے پندرہ مہینے کے اندر ہاویہ میں گرایا جائے گا۔

اس مباہلہ کی پیش گوئی کا اعلان کرتے ہوئے مرزا نے لکھا:

”میں اس وقت اقرار کرتا ہوں کہ اگر یہ پیش گوئی جھوٹی

نکلی، یعنی وہ فریق جو خدا تعالیٰ کے نزدیک جھوٹ پر ہے، پندرہ ماہ کے

عرصے میں آج کی تاریخ سے بسزائے مدت ہاویہ میں نہ پڑے تو میں ہر ایک سزا اٹھانے کے لئے تیار ہوں، مجھ کو ذلیل کیا جاوے، رُوسیاہ کیا جاوے، میرے گلے میں رسہ ڈال دیا جاوے، مجھ کو پھانسی دیا جاوے، ہر ایک بات کے لئے تیار ہوں۔“ (جنگ مقدس آخری صفحہ)

میعاد گزرتی گئی اور قادیانی اُمت کو یقین تھا کہ ان کے مسیح کذاب کی پیش گوئی کے مطابق آتھم پندرہ مہینے کے اندر ضرور مرجائے گا، کیونکہ مرزا نے یہ بھی لکھا تھا:

”اور میں اللہ جل شانہ کی قسم کھا کر کہتا ہوں کہ وہ ضرور ایسا ہی کرے گا، ضرور کرے گا، ضرور کرے گا، زمین و آسمان ٹل جائیں گے پر اس کی باتیں نہ ٹلیں گی۔“ (ایضاً)

”اگر میں جھوٹا ہوں تو میرے لئے سولی تیار رکھو، اور تمام شیطانوں اور بدکاروں اور لعنتیوں سے زیادہ مجھے لعنتی قرار دو۔“ (ایضاً)

لیکن جب میعاد میں صرف ایک رات باقی رہ گئی تو قادیان میں پوری رات شور قیامت برپا رہا، اور سب مرد و زن، چھوٹے بڑے اللہ تعالیٰ کے سامنے ناک رگڑتے ہوئے یہ بین کر رہے تھے کہ: ”یا اللہ! آتھم مرجائے، یا اللہ! آتھم مرجائے“ (”الفضل“ ۲۰ جولائی ۱۹۴۰ء) اور سب کو یقین تھا کہ آج سورج طلوع نہیں ہوگا کہ آتھم مرجائے گا۔ مرزا غلام احمد قادیانی نے آتھم کو مارنے کے لئے ٹونے ٹونے بھی کئے اور چنے پڑھوا کر اندھے کنویں میں ڈلوائے (سیرۃ المہدی ج: ۲ ص: ۱۷۸۰) لیکن ان تمام تدبیروں، دُعاؤں اور شور و غوغا کے باوجود اللہ تعالیٰ نے آتھم کو مرنے نہیں دیا — اللہ تعالیٰ نے اپنے فعل سے ثابت کر دیا کہ:

\*... مرزا قادیانی کی یہ پیش گوئی خد کی طرف سے نہیں تھی بلکہ مرزا کا اپنا افترا تھا۔

\*... مرزا قادیانی اور ڈپٹی آتھم دونوں جھوٹے تو تھے ہی مگر مرزا، آتھم سے بڑا جھوٹا تھا، اللہ تعالیٰ کی نظر میں مرزا قادیانی اس سزا کا مستحق تھا جو اس نے خود اپنے قلم سے

تجویز کی تھی، یعنی:

\*... اس کو ذلیل کیا جائے۔

\*... رُوسیاہ کیا جائے۔

\*... اس کے گلے میں رسہ ڈالا جائے۔

\*... اس کو پھانسی پر لٹکایا جائے۔

\*... اور جو سزا ممکن ہو سکتی ہے اس کو دی جائے۔

کیا اس خدائی فیصلے کے بعد بھی مرزا کو جھوٹا ثابت کرنے کے لئے کسی مباہلہ کی ضرورت رہ جاتی ہے...؟

ب: ... ۱۰/۱۲ یقعدہ ۱۳۱۰ھ کو امرتسر کی عید گاہ کے میدان میں مرزا قادیانی نے حضرت مولانا عبدالحق غزنوی مرحوم و مغفور سے روبرو مباہلہ کیا، اس کا فیصلہ بھی اللہ تعالیٰ نے دے دیا کہ مرزا قادیانی حضرت مولانا موصوف کے سامنے ایڑیاں رگڑ رگڑ کر مر گیا، اور مولانا موصوف مرزا کے مرنے کے بعد بھی سلامت باکرامت رہے، کیا اس کے بعد بھی مرزا کو جھوٹا ثابت کرنے کے لئے کسی آسمانی شہادت کی ضرورت ہے؟

ج: ... ۱۵/۱۷ اپریل ۱۹۰۷ء کو مرزا قادیانی نے حضرت مولانا ثناء اللہ امرتسری فاتح قادیان کے خلاف مباہلہ کا اشتہار شائع کیا جس کا عنوان تھا:

”مولوی ثناء اللہ صاحب امرتسری کے ساتھ آخری فیصلہ“

اس میں مرزا نے اللہ تعالیٰ سے نہایت تضرع و ابہتال کے ساتھ گڑ گڑا کر مکرر رُوس کرر یہ دُعا و التجا کی تھی کہ ہم دونوں میں سے جو جھوٹا ہے وہ سچے کی زندگی میں ہلاک ہو جائے۔ ”مگر نہ انسانی ہاتھوں سے، بلکہ طاعون و ہیضہ وغیرہ امراض مُہلکہ سے۔“ اور اس اشتہار میں مولانا مرحوم کو مخاطب کر کے مرزا نے لکھا:

”اگر میں ایسا ہی کذاب و مفتری ہوں جیسا کہ آپ اپنے

ہر ایک پرچے میں مجھے یاد کرتے ہیں تو میں آپ کی زندگی میں ہی

ہلاک ہو جاؤں گا، کیونکہ میں جانتا ہوں کہ مفسد اور کذاب کی بہت عمر نہیں ہوتی، اور آخر وہ ذلت اور حسرت کے ساتھ اپنے اشد دشمنوں کی زندگی میں ہی ناکام ہلاک ہو جاتا ہے، اور اس کا ہلاک ہونا ہی بہتر ہوتا ہے تاکہ وہ خدا کے بندوں کو تباہ نہ کرے۔

اور اگر میں کذاب اور مفتری نہیں ہوں، اور خدا کے مکالمے اور مخاطبے سے مشرف ہوں، اور مسیح موعود ہوں تو میں خدا کے فضل سے اُمید رکھتا ہوں کہ سنت اللہ کے موافق آپ مکذبین کی سزا سے نہیں بچیں گے۔

پس اگر وہ سزا جو انسان کے ہاتھوں سے نہیں، بلکہ محض خدا کے ہاتھوں سے ہے جیسے طاعون، ہیضہ وغیرہ، مہلک بیماریاں، آپ پر میری زندگی میں ہی وارد نہ ہوئیں تو میں خدا تعالیٰ کی طرف سے نہیں۔ یہ کسی الہام یا وحی کی بنا پر پیش گوئی نہیں، محض دُعا کے طور پر میں نے خدا سے فیصلہ چاہا ہے۔“

اور اس اشتہار کے آخر میں مرزا قادیانی نے لکھا:

”بالآخر مولوی صاحب سے التماس ہے کہ وہ میرے اس تمام مضمون کو اپنے پرچے میں چھاپ دیں، اور جو چاہیں اس کے نیچے لکھ دیں، اب فیصلہ خدا کے ہاتھ میں ہے۔“

(مجموعہ اشتہارات ج: ۳ ص: ۵۷۹)

مرزا قادیانی نے نہایت آہ و زاری کے ساتھ گڑ گڑا کر اللہ تعالیٰ سے جو فیصلہ طلب کیا تھا، اس کا نتیجہ سب کے سامنے آ گیا کہ مرزا ۲۵ مئی ۱۹۰۸ء کو رات دس بجے تک چنگا بھلا تھا، شام کا کھانا کھایا اور رات دس بجے کے بعد اچانک خدا کی عذاب یعنی وبائی ہیضے میں مبتلا ہوا، اور دونوں راستوں سے غلیظ مواد خارج ہونا شروع ہوا، چند ہی گھنٹوں میں



زبان بند ہو گئی اور بارہ گھنٹوں کے اندر ۲۶ مئی ۱۹۰۸ء کو ہلاک ہو گیا۔ جبکہ حضرت مولانا ثناء اللہ امرتسری مرحوم و مغفور، مرزا کی ہلاکت کے بعد اکتالیس سال تک ماشاء اللہ زندہ و سلامت رہے، اور قیام پاکستان کے بعد ۱۹۴۹ء میں سرگودھا میں واصل بحق ہوئے، رحمہ اللہ رحمۃ واسعہ!

اس خدائی فیصلے اور مرزا کی منہ مانگی موت نے ثابت کر دیا کہ وہ مفتری اور کذاب تھا، مسیح موعود نہیں تھا، اور یہ کہ وہ خدا کی طرف سے نہیں، بلکہ شیطان کی طرف سے تھا۔  
مرزا طاہر صاحب! کیا اس خدائی فیصلے کے بعد بھی کسی مباہلہ کی ضرورت باقی رہ جاتی ہے...؟

۵:۔۔۔ آج آپ علمائے امت کو مباہلہ کے لئے بلاتے ہیں، کیا آپ کو یاد نہیں رہا کہ نصف صدی تک آپ کے ابا مرزا محمود کو مباہلہ کے مسلسل چیلنج دیئے جاتے رہے اور مرزا محمود نے ان میں سے کسی ایک کا سامنا کرنے کی جرأت نہیں کی، اس کی بھی چند مثالیں سن لیجئے:

الف:۔۔۔ مولانا عبدالکریم مباہلہ نے مرزا محمود پر بدکاری کا الزام لگایا، اسے بار بار مباہلہ کا چیلنج دیا، اور اس کے لئے ”مباہلہ“ نامی اخبار جاری کیا، مرزا محمود نے مباہلہ کا چیلنج قبول کرنے کے بجائے مولانا عبدالکریم کو ظلم و ستم کا نشانہ بنایا، ان کا مکان جلا دیا گیا، ان پر قاتلانہ حملہ کرایا گیا اور بالآخر ان کو قادیان چھوڑنے پر مجبور کر دیا۔

اگر مرزا محمود میں حق و صداقت کی کوئی رمق تھی تو اس نے مولانا عبدالکریم مباہلہ کا چیلنج کیوں قبول نہیں کیا؟ مولانا عبدالکریم مرحوم کی بہن سکیہ جو مرزا محمود کے گناہ کا تختہ مشق بنی، شاید آج زندہ ہے۔

ب:۔۔۔ عبدالرحمن مصری، مرزا محمود کا ایسا وفادار اور مقرب مرید تھا کہ مرزا محمود کی غیر حاضری میں وہ قادیان میں ”قائم مقام خلیفہ“ تک بنایا گیا۔ غالباً ۱۹۳۶ء میں مرزا محمود نے اس کی اولاد کو اپنی ہوس کا نشانہ بنایا، عبدالرحمن مصری نے مرزا محمود سے اس معاملے کی

تحقیقات کے لئے جماعت کے چند سرکردہ افراد پر مشتمل کمیشن مقرر کرنے کا مطالبہ کیا، جس کے سامنے وہ اپنے الزامات ثابت کر سکے۔ مرزا محمود نے اس مطالبے کو تسلیم کرنے کے بجائے عبدالرحمن مصری اور اس کے ساتھی فخر الدین ملتانی کو ظلم و جور کا نشانہ بنایا، ملتانی کو قتل کر دیا گیا اور مصری پر نقص امن کے تحت مقدمات دائر کر دیئے گئے۔ عبدالرحمن مصری نے عدالت عالیہ لاہور میں بیان دیتے ہوئے کہا:

”موجودہ خلیفہ سخت بدچلن ہے، یہ تقدس کے پردے میں عورتوں کا شکار کھیلتا ہے، اس کام کے لئے اس نے بعض مردوں اور بعض عورتوں کو بطور ایجنٹ رکھا ہوا ہے، ان کے ذریعے یہ معصوم لڑکیوں لڑکوں کو قابو کرتا ہے، اس نے ایک سوسائٹی بنائی ہوئی ہے، اس میں مرد اور عورتیں شامل ہیں، اور اس سوسائٹی میں زنا ہوتا ہے۔“  
عبدالرحمن مصری نے مرزا محمود کے نام ایک خط میں یہ بھی لکھا تھا:

”میں آپ کے پیچھے نماز نہیں پڑھ سکتا، کیونکہ مجھے مختلف ذرائع سے یہ علم ہو چکا ہے کہ آپ ”جنسی“ ہونے کی حالت میں ہی بعض دفعہ نماز پڑھانے آ جاتے ہیں۔“ (کمالات محمودیہ)

ان تمام غلیظ الزامات کے باوجود مرزا محمود کو عبدالرحمن مصری کا سامنا کرنے کی جرأت نہ ہوئی اور اسے مصری کی دعوت کو قبول کرنا موت سے بدتر نظر آیا۔ کیا اس سے کھلے طور پر یہ نتیجہ نہیں نکلتا کہ اس کا انگ انگ اور بند بند نجس تھا؟ اور کیا اس کے بعد بھی کسی عقل مند کو اس کے جھوٹا اور نجس ہونے میں کوئی شبہ رہ سکتا ہے...

ج: ... پھر آپ ہی کی جماعت کے ایک منحرف گروہ نے ”حقیقت پسند پارٹی“ تشکیل دی، جس نے مرزا محمود پر سنگین اخلاقی الزامات عائد کئے، انہوں نے ”تاریخ محمودیت“ نامی کتاب لکھی، جس میں مرزا محمود کی بدکاریوں پر ۲۸ قادیانی مردوں اور عورتوں کی مؤکد بغضاب حلفیہ شہادتیں قلم بند کی گئیں، اور ان حلفیہ شہادتوں میں یہاں تک

لکھا گیا کہ مرزا اپنی بیٹیوں کی بھی عصمت دری کرتا ہے، اور یہ کہ اپنی آنکھوں کے سامنے اپنی بیوی سے بدکاری کراتا ہے۔ ”تاریخ محمودیت“ میں مرزا محمود کو مباہلہ کا چیلنج دیا گیا، اور ان مؤکد بعداب حلفیہ شہادتوں کے مقابلے میں اس سے مؤکد بعداب حلف اٹھانے کا مطالبہ کیا گیا۔

پھر یہی مضمون راحت ملک کی کتاب ”ربوہ کا مذہبی آمر“ میں، شفیق مرزا کی کتاب ”شہر سدوم“ میں، اور مرزا محمد حسین بی کام کی کتاب ”منکرین ختم نبوت کا انجام“ میں دہرایا گیا۔ اور مرزا محمود سے حلف مؤکد بعداب کے ساتھ ان واقعات کی تردید کرنے کا مطالبہ کیا گیا، لیکن مرزا محمود نے ان میں سے کسی چیلنج کا جواب نہ دیا اور اس پر سکوت مرگ طاری رہا۔ البتہ اپنے بھولے بھالے خوش عقیدہ مریدوں کو ان کتابوں کے نہ پڑھنے کا ”سرکاری فرمان“ جاری کر دیا۔ کیا اہل عقل اس سے یہ نتیجہ اخذ نہیں کریں گے کہ مرزا محمود کے اخلاق خدوخال وہی تھے جو ان کتابوں میں حلفیہ شہادتوں کے ذریعے بار بار دہرائے گئے ہیں۔ مرزا طاہر صاحب! کیا اسی ”خاندانی تقدس“ کے بل بوتے پر آپ علمائے امت کو مباہلہ کی دعوت دینے چلے ہیں؟

بادۂ عصیاں سے دامن تر بہ تر ہے شیخ کا

اس پہ دعویٰ ہے کہ اصلاحِ دو عالم ہم سے ہے

مرزا طاہر صاحب! اگر آپ کا خیال ہے کہ آپ کے باپ پر ”حقیقت پسند پارٹی“

کے الزامات غلط ہیں، تو آپ نے ان کے مقابلے ”حلف مؤکد بعداب“ اٹھا کر ان الزامات کی تردید کرنے اور مباہلہ کرنے کی جرأت آج تک کیوں نہیں کی؟

وہ... آپ کی جماعت میں کسی اور کو معلوم ہو یا نہ ہو، لیکن آپ کو تو یقیناً معلوم ہوگا

کہ آپ کے ابا کی موت کن عبرت ناک حالات میں ہوئی، اور وہ اپنی زندگی کے آخری گیارہ سالوں میں ایک طویل عرصے تک کس طرح مرقعِ عبرت بنا رہا، خصوصاً اس کے آخری دو رایام میں اس کی کیفیت کیا تھی؟ اور اس کی موت کیسی عبرت ناک ہوئی...؟

اور پھر یاد ہوگا کہ آپ کے بڑے بھائی مرزا ناصر کی ناگہانی موت کس طرح واقع ہوئی؟ آپ کے اسلام آباد کے ”قصر خلافت“ کے سامنے ہونے والے جلسے میں شیر ختم نبوت رفیق محترم مولانا اللہ وسایا زید مجدد نے آپ کی ہمشیرہ صاحبہ کا جو خط پڑھ کر سنایا تھا، اس کا کیا مضمون تھا جس کو سن کر مرزا ناصر صدمے کی تاب نہ لا سکا اور یکا یک اس کی حرکت قلب بند ہو گئی؟

مرزا طاہر صاحب! کیا آپ اپنے بھائی، اپنے باپ اور اپنے دادا کی عبرت ناک موتوں کو یک چشم خود دیکھنے اور سننے کے بعد بھی آپ کے لئے کسی مزید سامان عبرت کی ضرورت ہے کہ آپ علما، اُمت سے مباہلہ کرنے چلے ہیں؟ کیا آپ یہ دُعا کرنے کی جرأت کریں گے کہ اللہ تعالیٰ آپ کو آپ کے باپ اور دادا کی سی موت نصیب کرے...؟

۶:۔۔۔ رفیق محترم جناب مولانا منظور احمد صاحب چنیوٹی مدظلہ العالی آپ کے ابا مرزا محمود کو اس کی زندگی میں ہر سال مباہلہ کی دعوت دیتے رہے، اس کی عبرت ناک موت کے بعد آپ کے بھائی مرزا ناصر کو ہر سال مباہلہ کا چیلنج دیتے رہے، اور اس کی ناگہانی موت کے بعد خود آپ کو بھی التزام کے ساتھ ہر سال مباہلہ کی کھلی دعوت دیتے رہے، انہوں نے متعدد بار ویمبلے ہال لندن (Wembley Hall London) میں بھی آپ کو دعوت دی، لیکن آپ کے باپ کو، آپ کے بھائی کو اور خود آپ کو آج تک اس چیلنج کا سامنا کرنے کی جرأت نہیں ہوئی، کیا اس کا صاف صاف مطلب یہ نہیں کہ آپ کو اپنے اور اپنے باپ دادا کے جھوٹا ہونے کا حق یقین ہے...؟

مرزا طاہر صاحب! علمائے اُمت کو مباہلہ کا چیلنج دینے سے پہلے کیا آپ کا فرض نہیں تھا کہ آپ یہ تمام قرضے ادا کر دیتے جو آپ کے اور آپ کے باپ دادا کے ذمے واجب الادا ہیں...؟

۷:۔۔۔ آپ نے اس فقیر کو مباہلہ کی دعوت دی ہے، یہ فقیر اس کے لئے بسر و چشم حاضر ہے، لیکن مباہلہ کا وہ طریقہ نہیں جو آپ نے اختیار کیا ہے، اور جس کی آپ نے علمائے



اُمت کو دعوت دی ہے کہ وہ بھی آپ کی طرح گھر بیٹھے آپ پر لعنتیں بھیجتے رہیں اور اخباروں اور رسالوں میں لعنت کی پتنگ بازی کرتے پھریں۔ گھر بیٹھ کر چرچہ چلانا عورتوں کا مشغلہ ہے اور کاغذی پتنگ بازی بچوں کا کھیل ہے۔

مہابلے کا طریقہ وہ ہے جو قرآن کریم نے آیت مہابلے میں بیان فرمایا ہے کہ دونوں فریق اپنی عورتوں، بچوں اور اپنے متعلقین کو لے کر میدان میں نکلیں، چنانچہ اس آیت کی تعمیل میں آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نصاریٰ نجران کے مقابلے میں نکلے اور ان کو نکلنے کی دعوت دی۔ اور خود آپ کا دادا مرزا غلام احمد قادیانی، حضرت مولانا عبدالحق غزنوی مرحوم و مغفور کے مقابلے میں عید گاہ امرتسر کے میدان میں نکلا۔

### فقیر کے مقابلے میں مرد میدان بن کر آئیے...

اگر آپ اس فقیر کو مہابلے کی دعوت دینے میں سنجیدہ ہیں تو بسم اللہ! آئیے مرد میدان بن کر میدان مہابلے میں قدم رکھئے، تاریخ، وقت اور جگہ کا اعلان کر دیجئے کہ فلاں وقت، فلاں جگہ مہابلے ہوگا، پھر اپنے بیوی بچوں اور متعلقین کو ساتھ لے کر مقررہ وقت پر میدان مہابلے میں آئیے، یہ فقیر بھی ان شاء اللہ اپنے بیوی بچوں اور متعلقین کو ساتھ لے کر وقت مقررہ پر پہنچ جائے گا۔

اور بندہ کے خیال میں مہابلے کے لئے درج ذیل تاریخ، وقت اور جگہ سب سے زیادہ موزوں ہوگی:

تاریخ: ... ۲۳ مارچ ۱۹۸۹ء

دن: ... جمعرات

وقت: ... دو بجے بعد از نمازِ ظہر

جگہ: ... مینارِ پاکستان لاہور

میں نے اس کو بہترین تاریخ، وقت اور جگہ اس لئے کہا کہ آپ کو یاد ہوگا کہ آپ



کے دادا مسلمان پنجاب مرزا غلام احمد قادیانی نے ۲۳ مارچ ۱۸۸۹ء کو لدھیانہ میں اپنی دجالی بیعت کا سلسلہ شروع کیا تھا، گویا ۲۳ مارچ ۱۹۸۹ء کی تاریخ آپ کے مسیح و جال کی صد سالہ تقریب ہے اور اس نے لدھیانہ میں سلسلہ بیعت کا آغاز کیا تھا، میدان مباہلہ میں آپ کا مقابلہ بھی لدھیانوی سے ہوگا، اس طرح باب لد پر مسیح و جال کو قتل کیا جائے گا۔

ظہر کے بعد کا وقت میں نے اس لئے تجویز کیا کہ حدیث نبوی کے مطابق اس وقت فتح و نصرت کی ہوائیں چلتی ہیں۔ اور جگہ کے لئے مینار پاکستان کا تعین اس لئے کیا ہے کہ پاکستان میں اس سے بہتر اور کشادہ جگہ اجتماع کے لئے شاید کوئی اور نہیں ہوگی۔ علاوہ ازیں ۲۳ مارچ کی تاریخ یوم پاکستان بھی ہے۔ یوم پاکستان کو مینار پاکستان پر اجتماع نہایت مناسب ہے۔ تاہم مجھے اس تاریخ، وقت اور جگہ پر اصرار نہیں، بلکہ تاریخ، وقت اور جگہ کی تعین کو آپ کی صوابدید پر چھوڑتا ہوں، آپ جو تاریخ، وقت اور پاکستان میں مقام مباہلہ مناسب سمجھیں، تجویز کر کے مجھے اطلاع دیں۔

یہ فقیر امت محمدیہ کا ادنیٰ ترین خادم ہے اور آپ چشم بدوڑ ”امام جماعت احمدیہ“ ہیں، اس فقیر کو اپنے ضعف و قصور کا اعتراف ہے اور آپ کو اپنی امامت و زعامت اور تقدس پر ناز ہے، لیکن... الحمد للہ ثم الحمد للہ... یہ فقیر آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے غلاموں کا ادنیٰ غلام ہے، اور آپ جھوٹے مسیح کے جانشین ہیں۔ یہ فقیر سید دو عالم صلی اللہ علیہ وسلم کے دامن رحمۃ للعالمین سے وابستہ ہے، اور آپ دور حاضر کے مسلمان کذاب کے دم چھلا ہیں۔ یہ فقیر اپنی نالائقی کا اعتراف تقصیر لے کر میدان مباہلہ میں قدم رکھے گا، آپ اپنی امامت و زعامت اور تقدس پر ناز کرتے ہوئے آئیے۔ میں حضرت خاتم النبیین صلی اللہ علیہ وسلم کی ختم نبوت کا علم اٹھائے ہوئے آؤں گا، آپ مرزا غلام احمد قادیانی کی جھوٹی نبوت و مسیحیت کا سیاہ جھنڈا لے کر آئیے۔

آئیے! اس فقیر کے مقابلے میں میدان مباہلہ میں قدم رکھئے اور پھر میرے مولائے کریم کی غیرت و جلال اور قہری تجلی کا کھلی آنکھوں تماشا دیکھئے۔

آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے نصاریٰ نجران کے بارے میں فرمایا تھا کہ اگر وہ مباہلہ کے لئے نکل آتے تو ان کے درختوں پر ایک پرندہ بھی زندہ نہ بچتا۔  
 آئیے! آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے ایک ادنیٰ امتی کے مقابلے میں میدان مباہلہ میں نکل کر آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی ختم نبوت کا اعجاز ایک بار پھر دیکھ لیجئے۔

اس ناکارہ کا خیال ہے کہ آپ آگ کے اس سمندر میں کودنا کسی حال میں قبول نہیں کریں گے، اپنے باپ دادا کی طرح ذلت کی موت مرنا پسند کریں گے، لیکن آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے اس نالائق امتی کے مقابلے میں میدان مباہلہ میں اترنے کی جرأت نہیں کریں گے۔

### ایک گزارش

۸: ... یہ ذکر کر دینا ضروری ہے کہ اس ناکارہ کو یاد دیگر علمائے امت کو آپ سے یا آپ کے باپ دادا سے کوئی ذاتی عناد نہیں، نہ کسی جائیداد کا جھگڑا ہے، نہ کسی ریاست کا تنازع ہے، واللہ العظیم! ہم آپ کے خیر خواہ ہیں، اور نہایت دردمندی و دل سوزی سے چاہتے ہیں کہ آپ دوزخ کی آگ سے بچ جائیں۔ مرزا قادیانی کے دجل و فریب اور مکاری و عیاری کی دھجیاں اس لئے بکھیرتے ہیں تاکہ امت محمدیہ... صلی اللہ علیٰ صاحبہا وسلم... کے ایمان کو بچایا جاسکے اور آپ کی جماعت کے افراد کو دوزخ کی جلتی آگ سے نکالا جاسکے۔ خدا شاہد ہے کہ ہمارا یہ عمل محض رضائے الہی کے لئے اور آپ کی اور امت محمدیہ... صلی اللہ علیٰ صاحبہا وسلم... کی خیر خواہی کے لئے ہے۔ ہماری یہ خیر خواہی آپ لوگوں کو مرنے کے بعد معلوم ہوگی۔ میں آج پھر آپ سے اور آپ کی جماعت کے ایک ایک فرد سے نہایت اخلاص و خیر خواہی اور دل سوزی و دردمندی کے ساتھ کہتا ہوں کہ آپ لوگ راستے سے بھٹک گئے ہیں، مرزا غلام احمد قادیانی مسیح موعود نہیں، آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم

نے جس مسیح کے قرب قیامت میں آنے کی خبر دی ہے، وہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام ہیں، حضرت مسیح علیہ السلام نے فرمایا تھا:

”خبردار! کوئی تم کو گمراہ نہ کر دے، کیونکہ بہتیرے میرے نام پر آئیں گے اور کہیں گے میں مسیح ہوں، اور بہت سے لوگوں کو گمراہ کریں گے۔“ (متی ۲۴-۵)

مرزا غلام احمد قادیانی بھی انہی لوگوں میں سے تھا جنہوں نے مسیح ہونے کا دعویٰ کر کے بہت سے لوگوں کو گمراہ کیا۔ مرزا غلام احمد نے یا آپ لوگوں نے جو تاویلات ایجاد کر رکھی ہیں وہ محض نفس و شیطان کا دھوکا ہے، یہ تاویلیں نہ قبر میں منکر نکیر کے آگے چلیں گی اور نہ فردائے قیامت میں داوڑ محشر کے سامنے کام دیں گی۔

مرزا طاہر صاحب! آپ کے لئے اپنی امامت و امارت اور خاندانی گدی کو چھوڑ کر حق کا اختیار کرنا بے شک مشکل کام ہے، لیکن اگر آپ محض رضائے الہی کے لئے حق کو اختیار کر لیں تو حق تعالیٰ شانہ آپ کو دنیا و آخرت میں اس کا ایسا بہترین بدلہ عطا فرمائیں گے کہ اس کے مقابلے میں آپ کی موجودہ ریاست و امارت بیچ در بیچ ہے۔ اور اگر آپ نے ریاست کو حق پر ترجیح دی تو مرنے کے بعد ایسی ذلت اور ایسے عذاب کا سامنا کرنا ہوگا جس کے سامنے موجودہ عزت و وجاہت لغو و بے وقعت ہے۔ میں آپ کی جماعت کے تمام افراد سے بھی گزارش کرتا ہوں کہ مرنے سے پہلے توبہ کر لیں، اور میں آپ کو، اور آپ کی جماعت کو اور ان تمام افراد کو، جن کی نظر سے میری یہ تحریر گزرے، گواہ بناتا ہوں کہ میں نے حق و صداقت کا پیغام آپ تک پہنچا دیا، کسی شخص کے دل میں حق طلبی کا جذبہ ہو اور وہ اپنا اطمینان چاہتا ہو تو اس کو سمجھانے کے لئے تیار ہوں۔

۹:۔۔۔ آپ نے مجھ سے فرمائش کی ہے کہ میں اپنا جواب اخباروں اور رسالوں میں شائع کر دوں۔ جہاں تک میرے امکان میں ہے میں نے اشاعت کی کوشش کی ہے، آپ اگر چاہیں تو اپنے اخبارات و رسائل میں میرا جواب شائع کرا سکتے ہیں۔

۱۰:۔... میں نے آپ کو میدانِ مباہلہ میں اُترنے کی جو دعوت دی ہے، چار مہینے تک اس کے جواب کی مہلت دیتا ہوں، اور جواب کے لئے آخری تاریخ یکم جنوری ۱۹۸۹ء مقرر کرتا ہوں۔

۱۱:۔... میرا خیال ہے کہ آپ نے دیگر اکابر علماء کے نام بھی مباہلہ کا چیلنج بھیجا ہوگا، اس لئے یہ عرض کرنا ضروری سمجھتا ہوں کہ علمائے اُمت کے اس خادم کا جواب سب کی طرف سے تصور فرمائیں، ہر ایک کو فروغِ دِارِ حمت اٹھانے کی ضرورت نہیں۔

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ وَاشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ أَسْتَغْفِرُكَ

محمد یوسف لدھیانوی

۱۸/۱/۱۳۰۹ھ

۱/۹/۱۹۸۸ء

## مرزا طاہر پر آخری اتمامِ حجت

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ  
الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَسَلَامٌ عَلٰی عِبَادِهِ الَّذِیْنَ اصْطَفٰی

گزشتہ سال مرزا طاہر قادیانی نے اپنی جماعت کو مارفیا کا انجکشن دینے کے لئے مباہلہ کا ڈھونگ رچایا، اور ایک پمفلٹ شائع کیا، جس کا عنوان تھا:  
”جماعت احمدیہ عالمگیر کی طرف سے دُنیا بھر کے معاندین، مکفرین اور مکذبین کو مباہلہ کا کھلا چیلنج۔“

مرزا طاہر نے جہاں مشاہیر اُمت و اکابر ملت کے نام اس چیلنج کی کاپیاں بھجوائیں وہاں (نامعلوم کس مصلحت سے) اس گمنام ویچ میرز کے نام بھی اس کی کاپی ارسال فرمائی۔ اس ناکارہ نے محرم الحرام ۱۴۰۹ھ کو اس کا جواب مرزا طاہر کے نام بھجوایا۔ جو پاک و ہند کے متعدد رسائل و جرائد میں ”مرزا طاہر کے جواب میں“ کے عنوان سے شائع ہوا، اور الگ کتابچے کی شکل میں بھی بڑی تعداد میں شائع ہو چکا ہے، اور کینیڈا، امریکا وغیرہ میں ہزاروں کی تعداد میں اس کی فوٹو اسٹیٹ کاپیاں تقسیم ہوئیں۔ اس کے متعدد انگریزی تراجم بھی بیرونی ممالک میں ہزاروں کی تعداد میں شائع ہوئے۔ اس ناکارہ کے جواب مباہلہ سے مرزا قادیانی کی ذریت کا ذبہ ان شاء اللہ قیامت تک عہدہ برآ نہیں ہو سکے گی، لیکن اس ناکارہ نے چونکہ مرزا طاہر کو پابند کر دیا تھا کہ مجھے اس کا جواب چار مہینے کے اندر یکم جنوری ۱۹۸۹ء تک ملنا چاہئے، اس لئے مرزا طاہر پر ”نہ جائے رفتن، نہ پائے ماندن“ کی



کیفیت طاری ہوگئی، بالآخر جواب کی مقررہ میعاد گزرنے کے بعد مرزا طاہر نے اپنے سیکریٹری کے ذریعے اُلٹا سیدھا جواب بھجوایا۔ ذیل میں پہلے مرزا طاہر کے سیکریٹری کا جوابی خط نقل کیا جاتا ہے، پھر اس قادیانی خط پر اس ناکارہ کا تبصرہ پیش خدمت ہے۔ اس سے قارئین کرام کو اندازہ ہوگا کہ مرزا طاہر نے مباہلہ کا چیلنج دے کر سنگین غلطیاں کی ہیں۔

اول: ... نام نہاد مباہلہ کا ڈھونگ رچا کر قادیانیت کی مردہ لاش کو ایک بار پھر پوسٹ مارٹم کے لئے پیش کر دیا۔

دوم: ... جب مرزا طاہر کی دعوت پر اسے میدان مباہلہ میں آنے کے لئے لکارا گیا تو مرزا طاہر نے دُم دبا کر بھاگ جانے میں عافیت سمجھی، اور قادیانی فطرت کے مطابق تاویلات کا دفتر کھول دیا۔

سوم: ... اس ناکارہ نے جواب کے لئے چار مہینے کی مہلت دی تھی، لیکن اللہ تعالیٰ نے اس طویل مدت تک مرزا طاہر اور اس کی دُزیت پر سکوت مرگ طاری کئے رکھا، میعاد گزرنے کے بعد قادیانی سیکریٹری نے جو خط لکھا (جس کا عکس ابھی آپ ملاحظہ فرمائیں گے) وہ پانچ منٹ کا کام تھا، لیکن اللہ تعالیٰ کو قادیانیت کی ذلت و رُسوائی منظور تھی، اس لئے اللہ تعالیٰ نے یہ پانچ منٹ کا کام چار مہینے میں بھی نہیں ہونے دیا۔

چہارم: ... میں نے مرزا طاہر کے باپ اور دادا کے بارے میں جن واقعات کا ذکر کیا تھا اور جن سے مرزا قادیانی کا دجال اور کذاب اور مرتد، مردود و ملعون ہونا اظہر من الشمس ثابت ہوتا ہے، مرزا طاہر اور اس کی پوری جماعت ان کے جواب سے عاجز رہی۔

پنجم: ... مرزا طاہر نے مباہلہ کے قرآنی مفہوم میں تحریف کرنے کی جو کوشش کی تھی، وہ بھی ناکام ہوئی، اور میدان مباہلہ سے فرار کر کے مرزا طاہر اپنے دادا کے بقول ”لَعْنَتُكَ عَلَىٰ سَائِرِ الْمُرَا“

اس ناکارہ کا خیال ہے کہ ان شاء اللہ مرزا طاہر میرے نئے چیلنج کو قبول کرنے کی بھی جرأت نہیں کرے گا، بلکہ اسے میرے چیلنج کا جھوٹا سچا جواب دینے کی بھی توفیق نہیں ہوگی۔ اب آپ پہلے قادیانی خط کا عکس ملاحظہ فرمائیں اور پھر اس پر ہمارا تبصرہ۔

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ  
لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ مُحَمَّدٌ رَسُولُ اللَّهِ

PRESS AND PUBLICATION DESK (CENTRAL)

Ahmadiyya Muslim Association

16-18 Gresham Road, London SW18 5SL  
Tel: 01-870 8517 ext 147, 01-870 0919, Fax: 01-870 8095

۱۴۰۰ھ

غائب مولا محمد یحییٰ صاحب مدظلہ العالی:

امام جلیل حضرت مولا محمد کو دوت مہاجر کے جواب میں آپ کا فوجہ شائع شدہ پمپلٹ  
موصول ہوا جس میں آپ نے حقائق کو سچے لکھنے کا کڑا کر دیا ہے۔ اور ایک دفعہ پھر انتہائی پختہ اور  
غیر الزامات کو درپا کرنا ہے اور نہ ہی حالت دنیا کو دکھانے کا کوشش ہے۔ فوجہ کے مقدس  
منظور پر ہیں طرہ آپ نے یہ ہونہ الزامات لگانے کا کوشش ہے کہ قرآن کریم کے الفاظ میں لعنت اللہ  
علیٰ الکاذبین کہنے کے بعد وہ ہر ایک جواب پر کہتا ہے۔

حیرت ہے کہ ایک طرف تو محب نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم کے مقدس حق سے وابستگی کا اظہار کر رہے ہیں اور  
دوسری طرف آپ کا کہنا ہے کہ کھانا تو ہے کہ جس سے اس کا ذکر کا واسطہ بن گیا۔  
آپ لکھتے ہیں: "ترا کا کلاب آفتاب نصف النہار کا طرہ بیان ہو چکا ہے" مثلاً: "جب کہ قرآن کا  
مصدقہ احمدیہ کو جس کا بنیاد حضرت مولا نے ۱۸۸۹ء میں آٹھ مہینہ ترقی دیا ہے جاری ہے اور  
مجید مدین جون درجہ اس مقدس مصدق میں داخل ہو رہی ہیں مگر آپ یہی اصول اچھے مگر  
انہیوں میں شکریہ ہے۔

آپ نے اپنے پمپلٹ میں مذکور الزامات کو پھر درپا ہے جو تو بڑا افسوس کا کہ آپ دہرا آتے ہیں اور میں  
وجہ سے امام جلیل احمدی کو باطلہ فرما دینا پڑا۔ اگر آپ میں ذرا ہر میں شرافت ہوئی تو  
امام جلیل احمدی کے مہاجر کے چیلنج کو سچے طرہ قبول کرتے تاکہ دنیا جان لے کہ آپ جتنے ہیں  
اور عام قرار اختیار کرنے کا نہ سوچتے۔ مہاجر کہنے یا منکر سے کا نام نہیں لکھ کر بحث مباحثہ  
کہ حد تک نہ کر دے کہ ذریعہ مسالفا تھا تاکہ حقائق میں پہچانے کا نام ہے۔ مہاجر دکانہ مذہب  
فنائن کا ہے پسند لیجئے کہ نام ہے اور آپ مہاجر کی ٹوٹے کسی مخصوص مقام پر فریقین کا افتخار  
معمود ہے نہیں۔ اس سے آپ کا کہنا کہ فتنہ تاریخ کو فتنہ وقت سبب پاکستان پاکی  
اور جگہ آڑ مہاجر سے قرار کے بعد کواکب صفحہ نہیں دیکھا۔ ہمارا ایمان ہے کہ فدا تھا  
کائنات میں ہر جگہ موجود ہے اور اس کے متبعانہ سے کوئی جگہ باہر نہیں لکھ کر نام اس سے  
تسلط اور جہوت سے خالی نہیں۔ مگر اگر یہ نہیں دیکھا کہ ہر جگہ ہے۔ اس کو منہ لپ

کہ لعلہ اللہ علیہ السلام کہہ میں آخر آپ کو پہلے پٹ لکھ رہا ہوں فرجین کا وجود  
 صرف ہے۔ اسے اگر آپ میں افسوس اور وہابی عزائم سے کہ آئیے مردہ ہوں بے  
 اللہ ان الزامات کو جن کا ذکر بالا میں لکھا گیا ہے کہ وہابیوں نے آپ کو آپ  
 درست سمجھا ہے کہ لعلہ اللہ علیہ السلام کہہ میں اللہ اپنے دستوں کو دیں۔ پیر دلچیں  
 ہوا تھا کہ مردہ درست ہیں کہ مردہ جیکہ اللہ ہمیشہ فرجین میں پڑ کر دکھاتا ہے۔  
 میں ہم آپ کو نصیحت کرتے ہیں کہ تقویٰ اختیار کریں اور استغفار سے کام لیں لعلہ اللہ علیہ السلام  
 مقرر کردہ امام کے خوف سے اپنی چوڑی دیں تاکہ آپ فراتھا کا نام لگائی سے بچیں۔ باب نمبر  
 فراتھا کا جو آئندہ نشان ظہر فرماتا ہے ان سے برت حاصل کریں۔

جانب

ابن ابی جریج  
 ہاں لکھ رہا ہے اللہ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ  
الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَسَلَامٌ عَلٰی عِبَادِهِ الَّذِیْنَ اصْطَفٰی

جناب مرزا طاہر احمد صاحب! سلام علی من اتبع الهدی  
آپ نے ”مباہلہ کے چیلنج“ کی ایک کاپی اس ناکارہ کے نام بھی بھجوائی تھی، میں  
نے اپنے خط محررہ ۱۸/محرم الحرام ۱۴۰۹ھ میں آپ کی دعوت قبول کرتے ہوئے لکھا تھا کہ  
بسم اللہ! تاریخ اور جگہ کا اعلان کر کے مقررہ وقت پر تشریف لائیے، یہ فقیر بھی حاضر ہو جائے  
گا۔ اور ساتھ ہی اپنی طرف سے تاریخ اور جگہ کی تجویز لکھ بھیجی تھی۔ جواب کے لئے آپ کو  
چار مہینے کی مہلت دی تھی۔ جس کی آخری تاریخ یکم جنوری ۱۹۸۹ء تھی۔ آپ کا جواب جس  
پر آپ کے سیکریٹری کے دستخط ہیں، مجھے ۳ جنوری کو ملا، رسید بھیجنے کا شکریہ! آپ کے اس  
خط کے چند نکات پر تبصرے کی اجازت چاہتا ہوں۔

۱:۔۔۔ آپ کے سیکریٹری صاحب لکھتے ہیں:

”امام جماعت احمدیہ حضرت مرزا طاہر احمد کی دعوت  
مباہلہ کے جواب میں آپ کی طرف سے شائع شدہ پمفلٹ موصول  
ہوا، جس میں آپ نے حقائق کو مسخ کرنے کی کوئی کسر اٹھا نہیں رکھی،  
اور ایک دفعہ پھر انتہائی لچر اور غلیظ الزامات کو دہرا کر اپنی اندرونی  
حالت دنیا کو دکھانے کی کوشش کی ہے، خدا تعالیٰ کے مقدس انسانوں  
پر جس طرح آپ نے بے ہودہ الزامات لگانے کی کوشش کی ہے۔  
قرآن کریم کے الفاظ میں لعنۃ اللہ علی الکاذبین کہنے کے علاوہ اور کیا  
جواب ہو سکتا ہے۔“

سب سے پہلے تو آپ کی راست گوئی کی داد دیتا ہوں۔ میں نے اپنے لیٹر پیڈ پر اپنی مہر اور دستخط کے ساتھ آپ کو رجسٹری خط بھجوایا تھا، آپ میرے لیٹر پیڈ پر ارسال کردہ خط کو ”شائع شدہ پمفلٹ“ فرماتے ہیں۔ مثل مشہور ہے کہ ”چور چوری سے جاتا ہے، مگر ہیرا پھیری سے نہیں جاتا“ جو لوگ ایک خط کے حوالے میں ایسی ہیرا پھیری سے نہیں چوکتے، اندازہ کیا جاسکتا ہے کہ وہ قرآن وحدیث میں کیا کیا تحریف نہ کرتے ہوں گے...؟

آپ فرماتے ہیں کہ میں نے الزامات کو دہرا کر... بقول آپ کے... اپنی اندرونی حالت دُنیا کو دکھانے کی کوشش کی ہے، حالانکہ میرا خط چھپ چکا ہے، دُنیا کے سامنے موجود ہے، اسے پڑھ کر ہر شخص فیصلہ کر سکتا ہے کہ میں نے تاریخ کے کھلے واقعات پیش کئے ہیں، یا بقول آپ کے الزامات دہرائے ہیں۔ میں نے دس واقعات لکھے تھے، پانچ مرزا غلام احمد قادیانی کے، اور پانچ مرزا محمود کے۔ آپ کو ان واقعات کے آئینے میں اپنا اصل چہرہ نظر آیا، اس لئے:

”آئینہ جو دکھایا تو بُرا مان گئے“

میں ان واقعات کو پیش کر کے آپ سے یہ پوچھنا چاہتا ہوں کہ ان میں سے کس واقعے کو آپ غلط الزام قرار دیتے ہیں؟

۱:۔۔۔ میں نے انجام آتھم ص: ۲۸۲ کے حوالے سے مرزا قادیانی کا یہ اقرار نقل کیا تھا کہ ہم آئندہ مباہلہ کے لئے علماء کو مخاطب نہیں کریں گے۔ میں نے آپ سے پوچھا تھا کہ آپ نے مرزا قادیانی کے اس عہد کو کیوں توڑ ڈالا؟ اور علماء کو مخاطب کرنے کی جرأت کیوں کی؟ آپ نے میرے اس چہتے ہوئے سوال کا جواب نہیں دیا، اور نہ ان شاء اللہ قیامت تک اس کا کوئی معقول جواب دے سکتے ہیں۔ شرم اُتارنے کے لئے صرف اتنا کہہ دیا کہ یہ الزام دہراتا ہے۔

۲:۔۔۔ میں نے ضمیمہ انجام آتھم ص: ۵۴ سے مرزا قادیانی کا یہ فقرہ نقل کیا تھا:

”یاد رکھو اگر اس پیش گوئی کی دوسری جزو پوری نہ ہوئی تو



میں ہر ایک بد سے بدتر ٹھہروں گا۔“

اس پیش گوئی کی دوسری جزو کیا تھی؟ محمدی بیگم کا بیوہ ہو کر مرزا کے نکاح میں آنا! کیا یہ دوسری جزو پوری ہو گئی تھی؟ نہیں! تو پھر مرزا کے اپنے اقرار کے مطابق ”ہر بد سے بدتر“ ہونے میں کیا شبہ رہا؟ میں نے پوچھا تھا کہ کیا آپ اسی ”بدترین شخص“ کے لئے مباہلہ کرنے چلے ہیں؟ فرمائیے! یہ الزام ہے؟ یا ایک ایسا سوال ہے جس کے جواب سے آپ کی پوری جماعت عاجز ہے؟

۳:۔۔۔ جنگ مقدس کے آخری صفحے کے حوالے سے مرزا کا یہ اعلان نقل کیا تھا کہ اگر آتھم پندرہ مہینے کے اندر نہ مرے تو:

”میں ہر ایک سزا اٹھانے کے لئے تیار ہوں، مجھ کو ذلیل کیا جائے، رُوسیاہ کیا جاوے، میرے گلے میں رسہ ڈال دیا جاوے، مجھ کو پھانسی دیا جاوے..... اگر میں جھوٹا ہوں تو میرے لئے سولی تیار رکھو، اور تمام شیطانوں اور بدکاروں اور لعنتیوں سے زیادہ مجھے لعنتی سمجھو۔“

مرزا اور مرزائی، میعاد کے آخری لمحات تک آتھم کے مارنے کی کوشش کرتے رہے، ٹونے ٹوٹنے بھی کئے، چنے پڑھوا کر اندھے کنویں میں ڈلوائے، دُعائیں، التجائیں بھی کیں، میعاد کی آخری رات قادیان میں: ”یا اللہ! آتھم مرجائے، یا اللہ! آتھم مرجائے“ کا شور قیامت برپا رہا، لیکن اللہ تعالیٰ نے آتھم کو مرنے نہیں دیا۔ جس کے نتیجے میں مرزا خود اپنے فتوے کی رُو سے ”تمام شیطانوں، بدکاروں اور لعنتیوں سے بڑھ کر لعنتی“ ثابت ہوا۔ میں نے پوچھا تھا کہ کیا آپ اسی ذات شریف کے لئے مباہلہ کرنے چلے ہیں؟ فرمائیے! میری اس تحریر میں ایک حرف بھی ایسا ہے جس کو غلط الزام کہہ سکیں...؟

۴:۔۔۔ میں نے مرزا قادیانی اور مولانا عبدالحق غزنوی مرحوم و مغفور کے درمیان

مباہلہ کا حوالہ دیا تھا، جو ۱۰/ ذیقعدہ ۱۳۱۰ھ عید گاہ امرتسر میں ہوا۔ مولانا مرحوم کا مباہلہ اس

اُمَر پر تھا کہ مرزا اور مرزائی سب دجال و کذاب، کافر و ملحد اور بے ایمان ہیں۔

(مجموعہ اشتہارات مرزا غلام احمد قادیانی جلد اول ص: ۴۲۵)

مرزا نے اپنی وفات سے سات مہینے چوبیس دن پہلے کہا تھا:

”مباہلہ کرنے والوں میں سے جو جھوٹا ہو وہ سچے کی

زندگی میں ہلاک ہوتا ہے۔“ (ملفوظات مرزا قادیانی ج: ۹ ص: ۴۴۰)

چنانچہ اس اصول کے مطابق مباہلہ کے بعد مرزا، مولانا مرحوم کی زندگی میں

(۲۶ مئی ۱۹۰۸ء) کو ہلاک ہو گیا۔ اور مولانا مرحوم، مرزا کے بعد ۹ سال تک بقید حیات

رہے، ان کا انتقال ۱۶ مئی ۱۹۱۷ء کو ہوا۔ (رئیس قادیان ج: ۲ ص: ۱۹۲، تاریخ مرزا ص: ۳۸)

آپ نے اپنے خط میں خود لکھا ہے کہ:

”مباہلہ دُعا کے ذریعے معاملہ خدا تعالیٰ کی عدالت میں

لے جانے کا نام ہے۔“

”مباہلہ دُعا کے ذریعے خدا تعالیٰ سے فیصلہ طلبی کا نام ہے۔“

یہ تو ظاہر ہے کہ خدا تعالیٰ کی عدالت آخری عدالت ہے، اور اس کا فیصلہ بھی

دو ٹوک اور قطعی ہوتا ہے، کہ اس میں غلطی کا ادنیٰ احتمال بھی نہیں ہو سکتا، خدا تعالیٰ کی عدالت کو

نہ ماننا بھی کفر، اس کی عدالت کے فیصلے سے انحراف کرنا بھی کفر، اور اس کے خلاف نظر ثانی

کی اپیل کرنا بھی کفر۔

میں نے لکھا تھا کہ جب مباہلہ ہو چکا ہے اور خدائی عدالت نے اس کا فیصلہ بھی

صادر کر دیا ہے کہ مولانا عبدالحق غزنوی مرحوم کے مقابلے میں مرزا جھوٹا تھا، دجال و کذاب

تھا، کافر و مرتد تھا، بے ایمان اور ملحد تھا، تو آپ نئے مباہلہ کے ذریعے کیا اس خدائی فیصلے

کے خلاف اپیل کرنے چلے ہیں؟ کیا میری اس تقریر میں ایک حرف بھی ایسا ہے جسے آپ

غلط الزام کہہ سکیں؟ اور میں نے جو سوال اٹھایا کیا پوری اُمت مرزا سے مل کر بھی اس کا جواب

دے سکتی ہے؟

مرزا طاہر صاحب! اگر آپ خالص دہریے نہیں، اللہ تعالیٰ کو مانتے ہیں تو اس کی عدالت کے فیصلے پر دل و جان سے صاد کریں اور مرزا کے جھوٹا ہونے کا اعلان کر دیں، ورنہ دُنیا یہ سمجھنے پر مجبور ہوگی کہ آپ اپنے دادا کے درج ذیل الفاظ کا مصداق ہیں:

”یہودی لوگ جو مورد لعنت ہو کر بندر اور سور ہو گئے تھے،

ان کی نسبت بھی تو بعض تفسیروں میں لکھا ہے کہ وہ بظاہر انسان تھے،

لیکن ان کی باطنی حالت بندروں اور سوروں کی طرح ہو گئی تھی اور حق

کے قبول کرنے کی توفیق بکلی ان سے سلب ہو گئی تھی، اور مسخ شدہ

لوگوں کی یہی تو علامت ہے کہ اگر حق کھل بھی جائے تو اس کو قبول نہیں

کر سکتے۔“ (مجموعہ اشتہارات ج: ۱ ص: ۳۹۷)

”دُنیا میں سب جانداروں سے زیادہ پلید اور کراہت کے

لائق خنزیر ہے، مگر خنزیر سے زیادہ پلید وہ لوگ ہیں جو اپنے نفسانی

جوش کے لئے حق اور دیانت کی گواہی کو چھپاتے ہیں۔“

(ضمیمہ انجام آتھم ص: ۲۱)

۵:۔۔۔ میں نے مرزا کے اشتہار ”مولوی ثناء اللہ صاحب امرتسری کے ساتھ آخری

فیصلہ“ کے حوالے سے لکھا تھا کہ مرزا نے اللہ تعالیٰ سے گڑگڑا کر دُعا کی کہ یا اللہ! اگر میں سچا

ہوں تو مولوی ثناء اللہ کو میری زندگی میں طاعون اور پیڑھے جیسے آسمانی عذاب سے ہلاک کر،

اور اگر مولوی ثناء اللہ صاحب سچے ہیں، میں تیری نظر میں مفسد و کذاب اور مفتری ہوں تو

مجھے مولوی ثناء اللہ صاحب کی زندگی میں ہلاک کر دے۔

حق تعالیٰ شانہ نے مرزا کی بددُعا کے مطابق اپنا فیصلہ صادر فرمادیا اور مرزا کو

۲۶ مئی ۱۹۰۸ء کو وبائی پیڑھے سے ہلاک کر دیا۔ (حیاتِ ناصر ص: ۱۴) اور مولانا مرحوم، مرزا

کے بعد اکتالیس برس زندہ رہے۔ اس فیصلہ خداوندی نے ثابت کر دیا کہ مرزا خود اپنے

قول کے مطابق اللہ تعالیٰ کی نظر میں دجال و کذاب اور مفسد و مفتری تھا۔ میں نے آپ سے

پوچھا تھا کہ کیا آپ اسی دجال و کذاب اور مفسد و مفتری کے لئے مباہلہ کرنے چلے ہیں؟  
فرمائیے! اس تقریر میں ایسا کون سا لفظ ہے جسے آپ الزام کہہ سکیں...؟  
یہاں ایک نفیس نکتے کی طرف توجہ دلاتا ہوں وہ یہ کہ قرآن کریم میں کفارِ مکہ کی  
یہ دُعا نقل کی گئی ہے:

”اللَّهُمَّ إِنْ كَانَ هَذَا هُوَ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِكَ  
فَاَمْطِرْ عَلَيْنَا حَجَارَةً مِنَ السَّمَاءِ أَوْ ائْتِنَا بِعَذَابٍ أَلِيمٍ۔“  
(الانفال: ۳۲)

ترجمہ:...”یا اللہ! اگر یہی دین تیری طرف سے برحق ہے  
تو ہم پر آسمان سے پتھر برسا، یا ہم پر کوئی دردناک عذاب نازل فرما۔“  
مشرکینِ مکہ کی انتہائی بدبختی اور جہل اور عناد کا تماشا دیکھئے، کہ وہ بارگاہِ الہی میں  
یہ دُعا نہیں کرتے کہ یا اللہ! اگر محمد صلی اللہ علیہ وسلم کا دین واقعی تیری طرف سے ہے تو ہمیں  
اس کے قبول کرنے کی توفیق عطا فرما۔ اس کے بجائے وہ یہ دُعا کرتے ہیں کہ اگر دینِ  
اسلام واقعی دینِ برحق ہے تو ہم پر پتھروں کی بارش برسا، یا ہمیں کسی اور عذاب سے نیست و  
نابود کر دے۔

”کہتے ہیں کہ یہ دُعا ابو جہل نے (جنگِ بدر کو جاتے  
ہوئے) مکہ سے نکلتے وقت کعبہ کے سامنے کی، آخر جو کچھ مانگا تھا اس  
کا ایک نمونہ بدر میں دیکھ لیا۔“ (تفسیر عثمانی)  
ان کفارِ مکہ کے نقشِ قدم پر چلتے ہوئے مرزا قادیانی اللہ تعالیٰ سے یہ دُعا نہیں کرتا  
کہ یا اللہ! اگر میں تیری نظر میں گمراہ ہوں تو میری اصلاح فرما، اور مجھے توبہ کی توفیق عطا  
فرما، اس کے بجائے یہ دُعا کرتا ہے کہ:

”اگر میں تیری نظر میں مفسد و کذاب اور مفتری ہوں تو  
مجھے مولانا ثناء اللہ صاحب کی زندگی میں بیٹھے اور طاغون جیسے آسمانی

عذاب سے ہلاک فرما۔“

مرزا کی اس بددعا کو بار بار پڑھئے اور ابو جہل کی بددعا سے اس کا موازنہ کیجئے، دونوں کے درمیان سرِ موفرق نظر نہیں آئے گا۔ ابو جہل بھی یہ بددعا کرتا ہے کہ اگر محمد (صلی اللہ علیہ وسلم) سچے اور ہم جھوٹے ہیں تو ہمیں آسمانی عذاب سے ہلاک فرما، اور مرزا بھی یہی بددعا کرتا ہے کہ اگر میں جھوٹا ہوں اور مولوی ثناء اللہ سچے ہیں تو مجھے ان کی زندگی میں ہلاک فرما، پھر جس طرح ابو جہل کو بدر میں منہ مانگی مراد ملی، اسی طرح مرزا بھی ۲۶ مئی ۱۹۰۸ء کو منہ مانگی ہلاکت کا نشانہ بنا۔ کیا مرزا طاہر اور ان کی جماعت کے لئے اس میں کچھ عبرت ہے...؟

مرزا قادیانی کے ان پانچ واقعات کے بعد میں نے پانچ واقعات آپ کے ابا مرزا محمود کے ذکر کئے تھے۔ ان کے ذکر کرنے سے میرا مقصد یہ بتانا تھا کہ مرزا محمود کو نصف صدی تک مباہلہ کا چیلنج دیا جاتا رہا، جو نہ تو مرزا محمود نے قبول کیا اور نہ اس کی ذریت نے۔ یہ نصف صدی کا قرضہ آپ کے ذمے ہے، پہلے یہ قرضہ ادا کیجئے اور حلف مؤکد بعد عذاب کے ساتھ ان واقعات کی تردید کیجئے۔ جب آپ اس بھاری قرض سے سبکدوش ہو جائیں تب علمائے امت سے مباہلہ کی بات کیجئے۔ مثل مشہور ہے کہ ”چھانج بولے تو بولے، چھلانی کیوں بولے جس میں بہتر چھید“ مباہلہ کی بات کوئی دوسرا کرے تو کرے، جن کے ذمے پچاس ساٹھ سال کے مباہلوں کا قرض ہے، اور جو کبھی کسی چیلنج قبول کرنے کی جرأت نہ کر سکے، آج ان کو بیٹھے بٹھائے کیا سوچھی کہ علمائے امت کو مباہلہ کے لئے بلانے نکل آئے؟

اتنی نہ بڑھا پائی داماں کی حکایت

دامن کو ذرا دیکھ ذرا بندِ قبا دیکھ!

۱۔... چنانچہ ۱۹۲۷ء میں مولانا عبدالکریم مباہلہ نے مرزا محمود پر بدکاری کا الزام لگایا، انہوں نے بارہا مباہلہ کا چیلنج کیا، جس کی پاداش میں اس غریب پر قاتلانہ حملہ کرایا گیا، اس کے ساتھی کو قتل کیا گیا، اس کا گھر جلایا گیا، اس پر مقدمے کئے گئے، اسے قادیان بدر کر دیا گیا، لیکن مرزا محمود کو اتنی جرأت نہ ہوئی کہ ان کے مباہلہ کے چیلنج کو قبول کرے۔ نہ آج



تک مرزا محمود کی ذریت میں کسی کو توفیق ہوئی کہ حلف مؤکد بعد اب اٹھا کر اپنے باپ کی پاک دامنی کی شہادت دے۔

۲: ... ۱۹۳۶ء میں مرزا محمود پر یہی الزام عبدالرحمن مصری نے لگایا، اس کے ساتھ بھی یہی سلوک کیا گیا، اس کے خلاف نقص امن کا مقدمہ دائر کیا گیا اور اس غریب کو عدالت کے کٹہرے میں کھڑے ہو کر یہ حلفیہ بیان دینا پڑا:

”موجودہ خلیفہ (مرزا محمود) سخت بدچلن ہے، یہ تقدس کے پردے میں عورتوں کا شکار کھیلتا ہے، اس کام کے لئے اس نے بعض مردوں اور بعض عورتوں کو بطور ایجنٹ رکھا ہوا ہے، ان کے ذریعے معصوم لڑکوں اور لڑکیوں کو قابو کرتا ہے، اس نے ایک سوسائٹی بنائی ہوئی ہے، جس میں مرد اور عورتیں شامل ہیں اور اس سوسائٹی میں زنا ہوتا ہے۔“ (ممتاز احمد فاروقی: فتح حق ص: ۴۱)

لیکن مرزا محمود کو اتنی جرأت نہ ہوئی کہ عبدالرحمن مصری کے چیلنج کو قبول کر لیتا اور اس کی تحقیق کے لئے اپنی جماعت ہی کے چند افراد کا کمیشن مقرر کر دیتا۔ نہ آج تک آپ نے حلف مؤکد بعد اب کے ساتھ اپنے ابا کی پاک دامنی پر شہادت دی۔ مرزا محمود نے مصری کا چیلنج قبول کرنے کے بجائے اسے منافقوں (لاہوری مرزائیوں) کی شرارت قرار دیا اور اپنے خطبہ جمعہ میں ایسے ہی ایک منافق کا خط پڑھ کر سنایا جس میں لکھا تھا:

”حضرت مسیح موعود (مرزا قادیانی) ولی اللہ تھے، اور ولی اللہ بھی کبھی کبھی زنا کر لیا کرتے ہیں، اگر انہوں نے کبھی کبھار زنا کر لیا تو اس میں کیا حرج ہے؟“ پھر لکھا ہے کہ ”ہمیں حضرت مسیح موعود (مرزا قادیانی) پر اعتراض نہیں، کیونکہ وہ کبھی کبھی زنا کیا کرتے تھے (غالباً ذائقہ بدلنے کے لئے... ناقل) ہمیں اعتراض موجودہ خلیفہ پر ہے کیونکہ وہ ہر وقت زنا کرتا رہتا ہے۔“

مرزا محمود نے یہ پاکیزہ صحیفہ خطبہ جمعہ میں منبر پر سنایا، اور حلف مؤکد بعد اب کے ساتھ اس منافق کی تردید کرنے کے بجائے صرف یہ ”بے ضرر تبصرہ“ کافی سمجھا کہ:

”اس اعتراض سے پتا لگتا ہے کہ یہ شخص پیغامی طبع (یعنی لاہوری مرزائی) ہے۔“

(روزنامہ ”الفضل“ قادیانی مؤرخہ ۳۱ اگست ۱۹۳۸ء)

۳: ... ۱۹۵۶ء میں آپ کی جماعت کے چند نوجوانوں نے مرزا محمود کے طلسم سامری کو توڑا، انہوں نے ”حقیقت پسند پارٹی“ تشکیل دی، اس پارٹی نے ”تاریخ محمودیت“ نامی کتاب شائع کی، جس میں ۲۸ قادیانی مردوں اور عورتوں کی مؤکد بعد اب حلفیہ یعنی شہادتیں جمع کیں کہ مرزا محمود نہایت بدکردار ہے، مرزا محمود کو چیلنج پر چیلنج دیئے، پھر یہی مضمون متعدد کتابوں میں بار بار دہرایا گیا، اور آج تک دہرایا جا رہا ہے، لیکن نہ مرزا محمود کو اپنی زندگی میں مباہلہ کا چیلنج قبول کرنے کا حوصلہ ہوا، نہ آپ نے ان لوگوں سے مباہلہ کی آج تک جرأت کی۔ ان تمام چیلنجوں کے مقابلے میں آپ کی خاموشی آپ کے مجرم ضمیر کی شہادت دے رہی ہے، ان تمام چیلنجوں کو شیر مادر کی طرح ہضم کر کے آج آپ کس منہ سے علمائے اُمت کو مباہلہ کی دعوت دینے چلے ہیں...؟

میں نے قصداً اس قصے کو ۱۹۳۷ء سے شروع کیا، ورنہ کہنے والوں نے یہ بھی کہا ہے اور کچھ غلط نہیں کہا کہ:

”میاں محمود احمد صاحب کے طالب علمی کے زمانے اور نوجوانی کے دنوں میں بھی ان کے چال چلن پر سنگین اور شرمناک الزام لگائے گئے بلکہ خود حضرت مسیح موعود (مرزا قادیانی) نے بھی اس سلسلے میں ایک تحقیقاتی کمیشن مقرر کیا تھا، مگر چار گواہ نہ مل سکے کی وجہ سے الزام ثابت نہ ہو سکا۔“ (ممتاز احمد فاروقی: فتح حق ص: ۳۰)

اور یہ کہ:

”وہ (مرزا محمود) عتقوانِ شباب میں جنسی دھاندلیوں میں مبتلا رہا، اس پر اس کے باپ نے کمیشن بٹھایا، اس کے چار ارکان تھے، مولوی نور الدین، خواجہ کمال الدین، مولوی محمد علی اور مولوی شیر علی۔ ان اشخاص کے سامنے اس مجرم کی والدہ نے اپنا دامن پھیلا کر منت سماجت کی، اور ارکان سے کہا کہ اگر اس کے معصیت کا ریٹے پر گرفت ہوئی تو اس کا باپ اسے نکال باہر کرے گا، ان لوگوں نے اپنی فقہ کے پردے میں اس مجرم کو بری کر دیا۔ یعنی یہ فیصلہ کیا کہ چونکہ چار گواہ عینی نہیں ہیں، اس لئے یہ مستوجبِ سزا نہیں ٹھہرتا۔ گویا زنا کار چار گواہوں کے نہ پیش ہونے سے زانی نہیں رہتا، اللہ تعالیٰ نے انہی لوگوں کو اسی مجرم سے سزا دلوائی.....“

(مرزا محمد حسین: فتنہ انکار ختم نبوت ص: ۴۹)

۴:.... میں نے آپ کے باپ دادا کی عبرتناک موتوں کا ذکر کرتے ہوئے آپ

سے پوچھا تھا:

”کیا آپ کو مزید کسی سامانِ عبرت کی ضرورت ہے کہ

علمائے اُمت سے مباہلہ کرنے چلے ہیں؟“

اور اگر آپ کو اس سے انکار ہو کہ آپ کے باپ دادا کی موت عبرتناک ہوئی تو

اس کا تصفیہ کرنے کے لئے میں نے آپ سے پوچھا تھا کہ:

”کیا آپ یہ دُعا کرنے کی جرأت کریں گے کہ آپ کو

آپ کے باپ دادا جیسی موت نصیب ہو؟“

آپ نے میرا یہ چیلنج بھی قبول نہیں کیا، اور شاید آپ کو اس کی جرأت بھی نہیں

ہوگی کہ میرے سوال کا جواب اخباروں میں چھاپ کر دُنیا کو ایک نیا تماشا عِ عبرت دیکھنے

کا موقع فراہم کریں۔

۵:۔۔۔ آخر میں، میں نے رفیق محترم مولانا منظور احمد چنیوٹی کی دعوتِ مباہلہ کا ذکر کیا تھا، وہ آپ کے باپ کی زندگی میں اسے مباہلہ کا چیلنج دیتے رہے، اس کے بعد مرزا ناصر کی زندگی میں، اس کے بعد آپ کو چیلنج دے رہے ہیں، وہ جب سے اب تک اپنے مباہلہ کے چیلنج کی سالگرہ مناتے ہیں اور ہر سال مباہلہ کا چیلنج قادیانی لیڈر کے نام رجسٹری کرتے ہیں، غالباً ان کا کوئی جلسہ ایسا نہ ہوتا ہوگا جس میں وہ اس چیلنج کو نہ دہرائیں، ان کا چیلنج صرف ایک فقرہ ہے، وہ یہ کہ:

”آپ حلف اٹھائیں کہ آپ اور آپ کے ابابکھی فاعل یا مفعول نہیں رہے!“

آپ کے ابا کو، آپ کے بھائی کو اور خود آپ کو کبھی اتنی جرأت نہ ہوئی کہ ان کا چیلنج قبول کریں، چشم بد دور! آپ اسی تقدس مآبی پر علمائے اُمت کو مباہلہ کی دعوت دینے چلے ہیں...؟

مرزا صاحب! میں الزامات نہیں دہراہا، میں ایسے حقائق ذکر کر رہا ہوں جن کا سامنا آپ اور آپ کا خاندان قیامت تک نہیں کر سکتا، میں آفتاب کی طرح چمکتے ہوئے حقائق پیش کر رہا ہوں، لیکن آپ کے سیکریٹری صاحب کی آنکھیں خیرہ ہیں، اور وہ مجھے لکھتے ہیں کہ:

”خدا تعالیٰ کے مقدس انسانوں پر آپ نے بے ہودہ الزامات لگانے کی کوشش کی ہے۔“

العظمت للہ! مرزا قادیانی کو تو آپ لوگ نبیؐ معصوم سمجھتے ہی تھے، چنانچہ جب محمد حسین قادیانی نے قادیان کے دارالافتاء سے یہ فتویٰ پوچھا کہ:

”حضرت اقدس (مرزا قادیانی) غیر عورتوں سے ہاتھ

پاؤں کیوں دبواتے ہیں؟“

تو قادیان کے ”مفتی“ نے ان کو بتایا کہ:

”وہ نبی معصوم ہیں، ان سے مس کرنا اور اختلاط منع نہیں، بلکہ موجب رحمت و برکات ہے۔“

(اخبار ”الحکم“ قادیان جلد ۱۱ نمبر ۱۳ ص: ۱۳ مؤرخہ ۱۷/۱ اپریل ۱۹۰۷ء)

اگرچہ خود مرزا قادیانی اپنے معصوم ہونے کا انکار کیا کرتا تھا، چنانچہ لکھتا ہے:

”افسوس کہ بطالوی صاحب نے یہ نہ سمجھا کہ نہ مجھے اور نہ

کسی انسان کو بعد انبیاء علیہم السلام کے معصوم ہونے کا دعویٰ ہے۔“

(کرامات الصادقین ص: ۵)

لیکن آپ کے سیکریٹری صاحب کے الفاظ سے معلوم ہوتا ہے کہ وہ مرزا محمود کو بھی معصوم و مقدس سمجھتے تھے، العظمت للہ!

مجھے ان کے ان الفاظ پر یاد آیا کہ ڈاکٹر زاہد علی صاحب نے اپنی کتاب ”ہمارے اسماعیلی مذہب کی حقیقت اور اس کا نظام“ میں اسماعیلیوں کے داعی مطلق قاضی نعمان بن محمد کے حوالے سے یہ وصیت نقل کی ہے کہ:

”اگر تو اپنی آنکھوں سے امام کو زنا کرتے، شراب پیتے

اور فواحش کا مرتکب ہوتے ہوئے بھی دیکھے تو تو اسے دل اور زبان

سے منکر نہ سمجھ، اور اس کے درست اور حق ہونے میں کچھ شک نہ کر۔“

(ڈاکٹر زاہد علی: ہمارے اسماعیلی مذہب کی حقیقت اور اس کا نظام ص: ۳۶۳)

غالباً آپ کے سیکریٹری صاحب اور ان جیسے دیگر نابغہ قادیانیوں کو بھی یہی تعلیم دی گئی ہے کہ امام خواہ کتنا ہی سیاہ کاریوں میں ملوث ہو، اور اسے اپنی آنکھوں سے زنا کرتے ہوئے بھی دیکھو، تب بھی اسے مقدس ہی سمجھو۔ یہی وجہ ہے کہ مرزا محمود کی بدکاریوں پر قادیانیوں کی ایک فوج کی فوج مؤکد بعد اب حلف کے ساتھ شہادتیں دیتی ہے، اس پر مباہلہ کا چیلنج کرتی ہے اور مرزا کا خاندان اس کے مقابلے میں حلف مؤکد بعد اب سے گریز کر کے ان شہادتوں پر مہر تصدیق ثبت کرتا ہے۔ لیکن سیکریٹری صاحب



کے نزدیک وہ مقدس کے مقدس ہیں۔ اور مرزا غلام احمد قادیانی کو اللہ تعالیٰ بار بار کے فیصلوں میں دجال، کذاب، کافر، مرتد، رُوسیاہ، ذلیل، ہر بد سے بدتر، اور تمام شیطانوں اور بدکاروں اور لعنتیوں سے بڑھ کر لعنتی ثابت کرتا ہے، لیکن سیکریٹری صاحب فرماتے ہیں کہ ان تمام خطابات کے باوجود وہ مقدس تھے، یعنی ”پیر کامل ہے، بس تھوڑا سا بے ایمان ہے۔“

حال ہی میں جناب حافظ بشیر احمد مصری نے آپ کے مباہلہ کا جواب آپ کو بھیجا ہے، جس میں آپ کے پورے خاندان کے ”تقدس“ کی حلفیہ شہادت دی ہے، جس کا خلاصہ یہ ہے کہ:

\*... مرزا غلام احمد کا بڑا لڑکا مرزا محمود بدکار تھا، منکوحہ وغیرہ منکوحہ عورتوں سے زنا کا عادی تھا، خاندان کی محرم عورتیں بھی اس کی ہوس کا نشانہ تھیں۔

\*... مرزا محمود کے دونوں بھائی مرزا بشیر احمد اور مرزا شریف احمد لواطت کے عادی تھے، بالخصوص نو عمر بچے ان کا نشانہ تھے۔

\*... مرزا محمود کا ماموں میر محمد اسحاق، لواطت کا عادی تھا اور اسکول کے معصوم بچے اس کا خاص شکار تھے۔

\*... قادیانی نظام کے بڑے بڑے عہدیدار شہوت پرستی میں اخلاقی بندھنوں سے آزاد تھے، یعنی:

”ایں خانہ ہمہ آفتاب است!“

مرزا طاہر صاحب! آپ ان حقائق کو الزامات کہہ کر نہیں چھوٹ سکتے، میرا مقصد یہ تھا کہ جب تک آپ ان خوفناک چیلنجوں سے عہدہ برآ نہیں ہو جاتے، اور جب تک اپنے ابا کی پاک دامنی پر ان لوگوں سے مباہلہ نہیں کر لیتے، تب تک آپ کو علمائے اُمت کو مباہلہ کی دعوت دینے سے شرم آنی چاہئے تھی!...

۲... آپ کے سیکریٹری صاحب لکھتے ہیں:

”خدا تعالیٰ سلسلہ عالیہ احمدیہ کو جس کی بنیاد حضرت مرزا

صاحب نے ۱۸۸۹ء میں رکھی، روز بروز ترقی دیتا چلا جا رہا ہے، اور سعید روجیس جوق در جوق اس مقدس سلسلے میں داخل ہو رہی ہیں، مگر آپ جیسے اندھے ابھی تک اندھیروں میں بھٹک رہے ہیں۔“

آپ کا سلسلے کی ترقی کو حقانیت کی دلیل قرار دینا خالص جہل و حماقت ہے۔

اولاً:۔۔۔ کسی سلسلے کی صرف ترقی کو دیکھنا کافی نہیں، بلکہ اس سے پہلے یہ دیکھنا ضروری ہے کہ یہ سلسلہ خیر کا ہے یا شر کا؟ اگر خیر کا ہے تو اس کی ترقی خوشی کی چیز ہے، لیکن اگر شر کا سلسلہ ہو تو اس کی ترقی سرمایہ مسرت نہیں، بلکہ حق تعالیٰ شانہ کی طرف سے استدراج ہے۔ سنت اللہ یہ ہے کہ مجرم لوگوں کو بار بار تنبیہ کی جاتی ہے، لیکن جب بار بار کی تنبیہ کے بعد بھی ان کو عبرت نہیں ہوتی تو استدراج شروع ہو جاتا ہے، اور ان کو چندے ڈھیل دی جاتی ہے، چنانچہ ارشاد خداوندی ہے:

”فَلَذَرْنِي وَمَنْ يُكَذِّبُ بِهَذَا الْحَدِيثِ  
سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُونَ۔ وَأُمْلِي لَهُمْ إِنَّ كَيْدِي  
مَتِينٌ۔“ (القلم: ۴۴)

ترجمہ:۔۔۔ ”پس تو مجھ کو اور ان کو جو اس کتاب کو جھٹلاتے ہیں، چھوڑ دے (خود سزا دینے کی فکر نہ کر) ہم ان کو درجہ بدرجہ تباہی کی طرف ان طرفوں سے کھینچ لائیں گے جن کو وہ جانتے بھی نہیں — اور میں ان کو ڈھیل دوں گا (یعنی ان کی تباہی کی دُعا نہ کر) میری تدبیر بڑی مضبوط ہے (وہ آخر ان کو تباہ کر کے رکھ دے گی)۔“  
(ترجمہ: مرزا محمود تفسیر صغیر)

نیز ارشاد ہے:

”وَمَنْ يُشَاقِقِ الرَّسُولَ مِنۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ  
الْهُدَىٰ وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيلِ الْمُؤْمِنِينَ نُوَلِّهِ مَا تَوَلَّىٰ وَنُصْلِهِ

جَهَنَّمَ وَسَاءَتْ مَصِيرًا۔“ (النساء: ۱۱۵)

ترجمہ:۔۔۔ ”اور جو شخص (بھی) ہدایت کے پوری طرح کھل جانے کے بعد (اس) رسول سے اختلاف ہی کرتا چلا جائے گا اور مومنوں کے طریق کے سوا کسی اور طریق پر چلے گا، ہم اسے اسی چیز کے پیچھے لگا دیں گے جس کے پیچھے وہ پڑا ہوا ہے اور اسے جہنم میں ڈالیں گے اور وہ بہت بُرا ٹھکانا ہے۔“ (مرزا محمود: تفسیر صغیر)

اپنی اس سنت کے مطابق حق تعالیٰ شانہ نے قطعی دلائل سے مرزا قادیانی کا دجال و کذاب ہونا بار بار واضح کر دیا، اور مرزا محمود کے مصنوعی تقدس کا بھانڈا قادیان اور ربوہ کے چوراہے پر بار بار پھوڑا گیا، مختلف قسم کی آفتوں اور ابتلاؤں میں آپ کی جماعت کو ڈالا، یہاں تک کہ آپ کے ابا مرزا محمود بھیس بدل کر قادیان سے فرار ہوئے، پھر آپ خود خفیہ طور پر پاکستان سے بھاگے، اور سیدھے لندن پہنچ کر دم لیا۔ اس کے باوجود اگر آپ لوگوں کو عبرت نہیں ہوتی تو حق تعالیٰ شانہ کے استدراج اور ڈھیل کے قانون کے مطابق آپ کو مہلت دی گئی، تاکہ اپنے جرائم کا پیمانہ خوب بھر لیں، یہی استدراج اور ڈھیل ہے جس کو آپ کے بیکریٹری صاحب سلسلے کی ترقی سے تعبیر فرما رہے ہیں۔ حالانکہ کسی جماعت کی محض عددی ترقی اس کی حقانیت کی دلیل نہیں، کیونکہ اس عالم کا مزاج ہی ایسا رکھا گیا کہ یہاں حق اور باطل دونوں کو پھلنے پھولنے کا موقع دیا جاتا ہے، اس لئے باطل کی ترقی کو اس کی حقانیت کی دلیل قرار دینا مسخ فطرت کی علامت ہے۔ آج دنیا میں دہریت کو کتنی ترقی ہو رہی ہے؟ اور شر کی قوتیں روز بروز کس قدر بڑھ رہی ہیں؟ کیا کوئی عاقل ان کی ترقی کو ان کی حقانیت کی دلیل قرار دے سکتا ہے؟ پس جس طرح دہریت اور لادینیت کی ترقی اس کی حقانیت کی دلیل نہیں، اور کوئی صاحب فہم ان جھوٹے نگیںوں کی چمک دمک سے دھوکا نہیں کھا سکتا، اسی طرح آپ کی ترقی بھی حقانیت کی دلیل نہیں۔

ثانیاً:۔۔۔ آپ کی جماعت کو جس انداز سے ترقی ہوئی، اہل بصیرت کے نزدیک وہ

خود اس کے باطل ہونے کی کھلی دلیل ہے۔ ذرا اس پر توجہ فرمائیے کہ آپ کے دادا مرزا قادیانی کا دعویٰ کیا تھا؟ اس کا دعویٰ تھا کہ میں وہی مسیح موعود ہوں جس کے آنے کی خبر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے دی تھی، بہت خوب...!

آئیے اب یہ دیکھیں کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے آنے والے مسیح علیہ السلام کے کیا کیا کارنامے ذکر فرمائے تھے؟ میں آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے بے شمار ارشادات میں سے صرف ایک ارشاد آپ کے سامنے رکھتا ہوں، جس کو آپ کے ابا مرزا محمود نے ”حقیقۃ النبوة“ میں نقل کیا ہے، میں ترجمہ بھی مرزا محمود ہی کا نقل کرتا ہوں، آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم ارشاد فرماتے ہیں:

”انبیاء علانی بھائیوں کی طرح ہوتے ہیں، ان کی مائیں تو مختلف ہوتی ہیں اور دین ایک ہوتا ہے، اور میں عیسیٰ ابن مریم سے سب سے زیادہ تعلق رکھنے والا ہوں، کیونکہ اس کے اور میرے درمیان کوئی نبی نہیں، اور وہ نازل ہونے والا ہے، پس جب اسے دیکھو تو پہچان لو کہ وہ درمیانہ قامت، سرخی سفیدی ملا ہوا رنگ، زرد کپڑے پہنے ہوئے، اس کے سر سے پانی ٹپک رہا ہوگا، گوسر پر پانی ہی نہ ڈالا ہو، اور صلیب کو توڑ دے گا اور خنزیر کو قتل کر دے گا اور جزیہ ترک کر دے گا اور لوگوں کو اسلام کی طرف دعوت دے گا۔ اس کے زمانے میں سب مذاہب ہلاک ہو جائیں گے اور صرف اسلام ہی رہ جائے گا۔ اور شیر اُونٹوں کے ساتھ، چیتے گائے بیلوں کے ساتھ، بھیڑیے بکریوں کے ساتھ چرتے پھریں گے اور بچے سانپوں سے کھیلیں گے اور وہ ان کو نقصان نہ دیں گے، عیسیٰ ابن مریم چالیس سال زمین پر رہیں گے اور پھر وفات پا جائیں گے اور مسلمان ان کے جنازے کی نماز پڑھیں گے۔“

(مرزا محمود احمد: حقیقۃ النبوة ص: ۱۹۲)

کیا مذکورہ بالا صفات میں سے ایک علامت بھی مرزا قادیانی میں نظر آتی ہے؟  
 اگر نہیں تو انصاف کیجئے کہ مرزا کیسا مسیح ہے جس میں آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی ارشاد  
 فرمائی ہوئی ایک علامت بھی نہیں پائی جاتی؟ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم فرماتے ہیں کہ:  
 ”حضرت عیسیٰ علیہ السلام کے زمانے میں تمام مذاہب

مٹ جائیں گے، صرف اسلام باقی رہ جائے گا۔“

ادھر مرزا کے زمانے میں تمام مذاہب تو کیا مٹتے، قادیان کی جو مسجد مرزا کے  
 باپ دادا کے زمانے سے سکھوں کے قبضے میں چلی آتی تھی، مرزا اس کو بھی واگزار نہ کر سکا،  
 اور مرزا کو مرے ہوئے بھی اسی سال ہو چکے ہیں لیکن آپ کی جماعت ابھی دنیا میں ”آئے  
 میں نمک کے برابر“ بھی نہیں۔ شاید سکھوں اور چوہڑوں کی تعداد بھی آپ سے زیادہ ہوگی۔  
 فرمائیے! اس ترقی پر فخر کرنا، مسیح موعود کے منصب کا منہ چڑانا نہیں تو اور کیا ہے؟ کیا یہی غلبہ  
 اسلام تھا جس کا وعدہ ”مسیح موعود“ کے زمانے سے وابستہ فرمایا گیا تھا؟ اگر ان تمام حقائق  
 سے آنکھیں بند کر کے آپ لوگ نہایت ڈھٹائی سے اپنی نام نہاد ترقی پر فخر کئے جائیں تو  
 آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے الفاظ میں یہی کہا جاسکتا ہے کہ:

”اذا لم تستحي فاصنع ما شئت!“

”جب تجھے شرم نہ رہے تو جو چاہے کرتا پھر!“

مثلاً: ... اور اگر جماعت کے افراد کا بڑھنا ہی حقانیت کی دلیل ہے تو یہ حقانیت  
 عیسائیوں کو آپ سے بڑھ کر حاصل ہے، کیونکہ مرزا قادیانی کی سبز قدمی سے عیسائیت کو آپ  
 سے بڑھ چڑھ کر ترقی ہوئی۔ مرزا قادیانی کے اپنے ضلع گورداسپور میں ۱۸۹۱ء سے ۱۹۳۱ء  
 تک جو ترقی ہوئی اس کے اعداد و شمار محمدیہ پاکٹ بک میں حسب ذیل دیئے ہیں:

۱۸۹۱ء	۲۴۰۰
۱۹۰۱ء	۴۴۷۱
۱۹۱۱ء	۲۳۳۶۵



۱۹۲۱ء ۳۲۸۳۲

۱۹۳۱ء ۴۳۲۴۳

آپ کا روزنامہ ”الفضل“ قادیان ۱۹ جون ۱۹۴۱ء کی اشاعت میں بتاتا ہے کہ:

”روزانہ ۲۲۴ مختلف مذاہب کے آدمی ہندوستان میں

عیسائی ہو رہے ہیں۔“

گویا اکیاسی ہزار سات سو ساٹھ (۸۱۷۶۰) آدمی سالانہ کے حساب سے صرف ہندوستان میں عیسائیت کی ترقی ہو رہی تھی۔ اگر عیسائی ترقی کی یہی رفتار فرض کی جائے تو ۱۹۴۱ء سے اب تک صرف ہندوستان میں انتالیس لاکھ چوبیس ہزار چار سو اسی (۳۹۲۴۴۸۰) افراد کا اضافہ ہوا ہوگا، یہ ۴۸ سال پہلے کی عیسائی ترقی کا صرف ”سود“ ہے۔

پاکستان میں عیسائی آبادی کے اضافے کے ہولناک اعداد و شمار وقتاً فوقتاً شائع ہوتے رہتے ہیں، چنانچہ بتایا جاتا ہے کہ:

”تقسیم ہند کے وقت ۱۹۴۷ء میں پاکستان (مشرقی و

مغربی) کی عیسائی آبادی اسی ہزار (۸۰,۰۰۰) تھی۔

۱۹۵۱ء میں صرف مغربی پاکستان میں عیسائی آبادی چار

لاکھ ۳۲ ہزار تھی۔

۱۹۶۱ء میں پانچ لاکھ چوراسی ہزار (۵,۸۴۰۰۰) تھی۔

۱۹۷۲ء میں نو لاکھ آٹھ ہزار (۹۰,۸۰۰۰)۔“

۱۹۷۶ء میں عیسائی تنظیم کے صدر اور سیکریٹری نے دعویٰ کیا کہ ان کی آبادی

پاکستان میں ساٹھ لاکھ ہے۔ ۱۹۷۶ء سے ۱۹۸۹ء تک عیسائیت کو پاکستان میں کتنا فروغ ہوا ہوگا؟ اس کا اندازہ خود کر لیجئے۔

ابھی کچھ عرصہ پہلے بنگلہ دیش سے اطلاع آئی تھی کہ وہاں پانچ لاکھ افراد مرتد

ہو گئے، اور انہوں نے عیسائیت قبول کر لی۔ افریقی ممالک کا حال مجھ سے زیادہ آپ کو معلوم ہے، وہاں ملکوں کے ملک اور آبادیوں کی آبادیاں مشنریوں کے جال کا شکار بن چکی ہیں، ان تمام اعداد و شمار کو سامنے رکھ کر بتائیے کہ کیا آپ کی جماعت کی ترقی کو عیسائیت کی ترقی سے کوئی دُور کی مناسبت بھی ہے؟ اگر آپ اپنی نام نہاد ترقی کو حقانیت کی دلیل قرار دیتے ہیں تو اس سے کئی سو گنا وزنی دلیل عیسائی اپنی حقانیت پر پیش نہیں کر سکتے؟ اور اگر آپ لوگوں کو دھوکا دینے کے لئے یہ کہتے ہیں کہ:

”سعید رُوحیں جوق در جوق اس مقدس سلسلے میں داخل ہو رہی ہیں، مگر آپ جیسے اندھے ابھی تک اندھیروں میں بھٹک رہے ہیں۔“

تو کیا عیسائیوں کو آپ سے بڑھ کر یہ کہنے کا حق نہیں کہ:

”سعید رُوحیں جوق در جوق یسوع مسیح کے مقدس سلسلے میں داخل ہو رہی ہیں، مگر مرزائی اندھے ابھی تک اندھیروں میں بھٹک رہے ہیں۔“

اور اگر عیسائیت میں داخل ہونے والے آپ کے نزدیک بھی سعید رُوحیں نہیں تو ٹھیک اسی دلیل سے یہ کہوں گا کہ مرزائیت میں داخل ہونے والے بھی سعید رُوحیں نہیں بلکہ شقی ازلی ہیں، جو رحمۃ للعالمین صلی اللہ علیہ وسلم کے دامن کو چھوڑ کر قادیانی کذاب کے چنگل میں پھنس رہے ہیں اور اسلام جیسی نعمتِ عظمیٰ کے بجائے قادیانیت جیسی لعنت خرید رہے ہیں۔

رابعاً: عیسائیت کی یہ ترقی، جس کی طرف اُوپر اشارہ کیا گیا، اگرچہ عیسائیت کی حقانیت کی دلیل نہیں، لیکن مرزا قادیانی کے جھوٹا ہونے کی دلیل ضرور ہے، کیونکہ مرزا قادیانی نے مسیح موعود ہونے کے زعم میں ”کسرِ صلیب“ کا ٹھیکہ لے رکھا تھا، چنانچہ مرزا نے قاضی نذر حسین ایڈیٹر اخبار ”قلقل“، بجنور کے نام ایک خط لکھا تھا:

”.....میرا کام جس کے لئے میں اس میدان میں کھڑا

ہوں، یہی ہے کہ عیسیٰ پرستی کے ستون کو توڑ دوں اور بجائے تثلیث کے توحید پھیلا دوں اور آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی جلالت اور شان دنیا پر ظاہر کر دوں، پس اگر مجھ سے کروڑ نشان بھی ظاہر ہوں اور یہ علت غائی ظہور میں نہ آوے تو میں جھوٹا ہوں۔

پس دنیا مجھ سے کیوں دشمنی کرتی ہے، اور وہ میرے انجام کو کیوں نہیں دیکھتی، اگر میں نے اسلام کی حمایت میں وہ کام کر دکھایا جو مسیح موعود اور مہدی موعود کو کرنا چاہئے تو پھر میں سچا ہوں، اور اگر کچھ نہ ہوا اور میں مر گیا تو پھر سب گواہ رہیں کہ میں جھوٹا ہوں۔“

(اخبار ”بدر“ قادیان نمبر ۲۹ جلد ۲ ص: ۳، ۱۹ جولائی ۱۹۰۶ء)

مرزا قادیانی کا انجام ساری دنیا نے دیکھ لیا کہ اس کو مرے ہوئے بھی اُسی برس ہو گئے، مگر اس کے آنے سے نہ عیسیٰ پرستی کا ستون ٹوٹا، نہ تثلیث کی جگہ توحید پھیلی، نہ عیسائیت کی کوئی روک تھام ہوئی، بلکہ معاملہ الٹا ہوا کہ مرزا کے دم قدم سے عیسائیت کو روز افزوں ترقی ہوئی جس کا سلسلہ بڑی شد و مد سے اب تک جاری ہے۔ چنانچہ مرزا کی وصیت کے مطابق ایک صدی سے دنیا یہ گواہی دے رہی ہے اور قیامت تک یہ گواہی دیتی چلی جائے گی کہ مرزا قادیانی جھوٹا تھا۔ لیکن مرزا طاہر صاحب کی منطق نرالی ہے کہ مرزا قادیانی اگرچہ اپنی وصیت کے مطابق جھوٹا تھا، مگر پھر بھی ”مسیح موعود“ تھا۔

خامسا: ... دنیا کو اپنی جماعتی ترقی سے مرعوب کرنے کے لئے آپ حضرات کی یہ تکنیک رہی ہے کہ جماعتی ترقی کے مبالغہ آمیز افسانے تراشے جائیں اور پھر انہی خود تراشیدہ افسانوی اعداد و شمار کو اپنی حقانیت کی دلیل کے طور پر پیش کیا جائے۔ یہ ”جھوٹ کی عادت“ مرزا قادیانی سے شروع ہوئی اور آج تک جاری ہے، ذرا ملاحظہ فرمائیے:

۲/ اکتوبر ۱۹۰۲ء کو مرزا قادیانی لکھتا ہے:

”چند سال میں ایک لاکھ سے بھی زیادہ اشخاص نے

میری بیعت کی۔“ (تحفۃ الندوة ص: ۸)

اس کے تین مہینے بعد جنوری ۱۹۰۳ء میں ”جماعت لاکھ سے دوچند (یعنی دو لاکھ) ہو گئی۔“ (مواہب الرحمن ص: ۸۷)

۱۹۰۵ء میں مرزا سے بیعت کرنے والے قریباً چار لاکھ ہوئے۔

(تمہ حقیقۃ الوحی ص: ۱۱۷)

اواخر جنوری ۱۹۰۷ء میں مرزا کو اسکندریہ (مصر) سے کسی ”قادیانی گوبلز“ کا خط موصول ہوا جسے مرزا نے اپنے معجزے کے طور پر پیش کیا، وہ خط یہ تھا:

”لقد کثرت اتباعکم فی هذا البلاد وصارت  
عدد الرمل والحصا ولم یبق أحد إلا وعمل برأیکم  
واتبع أنصارکم۔“ (الاستفتاء بالحق حقیقۃ الوحی ص: ۳۲)

ترجمہ:.... ”تمہارے پیروکار اس ملک میں بہت ہو گئے  
ہیں، اور وہ ریت اور کنکریوں کی تعداد میں ہو گئے ہیں، یہاں ایک  
شخص بھی باقی نہیں رہا، جس نے آپ کی رائے پر عمل نہ کیا ہو اور آپ  
کے مددگاروں کا پیرو نہ ہو گیا ہو۔“

اس خط میں ”فی هذا البلاد“ کی ترکیب چغلی کھاتی ہے کہ یہ خط کسی عرب کا نہیں،  
کسی پنجابی کا ہے۔ اگر قادیان کے ٹیچی ٹیچی کی ٹکسال میں نہیں ڈھالا گیا تو ممکن ہے کہ کسی  
نے اسکندریہ ہی سے یہ گپ قادیانی کو لکھ بھیجی ہو۔ مرزا نے ”دیوانہ بگفت وابلہ باور کرد“  
کے طور پر اس کو بھی اپنا معجزہ بنا لیا ہو۔ بہر حال یہ قادیانی جھوٹ لائق داد ہے۔ ۱۹۰۶ء کے  
اواخر میں ملک مصر میں قادیانیوں کی تعداد ریت کے ڈروں اور کنکریوں کی گنتی کے برابر تھی،  
اور پورے ملک میں ایک فرد بھی ایسا باقی نہیں رہا تھا جس نے قادیانیت کا طوق اپنے گلے  
میں نہ ڈال لیا ہو، نہ جانے بعد میں یہ تعداد کہاں گم ہو گئی کہ اب وہاں ایک قادیانی نہیں ملتا۔

یہ تو مرزا کے زمانے کی جھوٹی افواہوں اور مبالغہ آرائیاں تھیں، اب ذرا بعد کا حال دیکھئے!

مقدمہ اخبار مہاراجہ (۲۸-۱۹۲۷ء) میں قادیانی گواہوں نے قادیانیوں کی تعداد دس لاکھ بتائی۔

۱۹۳۰ء میں کوکب دری کے قادیانی مؤلف کے مطابق دنیا میں ۲۰ لاکھ قادیانی موجود تھے۔ ستمبر ۱۹۳۲ء میں مناظرہ بھیرہ میں قادیانی مناظر نے قادیانیوں کی تعداد ۵۰ لاکھ بتائی۔ عبدالرحیم درد قادیانی مبلغ نے انگلستان میں مسٹر فلیپی کے سامنے بیان کیا کہ پنجاب میں مسلمانوں کی غالب اکثریت قادیانیوں کی ہے۔ اس وقت پنجاب میں ڈیڑھ کروڑ مسلمان تھے، اس حساب سے بقول عبدالرحیم درد گویا پنجاب میں ۷۵ لاکھ سے زیادہ قادیانی تھے۔ لیکن ۱۹۳۱ء کی مردم شماری کی سرکاری رپورٹ میں پنجاب میں قادیانیوں کی مجموعی تعداد ۵۵ ہزار نکلی، جس میں لاہوری جماعت کے کئی ہزار افراد بھی شامل تھے، مرزا محمود نے سرکاری رپورٹ کا حوالہ دیتے ہوئے کہا:

”فرض کر لو باقی تمام ہندوستان میں ہماری جماعت کے

بیس ہزار فرد رہتے ہیں۔“ (قادیانی مذہب طبع پنجم ص: ۵۱۳)

یعنی پچاس سال کی محنت کا نتیجہ کل ساٹھ ستر ہزار کے درمیان نکلا جسے قادیانی ۵۰ لاکھ سے ۷۵ لاکھ بتاتے تھے۔ یہ رہی آپ کے افسانوی اعداد و شمار کی حقیقت۔

۱۹۳۱ء کی مردم شماری کی رپورٹ سے بھی آپ لوگ شرمندہ نہیں ہوئے اور جھوٹے اعداد و شمار بیان کرنے کی عادت نہیں چھوڑی، بلکہ مرعوب کن اعداد و شمار کی افسانہ تراشی کا سلسلہ اس کے بعد بھی بدستور جاری رہا۔ قیام پاکستان کے بعد آپ کے لوگ بیرونی دنیا میں یہ تاثر دیتے تھے کہ پاکستان میں اصل حکومت ”امیر المؤمنین مرزا محمود“ کی ہے اور پاکستان کے حکمران ان کے نمائندے ہیں۔ یہ ناکارہ انڈونیشیا گیا تو وہاں احباب نے بتایا کہ یہاں قادیانیوں نے مشہور کر رکھا ہے کہ پاکستان کے تمام لوگ احمدی ہیں، اس



لئے پاکستان سے جو شخص بھی آئے یہاں کے عوام اسے قادیانی ہی سمجھتے ہیں، اور پاکستان سے آنے والے کسی شخص کے بارے میں لوگوں کو بڑی مشکل سے باور کرایا جاتا ہے کہ یہ قادیانی نہیں۔

ابھی چند سال پہلے دعوے کئے جا رہے تھے کہ پوری دنیا میں مسلمان ۷۲ کروڑ ہیں اور ہماری تعداد ایک کروڑ ہے، پچاس لاکھ پاکستان میں اور پچاس لاکھ باقی دنیا میں۔ اس طرح ہم پر آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کا یہ ارشاد صادق آتا ہے کہ مسلمانوں کے ۷۲ فرقے جہنمی ہوں گے اور ایک فرقہ ناجی ہوگا، وہ ناجی فرقہ یہی ۷۳ واں فرقہ ہے، جس کی تعداد ۷۲ کروڑ کے مقابلے میں ایک کروڑ ہے۔

لیکن ۱۹۸۱ء کی مردم شماری نے یہ طلسم بھی توڑ دیا، چنانچہ ۱۹۸۱ء کی مردم شماری کی رپورٹ کے مطابق پاکستان میں قادیانیوں کی کل تعداد ایک لاکھ چار ہزار دوسو چوالیس (۱۰۴,۲۴۴) (روزنامہ ”جنگ“ کراچی ۱۸ جولائی ۱۹۸۳ء)۔ اب اگر اتنی ہی تعداد باقی دنیا میں فرض کر لی جائے تو گویا پوری دنیا میں قادیانیوں کی کل تعداد دو لاکھ آٹھ ہزار چار سو اٹھاسی (۲۰۸,۴۸۸) ہوئی، جسے آپ ایک کروڑ بتاتے تھے۔ اب سنتا ہوں کہ آپ لوگوں نے ایک کروڑ پر ایک پچاس لاکھ کا اضافہ کر لیا ہے، اور دنیا میں قادیانیوں کی تعداد ڈیڑھ کروڑ بتائی جانے لگی ہے۔ آپ لوگوں کو اطمینان ہے کہ جتنے چاہو مرعوب کن اعداد کے دعوے ہانکتے رہو، ان دعوؤں کو کون چیلنج کرتا ہے؟ کہتے ہیں کسی گنوار نے کسی پڑھے لکھے سے کہا کہ: ”بابو جی! تم بڑے پڑھے لکھے بنے پھرتے ہو، ذرا یہ تو بتاؤ کہ زمین کا درمیان کہاں ہے؟ جہاں سے زمین ہر طرف سے برابر ہو۔“ پڑھے لکھے بابو نے لاعلمی کا اظہار کیا تو گنوار بولا: ”واہ! یہ بات تو مجھ اُن پڑھ کو بھی معلوم ہے“ اور پھر لائٹھی سے ایک دائرہ بنا کر لائٹھی اس کے درمیان گاڑ دی اور کہا کہ: ”یہ زمین کا بیج ہے، اگر یقین نہ ہو تو چاروں طرف سے پیمائش کر کے دیکھ لو...!“

جس طرح اس گنوار کو یقین تھا کہ اس کے دعوے کو چیلنج کرنے کے لئے زمین کی

پیمائش کون کرتا پھرے گا؟ اسی طرح آپ کی جماعت کے لیڈروں کو بھی اطمینان ہے کہ لوگوں کو مرعوب کرنے کے لئے اپنی جماعت کی ترقی کا جتنا چاہو ڈھنڈوراپٹتے رہو، اور خیرہ کن اعداد و شمار کے جتنے چاہو دعوے کرتے رہو، ان دعوؤں کو چیلنج کرنے کے لئے دُنیا بھر میں قادیانیوں کی مردم شماری کون کرتا پھرے گا؟ بلاشبہ جھوٹی نبوت کی گاڑی اسی قسم کے جھوٹ فریب سے چل سکتی ہے۔ اور جھوٹے پروپیگنڈے پر فخر کرنا جھوٹی نبوت کے پرستاروں ہی کو زیب دیتا ہے:

”إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ“

سادساً:... آپ کی دعوت اور تبلیغ کا طریقہ کار حضراتِ انبیائے کرام علیہم السلام کی دعوت اور ان کے طریقہ تبلیغ سے کوئی مناسبت نہیں رکھتا۔ ایسا لگتا ہے کہ آپ کی دعوت کے اصول تو اسماعیلی باطنیوں سے مطابقت رکھتے ہیں، جن کی تفصیل حضرت شاہ عبدالعزیز محدث دہلوی قدس سرہ نے ”تحفہ اثنا عشریہ“ میں ذکر فرمائی ہے۔ اور آپ کا طریقہ تبلیغ دورِ جدید کے عیسائی مشنریوں سے مماثلت رکھتا ہے کہ مشنری اسکول، کالج، اسپتال اور دیگر ادارے قائم کئے جائیں، نوجوانوں کو نوکری چھوکری اور دیگر مادی اغراض کی بنیاد پر دعوت دی جائے، لوگوں کو مرعوب کرنے کے لئے مبالغہ آرائی اور پروپیگنڈے سے کام لیا جائے، سائنسی ترقی کے حوالے سے لوگوں کو ترغیب دی جائے، وغیرہ وغیرہ۔ انبیائے کرام علیہم السلام کی مقدس سیرتوں کا مطالعہ کیا جائے تو وہاں ایسی کوئی چیز نظر نہیں آئے گی، نہ وہاں مادی لالچ ہے، نہ دُنیوی اغراض کی کشش نظر آتی ہے، نہ پروپیگنڈے کا شور سنائی دیتا ہے، وہ حضرات صرف آخرت کی بنیاد پر دعوت دیتے ہیں۔ حضراتِ انبیاء علیہم السلام کی سیرت کا خلاصہ حضرت امام العصر مولانا محمد انور کشمیریؒ نے ”خاتم النبیین“ کے فقرہ نمبر ۱۳۰ میں ذکر فرمایا ہے، اس کا اقتباس ملخصاً نقل کرتا ہوں، حضرت شاہ صاحبؒ لکھتے ہیں:

”یہاں پہنچ کر انبیائے کرام علیہم السلام کی سیرت مقدسہ

کا قرآن کریم اور کتبِ خصائص و سیر سے مطالعہ کرنا چاہئے، قرآن

حکیم میں جو کچھ ان کے سوال و جواب کے سلسلے میں آتا ہے، اسے بغور پڑھو تو معلوم ہوگا کہ کس طرح ان حضرات کے معاملے کی بنیاد اُمور ذیل پر قائم تھی، یعنی توکل و یقین، صبر و استقامت، اُولو العزمی و بلند ہمتی، وقار و کرامت، انابت و اخلاص، فضل و اختصاص، یقین کی خنکی اور سینے کی ٹھنڈک، سفیدہ صبح کی طرح انشراح و اعتماد، صدق و امانت، مخلوق سے شفقت و رحمت، عفت و عصمت، طہارت و نفاقت، رُجوع الی اللہ، وسائلِ غیب پر اعتماد، ہر حال میں لذاتِ دُنیا سے بے رغبتی، سب سے کٹ کر حق تعالیٰ شانہ سے وابستگی، سامانِ دُنیا سے بے التفاتی، مال و دولت سے بے توجہی، علم و عمل کی وراثت جاری کرنا اور مال و متاع کی وراثت جاری نہ کرنا، ترکِ فضول اور اس سے زبان کی حفاظت، ہر حالت اور ہر معاملے میں حق کا ساتھ دینا اور اس کی پیروی کرنا، ظاہر و باطن کی ایسی موافقت کہ اس میں کبھی بھی خلل اور رخنے واقع نہ ہو۔ انہیں اتمامِ مقصد کے لئے باطلِ عذر، فاسد تاویلات اور حیلے بہانے تراشنے کی ضرورت نہیں ہوتی، جانبِ خدا کو جانبِ اغراض پر ترجیح دینا، مادی علاقہ اور رشتوں سے بے تعلقی اور اغراض، تمام حوادث و پیش آمدہ حالات میں حمد و شکر، یادِ حق اور ذکرِ الہی میں ہمہ دم مشغول رہنا، ربِّ العالمین کے زیرِ عنایت علم لدنی کے ذریعے فطرتِ سلیمہ کے مطابق لوگوں کی تعلیم و تربیت کرنا، جس میں کسی قسم کی فلسفہ آرائی، اختراع اور تکلف کا شائبہ تک نہ ہو، تسلیم و تفویض، عبدیتِ کاملہ، طمانیتِ زائدہ، استقامتِ شاملہ..... ان حضرات نے دُنیا میں رہ کر کبھی چالپوسی کا راستہ نہیں لیا، اور کیا مجال کہ کفار و جبارہ کے مقابلے میں

اپنی ایک بات سے بھی کبھی تنزل فرمایا ہو، یا فراعنہ کی تحریف و تہدید اور ان کے هجوم کی بنا پر اپنے راستے سے انحراف کیا ہو، یا حرص و طمع اور سامانِ دنیا جمع کرنے کا معمولی دھبہ بھی ان کے دامنِ مقدس تک پہنچا ہو، یا حرص و ہوا اور حبِ ماسوائے کبھی انہیں اپنی طرف کھینچا ہو، اور ممکن نہیں کہ ان کے آپس میں علم و عمل کا اختلاف ہو، یا ایک دوسرے پر رد و قدح یا ایک دوسرے کی ہجو اور کسرِ شان کی ہو، ناممکن ہے کہ انہیں اپنے کمالات پر کبھی ناز اور عُجب ہو یا وہ اپنے تمام حالات میں کبھی بھی کبر و تعلیٰ اور نفس کے فریب میں مبتلا ہوں۔ خلاصہ یہ کہ جو کچھ بھی تھا عطیاتِ ربانیہ سے تھا، انسانی کسب و ریاضت کے دائرے میں نہیں تھا.....۔“

(خاتم النبیین اردو ترجمہ ص: ۲۳۲، ۲۳۳، شائع کردہ مجلس تحفظ ختم نبوة، ملتان)

آپ کی جماعت میں ان اوصاف کی کوئی جھلک نظر نہیں آتی، آپ کی دعوت اور طریقہ تبلیغ کا حضراتِ انبیائے کرام علیہم الصلوٰات والتسلیمات سے منحرف ہونا، اہل نظر کے نزدیک آپ کی دعوت کے غلط اور باطل ہونے کی مستقل دلیل ہے۔ لیکن جو حضرات دن کی روشنی میں سیاہ و سفید کے درمیان امتیاز کرنے کی صلاحیت نہیں رکھتے، وہ آپ کی دعوت کا انبیائے کرام علیہم السلام کی دعوت سے کیا موازنہ کر سکتے ہیں؟

۳:۔۔۔ آپ کے سیکریٹری صاحب لکھتے ہیں:

”اگر آپ میں ذرہ بھر بھی شرافت ہوتی تو امام جماعت

احمدیہ کے مباہلہ کے چیلنج کو سیدھی طرح قبول کرتے، تاکہ دنیا جان

لیتی کہ آپ سچے ہیں اور راہِ فرار اختیار کرنے کی نہ سوچتے۔“

آپ نے اس ”شریفانہ فقرے“ میں مجھ پر دو فتوے لگائے ہیں، ایک یہ کہ مجھ

میں ذرہ بھر شرافت نہیں۔ دوم یہ کہ میں مباہلہ سے راہِ فرار اختیار کر رہا ہوں۔ جہاں تک



پہلے فتوے کا تعلق ہے، مجھے آنجناب سے سند شرافت حاصل کرنے کی ضرورت نہیں، اگر آپ مجھ پر غیر شریف ہونے کا فتویٰ صادر فرماتے ہیں تو مجھے اس کی شکایت نہیں، میں جانتا ہوں کہ آخر آپ مرزا قادیانی کی ذریت شریفہ ہیں اور مرزا قادیانی اپنے مخالفوں کو جن ”شریفانہ الفاظ“ سے یاد کرنے کا عادی تھا، ان کی ایک مختصر سی فہرست ”مغلطات مرزا“ میں ملاحظہ کی جاسکتی ہے، مرزا قادیانی کے بارے میں اہل تجربہ کا تاثر یہ تھا کہ:

”مناظرے میں فحش بیانی و سخت کلامی، بدزبانی بلکہ گالی کو سننے کا مرزا جی نے سرکار سے ٹھیکہ لے لیا ہے، آپ اس فن کے ”جگت اُستاد“ مانے جاتے ہیں۔“ (مغلطات مرزا ص: ۷۰)

جس قوم کے پیشوا کے منہ میں ہمیشہ کتے، سور، خنزیر جیسے ”مقدس“ الفاظ رہتے ہوں، اور جو اپنے مخالفوں کو حرام زادے اور کنجریوں کی اولاد کے الفاظ سے خطاب کرنے کا عادی ہو، ایسے شریف پیشوا کی شریف اُمت اگر مجھ ایسے ناکاروں کو غیر شریف ہونے کی گالی دے تو یہ گالی بڑی ہلکی پھلکی سمجھی جائے گی۔

مرزا طاہر صاحب! آپ کے دادا نے آپ لوگوں کے بارے میں جو ”آئینہ شرافت“ پیش کیا ہے، میں اس کو آپ کے سامنے رکھتا ہوں، ذرا اس آئینے میں منہ دیکھ کر بتائیے کہ آپ میں اور آپ کی جماعت میں شرافت کے کتنے ذرے نظر آتے ہیں...؟  
اس کی شرح یہ ہے کہ شیخ اکبرؒ نے ”فصوص الحکم“ میں نوع انسانی کے آخری مولود کے بارے میں ایک پیش گوئی فرمائی تھی، جس کو آپ کے دادا نے درج ذیل الفاظ میں نقل کیا ہے:

”وعلیٰ قدم شیث یکون آخر مولود یولد من  
هذا النوع الإنسانی وهو حامل أسرارہ، ولیس بعدہ  
ولد فی هذا النوع، فهو خاتم الأولاد، وتولد معه أخت  
لہ، فتخرج قبلہ ویخرج بعدہا، یکون رأسہ عند



رجلیہا، ویكون مولده بالصین، ولغته لغة بلده، وبسری  
العقم فی الرجال والنساء فیکثر النکاح من غیر ولادة،  
ویدعوهم الی الله فلا یجاب۔“ (تزیق القلوب ص: ۳۵۴)  
ترجمہ:۔۔۔ ”اور اس نوع انسانی کا جو آخری بچہ پیدا ہوگا وہ  
شیث علیہ السلام کے قدم پر ہوگا، اور وہ حضرت شیث علیہ السلام کے  
اسرار کا حامل ہوگا، اور اس بچے کے بعد اس نوع انسانی میں کوئی بچہ  
پیدا نہیں ہوگا۔ پس وہ بچہ خاتم الاولاد ہوگا، اور اس کے ساتھ اس کی  
ایک بہن پیدا ہوگی جو اس سے پہلے پیدا ہوگی، اور اس بچے کا سر اس  
بچی کے پاؤں سے ملا ہوا ہوگا، اس بچے کی پیدائش چین میں ہوگی اور  
اس کی زبان اس کے شہر کی زبان ہوگی، اور (اس بچے کی پیدائش کے  
بعد) مردوں اور عورتوں میں بانجھ پن کی بیماری سرایت کر جائے گی،  
پس نکاح بکثرت ہوں گے، مگر اولاد کی پیدائش نہیں ہوگی، یہ بچہ (بڑا  
ہو کر) لوگوں کو اللہ تعالیٰ کی طرف دعوت دے گا، لیکن اس کی دعوت  
پر کوئی کان نہیں دھرے گا۔“

مرزا قادیانی کی عادت تھی کہ کہیں پیش گوئی نظر آ جاتی اسے جھٹ سے اپنے اوپر  
ڈھال لیا کرتا تھا، چنانچہ شیخ اکبر کی مندرجہ بالا پیش گوئی کے بارے میں مرزا نے کہا کہ  
پیش گوئی مسیح موعود کے بارے میں ہے، اور چونکہ مسیح موعود، مرزا ہے، لہذا یہ پیش گوئی کا  
مصدق بھی مرزا ہے۔ اب سوال یہ ہوا کہ پیش گوئی میں تو یہ کہا گیا ہے کہ وہ بچہ نوع انسانی  
میں خاتم الاولاد ہوگا، اس کی پیدائش کے بعد پھر نوع انسانی میں کسی بچے کی ولادت نہیں  
ہوگی، تمام مرد و زن بانجھ ہو جائیں گے، چنانچہ نکاح بکثرت ہوں گے مگر اولاد نہیں ہوگی۔  
مرزا اس پیش گوئی کا مصداق کیسے ہو سکتا ہے؟ جبکہ مرزا کے بعد بھی نوع انسانی میں تو والد اور  
تناسل کا سلسلہ بدستور جاری رہا۔ اس سوال کو حل کرنے کے لئے مرزا نے اس پیش گوئی میں

جو تاویل کی وہ یہ تھی کہ:

”اور پیش گوئی میں یہ بھی الفاظ ہیں کہ اس کے بعد یعنی اس کے مرنے کے بعد نوع انسان میں علت عقم (بانجھ پن کی بیماری) سرایت کرے گی، یعنی پیدا ہونے والے حیوانوں اور وحشیوں سے مشابہت رکھیں گے، اور انسانیت حقیقی صفحہ عالم سے مفقود ہو جائیں گے، پس ان پر قیامت قائم ہوگی۔“

(تریاق القلوب ص: ۳۵۵ طبع اول ص: ۱۵۹)

مرزا قادیانی کی اس تاویل کے مطابق پیش گوئی کا مطلب یہ ہوا کہ مسیح موعود کے مرنے کے بعد نوع انسانی میں جو لوگ پیدا ہوں گے ان میں انسانیت نام کو بھی نہیں ہوگی، وہ حیوانوں اور وحشیوں کے مشابہ ہوں گے، وہ حلال و حرام کی کوئی تمیز نہیں رکھتے ہوں گے، ان پر قیامت قائم ہوگی۔

مرزا طاہر صاحب! میں اپنی طرف سے کچھ نہیں کہتا، ذرا مرزا قادیانی کے ان الفاظ کے آئینے میں اپنا اور اپنے سیکریٹری صاحب کا چہرہ پہچاننے کی کوشش کیجئے، اگر مرزا قادیانی مسیح موعود ہے اور اگر مسیح موعود کے مرنے کے بعد پیدا ہونے والے حیوان اور وحشی ہیں، ان میں انسانیت نام کو بھی نہیں، بلکہ خالص جانور ہیں، تو آپ اور آپ کی جماعت کے وہ تمام افراد جو مرزا قادیانی کی موت (۲۶ مئی ۱۹۰۸ء) کے بعد پیدا ہوئے ان کی حیثیت خود بخود متعین ہو جاتی ہے۔

مرزا طاہر صاحب! آپ مرزا کو مسیح موعود مان کر انسانیت سے خارج اور حیوانوں اور وحشیوں کی صف میں شامل ہو گئے۔ اب آپ کے سامنے دو ہی راستے ہیں، اگر انسانوں کی صف میں شامل ہونا چاہتے ہیں تو مرزا غلام احمد قادیانی کے مسیح موعود ہونے کا انکار کر دیجئے، اور اگر آپ کو اب بھی مرزا کے مسیح موعود ہونے کا اصرار ہے تو آپ اپنے مسیح موعود کے فتویٰ کے مطابق:

”حیوانوں اور وحشیوں سے مشابہت رکھتے ہیں،  
انسانیت حقیقی آپ میں مفقود ہے، آپ حلال کو حلال اور حرام کو حرام  
نہیں سمجھتے۔“

کیا ایسے انسان نما جانوروں میں انسانیت و شرافت کا ذرہ ہو سکتا ہے؟ اور ایسے  
وحشی جن کی نظر میں حلال و حرام کی کوئی تمیز نہیں، بیوی اور بہو بیٹی کے درمیان کوئی امتیاز نہیں،  
اگر وہ مجھے طعنہ دیتے ہیں کہ مجھ میں ”ذرہ بھر بھی شرافت“ نہیں تو ایسے وحشیوں کی بات کا  
کیوں بُرا منایا جائے...؟

آپ کے سیکریٹری کا دوسرا الزام مجھ پر یہ ہے کہ میں مباہلہ سے راہ فرار اختیار کر  
رہا ہوں، جس شخص کی نظر سے میرے وہ الفاظ گزرے ہوں گے، جو میں نے جلی قلم سے  
لکھوائے تھے، وہ آپ کی راست بازی کی داد دیئے بغیر نہیں رہ سکتا، میں نے آپ کی دعوت  
کو قبول کرتے ہوئے جلی الفاظ میں لکھا تھا:

”آئیے! اس فقیر کے مقابلے میں میدان مباہلہ  
میں قدم رکھئے اور پھر میرے مولائے کریم کی غیرت و جلال  
اور قہری تجلی کا کھلی آنکھوں تماشا دیکھئے۔ آنحضرت صلی اللہ  
علیہ وسلم نے نصاریٰ نجران کے بارے میں فرمایا تھا کہ اگر وہ  
مباہلہ کے لئے نکل آتے تو ان کے درختوں پر ایک پرندہ بھی  
زندہ نہ پچتا۔ آئیے! آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے ایک  
ادنیٰ اُمتی کے مقابلے میں میدان مباہلہ میں نکل کر  
آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی ختم نبوت کا اعجاز ایک بار پھر  
دیکھ لیجئے!“

اس کے بعد میں نے آپ کے فرار کی پیش گوئی کرتے ہوئے لکھا تھا:  
 ”۳۱ ناکارہ کا خیال ہے کہ آپ آگ کے اس سمندر میں  
 کودنا کسی حال میں قبول نہیں کریں گے، اپنے باپ دادا کی طرح  
 ذلت کی موت مرنا تو پسند کریں گے، لیکن آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم  
 کے اس نالائق اُمتی کے مقابلے میں میدانِ مباہلہ میں اُترنے کی  
 جرأت نہیں کریں گے۔“

میں آپ کا شکر گزار ہوں کہ آپ نے میری پیش گوئی خود اپنے ہاتھ سے پوری  
 کر دکھائی، اگر آپ میں ذرا بھی غیرت ہوتی تو کم از کم میری پیش گوئی کو جھوٹا ثابت کرنے  
 کے لئے ہی مباہلہ کے میدان میں کود جاتے، لیکن مسیح کذاب کی ذریت میں شرمہ صداقت یا  
 ذرہ غیرت کہاں؟ اس کی توقع ہی عبث ہے، اللہ تعالیٰ کا لاکھ لاکھ شکر ہے کہ میرے مباہلہ کی  
 لٹکار سے مسیح کذاب کی ذریت پر ایسا لرزہ طاری ہوا کہ میری پیش گوئی کو غلط ثابت کرنے  
 کے لئے بھی ان کی غیرت کو جنبش نہ ہوئی۔ یہ اس ناکارہ و نالائق اُمتی کا کمال نہیں، بلکہ  
 میرے نبی صادق و مصدوق صلی اللہ علیہ وسلم (میرے ماں باپ آپ صلی اللہ علیہ وسلم پر  
 قربان) کی صداقت کا اعجاز ہے:

”قُلْ جَاءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ، إِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوقًا“

۴:۔۔۔ آپ کے سیکریٹری صاحب لکھتے ہیں:

”مباہلہ دُعا کے ذریعے خدا تعالیٰ سے فیصلہ طلبی کا نام ہے،  
 اور آیتِ مباہلہ کی رُو سے کسی مخصوص مقام پر فریقین کا اجتماع ضروری  
 نہیں، اس لئے آپ کا یہ کہنا کہ فلاں تاریخ کو فلاں وقت میں پاکستان  
 یا کسی اور جگہ آؤ، سوائے مباہلہ سے فرار کے اور کوئی معنی نہیں رکھتا۔“

یہ تو ابھی اوپر معلوم ہو چکا ہے کہ مرزا کی ذریت کو میدانِ مباہلہ میں کون لٹکار  
 رہا ہے، اور میدانِ مباہلہ سے فرار کون اختیار کر رہا ہے؟ لیکن آپ کی شرم و حیا کی داد دیتا



ہوں کہ خود بھاگ رہے ہیں مگر بھاگتے ہوئے یہ شور مچا رہے ہیں کہ ”دیکھو بھاگ رہا ہے، بھاگ رہا ہے“ عیار چور کا کردار مشہور ہے، جب چوری کے دوران گھر والوں کی آنکھ کھل گئی اور وہ ”چور چور“ پکارنے لگے تو عیار چور نے خود بھی ”چور چور“ پکارنا شروع کر دیا تا کہ اس پر چوری کا شبہ نہ کیا جائے اور وہ رات کی تاریکی سے فائدہ اٹھا کر بھاگ نکلنے میں کامیاب ہو جائے۔ لیکن مرزا طاہر صاحب! اب آپ کی عیاری نہیں چلے گی، رات کی تاریکی چھٹ چکی ہے، صبح کا اُجالا ہو چکا ہے، مسیح کذاب کی ”باغیرت ذریت“ کی آواز تو آواز، ان کے چہرے بھی صاف پہچانے جا چکے ہیں، اب آپ کی ”چور چور“ کی آواز سے کون احمق دھوکا کھائے گا؟

میں نے قرآن کریم کی آیت اور آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے عمل مبارک کے حوالے سے لکھا تھا کہ ”مباہلہ کا طریقہ یہ ہے کہ دونوں فریق اپنی عورتوں، بچوں اور متعلقین کو لے کر میدان میں نکلیں۔“ لیکن آپ کے لئے یہ حوالے اس لئے بے سود ٹھہرے کہ آپ کو نہ قرآن پر ایمان ہے اور نہ صاحب قرآن صلی اللہ علیہ وسلم کے عمل مبارک پر۔ اس لئے آپ نے مباہلہ کا بھی ایک نیا مفہوم گھڑ لیا۔ مثل مشہور ہے کہ ”جھوٹے کو اس کی ماں کے گھر تک پہنچا کر آنا چاہئے“ اس لئے میں آپ کے مسیح کذاب کی تحریروں سے ثابت کرتا ہوں کہ مباہلہ کسے کہتے ہیں؟ اور یہ کہ مباہلہ کے لئے فریقین کا ایک میدان میں جمع ہونا ضروری ہے یا نہیں؟ ذرا غور سے سنئے!

۱۔... مرزا قادیانی نے ۱۸۸۶ء میں آریوں کو مباہلہ کی دعوت دیتے ہوئے لکھا:

”اگر کوئی آریہ ہمارے اس تمام رسالے کو پڑھ کر پھر بھی

اپنی ضد کو نہ چھوڑنا چاہے اور اپنی کفریات سے باز نہ آوے تو ہم خدا

تعالیٰ کی طرف اشارہ پا کر اس کو مباہلہ کی طرف بلا تے ہیں۔“

(سرمہ چشم آریہ ص: ۲۸۰)

”آخر الخلیل مباہلہ ہے، جس کی طرف ہم پہلے اشارات



کر آئے ہیں۔ مباہلہ کے لئے دید خوان ہونا ضروری نہیں، ہاں باتمیز اور ایک نامور آریہ ہونا چاہئے جس کا اثر دوسروں پر بھی پڑ سکے، سو اگر وہ وید کی ان تعلیموں کو، جن کو ہم کسی قدر اس رسالے میں تحریر کر چکے ہیں، فی الحقیقت صحیح اور سچے سمجھتے ہیں اور ان کے مقابل جو قرآن شریف کے اصول اور تعلیمیں اسی رسالے میں بیان کی گئی ہیں ان کو باطل اور دروغ خیال کرتے ہیں تو اس بارے میں ہم سے مباہلہ کر لیں۔

اور کوئی مقام مباہلہ کا برضا مندی فریقین قرار پا کر ہم دونوں فریق تاریخ مقررہ پر اس جگہ حاضر ہو جائیں۔“

(سرمد چشم آریہ ص: ۳۰۰، ۳۰۱)

۲: ۱۸۹۶ء میں عیسائیوں کو مباہلہ کی دعوت دیتے ہوئے مرزا نے لکھا:

”اور ربانی فیصلے کے لئے طریق یہ ہوگا کہ میرے مقابل

پر ایک معزز پادری صاحب جو پادری صاحبان مندرجہ ذیل میں سے منتخب کئے جائیں

میدان مباہلہ کے لئے، جو تراضی فریقین سے مقرر کیا جائے طیار ہوں، پھر بعد اس کے ہم دونوں مع اپنی اپنی جماعتوں کے میدان مقررہ میں حاضر ہو جائیں۔

اور خدا تعالیٰ سے دُعا کے ساتھ یہ فیصلہ چاہیں کہ ہم دونوں میں سے جو شخص درحقیقت خدا تعالیٰ کی نظر میں کاذب اور مورد غضب ہے، خدا تعالیٰ ایک سال میں اس کاذب پر وہ قہر نازل کرے جو اپنی غیرت کی رُو سے ہمیشہ کاذب اور مکذب قوموں پر کیا جاتا ہے۔“

(انجام آتھم ص: ۴۰)

”سوائے پادری صاحبان! دیکھو کہ میں اس کام کے لئے کھڑا ہوں، اگر چاہتے ہو کہ خدا کے حکم سے اور خدا کے فیصلے سے سچے اور جھوٹے میں فرق ظاہر ہو جائے تو آؤ“

تاہم ایک میدان میں دُعاؤں کے ساتھ جنگ کریں۔

تاکہ جھوٹے کی پردہ دہری ہو۔“ (انجامِ آہتمم ص: ۴۲)

”اگر عیسائی لعنت کے لفظ سے متنفر ہیں تو اس لفظ کو جانے

دیں، بلکہ دونوں فریق یہ دُعا کریں کہ یا الہ العالمین! اے قادر! ان

دونوں گروہوں میں اس طرح فیصلہ کر کہ جو ہم دو فریق میں سے

جو اس وقت مہابلہ کے میدان میں حاضر ہیں،

جو فریق جھوٹے اعتقاد کا پابند ہے اس کو ایک سال کے اندر بڑے

عذاب سے ہلاک کر، کیونکہ تمام دُنیا کی نجات کے لئے چند آدمی کا

مرنا بہتر ہے۔“ (انجامِ آہتمم ص: ۳۳)

۳:۔۔۔ اکابر علمائے اُمت کو مہابلہ کی دعوت دیتے ہوئے مرزا لکھتا ہے:

”اب میں پھر اپنے کلام کو اصل مقصد کی طرف رُجوع

دے کر ان مولوی صاحبوں کا نام ذیل میں درج کرتا ہوں جن کو میں

نے مہابلہ کے لئے بلایا ہے اور میں پھر ان سب کو اللہ جل شانہ کی

قسم دیتا ہوں کہ

مہابلہ کے لئے تاریخ اور مقام مقرر کر کے جلد مہابلہ کے

میدان میں آویں

اور اگر نہ آئے اور نہ تکفیر و تکذیب سے باز آئے تو خدا کی لعنت کے

نیچے مریں گے۔“ (انجامِ آہتمم ص: ۶۹)

۱:۔۔۔ مرزا قادیانی ”خدا تعالیٰ سے اشارہ پا کر“ آریوں کو میدانِ مہابلہ میں

بلاتا ہے۔

۲: ... عیسائیوں کے سامنے ”ایک میدان میں جمع ہو کر دُعاؤں کے ساتھ جنگ“ کرنے کو ربانی فیصلہ قرار دیتا ہے۔

۳: ... اور اکابر علمائے اُمت کو حلف دیتا ہے کہ: ”مباہلہ کے لئے تاریخ اور مقام مقرر کر کے جلد مباہلہ کے میدان میں آئیں، ورنہ خدا کی لعنت کے نیچے مریں گے۔“ لیکن آپ نہ خدائی اشاروں کو سمجھتے ہیں، نہ ربانی فیصلے کو مانتے ہیں، نہ آپ کو مرزا کے حلف کی شرم و لحاظ ہے، نہ تاریخ اور مقام مقرر کرتے ہیں اور نہ میدان مباہلہ میں آنے پر آمادہ ہیں، بلکہ بقول مرزا... خدا کی لعنت کے نیچے مرنا چاہتے ہیں۔

اب فرمائیے مباہلہ سے فرار کون کر رہا ہے؟ اور مباہلہ سے فرار کر کے خدا کی لعنت کا مورد کون بن رہا ہے، اگر آپ کو قرآن کریم پر ایمان نہیں ہے تو نہ سہی، اگر آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کا عمل آپ کے لئے حجت نہیں، تو اس کو بھی جانے دیجئے، لیکن آپ اس لعنت کی موت سے کیسے بچیں گے جو آپ کے دادا مسیح کذاب نے آپ کے لئے تجویز کر دی ہے...؟

آج آپ لکھتے ہیں کہ:

”آیت مباہلہ کی رو سے کسی مخصوص مقام پر فریقین کا

اجتماع ضروری نہیں۔“

لیکن آپ کو کیوں یاد نہیں کہ آپ کے دادا کا قادیانی قرآن، جس کی شان میں ”انا انزلناہ قریباً من القادیان“ نازل ہوا تھا (تذکرہ ص: ۷۶) اور جس میں یہ دو آیتیں بھی تھیں:

”شأتان تذبحان، فبأی الآء ربکما تکذبان“

(تذکرہ ص: ۹۲)

اسی قادیانی قرآن کی جو چند آیتیں مرزا نے ”انجام آہتم“ میں نقل کی ہیں ان

میں سے ایک 'آیتِ مباہلہ' بھی ہے، جس کا متن اور ترجمہ مرزا قادیانی نے حسب ذیل دیا ہے:

”وقالوا کتاب ممتلیٰ من الکفر والکذب قل  
تعالوا ندع أبنائنا وأبنائکم ونسائنا ونسائکم وأنفسنا  
وأنفسکم ثم نبتهل فنجعل لعنة الله على الکاذبین۔“ (ص: ۶۰)  
ترجمہ:...” اور لوگوں نے کہا کہ یہ کتاب کفر اور کذب  
سے بھری ہوئی ہے، ان کو کہہ دے کہ ہم اور تم اپنے بیٹوں اور عورتوں  
اور عزیزوں سمیت ایک جگہ اکٹھے ہوں، پھر مباہلہ کریں اور جھوٹوں  
پر لعنت بھیجیں۔“

آپ دیکھ رہے ہیں کہ آپ کے دادا کے قادیانی قرآن میں بھی مباہلہ کا وہی  
مفہوم لکھا ہوا ہے جو میں ذکر کر رہا ہوں، یعنی ”دو فریقوں کا مع متعلقین کے ایک میدان  
میں جمع ہو کر بیک زبان جھوٹوں پر لعنت کرنا“، لیکن آپ کے سیکریٹری صاحب لکھتے ہیں:  
”ہمارا ایمان ہے کہ خدا تعالیٰ کائنات میں ہر جگہ موجود  
ہے اور اس کے قبضہ قدرت سے کوئی جگہ باہر نہیں، اور کوئی مقام اس  
کے تسلط و جبروت سے خالی نہیں اس کی کرسی زمین و آسمان پر محیط  
ہے، اس کو مخاطب کر کے لعنۃ اللہ علی الکاذبین کہنے میں آپ کو  
ہچکچاہٹ کیوں ہے؟ اور کیوں فریقین کی موجودگی ضروری ہے؟“

اولاً:... تو مجھے یہ کہنے کی اجازت دیجئے کہ آپ کو نہ خدا پر ایمان ہے، نہ رسول  
صلی اللہ علیہ وسلم پر، نہ قرآن کریم پر اور نہ مرزا قادیانی پر۔ اگر اللہ تعالیٰ کی ذاتِ عالی پر آپ  
کا ایمان ہوتا تو اللہ تعالیٰ نے فریقین کو میدانِ مباہلہ کی طرف بلانے کا جو حکم فرمایا تھا آپ  
اسے منسوخ نہ کرتے اور میدانِ مباہلہ میں فریقین کے اجتماع کو غیر ضروری قرار دے کر  
مباہلہ کے مفہوم میں تحریف کا ارتکاب نہ کرتے۔ اگر آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم پر آپ کا  
ایمان ہوتا تو ارشادِ خداوندی کی تعمیل میں جس طرح آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم بنفسِ نفیس

مباہلہ کے لئے باہر تشریف لائے تھے، آپ بھی اسی طرح میدانِ مباہلہ میں نکلتے۔ اگر مرزا قادیانی کی صداقت کا ذرا بھی خیال ہوتا تو کم از کم مرزا کے حلف کی شرم رکھتے۔

ثانیاً: ... حق تعالیٰ شانہ کے ہر جگہ حاضر و ناظر ہونے میں کس کا فر کو کلام ہے؟ سوال تو یہ ہے کہ جو معاملہ فریقین کے درمیان طے ہو، اس کے لئے ہر دو فریق کا ایک جگہ جمع ہونا ضروری ہے یا نہیں؟ کیا میاں بیوی کے درمیان ”لعان“ ہو سکتا ہے جب تک کہ وہ دونوں ایک جگہ جمع نہ ہوں؟ کیا زوجین کے درمیان نکاح ہو سکتا ہے جب تک دونوں فریق اصالتہ یا وکالتہ ایک مجلس میں جمع نہ ہوں؟ کیا مقدمے کا فیصلہ ہو سکتا ہے جب تک کہ دونوں فریق اصالتہ یا وکالتہ عدالت کے کٹہرے میں نہ آئیں؟ اگر مباہلہ بھی دو فریقوں کا عدالتِ الہی سے فیصلہ طلبی کا نام ہے تو اس فیصلہ طلبی کے لئے دونوں فریقوں کا ایک دوسرے کے روبرو اپنے بیانات قلم بند کرانا اور پھر دونوں کامل کر عدالتِ الہی سے فیصلہ طلب کرنا کیوں ضروری نہیں؟

ثالثاً: ... یہ تو میں جانتا ہوں کہ قادیانی ہونے کے معنی ہی یہ ہیں کہ آدمی قرآن و حدیث کے مطالب کو اپنی خواہش کے مطابق ڈھالنے لگے۔ چنانچہ بے شمار آیات و احادیث آپ کی تحریف کا تختہ مشق بن چکی ہیں اور بہت سی اصطلاحاتِ شرعیہ کے مفہومات کو اپنی خواہش کی سمجھنے پر چڑھایا جا چکا ہے، اسی کو الحاد و زندقہ کہا جاتا ہے اور اسی الحاد و زندقہ کا مظاہرہ آپ مباہلہ کی شرعی اصطلاح میں کر رہے ہیں۔ قرآن کریم کا اعلان یہ ہے کہ اگر مباہلہ کرنا ہے تو دونوں فریقوں کو ان کے متعلقین سمیت میدانِ مباہلہ میں بلایا جائے، پھر دونوں مل کر بارگاہِ الہی میں گڑ گڑائیں اور اللہ تعالیٰ سے جھوٹوں پر لعنت کی درخواست کریں۔ تب عدالتِ الہی سے فیصلہ صادر ہوگا۔ چنانچہ اوپر آپ کے دادا کے قادیانی قرآن سے بھی آیتِ مباہلہ کا ترجمہ نقل کر چکا ہوں کہ:

”ان کو کہہ دے کہ آؤ ہم اور تم اپنے بیٹوں اور عورتوں اور

عزیزوں سمیت ایک جگہ اکٹھے ہوں، پھر مباہلہ کریں اور جھوٹوں پر

لعنت بھیجیں۔“



لیکن آپ فرماتے ہیں کہ ہم خدائی عدالت میں حاضر نہیں ہوں گے، خدا تعالیٰ کو فیصلہ کرنا ہے تو ہمارے گھر بیٹھے بیٹھے فیصلہ کر دے۔ فرمائیے! کیا یہ خدائی عدالت کی تو ہیں نہیں؟ اور یہ مباہلہ کا مذاق اڑانا نہیں تو اور کیا ہے؟ پھر ستم بالائے ستم یہ کہ آپ دُوسروں کو بھی مجبور کرتے ہیں کہ وہ اس مذاق میں آپ کے ساتھ شریک ہوں، لاحول ولا قوۃ الا باللہ! رابعاً:۔۔۔ چونکہ آپ پاکستان سے مفرور ہیں، بہت ممکن ہے کہ پاکستان آنے سے آپ کو کوئی جلی یا خفی عذر مانع ہو، لہذا میں آپ کو پاکستان آنے کی زحمت نہیں دیتا، آپ لندن ہی میں مباہلہ کی جگہ اور تاریخ کا اعلان کر دیجئے، یہ فقیر اپنے رُفقاء سمیت وہاں حاضر ہو جائے گا۔ اور اگر قصرِ خلافت سے باہر قدم رکھنے سے خوف مانع ہے تو چلئے اپنے ”لندن“ اسلام آباد“ ہی کو میدانِ مباہلہ قرار دے کر تاریخ کا اعلان کر دیجئے، یہ فقیر آپ کے مستقر پر حاضر ہو جائے گا اور جتنے رُفقاء آپ فرمائیں گے، لاکھ، دو لاکھ، دس، بیس لاکھ اپنے ساتھ لے آئے گا، حفظِ امن کی ذمہ داری آپ کو اٹھانی ہوگی۔

میرا مباہلہ اسی نکتے پر ہوگا، جس پر ایک صدی پہلے مولانا عبدالحق غزنوی مرحوم و مغفور نے مرزا قادیانی سے مباہلہ کیا اور جس کے نتیجے میں مرزا قادیانی رُوسیا ہوا تھا، یعنی:

”مرزا غلام احمد قادیانی اور اس کے پیرو، سب دجال

و کذاب، کافر و مرتد اور زندیق و بے ایمان ہیں۔“

دیکھئے! اب میں نے آپ کا کوئی عذر باقی نہیں چھوڑا، اب آپ کو آپ کے دادا کے الفاظ میں غیرت دلاتا ہوں کہ:

”آپ کو اللہ جل شانہ کی قسم دیتا ہوں کہ مباہلہ کے لئے

تاریخ اور مقام مقرر کر کے جلد مباہلہ کے میدان میں آئیں ورنہ خدا

کی لعنت کے نیچے مریں گے۔“

خامساً:۔۔۔ آخر میں پھر آرزو راہِ خیر خواہی عرض کرتا ہوں کہ مرزا قادیانی، خدائی عدالت میں بار بار جھوٹا ثابت ہو چکا ہے، نیا مباہلہ کرنے کے بجائے آپ خدائی عدالت کے پہلے فیصلے کو تسلیم کر کے مرزا کذاب کی پیروی چھوڑ دیں، آپ سو بار بھی مباہلہ کریں گے

تو نتیجہ وہی رہے گا۔ ابھی توبہ کا دروازہ کھلا ہے، مرنے سے پہلے قادیانی عقائد سے توبہ کر کے حضرت رحمۃ اللعالمین صلی اللہ علیہ وسلم کے دامنِ رحمت سے وابستہ ہو جائیں۔

میں آپ کو اور آپ کی جماعت کو حق تعالیٰ شانہ سے ہدایت طلبی کا آسان طریقہ بتاتا ہوں، وہ یہ کہ رات کو سونے سے پہلے ۳۱۳ مرتبہ دُرود شریف پڑھ کر تنہائی میں حق تعالیٰ شانہ سے رورو کر دُعا کریں کہ:

”یا اللہ! تیری رحمت کا واسطہ! اپنے نبی رحمت صلی اللہ علیہ وسلم کے صدقے ہمیں گمراہی سے نکلنے کی توفیق عطا فرما، اور اب تک ہم سے جتنی اعتقادی و عملی غلطیاں ہوئی ہیں، ان کو معاف فرما۔“

اگر آپ میں سے کسی نے صدقِ دل سے میری اس تدبیر پر عمل کیا تو ان شاء اللہ اس پر ہدایت کا دروازہ ضرور کھلے گا۔

سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَبِحَمْدِكَ، أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ،  
أَسْتَغْفِرُكَ وَأَتُوبُ إِلَيْكَ

سُبْحَنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُونَ ○ وَسَلَامٌ عَلَى  
الْمُرْسَلِينَ ○ وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ

## قادیانی فیصلہ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَسَلَامٌ عَلٰی عِبَادِهِ الَّذِیْنَ اصْطَفٰی

علمائے اُمت نے قرآن و سنت کے دلائل اور واقعات کی روشنی میں مرزا غلام احمد قادیانی کے بارے میں کسی پہلو کو تشنہ نہیں چھوڑا ہے، خود اس ناکارہ کے قلم سے بھی متعدد رسائل منظر عام پر آچکے ہیں، بے ساختہ جی میں آیا کہ مرزا قادیانی کے بارے میں ایسے چند نکات نئی نسل کے سامنے پیش کئے جائیں جو بہت مختصر ہوں، اور جن کا نتیجہ ”دو اور دو چار“ کی طرح بالکل واضح ہو۔ چنانچہ زیر قلم رسالہ اسی وارِ قلبی کی تعمیل ہے۔ ہدایت تو اللہ جل شانہ کے قبضے میں ہے، لیکن اگر نو جوان طبقہ اس رسالے کے نکات کو اچھی طرح سمجھ لے تو ان شاء اللہ العزیز، مرزا قادیانی کے جھوٹا اور مفتری ہونے میں اسے کوئی شک و شبہ نہیں رہے گا۔

رسالے کے آخر میں ان کتابوں کے صفحات کا فوٹو بھی دے دیا گیا ہے جن کا حوالہ اس رسالے میں آیا ہے، اور ان سے پہلے حوالہ جات کی فہرست درج کر کے ان صفحات کا حوالہ نمبر درج کر دیا ہے۔ ہادی مطلق جل شانہ کی بارگاہ میں التجا ہے کہ اس عجالے کی ترتیب میں زبان و بیان یا نیت و ارادہ کے اعتبار سے کوئی لغزش و کوتاہی ہوئی ہو تو معاف فرمائیں، اس کو قبول فرما کر اپنی رضا کا وسیلہ بنائیں، اور اس کو اپنے بندوں کے لئے رُشد و ہدایت کا ذریعہ بنائیں، وَهُوَ عَلٰی كُلِّ شَيْءٍ قَدِیْرٌ۔

محمد یوسف عفا اللہ عنہ

۱۳۱۳ھ / ۲۰ / ۱

۱۹۹۲ء / ۲۲ / ۷

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

### پہلا باب

## مرزا غلام احمد قادیانی کا مقدمہ اللہ تعالیٰ کی عدالت میں

قارئین کرام! جب دو فریق دُعا کے ذریعے اپنا مقدمہ اللہ تعالیٰ کی عدالت میں پیش کریں، اور دُعا کریں کہ: ”یا اللہ! سچے اور جھوٹے کے درمیان فیصلہ فرما“ تو اس کو ”مباہلہ“ کہتا جاتا ہے۔ اور ”مباہلہ“ کے بعد جو نتیجہ نکلے وہ ”خدائی فیصلہ“ شمار کیا جاتا ہے۔ مرزا غلام احمد قادیانی نے اپنا مقدمہ کئی بار اللہ تعالیٰ کی عدالت میں پیش کیا، اور ہر بار خدائی عدالت سے اس کے خلاف فیصلہ صادر ہوا، چنانچہ:

پہلا مقدمہ: ... مرزا نے اپنا اور آتھم پادری کا مقدمہ یک طرفہ طور پر اللہ تعالیٰ کی عدالت میں پیش کیا، اور فیصلہ مرزا کے خلاف ہوا، اور مرزا کو خدائی فیصلے کے خلاف غلط اور جھوٹی تاویلات کا سہارا لینا پڑا۔

دوسرا مقدمہ: ... مرزا نے اپنا اور مولانا ثناء اللہ امرتسری کا مقدمہ، اللہ تعالیٰ کی عدالت میں پیش کیا، اور اس مرتبہ بھی فیصلہ اس کے خلاف ہوا، ان دونوں مقدموں کی تفصیل آپ آئندہ ابواب میں پڑھیں گے۔

تیسرا مقدمہ: ... ۱۰ رذیقعدہ ۱۳۱۰ھ کو عید گاہ امرتسر کے میدان میں مولانا عبدالحق غزنوی کا خود مرزا غلام احمد قادیانی سے رُوبرو مباہلہ ہوا، اور دونوں فریقوں نے مل کر دُعا کی کہ یا اللہ! سچے اور جھوٹے کے درمیان فیصلہ فرما۔

(مجموعہ اشتہارات ج: ۱ ص: ۴۲۶، ۴۲۷) (حوالہ نمبر ۱)

مرزا نے یہ اصول بیان کیا کہ مباہلہ کے بعد خدائی فیصلے کی شکل یہ ہے کہ:

”مباہلہ کرنے والوں میں جو فریق جھوٹا ہو، سچے کی زندگی میں مرجاتا ہے۔“

(ملفوظات ج: ۹ ص: ۳۴۰، ۳۴۱) (حوالہ نمبر ۲)

نتیجہ:.... مرزا غلام احمد قادیانی اپنے بیان کردہ اصول کے مطابق ۲۶ مئی ۱۹۰۸ء کو مولانا عبدالحق غزنویؒ کی زندگی میں ہلاک ہو گیا۔ اور مولانا غزنویؒ، مرزا غلام احمد قادیانی کے بعد ۹ سال تک زندہ سلامت رہے، ان کا انتقال ۱۶ مئی ۱۹۱۷ء کو ہوا۔

(رئیس قادیان ج: ۲ ص: ۱۹۲، تاریخ مرزا ص: ۳۸) (حوالہ نمبر ۳)

پس اللہ تعالیٰ کی عدالت نے فیصلہ دے دیا کہ مرزا غلام احمد قادیانی جھوٹا تھا، اور واقعی دجال و کذاب اور مرتد تھا۔

چوتھا مقدمہ:.... مرزا کے ایک غالی مرید حافظ محمد یوسف نے ۲ ر شوال ۱۳۱۰ھ مطابق ۱۹ اپریل ۱۸۹۳ء کو مولانا عبدالحق غزنویؒ سے مباہلہ کیا، مباہلہ اس پر تھا کہ مرزا غلام احمد اور اس کے دو چیلے حکیم نور الدین اور محمد احسن امروہی مسلمان ہیں یا نہیں؟ حافظ محمد یوسف کا کہنا تھا کہ یہ تینوں مسلمان ہیں، اور مولانا غزنویؒ کا کہنا تھا کہ یہ تینوں دجال و کذاب اور مرتد ہیں۔ الغرض! مرزا کی وکالت میں حافظ محمد یوسف نے مولانا عبدالحق سے مباہلہ کیا، اور دونوں فریقوں نے مل کر دُعا کی کہ یا اللہ! سچے اور جھوٹے کے درمیان فیصلہ فرما۔ اور مرزا کو جب اس مباہلہ کی اطلاع پہنچی تو اس نے اپنے مرید حافظ صاحب کی تحسین و تصدیق کی، اور اس مباہلہ کی ذمہ داری خود اٹھالی۔

(مجموعہ اشتہارات ج: ۱ ص: ۳۹۵، ۳۹۶) (حوالہ نمبر ۴)

نتیجہ:.... حافظ محمد یوسف اس مباہلہ کے شکار ہو کر مرزا ائیت سے تابع ہو گئے، اور مسلمان ہو کر مرزا ائیت کے بیخے ادھیڑ نے لگے، چنانچہ مرزا کے رسالہ اربعین کا اشتہار نمبر ۱۳ انہی حافظ محمد یوسف کے نام ہے، اس میں مرزا، حافظ صاحب کے بارے میں لکھتا ہے:

”کچھ عقل و فکر میں نہیں آتا کہ حافظ صاحب کو کیا ہو گیا

(کچھ نہیں ہوا، صرف مباہلے کا نتیجہ ظاہر ہوا... ناقل)..... انسان کو



اس سے کیا فائدہ کہ اپنی جسمانی زندگی کے لئے اپنی روحانی زندگی پر چھری پھیر دے، میں نے بہت دفعہ حافظ صاحب سے یہ بات سنی تھی کہ وہ میرے مصدقین میں سے ہیں، اور مکذّب کے ساتھ مباہلہ کرنے کو تیار ہیں۔ اور اسی میں بہت سا حصہ ان کی عمر کا گزر گیا، اور اس کی تائید میں وہ اپنی خواتین بھی سناتے رہے، اور بعض مخالفوں سے انہوں نے مباہلہ بھی کیا۔“

(اربعین نمبر ۳ مندرجہ روحانی خزائن ج: ۱ ص: ۸۰۸) (حوالہ نمبر ۵)

پس یہ اللہ تعالیٰ کی طرف سے مباہلہ کا فیصلہ تھا، جس سے واضح ہو گیا کہ مرزا، اللہ تعالیٰ کی نظر میں واقعی دجال و کذاب تھا۔

پانچواں مقدمہ: ... مرزا نے رسالہ ”سرمہ چشم آریہ“ میں آریوں کو مباہلہ کی دعوت دی، اور فریقین کے لئے مباہلہ کا مضمون خود لکھ کر شائع کیا، جس کو وہ بطور مباہلہ پڑھ کر سنائیں گے، اور یہ بھی قرار دیا کہ مباہلہ کے بعد:

”پھر فیصلہ آسمانی کے انتظار کے لئے ایک برس کی مہلت ہوگی، پھر اگر برس گزر نے کے بعد مؤلف (یعنی مرزا غلام احمد قادیانی) پر کوئی عذاب اور وبال نازل ہوا، یا حریفِ مقابل پر نازل نہ ہوا تو ان دونوں صورتوں میں یہ عاجز قابلِ تاوان پانچ سو روپے ٹھہرے گا، جس کو برضا مندی فریقین خزانہ سرکاری میں یا جس جگہ بآسانی وہ روپیہ مخالف کو مل سکے، داخل کر دیا جائے گا، اور در حالت غلبہ خود بخود اس روپے کے وصول کرنے کا فریقِ مخالف مستحق ہوگا۔ اور اگر ہم غالب آئے تو کچھ بھی شرط نہیں کرتے، کیونکہ شرط کے عوض میں وہی دُعا کے آثار کا ظاہر ہونا کافی ہے، اب ہم ذیل میں ہر دو مضمون کا غد مباہلہ کو لکھ کر رسالہ ”ہذا کو ختم کرتے ہیں۔“

(سرمہ چشم آریہ ص: ۲۵۱، روحانی خزائن ج: ۲ ص: ۸۰۱) (حوالہ نمبر ۶)

قارئین کرام! آگے بڑھنے سے پہلے مرزا کی اس تحریر کے نکات کو اچھی طرح نوٹ کر لیں، جو حسب ذیل ہیں:

- ۱- مرزا نے اپنی طرف سے مباہلہ کا مضمون شائع کر دیا، اور آریوں کو دعوت دی کہ وہ بھی مباہلہ کا مضمون مرزا کے مقابلے میں شائع کر دیں۔
- ۲- مباہلہ کا مضمون جس تاریخ کو فریق مخالف شائع کرے گا، اس تاریخ سے ایک سال تک فیصلے کی میعاد ہوگی۔

۳- اگر اس تاریخ سے ایک برس کے عرصے میں مرزا پر عذاب و وبال نازل ہوا تب بھی یہ سمجھا جائے گا کہ مرزا مباہلہ ہار گیا۔ اور اگر فریق مخالف پر اس عرصے میں عذاب نازل نہ ہوا، تب بھی مرزا جھوٹا ثابت ہوگا۔ اور فریق مخالف کے ہارنے کی صرف ایک صورت ہے کہ اس پر ایک برس کے عرصے میں عذاب و وبال نازل ہو جائے۔

۴- اگر مرزا مباہلہ میں جھوٹا ثابت ہو (جس کی اوپر دو صورتیں ذکر ہوئی ہیں) تو وہ فریق مخالف کو پانچ سو روپے تاوان دے گا، جس کو پیشگی جمع کرانے کے لئے تیار ہے۔ اور اگر فریق مخالف ہار جائے تو مرزا کی طرف سے تاوان کا کوئی مطالبہ نہیں۔ فریق مخالف پر مباہلہ کی بددعا کے آثار کا ظاہر ہو جانا ہی اس کے لئے کافی تاوان ہے۔

ان چار نکات کو اچھی طرح ذہن میں رکھنے کے بعد اب آگے سنئے!

مرزا غلام احمد قادیانی کی یہ دعوت مباہلہ آریوں کی طرف سے پنڈت لیکھ رام نے قبول کر لی، چنانچہ مرزا غلام احمد قادیانی اپنی کتاب حقیقۃ الوحی میں لکھتا ہے:

”واضح ہو کہ میں نے سرمہ چشم آریہ کے خاتمے میں بعض

آریہ صاحبوں کو مباہلہ کے لئے بلایا تھا..... میری اس تحریر پر پنڈت

لیکھ رام نے اپنی کتاب ”خط احمدیہ“ میں، جو ۱۸۸۸ء میں اس نے

شائع کی تھی..... میرے ساتھ مباہلہ کیا (آگے لیکھ رام کا طویل

مضمون نقل کیا ہے جس کے اخیر میں لیکھ رام نے لکھا:)

اے پر میشر! ہم دونوں فریقوں میں سچا فیصلہ کر، کیونکہ

کاذب، صادق کی طرح تیرے حضور عزت نہیں پاسکتا۔“

(روحانی خزانی ج: ۲۲ ص: ۳۲۶ تا ۳۳۲) (حوالہ نمبر ۷)

نتیجہ: ... لیکن رام نے ۱۸۸۸ء میں مرزا کے ساتھ مباہلہ کیا، مرزا کی طے کردہ شرط کے مطابق لیکھ رام پر ایک سال میں عذاب نازل ہونا چاہئے تھا، مگر ایسا نہیں ہوا، لہذا لیکھ رام نے مرزا کے مقابلے میں مباہلہ جیت لیا۔ اور مرزا پنڈت لیکھ رام کے مقابلے میں بھی جھوٹا ثابت ہوا۔

قارئین کرام! آپ نے مندرجہ بالا تفصیل سے ملاحظہ فرمایا کہ مرزا غلام احمد قادیانی کا مقدمہ اللہ تعالیٰ کی عدالت میں پانچ مرتبہ پیش ہوا۔ تین مرتبہ مسلمانوں کے مقابلے میں، ایک مرتبہ عیسائی پادریوں کے مقابلے میں، اور ایک مرتبہ ہندو آریوں کے مقابلے میں، اور ہر مرتبہ اللہ تعالیٰ کی عدالت نے مرزا کے خلاف فیصلہ دیا، اور اسے جھوٹا ٹھہرایا۔ کیا اس کے بعد بھی کسی صاحب عقل کو مرزا کے جھوٹا ہونے میں شبہ ہو سکتا ہے...؟

## دوسرا باب

مرزا کی چند پیش گوئیاں، جو سچی نکلیں

پہلی پیش گوئی:

مولانا ثناء اللہ امرتسری مرحوم کو مخاطب کرتے ہوئے مرزا غلام احمد قادیانی نے لکھا:

”آپ اپنے پرچے میں ..... میری نسبت شہرت دیتے

ہیں کہ یہ شخص مفتری اور کذاب اور دجال ہے ..... اگر میں ایسا ہی

کذاب اور مفتری ہوں جیسا کہ اکثر اوقات آپ اپنے ہر ایک

پرچے میں مجھے یاد کرتے ہیں، تو میں آپ کی زندگی ہی میں ہلاک

ہو جاؤں گا۔“ (مجموعہ اشتہارات ج: ۳ ص: ۵۷۸) (حوالہ نمبر ۸)

نتیجہ: ... مرزا غلام احمد قادیانی کی یہ پیش گوئی حرف بحرف سچی نکلی۔ وہ ۲۶ مئی

۱۹۰۸ء کو مولانا مرحوم کی زندگی میں ہلاک ہو گیا۔ اور مولانا مرحوم ۱۹۳۹ء تک سلامت

باکرامت رہے۔ ثابت ہوا کہ مرزا غلام احمد قادیانی بقول خود، اللہ تعالیٰ کی نظر میں مفتری اور کذاب و دجال تھا۔

دوسری پیش گوئی:

اسی اشتہار میں مولانا مرحوم کو مخاطب کر کے لکھا:

”اگر وہ سزا جو انسان کے ہاتھوں سے نہیں بلکہ محض خدا

کے ہاتھوں سے ہے، جیسے طاعون، ہیضہ وغیرہ مہلک بیماریاں، آپ

پر میری زندگی میں ہی وارد نہ ہوئی تو میں خدا کی طرف سے نہیں۔“

(ایضاً) (حوالہ نمبر ۸)

نتیجہ:۔۔۔ مرزا کی یہ پیش گوئی بھی سچی ثابت ہوئی، مولانا مرحوم مرزا کی زندگی میں

بفضل خدا تمام آفات سے محفوظ رہے اور خود مرزا، مولانا کی زندگی میں وبائی ہیضے کا شکار

ہو گیا۔ (حیات ناصر ص: ۱۴، بحوالہ قادیانی مذہب، پہلی فصل نمبر ۸۰) (حوالہ نمبر ۹)

تیسری پیش گوئی:

مرزا غلام احمد قادیانی کا عبد اللہ آتھم پادری کے ساتھ ۱۵ دن تک مناظرہ ہوتا

رہا، آخری دن ۵ جون ۱۸۹۳ء کو مرزا نے پیش گوئی کی کہ ان کا حریف پندرہ مہینے تک ہاویہ

میں گرایا جائے گا، اسی سلسلے میں مرزا نے لکھا:

”میں اس وقت یہ اقرار کرتا ہوں کہ اگر یہ پیش گوئی جھوٹی

نکلی، یعنی وہ فریق جو خدا تعالیٰ کے نزدیک جھوٹ پر ہے وہ پندرہ ماہ

کے عرصے میں آج کی تاریخ سے بہ سزائے موت ہاویہ میں نہ پڑے

تو میں ہر ایک سزا کے اٹھانے کے لئے تیار ہوں۔ مجھ کو ذلیل کیا

جاوے، رُوسیاہ کیا جاوے، میرے گلے میں رسہ ڈال دیا جاوے،

مجھ کو پھانسی دیا جاوے، ہر ایک بات کے لئے تیار ہوں، اور میں اللہ

جل شانہ کی قسم کھا کر کہتا ہوں کہ وہ ضرور ایسا ہی کرے گا، ضرور

کرے گا، ضرور کرے گا، زمین آسمان ٹل جائیں پر اس کی باتیں نہ  
ٹلیں گی..... اگر میں جھوٹا ہوں تو میرے لئے سولی تیار رکھو، اور تمام  
شیطانوں اور بدکاروں اور لعنتیوں سے زیادہ مجھے لعنتی قرار دو۔“

(جنگ مقدس ص: ۲۱۰، ۲۱۱، روحانی خزائن ج: ۶ ص: ۲۹۲، ۲۹۳)

نتیجہ:.... پیش گوئی کی آخری میعاد ۵ ستمبر ۱۸۹۴ء تھی، مگر آتھم اس تاریخ تک  
نہیں مرا، اس لئے مرزا غلام احمد قادیانی کی یہ پیش گوئی سچی ثابت ہوئی کہ:  
”اگر آتھم پندرہ ماہ کے عرصے میں بہ سزائے موت ہاویہ  
میں نہ پڑے تو میں جھوٹا ہوں، میرے لئے سولی تیار رکھو، اور تمام  
شیطانوں اور بدکاروں اور لعنتیوں سے زیادہ مجھے لعنتی قرار دو۔“

چوتھی پیش گوئی:

مرزا غلام احمد قادیانی کو بقول اس کے الہام ہوا تھا، کہ محمدی بیگم (دختر احمد بیگ  
ہوشیار پوری) کا شوہر مرزا کی زندگی میں مرجائے گا، اور محمدی بیگم بیوہ ہو کر مرزا کے نکاح  
میں آئے گی، اس سلسلے میں مرزا نے پیش گوئی کی کہ:

”میں بار بار کہتا ہوں کہ نفس پیش گوئی داماد احمد بیگ کی  
تقدیر مبرم ہے، اس کی انتظار کرو، اور اگر میں جھوٹا ہوں تو یہ پیش گوئی  
پوری نہیں ہوگی، اور میری موت آجائے گی۔“

(انجام آتھم ص: ۳۱ حاشیہ) (حوالہ نمبر ۱۱)

نتیجہ:.... احمد بیگ کا داماد (سلطان محمد) مرزا کی زندگی میں نہیں مرا، بلکہ مرزا کے  
بعد ایک عرصے تک زندہ سلامت رہا، اس لئے مرزا کی یہ پیش گوئی سو فیصد سچی ثابت ہوئی  
کہ: ”اگر میں جھوٹا ہوں تو احمد بیگ کا داماد میری زندگی میں نہیں مرے گا۔“

پانچویں پیش گوئی:

اسی سلسلے میں مرزا نے لکھا:



”یاد رکھو! اگر اس پیش گوئی کی دوسری جزو پوری نہ ہوئی

(یعنی احمد بیگ کا داماد مرزا کی زندگی میں نہ مرا... ناقل) تو میں ہر بد

سے بدتر ٹھہروں گا۔“ (ضمیمہ انجام آتھم ص: ۵۳) (حوالہ نمبر ۱۲)

نتیجہ:.... یہ پیش گوئی بھی حرف بہ حرف سچی نکلی، اور مرزا اپنی پیش گوئی کے مطابق

”ہر بد سے بدتر ٹھہرا۔“

### چھٹی پیش گوئی:

مرزا نے پیش گوئی کی تھی کہ آئندہ ایک ایسا زلزلہ آنے والا ہے جو قیامت کا نمونہ

ہوگا۔ مرزا نے اس کا نام ”زلزلۃ الساعۃ“ رکھا، یعنی ”قیامت کا زلزلہ“ اس کے لئے بہت

سے اشتہار جاری کئے، چنانچہ اسی سلسلے میں یہ بھی لکھا کہ:

”آئندہ زلزلے کی نسبت کی جو پیش گوئی کی گئی ہے وہ

کوئی معمولی پیش گوئی نہیں، اگر وہ آخر کو معمولی بات نکلی یا میری

زندگی میں اس کا ظہور نہ ہوا تو میں خدا تعالیٰ کی طرف سے نہیں۔“

(ضمیمہ براہین احمدیہ حصہ پنجم ص: ۹۲، ۹۳، روحانی خزائن ج: ۲۱)

ص: ۲۵۳) (حوالہ نمبر ۱۳)

نتیجہ:.... مرزا کی یہ کتاب براہین احمدیہ حصہ پنجم اس کی وفات (۲۶ مئی

۱۹۰۸ء) کے پونے پانچ مہینے بعد ۵ اکتوبر ۱۹۰۸ء کو شائع ہوئی۔ اس کی زندگی میں یہ

زلزلہ نہ آیا، لہذا مرزا کی پیش گوئی حرف بہ حرف سچی نکلی کہ ”اگر یہ زلزلہ میری زندگی میں نہ آیا

تو میں خدا کی طرف سے نہیں، بلکہ جھوٹا ہوں۔“

فائدہ:.... مرزا کے مقابلے میں ایک مسلمان کی پیش گوئی ملاحظہ فرمائیے:

جن دنوں مرزا مسلسل اشتہار شائع کر رہا تھا کہ ایک زلزلہ قیامت آنے والا ہے،

انہی دنوں ملا محمد بخش خفی نے مرزا کی تردید میں ایک اشتہار شائع کیا اور اس میں لکھا کہ:

”مجھے نور کشفی سے معلوم ہوا کہ ایسا کوئی زلزلہ نہیں آئے گا“ اور یہ کہ: ”مرزا قادیانی ہمیشہ کی

طرح اس زلزلے کی پیش گوئی میں بھی ذلیل و رسوا ہوگا۔“ مرزا نے اپنے اشتہار ۱۱ مئی ۱۹۰۵ء کے حاشیہ میں مثلاً صاحب مرحوم کے اشتہار کا اقتباس نقل کیا ہے، قارئین کرام کی ضیافتِ طبع کے لئے اس کو ذیل میں نقل کیا جاتا ہے:

”میں آج ۶ مئی ۱۹۰۵ء کو اس امر کا بڑے زور اور دعوے سے اعلان کرتا ہوں اور تمام لوگوں کو اس بات کا یقین دلاتا ہوں کہ خوفناک اور بجھے ہوئے دلوں کو اطمینان اور تسلی دیتا ہوں کہ قادیانی نے ۵، ۸، ۲۱ اور ۲۹ اپریل ۱۹۰۵ء کے اشتہاروں اور اخباروں میں جو لکھا ہے کہ ایک ایسا سخت زلزلہ آئے گا جو ایسا شدید اور خوفناک ہوگا کہ نہ کسی آنکھ نے دیکھا، نہ کسی کان نے سنا۔ کرشن قادیانی زلزلے کے آمد کی تاریخ یا وقت نہیں بتلاتا، مگر اس پر بہت زور دیتا ہے کہ زلزلہ ضرور آئے گا، اس لئے میں ان بھولے بھالے سادہ لوح آدمیوں کو جو قادیانی کی طرف لفاظیوں اور اخباری رنگ آمیزیوں سے خوفناک ہو رہے ہیں، بڑے زور سے اطمینان اور تسلی دیتا ہوں خوشخبری سناتا ہوں کہ خدا کے فضل و کرم سے شہر لاہور وغیرہ میں یہ قادیانی زلزلہ ہرگز نہیں آئے گا!! نہیں آئے گا!!! اور نہیں آئے گا!!! اور آپ ہر طرح اطمینان اور تسلی رکھیں۔ مجھے یہ خوشخبری حقیقی نورِ الہی اور کشف کے ذریعے دی گئی ہے جو ان شاء اللہ بالکل ٹھیک ہوگی۔ میں مکرر کہتا ہوں اور اس نورِ الہی سے جو مجھے بذریعہ کشف دکھلایا گیا ہے، مستفیض ہو کر اور اس کے اعلان کی اجازت پا کر ڈنکے کی چوٹ کہتا ہوں کہ قادیانی ہمیشہ کی طرح اس زلزلے کی پیش گوئی میں بھی ذلیل و رسوا ہوگا۔ اور خداوند تعالیٰ حضرت خاتم المرسلین شفیع المذنبین کے طفیل سے اپنی گنہگار مخلوق کو اپنے دامنِ عاطفت میں رکھ کر اس نارسیدہ آفت سے بچائے گا اور کسی فرد بشر کا

بال تک بیکانہ ہوگا۔

ملا محمد بخش حنفی، سیکریٹری انجمن حامی اسلام لاہور۔“

(مجموعہ اشتہارات مرزا غلام احمد قادیانی ج: ۳ ص: ۵۳۱، ۵۳۲) (حوالہ نمبر ۱۴)

قارئین کرام! یہ چودھویں صدی کے مسلمہ کذاب مرزا قادیانی کے مقابلے میں ایک سچے مسلمان کی پیش گوئی تھی، جو اللہ تعالیٰ نے حضرت خاتم النبیین صلی اللہ علیہ وسلم کے طفیل میں سچی کر دکھائی۔ اور اس پیش گوئی کے مطابق مرزا غلام احمد قادیانی واقعی ذلیل و رسوا ہوا، اور خود اپنے اقرار سے جھوٹا ثابت ہوا:

”وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ مُّرْتَابٌ“

ساتویں پیش گوئی:

قاضی نذر حسین ایڈیٹر اخبار ”قلقل بجنور“ کے نام مرزا غلام احمد قادیانی نے ایک خط لکھا، جو اخبار ”بدر“ قادیان ۱۹ جولائی ۱۹۰۶ء کی اشاعت میں شائع ہوا، اس کا درج ذیل اقتباس ملاحظہ فرمائیے:

”میرا کام جس کے لئے میں اس میدان میں کھڑا ہوں، یہی ہے کہ عیسیٰ پرستی کے ستون کو توڑ دوں اور بجائے تثلیث کے توحید کو پھیلاؤں، اور آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی جلالت اور عظمت اور شان دنیا پر ظاہر کر دوں۔ پس اگر مجھ سے کروڑ نشان بھی ظاہر ہوں اور یہ علت غائی ظہور میں نہ آوے تو میں جھوٹا ہوں، پس دنیا مجھ سے کیوں دشمنی کرتی ہے اور وہ میرے انجام کو کیوں نہیں دیکھتی۔ اگر میں نے اسلام کی حمایت میں وہ کام کر دکھایا جو مسیح موعود اور مہدی موعود کو کرنا چاہئے تو پھر میں سچا ہوں، اور اگر کچھ نہ ہوا اور میں مر گیا تو پھر سب گواہ رہیں کہ میں جھوٹا ہوں۔“

(اخبار ”بدر“ قادیان نمبر ۲۹، جلد ۲، ۱۹ جولائی ۱۹۰۶ء، بحوالہ قادیانی

مذہب فصل ساتویں نمبر ۳۹) (حوالہ نمبر ۱۵)

نتیجہ:۔۔۔ مرزا کی یہ پیش گوئی بھی سو فیصد صحیح نکلی کہ ”اگر کچھ نہ ہوا اور میں مر گیا تو پھر سب گواہ رہیں کہ میں جھوٹا ہوں۔“ اللہ تعالیٰ، اس کے فرشتے اور تمام انسان گواہ رہیں کہ مرزا باقر خود واقعی جھوٹا تھا! جھوٹا تھا!۔۔۔ جھوٹا تھا!۔۔۔

### تیسرا باب

مرزا غلام احمد قادیانی کی چند دعائیں جو بارگاہِ الہی میں قبول ہوئیں  
پہلی دعا:

مرزا غلام احمد قادیانی نے اپنے اشتہار مورخہ ۲۷ اکتوبر ۱۸۹۴ء کے آخر میں لکھا:

”اور میں بالآخر دُعا کرتا ہوں کہ اے خدائے قادرِ علیم!

اگر آتھم کا عذاب مہلک میں گرفتار ہونا اور احمد بیگ کی دخترِ کلاں کا

آخر اس عاجز کے نکاح میں آنا یہ پیش گوئیاں تیری طرف سے ہیں تو

ان کو ایسے طور سے ظاہر فرما جو خلقِ اللہ پہ حجت ہو اور کورِ باطن

حاسدوں کا منہ بند ہو جائے، اور اگر اے خداوند! یہ پیش گوئیاں تیری

طرف سے نہیں ہیں تو مجھے نامرادی اور ذلت کے ساتھ ہلاک کر۔

اگر میں تیری نظر میں مردود اور ملعون اور دجال ہی ہوں جیسا کہ

مخالفوں نے سمجھا ہے اور تیری وہ رحمت میرے ساتھ نہیں جو تیرے

بندہ ابراہیم کے ساتھ اور اسحاق کے ساتھ اور اسماعیل کے ساتھ اور

یعقوب کے ساتھ اور موسیٰ کے ساتھ اور داؤد کے ساتھ اور مسیح ابن

مریم کے ساتھ اور خیر الانبیاء محمد صلعم کے ساتھ اور اس امت کے

اولیائے کرام کے ساتھ تھی تو مجھے فنا کر ڈال اور ذلتوں کے ساتھ مجھے

ہلاک کر دے اور ہمیشہ کی لعنتوں کا نشانہ بنا اور تمام دشمنوں کو خوش کر

اور ان کی دُعائیں قبول فرما۔“

(مجموعہ اشتہارات ج: ۲ ص: ۱۱۵، ۱۱۶) (حوالہ نمبر ۱۶)

نتیجہ:۔۔۔ ”قارئین کرام! نہ احمد بیگ کی بڑی لڑکی (محمدی بیگم) مرزا کے نکاح میں آئی، نہ آتھم، مرزا کی مقرر کردہ میعاد کے اندر عذاب مہلک میں گرفتار ہوا، معلوم ہوا کہ یہ پیش گوئیاں اللہ تعالیٰ کی طرف سے نہیں تھیں، لہذا مرزا کی یہ دُعا قبول ہوئی کہ ”اگر یہ پیش گوئیاں تیری طرف سے نہیں تو مجھے نامرادی اور دُلت کے ساتھ ہلاک کر“ جس سے ثابت ہوا کہ مرزا، اللہ تعالیٰ کی نظر میں واقعی مردود و ملعون اور دجال تھا، اور اللہ تعالیٰ نے اس کو ہمیشہ کی لعنتوں کا نشانہ بنادیا۔

دوسری دُعا:

”مولوی ثناء اللہ امرتسری کے ساتھ آخری فیصلہ“ نامی اشتہار میں مرزا نے لکھا:

”اور میں خدا سے دُعا کرتا ہوں کہ اے میرے مالک بصیر و قدیر جو علیم و خبیر ہے جو میرے دل کے حالات سے واقف ہے، اگر یہ دعویٰ مسیح موعود ہونے کا محض میرے نفس کا افترا ہے اور میں تیری نظر میں مفسد اور کذاب ہوں اور دن رات افترا کرنا میرا کام ہے تو اے میرے پیارے مالک! میں عاجزی سے تیری جناب میں دُعا کرتا ہوں کہ مولوی ثناء اللہ صاحب کی زندگی میں مجھے ہلاک کر اور میری موت سے ان کو اور ان کی جماعت کو خوش کر دے، آمین۔“ (مجموعہ اشتہارات ج: ۳ ص: ۵۷۸، ۵۷۹) (حوالہ نمبر ۸)

نتیجہ:۔۔۔ مرزا کی یہ دُعا بھی اللہ تعالیٰ نے قبول فرمائی اور مولانا مرحوم کی زندگی میں مرزا کو ہلاک کر دیا۔ جس سے ثابت ہوا کہ مرزا واقعی اللہ تعالیٰ کی نظر میں مفسد اور کذاب تھا اور رات دن افترا کرنا اس کا کام تھا۔

تیسری دُعا:

اسی اشتہار میں مزید لکھتا ہے:

”میں تیرے ہی تقدس اور رحمت کا دامن پکڑ کر تیری



جناب میں ملتجی ہوں کہ مجھ میں اور ثناء اللہ میں سچا فیصلہ فرما اور وہ جو تیری نگاہ میں درحقیقت مفسد اور کذاب ہے اس کو صادق کی زندگی میں ہی دنیا سے اٹھالے، یا کسی اور نہایت سخت آفت میں جو موت کے برابر ہو، مبتلا کر۔ اے میرے پیارے مالک! تو ایسا ہی کر۔ آمین ثم آمین۔ رہنا فتح بینا و بین قومنا بالحق و انت خیر الفاتحین، آمین بالآخر مولوی صاحب سے التماس ہے کہ وہ میرے اس تمام مضمون کو اپنے پرچے میں چھاپ دیں اور جو چاہیں اس کے نیچے لکھ دیں، اب فیصلہ خدا کے ہاتھ میں ہے۔

الراقم: عبد اللہ الصمد میرزا غلام احمد المسیح الموعود عافاہ اللہ واید۔

مرقوم تاریخ ۱۵ اپریل ۱۹۰۷ء مطابق یکم ربیع الاول ۱۳۲۵ھ روز دوشنبہ۔“ (ایضاً) (حوالہ نمبر ۸)

نتیجہ:۔۔۔ حق تعالیٰ شانہ نے مرزا کی یہ دعا بھی قبول فرمائی، اور اس دعا کے ایک سال دس دن بعد مرزا کو مولانا مرحوم کی زندگی میں اٹھالیا، جس سے ثابت ہوا کہ مرزا، حق تعالیٰ شانہ کی نگاہ میں درحقیقت مفسد اور کذاب تھا۔

مرزا کی دعا قبول ہونے کی مزید تصدیق:

قارئین کرام! اُدپر واقعات کی روشنی پر آپ نے ملاحظہ فرمالیا کہ مولانا ثناء اللہ مرحوم کے بارے میں مرزا کی دعا قبول ہوئی۔

لیجئے! اس قبولیت دعا پر مرزا کی الہامی مہر بھی ملاحظہ فرمائیے! مرزا کے ملفوظات

جلد ۹ صفحہ: ۲۶۸ میں مرزا کا یہ ملفوظ درج ہے:

”فرمایا: یہ زمانے کے عجائبات ہیں، رات کو ہم سوتے

ہیں تو کوئی خیال نہیں ہوتا کہ اچانک ایک الہام ہوتا ہے، اور پھر وہ

اپنے وقت پر پورا ہوتا ہے، کوئی ہفتہ عشرہ نشان سے خالی نہیں جاتا،

ثناء اللہ کے متعلق جو لکھا گیا ہے یہ دراصل ہماری طرف سے نہیں بلکہ خدا تعالیٰ ہی کی طرف سے اس کی بنیاد رکھی گئی ہے، ایک دفعہ ہماری توجہ اس کی طرف ہوئی اور رات کو توجہ اس کی طرف تھی اور رات کو الہام ہوا کہ اجیب دعوة الداع۔ صوفیاء کے نزدیک بڑی کرامت استجاب دعا ہی ہے، باقی سب اس کی شاخیں ہیں۔“

(ملفوظات ج: ۹ ص: ۲۶۸) (حوالہ نمبر ۱۷)

### چوتھا باب

#### مسیح موعود اور مرزا غلام احمد قادیانی

مسیح موعود سے کیا مراد ہے؟

قارئین کرام! مسیح موعود سے مراد ہے وہ مسیح جس کے آخری زمانے میں آنے کا امت سے وعدہ کیا گیا ہے، اور وہ مسیح ابن مریم ہیں۔

چنانچہ مرزا غلام احمد قادیانی لکھتا ہے:

”یہ بات پوشیدہ نہیں کہ مسیح ابن مریم کے آنے کی پیش گوئی ایک اوّل درجے کی پیش گوئی ہے، جس کو سب نے بالاتفاق قبول کر لیا ہے، اور جس قدر صحاح میں پیش گوئیاں لکھی گئی ہیں کوئی پیش گوئی اس کے ہم پہلو اور ہم وزن ثابت نہیں ہوتی، تو اتر کا اوّل درجہ اس کو حاصل ہے، انجیل بھی اس کی مصدق ہے۔“

(ازالہ اوہام ص: ۵۵۷، خزائن ج: ۲ ص: ۴۰۰) (حوالہ نمبر ۱۸)

مرزا مسیح موعود نہیں، پہلا ثبوت:

مرزا غلام احمد قادیانی نے لکھا ہے کہ میں مسیح موعود نہیں، نہ میں مسیح ابن مریم ہوں، بلکہ جو شخص مرزا غلام احمد قادیانی کو مسیح موعود کہے وہ کم فہم ہے، اور جو شخص اس کو مسیح ابن مریم کہے وہ مفتری اور کذاب ہے۔ چنانچہ مرزا غلام احمد قادیانی لکھتا ہے:

”علمائے ہند کی خدمت میں نیاز نامہ“

”اے برادرانِ دین و علمائے شرع متین! آپ صاحبان میری ان معروضات کو متوجہ ہو کر سنیں کہ اس عاجز نے جو مثیل موعود ہونے کا دعویٰ کیا ہے جس کو کم فہم لوگ مسیح موعود خیال کر بیٹھے ہیں، یہ کوئی نیا دعویٰ نہیں جو آج ہی میرے منہ سے سنا گیا ہو، بلکہ یہ وہی پُرانا الہام ہے جو میں نے خدائے تعالیٰ سے پا کر براہین احمدیہ کے کئی مقامات پر بتصریح درج کر دیا تھا، جس کے شائع کرنے پر سات سال سے بھی کچھ زیادہ عرصہ گزر گیا ہوگا۔ میں نے یہ دعویٰ ہرگز نہیں لیا کہ میں مسیح ابن مریم ہوں، جو شخص یہ الزام میرے پر لگاوے وہ سراسر مفتری اور کذاب ہے بلکہ میری طرف سے عرصہ سات یا آٹھ سال سے برابر یہی شائع ہو رہا ہے کہ میں مثیل مسیح ہوں۔“

(ازالہ اوہام ص: ۶۹۰، روحانی خزائن ج: ۳ ص: ۱۹۲) (حوالہ نمبر ۱۹)

نتیجہ:۔۔۔ مرزا کی مندرجہ بالا دونوں عبارتوں کا نتیجہ دو اور دو چار کی طرح واضح

ہے کہ:

الف:۔۔۔ چونکہ جس مسیح کے آنے کا وعدہ ہے وہ مسیح ابن مریم ہے۔

ب:۔۔۔ اور چونکہ مرزا کا دعویٰ مسیح ابن مریم کا نہیں، لہذا مرزا غلام احمد قادیانی مسیح موعود نہیں، بلکہ جو شخص اس کو مسیح ابن مریم اور مسیح موعود کہے وہ مفتری اور کذاب ہے۔

مرزا غلام احمد قادیانی کو مسیح موعود کا زمانہ نصیب نہیں ہوا، دوسرا ثبوت:

قارئین کرام! حضرت مسیح علیہ السلام آخری زمانے میں آئیں گے، اور آخری صدی کے مجدد ہوں گے، چنانچہ مرزا غلام احمد قادیانی حدیث پاک کا حوالہ دے کر لکھتا ہے کہ:

”پہلا نشان: قال رسول الله صلى الله عليه وسلم

ان الله يبعث لهذه الأمة على رأس كل مائة من يجدد لها

دینہا۔“ (رواہ ابو داؤد) یعنی خدا ہر ایک صدی کے سر پر اس اُمت کے لئے ایک شخص مبعوث فرمائے گا جو اس کے لئے دین کو تازہ کرے گا..... اور ممکن نہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے فرمودہ میں تخلف ہو..... اور یہ بھی اہل سنت کے درمیان متفق علیہ امر ہے کہ آخری مجدد اس اُمت کا مسیح موعود ہے، جو آخری زمانے میں ظاہر ہوگا۔ اب تنقیح طلب یہ امر ہے کہ یہ آخری زمانہ ہے یا نہیں؟ یہود و نصاریٰ دونوں قومیں اس پر اتفاق رکھتی ہیں کہ یہ آخری زمانہ ہے، اگر چاہو تو پوچھ لو۔“ (حقیقۃ الوحی ص: ۱۹۳، روحانی خزائن ج: ۲۲ ص: ۲۰۰، ۲۰۱) حوالہ نمبر ۲۰)

قارئین کرام! مرزا غلام احمد قادیانی نے اس عبارت میں تین باتیں کہی ہیں:  
۱:۔۔۔ حدیث نبوی کہ ہر صدی کے سر پر ایک مجدد آئے گا، اور ممکن نہیں کہ نئی صدی شروع ہو اور نیا مجدد نہ آئے۔

۲:۔۔۔ اہل سنت کا یہ اجماع و اتفاق کہ آخری صدی کے آخری مجدد حضرت مسیح علیہ السلام ہوں گے۔

۳:۔۔۔ یہود و نصاریٰ کی موافقت میں مرزا کا خیال کہ چودھویں صدی آخری زمانہ ہے۔ مگر پندرھویں صدی شروع ہونے کے بعد یہ تیسری بات غلط نکلی۔ کیونکہ حدیث نبوی کی رو سے پندرھویں صدی میں بھی مجدد کا آنا ضروری ہے، اور اس کے بعد جب سولہویں صدی شروع ہوگی تو اس پر بھی کوئی مجدد ضرور آئے گا۔ یہاں تک آخر صدی پر آخری مجدد مسیح علیہ السلام ہوں گے۔ ثابت ہوا کہ چودھویں صدی میں مرزا کا یہ دعویٰ کہ وہ مسیح موعود ہے، غلط تھا، اور مرزا اپنے دعویٰ میں جھوٹا تھا۔

مسیح علیہ السلام دُنیا میں چالیس سال رہیں گے، تیسرا ثبوت:  
”حدیث میں ہے کہ حضرت مسیح علیہ السلام زمین پر

چالیس سال رہیں گے۔“

(حقیقت النبوة ص: ۱۹۳، از مرزا محمود احمد) (حوالہ نمبر ۲۱)

مرزا غلام احمد قادیانی اپنے رسالے ”نشانِ آسمانی“ میں شاہ نعمت اللہ ولی کے اشعار کی تشریح کرتے ہوئے لکھتا ہے:

”تا چہل سال اے برادر من۔ دور آں شہسوار می بینم۔

یعنی اس روز سے جو وہ امام ملہم ہو کر اپنے تئیں ظاہر کرے گا چالیس برس تک زندگی کرے گا۔ اب واضح رہے کہ یہ عاجز اپنی عمر کے چالیسویں برس میں دعوتِ حق کے لئے بالہامِ خاص مامور کیا گیا اور بشارت دی گئی کہ اسی برس تک یا اس کے قریب تیری عمر ہے۔ سو اس الہام سے چالیس برس تک دعوتِ ثابت ہوتی ہے، جن میں سے دس برس کامل گزر بھی گئے۔“

(نشانِ آسمانی ص: ۱۴، روحانی خزائن ج: ۴ ص: ۳۷۴) (حوالہ نمبر ۲۲)

قارئین کرام! مرزا کا یہ رسالہ ”نشانِ آسمانی“ جون ۱۸۹۲ء میں لکھا گیا (جیسا کہ اس کی لوحِ پر درج ہے) مرزا لکھتا ہے کہ چالیس میں سے دس برس گزر چکے ہیں، گویا مسیح موعود کی عمر پوری کرنے کے لئے تیس سال ابھی باقی تھے۔ اب ۱۸۹۲ء میں تیس کا عدد جمع کیجئے تو ۱۹۲۲ء بنتے ہیں، گویا مسیح موعود کی مدتِ قیام پوری کرنے کے لئے مرزا کو ۱۹۲۲ء تک زندہ رہنا چاہئے تھا، مگر افسوس کہ مرزا نے سولہ برس بھی پورے نہ کئے بلکہ مئی ۱۹۰۸ء میں دُنیا سے رخصت ہوا۔ معلوم ہوا کہ مسیح موعود ہونے کا دعویٰ بھی غلط تھا اور چالیس سال زندہ رہنے کا جو الہام ہوا تھا وہ بھی جھوٹ تھا۔

مسیح علیہ السلام شادی کریں گے، چوتھا ثبوت:

حدیث شریف میں ہے حضرت مسیح علیہ السلام شادی کریں گے۔ (مشکوٰۃ ص: ۴۸۰)

مرزا غلام احمد قادیانی اپنے ”نکاحِ آسمانی“ کی تائید میں اس حدیث کو پیش



کرتے ہوئے لکھتا ہے:

”اس پیش گوئی (یعنی محمدی بیگم سے مرزا غلام احمد قادیانی کے نکاح آسمانی کی الہامی پیش گوئی... ناقل) کی تصدیق کے لئے جناب رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے بھی پہلے سے پیش گوئی فرمائی ہوئی ہے۔ یتزوج ویولد لہ، یعنی وہ مسیح موعود بیوی کرے گا اور نیز وہ صاحب اولاد ہوگا۔ اب ظاہر ہے کہ تزوج اور اولاد کا ذکر کرنا عام طور پر مقصود نہیں، کیونکہ عام طور پر ہر ایک شادی کرتا ہے اور اولاد بھی ہوتی ہے، اس میں کچھ خوبی نہیں، بلکہ تزوج سے مراد خاص تزوج ہے جو بطور نشان ہوگا اور اولاد سے مراد خاص اولاد ہے جس کی نسبت اس عاجز کی پیش گوئی ہے، گویا اس جگہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ان سیاہ دل منکروں کو ان کے شبہات کا جواب دے رہے ہیں کہ یہ باتیں ضرور پوری ہوں گی۔“ (ضمیمہ انجام آتھم ص: ۵۳،

روحانی خزائن ج: ۱۱ ص: ۳۳۷) (حوالہ نمبر ۲۳)

مرزا کی یہ تحریر ۱۸۹۶ء کی ہے، اس وقت تک مرزا کی دو شادیاں ہو چکی تھیں، اور ان سے اولاد بھی تھی، مگر مرزا کے بقول وہ عام شادیاں تھیں جن میں کچھ خوبی نہیں۔ وہ خاص شادی جو بطور نشان کے تھی اور جس کی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے پیش گوئی فرمائی تھی، وہ مرزا کو نصیب نہ ہوئی، ثابت ہوا کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے ارشاد کے مطابق مرزا مسیح موعود نہیں تھا۔

## حوالہ جات

اس رسالے میں جن کتابوں کے حوالے آئے ہیں، ذیل میں ان کی فہرست درج ہے، اور اس کے بعد حوالے کے صفحات کا عکس دیا جا رہا ہے۔

حوالہ نمبر	کتاب کا نام
حوالہ نمبر ۱	مجموعہ اشتہارات ج: ۱ ص: ۴۲۷، ۴۲۸
حوالہ نمبر ۲	ملفوظات ج: ۹ ص: ۴۴۰، ۴۴۱
حوالہ نمبر ۳	رئیس قادیان ج: ۲ ص: ۱۹۲
حوالہ نمبر ۴	مجموعہ اشتہارات ج: ۱ ص: ۳۹۵، ۳۹۶
حوالہ نمبر ۵	روحانی خزائن ج: ۱ ص: ۴۰۸
حوالہ نمبر ۶	سرمہ چشم آریہ ص: ۲۵۱، روحانی خزائن ج: ۲ ص: ۳۰۱
حوالہ نمبر ۷	روحانی خزائن ج: ۲ ص: ۳۳۲، ۳۳۳
حوالہ نمبر ۸	مجموعہ اشتہارات ج: ۳ ص: ۵۷۸
حوالہ نمبر ۹	حیات ناصر ص: ۱۴ بحوالہ قادیانی مذہب فصل اول نمبر ۸۰
حوالہ نمبر ۱۰	جنگ مقدس ص: ۲۱۰، ۲۱۱
	روحانی خزائن ج: ۶ ص: ۲۹۲، ۲۹۳
حوالہ نمبر ۱۱	انجام آتھم ص: ۳۱ حاشیہ
حوالہ نمبر ۱۲	ضمیمہ انجام آتھم ص: ۵۴
حوالہ نمبر ۱۳	ضمیمہ برائین احمدیہ حصہ پنجم ص: ۹۲، ۹۳
	روحانی خزائن ج: ۲ ص: ۲۵۳
حوالہ نمبر ۱۴	مجموعہ اشتہارات ج: ۳ ص: ۵۴۱، ۵۴۲
حوالہ نمبر ۱۵	اخبار "بدر" قادیان، نمبر ۲۹، جلد ۲، ۱۹ جولائی ۱۹۰۶ء ص: ۴
	بحوالہ قادیانی مذہب فصل ۷ نمبر ۳۹
حوالہ نمبر ۱۶	مجموعہ اشتہارات ج: ۲ ص: ۱۱۵، ۱۱۶
حوالہ نمبر ۱۷	ملفوظات ج: ۹ ص: ۲۶۸
حوالہ نمبر ۱۸	ازالہ ابہام ص: ۵۵۷، روحانی خزائن ج: ۳ ص: ۴۰۰
حوالہ نمبر ۱۹	ازالہ ابہام ص: ۹۰، روحانی خزائن ج: ۳ ص: ۱۸۲
حوالہ نمبر ۲۰	حقیقۃ الوحی ص: ۱۹۳، روحانی خزائن ج: ۲ ص: ۲۰۱، ۲۰۰
حوالہ نمبر ۲۱	حقیقت النبوة ص: ۱۹۲ از مرزا محمود
حوالہ نمبر ۲۲	نشان آسمانی ص: ۱۴، روحانی خزائن ج: ۳ ص: ۳۷۴
حوالہ نمبر ۲۳	ضمیمہ انجام آتھم ص: ۵۳، روحانی خزائن ج: ۱۱ ص: ۳۳۷

حوالہ نمبر ۱ مجموعہ اشتہارات ج: ۱ ص: ۴۲۶، ۴۲۷

مکفرین کو کوئی عذر باقی نہ رہے۔ اگر بعد اس کے مکفرین نے مباہلہ نہ کیا اور نہ تکفیر سے باز آئے تو ہماری طرف سے اُن پر حجت پوری ہو گئی۔ بالآخر یہ بھی یاد رہے کہ مباہلہ سے پہلے ہمارا حق ہو گا کہ ہم مکفرین کے سامنے جلسہ عام میں اپنے اسلام کے وجوہات پیش کریں۔ والسلام علیکم  
من اتبع الهدی :-

المشہد

خاکسار میرزا غلام احمد - ۳۰ سوال سالہ (مطابق مئی ۱۸۹۳ء)  
(مطبوعہ ریاض بند پریس امرتسر)

(یہ اشتہار ۲۰۸۲ کے ایک صفحہ پر ہے)

(یہ اشتہار رسالہ سچائی کا اظہار مطبوعہ بار اول ریاض بند پریس امرتسر کے صفحہ ۱۰ پر بھی طبع ہوا ہے)

(۱۱۲)

## اعلان عام

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝ نَحْمَدُکَ وَنُصَلِّیْ عَلَیْ رَسُوْلِکَ الْکَرِیْمِ  
اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِیْنَ اتَّقَوْا وَالَّذِیْنَ هُمْ یُحْسِنُوْنَ

اس مباہلہ کی اہل اسلام کو اطلاع

جو دہم ذیقعد روزِ شنبہ کو بمقام ام ترسیہ عیدہ گاتھ متصل مسجد خان بہلولہ حاجی محمد شاہ صاحب مرحوم ہوگا

اے برادرانِ اہل اسلام کل دہم ذیقعد روزِ شنبہ کو بمقام مندرجہ عنوان میاں عبداللہ غزنوی اور بعض دیگر علماء و جیسا کہ انہوں نے وعدہ کیا ہے اس عاجز سے اس بات پر مباہلہ کریں گے کہ وہ لوگ

اس عاجز کو کافراں و دہمال اور بدبین اور دشمن اللہ جل شانہ اور رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کا سمجھتے ہیں۔ اور اس عاجز کی کتابوں کو مجموعہ کفریات خیال کرتے ہیں۔ اور اس طرف یہ عاجز نہ صرف اپنے تئیں مسلمان جانتا ہے بلکہ اپنے دھوکہ کو اللہ اور رسول کی راہ میں فدا کئے بیٹھا ہے۔ لہذا ان لوگوں کی درخواست پر یہ مباہلہ تاتسخ مذکورہ بالا میں قرار پایا ہے۔ مگر میں چاہتا ہوں کہ مباہلہ کی بددعا کرنے کے وقت بعض اور مسلمان بھی حاضر ہو جائیں کیونکہ میں یہ دعا کروں گا کہ جس قدمیری تالیفات ہیں۔ ان میں سے کوئی بھی خدا اور رسول کے فرمودہ کے مخالف نہیں ہیں اور نہ میں کافر ہوں۔ اور اگر میری کتابیں خدا اور رسول صلی اللہ علیہ وسلم کے فرمودہ سے مخالف اور کفر سے بھری ہوئی ہیں تو خدا تعالیٰ وہ لعنت اور عذاب میرے پر نازل کرے جو ابتدائے دنیا سے آج تک کسی کافر بے ایمان پر نہ کی ہو۔ اور آپ لوگ آمین کہیں۔ کیونکہ اگر میں کافر ہوں اور نعوذ باللہ دین اسلام سے مُرد اور بے ایمان تو نہایت بُرے عذاب سے میرا مرنا ہی بہتر ہے اور میں ایسی زندگی سے بہزار دل بیزار ہوں۔ اور اگر ایسا نہیں تو خدا تعالیٰ اپنی طرف سے سچا فیصلہ کر دے گا۔ وہ میرے دل کو بھی دیکھ رہا ہے اور میرے مغالطوں کے دل کو بھی۔ بڑے ثواب کی بات ہوگی اگر آپ صاحبان کل دہم ذیقعدہ کو دوبارے کے وقت عید گاہ میں مباہلہ پر آمین کہنے کے لئے تشریف لائیں۔ والسلام

خاکسار غلام احمد قادیانی عفی اللہ عنہ

۹ ذیقعدہ ۱۳۱۰ھ

(مطبوعہ ریاض مہند پرپریس امرتسر)

(یہ اشتہار ۲۶۔۲۰ کے ایک صفحہ پر ہے)

حوالہ نمبر ۲ ملفوظات ج: ۹ ص: ۴۴۰، ۴۴۱  
۴۴۰

۲ اکتوبر ۱۹۰۷ء

(بوقت سیو)

ہمدرد جماعت کے ایک شخص نے کسی غیر احمدی کا سوال پیش کیا کہ آپ نے اپنی تصانیف میں لکھا ہے کہ جھوٹا سچے کی زندگی میں ہی ہلاک ہو جاتا ہے یہ درست نہیں کیونکہ مسلمہ کذاب آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے بعد فوت ہوا تھا۔

حضرت اقدس نے فرمایا :-

یہ کہاں لکھا ہے کہ جھوٹا سچے کی زندگی میں مرجاتا ہے۔ ہم نے تو اپنی تصانیف میں ایسا نہیں لکھا۔ لاف پیش کرو وہ کونسی کتاب ہے جس میں ہم نے ایسا لکھا ہے۔  
**صرف جھوٹا نہیں بلکہ جھوٹا مبالغہ کرنا والا سچے کی زندگی میں ہلاک ہوتا ہے**

ہم نے تو یہ لکھا ہوا ہے کہ مبالغہ کرنے والوں میں سے جو جھوٹا ہو وہ سچے کی زندگی میں ہلاک ہو جاتا ہے۔ مسلمہ کذاب نے تو مبالغہ کیا ہی نہیں تھا۔ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے اتنا فرمایا تھا کہ اگر تو میرے بعد زندہ بھی رہا تو ہلاک کیا جائے گا سو ویسا ہی ظہور میں آیا۔ مسلمہ کذاب تھوڑے ہی عرصہ بعد قتل کیا گیا اور میٹگوئی پوری ہوئی۔

یہ بات کہ سچا جھوٹے کی زندگی میں مرجاتا ہے یہ بالکل غلط ہے۔ کیا آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے سب اعداء ان کی زندگی میں ہی ہلاک ہو گئے تھے؟ بلکہ ہزاروں اعداء آپ کی وفات کے بعد زندہ رہے تھے۔ ہاں جھوٹا مبالغہ کرنے والا سچے کی زندگی میں ہی ہلاک ہوا کرتا ہے۔ ایسے ہی ہمارے مخالف بھی ہمارے مرنے کے بعد زندہ رہیں گے اور مخالفوں کے وجود کا قیامت تک ہونا ضروری ہے جیسے وجاعل الذین اتبعوك فوق الذین  
۱۔ کاتب کی غلطی ہے۔ دراصل یہ فقرہ یوں ہونا چاہیئے: "یہ بات کہ جھوٹا سچے کی زندگی میں مرجاتا ہے یہ بالکل غلط ہے چنانچہ سیاق و سباق میں اس کی وضاحت موجود ہے (مرتب)



کفر والی یوم القیامۃ سے ظاہر ہے۔

ہم تو ایسی باتیں سن کر حیران ہوتے ہیں۔ دیکھو ہماری باتوں کو کیسے الٹ پلٹ کر پیش کیا جاتا ہے اور تحریف کرنے میں وہ کمال حاصل کیا ہے کہ یہودیوں کے بھی کان کاٹ دیئے ہیں کیا یہ کسی نبی دلی قطب غوث کے زمانہ میں ہوا کہ اس کے سب اعداء مر گئے ہوں، بلکہ کافر منافق باقی رہ ہی گئے تھے۔ ان اتنی بات صحیح ہے کہ سچے کے ساتھ جو جھوٹ مباہلہ کرتے ہیں تو وہ سچے کی زندگی میں ہی ہلاک ہوتے ہیں جیسے کہ ہمارے ساتھ مباہلہ کرنے والوں کا حال ہو رہا ہے۔

### جماعت کو خود سوچ کر ایسے سوالوں کا جواب دینا چاہیئے

مجھے تو اپنی جماعت پر افسوس ہوتا ہے کہ کیا ان میں اتنی عقل بھی نہیں۔ کہ ایسے اعتراض کرنے والے سے پوچھیں کہ یہ ہم نے کہاں لکھا ہے کہ بغیر مباہلہ کرنے کے ہی جھوٹے سچے کی زندگی میں تباہ اور ہلاک ہو جاتے ہیں۔ وہ جگہ تو نکالو جہاں یہ لکھا ہے ہماری جماعت کو چاہیئے کہ عقل میں فہم میں ہر طرح سے ترقی کریں اور ایسی باتوں کا خود سوچ کر جواب دیا کریں اور اپنی ایمانی روشنی سے ان باتوں کو حل کیا کریں۔ مگر دنیا داری کے دھندوں میں مت ماری جاتی ہے۔ اتنا نہیں کر سکتے کہ معترض سے ہماری کتاب کی وہ جگہ ہی پوچھیں جہاں یہ لکھا ہے کہ سچے کی زندگی میں سب جھوٹے مر جاتے ہیں۔ بلکہ جھوٹے تو قیامت تک رہیں گے۔

### جماعت کے واعظوں کو حضرت اقدس کی کتب کا بہت مطالعہ کر لینا چاہیئے

فہم مایا :-

اس تحریک سے مجھے یہ بھی یاد آ گیا ہے کہ وہ لوگ جو اشاعت اور تبلیغ کے واسطے باہر جاویں۔ وہ ایسے نہ ہوں کہ الٹ پلٹ کر ہماری باتوں کو کچھ اور کا اور ہی بناتے رہیں

حوالہ نمبر ۳ رئیس قادیان ج: ۲ ص: ۱۹۲

۱۹۲

مہدک احمد مرگیا۔ اس کے بعد امامی صاحب خود بھی مولوی تہذیب الحق کی زندگی میں طمہ اجل بر کران کے برسر حق ہونے کی عملی تصدیق کر گئے۔ کیونکہ امامی صاحب نے خود لکھا تھا کہ مہدک کریم الوں میں سے جو جھوٹا ہودہ بچے کی زندگی میں ہلاک ہو جاتا ہے۔ (اخبار الحکم قادیان ۱۰۔ اکتوبر ۱۹۱۹ء صفحہ ۹)

یاد رہے کہ قادیانی صاحب ۲۶۔ مئی ۱۹۱۹ء کو بھٹام لاہور مرض ہیضہ میں گرفتار ہو کر مولوی عبد الحق مرحوم کی زندگی میں گیارہ گھنٹہ کے اندر چل بسے تھے اور مولوی صاحب اپنے حریف کے ہند اجل ہونے کے بعد نو سال تک نہایت خوشگوار اور پُر عافیت زندگی بسر کر کے ۱۶۔ مئی ۱۹۱۹ء کو بھٹام عالم آخرت ہوئے۔ (والحمد للہ علیٰ ذلک۔ دیکھئے: افادات جلد ۱ ص: ۱۰۰)

## باب ۵۔ رمضان المبارک میں خسوف و کسوف کا اجتماع اور ریس قادیان کی موقع شناسی

قادیانی صاحب کی عادت تھی کہ کسی ہی صحیح متفق علیہ حدیث نبوی کیوں نہ ہو۔ اگر ان کی خاندان ساز سمجھت یا نفسانی خواہشات کے خلاف نظر آتی تو سخت مار قاز طریق پر اس کو پھینک دیتے یا نہایت مہیا کی کے ساتھ اس پر اپنی محدود تادیل کاری کی طمع سازی شروع کر دیتے لیکن اگر کسی روایت کو ذرا بھی مفید مطلب پاتے تو خواہ کسی ہی ضعیف بلکہ موضوع اور من مگردت کیوں نہ ہو اس سے استدلال کر کے اسے اپنا آرا کا پراری بناتے اور غوغائی کا طوفان برپا کر دیتے۔ چنانچہ رمضان میں خسوف و کسوف کے اجتماع کی لغو موضوع روایت اس کی روشن مثال ہے۔

چونکہ امامی صاحب کی وفات میں حضرت مہدی علیہ السلام کی سلامات محققہ میں سے ایک علامت بھی نہیں پائی جاتی تھی اور نیز اس وجہ سے کہ بچے مہدی علیہ السلام کی ایک علامت حدیثوں میں یہ لکھی ہے کہ وہ دول یوہد کی متحدہ افواج کو منہم و پامال کر دیں گے۔ امامی صاحب کو انگریزوں کے خوف سے ابتداء مہدویت کا دعویٰ کرنے کی جرأت نہ ہوئی بلکہ سرے سے ان صحیح حدیثوں کی صحت ہی کے منکر رہے جو حضرت مہدی علیہ السلام کے متعلق ترمذی، ابوداؤد، نسائی، ابن ماجہ وغیرہ کتب حدیث میں مروی ہیں۔ چنانچہ کتاب ازالہ اوہام (طبع پنجم صفحہ ۱۹۰) میں جو ۲۔ ستمبر ۱۹۱۹ء کو شائع ہوئی لکھا کہ محققین کے نزدیک مہدی کا آنا کوئی یقینی امر نہیں ہے۔ سلامۃ اللہ سے پہلے ان کی حالت برابر مذہب رہی۔ کبھی تو مہدی بن بیٹھتے اور کبھی نبوت حکومت نہ صرف اپنی مہدویت سے انکار کر دیتے بلکہ ان حدیثوں کی صحت ہی کے منکر ہو جاتے جو حضرت

حوالہ نمبر ۳ مجموعہ اشتہارات ج: ۱ ص: ۳۹۵، ۳۹۶

۳۹۵

دیں کہ یہ پیشگوئی کیوں پوری ہوئی۔ کیا یہ استدراج ہے یا نجوم ہے یا انکس ہے۔ اور کیا سبب ہے کہ خدا تعالیٰ بقول آپ کے ایک دجال کی ایسی پیشگوئیاں پوری کرتا جاتا ہے جن سے ان کی سچائی کی تصدیق ہوتی ہے۔

الراق

خاکسار غلام احمد از قادیان ضلع گورداسپور

(یہ اشتہار ۲۶/۲۰ کے دو صفحوں پر ہے)

(مطبوعہ منہج پریس سیالکوٹ)

(۱۰۳)

اشْتِهَارُ مَبَاهِلِہٖ

میراں عبدالحق غزنوی و حافظ محمد یوسف صلب

ناظرین کو معلوم ہوگا کہ کچھ تھوڑا عرصہ ہوا ہے کہ غزنوی صاحبوں کی جماعت میں سے جو امرتسر میں رہتے ہیں ایک صاحب عبدالحق نام نے اس عاجز کے مقابلہ پر مباہلہ کے لئے اشتہار دیا تھا۔ مگر چونکہ اس وقت یہ خیال تھا کہ یہ لوگ کلمہ گو اور اہل قبلہ ہیں۔ ان کو لعنتوں کا نشانہ بنانا جائز نہیں۔ اس لئے اس درخواست کے قبول کرنے سے اس وقت تک تاہل رہا جب تک کہ ان لوگوں نے کافر ٹھہرانے میں اصرار کیا۔ اور پھر تکفیر کا فتوے تیار ہونے کے بعد اس طرف سے بھی مباہلہ کا اشتہار دیا گیا۔ جو کتاب اُلمنہ کمالات اسلام کے ساتھ بھی شامل ہے اور ابھی تک کوئی شخص مباہلہ کے لئے مقابلہ پر نہیں آیا۔ مگر مجھ کو

لے یہ اشتہار جلد ہذا میں زیر نمبر ۸۹ صفحہ ۳۴۲ پر درج ہے۔ (المرب)

اس بات کے سننے سے بہت خوشی ہوئی کہ ہمارے ایک معزز دوست حافظ محمد یوسف صاحب نے ایمانی جوانروی اور شجاعت کے ساتھ ہم سے پہلے اس ثواب کو حاصل کیا۔ تفصیل اس اجمال کی یہ ہے کہ حافظ صاحب اتفاقاً ایک مجلس میں بیان کر رہے تھے کہ مرزا صاحب یعنی اس عاجز سے کوئی آمادہ مناظرہ یا مباہلہ نہیں ہوتا۔ اور اسی سلسلہ گفتگو میں حافظ صاحب نے یہ بھی فرمایا کہ عبدالحق نے جو مباہلہ کے لئے اشتہار دیا تھا اب گروہ اپنے تئیں سچا جانتا ہے تو میرے مقابلہ پر آوے۔ میں اس سے مباہلہ کے لئے تیار ہوں۔ تب عبدالحق جو اسی جگہ کہیں موجود تھا حافظ صاحب کے غیرت دلانے والے لفظوں سے طوعاً و کرہاً مستعد مباہلہ ہو گیا اور حافظ صاحب کا ہاتھ آکر پکڑ لیا کہ میں تم سے اسی وقت مباہلہ کرتا ہوں۔ مگر مباہلہ فقط اس بارہ میں کروں گا کہ میرا یقین ہے۔

غلام احمد و مولوی حکیم نور الدین اور مولوی محمد احسن یہ تینوں مرتدین اور کذابین اور دجالین ہیں۔ حافظ صاحب نے فی الفور بلا تامل منظور کیا کہ میں اس بارہ میں مباہلہ کروں گا۔ میرا یقین ہے کہ یہ تینوں مسلمان ہیں تب اسی بات پر حافظ صاحب نے عبدالحق سے مباہلہ کیا۔ اور گواہان مباہلہ منشی محمد یعقوب اور میاں نبی بخش صاحب اور میاں عبدالباقی صاحب اور میاں عبدالرحمن صاحب عمر پوری قرار پائے۔ اور جب حسب دستور مباہلہ فریقین اپنے اپنے نفس پر لعنتیں ڈال چکے اور اپنے منہ سے کہہ چکے کہ یا الہی اگر ہم اپنے بیان میں سچائی پر نہیں تو ہم پر تیری لعنت نازل ہو۔ یعنی کسی قسم کا عذاب ہم پر وارد ہو تب حافظ صاحب نے عبدالحق سے دریافت کیا کہ اس وقت میں بھی اپنے آپ پر بحالت کاذب ہونے کے لعنت ڈال چکا اور خدا تعالیٰ سے عذاب کی درخواست کر چکا۔ اور ایسا ہی تم بھی اپنے نفس پر اپنے ہی منہ سے لعنت ڈال چکے اور بحالت کاذب ہونے کے عذاب الہی کی اپنے لئے درخواست کر چکے۔ لہذا اب میں تو اس بات کا اقرار کرتا ہوں کہ اگر اس لعنت اور اس عذاب کی درخواست کا اثر مجھ پر وارد ہوا۔ اور کوئی ذلت اور رسوائی مجھ کو پیش آگئی تو میں اپنے اس



حوالہ نمبر ۵ روحانی خزائن ج: ۱۷ ص: ۴۰۸

۴۰۸

اربعین نمبر ۳

۲۱

وہ مرزا غلام احمد قادیانی ہے۔ ابھی کل کی بات ہے کہ حافظ صاحب بھی بار بار ان دونوں قصوں کو بیان کرتے تھے۔ اور ہنوز وہ ایسے پیر فرقت نہیں ہوئے تا یہ خیال کیا جائے کہ پیرانہ سالی کے تقاضا سے قوت حافظ جاتی رہی۔ اور آٹھ سال سے زیادہ مدت ہو گئی جب میں حافظ صاحب کی زبانی مولوی عبداللہ صاحب کے مذکورہ بالا کشف کو ازالہ اوہام میں شائع کر چکا ہوں۔ کیا کوئی عقل مند مان سکتا ہے کہ میں ایک جھوٹی بات اپنی طرف سے لکھ دیتا اور حافظ صاحب اس کتاب کو پڑھ کر پھر خاموش رہتے۔ کچھ عقل و فکر میں نہیں آتا کہ حافظ صاحب کو کیا ہو گیا۔ معلوم ہوتا ہے کہ کسی مصلحت سے عمار گواہی کو چھپاتے ہیں اور نیک نیتی سے ارادہ رکھتے ہیں کہ کسی اور موقع پر اس گواہی کو ظاہر کر دوں گا۔ مگر زندگی کتنے روز ہے۔ اب بھی اظہار کا وقت ہے۔ انسان کو اس سے کیا فائدہ کہ اپنی جسمانی زندگی کے لئے اپنی روحانی زندگی پر چھری پھیر دے۔ میں نے بہت دفعہ حافظ صاحب سے یہ بات سنی تھی کہ وہ میرے مصدقین میں سے ہیں اور کذب کے ساتھ مباہلہ کرنے کو تیار ہیں۔ اور اسی میں بہت سا حصہ ان کی عمر کا گزر گیا اور اس کی تائید میں وہ اپنی خواہیں بھی سناتے رہے اور بعض مخالفوں سے انہوں نے مباہلہ بھی کیا۔ مگر کیوں پھر دنیا کی طرف جھک گئے۔ لیکن ہم اب تک اس بات سے نوید نہیں ہیں کہ خدا ان کی آنکھیں کھولے اور یہ امید باقی ہے جب تک کہ وہ اسی حالت میں فوت نہ ہو جائیں۔

اور یاد رہے کہ خاص موجب اس اشتہار کے شائع کرنے کا وہی میں کیونکہ ان دنوں میں سب سے پہلے انہی نے اس بات پر زور دیا ہے کہ قرآن کی یہ دلیل کہ ”اگر یہ نبی جھوٹے طور پر وحی کا دعویٰ کرتا تو میں اس کو ہلاک کر دیتا“۔ یہ کچھ چیز نہیں ہے بلکہ بہتر ہے ایسے مفسری دنیا میں پائے جاتے ہیں جنہوں نے تیس برس



حوالہ نمبر ۶ سرمہ چشم آریہ ص: ۲۵۱، روحانی خزائن ج: ۲ ص: ۳۰۱

سرمہ چشم آریہ

۲۵۱

مباحثہ دینی

میں بیان کی گئی ہیں اُن کو باطل اور دروغ خیال کرتے ہیں تو اس بارہ میں ہم سے مباہلہ کر لیں اور کوئی مقام مباہلہ کا برضا مندی فریقین قرار پا کر ہم دونوں فریق تاریخ مقررہ پر اس جگہ حاضر ہو جائیں اور ہر ایک فریق مجمع عام میں اٹھ کر اس مضمون مباہلہ کی نسبت جو اس رسالہ کے خاتمہ میں بطور نمونہ اقرار فریقین قلم جلی سے لکھا گیا ہے تین مرتبہ قسم کھا کر تصدیق کریں کہ ہم فی الحقیقت اس کو سچ سمجھتے ہیں اور اگر ہمارا بیان راستی پر نہیں تو ہم پراسی دنیا میں وبال اور عذاب نازل ہو۔ غرض جو عبارتیں ہر دو کا غذا مباہلہ میں مسدود ہیں۔ جو جانہین کے اعتقاد ہیں بحالت دروغ گوئی عذاب مترتب ہونے کے شرط پر اُن کی تصدیق کرنی چاہیئے اور پھر فیصلہ آسمانی کے انتظار کے لئے ایک برس کی ہمت ہوگی پھر اگر برس گزرنے کے بعد مؤلف رسالہ ہذا پر کوئی عذاب اور وبال نازل ہو یا حریف مقابل پر نازل نہ ہو تو ان دونوں صورتوں میں یہ عاجز قابل تاوان پانسو روپیہ ٹھہرے گا جس کو برضا مندی فریقین خزانہ سرکاری میں یا جس جگہ آسانی وہ روپیہ مخالف کو مل سکے داخل کر دیا جائے گا اور درحالت غلبہ خود بخود اس روپیہ کے وصول کرنے کا فریق مخالف مستحق ہوگا اور اگر ہم غالب آئے تو کچھ بھی شرط نہیں کرتے کیونکہ شرط کے وضع میں وہی دعا کے آثار کا ظاہر ہونا کافی ہے۔ اب ہم ذیل میں مضمون ہر دو کا غذا مباہلہ کو لکھ کر رسالہ ہذا کو ختم کرتے ہیں و باللہ التوفیق۔

بقیہ شیخہ لطیف عظیم لبر ہر دم مرا بخواند ۛ ہر چند می زنی این اغیار را ہمارا  
در کشتہ دلستانم چو خاک کوثر دیونہ ۛ دیگر نشان چہ باشد اقبال و جاہ ہمارا  
منہ

حوالہ نمبر ۷ روحانی خزائن ج: ۲۲ ص: ۳۲۶ تا ۳۲۷

بعض اعتراضوں کے جواب

۳۲۶

حقیقۃ الہی

اور یہ پیشگوئی کہ وہ دجال کو قتل کرے گا اس کے یہ معنی ہیں کہ اس کے ظہور سے دجال فتنہ روبرو ہوا جائیگا اور خود بخود کم ہوتا جائیگا اور دانشمندوں کے دل توحید کی طرف پلٹا کھاجائیں گے۔ واضح ہو کہ دجال کے لفظ کی دو تعبیریں کی گئی ہیں۔ ایک یہ کہ دجال اُس گروہ کو کہتے ہیں جو جھوٹ کا حامی ہو اور مکر اور فریب سے کام چلاوے۔ دوسری یہ کہ دجال شیطان کا نام ہے جو ہر ایک جھوٹ اور فساد کا باپ ہے۔ پس قتل کرنے کے یہ معنی ہیں کہ اس شیطانی فتنہ کا ایسا استیصال ہوگا کہ پھر قیامت تک کبھی اس کا نشوونما نہیں ہوگا گویا اس آخری لڑائی میں شیطان قتل کیا جائے گا۔

اور یہ پیشگوئی کہ مسیح موعود بعد وفات کے آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی قبر میں داخل ہوگا۔ اس کے یہ معنی کرنا کہ نعوذ باللہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی قبر کھودی جائے گی یہ جسمانی خیال کے لوگوں کی غلطیاں ہیں جو گستاخی اور بے ادبی سے بھری ہوئی ہیں بلکہ اس کے معنی یہ ہیں کہ مسیح موعود مقام قرب میں آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم سے اس قدر ہوگا کہ میت کے بعد وہ اس رتبہ کو پائیگا کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے قرب کا رتبہ اسکو ملے گا اور اُسکی روح آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی روح سے جملے گی۔ گویا ایک قبر میں ہیں اصل معنی یہی ہیں جس کا جی چاہے دوسرے معنی کرے۔ اس بات کو روحانی لوگ جانتے ہیں کہ موت کے بعد جسمانی قرب کچھ حقیقت نہیں رکھتا بلکہ ہر ایک جو آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم سے روحانی قرب رکھتا ہے اُس کی روح آپ کی روح سے نزدیک کی جاتی ہے جیسا کہ اللہ تعالیٰ فرماتا ہے۔ فَادْخُلْ فِي عِبَادِيْ وَادْخُلْ جَنَّتِيْ۔

اور یہ پیشگوئی کہ وہ قتل نہیں کیا جائیگا یہ اس بات کی طرف اشارہ ہے کہ خاتم الخلفاء کا قتل ہونا موجب ہتک اسلام ہے اسی وجہ سے آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم قتل سے بچائے گئے۔

۷۳۱ نشان۔ یہ عظیم الشان نشان لیکھرام کا مباحلہ ہے۔ واضح ہو کہ میں نے سرمرہ چشم آریہ

کے خاتمہ میں بعض آریہ صاحبوں کو مباہلہ کیلئے بلایا تھا اور لکھا تھا کہ جو تعلیم وید کی طرف منسوب کی جاتی ہے صحیح نہیں ہے اور جو تکذیب قرآن شریف کی آریہ صاحبان کرتے ہیں اُس تکذیب میں وہ کاذب ہیں۔ اگر انکو دعویٰ ہے کہ وہ تعلیم جو وید کی طرف منسوب کی جاتی ہے سچی ہے اور یا نحوہ بالذات قرآن شریف منجانب اللہ نہیں تو وہ مجھ سے مباہلہ کر لیں۔ اور لکھا گیا تھا کہ سب سے پہلے مباہلہ کیلئے لالہ مرلی دھر صاحب ہیں جن کا مقام ہوشیار پور بخت ہوئی تھی۔ پھر بعد اس کے ہمارے مخاطب لالہ جیون داس سکریٹری آریہ سماج لاہور ہیں اور پھر کوئی اور دوسرے صاحب آریوں میں سے جو محرز اور ذی علم تسلیم کئے گئے ہوں مخاطب کئے جاتے ہیں۔

میری اس تحریر پر پنڈت لیکھرام نے اپنی کتاب خبط احمدیہ میں جو ۱۸۸۸ء میں اُس نے شائع کی تھی جیسا کہ اس کتاب کے اخیر میں یہ تاریخ درج ہے میرے ساتھ مباہلہ کیا چنانچہ وہ مباہلہ کیلئے اپنی کتاب خبط احمدیہ کے صفحہ ۲۴۲ میں بطور تمہید یہ عبارت لکھا ہے:-  
چونکہ ہمارے مکرم و معظم ماسٹر مرلی دھر صاحب و منشی جیون داس صاحب بہ سبب کثرت کام سرکاری کے عدیم الفرست ہیں بنا برائ اپنے اوتشاہ اور ان کے ارشاد سے اس خدمت کو بھی نیاز مند نے اپنے ذمہ لیا۔ پس کسی داناکے اس مقولہ پر کہ در و غلورا تابدر و ازہ باید رسانید عمل کر کے میرزا صاحب کی اس آخری التماس کو بھی (یعنی مباہلہ کو)

مجھے ظاہر ہے کہ مباہلہ کی دو چار سطر کے لئے کسی فرصت کی ضرورت نہ تھی مباہلہ کا خلاصہ تو صرف یہ فقرہ ہے کہ اپنا اور فریق ثانی کا نام لیکر خدا تعالیٰ سے یہ دعا کریں کہ جو شخص ہم میں سے جھوٹا ہے وہ ہلاک ہو۔ پس کیا ماسٹر مرلی دھر اور منشی جیون داس کو اتنی کم فرصتی تھی کہ یہ دو سطر بھی نہیں لکھ سکتے تھے۔ بلکہ اصل حقیقت یہ ہے کہ وہ دونوں سچ کے مقابل پر ڈر گئے اور لیکھرام اپنی بد قسمتی سے شمع دیدہ اور اندھا آدمی تھا اُس نے اپنی نظری شوخی سے اُن کی بلا اپنے ذمہ لے لی آخر مباہلہ کے بعد ۶ مارچ ۱۸۹۷ء بروز شنبہ اس دنیا سے کوچ کر گیا۔ آمین



بعض اعتراضوں کے جواب

۳۳۲

حقیقۃ الوحی

آسمان یا عرش پر نہیں بلکہ سب بیابان ہے۔ میں یہ بھی مانتا ہوں کہ وہ یہی سب سے کامل اور مقدس گیان کے بستک ہیں۔ آریہ ورت سے ہی تمام دنیا نے فضیلت سیکھی۔ آریہ لوگ ہی سب کے استاد اول ہیں۔ آریہ ورت ہمارے بقول مسلمانوں کے ایک لاکھ چوبیس ہزار پینچسہ ۶ ہزار سال سے آئے ہیں اور توریت۔ زبور۔ انجیل۔ قرآن وغیرہ کتب لائے ہیں میں دلی یقین سے ان پستکوں کو مطالعہ کرنے سے اور سمجھنے سے..... ان کی تمام مذہبی ہدایتوں کو بنا دیتی اور جعلی اصلی الہام کے بدنام کر نیوالی تحریریں خیال کرتا ہوں..... ان کی سچائی کی دلیل ہوا طبع یا نادانی یا تلوار کے اُنکے پاس کوئی نہیں..... اور جس طرح میں اور راستی کے خلاف باتوں کو غلط سمجھتا ہوں۔ اس اسی قرآن اور اسکے اصولوں اور تعلیموں کو جو۔ بد کے مخالف ہیں ان کو غلط اور جھوٹا جانتا ہوں [لعنة الله على الكاذبين] لیکن میرا دوسرا فریق مرزا غلام احمد جو وہ قرآن کو خدا کا کلام جانتا اور اسکی سب تعلیموں کو درست اور صحیح سمجھتا ہے۔ اور جس طرح میں قرآن وغیرہ کو پڑھ کر غلط سمجھتا ہوں ویسے ہی وہ اُچی محض سنسکرت اور ناگری سے محروم مطلق بغیر پڑھنے یا دیکھنے دیدوں کے دیدوں کو غلط سمجھتا ہے ؟

اے پریشمر ہم دونوں فریقوں میں سچا فیصلہ کر کیونکہ کاذب صادق کی طرح کبھی تیرے حضور میں عزت نہیں پاسکتا۔

راقم آپکا ازلی بندہ لیکھرام شرماسیما سد آریہ سماج پشاور  
حال ادیشر آریہ گزٹ فیروز پور پنجاب۔

۱۲۳۵ھ۔ اگر میں نے یہ نہیں پڑھے بھلا یہ تو غنیمت ہے کہ لیکھرام نے چاروں دید کنٹھ کر لئے تھے ابھی بجز لعنة الله على الكاذبين کیا کہہ سکتے ہیں۔ بحث اصولوں پر ہوتی ہے جبکہ آریہ سماج والوں نے اپنے لاتھ سودید کے اصول شائع کر کے تو ان پر بحث کرنا ہر ایک عقلمند کا حق ہے اور یہ سراسر غلط ہے کہ میں وید نہیں پڑھا۔ میں نے دید کے وہ ترجمے جو ملکدیں شائع ہوئے اِذیل سو آخر تک دیکھے ہیں۔ پنڈت دیانند کا وید بھاش بھی دیکھا ہے اور عرصہ قریباً پچیس سال سے برابر آریوں کو میرے مباحثات ہوتے رہے ہیں پھر یہ کہنا کہ وید کی مجھے کچھ بھی خبر نہیں کس قدر جھوٹ ہے! اب وید صاحبوں کے پنڈت اب بھی لیکھرام کو وید کا فاضل تسلیم کر چکے ہیں تو میں یہ شریفیت دیکھنے کا مشتاق ہوں بلکہ لیکھرام کا رتبہ ذرا بھی اس سے بڑھ کر نہیں جو خدا نے اُسکے لئے فرمایا عجل جسد له خوار۔ منہ

حوالہ نمبر ۸ مجموعہ اشتہارات ج: ۳ ص: ۵۷۸

۵۷۸

(۲۷۶)

## مولوی ثناء اللہ صاحب کے ساتھ آخری فیصلہ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

نَحْمَدُكَ وَنُصَلِّيْ عَلَى رَسُوْلِكَ الْكَرِیْمِ

یَسْتَنْبِطُ نَكَاحُ حَقِّ هُوَ قُلْ اِی وَرَقِی اَنْتَ لِحَقِّ

بخدمت مولوی ثناء اللہ صاحب السلام علی من اتبع الهدی مدت سے آپ کے پرچہ المحدث میں میری نگذیب اور تفسیق کا سلسلہ جاری ہے ہمیشہ مجھے آپ اپنے اس پرچہ میں مردود کذاب و مجال مفسد کے نام سے منسوب کرتے ہیں اور دنیا میں میری نسبت شرت دیتے ہیں کہ یہ شخص مفتری اور کذاب اور مجال ہے اور اس شخص کا دعویٰ مسیح موعود ہونے کا سراسر افتراء ہے۔ میں نے آپ سے بہت دکھ اٹھایا اور صبر کرتا رہا۔ مگر چونکہ میں دیکھتا ہوں کہ میں حق کے پھیلانے کے لئے مامور ہوں اور آپ بہت سے افتراء میرے پر کر کے دنیا کو میری طرف آنے سے روکتے ہیں اور مجھے ان گالیوں اور ان تہمتوں اور ان الفاظ سے یاد کرتے ہیں کہ جن سے بڑھ کر کوئی لفظ سخت نہیں ہو سکتا اگر میں اس ہی کذاب اور مفتری ہوں جیسا کہ اکثر اوقات آپ اپنے ہر ایک پرچہ میں مجھے یاد کرتے ہیں تو میں آپ کی زندگی میں ہی ہلاک ہو جاؤں گا کیونکہ میں جانتا ہوں کہ مفسد اور کذاب کی بہت عمر نہیں ہوتی اور آخر وہ دلت اور حسرت کے ساتھ اپنے اشد دشمنوں کی زندگی میں ہی ناکام ہلاک ہو جاتا ہے اور اس کا ہلاک ہونا ہی بہتر ہوتا ہے تا خدا کے بندوں کو تباہ نہ کرے۔ اور اگر میں کذاب اور مفتری نہیں ہوں اور خدا کے مکالمہ اور محال سے مشرف ہوں اور مسیح موعود ہوں تو میں خدا کے فضل سے امید رکھتا ہوں کہ سنت اللہ کے موافق آپ کذبین کی سزا سے نہیں بچیں گے۔ پس اگر وہ سزا جو انسان کے ہاتھوں سے نہیں بلکہ محض خدا کے احقوں سے ہے جیسے طاغون، ہیمنہ وغیرہ عداک بیماریاں آپ پر میری زندگی میں ہی وارد نہ ہوئی تو میں خدا تعالیٰ کی طرف سے نہیں۔ کسی الہام یا وحی کی بناء پر شکوک نہیں محض دعا کے طور پر میں نے خدا سے فیصلہ چاہا ہے۔ اور میں خدا سے دعا کرتا ہوں کہ اسے میرے مالک بصیر و قدیر و علیم و خیر ہے جو میرے دل کے حالات سے واقف ہے اگر یہ دعویٰ مسیح موعود

لے یونس: ۵۴





حوالہ نمبر ۹ حیات ناصر ص: ۱۴ بحوالہ قادیانی مذہب فصل اول نمبر ۸۰

## فصل ہی

## قادیانی مذہب

۱۳۷

کر بیٹھے تھے تو اتنا ضعف تھا کہ آپ پشت کے بل چار پائی پر گر گئے۔ اوصاف کا سر چار پائی کی پکڑ سے نکل آیا اور حالت درگول ہو گئی۔ اس پر میں نے غصہ کر کہا: اللہ یہ کیا ہونے لگا ہے یہ تو آپ نے کہا کہ یہ وہی ہے جو میں کہا کرتا تھا۔ خاکسار نے والدہ صاحبہ سے پوچھا کہ کیا آپ سمجھ نہیں تھیں کہ حضرت صاحب کا کیا منشا ہے۔ والدہ صاحبہ نے فرمایا کہ ہاں،

(سیرۃ الہدیٰ ص ۱۲۷ مصنفہ صاحبہ شہر احمد صاحب قادیانی)

(۸۰) ہیضہ کا واقعہ (۱۳) آج کل ہمارے گھر کے لوگ بقیہ چھاؤنی بازار  
لنڈہ نو میں دفتر نہر کے پاس بودو باش رکھتے ہیں۔

(اشہار واجب الاطہار سنو ب سنو غلام احمد قادیانی صاحب مورخ ۱۱۱۱ھ قشتہ مندرجہ تیغ رحمت)

جداد اول ص ۱۲۷ مرقوم قاسم علی صاحب قادیانی

ابتداء میں جب کہیں حضرت (مرزا) صاحب باہر تشریف لے جاتے تھے تو مجھے گھر کی حفاظت اور قادیان کی خدمت کے لئے چھوڑ جاتے تھے اور خزانہ میں جب کہیں سفر کرتے تھے اور گھسے لوگ ہمراہ ہوتے تھے تو بندہ بھی ہمراہ ہو تا تھا چنانچہ جب آپ لاہور تشریف لے گئے جس سفر میں آپ کو سفر آخرت پیش آیا۔ تب بھی بندہ آپ کے ہمراہ تھا اور اس شام کی سیر میں بھی شریک تھا جس کے دوسرے روز آپ نے قبل از دو پہر انتقال فرمایا انا للہ وانا الیہ راجعون اب بڑی اور سخت تبدیلی میرے حال میں پیدا ہوئی اور ایسی سخت معیبت نازل ہوئی کہ جس کی تلقین بہت مشکل ہے اللہ تعالیٰ کے سوا میری تکلیف کو کوئی نہیں جان سکتا۔

حضرت (مرزا) صاحب جس رات کو بیمار ہوئے اس رات کو میں اپنے مقام پر جا کر سو چکا تھا۔ جب آپ کو بہت تکلیف ہوئی تو مجھے جگا یا گیا تھا جب میں حضرت (مرزا) صاحب کے پاس پہنچا تو آپ کا حال دیکھا تو آپ نے مجھے مخاطب کر کے فرمایا: میرا صاحب مجھے دہائی ہیضہ ہو گیا ہے اس کے بعد آپ نے کوئی ایسی صاف بات میرے خیال میں نہیں فرمائی۔ یہاں تک کہ دوسرے روز بچے کے بعد آپ کا انتقال ہو گیا۔

(مرزا غلام احمد قادیانی صاحب کے خسر میرزا صاحب قادیانی کے خود نوشتہ حالات مندرجہ حیات ناصر)

ص ۱۲۷ مرتبہ شیخ یعقوب علی ہودائی صاحب قادیانی

(۸۱) ہانگ کا رنگ سے ایک مسفع نے کھلبے کہ یہاں بعض لوگ اعتراض کرتے ہیں کہ حضرت

حوالہ نمبر ۱۰ جنگ مقدس ص: ۲۱۰، ۲۱۱، روحانی خزائن ج: ۶ ص: ۲۹۲، ۲۹۳

۵۔ جون ۱۸۹۳ء

۲۹۲

اہل اسلام اور عیسائیوں میں مباحثہ

جو فریق عمداً جھوٹ کو اختیار کر رہا ہے اور سچے  
خدا کو چھوڑ رہا ہے اور عاجز انسان کو خدا بنارہا ہے۔  
وہ انہی دنوں مباحثہ کے لحاظ سے یعنی فی دن ایک مہینہ  
لیکر یعنی ۱۵ ماہ تک ہاویہ میں گرایا جاوے گا اور اسکو سخت  
ذلت پہنچائی بشرطیکہ حق کی طرف رجوع نہ کرے اور شخص  
سیج پر ہو اور سچے خدا کو ماننا ہو اسکی اس سے عزت ظاہر  
ہوگی اور اسوقت جب یہ پیشینگوئی ظہور میں آوے گی بعض  
اندھے سو جا کھ کئے جائیں گے اور بعض لنگڑے چلنے  
لگیں گے اور بعض بہرے سُننے لگیں گے۔

اسی طرح پر جس طرح اللہ تعالیٰ نے ارادہ فرمایا ہے سو الحمد للہ والمنہ کہ اگر یہ پیشینگوئی اللہ تعالیٰ  
کی طرف سے ظہور نہ فرماتی تو ہمارے یہ پندرو دن ضائع گئے تھے۔ انسان ظالم کی عادت ہوتی ہو  
کہ باوجود دیکھنے کے نہیں دیکھتا اور باوجود سُننے کے نہیں سنتا اور باوجود سمجھنے کے نہیں سمجھتا۔ اور  
جو اُت کرتا ہو اور شوخی کرتا ہے اور نہیں جانتا کہ خدا ہے لیکن اب میں جانتا ہوں کہ فیصلہ کا  
وقت آگیا۔ میں حیران تھا کہ اس بحث میں کیوں مجھے آنے کا اتفاق پڑا۔ معمولی بحثیں تو اور  
لوگ بھی کرتے ہیں۔ اب یہ حقیقت کھلی کہ اس نشان کیلئے تھا۔ میں اسوقت یہ اقرار کرتا ہوں



کہ اگر یہ پیشینگوئی جھوٹی نکلی یعنی وہ فریق جو خدا تعالیٰ کے نزدیک جھوٹ پر ہے وہ پندرہ ماہ کے عرصہ میں آج کی تاریخ سے بسزائے موت ہاویہ میں نہ پڑے تو میں ہر ایک سزا کے اٹھانے کے لئے تیار ہوں مجھ کو ذلیل کیا جاوے۔ رُوسیاہ کیا جاوے۔ میرے گلے میں رستہ ڈال دیا جاوے مجھ کو پھانسی دیا جاوے۔ ہر ایک بات کیلئے تیار ہوں اور میں اللہ جل شانہ کی قسم کھا کر کہتا ہوں کہ وہ ضرور ایسا ہی کریگا۔ ضرور کریگا۔ ضرور کریگا۔ زمین آسمان ٹل جائیں پر اس کی باتیں نہ ٹلیں گی۔

اب ڈپٹی صاحب سے پوچھتا ہوں کہ اگر یہ نشان پورا ہو گیا تو کیا یہ رب آپ کے منشاء کے موافق کامل پیشینگوئی اور خدا کی پیشینگوئی ٹھہریگی یا نہیں ٹھہریگی اور رسول اللہ صلعم کے سچے نبی ہونے کے بارہ میں جنکو اندرونہ بائبل میں دجال کے لفظ سے آپ نامزد کرتے ہیں محکم دلیل ہو جائیگی یا نہیں ہو جائے گی۔ اب اس سے زیادہ میں کیا لکھا سکتا ہوں جبکہ اللہ تعالیٰ نے آپ ہی فیصلہ کر دیا ہو۔ اب ناحق ہنسنے کی جگہ نہیں اگر میں جھوٹا ہوں تو میرے لئے سولی تیار رکھو۔ اور تمام شیطانوں اور بدکاروں اور لعنتیوں سے زیادہ مجھے لعنتی قرار دو۔ لیکن اگر میں سچا ہوں۔ تو انسان کو خدمات بناؤ۔ توریت کو پڑھو کہ اس کی اول اور کھلی تعلیم کیا ہے اور تمام نبی کیا تعلیم دیتے آئے اور تمام دنیا کس طرف جھک گئی۔ اب میں آپ سے رخصت ہوتا ہوں اس سے زیادہ نہ کہوں گا۔ والسلام علی من اتبع الهدی۔

دستخط بحروف انگریزی	دستخط بحروف انگریزی
ہنری مارٹن کلاارک پریزیڈنٹ از جانب عیسائی صاحبان	غلام قادر فصیح پریزیڈنٹ از جانب اہل اسلام

تمام شد

حوالہ نمبر ۱۱ انجام آتھم ص: ۳۱ حاشیہ

۳۱

اگر اب بھی عیسائی باز نہ آویں تو بہتر ہے کہ ہم اور ان کے چند سرگروہ مباہلہ کے طور پر میدان میں آکر خدا کے انصاف سے فتویٰ لے لیں۔ جھوٹے پر بغیر تعین کسی فریق کے لعنت کرنا کسی مذہب میں ناجائز نہیں۔ نہ ہم میں نہ عیسائیوں میں نہ یہودیوں میں۔ یہی وجہ ہے کہ پادری و ایٹ بریخت شملہ جلنے سے کچھ عرصہ پہلے چند اپنے عیسائیوں کے ساتھ قلیان میرے پاس آئے اور مجھے کہا کہ آتھم نہیں مرا۔ میں نے کہا کہ اُس نے اسلامی پیشگوئی سے ڈر کر پیشگوئی کی شرط سے قلمہ اٹھایا۔ اور خود اقرار کیا کہ میں ڈرتا رہا اور ان حملوں کا ثبوت نہ دے سکا تو ڈرنے کی وجہ ٹھہرائی۔ وایٹ نے کہا کہ لعنت اللہ علی الذین۔ یعنی جھوٹوں پر لعنت ہو۔ میں نے کہا کہ بیشک جھوٹوں پر لعنت وارد ہوگی۔ اگر آتھم جھوٹا ہے یا میں تو خدا اس کا فیصلہ کر دیگا۔ چنانچہ تھوڑے عرصہ کے بعد اس لعنت کا اثر آتھم پر وارد ہو گیا۔

کہ اب میں کذاب کہلا کر اپنی قوم کی طرف واپس نہیں جاؤں گا اور دوسری راہ لی۔ دیکھو تفسیر درمنثور تحت تفسیر آیت مغاضباً۔ اور دیکھو صفحہ ۱۱۰ اشتہار چہارم الغامی چار ہزار روپیہ \* ہم اس بزرگ حضرت جبریل علیہ السلام کی منصف ٹھہرتے ہیں کہ کیا آپ کہہ سکتے ہیں۔ کہ خدا کا یہ الہام جھوٹا نکلا اور حق با اللہ تو اس کذاب تھا۔ اصل بات یہ ہے کہ قرآن کریم کا علم اکثر لوگوں سے جاتا رہا ہے اور بظاہر البعدیث بھی کہلاتے ہیں۔ مگر حدیثوں کے مغز سے ناواقف ہیں۔ ہم بار بار لکھ چکے ہیں۔ کہ انہی قصوں کے لحاظ سے اہل سنت کا یہ عام عقیدہ ہے کہ وعید کی میعاد کی تاخیر کسی سبب تو یہ یا خون کی وجہ سے جائز ہے۔ کس قدر خسوس کی بات ہے کہ مسلمان کہلا کر اور ان احادیث کو پڑھ کر پھر اٹھس پیشگوئی کی تکذیب کی جائے جو یونس کی پیشگوئی سے ہم شکل ہے اور ایسے امور میں اس عاجز کو کاذب ٹھہرایا جائے جن میں دوسرے انبیاء بھی شریک ہیں \*

میں بار بار کہتا ہوں کہ نفس پیشگوئی و ماد احمد بیگ کی تقدیر میرے ہے اس کی انتظار کرو۔ اور اگر میں جھوٹا ہوں تو یہ پیشگوئی پوری نہیں ہوگی اور میری موت آجائے گی۔ اور اگر میں سچا ہوں تو خدا تعالیٰ ضرور اس کو بھی ایسا ہی پوری کر دے گا۔ جیسا کہ احمد بیگ اور آتھم کی پیشگوئی پوری ہو گئی۔ اصل مدعا تو نفس مغہوم ہے۔ اور وقتوں میں تو کبھی استغناء کا بھی دخل ہو جاتا ہے یہاں تک کہ بعض پیشگوئیوں میں دنوں کے سال بنائے گئے ہیں جو بات خدا کی طرف سے ٹھہر چکی ہے کوئی اس کو روک نہیں سکتا۔ ذرا شرم کرنی چاہیے کہ جس حالت میں خود احمد بیگ اسی پیشگوئی کے مطابق میعاد کے اندر فوت ہو گیا اور وہ پیشگوئی کے اول نمبر پر تھا تو پھر اگر خدا کا خوف ہو تو اس پیشگوئی کے نفس مغہوم میں شک کیا جاوے۔ کیونکہ ایک وقوع یا قترہ امر کی یہ دوسری جڑ ہے جس حالت میں خدا اور رسول

میں بار بار کہتا ہوں کہ نفس پیشگوئی و ماد احمد بیگ کی تقدیر میرے ہے اس کی انتظار کرو۔ اور اگر میں جھوٹا ہوں تو یہ پیشگوئی پوری نہیں ہوگی اور میری موت آجائے گی۔ اور اگر میں سچا ہوں تو خدا تعالیٰ ضرور اس کو بھی ایسا ہی پوری کر دے گا۔ جیسا کہ احمد بیگ اور آتھم کی پیشگوئی پوری ہو گئی۔ اصل مدعا تو نفس مغہوم ہے۔ اور وقتوں میں تو کبھی استغناء کا بھی دخل ہو جاتا ہے یہاں تک کہ بعض پیشگوئیوں میں دنوں کے سال بنائے گئے ہیں جو بات خدا کی طرف سے ٹھہر چکی ہے کوئی اس کو روک نہیں سکتا۔ ذرا شرم کرنی چاہیے کہ جس حالت میں خود احمد بیگ اسی پیشگوئی کے مطابق میعاد کے اندر فوت ہو گیا اور وہ پیشگوئی کے اول نمبر پر تھا تو پھر اگر خدا کا خوف ہو تو اس پیشگوئی کے نفس مغہوم میں شک کیا جاوے۔ کیونکہ ایک وقوع یا قترہ امر کی یہ دوسری جڑ ہے جس حالت میں خدا اور رسول



حوالہ نمبر ۱۲ ضمیمہ انجام آتھم ص: ۵۴

۳۳۸

انت الہاء علی عقبہ ۱۸۸۸ء میں ہوا تھا۔ اس میں صریح شرط توبہ کی موجود تھی۔ اور الہام کذب و اباحتنا اس شرط کی طرف ایسا کر رہا تھا پس جبکہ بغیر کسی شرط کے یونس کی قوم کا عذاب ٹل گیا۔ تو شرطی پیشگوئی میں ایسے خوف کے وقت میں کیوں تاخیر ظہور میں نہ آتی۔ یہ اعتراض کیسی بے ایمانی ہے جو تھنڈ کی وجہ سے کیا جانا ہے۔ میں نے نبیوں کے حوالے بیان کر دیئے۔ حدیثوں اور آسمانی کتابوں کو آگے رکھ دیا۔ مگر یہ نابکار قوم بھی تک حیا اور شرم کی طرف تسخ نہیں کرتا۔

**یاد رکھو کہ اس پیشگوئی کی دوسری جز پوری نہ ہوئی تو میرا ہر ایک بد سے**

بدتر ٹھہروں گا۔ اسے احمق و ابی انسان کا افترا نہیں۔ یہ کسی خبیث مغتری کا کاروبار نہیں یقیناً سمجھ کر یہ خط کا سچا وعدہ ہے وہی خدا جس کی باتیں نہیں ملتیں۔ وہی رب ذوالجلال جس کے ارادوں کو کوئی روک نہیں سکتا۔ اس کی سنتوں اور طریقوں کا تم میں علم نہیں رہا۔ اس لئے تمہیں یہ ابتلا پیش آیا۔

برائین احمدیہ میں بھی اس وقت سے سترہ برس پہلے اس پیشگوئی کی طرف اشارہ فرمایا گیا ہے۔

**جو اس وقت میرے پرکھو لایا ہے اور وہ یہ الہام ہے جو برائین کے صفحہ ۷۹۶ میں مذکور ہے۔**

یا آدم اسکن انت وزوجک الجنة۔ یا من یم اسکن انت وزوجک الجنة۔

یا احمد اسکن انت وزوجک الجنة۔ اس جگہ تین جگہ زوج کا لفظ آیا۔ اور تین نام اس

عاجز کے رکھے گئے۔ پہلا نام آدم۔ یہ وہ ابتدائی نام ہے جبکہ اللہ تعالیٰ نے اپنے ہاتھ سے اس عناجز

کو روحانی و ہود بخشا۔ اس وقت پہلی زوجہ کا ذکر فرمایا۔ پھر دوسری زوجہ کے وقت میں مریم نام رکھا

کیونکہ اس وقت مبارک اولاد دی گئی جس کو مسیح سے مشابہت ملی۔ اور نیز اس وقت مریم کی طرح کئی

ابتلا پیش آئے جیسا کہ مریم کو حضرت عیسیٰ علیہ السلام کی پیدائش کے وقت یہودیوں کی بظنیوں کا ابتلا پیش آیا

اور عیسوی زوجہ جس کی انتظار ہے۔ اس کے ساتھ احمد کا لفظ شامل کیا گیا۔ اور یہ لفظ احمد اس

بات کی طرف اشارہ ہے کہ اس وقت حمد اور تعریف ہوگی۔ یہ ایک چھپی ہوئی پیشگوئی ہے۔ جس کا منہ

اس وقت خدا تعالیٰ نے مجھ پر کھول دیا۔ غرض یہ تین مرتبہ زوج کا لفظ تین مختلف نام کے ساتھ

جو بیان کیا گیا ہے وہ اسی پیشگوئی کی طرف اشارہ تھا۔

حوالہ نمبر ۱۳ ضمیمہ براہین احمدیہ حصہ پنجم ص: ۹۲، ۹۳، روحانی خزائن ج: ۲۱ ص: ۲۵۳

صفحہ پنجم

۲۵۳

ضمیمہ براہین احمدیہ

یعنی کافر پوچھتے ہیں کہ یہ دعویٰ پورا کب ہو گا اگر تم سچے ہو تو تاریخ عذاب بتاؤ۔ انکو کہہ دے مجھے کوئی تاریخ معلوم نہیں یہ علم خدا کو ہے۔ میں تو صرف ڈرنے والا ہوں۔ اور پھر کافروں نے مکرراً عذاب کی تاریخ پوچھی تو ان کو یہ جواب ملا قل ان ادری اقرب ما توعدون یعنی ان کو کہہ دے کہ میں نہیں جانتا کہ عذاب قریب ہے یا دور ہے۔ اب اے سننے والو! یاد رکھو کہ یہ بات سچ ہے اور بالکل سچ ہے اور اس کے ماننے کے بغیر چارہ نہیں کہ خدا تعالیٰ کی پیشگوئیاں کبھی ظاہر پر پوری ہوتی ہیں اور کبھی استعارہ کے رنگ میں۔ پس کسی نبی یا رسول کو یہ حوصلہ نہیں کہ ہر جگہ اور ہر پیشگوئی میں یہ دعویٰ کر دے کہ اس طور پر یہ پیشگوئی پوری ہوئی۔ ہاں البتہ جیسا کہ ہم مکھ چکے ہیں اس امر کا دعویٰ کرنا نبی کا حق ہے کہ وہ پیشگوئی جس کو وہ بیان کرتا ہے خارق عادت ہے یا انسانی علم سے وراوا لوراد ہے۔ اگر پنجاب میں ہر صدی میں بھی ایسا زلزلہ آجایا کرتا جیسا کہ ۴ اپریل ۱۹۰۵ء کو آیا تو اس صورت میں بھی یہ پیشگوئی کچھ بھی چیز نہ ہوتی۔ کیونکہ تمام لوگ اس بات کے کہنے کا حق رکھتے تھے کہ ہمیشہ پنجاب میں ایسے زلزلے آتے ہیں یہ کوئی انہونی بات نہیں ہے۔ لیکن جبکہ گذشتہ زلزلہ اس خارق عادت طور سے ظاہر ہوا جس خارق عادت طور سے پیشگوئی نے بیان کیا تھا تو پھر سب اعتراض فصول ہو گئے۔ ایسا ہی آئندہ زلزلہ کی نسبت جو پیشگوئی کی گئی ہے وہ کوئی معمولی پیشگوئی نہیں اگر وہ آخر کو معمولی بات نکلی یا میری زندگی میں اسکا ظہور نہ ہوا تو میں خدا تعالیٰ کی طرف سے نہیں سمجھتا خدا تعالیٰ خبر دیتا ہے کہ وہ آفت جسکا نام اس نے زلزلہ رکھا ہے نمونہ قیامت ہو گا اور پہلے سے بڑھ کر اس کا ظہور ہو گا۔ اس میں کچھ شک نہیں کہ اس آئندہ کی پیشگوئی میں بھی پہلی پیشگوئی کی طرح بار بار زلزلہ کا لفظ ہی آیا ہے اور کوئی لفظ نہیں آیا۔ اور ظاہری معنوں کا بہ نسبت تاویلی معنوں کے زیادہ حق ہے۔ لیکن جیسا کہ تمام انبیاء ادب و بلویت اور ادب و صحت علم باری محفوظ رکھتے رہے ہیں اس ادب کے لحاظ سے اور سنت اللہ کو مد نظر رکھ کر یہ

حوالہ نمبر ۱۲ مجموعہ اشتہارات ج: ۳ ص: ۵۴۱، ۵۴۲

۵۴۱

میری سمجھ میں نہیں آتا کہ یہ کس قسم کی بدظنی ہے جو مخالف لوگ مجھ پر کرتے ہیں۔ وہ کہتے ہیں کہ ہمیں اپنے اشتہاروں سے تشویش میں ڈال دیا ہے میں نہیں سمجھ سکتا کہ یہ کیسی تشویش ہے میں منہم ہونے کا دعویٰ نہیں کرتا نہ مجھے علم جیالوجی کی مہارت کا کوئی دعویٰ ہے۔ صرف یہ دعویٰ ہے کہ میں خدا تعالیٰ کی طرف سے وحی پاتا ہوں۔ مگر اس دعویٰ کے یہ لوگ سخت منکر ہیں اور اسی بنا پر مجھے کافر اور جہال کہتے ہیں اور اسی بنا پر یہ لوگ میری تکذیب کر رہے ہیں۔ ان لوگوں نے ہزار ہا اشتہار میری نسبت شائع کئے ہیں کہ اس دعویٰ میں یہ شخص جھوٹا ہے بلکہ اس قدر لعنتوں اور گالیوں سے بھر پڑے میری نسبت دنیا میں اشتہار شائع کر چکے ہیں جن سے کم سے کم دس کوٹھے بھر سکتے ہیں تو پھر کیا کوئی سمجھ سکتا ہے کہ میری ایسی پیشگوئیوں سے وہ ڈرتے ہوں۔ جو شخص ان کے نزدیک جھوٹا ہے اس سے ڈرنے کے کیا معنی ہیں۔ اگر مجھے بندگانِ خدا کی سچی ہمدردی مجبور نہ کرتی تو میں ایک ورق بھی شائع نہ کرتا۔ مگر پہلی پیشگوئی کا بڑے زبردست طور سے پورا ہونا اور ہزار ہا جانوں کا نقصان ہونا مجھے کھینچ کر اس طرف لایا کہ میں دوسری پیشگوئی کے شائع کرنے میں کوتاہی نہ کروں اور کما حقہ شائع کر دوں۔ بعض نے میری نسبت خط لکھے کہ تو جھوٹا ہے۔ ہم چاہتے ہیں کہ تجھے قتل کر دیں۔ لیکن اگر میرے اشتہاروں سے کچھ لوگ اعتقاد پر کار بند ہو جائیں اور اپنی کچھ اندرونی اصلاح کر لیں اور ان کی جانیں بچ جائیں تو میری جان کیا جوتھوٹا اس جگہ نمونہ کے طور پر مخالفین میں سے ایک کا اشتہار نقل کیا جاتا ہے جس سے ظاہر ہوگا کہ ہماری پیشگوئیوں کی جب اس طرح تکذیب کی جاتی ہے تو پھر یہ پیشگوئیاں کسی کے واسطے تشویش کا موجب نہیں ہیں۔ اور نہ لوگ اس سے ڈرتے ہیں بلکہ اس پر ہنسنے لگتے ہیں۔ چنانچہ ایک تازہ اشتہار کی کچھ عبارت ہم اس جگہ بطور نمونہ کے نقل کر کے دکھلاتے ہیں کہ ایسے مخالفین پر ہماری پیشگوئیوں کا کیا اثر پڑ سکتا ہے۔

اور وہ عبارت یہ ہے

میں آج ہر منی شہزادہ کو اس امر کا بڑے زور اور دعویٰ سے اعلان کرتا ہوں اور تمام لوگوں کو اس بات کا یقین دلاتا ہوں کہ خوفناک اور بچھے ہونے والوں کو اطمینان اور تسلی دیتا ہوں کہ قادیانی نے ۵-۸۔



۵۴۲

چیز ہے۔ کیا مجھے کبھی مرنا نہیں یا اپنی جان سے ایسی محبت رکھتا ہوں کہ بنی نوع کی ہمدردی بھی چھوڑ دوں۔ اور بعض نادان کہتے ہیں کہ یہ اشتہار اس غرض سے لکھے گئے ہیں کہ تا لوگ ڈر کر ان کی بیعت قبول کر لیں مگر اس حق پوشی کا میں کیا جواب دوں۔ میں بار بار انہیں اشتہارات میں لکھ چکا ہوں کہ اصلاح نفس اور توبہ سے اس جگہ میری یہ مراد نہیں ہے کہ کوئی ہندو یا عیسائی مسلمان ہو جائے یا تیری بیعت اختیار کرے۔ بلکہ یاد رکھنا چاہیئے کہ اگر کسی کا مذہب غلطی پر ہے تو اس غلطی کی سزا کے لئے یہ دنیا عدالت گاہ نہیں ہے، اس کے لئے عالم آخرت مقرر ہے اور جس قدر قوموں کو پہلے اس سے سزا

۵۴۲ بقیہ نوٹ۔ ۲۱ اور ۲۹ اپریل ۱۹۷۹ء کے اشتہاروں اور اخباروں میں جو لکھا ہے کہ ایک ایسا سخت زلزلہ آئے گا جو ایسا شدید اور خوفناک ہوگا کہ نہ کسی آنکھ نے دیکھا نہ کسی کان نے سنا۔ کرشن قادیانی زلزلہ کے آمد کی تاریخ یا وقت نہیں بتلاتا۔ مگر اس امر پر بہت زور دیتا ہے کہ زلزلہ ضرور آئے گا۔ اس لئے میں ان بھولے بھالے سادہ لوح آدمیوں کو جو قادیانی کی طرف لغاطیوں اور اخباری رنگ آمیزیوں سے خوفناک ہو رہے ہیں بڑے زور سے اطمینان اور تسلی دیتا ہوں خوشخبری سناتا ہوں کہ خدا کے فضل و کرم سے شہر لاہور وغیرہ میں یہ قادیانی زلزلہ ہرگز نہیں آئے گا! نہیں آئے گا! اور نہیں آئے گا! اور آپ ہر طرح اطمینان اور تسلی لکھیں۔ مجھے یہ خوشخبری حقیقی نور الہی اور کشف کے ذریعہ سے دی گئی ہے جو انشاء اللہ بالکل ٹھیک ہوگی۔ میں مکرر کر کہتا ہوں اور اس نور الہی سے جو مجھے بذریعہ کشف دکھلایا گیا ہے مستفیض ہو کر اور اس کے اعلان کی اجازت پا کر ڈنکے کی جھڑپ کہتا ہوں کہ قادیانی ہمیشہ کی طرح اس زلزلہ کی پیشگوئی میں بھی ذلیل اور رسوا ہوگا۔ اور خداوند تعالیٰ حضرت خاتم المرسلین شیعہ المذنبین کے

طفیل سے اپنی گنہگار مخلوق کو اپنے دامن عاطفت میں رکھ کر اس نارسیدہ آفت سے بچانے کا اور کسی نہ دہش کا مال تک بیشک نہ ہوگا۔

علامہ بخش حنفی پکڑی انجمن حامی اسلام لاہور

حوالہ نمبر ۱۵ اخبار ”بدر“ ۱۹ جولائی ۱۹۰۶ء ص: ۴ بحوالہ قادیانی مذہب فصل ۷ نمبر ۳۹

فصل ساتویں

قادیانی مذہب

۳۷۱

شعبہ جو ہفتہ میں پانچواں دن بے چہتے طرکے سے طائفے کے لئے چوتھا ہینہ اور چوتھا دن  
بن گیا۔ اس کی وجہ شاید یہ بھی ہو کہ مرزا صاحب کے نزدیک ایسے فرق کچھ قابل شمار نہیں تھے  
ہذبات نہیں بنتی۔ (لاؤلف)

(۳۸) سچا جھوٹ { مولوی محمد علی مونگیری اور ان کے احوان و انصار جن کی غرض  
اس صوبہ بہار میں بالخصوص یہ ہے کہ جس طرح ہواحدیوں کے  
نواف عام کو بہکا یا جائے۔ اپنے صحیفوں ٹرکیوں اور نیز اپنے بیانات میں ہمیشہ عوام کو یہ دکھائے  
ہے کہ حضرت مسیح موعود نے اخبار بدر میں معاوضہ یہ جھوٹ لکھا ہے کہ جناب رسول مقبول صلی اللہ  
لہ علیہ وسلم فوت ہوئے۔ ہر چند ان کو اچھی طرح کھنایا گیا کہ یہ جھوٹ نہیں ہو سکتا بلکہ کسی طرح اس  
بجھوٹ کی تعریف صادق نہیں پاتی۔ اور نیز کچھ طے کی غرض ہرگز جھوٹ بیان کرنے کی نہیں ہے  
گرواد و تعصب نے انہیں کہنے کا کبھی موقع نہیں دیا۔

(اخبار الفضل قادیان مورخہ ۲۹ مئی ۱۹۱۲ء جلد ۱ ص: ۹۳-۹۴)

جھوٹا مسیح { اس میدان میں کھڑا ہوں یہ ہے کہ میں عیسیٰ پرستی کے  
استدلال کو توڑ دوں اور بجائے تثلیث کے توحید کو پیشاں آں اور آں حضرت صلی اللہ  
علیہ وسلم کی جودت اور عظمت اور شان و دنیا پر ظاہر کر دوں پس اگر مجھ سے کڑور نشان کی ظاہر ہو  
تو یہ ظلالی لکھ دوں تاکہ تو میں جھوٹا ہوں۔ پس مجھ سے دشمنی کیوں ہے وہ میرے انجام کو  
لکھ نہیں دیکھتے اگر میں نے اسلام کی حمایت میں وہ کام کر دکھایا ہے جو مسیح موعود اور نبی موعود  
اگلا ہائے تھا۔ تو پھر سچا ہوں۔ اور اگر کچھ نہ ہوا اور مرگیا تو سب لوگ گواہ ہیں کہ میں جھوٹا ہوں۔  
واسم۔

بقلم خود مرزا غلام احمد

(انجمن مجدد مورخہ ۱۹ جولائی ۱۹۰۶ء منقول ذوالمہدی منیر امین مؤلفہ حکیم محمد حسین)

صاحب قادیانی (ہودی)

شعبہ ہفتہ میں پانچواں دن بے چہتے طرکے سے طائفے کے لئے چوتھا ہینہ اور چوتھا دن



حوالہ نمبر ۱۶ مجموعہ اشتہارات ج: ۲ ص: ۱۱۵، ۱۱۶

۱۱۵

نہ ہوتی اور کوئی دوسرا پہلو ایمان لانے کا قوم کو بتلایا سہوتا تو وہ میدان میں ایسی دردناک صورت اپنی نہ بناتے بلکہ شرط کے ایفاء پر عذاب ٹل جانے کے وعدہ پر مطمئن ہوتے۔ ایسا ہی اگر حضرت یونسؑ کو خدا تعالیٰ کی طرف سے علم ہوتا کہ ایمان لانے سے عذاب ٹل جائے گا تو وہ کیوں کہتے کہ اب میں اس قوم کی طرف نہیں جاؤں گا کیونکہ میں ان کی نظر میں کذاب ٹھہر چکا۔ جبکہ وہ سن چکے تھے کہ قوم نے توبہ کی اور ایمان لے آئی۔ پس اگر یہ شرط بھی ان کی وحی میں داخل ہوتی تو ان کو خوش ہونا چاہیے تھا کہ پیشگوئی پوری ہوئی نہ یہ کہ وہ وطن چھوڑ کر ایک بھائی معیبت میں اپنے تئیں ڈالتے قرآن کا لفظ لفظ اسی پر دلالت کر رہا ہے کہ وہ سخت ابتلا میں پڑے اور حدیث نے کیفیت ابتلا کی یہ بتلائی۔ پس اب بھی اگر کوئی شیخ و شاب منکر ہو تو یہ صریح اس کی گردن کشی ہے۔

اور ہم اس مضمون کو اس پر ختم کرتے ہیں کہ اگر ہم سچے ہیں تو خدا تعالیٰ ان پیشگوئیوں کو پورا کر دے گا۔ اور اگر یہ باتیں خدا تعالیٰ کی طرف سے نہیں ہیں تو ہمارا انجام نہایت بد ہوگا۔ اور ہرگز یہ پیشگوئیاں پوری نہیں ہوں گی۔ رہنا افسوس بیننا و بینکم قومنا بالحق و انت خیر الناس اخیراً۔ اور میں بالآخر دعا کرتا ہوں کہ اے خدا اے قادر و علیم اگر انھم کا عذاب بقیہ حاشیہ۔ گئے۔ آپ مہاجرہ میں بمقام لاہور عہد کرچکے ہو کہ میں اس بات کی قسم کھاؤں گا کہ موت کا عذاب نہیں ملتا۔ اب قسم کھاؤں تا خدا تعالیٰ جھوٹے کو داخل جہنم کرے ورنہ یہ سخت بے ایمانی ہوگی کہ قسم کھانے کا عہد کر کے پھر توڑ دیا جاوے اور اگر آپ نے قسم نہ کھائی تو یہی سمجھا جائے گا کہ صوفیوں و سوردیہ کے طبع نفسانی نے آپ میں یہ جوش پیدا کر دیا تھا۔ اور پھر جب قسم کھانے کی کوئی راہ نہ دیکھی تو اللہ ہی اندر وہ جوش قلیل پا گیا اور بجائے اس کے اپنی بیوقوفی پر ایک ندامت باقی رہ گئی۔ مگر کیا تعجب کہ پھر بھی قسم کھا کر کیونکہ بے ایمان آدمی پاک نوشتموں کی کچھ بھی پرولہ نہیں رکھتا اور دہریہ پن کی رنگ سے اپنے انجام کو نہیں سوچتا اور یاد رہے کہ اس معافی سے عیسائیوں کے کفارہ کی بھی جھٹکائی ہو گئی کیونکہ یونسؑ کا قوم صرف اپنی توبہ اور استغفار سے بچ گئی اور یونسؑ کو یہی چاہتا تھا کہ ان پر عذاب نازل ہو۔ منہ +

ہملک میں گرفتار ہونا اور احمد بیگ کی دختر کلاں کا آخر اس عاجز کے نکاح میں آنا یہ پیشگوئیاں تیری طرف سے ہیں تو ان کو ایسے طور سے ظاہر فرما جو خلق اللہ پر حجت ہو اور کور باطن حاسدوں کا مزہ نہ ہو جائے اور اگر اسے خداوندیہ پیشگوئیاں تیری طرف سے نہیں ہیں تو مجھے زامردی اور ذلت کے ساتھ ہلاک کر۔ اگر میں تیری نظر میں مردود اور ملعون اور دجال ہی ہوں جیسا کہ مخالفوں نے سمجھا ہے اور تیری وہ رحمت میرے ساتھ نہیں ہو تیرے بندہ ابراہیم کے ساتھ اور اسحق کے ساتھ اور اسمعیل کے ساتھ اور یعقوب کے ساتھ اور موسیٰ کے ساتھ اور داؤد کے ساتھ اور مسیح ابن مریم کے ساتھ اور خیر الانبیاء محمد مصلم کے ساتھ اور اس امت کے اولیاء کرام کے ساتھ تھی تو مجھے فنا کر ڈال اور ذلتوں کے ساتھ مجھے ہلاک کر دے اور ہمیشہ کی لعنتوں کا نشانہ بنا اور تمام دشمنوں کو خوش کر اور ان کی دعائیں قبول فرما۔ لیکن اگر تیری رحمت میرے ساتھ ہے اور تُو ہی ہے جس نے مجھ کو مخاطب کر کے کہا انت وجیہ فی حضرتی اخترتک لنفسی اور تُو ہی ہے جس نے مجھ کو مخاطب کر کے کہا یا محمدک اللہ من عرشہ۔ اور تُو ہی ہے جس نے مجھ کو مخاطب کر کے کہا یا عیسیٰ الذی لا یضام وقته اور تُو ہی ہے جس نے مجھ کو مخاطب کر کے کہا الیس اللہ بکاف عبدک اور تُو ہی ہے جس نے مجھ کو مخاطب کر کے کہا قبل انی امرت وانا اول المومنین اور تُو ہی ہے جو غالباً مجھے ہر روز کہتا رہتا ہے انت معی وانا معک تُو میری مدد کر اور میری حمایت کے لئے کھڑا ہو جا۔ وانی مغلوبٌ فانتصر۔

راقم خاکسار غلام احمد از قادیان ضلع گوردھاپور

۲۴ اکتوبر ۱۸۹۴ء

(تعداد اشاعت ۴۰۰۰) ریاض ہند امرتسر

(یہ اشتہار ۲۰ × ۲۶ کے ۱۶ صفحات پر ہے)

حوالہ نمبر ۱۷ ملفوظات ج: ۹ ص: ۲۶۸  
۲۶۸

شامت اعمال کے سبب اسی طرح ہلاک ہوئے تھے جیسے کہ اب ہو رہے ہیں۔ دین اسلام کی خاطر اگر اس وقت تلوار چلی تھی تو اس وقت بھی دین اسلام ہی کی خاطر تلوار چل رہی ہے۔

## ثناء اللہ

فسرمایا:-

یہ زمانہ کے عجائبات ہیں۔ رات کو ہم سوتے ہیں تو کوئی خیال نہیں ہوتا کہ اچانک ایک الہام ہوتا ہے اور پھر وہ اپنے وقت پر پورا ہوتا ہے۔ کوئی ہفتہ عشرہ نشان سے خالی نہیں جاتا۔ ثناء اللہ کے متعلق جو لکھا گیا ہے یہ دراصل ہماری طرف سے نہیں بلکہ خدا تعالیٰ ہی کی طرف سے اس کی بنیاد رکھی گئی ہے۔ ایک دفعہ ہماری توجہ اس کی طرف ہوئی اور اس کو توجہ اس کی طرف تھی اور رات کو الہام ہوا کہ اجیب دعوة الداع۔ صوفیاء کے نزدیک بڑی کرامت استجاب دعا ہی ہے۔ باقی سب اس کی شاخیں ہیں

## خدا تعالیٰ کی دی ہوئی تسلی

احمد صاحب جو کہ مدراس سے بیعت کے واسطے آئے ہیں۔ ان کے متعلق عرب صاحب ابو سعید نے ذکر کیا کہ وہ کہتے ہیں کہ قادیان میں آنے سے پہلے میں نے دعویٰ میں یہ سارا نقشہ ہو بہو دیکھا تھا۔ یہ تمام مکانات وغیرہ مجھے بعینہ دکھائے گئے تھے۔ حضرت نے فرمایا:-

خدا تعالیٰ تسلی دینے کے واسطے یہ باتیں دکھلا دیتا ہے اور اس کی تسلی بے نظیر ہوتی ہے۔ دیکھو شفا عظیمًا تمام زمین پر کسی کو یہ تسلی نہیں دی گئی کہ اِنّی احافظ کل من فی الدنیا یہ تسلی فقط ہم کو اس گھر کے متعلق عطا فرمائی گئی ہے۔ یہ خدا تعالیٰ کے عجیب کام ہیں۔

حوالہ نمبر ۱۸ از الہ ادبام ص: ۵۵۷، روحانی خزائن ج: ۳ ص: ۲۰۰

از الہ ادبام

۲۰۰

حصہ دوم

اب سمجھنا چاہیے کہ لواءِ جمالی طور پر قرآن شریف اکمل و اتم کتاب ہے مگر ایک حصہ کثیر دین کا اور طریقہ عبادات وغیرہ کا مفصل اور مبسوط طور پر احادیث سے ہی ہم نے لیا ہے اور اگر احادیث کو ہم بجلی سا قطا الاعتبار سمجھ لیں تو پھر اس قدر بھی ثبوت دینا ہمیں مشکل ہو گا کہ درحقیقت حضرت ابوبکر و عمر رضی اللہ عنہما و عثمان فوالنورینؓ اور جناب علی رضی اللہ عنہ و حضرت علیؓ نے اللہ علیہ وسلم کے صحابہ کرام اور امیر المومنین تھے اور وجود رکھتے تھے صرف فرضی نام نہیں کیونکہ قرآن کریم میں ان میں سے کسی کا نام نہیں آیا اگر کوئی حدیث قرآن شریف کی کسی آیت سے صریح مخالف و مغائر پڑے مثلاً قرآن شریف کہتا ہے کہ مسیح ابن مریم فوت ہو گیا اور حدیث یہ کہے کہ فوت نہیں ہوا تو ایسی حدیث مردود اور ناقابل اعتبار ہوگی لیکن جو حدیث قرآن شریف کے مخالف نہیں بلکہ اس کے بیان کو اور بھی بسط سے بیان کرتی ہے وہ بشرطیکہ جرح سے خالی ہو قبول کرنے کے لائق ہے۔ پس یہ کمال درجہ کی بے نصیبی اور بھاری غلطی ہے کہ یک لخت تمام حدیثوں کو ساقط الاعتبار سمجھ لیں اور ایسی متواتر پیشگوئیاں کو جو خیر القرون میں ہی تمام ممالک اسلام میں پھیل گئی تھیں اور مسلمات میں سر سمجھی گئی تھیں بمرد موضوعات داخل کر دیں۔ یہ بات پوشیدہ نہیں کہ مسیح ابن مریم کے آئینہ کی پیشگوئی ایک سولہ درجہ کی پیشگوئی ہے جس کو سب نے بالاتفاق قبول کر لیا ہے اور جس قدر صحاح میں پیشگوئیاں لکھی گئی ہیں کوئی پیشگوئی اس کے ہم پسلو اور ہم وزن ثابت نہیں ہوتی تو اثر کا اول درجہ اس کو حاصل ہے سائیل بھی اس کی مصدق ہے۔ اب اس قدر ثبوت پر پانی پھیرنا اور یہ کہنا کہ یہ تمام حدیثیں موضوع ہیں درحقیقت ان لوگوں کا کام ہے کہ خود انہی سے بصیرت دینی اور حق شناسی سے کچھ بھی بچرہ اور حصہ نہیں دیا اور باعث اس کے کہ ان لوگوں کے دلوں میں قال اللہ اور قال الرسول کی عظمت باقی نہیں رہی اس لئے جو بات ان کی اپنی سمجھ سے بالاتر ہو اس کو محالات اور مستغلات میں داخل کر لیتے ہیں۔ قانون قدرت بے شک حق اور باطل کے آزمانے کے لئے ایک آلہ ہے مگر ہر ایک قسم کی آزمائش کا اسی پر مدار نہیں۔



حوالہ نمبر ۱۹ ازالہ اوہام ص: ۹۰، روحانی خزائن ج: ۳ ص: ۱۹۲

ازالہ اوہام

۱۹۲

مستأول

## علمائے ہند کی خدمت میں نیا نامہ

۱۹۰  
اے برادرانِ دین و علمائے شیعہ متین! آپ صاحبانِ میری ان محرومات کو متوجہ ہو کر سنیں کہ اس عاجز نے جو ٹیل موعود ہونے کا دعویٰ کیا ہے جس کو کم فہم لوگ مسیح موعود خیال کر بیٹھے ہیں۔ یہ کوئی نیا دعویٰ نہیں جو آج ہی میرے منہ سے سنا گیا ہو بلکہ یہ وہی پرانا الہام ہے جو میں نے خدا سے تعالیٰ سے پا کر براہین احمدیہ کے کئی مقامات پر تصریح درج کر دیا تھا جس کے شائع کرنے پر سات سال سے بھی کچھ زیادہ عرصہ گزر گیا ہو گا میں نے یہ دعویٰ ہرگز نہیں کیا کہ میں مسیح بن مریم ہوں جو شخص یہ الزام میرے پر لگاوے وہ سراسر مفتری اور کذاب ہے بلکہ میری طرف سے عرصہ سات یا آٹھ سال سے برابر یہی شائع ہو رہا ہے کہ میں مثیل مسیح ہوں یعنی حضرت عیسیٰ علیہ السلام کے بعض روحانی خواص طبع اور عادت اور اخلاق وغیرہ کے خدائے تعالیٰ نے میری فطرت میں بھی رکھی ہیں اور دوسرے کئی امور میں جن کی تصریح انہیں رسالوں میں کر چکا ہوں میری زندگی کو مسیح ابی مریم کی زندگی سے اس قدر مشابہت ہے اور یہ بھی میری طرف سے کوئی نئی بات ظہور میں نہیں آئی کہ میں نے ان رسالوں میں اپنے تئیں وہ موعود ٹھہرایا ہے جس کے آنے کا قرآن شریف میں اجمالاً اور احادیث میں تصریحاً بیان کیا گیا ہے کیونکہ میں تو پہلے بھی براہین احمدیہ میں تصریح لکھ چکا ہوں کہ میں وہی مثیل موعود ہوں جس کے آنے کی خبر روحانی طور پر قرآن شریف اور احادیث نبویہ میں پہلے سے وارد ہو چکی ہے۔ تعجب کہ مولوی ابوسعید محمد حسین صاحب بٹالوی اپنے رسالہ اشاعت المسننہ نمبر ۶ جلد سات میں جس میں براہین احمدیہ کا ریو یو لکھا ہے ان تمام الہامات کی اگرچہ ایمانی طور پر نہیں مگر امکانی طور پر تصدیق کر چکے اور بدل و جان مان چکے ہیں مگر پھر بھی سنا جاتا ہے کہ حضرت مولوی صاحب موصوف کو بھی اور لوگوں کا شور اور غوغا دیکھ کر



حوالہ نمبر ۲۰ حقیقۃ الوحی ص: ۱۹۳، روحانی خزائن ج: ۲۲ ص: ۲۰۱، ۲۰۰

بعض اعتراضوں کے جواب

۲۰۰

حقیقۃ الوحی

اُس کی سچائی ظاہر کر دے گا۔ یہ پچیس برس کا الہام ہے جو براہین احمدیہ میں لکھا گیا۔ اور ان دنوں میں پورا ہو گا۔ جس کے کان سننے کے ہیں وہ سُنے۔

یہ تو ہم نے وہ دو تین پیشگوئیاں لکھی ہیں جن پر ہمارے مخالف مولوی اور انہیں کانیا چیلہ عبد الحکیم خان بار بار اعتراض کرتے ہیں۔ اب ہم اُن کے مقابل یہ دکھلانا چاہتے تھے کہ خدا تعالیٰ کے آسمانی نشان ہماری شہادت کیلئے کس قدر ہیں لیکن افسوس کہ اگر وہ سب کے سب لکھے جائیں تو ہزارہ جزو کی کتاب میں بھی انکی گنجائش نہیں ہو سکتی اس لئے ہم محض بطور نمونہ کے ایک سو چالیس نشان اُن میں سے لکھتے ہیں۔ اُن میں سے بعض وہ پہلے نبیوں کی پیشگوئیاں ہیں جو میرے حق میں پوری ہوئیں۔ اور بعض اس امت کے اکابر کی پیشگوئیاں ہیں اور بعض وہ نشان خدا تعالیٰ کے ہیں جو میرے ہاتھ پر ظہور میں آئے اور چونکہ میری پیشگوئیوں پر اُن پیشگوئیوں کو تقدیم زمانی ہے اس لئے مناسب سمجھا گیا کہ تحریری طور پر بھی انھیں کو تقدیم دکھا جائے اور یہ تمام پیشگوئیاں ایک ہی سلسلہ میں نمبر وار لکھی جائیں گی۔ اور وہ یہ ہیں :-

(۱) پہلا نشان۔ قال رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ان اللہ یبعث لہذہ الامۃ علی راس کل مائۃ سنۃ من یجد لہا دینہا۔ رواہ ابو داؤد یعنی خدا ہر ایک صدی کے سر پر اس امت کے لئے ایک شخص مبعوث فرمائے گا جو اس کیلئے دین کو تازہ کریگا۔ اور اب اس صدی کا چوبیسواں سال جاتا ہے اور ممکن نہیں کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے فرمودہ میں تخلف ہو۔ اگر کوئی کہے کہ اگر یہ حدیث صحیح ہے تو بارہ صدیوں کے مجددوں کے نام بتلاویں۔ اس کا جواب یہ ہے کہ یہ حدیث

محمّد خدا تعالیٰ نے مجھے صرف یہی خبر نہیں دی کہ پنجاب میں زلزلے وغیرہ آفات آئیں گی کیونکہ میں صرف پنجاب کے لئے مبعوث نہیں ہوا بلکہ جہاں تک دنیا کی آبادی ہے ان سب کی اصلاح کیلئے مامور ہوں پس میں سچ پتا ہوں کہ یہ آفتیں اور یہ زلزلے صرف پنجاب سے مخصوص نہیں ہیں بلکہ تمام دنیا ان آفات کے حصہ لیگی اور جیسا کہ امریکہ وغیرہ کے بہت سے تباہ ہو چکے ہیں یہی گھڑی کسی دن یورپ کے لئے درپیش ہو اور پھر یہ ہولناک دن پنجاب اور ہندوستان اور ہر ایک حصہ ایشیا کے لئے مقدر ہے جو شخص زندہ رہیگا وہ دیکھ لے گا۔ ص ۱۶۵

علماء اُمت میں مسلم چلی آئی ہے اب اگر میرے دعوے کے وقت اس حدیث کو وضعی بھی قرار دیا جائے تو ان مولوی صاحبوں سے یہ بھی سچ ہے بعض اکابر محدثین نے اپنے اپنے زمانہ میں خود مجدد ہونے کا دعویٰ کیا ہے۔ بعض نے کسی دوسرے کے مجدد بنانے کی کوشش کی ہے۔ پس اگر یہ حدیث صحیح نہیں تو انہوں نے دیانت سے کام نہیں لیا اور ہمارے لئے یہ ضروری نہیں کہ تمام مجددین کے نام ہمیں یاد ہوں یہ علم محیط تو خاصہ خدا تعالیٰ کا ہے ہمیں عالم الغیب ہونے کا دعویٰ نہیں مگر اُسی قدر جو خدا بتلاوے ماسوا اسکے یہ اُمت ایک بڑے حقہ دنیا میں پھیلی ہوئی ہے اور خدا کی مصلحت کبھی کسی ملک میں مجدد پیدا کرتی ہے اور کبھی کسی ملک میں۔ پس خدا کے کامل کا کون پورا علم رکھ سکتا ہے اور کون اُس کے غیب پر احاطہ کر سکتا ہے۔ بھلا یہ تو بتلاؤ کہ حضرت آدم سے لیکر آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم تک ہر ایک قوم میں نبی کتنے گزرے ہیں۔ اگر تم یہ بتلا دو گے تو ہم مجدد بھی بتلا دیں گے۔ ظاہر ہے کہ عدم علم سے عدم شے لازم نہیں آتا۔ اور یہ بھی اہل سنت میں متفق علیہ امر ہے کہ آخری مجدد اس اُمت کا مسیح موعود ہے جو آخری زمانہ میں ظاہر ہوگا۔ اب تنقیح طلب یہ امر ہے کہ یہ آخری زمانہ ہے یا نہیں یہود و نصاریٰ و دونوں قومیں اس پر اتفاق رکھتی ہیں کہ یہ آخری زمانہ ہے اگرچہ جو تو پوچھ کر دیکھ لو۔ مری پڑ رہی ہے زلزلے آرہے ہیں۔ ہر ایک قسم کی خارق عادت تباہیاں شروع ہیں پھر کیا یہ آخری زمانہ نہیں؟ اور صلیاں اسلام نے بھی اس نسل کو آخری زمانہ قرار دیا ہے اور چودھویں صدی میں سے بھی بیس سال گزر گئے ہیں۔ پس یہ قوی دلیل اس بات پر ہے کہ یہی وقت مسیح موعود کے ظہور کا وقت ہے اور میں ہی وہ ایک شخص ہوں جس نے اس صدی کے شروع ہونے سے پہلے دعویٰ کیا۔ اور میں ہی وہ ایک شخص ہوں جس کے دعوے پر پچیس برس گزر گئے اور اب تک زندہ موجود ہوں۔ اور میں ہی وہ ایک ہوں جس نے عیسائیوں اور دوسری قوموں کو خدا کے نشانوں کے ساتھ ملزم کیا۔ پس جب تک میرے اس دعوے کے مقابل پر انھیں صفا کے ساتھ کوئی دوسرا مدعی پیش نہ کیا جائے تب تک میرا یہ دعویٰ ثابت ہے کہ وہ مسیح موعود جو آخری زمانہ کا مجدد ہے وہ میں ہی ہوں۔ زمانہ میں خدا نے نوبتیں رکھی ہیں۔

حوالہ نمبر ۲۱ حقیقت النبوة ص: ۱۹۲ از مرزا محمود

## حَقِيقَتُ الْغِيَاةِ

194

## خبریں

شخص کہیگا کہ اس حدیث میں چونکہ سب استعارہ ہی استعارہ ہیں۔ اسلئے مسیح بھی ایک استعارہ ہے اور مہدی بھی ایک استعارہ ہے نہ کوئی مسیح آئے گا نہ کوئی مہدی آئے گا۔ سب استعارات میں جنہیں نہ سمجھ کر لوگ مسیح و مہدی کی منتظار کر رہے ہیں۔ چنانچہ بعض لوگ اس میں کہے ہیں بھی جو مسیح کی آمد اور مہدی کی آمد کی احادیث کو یا تو فرضی قرار دیتے ہیں یا صرف استعارہ سمجھ لیتے ہیں اگر ہر لفظ کو استعارہ قرار دینا جائز نہ کر لیا جائیگا تو کسی کا بھی حق ہوگا کہ مسیح اور مہدی کو بھی ایک استعارہ ہی قرار دے۔ اسی لفظ کے استعارہ تمام کی بھی کوئی وجہ ہوتی ہے نہ کہ بطلان ثبوت ہر لفظ کو استعارہ قرار دیا جاسکتا ہے۔

مگر صرف اسی حدیث میں حضرت مسیح موعودؑ کا نام ہی نہیں لکھا گیا اس کے علاوہ ایک اور حدیث بھی جو جیسے مسیح موعودؑ کو نبی کے نام سے یاد کیا گیا ہو اور وہ یہ ہے کہ انبیاء اخرۃ بعد الانبیاء ہاتھ میں شمشیر و دینار و واحد کونی الامم الناس یعنی ابن مریمؑ کا وہ ہے کہ وہ بیٹے نبی و عابد و عادل  
فلما اذا تمکک فاعرفوا رجل من اهل الحق و البیاض علیہ ثوبان یصلان رأسه یصلان  
و انی ادری انہ بل فیہ الصلیۃ فی کل الخیر یرفعہ الجن و یدعون الناس الی الاسلام فہلک  
فی زمانہا المثل کلہا الا الاسلام و ترجع الی اسود مع الابل و النمار مع البقر و الذیامع الغنم  
و تلج البلیان الحیات فلا تضرہم فیکث الاعدین سنۃ ثم یتلف و یصلی علیہ السہون یعنی  
انبیاء ملائی بجائے نبی طرح ملتے ہیں انکی مائیں تو مختلف ہوتی ہیں مگر ہر ایک کو تو ہر ایک نبی ہی کہہ سکتے ہیں  
تعلق رکھنے والا ہو سکتا ہے کہ اگر میرے میں کوئی نبی نہیں اور وہ نازل ہوا ہو تو میرے اب اور بھائی تو اسے پہچان لو  
کہ وہ وہاں سے سفی سفید کا ٹوٹا رنگ نہ ہو رنگ کے کپڑے پہنے ہوئے اس کے سر پرانی ٹپکنا ہو گا گو سر پہلی ہی ڈھ  
ہو اور وہ علی کے تڑکا اور خنزیر کو قتل کرے گا اور چرچہ ترک کر دے گا اور لوگوں کو اسلام کی طرف فتنے گا اس کے زہن میں  
سب سے پہلے کہ ہر ایک کو دعویٰ اسلام ہو جائے گا اور شیرازوں کو چھوئے گا بیوں کے ساتھ اور میرے بھائی کے  
ساتھ رہے پھر سب کو اپنے پاس پھیلے گا اور وہ انکو نقصان دینے میں مجاہد ہو گا میں اس کو اپنے گھر سے  
ہر جائینگے اور مسلمان انکے جنازہ کی قیادہ دینگے۔

اس حدیث میں صاف اظہار پر آنے والے مینی کو بھی کہا گیا ہو اور وہ صرف کہ نبی کی ہر ایک سی بات کو



حوالہ نمبر ۲۲ نشان آسمانی ص: ۱۳، روحانی خزائن ج: ۲ ص: ۳۷۴

۱۲

گلشن شرع را ہمے بویم	گل دیں را بارے میںم
یعنی اُس سے شریعت تازہ ہو جائیگی اور دین کے شگوفوں کو پھل لگیں گے۔ یہ اُس الہام کے مطابق ہے جو براہین احمدیہ کے صفحہ ۴۹۸ میں درج ہے جس کا ترجمہ یہ ہے کہ ہر ایک دین پر بذریعہ اس عاجز کے دین اسلام غالب کیا جائیگا اور پھر صفحہ ۴۹۱ براہین یہ الہام ہے کہ خدا تجھ کو ترک نہیں کریگا جیتک کہ خبیث اور پاک میں فرق کر کے دکھلا دے۔	
تا چہل سال اے برادر من	دور آں شہسوارے میںم
یعنی اُس روز سے جو وہ امام ملہم ہو کر اپنے تئیں ظاہر کریگا چالیس برس تک زندگی کریگا۔ اب واضح رہے کہ یہ عاجز اپنی عمر کے چالیسویں برس میں دعوت حق کے لئے بالہام خاص مامور کیا گیا اور بشارت دی گئی کہ انسی برس تک یا اس کے قریب تیری عمر ہے سو اس الہام سے چالیس برس تک دعوت ثابت ہوتی ہے جن میں سے دس برس کامل گذر بھی گئے دیکھو براہین احمدیہ صفحہ ۲۳۸ واللہ علی کل شیء قدیر اگرچہ اب تک حضرت نوح کی طرح دعوت حق کے آثار نمایاں نہیں لیکن اپنے وقت پر تمام باتیں پوری ہوں گی۔	
عاصیاں از امام معصومم	نخل و شرمسارے میںم
اس بیت میں اس بات کی طرف اشارہ ہے کہ اُس امام کی جو چودھویں صدی کے سر پر آئیگا مخالف اور منافقان بھی ہونگے جنکے لئے آخر خجالت اور شرمساری مقدر ہے اسی کی طرف اس الہام میں اشارہ ہے جو فیصلہ آسمانی میں چھپ چکا ہے اور وہ یہ ہے کہ میں فتاح ہوں تجھے فتح دؤنگا ایک عجیب مدد تو دیکھے گا اور سجدہ گاہوں میں گریں گے یعنی مخالف لوگ یہ کہتے ہوئے کہ خدا یا ہمیں بخش کہ ہم خطا دار تھے۔	

حوالہ نمبر ۲۳ ضمیمہ انجام آتھم ص: ۵۳، روحانی خزائن ج: ۱۱ ص: ۳۳۷

۳۲۷

رکھتی تھی کہ ان لوگوں کو احمد بیگ کی وفات کے بعد اپنے عزیز داماد کی موت کا فکر کھانے لگتا۔ اور اس طرح ہراساں ہو کر رجوع الی الحق کرتے۔ کیا انسان میں یہ خاصیت نہیں کہ چشم دید تجربہ اس پر سخت اثر ڈالتا ہے سو درحقیقت ایسا ہی ہوا۔ احمد بیگ کی موت نے اس کے وارثوں کو خاک میں ملا دیا۔ اور ایسے غم میں ڈالا کہ گویا وہ مر گئے اور سخت قوت میں پڑ گئے اور دعائیں اور تضرع میں لگ گئے۔ سو ضرور تھا کہ خدا تعالیٰ اس جگہ بھی تاخیر ڈالتا۔ جیسا کہ آتھم کے متعلق کی پیشگوئی میں تاخیر ڈالی۔ ہم عربی مکتوب میں لکھ چکے ہیں کہ یہ پیشگوئی بھی مشروط بہ شرط تھی اور ہم یہ بھی بار بار بیان کر چکے ہیں کہ وعید کی پیشگوئی بغیر شرط کے بھی تخلف پذیر ہو سکتی ہے جیسا کہ یونس کی پیشگوئی میں ہوا۔ ✽

سو چاہیے تھا کہ ہمارے نادان مخالف انجام کے منتظر رہتے اور پہلے ہی سے اپنی بدگوہری ظاہر نہ کرتے۔ بھلا جس وقت یہ سب باتیں پوری ہو جائیں گی۔ تو کیا اس دن یہ الحق مخالف بیعتے ہی رہیں گے اور کیا اس دن یہ تمام لڑنے والے سچائی کی تلوار سے ٹکڑے ٹکڑے نہیں ہو جائیں گے ان یوقوف کو کوئی بھلا گئے کی جگہ نہیں رہے گی۔ اور نہایت صفائی سے ناک کٹ جائے گی۔ اور ذلت کے سیاہ داغ ان کے منخوس چہروں کو بندروں اور سوروں کی طرح کر دیں گے۔ سُنو! اور یاد رکھو! کہ میری پیشگوئیوں میں کوئی ایسی بات نہیں کہ جو خدا کے میوں اور رسولوں کی پیشگوئیوں میں ان کا نمونہ نہ ہو۔ بیشک یہ لوگ میری تکذیب کریں۔ بیشک گالیاں دیں۔ لیکن اگر میری پیشگوئیاں نبیوں اور رسولوں کی پیشگوئیوں کے نمونہ پر ہیں تو ان کی تکذیب انہیں پر لعنت ہے۔ چاہیے کہ اپنی جانوں پر رحم کریں اور رُوسیاہی کے ساتھ نہ مریں کیا یونس کا قصہ انہیں یاد نہیں کہ کیونکر وہ عذاب ٹل گیا۔ جس میں کوئی شمع بھی نہ تھی۔ اور اس جگہ تو شرطیں موجود ہیں۔ اور احمد بیگ کے اصل وارث جن کی تنبیہ کے لئے یہ نشان تھا اُس کے مرنے کے بعد پیشگوئی سے ایسے متاثر ہوئے تھے کہ اس پیشگوئی کا نام لے لیکر روتے تھے اور پیشگوئی کی عظمت دیکھ کر اس گاؤں کے تمام مرد و عورت کانپ اٹھتے تھے۔ اور عورتیں چیخیں مار کر کہتی تھیں کہ ہائے وہ باتیں سچ نکلیں چنانچہ وہ لوگ اُس دن تک غم اور خوف میں تھے جب تک اُن کے داماد سلطان کی مبعاد گزر گئی۔ پس اس تاخیر کا یہی سبب تھا جو خدا کی قدیم سنت کے موافق ظہور میں آیا۔ خدا کے الہام میں جو تعویذ توبی

اس پیشگوئی کی تصدیق کے لئے حضرت مولانا محمد علی شاہ علیہ السلام نے بھی پہلے سے ایک پیشگوئی فرمائی ہے کہ یہ توجہ و دلدادہ۔ یعنی وہ مسیح موعود ہیں جو کریم اور تیز وہ صاحب اولاد ہوگا۔ اب ظاہر ہے کہ تہذیب اور اولاد کا ذکر کرنا عام طور پر مقصود نہیں کیونکہ عام طور پر ہر ایک شادی کر لیتا ہے اور اولاد

ان کے شہادت کا جواب دے رہے ہیں اور فرما رہے ہیں کہ یہ باتیں ضرور پوری ہوں گی۔ جسے



## قادیانی اور فرضی مظالم کا پروپیگنڈا

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ  
الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَسَلَامٌ عَلٰی عِبَادِهِ الَّذِیْنَ اصْطَفٰی!

”ختم نبوت کانفرنس برطانیہ کے موقع پر حضرت مولانا محمد یوسف لدھیانوی شہیدؒ سے جنگ لندن کی طرف سے لیا گیا ایک پینل انٹرویو، قارئین کی خدمت میں پیش ہے۔“  
(سعید احمد جلال پوری)

جنگ پینل: ... مولانا محمد یوسف لدھیانوی صاحب، ابھی حال ہی میں مرزا طاہر احمد نے دعویٰ کیا ہے کہ مختلف افراد کی جانب سے مباہلے کے چیلنج میں اسے فتح ہوئی ہے، اس کے علاوہ مباہلے کی تاریخی حقیقت کیا ہے؟ اس بارے میں ہمیں کچھ بتائیے۔

جواب: ... سب سے پہلے یہ بات سمجھنے کی ہے کہ مباہلہ ایک اسلامی اصطلاح ہے بلکہ یہ کہنا مناسب ہوگا کہ اس کا ذکر قرآن شریف میں آیا ہے۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں نجران کے عیسائیوں کا وفد آیا تھا اور وہ چھ آدمیوں پر مشتمل تھا، انہوں نے

آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم سے بحث و مباحثہ کیا اور وہ چند منٹوں میں لا جواب ہو گئے، اس کے بعد آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم پر آیت نازل ہوئی جس کا ترجمہ یہ ہے کہ:

”اب بھی جو شخص آپ سے کٹ جیتی کرتا ہے اس کے بعد کہ آپ کے پاس علم آچکا ہے تو آپ کہہ دیجئے آؤ! ہم بلا تے ہیں اپنے بیٹوں کو تم بلاؤ اپنے بیٹوں کو، تم لاؤ اپنی عورتوں کو ہم لاتے ہیں اپنی عورتوں کو، تم خود آؤ ہم خود آئیں گے، پھر مل کر اللہ کے سامنے گڑگڑائیں اور ہم جھوٹوں پر اللہ کی لعنت ڈالیں، مل کر دُعا کریں یا اللہ! ان دو فریقوں میں سے جو فریق جھوٹا ہے اس پر لعنت بھیجئے۔“

حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا کہ میں تم لوگوں کو مباہلے کی دعوت دیتا ہوں، تو عیسائیوں نے کہا کہ ہمیں ایک رات کی مہلت چاہئے، ہم اس پر غور کریں گے۔ ان کے مولوی عبد المسیح نے ان سے کہا کہ جب کسی قوم نے سچے نبی سے مباہلہ کیا تو وہ بچ نہیں سکتی، اس نے اپنے لوگوں سے کہا کہ جا کر اس شخص سے کہو کہ ہم تمہیں جزیہ دیا کریں گے اور تمہاری ماتحتی قبول کر لیں گے لیکن مباہلہ نہیں کریں گے۔ چنانچہ وہ رسول اللہ صلی علیہ وسلم کی خدمت میں آئے اور کہا کہ ہم مباہلے کے لئے تیار نہیں ہیں، ہم لوگ آپ کو ٹیکس دیا کریں گے۔ چنانچہ ان لوگوں کے ساتھ مصالحت خلفائے راشدینؓ کے زمانے تک قائم رہی۔ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ: ”اگر وہ لوگ مباہلے کے لئے آجاتے تو ان کے درختوں پر کوئی پرندہ بھی زندہ نہ بچتا۔“ یہ ہے اصل حقیقت مباہلے کی۔

ایک بات ہمیں سمجھ لینی چاہئے کہ ہمارا مقابلہ مرزا طاہر احمد سے نہیں بلکہ ہمارا مقابلہ تو اس کے دادا مرزا غلام احمد قادیانی سے ہے، اب دیکھنا یہ ہے کہ مرزا غلام احمد قادیانی کے ساتھ بھی کیا کسی نے مباہلہ کیا؟ یا کوئی چیلنج بازی ہوئی؟ جس طرح مرزا طاہر چیلنج کر رہا ہے اس کا دادا بھی کیا کرتا تھا، جواباً علماء بھی اس کو چیلنج کیا کرتے تھے، چنانچہ مرزا غلام احمد

کے دو مباہلے ہمارے علم میں موجود ہیں جن سے مرزا طاہر اور ان کی جماعت والے انکار نہیں کر سکتے۔

مثلاً: مرزا غلام احمد کا ایک مباہلہ مولانا عبدالحق غزنوی کے ساتھ امرتسر میں عید گاہ کے میدان میں ظہر کے بعد ہوا تھا، دونوں نے آمنے سامنے بددعا کی، مرزا غلام احمد قادیانی نے یہ اصول بیان کیا کہ مباہلہ کرنے والوں میں سے جو فریق جھوٹا ہو وہ سچے کی زندگی میں مرتا ہے، چنانچہ غلام احمد قادیانی ۲۶ مئی ۱۹۰۸ء کو مولانا عبدالحق غزنوی کی زندگی میں فوت ہوا اور وبائی ہیضے سے مرا تھا، جس کو وہ خود عذاب الہی قرار دیتا تھا، جبکہ حضرت مولانا عبدالحق غزنوی ۱۶ مئی ۱۹۱۷ء کو دنیا سے رخصت ہوئے، اب اس مباہلے کے نتیجے میں جھوٹے کی ہلاکت کو نہ ماننا حقیقت میں اللہ تعالیٰ کا انکار اور مباہلے کا انکار ہے۔

جنگ پینل:۔۔۔ اس وقت مباہلے کا چیلنج جاری کرنے کے

پیچھے کیا محرکات کارفرما ہو سکتے ہیں؟

جواب:۔۔۔ جون ۱۹۸۸ء میں مرزا طاہر احمد نے یکا یک مباہلے کا چیلنج جاری کر دیا تھا کیونکہ ان کی جماعت میں شدید ترین اختلافات پیدا ہو چکے تھے جو اندر دے ہوئے تھے، ہماری اطلاعات کے مطابق مرزا طاہر احمد کا بھائی مرزا رفیع اپنی الگ جماعت بنانے کی کوشش میں تھا، اس لئے یہ شدید ترین ذہنی پریشانی میں مبتلا تھا۔ آپ جانتے ہیں کہ جب حکومتوں کے خلاف عوامی تحریک چلتی ہے تو وہ توجہ ہٹانے کے لئے نیا شوشہ چھوڑ دیتی ہیں جیسا کہ سرحدی جھڑپیں وغیرہ وغیرہ، تو مرزا طاہر احمد نے اپنی جماعت اور ذہن کو پرسکون کرنے کے لئے چیلنج کر دیا تھا اور پاکستان کا کوئی شہر ایسا نہیں تھا جہاں سے علمائے کرام نے مرزا طاہر احمد کے مباہلے کے چیلنج کو قبول نہ کیا ہو، خود مجھے تقریباً دو ماہ بعد مرزا طاہر احمد کے مباہلے کی کاپی ملی جس کے جواب میں میں نے لکھا کہ میں مباہلے کے لئے حاضر ہوں اور اپنی طرف سے ۲۳ مارچ ۱۹۸۹ء کی تاریخ مقرر کرتا ہوں اور ظہر کے بعد مینار پاکستان کے میدان میں پہنچ جاؤں گا، لیکن اس کے ساتھ ہی میں نے یہ بھی لکھا کہ مجھے اس جگہ پر

اصرار نہیں آپ جس تاریخ، وقت اور جگہ کا انتخاب کریں گے میں وہاں پہنچ جاؤں گا۔ ان کا ایک رویہ یہ بھی ہے وہ کہتے ہیں کہ ”تو ہے کون اور تیری قیمت کیا ہے کہ مرزا طاہر احمد کا مقابلہ کر رہا ہے؟“ تو میں نے جواب لکھا کہ تم اپنے ساتھیوں کو لے آؤ اور میں بھی اپنے ساتھیوں کو لے آؤں گا اور یہ بھی لکھو کہ سولاؤں، ایک لاکھ لاؤں یا دس لاکھ آدمیوں کو لاؤں، اس کے جواب میں ان کے سیکریٹری کا جواب تھا کہ تم مباہلے سے گریز کر رہے ہو، میں نے کہا کہ گریز کیسا؟ تو کہنے لگے کہ تم اس کا غدر پر لعنت اللہ علی الکاذبین لکھ کر بھیج دو تو مباہلہ مکمل ہو گیا۔ میں نے کہا کہ یہ مباہلہ تو نہ ہو مذاق ہو گیا، پھر میں نے قرآن کریم، حدیث شریف اور مرزا غلام احمد کی کتابوں سے خصوصی حوالہ جات دیئے کہ مباہلہ کے لئے دونوں فریقوں کا ایک میدان میں آنا ضروری ہے، میں نے یہ بھی لکھا کہ اب بھی اگر تم وقت اور تاریخ مقرر کر کے مباہلے کے میدان میں نہیں آئے اور تکفیر سے باز نہ آئے تو خدا کی لعنت کے نیچے مرو گے۔ اس دن کے بعد اس نے مجھے کبھی دوبارہ مباہلے کا چیلنج نہیں کیا۔ میرے خط کا جواب تک نہیں دیا، اب سات سال کے بعد اس نے دوبارہ مباہلے کا چیلنج کر دیا ہے۔

جنگ پینل :-... قادیانیوں کی طرف سے پوری دنیا میں یہ

پروپیگنڈا کیا جاتا ہے کہ پاکستان میں ان پر مظالم ہو رہے ہیں، کیا ان کی فرضی مظلومیت سے متعلق کچھ کہنا چاہیں گے؟

جواب :-... قادیانیوں کی خاص تکنیک ہے، اپنے اوپر ہونے والے فرضی مظالم کا

ذکر کرتے رہتے ہیں، اس موضوع پر گو کہ مولانا اللہ وسایا اظہار خیال کر چکے ہیں لیکن یہاں پر ایک اور واقعہ پیش کرنا ضروری سمجھتا ہوں۔ سرگودھا میں مرزا کی ایک تھانے میں گئے اور تھانیدار سے کہا کہ ہمارے خلاف یعنی قادیانیوں کے خلاف ایک پرچہ درج کریں، تو تھانیدار نے کہا کہ پرچہ کیسے درج کروں کیونکہ دعویٰ کرنے والا کوئی موجود نہیں؟ تو وہ لوگ کہنے لگے اللہ کے واسطے یہ پرچہ درج کر دیں اس طرح ہمیں سیاسی پناہ مل جائے گی۔ میں پورے دعوے سے کہتا ہوں کہ پورے پاکستان کے ملازمین کا اگر سروے کرایا جائے تو ان



میں بڑے بڑے عہدوں پر ایک تہائی قادیانی ملیں گے اور ہمارے نو جوان جوتے چٹاتے پھرتے ہیں اور یہ لوگ مزے کر رہے ہیں۔ ایک تکنیک ان کی یہ بھی ہے کہ جب کوئی قادیانی کسی محکمے میں پہنچتا ہے تو وہ اپنے ماتحتوں کو متاثر کر کے قادیانیت کی طرف مائل کرتا ہے، اگر یہ کسی چھوٹے عہدے پر ہو تو اپنے افسران بالا کے خلاف غلط رپورٹیں اوپر بھیجتا رہتا ہے۔ ایک اور طریقہ ان کا یہ ہے کہ اپنی جماعت میں اتحاد پیدا کرنے کے لئے یہ مولویوں کو گالیاں دیتے رہتے ہیں، غلام احمد قادیانی بھی یہی کیا کرتا تھا، وہ تو پوری دنیا کے علماء کے خلاف تھا اور کہتا تھا کہ تمام اسلامی ممالک میں قادیانیوں کو کافر قرار دیا جا رہا ہے، فتوے دیئے جا رہے ہیں، صرف حکومت برطانیہ قادیانیوں کو پناہ دیئے ہوئے ہے، اس لئے ہم کو ان کا شکریہ ادا کرنا چاہئے۔

ہم لوگ برطانیہ میں آباد پاکستانیوں کو خطبات کے ذریعے یہ بتا رہے ہیں کہ یہاں پر آپ قادیانیوں کو غیر مسلم اقلیت تو قرار نہیں دلواسکتے لیکن ایک کام تو کر سکتے ہو کہ اسلام کے نام پر تمہارے حقوق جو قادیانیوں کو دیئے جا رہے ہیں اس کے خلاف کھل کر احتجاج کرو، چنانچہ گلاسگو میں ایسا ہی ہوا، وہاں پر مسلمانوں کے حقوق کے لئے کمیٹی بنائی گئی تھی لیکن اس میں دو قادیانی تھے، تو وہاں پر مسلمانوں نے کہا کہ یہ تو ہمارے نمائندے نہیں ہو سکتے کیونکہ یہ غیر مسلم ہیں، جیسا کہ سکھ، ہندو اور عیسائی ہیں، اس بنیاد پر اس کمیٹی سے قادیانیوں کو نکال باہر کیا گیا۔ میرے خیال میں، مسلمان دنیا میں جہاں کہیں بھی آباد ہیں، ایسے اقدامات کر کے وہ لوگوں کو بتا سکتے ہیں کہ یہ غیر مسلم ہیں۔

اس کے علاوہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے زمانے میں منافقین کا ایک بہت بڑا گروہ پیدا ہوا تھا، قرآن کریم میں ان کی علامتیں کئی جگہ بتائی گئی ہیں، ان میں ایک علامت ہے جو قادیانیوں پر برابر فٹ بیٹھتی ہے، چنانچہ قرآن کریم میں ہے کہ: ”اگر آپ کو کوئی بھلائی یا خوشی پہنچے تو ان کو بہت بری لگتی ہے اور اگر آپ کو کوئی تکلیف پہنچے تو خوش ہوتے ہیں۔“ آپ مسلمانوں کی پوری تاریخ اٹھا کر دیکھ لیں جہاں بھی مسلمانوں پر کوئی آفت آئی



قادیانیوں نے خوشی کے شادیانے بجائے، چراغاں کئے، جب بغداد کا سقوط ہوا تو قادیانیوں نے گھی کے چراغ جلائے، اسی طرح جب ترکی پر زوال آیا تو مرزا محمود نے کہا کہ سلطنت کا خلیفہ ہمارا نہیں تھا، یعنی پورا عالم اسلام تلملارہا تھا اور قادیانی خوشیاں منا رہے تھے، قادیانیوں کے سرکاری اخبار الفضل میں اس زمانے میں ایک بیان شائع ہوا تھا جس میں کہا گیا کہ: ”انگریز کو مسیح موعود نے اپنی تلوار کہا ہے اور ہم مسیح موعود کی تلوار کی چمک دیکھنا چاہتے ہیں۔“

شرعی عدالت کے سابق جج مولانا عبدالقدوس صاحب پشاور میں جب پروفیسر تھے تو انہوں نے ایک پروفیسر سے پوچھ لیا کہ کیا آپ قادیانی ہوتے ہیں؟ اس کا چہرہ کھل گیا اور ان سے پوچھا کہ آپ کو کیسے معلوم ہوا؟ تو مولانا ان سے کہنے لگے کہ تمہارے چہرے پر ایک خاص قسم کی لعنت برس رہی ہے جسے میں محسوس کرتا ہوں۔ تو آدمی کے چہرے سے ہی اس کی اصلیت معلوم ہو جاتی ہے۔ مرزا طاہر کے چہرے سے اس کی حقیقت واضح ہو جاتی ہے کہ یہ آدمی جھوٹے نبی کا پرچار کرنے والا ہے اور ہر قادیانی کے چہرے پر تحریر درج ہو جاتی ہے جسے ہمارا عبدالرحمن یعقوب باوا بھی پڑھ لیتا ہے، اس کی آواز سے بھی معلوم ہو جاتا ہے کہ یہ قادیانی ہے۔

ہم نے مولانا عبدالحق غزنوی صاحب کے مبلہ کے بارے میں ایک چھوٹا سا رسالہ بعنوان ”خدائی عدالت کا فیصلہ! مرزا جھوٹا تھا“ چھاپا تو ہمیں قادیانیوں نے ماں بہن کی گالیوں کے ٹیلی فون کئے کیونکہ یہ لوگ دلیل کا جواب دلیل سے دینے کے قائل نہیں ہیں۔ ایک اور بات آپ کو معلوم ہوگی کہ امریکی شہر سان فرانسکو میں زلزلہ آیا تو انہوں نے کہہ دیا یہ قادیانیوں کی وجہ سے ہوا ہے، کیونکہ ان کا مزاج ہے کہ دنیا میں رونما ہونے والے واقعات کو اپنے کھاتے میں ڈالتے ہیں، جبکہ ان کے پیشوا مرزا طاہر کی بے بسی کا حال یہ ہے کہ اس نے اپنے کلام میں لکھا ہے کہ دوستو تم سے بچھڑ گیا ہوں، دوسری طرف اس کے مرید کہتے ہیں کہ اے آقا! ہم میں کب واپس آئیں گے کیا یہ

عذاب نہیں ہے؟

جنگ پینل: ...مرزا طاہر نے کہا ہے کہ کراچی اور پاکستان

میں چونکہ ہمارے خلاف امتیازی سلوک روارکھا جا رہا ہے، اس لئے

وہاں عذاب آئے گا، اس کے بارے میں آپ کی کیا رائے ہے؟

جواب: ...مرزا طاہر احمد جو عذاب کی پیش گوئیاں کر رہا ہے اس سے یہ پوچھنا

چاہئے کہ کراچی میں کون سا ظلم ہو رہا ہے قادیانیوں پر؟ یہ تو ایسی بات ہوئی کہ: ”ماروں

گھٹنا پھوٹے آنکھ“ یہ تو ہم بھی جانتے ہیں اور آپ بھی جانتے ہیں کہ کراچی میں جو کچھ ہو

رہا ہے وہ ایک بین الاقوامی سازش ہے، اخبارات میں مختلف خبریں آرہی ہیں کہ را کے

ایجنٹ گڑ بڑ کر رہے ہیں، یا امریکہ مداخلت کر رہا ہے، ان تمام چیزوں اور پس منظر کو

سامنے رکھنے کے بعد جب مرزا طاہر یہ پیش گوئی کر رہا ہے کہ وہاں عذاب آئے گا اور اگر

میں یہ سمجھوں تو یہ سمجھنے میں کیا حق بجانب نہیں ہوں گا؟ کہ مرزا طاہر احمد بھی اس سازش

میں ایک مہرہ ہے، مجھے جہاں تک اطلاع ملی ہے اس کے مطابق بین الاقوامی سطح پر ایک

نقشہ تیار کیا جا چکا ہے اس نقشے میں رنگ بھرنے کے لئے کراچی میں فسادات کروائے

جا رہے ہیں اور سندھ کا ایک علاقہ ان کے لئے مخصوص کر دیا گیا ہے، آپ یہ بات نوٹ

کریں کہ کراچی میں درجنوں افراد ہر دو تین روز بعد ہلاک ہو رہے ہیں لیکن ان لوگوں

نے کبھی کلمہ افسوس نہیں کہا اور مرزا طاہر نے کبھی یہ نہیں کہا کہ یا خدا! کراچی کے حالات پر

رحم فرما!

جنگ پینل: ...کراچی کے حالات کی خرابی میں کیا

قادیانیوں کا ہاتھ ہے؟ اس بارے میں آپ کچھ تبصرہ کریں گے؟

جواب: ...ہماری جماعت ظاہر بات ہے کہ ایک تبلیغی جماعت ہے، ہمارا

سیاست میں کچھ عمل دخل نہیں ہے، ہم اپنے مسلمان بھائیوں کو متوجہ کر سکتے ہیں، علمائے

کرام کو ایک پلیٹ فارم پر جمع کرنا اور معروضات پیش کرنے کا کام بھی ہم کرتے رہے ہیں

اور ان شاء اللہ کرتے رہیں گے لیکن ہماری مشکل یہ ہے کہ ہماری حکومت یا ہماری حکومت میں موجود لوگوں نے رسمی طور پر تو قادیانیوں کو غیر مسلم اقلیت تسلیم کر لیا ہے لیکن ابھی تک وہ لوگ اس کے قائل اور معتقد نہیں ہیں، بلکہ وہ قادیانیوں کو ملک کا مخلص سمجھتے ہیں جبکہ اس بھولے پن کی وجہ سے یہ لوگ سازشوں کا شکار بھی ہو رہے ہیں، میں نہیں جانتا کہ موجودہ بے نظیر حکومت میں کتنے قادیانی موجود ہیں؟ حکومت اور ایم کیو ایم کے درمیان مذاکرات کی ناکامی میں بھی قادیانیوں کا ہاتھ ہے اور یہ کسی قیمت پر بھی خوش نہیں ہوں گے کہ کراچی میں رہنے والے لوگ آپس میں امن و امان سے مل جل کر رہیں اور پورا ملک امن کا گہوارہ بن جائے، کیونکہ پاکستان قادیانیوں کی خواہش کے خلاف بنا ہے، مرزا محمود اور دوسرے قادیانیوں کی قبروں پر یہ لکھا ہوا تھا کہ ہماری لاشیں یہاں پر امانتاً دفن ہیں، جوں ہی حالات بہتر ہوں ہماری لاشوں کو قادیان میں دفنایا جائے، اب یہ الفاظ ان کی قبروں سے منادیئے گئے ہیں لیکن نظریہ اب بھی وہی ہے کہ ان کے اصل مرکز قادیان کے علاقے کو کھلا علاقہ قرار دے دیا جائے۔ قادیانیوں کی بدینتی کے کچھ شواہد اور بھی ہیں، کراچی کی شاہ فیصل کالونی میں ایک مکان سے فائرنگ ہوئی، تحقیقات پر معلوم ہوا کہ مکان قادیانیوں کا تھا اور فائرنگ کرنے والے بھی قادیانی تھے، اسی طرح ماڈل کالونی میں بھی بہت سے قادیانی جمع ہو گئے ہیں کیونکہ یہ بہت اچھا علاقہ تصور کیا جاتا ہے، وہاں بھی وقفے وقفے سے فائرنگ کے واقعات ہوتے تھے، وہاں پر آباد تمام برادریوں کے بڑوں نے جمع ہو کر سوچا کہ بات کیا ہے کہ ہم لوگ تو آپس میں لڑتے نہیں، لیکن ایسا کیوں ہوتا ہے؟ معلوم ہوا کہ ایک شخص جس کے پاس ملک سے باہر جاتے ہوئے مرزا طاہر احمد ٹھہرا تھا وہ اس گروہ کا سرغنہ قادیانی ہے، اس نے اپنے رضا کاروں کو اسلحہ دے رکھا تھا جو یہ کاروائیاں کرتے تھے۔ اب بھی جب کسی علاقے میں امن و امان ہوتا ہے، وہاں یہ لوگ فائرنگ کر کے غائب ہو جاتے تھے، اسی طرح سینوں کی مسجد پر اسکوٹر پر دو افراد فائرنگ کر کے بھاگ گئے اور اسی طرح شیعوں کی امام بارگاہ پر فائرنگ کی اور غائب ہو گئے، جن لوگوں کو پکڑا گیا ہے وہ قادیانی ہیں، میرا

سوال یہ ہے کہ حکومت نے فائرنگ کے واقعات کی تحقیقات کے دوران اس نہج پر کیوں نہیں سوچا کہ اس گڑ بڑ کے پیچھے قادیانیوں کا ہاتھ ہو سکتا ہے؟ کیونکہ قادیانی کوئی بھی کام غیر منظم طریقہ سے نہیں کرتے، یہ لوگ اپنے امیر اور خلیفہ کے حکم کی تعمیل کرتے ہیں، ہمارے پاس اس قسم کے شواہد موجود ہیں جن سے ظاہر ہوتا ہے کہ جب مرزا طاہر احمد یہ کہتا ہے کہ حالات مزید خراب ہوں گے تو یہ اس کی پلاننگ ہے، ہمارے پاس نہ تو اسلحہ ہے اور نہ ہی ہمارے پاس کوئی مؤثر سیاسی طاقت ہی ہے، ہم تو صرف اور صرف قوم کو خطرات سے آگاہ کر سکتے ہیں۔

(ہفت روزہ ختم نبوت کراچی ج: ۱۵: ش: ۱۳)

# قادیانی شبہات اور جوابات

---



## قادیانی شبہات

محترم مولوی محمد یوسف صاحب!

آپ کا ۱۶/۷/۱۳۹۹ھ کا طویل مراسلہ مجھے کوئی ایک ہفتہ قبل ملا تھا، اس کے لئے دل سے شکر گزار ہوں۔

آپ کا مراسلہ ۵ ربیع الاول مجھے ملا تھا، آپ نے اب بھی بار بار اپنے اسی مراسلے کے حوالے دیئے ہیں، بخدا مجھے وہ مراسلہ نہیں ملا۔

ج:۔۔۔ دوبارہ اس کی نقل بھیج دی ہے، اُمید ہے مل جائے گا۔

۲:۔۔۔ یہ تو میں پہلے بھی عرض کر چکا ہوں کہ کسی پر الزام دھرنے کا کیا ہے، جب دلوں میں کھوٹ ہو، بغض ہو، تعصب ہو، اور یہ تہیہ بھی ہو کہ اپنے مخالف الخیال کی کوئی بات کیسی ہی اچھی کیوں نہ ہو اُسے ماننا ہی نہیں یا اسے کسی نہ کسی رنگ میں توڑ مروڑ کر ضرور بیان کرنا ہے، تو پھر مجھ جیسے بے علم انسان کے بس کا روگ نہیں کہ کسی ”ابوالحکم“ سے کوئی بات منوا سکوں۔

ج:۔۔۔ خصوصاً جب ”بے علم انسان“ کسی ”بوسلیم“ کا شکارِ ردِ جل ہو جائے۔

۳:۔۔۔ خصوصاً اس وقت جب وہ یہ کہے کہ ”جو شخص حضرت خاتم النبیین صلی اللہ علیہ وسلم کے بعد نبوت کا مدعی ہو، اس کا جھوٹا ہونا میرے نزدیک کسی دلیل کا محتاج نہیں، خود اس کا دعویٰ نبوت ہی سو جھوٹ کا ایک جھوٹ ہے۔“

ج:۔۔۔ بلاریب و تردّد مدعی نبوت سے دلائل ماننا عقیدہ حتم نبوت میں شک کے مترادف ہے! اسی لئے حضرت امام ابوحنیفہؒ مدعی نبوت سے دلائل مانگنے کو کفر باور

کرتے ہیں۔

۴:۔۔۔ اس بارے میں صرف اتنا ہی کہنا مناسب سمجھتا ہوں کہ آپ نے تو حضرت ابن عربیؒ اور حضرت قاسم نانوتویؒ جیسوں کو بھی ایک طرف رکھ دیا، جن کا عقیدہ یہ تھا کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے بعد نبوت غیر تشریحی ممکن ہے۔

ج:۔۔۔ ان دونوں بزرگوں کا عقیدہ وہی ہے جو میرا ہے، وہ بھی مدعی نبوت اور اس کے ماننے والوں کو دائرۃ اسلام سے خارج سمجھتے ہیں۔

۵:۔۔۔ آپ نے اپنے اس طویل مراسلہ میں جگہ جگہ الحاد، زندقہ، کفر، کذب وغیرہ کے فتوے خوب استعمال کئے ہیں۔

ج:۔۔۔ بے محل یا محل و موقع کے عین مطابق؟ اگر کوئی بے محل فتویٰ صادر کیا ہو تو اس کی نشاندہی کریں۔ آپ کا کیا خیال ہے کہ آپ کفر و الحاد بھی کریں اور آپ کو کافر و ملحد بھی نہ کہا جائے؟

۶:۔۔۔ پیارے مولوی صاحب! یہ دور جس میں آپ اس قسم کی تکنیک استعمال کرتے ہیں، سائنسی دور ہے۔

ج:۔۔۔ کیا سائنسی دور میں دین اور دینی اصطلاحات نہیں چلتیں؟  
۷:۔۔۔ آپ کو عقل سے خود بھی کام لینا پڑے گا اور دوسروں کے سامنے بھی عقل اور دلائل کے ساتھ ہی لب کشائی کرنی پڑے گی۔

ج:۔۔۔ مجھے بتائیے کہ میں نے کون سی بات بے دلیل کہی؟  
۸:۔۔۔ یہ میری قسمت کہ واسطہ ہی آپ جیسی ہستی سے پڑ گیا جو لکھنا تو بہت جانتی ہے (اور شاید بولنا بھی خوب جانتی ہو)، مگر ”کچھ نہ سمجھے خدا کرے کوئی!“ کے مصداق نہ خود سمجھنے کی کوشش کرے اور نہ ہی کسی دوسرے کے پلے کچھ ڈال سکے۔

ج:۔۔۔ یہی شکایت مجھے اپنے ذوق فہم حریف سے ہے۔

۹:۔۔۔ آپ فرماتے ہیں: ”قرآن شریف سے ثابت ہے کہ ہر ایک نبی آنحضرت

صلی اللہ علیہ وسلم کی امت میں داخل ہے۔“ الحمد للہ!

ج:۔۔۔ ”الحمد للہ!“ کے بجائے ”استغفر اللہ“ لکھنا تھا کہ آپ نے پہلے عدا یا سہواً جو غلط الزام لگایا تھا، خدا سے معاف فرمائے۔

۱۰:۔۔۔ آپ نے یہ تو تسلیم فرمالیا کہ بوقت نزول حضرت عیسیٰ نبی بھی ہوں گے اور امتی بھی، تو یہ بات واضح ہو گئی کہ ان کے نزول سے ختم نبوت متاثر نہ ہوگی، لیکن یہی دعویٰ حضرت مرزا صاحب کا ہے۔

ج:۔۔۔ آپ کو غلط فہمی ہوئی ہے، ایک ہے کسی نبی کا آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی امت میں داخل ہونا، یہ تو قرآن میں منصوص ہے، اور ایک آپ کے کسی امتی کا نبوت حاصل کر لینا، یہ عقلاً و شرعاً باطل ہے، اور مرزا صاحب اسی باطل کے قائل ہیں۔

۱۱:۔۔۔ یہ بھی خوب ہے کہ اسی کی بنا پر انہیں کافر، زندیق، فاسق، فاجر، ملحد، دجال اور نہ جانے کیا کیا کہا جاتا ہے۔

ج:۔۔۔ اس لئے کہ جو شخص آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے بعد حصول نبوت کا دعویٰ کرے، اسے آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے دجال و کذاب کہا ہے، پس ایسے شخص کے فاسق و فاجر اور ملحد و دجال ہونے میں کیا شک رہ جاتا ہے؟

۱۲:۔۔۔ آپ نے ”ازالہ اوہام“ صفحہ: ۲۸۹ کا حوالہ حسب عادت کہہ نہنا مکمل پیش فرما کر دیانت کا کچھ اچھا مظاہرہ نہیں کیا، اس فقرہ سے ملحق الفاظ یہ ہیں جو آپ خود چھپا گئے، یا پھر آپ کے پاس مواد ہی اتنا کتر ایونتا ہوگا، اور وہ الفاظ یہ ہیں:

”اور بعض صحابی جو اس اجماع کے مخالف قائل ہوئے کسی نے ان کی تکفیر نہیں کی اور نہ ان کا نام ملحد اور ضال اور مآول مخطی رکھا، پھر یہ بھی دیکھنا چاہئے کہ ہمارے نبی صلعم کا جسمانی معراج کا مسئلہ بالکل مسح کے جسمانی طور پر آسمان پر چڑھنے اور آسمان سے اترنے کا ہم شکل ہے۔“

ج:۔۔۔ میں نے جس دعویٰ کے لئے ”ازالہ“ کی عبارت کا حوالہ دیا تھا کیا ان

منقولہ الفاظ سے اس دعویٰ کی تردید ہوتی ہے؟ اگر نہیں تو پھر شکایت کیوں؟ پس جب معراج جسمانی پر صحابہؓ کا اجماع تھا تو یقیناً حضرت مسیح کے رفع جسمانی پر بھی اجماع ہوا۔  
 ۱۳:۔۔۔ حضرت عائشہ صدیقہؓ کا ہمارے نبی صلعم کے جسمانی معراج کی نسبت انکار کرنا درحقیقت اور درپردہ مسیح کے جسمانی رفع اور معراج سے بھی انکار ہے۔

ج:۔۔۔ جیسا کہ باقی سب صحابہؓ کا معراج جسمانی کا اقرار کرنا حضرت عیسیٰ علیہ السلام کی حیات و رفع جسمانی کا اقرار ہے۔

۱۴:۔۔۔ کیوں جناب! اب بھی آپ میرے اس الزام کی تردید کریں گے کہ آپ جناب مرزا صاحب پر بے ثبوت الزام تراشی کے صرف مرتکب ہی نہیں ہوتے، بلکہ ایسا کرنے کی قسم کھا چکے ہیں، اس حوالہ میں دو جگہ آپ الزام تراشی کے مرتکب ہوئے ہیں۔  
 ج:۔۔۔ کیا الزام ہوا، ذرا وہ بھی فرما دیا جاتا؟

۱۵:۔۔۔ لیکن پھر بھی حضرت عائشہؓ اس بات کو تسلیم نہیں کرتیں اور کہتی ہیں کہ وہ ایک رؤیائے صالحہ تھی اور کسی نے حضرت عائشہ صدیقہؓ کا نام نعوذ باللہ ملحدہ یا ضالہ نہیں رکھا۔  
 ج:۔۔۔ جی ہاں! ان کو ضالہ و ملحدہ نہیں کہا، مگر اس سے کیا ثابت ہوا؟ اس کی بھی وضاحت ہو جاتی۔

۱۶:۔۔۔ شب معراج میں دوسرے انبیاء کے اجسام مثالیہ اور حضرت عیسیٰ کے جسد عنصری کو ہم رنگ و ہم شکل قرار دے کر خود ہی ثابت کر رہے ہیں کہ ان سب کی ہیئت اور کیفیت ایک سی تھی، لازماً یا تو وہ سب وفات شدہ تھے یا سب زندہ تھے، رسول پاک صلی اللہ علیہ وسلم نے اس نظارہ میں کہیں بھی حضرت عیسیٰ کی الگ اور منفرد کیفیت بیان نہیں فرمائی۔  
 ج:۔۔۔ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم تو متواتر احادیث میں ان کی منفرد کیفیت بیان فرما چکے ہیں۔

۱۷:۔۔۔ باقی آپ نے میدان حشر کی بھی مثال غلط دی ہے، میدان حشر میں تو صرف مرنے والے ہی جمع ہو سکتے ہیں نہ کہ زندہ انسان؟

ج:۔۔۔ میں نے اولین و آخرین کی جو قید لگائی تھی اس میں آپ کا جواب موجود ہے۔  
 ۱۸:۔۔۔ جیسا کہ آپ بتاتے ہیں کہ حضرت عیسیٰؑ جسیدِ عنصری شبِ معراج میں اسی طرح موجود تھے، جیسے نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم! تو پھر آپ کو یہ بھی ماننا پڑے گا کہ حضور سرورِ کائنات کے معراج میں حضرت عیسیٰؑ بھی برابر کے شریک تھے؟

ج:۔۔۔ بندہ خدا! آسمان پر ہونے سے معراج میں شرکت کیسے لازم آگئی؟ کیا آسمان کے بے شمار فرشتے بھی شریکِ معراج قرار پائیں گے؟

۱۹:۔۔۔ اس لحاظ سے تو اُمتِ مسلمہ کو حضرت عیسیٰؑ کا معراج بھی تسلیم کر لینا چاہئے۔

ج:۔۔۔ منکر کون ہے؟ ان کی معراج آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم سے پانچ صدی پہلے ہو چکی تھی۔

۲۰:۔۔۔ سچ ہے جھوٹ کے پاؤں نہیں ہوتے۔

ج:۔۔۔ سچ جھوٹ کے فرق کو سمجھنے کے لئے دل کی بینائی شرط ہے، اور وہ بد قسمتی سے نصیبِ اعداء ہے۔

۲۱:۔۔۔ ظاہر ہے یہ دو معراجوں والا عقیدہ اہل اسلام کے نزدیک صحیح نہیں ہو سکتا۔

ج:۔۔۔ کون سے اہل اسلام؟ بحمد اللہ! سب مسلمان اس کے قائل ہیں کہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام آسمان پر تشریف لے گئے اور قربِ قیامت میں نازل ہوں گے۔

۲۲:۔۔۔ آپ خود ہی فرماتے ہیں: ”مثلاً کسی صاحبِ کشف کو میدانِ محشر کا نقشہ

منکشف ہو جائے اور وہ دیکھے کہ تمام اولین و آخرین وہاں جمع ہیں تو اس پر کیا یہ لازم آئے گا کہ اب دنیا میں کوئی انسان زندہ نہیں، سب میدانِ محشر میں پہنچ چکے ہیں؟ میں حیران ہوں کہ یہ سوال آپ نے مجھ سے کیا ہے یا کہ اپنے آپ سے؟ چلے یوں کیجئے کہ اپنے اسی سوال کو بار بار دہرائیے اور گریبان میں جھانک کر بتائیے کہ اس کا نتیجہ کیا نکلتا ہے؟ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کو معراجِ جسمانی تھا یا کہ رُوحانی؟

ج:۔۔۔ ذرا میری تحریر ایک بار پھر پڑھئے، اور غور کیجئے کہ میں نے یہ بات کس



تفاظ میں کہی ہے؟ میں نے یہ بات کہی ہی اس تقدیر پر ہے جبکہ معراج جسمانی نہ ہو، بلکہ اُسے کشفی و روحانی فرض کیا جائے۔

ج: ۲۳... نہ جانے یہ کیسے عالم صاحب ہیں کہ جب جی چاہے کسی سیدھی بات کو اُلٹا کر دیں، اور جب جی چاہے اُلٹی بات کو سیدھا کر دکھائیں۔

ج: ۲۴... لیکن سیدھی بات کو اُلٹ سمجھنا بھی قادیانیت کا خاص امتیاز ہے۔

ج: ۲۴... اسی صفحہ کے آخر میں جو تین حوالے آپ نے دیئے ہیں، ان کے متعلق اصولی بات عرض کرتا ہوں۔

ج: ۲۵... یہ اصولی باتیں آنجناب نے آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے مقابلے میں تراشنے کی زحمت کیوں فرمائی؟

ج: ۲۵... ہم کب کہتے ہیں کہ عیسیٰ فوت نہیں ہوں گے؟

ج: ۲۶... ”فوت نہیں ہوں گے“ مستقبل کا صیغہ ہے، ”وفات پا چکے“ ماضی کا، ذرا سوچ لیجئے آپ اتنے بدحواس کیوں ہو رہے ہیں کہ ماضی، مستقبل کی تمیز بھی اٹھ گئی؟

ج: ۲۶... ہمارا عقیدہ تو واضح ہے کہ حضرت عیسیٰ وفات پا چکے اور اب آخری زمانہ میں جو شخص بھی عیسیٰ کے نام اور ان کی خوبو پر آئے گا یا آپکا ہے وہ بھی وفات پائے گا یا پاچکا ہے۔

ج: ۲۷... یہ خوبو کہاں لکھی ہے؟ اور کیا ہوتی ہے؟ کچھ تشریح فرمادی جائے گی؟

ج: ۲۷... یہ حدیث تو اس عقیدہ اسلامی کی واضح مخالف ہے۔

ج: ۲۸... یعنی آپ کا دماغ عقیدہ اسلامی کا مخالف نہیں، حدیث مخالف ہے!

نعوذ باللہ...

ج: ۲۸... یہاں ”نزول“ کے لفظ سے ”آسمان سے بحسدِ عنصری اترنا“ کیونکر مراد

لیا جائے؟ قرآن تو صریحاً اس خیال کی نفی کرتا ہے: ”یا بنی ادم قد انزلنا علیکم

لباساً“ (اعراف ۳/۲۷)، ”وانزلنا الحديد فيه بأس“ (حدید ۳/۲۶) ذرا خود ہی

بتا دیجئے کہ آپ نے کبھی لباس اور لوہا آسمان سے اترتے یا گرتے دیکھا ہے؟ یا کسی اور نے ہی دیکھا ہو تو براہ کرم اس عاجز کو اس کے پتہ سے مطلع فرمائیں۔

ج: ... اس سے یہ کیسے لازم آیا کہ کوئی چیز آسمان سے اترتی ہی نہیں؟

۲۹: ... جس حدیث ”وفیہا عہد الی ربی .... فیہلکہ اللہ“ کا آپ نے حوالہ دیا ہے، اس میں حضرت مسیح علیہ السلام کا اُسی طرح ذکر ہے جیسا کہ قرآن حکیم میں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی دو بعثتوں کا ذکر ہے۔

ج: ... جھوٹ پر جھوٹ! قرآن کریم کی کس آیت میں ہے؟ ذرا نشاندہی فرمائیں۔

۳۰: ... ارشادِ الہی ہے: ”ہو الذی بعث فی الامیین رسولاً .... و اخرین منهم لما یلحقوا بہم“ (فرقان ۴/۴۲) آخرین میں قید وقت و زمانہ موجود نہیں، گویا حضور کی ایک بعثت تو اولین میں ہوئی اور دوسری بعثت آخری زمانہ کے انسانوں میں ہوگی۔

ج: ... یعنی... نعوذ باللہ... غلام احمد ”محمد رسول اللہ“ ہے، شرم! شرم!!

۳۱: ... گویا مسیح موعود کی بعثت کو رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی ہی بعثت قرار دیا گیا۔

ج: ... لاحول ولا قوۃ الا باللہ! بریں عقل و دانش بباید گریست۔

۳۲: ... ”ازالہ اوہام“ صفحہ: ۹۱ کا حوالہ بھی آپ نے نامکمل دیا ہے۔

ج: ... مکمل حوالہ کے بعد منقول کے مفہوم میں کیا تغیر ہوا؟ اس کی وضاحت کر دیتے تو کیا ہی اچھا ہوتا۔

۳۳: ... غلطی کا احتمال صرف ایسی پیش گوئیوں میں ہوتا ہے جن کو اللہ تعالیٰ نے خود اپنی کسی مصلحت کی وجہ سے مبہم اور مہمل رکھنا ہو۔

ج: ... یعنی مرزا صاحب کے سوا آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم اور تمام امت مسلمہ کو خدا جہالت اور گمراہی میں رکھنا چاہتا ہے، نعوذ باللہ!

۳۴:۔۔۔ عیاں ہے کہ حضرت مرزا صاحب یہاں جو کچھ فرما رہے ہیں وہ یہ ہے کہ ضروری نہیں کہ حضرت احدیت انبیاء علیہم السلام پر غیب کی خبروں کو انتہائی واضح طور پر اور پوری تفصیل کے ساتھ منکشف فرمائے۔

ج:۔۔۔ اسی پر مجھے اعتراض ہے کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کو تو ان امور سے بے علم مانا جائے، اور مرزا صاحب کو با علم؟ کچھ تو شرم چاہئے!

۳۵:۔۔۔ بہر حال نامکمل حوالہ جات پیش کر کے آپ نے اپنے طویل خط میں دیگر مولوی صاحبان کی تقلید میں حضرت مرزا صاحب پر ”آنحضرت صلعم کے چشم دید مشاہدہ کو جھٹلانے“ کے الزامات عائد کئے۔

ج:۔۔۔ حضور صلی اللہ علیہ وسلم اپنا مشاہدہ بیان فرما رہے ہیں، عیسیٰ علیہ السلام سے جو گفتگو ہوئی اس کو نقل فرما رہے ہیں، اور وہ اپنے آنے کے بارے میں ”عہدِ رب“ کا حوالہ دے رہے ہیں، مگر مرزا صاحب فرماتے ہیں کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم جانتے ہی نہ تھے کہ مسیح کی حقیقت کیا ہے؟ اس سے بڑھ کر جحود (انکار) اور تکذیب کیا ہوگی؟ انصاف فرمائیے اگر آپ کے ساتھ کوئی شخص ایسا برتاؤ کرے تو آپ ایسے موذی شخص کو کیا سمجھیں گے؟

۳۶:۔۔۔ آپ کی انہی چابک دستیوں نے تو اب مجھے یقین دلادیا ہے کہ یہ سب کچھ آپ بھول چوک سے اور سہو سے نہیں کرتے، بلکہ دیدہ و دانستہ کرتے ہیں۔

ج:۔۔۔ الحمد للہ! خوب فہم و بصیرت کے ساتھ، جو کہتا ہوں دلیل اور سند کے ساتھ کہتا ہوں۔

۳۷:۔۔۔ اور یہ ہونا ضروری بھی تھا، ورنہ حضور خیر الانام سرور کائنات کی پیش گوئیاں کیونکر پوری ہوتیں، مثلاً یہ کہ: میری امت کے علماء آخری زمانہ میں آسمان تلے سب سے بری مخلوق ہوں گے۔

ج:۔۔۔ جی ہاں! بالکل صحیح فرمایا، مرزا غلام احمد صاحب جو اُمتی ہونے کا دعویٰ کرتے ہیں، اور ختم نبوت کا تاج آپ صلی اللہ علیہ وسلم کی بجائے اپنے ناہموار سر پر سجانے

کی ناپاک کوشش بھی کرتے ہیں، ان سے بدتر کوئی مخلوق ہو سکتی ہے؟

۳۸: ... پھر اللہ تعالیٰ کا یہ ارشاد بھی تو اپنے ایک پہلے مراسلہ میں پیش کر چکا ہوں:

”من الأحبار والرهبان لیاکلون اموال الناس بالباطل۔“

ج: ... جیسا کہ مرزا نے لوگوں کا دین بھی برباد کیا، اور ان کی دنیا بھی لوٹی۔

۳۹: ... ائمہ سلف نے تو چودھویں صدی ہجری کا بالاتفاق ظہور مہدی و مسیح موعود

کے لئے تعین بھی کر دیا تھا، جسے آپ جانتے تو ہیں لیکن محض ایک شخصی عداوت کی خاطر کسی راوی کو کذاب ٹھہرا دیتے ہیں، کسی مفسر کا سرے سے پتہ ہی کاٹ جاتے ہیں۔

ج: ... سفید جھوٹ! کوئی تو حوالہ پیش کیجئے اور کسی کا نام تو لیجئے!

۴۰: ... مگر جب اسی مفسر یا راوی کی کوئی بات آپ کے مسلک کی مد نظر آتی ہے تو

آپ اُسے پیش کرنے سے بھی نہیں چوکتے، سمجھ نہیں آتی یہ تکنیک آپ کو کہاں لے جائے گی؟

ج: ... یہ قادیانیوں کا وطیرہ ہے، مسلمانوں کا نہیں۔

۴۱: ... اگر آپ نے ٹھانی ہوئی ہے کہ آپ حضرات ان سب پیش گوئیوں کو جب

تک ظاہری طور پر پورا ہوتے نہیں دیکھیں گے، تب تک نہیں مانیں گے۔

ج: ... پوری ہوں تو مانیں! ان شاء اللہ قرب قیامت میں حضرت عیسیٰ علیہ السلام

کے آسمان سے نازل ہونے پر یہ پوری ہوں گی اور ہم مانیں گے۔

۴۲: ... جب تک حضرت عیسیٰ علیہ السلام کو اُسی پہلے والے جسم عنصری کے ساتھ

آسمان سے اُترتا نہیں دیکھیں گے، تب تک آپ یونہی دلائل کا منہ چڑاتے رہیں گے تو یقین

فرمائیے کہ ایسا موعود ظہور مہدی کا وقت کبھی نہیں آنے کا۔

ج: ... چشم ماسدا کو رباد! کیا ہم... نعوذ باللہ... غلام احمد قادیانی جیسے مراقی، مخبوط

الحواس اور آغور کو مہدی و مسیح مان لیں؟ اور دُنیا جہان کے جھوٹے کو مسندِ عیسوی پر بٹھائیں؟

۴۳: ... آپ بعینہ اسی طرح کر رہے ہیں جیسے اُمتِ موسویہ نے کیا تھا کہ حضرت

مسیح علیہ السلام کو ماننے سے انکار کیا، صرف یہی نہیں بلکہ ان کے دعویٰ کا مذاق اڑایا گیا۔

ج: ... یا جس طرح مرزا صاحب نے آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے ارشادات طیبات کا مذاق اڑایا، گویا یہودیوں کے بھی کان کتر دیئے۔

۴۴: ... حضرت عیسیٰ کو طرح طرح کی ایذا میں دی گئیں، حتیٰ کہ انہیں تختہ دار پر بھی لاکھڑا کیا گیا۔

ج: ... جھوٹ! سفید جھوٹ! اور صاف صاف آیت قرآنی ”وَمَا صَلْبُوْهُ“ کا انکار ہے۔

۴۵: ... میں تو سمجھتا ہوں کہ قرآن الحکیم میں حضرت عیسیٰ علیہ السلام کا بیان جو کثرت کے ساتھ کیا گیا ہے، محض اس لئے کہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی پیش گوئیوں کے مطابق آپ حضرات نے لازماً پیدا ہونا تھا اور مثیل مسیح کا عین اُسی طرح ٹھٹھا بھی اُڑنا تھا۔

ج: ... نہیں! بلکہ محض اس لئے کہ غلام احمد کی تکذیب اور ان کے ماننے والوں کی حماقت کا بار بار اعلان ہو، سوال یہ ہے کہ ”مثیل مسیح“ کس آیت یا حدیث میں لکھا ہے؟

۴۶: ... یہ تو خیر ہوئی کہ حضرت مرزا صاحب پر حضور صلی اللہ علیہ وسلم کا سایہ عاطفت تھا، ورنہ انہیں بھی تختہ دار پر چڑھا ہی دیا جاتا۔

ج: ... حضور صلی اللہ علیہ وسلم کا نہیں، بلکہ انگریز کا ”سایہ عاطفت“ تھا، جیسا کہ مرزا جی نے خود اقرار کیا ہے۔

۴۷: ... کیوں میرے عزیز مولوی صاحب! اُمتِ موسویہ نے حضرت عیسیٰ علیہ السلام کو سچا مان لیا تھا؟

ج: ... جیسا کہ آپ لوگوں نے آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے فرمودات کو سچا مان لیا ہے؟

۴۸: ... حد یہ کہ وہ اب تک ایک موہوم مسیح کی آمد کے انتظار میں دیوارِ گریہ سے لگ کر روتے ہیں اور اس کی آمد کی دُعا میں مانگتے ہیں، صرف اس لئے کہ انہوں نے بھی علامات اور پیش گوئیوں کو ظاہری رنگ میں پورا ہوتا دیکھنے کی ٹھانی ہوئی تھی۔



ج: ... یہ کس آیت اور حدیث میں لکھا ہے؟

۴۹: ... نتیجہ آپ کو بھی معلوم ہے کہ وہ راہ ہدایت سے بھٹک کر راندہ درگاہ ہو کر قعر

ذلت میں گر گئے، آپ اسی بات سے بھی کوئی سبق نہیں لینا چاہتے، حیرت ہے!

ج: ... عجیب منطق ہے کہ جب مرزا پر مسیح علیہ السلام کی کوئی علامت اور کوئی نشانی

بھی صادق نہیں آتی تو قادیانی اُمت خود شرمانے کے بجائے دوسروں کو الزام دیتی ہے۔

۵۰: ... حضرت مسیح موعود مرزا صاحب کا یہ دعویٰ نہیں ہے کہ: ”کسی مہدی کے

زمانے میں کسوف و خسوف نہیں ہوا“۔

ج: ... مگر آپ نے تو یہی دعویٰ کیا تھا، ذرا اپنی تحریر دیکھ لیجئے، صد شکر ایک بات تو

عقل میں آئی!

۵۱: ... بلکہ دعویٰ یہ ہے کہ بموجب پیش گوئی دارقطنی ”ان لمہدینا آیتین“ کہ

مہدیؑ معبود کے زمانہ میں رمضان کے مہینے میں چاند کو گرہن کی راتوں میں پہلی رات کو یعنی

۱۳ تاریخ کو اور سورج گرہن کی تاریخوں میں سے درمیانی تاریخ یعنی ۲۸ کو گرہن لگے گا،

تو اس حدیث میں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا کہ جب سے خدا نے زمین اور آسمان

پیدا کئے، یہ نشان کسی کے لئے ظاہر نہیں ہوئے، اور یہ نشان صرف ہمارے ہی مہدی کی

صداقت کے لئے مخصوص ہیں۔

ج: ... میں بتا چکا ہوں کہ ایسے کسوفین کا رمضان میں اجتماع ساٹھ مرتبہ ہو چکا تھا،

پھر مہدی کی تخصیص کیا ہوئی؟

۵۲: ... حضرت مرزا صاحب کی عبارت پیش کرتے ہوئے ایک بار پھر آپ نے

اخلاق اور دیانت سے کام نہیں لیا، حالانکہ اس عبارت سے کچھ پہلے حضرت صاحب نے

صاف الفاظ میں متذکرہ بالا حدیث کا متن اور ترجمہ تحریر فرمایا ہے، اور پھر لکھا ہے کہ:

”ان تاریخوں میں کسوف و خسوف رمضان میں ہونا کسی کے لئے اتفاق نہیں

ہوا، صرف مہدیؑ معبود کے لئے اتفاق ہوگا۔“

ج: ... مرزا جی کے اس دعویٰ کی کوئی دلیل بھی ہے؟ اگر نہیں تو بے پردگی ہانکنے

کا فائدہ؟

۵۳: ... یہی الفاظ آپ دیدہ و دانستہ حذف کر گئے، انا للہ وانا الیہ راجعون! جب

آپ نے حضرت مرزا صاحب کے دعویٰ میں تحریف و تحذیف سے کام لیا تو آپ کا جواب خود بخود غلط اور بے معنی اور غیر متعلقہ ہو گیا۔

ج: ... کیسے؟ میں تو کتاب کا حوالہ دیتا ہوں اور اسلاف اُمت اور اکابر اسلام کی

تحقیق پیش کرتا ہوں، مگر آپ ہیں کہ صرف اور صرف مرزا صاحب کی اندھی تقلید کو قرآن و سنت اور اکابر اُمت کی تصریحات کے مقابلہ میں منوانے کی ناکام کوشش و سعی میں سر پھوڑ رہے ہیں۔

۵۴: ... کیونکہ آپ یا آپ کے علمائے ہیئت تا قیامت کسی مدعی نبوت کو پیش نہیں

کر سکے جنہوں نے حدیث شریف کے مطابق چاند گرہن کی پہلی تاریخ اور سورج گرہن کی درمیانی تاریخ میں دونوں گرہن لگتے دیکھے ہوں۔

ج: ... عقل سے تھوڑی دیر کے لئے کام لے لینے میں کیا حرج ہے؟ دیکھئے!

کسوف و خسوف بھی موجود، اور مدعی نبوت بھی موجود، اور یہ دونوں تاریخی صداقتیں ہیں، فرمائیے! مدعی نے کسوفین کو کیوں نہ دیکھا؟

۵۵: ... یہ بھی آپ کی حمیت و غیرت کو ایک چیلنج ہے کہ رسول پاک صلی اللہ علیہ

وسلم تو فرمائیں کہ ایسے گرہن سوائے ہمارے مہدی کے زمانہ کے کبھی دنیا میں ظہور پذیر نہیں ہوئے، اور نہ ہوں گے، اور آپ ہیں کہ اپنے پاس سے ہی چار ایسے کسوف و خسوف کے حوالے دیئے چلے جا رہے ہیں، کیا اب بھی آپ حضور محمد صلی اللہ علیہ وسلم کی اُمت میں سے ہونے کا دعویٰ کر سکتے ہیں؟ کیونکہ آپ تو منشائے پیش گوئی کے برخلاف ہی ایڑی چوٹی کا زور لگا کر لکھ رہے ہیں کہ اسے نشان ٹھہرانا ہی غلط فہمی ہے۔

ج: ... یہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کا ارشاد ہی کب ہے؟ جھوٹ کسی وقت تو چھوڑ

دینا چاہئے؟

۵۶:۔۔۔ جب بھی آپ نے ہمیں دکھ دیئے، ہم نے راتوں کو اُٹھ اُٹھ کر آپ کی ہدایت کے لئے دُعائیں کیں۔

ج:۔۔۔ مگر بے ایمانوں اور کافروں کی پکار کا کوئی فائدہ نہیں اس لئے کہ: ”وَمَا دُعَاءُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ!“ (اور نہیں دُعا کافروں کی مگر بھٹکانا)۔

۵۷:۔۔۔ احمدی مسلک میں یہ تو ہے ہی نہیں کہ نفرت کا جواب نفرت سے دیں۔  
ج:۔۔۔ جی ہاں! گالیاں پیار ہی میں دی جاتی ہیں، مرزا صاحب نے حضرت عیسیٰ علیہ السلام سے لے کر پوری امت مسلمہ کو جو گالیاں دی ہیں وہ کس محبت کا شاخسانہ ہے؟  
۵۸:۔۔۔ آپ نہیں جانتے کہ ہر دس، پندرہ، بیس سال کے بعد ہمیں مظالم کی بھٹیوں میں ڈال ڈال کر آپ خود ہی کندن بناتے ہیں۔

ج:۔۔۔ جی ہاں! آپ جیسوں کے لئے فرمایا گیا: ”أَوَلَا يَرَوْنَ أَنَّهُمْ يُفْتَنُونَ فِي كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً أَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا يَتُوبُونَ وَلَا هُمْ يَذَّكَّرُونَ!“ (کیا نہیں دیکھتے کہ وہ آزمائے جاتے ہیں ہر برس میں ایک بار یا دو بار، پھر بھی توبہ نہیں کرتے اور نہ وہ نصیحت پکڑتے ہیں)۔

۵۹:۔۔۔ ہمیں خوب معلوم ہے، ہماری یہ قربانیاں رائیگاں نہیں جا رہیں، بلکہ اللہ تعالیٰ ان حقیر قربانیوں میں اتنی برکت ڈال رہا ہے کہ یورپ بھنا اُٹھا ہے۔  
ج:۔۔۔ جی ہاں! شیخ چلتی زندہ ہے۔

۶۰:۔۔۔ مجھے یہ بتانے کی تو ضرورت ہی نہیں کہ تبلیغی کانفرنسوں اور مناظروں کا انعقاد، اخبارات، رسائل، ریڈیو، ٹیلی ویژن وغیرہ کے ذریعہ لیکچرز اور مضامین کا اہتمام تو انہی (بقول آپ کے ”کافر“) لوگوں کے روزمرہ کے مشاغل ہیں۔

ج:۔۔۔ اس کا نتیجہ؟ یہی ناں کہ مسلمانوں کو کافر، اور کافروں کو مسلمان کہا جائے۔

۶۱:۔۔۔ لیکن ایک آپ کا ٹولہ ہے کہ موج اُڑا رہا ہے کہ ہینگ لگے نہ پھنکری، آپ

کے فرسودہ خیالات کسی کو کھینچیں یا نہ کھینچیں آپ کی بلا سے!

ج:.... جی نہیں! قرآن و حدیث اور بزرگان دین کے ارشادات پیش کر کے مسلمانوں کے دین و ایمان کی حفاظت اور انہیں قادیانی دجل و فریب سے بچانا ہمارا مقصد ہے، اور بحمد اللہ ہم اس میں کامیاب ہیں۔

۶۲:.... آپ کا یہی کارنامہ کیا کم ہے کہ صرف چودہ پندرہ روز کی دھماچوکڑی کے بعد چشم زدن میں ہی دنیا بھر کے لگ بھگ ایک کروڑ کلمہ گوؤں کو کافر قرار دلوادیا؟  
ج:.... جی نہیں! مسلمانوں کو نہیں بلکہ کافروں کو کافر کہلوا دیا اور کفر و اسلام کے حدود کا تحفظ کیا۔

۶۳:.... مجھے یہ کہنے کا حق دیجئے کہ آپ کی اس طویل مراسلت نے مجھ پر کوئی اچھا اثر نہیں ڈالا۔

ج:.... میں کیا؟ ازلی بد بختوں کو اللہ کا نبی بھی متاثر نہ کر سکا، چنانچہ فرما دیا گیا: ”إِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ أَحْبَبْتَ!“ (بے شک آپ نہیں ہدایت دے سکتے ان کو جن کو تو ہدایت دینا چاہتا ہے)۔

۶۴:.... ظاہر ہے کہ میں نہ تو ازلی متعصب ہوں اور نہ ہی تنخواہ دار مبلغ، ورنہ میں احمدیت کی جانب اس طرح کھینچ کر کیوں آتا؟

ج:.... جی ہاں! مسخ فطرت کی وجہ سے آپ قادیانیت کے دام ترویر میں آ گئے۔  
۶۵:.... اس کی وجہ یہی ہے کہ میں حقیقت کو پانا چاہتا تھا، سو الحمد للہ کامیاب ہوا۔  
ج:.... بے شک! مگر افسوس کہ سراب کو حقیقت سمجھ لیا۔

۶۶:.... آپ کو تو احمدیوں کی ہر نیک بات بُری دکھائی دیتی ہے۔  
ج:.... جیسی چیز ہوگی، ویسی نظر بھی آئے گی، اگر کوئی شخص ایمان و کفر کے درمیان امتیاز نہیں کر سکتا تو ”وَمَا أَنْتَ بِهَادِي الْعُمَى“ کا مصداق ہے۔  
۶۷:.... قرآن کی حفاظت کا ذمہ اللہ تعالیٰ نے خود اپنے اوپر لیا ہوا ہے۔

ج: ... حفاظت کا ذمہ نہ لیا ہوتا تو غلام احمد جیسے لوگ اسے مسخ ہی کر دیتے۔

۶۸: ... لیکن آپ ثابت یہ کرنا چاہتے ہیں کہ اس کی حفاظت اگر کوئی کر سکتا ہے تو مولوی یا عالم اور کوئی نہیں۔

ج: ... جی ہاں! عالم اسباب میں مولوی اور عالم ہی اس کی حفاظت کرتے آرہے ہیں، فالحمد للہ۔

۶۹: ... آج مسلمانوں کی نئی پودا ٹاک AGE میں سے گزر رہی ہے، دنیا کی ترقی یافتہ قوموں کا طریق تبلیغ ایسا فرسودہ نہیں جو آپ نے اپنایا ہوا ہے، بلکہ آج کی پودا اور تعلیم یافتہ افراد سائنسی تکنیک سے قرآن وحدیث کو سمجھنا چاہتے ہیں۔

ج: ... مرد کا عورت بن جانا، حاملہ ہونا، دروزہ ہونا، پھر اس کے اندر سے بچہ پیدا ہو کر خود اسی عورت کا بچہ بن جانا، پھر اس بچے کا بیعہ داڑھی مونچھوں والا رہنا، یہ ساری چیزیں تو ماشاء اللہ! سائنٹفک ہیں!...

۷۰: ... آپ ہیں کہ اس پر تحقیق دور میں بعید از عقل و قرآن یہ بتا رہے ہیں کہ ایک انسان جو اس دنیا میں نبی بن کر آیا، وہ دو ہزار برس سے اللہ تعالیٰ کے داہنے گھٹنے کے ساتھ لگ کر بیٹھا ہے۔

ج: ... لعنت اللہ علیٰ قائمہ! یہ بھی کسی قادیانی قرآن وحدیث میں ہوگا، ورنہ کوئی مسلمان اس کا قائل نہیں کہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام اللہ کے داہنے گھٹنے کے ساتھ لگ کر بیٹھے ہیں۔

۷۱: ... ذرا ہوش کے ناخن لیجئے کہ وہ پودیا تو دین اسلام سے متنفر ہو جائے گی یا پھر عیسائی ہو جائے گی۔

ج: ... اور قادیانیت خود بھی تو اسلام سے تنفر کی ہی ایک صورت ہے!

۷۲: ... خدا را! اپنے حال پر رحم کھائیے، اپنے بال بچوں کی بھی ایسی کچھ تربیت نہ کیجئے کہ وہ کچھ عرصے کے بعد ہمیں کہہ دیکھو! ہمارے ابا کیسی سی باتیں کرتے ہیں۔



ج: ... الحمد للہ! جن کو اللہ تعالیٰ نے عقل دی، ان کو اسلام کے قطعیات پر ہنسنے کی ضرورت نہیں، اور جن کی شکلوں کے ساتھ عقلیں بھی مسخ ہو گئی ہوں، ان کا کام ہی تعلیمات نبوت پر ہنسنا ہے۔

۷۳: ... آپ نے اپنے طویل مراسلہ میں جتنی لاحاصل باتیں تھیں، وہ لکھ ماری ہیں، لاحاصل اس لئے کہتا ہوں کہ آپ نے صفحے تو بہت کالے کئے، مگر مطلب کی بات پر نہ آئے۔

ج: ... جی ہاں! آپ کے مطلب کی کوئی چیز قائم نہ رہنے دی، بِحَوْلِ اللَّهِ وَقُوَّتِهِ! ۷۴: ... مثال کے طور پر یہ کہ اول تو حضرت عیسیٰ کی حیات اور ان کے آسمان پر بیٹھے ہونے کے دلائل قرآنی تو کہیں بھی نہیں دیئے۔

ج: ... بات تو میرے قرآنی دلائل ہی سے شروع ہوئی تھی، خیر سے اسی کا انکار شروع ہو گیا۔

۷۵: ... جو شخص آپ کی کوتاہ نظری میں کذاب ہے، مفتری ہے، زندیق ہے، آپ کی طرح اُس وقت کے علمائے زمانہ نے بہت شور مچایا، بہت لے دے کی، لیکن نتیجہ آج آپ کے سامنے ہے کہ کسی ایک نے بھی ایسی نظیر پیش نہ کی اور نہ اب کوئی کر سکتا ہے۔ ج: ... نظیریں تو پیش کی گئی تھیں، مگر چشم بندی کی وجہ سے آپ حضرات کو نظر نہیں آئیں۔

۷۶: ... مجھے معلوم ہے آپ بھی حضرت مرزا صاحب کو تاقیامت مفتری ثابت نہ کر سکیں گے۔

ج: ... مرزا صاحب ان شاء اللہ! بقول خود و باقرار خود مفتری ثابت ہوتے ہیں۔ ۷۷: ... علامہ عبدالعزیز لکھتے ہیں: "قد ادعى بعض الكذابين النبوة كمسلمة اليمامي والأسود العنسي وسجاح الكاهنة فقتل بعضهم وبالجملة لم ينتظم امر الكاذب في النبوة إلا أياماً معدودة۔"

(نبراس مطبوعہ میرٹھ ص: ۴۴۴)

ج: ... قولہ: ”إِلَّا أَيَّامًا مَّعْدُودَةً“ اقول كما وقع في عصرنا للمتنبئ القادياني المغول۔ فإنه قد ادعى النبوة صراخاً وجهاً ۱۹۰۱ الميلادية كما صرح به نجله الميرزا محمود احمد في حقيقة النبوة ج: ۱ ص: ۱۲۱ وقد هلك في ۲۶/ منى ۱۹۰۸ الميلادية، فلم يمهلہ الله إِلَّا أَيَّامًا قَلِيلَةً۔ فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِينَ ظَلَمُوا، وَالْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ!

۷۸: ... حضرت امام ابن القيمؒ تحریر فرماتے ہیں: ”نحن لا ننكر ان كثيرا من الكذابين قام في الوجود وظهرت له شوكة ولكن لم يتم له امره ولم تطل مدته بل سلبت عليه رسله واتباعهم فمحقوا اثره وقطعوا دابره واستاصلوا شافته هذه سنة في عبادته منذ قامت الدنيا والى ان يرث الارض ومن عليها۔“ (زاد المعاد جلد اول صفحہ: ۵۰۰) یعنی جھوٹے مدعی اپنے مقصد کو نہ پاسکے اور نہ ہی ان کی مدت لمبی ہوئی، وغیرہ، ”لمبی مدت“ کی تشریح اسی جگہ ثلثا وعشرين سنة (۲۳ سال) کے الفاظ میں موجود ہے۔

ج: ... اور بحمد اللہ یہ مدت متنبئی قادیان کو بعد از دعوائے نبوت نصیب نہ ہو سکی۔

۷۹: ... مرزا صاحب نے ۱۹۰۱ء میں دعویٰ کیا، جبکہ اس سے قبل تو دعویٰ نبوت کو کفر قرار دیا کرتے تھے، لیکن میں کہتا ہوں کہ آپ نے دعویٰ نبوت کے بے شک کفر قرار دیا ہے، مگر نہ صرف ۱۹۰۱ء تک بلکہ ۱۹۰۸ء تک اور وہ نبوت، نبوت تشریعی ہے، وہی نبوت جو قرآن مجید کو منسوخ اور آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے زمانہ کو ختم بتائے، بے شک کفر ہے، اسی نبوت کو حضرت مرزا صاحب نے تمام کتب میں (۱۹۰۱ء سے قبل بھی اور بعد بھی) کفر لکھا۔

ج: ... جی! آپ نہ تو مرزا صاحب کے تناقض کو سمجھے ہیں، نہ مرزا محمود احمد صاحب نے اس تناقض کا جو حل پیش کیا ہے، آپ نے اسی کو سمجھا ہے، سنئے! ۱۹۰۱ء سے پہلے مرزا صاحب اپنی نبوت سے انکار کرتے تھے، اور اسے صرف محدثیت والی نبوت قرار دیتے، اسی بنا پر انہوں نے ”تریاق القلوب“ میں اپنے انکار کا کفر نہ ہونا ذکر کیا، اور اسی بنا پر

حضرت عیسیٰ علیہ السلام سے جزئی فضیلت بیان کی، بعد میں مرزا صاحب نے عقیدہ بدل لیا، اپنی نبوت کو محدثیت والی نبوت نہیں، بلکہ واقعی نبوت سمجھنے لگے، یہ فرق ہے دونوں زمانوں کے درمیان، جو مرزا صاحب کے فرزند اکبر نے ”حقیقۃ النبوة“ میں بیان کیا ہے۔

۸۰:۔۔۔ جناب مولوی صاحب! آپ کو تھوڑی سی عقل یوں بھی استعمال کرنی پڑے گی کہ آپ کے غیر احمدی علماء (قریباً تین سو کی تعداد میں) ۱۹۰۱ء سے بہت ہی قبل حضرت مرزا صاحب پر اسی بنا پر فتویٰ کفر لگا چکے تھے۔

ج:۔۔۔ الحمد للہ! عقل تھوڑی سی نہیں پوری استعمال کریں گے، اور کرتے ہیں، کاش! آپ بھی اس سے کچھ فائدہ اٹھاتے، اور اس پر غور کرتے کہ کیا نبی وہ ہوتا ہے جو نبوت کے صحیح مفہوم ہی کو نہ سمجھے؟ علمائے امت نے ”براہین احمدیہ“ سے سمجھ لیا تھا کہ یہ صاحب مسیحیت اور نبوت کی پٹری جمار ہے ہیں، جبکہ مرزا صاحب نہ اپنی مسیحیت کو سمجھے، نہ نبوت کو۔

۸۱:۔۔۔ جب حضرت مرزا صاحب کے اس وقت کے مکذب و مکفر لوگ خود ہی ان کا عہد نبوت ۲۵، ۲۶ سال یعنی ۲۳ سال سے بھی زیادہ تسلیم کرتے تھے تو آپ کو بھی یہ ماننا چاہئے کہ حضرت صاحب ارشادِ ربانی ”لو تقول علینا“ کی کسوٹی پر کھرے ہی کھرے نکلے۔

ج:۔۔۔ واقعی اس کسوٹی پر کھرے اور صاف جھوٹے نکلے، اسی لئے ہیضہ کی موت مرے، اور عالم نزع سے پہلے دونوں راستوں سے نجاست خارج ہو رہی تھی، جو کہ افترا علی اللہ کی صورتِ مجسمہ تھی، اور یہ منظر ”قطع وتین“ کی بھیانک شکل تھا۔

۸۲:۔۔۔ ویسے تو آپ زبانی اور تحریری جمع خرچ بہت کرتے ہیں۔

ج:۔۔۔ جی نہیں! الحمد للہ ہم نے اس کا کبھی پروپیگنڈا نہیں کیا، نہ اس کی ضرورت، جو فقرہ آپ کو لکھا تھا وہ اپنی منصبی ذیوٹی کے طور پر لکھا تھا، نہ کہ پروپیگنڈے کے طور پر۔

۸۳:۔۔۔ معاند علماء اور حکومتیں تک اس سلسلہ احمدیت پر کیا کیا تیر نہیں چلاتی رہیں،

ان تمام باتوں کے باوجود یہ سلسلہ نیست و نابود نہیں ہوا، اور نہ ان شاء اللہ تاقیامت ہوگا۔  
ج:.... یہودی، نصرانی، مجوسی، ذکری، مہدوی بھی اب تک نیست و نابود نہیں ہوئے، ان کو بھی برحق سمجھئے گا...؟

۸۴:.... دُنیا چاروں کناروں سے آپ کی حلقہ بگوشی میں داخل ہوتی رہی، ہو رہی ہے، اور ان شاء اللہ آئندہ بھی ہوتی رہے گی۔

ج:.... جی ہاں! وضوح حق کے بعد بھی جو بد نصیب ایمان نہ لائے اس کے بارہ میں یہی کہا جائے گا: ”فَمَنْ شَاءَ فَلْيُؤْمِنْ وَمَنْ شَاءَ فَلْيُكْفُرْ!“ (جو چاہے ایمان لائے اور جو چاہے کفر کو اختیار کرے)۔

۸۵:.... میں تو بخدا! اپنے ان دنوں پر افسوس کرتا ہوں جب میں آپ کی طرح احراری ہونے کی حیثیت میں بے نصیب تھا۔

ج:.... ان دنوں کسی اللہ والے کی گستاخی کی ہوگی، جس سے سلب ایمان تک نوبت پہنچی۔

۸۶:.... مبارک وہ جو اس موعود کو شناخت کر چکے، کر رہے ہیں اور آئندہ بھی کرتے رہیں گے، اے کاش! پیارے مولوی محمد یوسف صاحب! آپ بھی اپنی ہٹ اور ضد کو ترک کر دیں، اللہم آمین!

ج:.... الحمد للہ! ضد اور ہٹ نہ پہلے تھی، نہ اب ہے، لیکن باطل کو باطل اور رات کو رات کہنا بھی اگر ضد اور ہٹ ہے تو چلئے یہی سہی!

۸۷:.... اگر ختم نبوت کا وہی مفہوم لیا جائے جو آج کا مولوی لیتا ہے کہ بس حضور صلی اللہ علیہ وسلم کے بعد تشریحی تو کیا غیر تشریحی بھی کوئی نبی نہیں آ سکتا، تو پھر ہمیں ہر روز ہر رکعت میں پانچوں وقت: ”اهدنا الصراط المستقیم صراط الذین انعمت علیہم“ دُعا کیوں پڑھنی ہوتی ہے؟

ج:.... باوجود حصول نبوت کے آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کیوں پڑھتے تھے؟

۸۸: ... آپ یوں کریں کہ کوئی ایک موضوع خود ہی چن لیں اور اس پر بحث کریں، مگر بروئے قرآن! اور یہ سمجھ کر کہ دلائل بھی بالقرآن ہوں، یہ میں اس لئے کہتا ہوں کہ مجھے آج تک یہی پتہ نہیں چل سکا کہ آپ جن ائمہ کے حوالے اپنی تائید میں پیش کرتے ہیں، آپ ان پر کبھی تو تبرہ بھی جڑ دیا کرتے ہیں، اور یہی وجہ ہے کہ میں نے آپ کے کئی حوالوں کو درگزر کر دیا ہے۔  
احقر عبدالرؤف لودھی

ج: ... الحمد للہ! آپ میری کسی علمی بحث کا جواب نہیں دے سکے۔

محمد یوسف عفا اللہ عنہ



## قادیانی شبہات کے جوابات

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَسَلَامٌ عَلٰی عِبَادِهِ الَّذِیْنَ اصْطَفٰی!

آپ حضرات کو یہاں اس مقصد کے لئے دعوت دی گئی ہے تاکہ قادیانی جو شبہات پھیلاتے ہیں، آپ ان سے آگاہی حاصل کر کے ان کا جواب دے سکیں اور بے چارے ناواقف مسلمانوں کا ایمان بچا سکیں۔

رہی یہ بات کہ کوئی قادیانی کس وقت اور کیا شبہ پیش کرے گا؟ یہ تو اللہ تعالیٰ ہی کو معلوم ہے، لیکن اگر آپ نے کچھ سیکھا اور سمجھا ہوا ہوگا اور مسئلہ قادیانیت کی حقیقت کو جانتے ہوں گے، تو آپ معلوم کر سکیں گے کہ اس شبہ کا جواب یوں دیا جاسکتا ہے، یعنی آپ کو اس معاملے میں تردد نہیں ہوگا۔

### اسلامی عقائد پر یقین کی ضرورت:

ابھی عصر کا وقت ہونے والا ہے، اور سورج موجود ہے، جس طرح آپ کو اس سورج کے موجود ہونے کا یقین ہے، ٹھیک اسی طرح آپ کو اسلامی عقائد پر یقین ہونا چاہئے۔ اگر کوئی قرآن اور حدیث کے ہزار دلائل پیش کرے کہ اس وقت سورج موجود نہیں ہے، تو آپ کہیں گے کہ قرآن و حدیث برحق ہیں، مگر تو نے قرآن و حدیث کو غلط سمجھا ہے، اس لئے کہ یہ سورج کا مشاہدہ تیری فہم کو جھٹلا رہا ہے، تیرا فہم غلط ہے۔ تو پہلی بات تو یہ ہے کہ ہمیں اپنے عقائد کے بارے میں مذہب نہیں ہونا چاہئے، بلکہ پختہ عزم اور پختہ یقین کے ساتھ ان پر عقیدہ ہونا چاہئے۔

### عقیدہ کی تعریف:

آپ جانتے ہیں کہ عقیدہ ”عقدہ“ سے مأخوذ ہے، اور عقدہ کہتے ہیں گرہ کو، تو عقیدہ کی گرہ ایسی مضبوط ہونی چاہئے کہ کسی طالع آزما کے شبہات پیدا کرنے سے بھی نہ کھل سکے، لہذا آپ نے اللہ اور اللہ کے رسول کے فرمان پر عقیدہ کی گرہ باندھ لی ہے، یہی عقیدہ ہے، اب اگر کوئی ملحد اس کو کھولنا چاہتا ہے تو آپ زیادہ سے زیادہ یہ سوچیں گے کہ یہ شخص جو بات کہہ رہا ہے یا جو شبہ ڈال رہا ہے، بہر حال یہ غلط ہے، ہاں! اگر میری سمجھ میں اس کا جواب نہیں آتا تو یہ میرا قصور ہے کہ میں نے اپنے عقیدہ پر محنت نہیں کی اور اس کو سو فیصد پڑھا اور ہضم نہیں کیا، کیونکہ سو فیصد یقین ہے کہ اللہ اور اللہ کے رسول کی بات صحیح ہے اور باقی سب غلط ہے۔

### مخاطب کی زبان میں گفتگو کی جائے:

دوسری بات یہ ہے کہ جس آدمی سے گفتگو کی جائے، اس کو اس کی زبان میں بات سمجھانا چاہئے، دوسری زبان آپ بولیں گے، تو وہ نہیں سمجھے گا، کیونکہ وہ آپ کی زبان نہیں جانتا اور آپ اس کی زبان نہیں سمجھتے، یعنی زبان سے میرا مطلب یہ ہے کہ ان کی خاص اصطلاحات میں بات کی جائے۔

### قادیانیوں سے مناظرہ کا طریقہ کار:

قادیانیوں کے اعتراضات کے جواب کے لئے بہترین جواب یہ ہے کہ ان کو غلام احمد قادیانی کی کتابوں کے حوالے نکال کر دکھا دیں، ان شاء اللہ آپ کو مرزا کی کتابوں سے مسلمانوں کے عقیدے کے مطابق ہر بات کا حوالہ ملے گا۔

### حیات و نزول عیسیٰؑ پر کلام کا انداز:

مثلاً: جہاں قادیانی یہ کہیں کہ عیسیٰ علیہ السلام دوبارہ نہیں آئیں گے، تو آپ ان سے کہئے کہ مرزا صاحب تو جھوٹ نہیں بولتے، جب انہوں نے لکھا ہے کہ آئیں گے تو تم کیسے انکار کرتے ہو؟ پھر ان کو مرزا کی کتابوں سے حضرت عیسیٰ علیہ السلام کے آنے سے

متعلق خود مرزا صاحب کی عبارت نکال کر دکھا دو۔

اگر وہ یہ کہیں کہ یہ عقیدہ منسوخ ہو گیا ہے، تب ان سے سوال کرو کہ مرزا غلام احمد نے جب یہ عقیدہ لکھا تھا، اس وقت انہوں نے صحیح لکھا تھا یا غلط؟ اگر وہ کہیں کہ جب لکھا تھا اس وقت تو صحیح تھا، پھر تم ان سے سوال کرو کہ جب غلام احمد نے لکھا تھا، اگر اس وقت صحیح تھا تو بعد میں کب منسوخ ہوا؟ اگر وہ کہیں کہ بعد میں منسوخ ہوا، تو ان سے سوال کرو کہ کیا کبھی عقیدہ بھی منسوخ ہوا کرتا ہے؟ اگر وہ کہیں کہ پہلے ہی منسوخ ہو چکا تھا، تو کہو کہ غلام احمد نے جھوٹ لکھا تھا؟ بس پھر قادیانی اس سے آگے نہیں چل سکیں گے اور یہیں سے ہی سلسلہ کلام ختم ہو جائے گا۔

اجرائے نبوت پر بات کرنا کا طریقہ:

اسی طرح اگر کوئی قادیانی یہ دعویٰ کرے کہ نبوت جاری ہے اور اس پر قرآن کریم کی آیتیں یا حدیثیں پڑھے، تو آپ غلام احمد کی کتاب نکال کر دکھادیں کہ اس نے لکھا ہے کہ: ہمارا عقیدہ ہے کہ نبوت آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم پر ختم ہو گئی ہے، ہر قسم کی نبوت ختم ہو گئی، اب کسی قسم کی کوئی نبوت نہیں، یہ نکرہ تحت النبی ہے، عموم کا فائدہ دیتا ہے، اب اس کے بعد یہ کہنا کہ مرزا فلاں قسم کا نبی نہیں ہے، ایسا ہے، ویسا نہیں ہے، سب فضول ہے، اس لئے کہ سوال یہ ہے کہ نبی ہے یا نہیں؟ کیونکہ مرزا تو کہتا ہے کہ میں مدعی نبوت کو کافر سمجھتا ہوں، ملعون سمجھتا ہوں، دجال سمجھتا ہوں اور خارج از اسلام سمجھتا ہوں، کافر، خارج از اسلام، اور ملعون یہ تینوں لفظ مرزے کے ہیں، ان سے کہو کہ مرزا صاحب نے جب یہ عقیدہ بتایا ہے کہ مدعی نبوت کافر، ملعون اور دجال اور خارج از اسلام ہے تو آپ اس عقیدہ کو کیوں پیش کر رہے ہیں؟ آیا یہ اسلام کا عقیدہ ہے یا اسلام کے خلاف؟ اگر اسلام کا عقیدہ ہے، تو مرزا صاحب نے یہ لکھا تھا، تو کیا اس نے اسلام کے خلاف لکھا تھا؟

ہر بات کا جواب مرزا قادیانی کی کتب سے:

خیر میرا کہنے کا مقصد یہ ہے کہ قرآن اور حدیث سے ختم نبوت کے حوالہ دینے

کے بجائے سب سے کامیاب طریقہ یہ ہوگا کہ آپ مرزا غلام احمد کی کتابوں سے مرزائی عقائد اور شکوک و شبہات کا توڑ کریں، کچھ آپ خود مطالعہ کریں، اور کچھ اساتذہ آپ کو بتادیں گے، ان شاء اللہ اس طرح کام چل نکلے گا۔

ان تمہیدی الفاظ کے بعد میں آپ حضرات سے سوال کرنا چاہوں گا کہ کیا کبھی کسی کو کسی قادیانی مولوی، غیر مولوی یا عام آدمی سے بات کرنے کی نوبت آئی ہے؟ اگر آئی ہے تو کس مسئلہ پر؟

قادیانیوں کو صرف ایک مسئلہ آتا ہے:

اگر کسی کو اس کی نوبت آئی ہوگی تو اس کو معلوم ہوگا کہ عموماً قادیانی حیات و نزول عیسیٰ کے مسئلہ ہی پر بات کرتے ہیں۔

ہمارے حضرت مولانا محمد حیات صاحب رحمۃ اللہ علیہ فرمایا کرتے تھے کہ:

”مرزائیاں نوں اکوای مسئلہ آندا اے کہ عیسیٰ مر گیا، تے

مینوں وی اکوای مسئلہ آندا اے کہ عیسیٰ علیہ السلام زندہ نے۔“

یعنی قادیانیوں کو ایک ہی مسئلہ آتا ہے کہ عیسیٰ علیہ السلام مر گئے ہیں، اور مجھے بھی

ایک ہی مسئلہ آتا ہے کہ عیسیٰ علیہ السلام زندہ ہیں۔

حضرت عیسیٰؑ آسمان پر کہاں سے کھاتے، پیتے ہیں؟

سوال: ... قادیانی کہتے ہیں کہ: جی اگر حضرت عیسیٰ علیہ السلام کو آسمان پر زندہ

مان لیا جائے تو سوال یہ پیدا ہوتا ہے کہ وہ اتنا عرصہ سے آسمان پر زندہ رہ رہے ہیں تو وہاں

وہ کیا کھاتے ہیں؟ کیا پیتے ہیں؟ اور اب تو وہ بوڑھے ہو گئے ہوں گے، تو اب اس بوڑھے

آدمی کے زمین پر آنے کی کیا ضرورت ہوگی؟ یہ نیا مسیح آ گیا ہے اس کو مان لو۔

جواب: ... آپ تو مولوی صاحبان ہیں، اُن کے ساتھ تو باتیں کرتے رہتے

ہوں گے، یا اپنے پاس سے ہی یہ سوال بنالیا ہوگا؟ چلئے یہ مرزائیوں کا شبہ ہی سہی، میں اس کا

جواب دیئے دیتا ہوں:



دین اسلام کے عقیدے یکے ہیں:

یہ بات یاد رکھو! میں نے پہلے بھی عرض کیا ہے کہ دین اسلام کے عقیدے یکے ہیں، جیسا کہ آفتاب کے سامنے کبھی کبھی بادل آجائیں تو وہ چھپ جاتا ہے، اسی طرح کبھی سورج کو گرہن لگ جائے تو وہ چھپ جاتا ہے، اسی طرح کبھی چاند گرہن ہو جائے تو کہتے ہیں کہ زمین درمیان میں آجاتی ہے، یا کہتے ہیں کہ چاند، سورج اور زمین کے درمیان آجاتا ہے، تو پھر گویا اس کی موت آگئی اور وہ بے نور ہو گیا اور چھپ گیا۔

اہل باطل اسلام کے سورج کو شبہات کے بادل میں چھپانا چاہتے ہیں:

ٹھیک اسی طرح جتنے بھی اہل باطل ہیں وہ جب بھی کوئی شبہ کریں گے، اہل باطل خواہ مرزائی ہوں یا چکڑالوی، منکرین حدیث ہوں یا رافضی، ناصبی ہوں یا عیسائی، یہ سارے کے سارے حق کو اپنے شبہات کے گرد و غبار اور بادل سے چھپانا چاہتے ہیں، دراصل بات یہ ہے کہ ان کا مقصود حق کو پہچاننا نہیں، بلکہ حق کو چھپانا اور متوہم کرنا ہے۔

مرزائیوں کے واہیات سوالات:

یہ جو مولانا صاحب نے ذکر کیا کہ مرزائی ایسا کہتے ہیں، واقعی مرزائی ایسا کہتے ہوں گے، کبھی تو وہ یوں کہتے ہیں کہ: عیسیٰ علیہ السلام کیوں چلے گئے؟ کیا زمین پر ان کی روح کے لئے سونے کی کوئی جگہ نہیں تھی؟ کبھی وہ کہتے ہیں کہ: وہاں وہ کھاتے کیا ہوں گے؟ پیتے کیا ہوں گے؟... نعوذ باللہ... گتے کہاں ہوں گے؟ موتے کہاں ہوں گے؟

ہمارے یہاں کراچی میں مرزائیوں کا ایک دفتر ہے، ایک بار میں وہاں چلا گیا، میں نے وہاں موجود ان کے مربی سے کہا کہ: بھائی ہماری باتیں بھی سن لو! وہ بیٹھ گئے، بات تو لمبی ہے، بہر حال قصہ مختصر ان میں ایک بڑا کڑیل نوجوان بھی تھا، میرے خیال میں وہ ساڑھے چھ فٹ کا ہوگا، وہاں موجود لوگوں میں سب سے لمبا تھا، اور اچھے ڈیل ڈول کا آدمی تھا، اس کا چہرہ بھی بالکل سفید تھا، غالباً سیالکوٹ کا پنجابی تھا، کہنے لگا: ”میں من لواں گا، مینوں اے دسو کہ عیسیٰ ٹٹی کتھے کر دے نے؟“ (میں تمہاری بات مان لوں گا کہ عیسیٰ زندہ



ہیں، مگر مجھے یہ بتلاؤ کہ عیسیٰ ٹٹی کہاں کرتے ہیں؟) کبھی کہتے ہیں کہ: کارخانہ کون سا ہے جہاں سے ان کے کپڑے بن کر آتے ہیں؟  
حضرت عیسیٰؑ آسمان پر خود نہیں گئے:

ان کا یہ کہنا کہ عیسیٰ علیہ السلام کیسے چلے گئے؟ ان سے کہو کہ: ناں بھائی! ہم اس کے قائل ہی نہیں کہ عیسیٰ علیہ السلام چلے گئے، اور نہ ہم اس کے قائل ہیں کہ عیسیٰ علیہ السلام اپنے آپ چھلانگ مار کے آجائیں گے، ہم تو اس کے قائل ہیں کہ اللہ تعالیٰ ان کو لے گیا اور اللہ تعالیٰ ہی ان کو نازل فرمائیں گے، ہمارا عقیدہ ہے کہ یہ اللہ تعالیٰ کا فعل ہے اور اللہ تعالیٰ کا کام ہے، اللہ تعالیٰ کے کتنے افعال ایسے ہیں جن کی تم نے حکمتیں معلوم کر لی ہیں؟  
اللہ تعالیٰ کے ہر فعل کی حکمت پوچھنے کی اجازت نہیں:

حکیم الامت حضرت مولانا اشرف علی تھانوی قدس سرہ سے کسی نے کسی مسئلہ کی علت سے متعلق پوچھا کہ یہ یوں کیوں ہے؟ حضرت نے فرمایا کہ: تمہاری ناک آگے لگی ہے، پیٹھ کے پیچھے کیوں نہیں لگی؟ بلاشبہ اللہ تعالیٰ کی اس میں حکمت ہے بلکہ بے شمار حکمتیں ہیں، اسی طرح سر پر بال اُگائے ہیں، چہرے کو صاف رکھا ہے، اور داڑھی مردوں کو دی ہے عورتوں کو نہیں دی، اللہ تعالیٰ کے ہر تخلیقی فعل میں یا تشریعی فعل میں حکمت ہے، ہر تکنیکی کام میں حکمت ہے، میں اس حکمت کا انکار نہیں کرتا۔

سوال یہ ہے کہ کیا بندوں کو پوچھنے کا حق ہے کہ اللہ نے ایسا کیوں کیا؟ مرزائیوں کا یہ شبہ کہ عیسیٰ علیہ السلام کیسے چلے گئے؟ یہ ہمارا دعویٰ ہی نہیں، ہمارا دعویٰ یہ ہے کہ ان کو اللہ تعالیٰ لے گئے، کیونکہ ارشاد الہی ہے: ”بَلْ رَفَعَهُ اللَّهُ إِلَيْهِ“ (بلکہ اللہ نے اٹھا لیا ہے ان کو اپنی طرف) اب فرمائیے کہ جب اللہ نے اٹھایا ہے تو اللہ سے جا کے پوچھو، کیونکہ قرآن میں لکھا ہے کہ اللہ تعالیٰ نے ان کو اٹھالیا، پھر ہم سے کیوں پوچھتے ہو؟ عیسیٰ علیہ السلام سے کیوں پوچھتے ہو؟ اللہ سے پوچھو کہ اس نے درمیان سے رکاوٹیں کیسے دور کر دیں؟ یہ سب واہیات باتیں ہیں۔

جب اللہ تعالیٰ کو لے جانے کی طاقت ہے، تو لے گیا!

ہاں! البتہ ہم مرزائیوں سے یہ پوچھتے ہیں کہ یہ بتاؤ کہ اللہ تعالیٰ کو لے جانے کی طاقت ہے یا نہیں؟ اگر مرزائی کہیں کہ طاقت ہے، تو کہو بس ٹھیک ہے، اللہ نے کہہ دیا کہ مجھے طاقت ہے میں لے گیا، اس لئے کہ اللہ کی شان یہ ہے کہ: ”وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا“ (اللہ تعالیٰ زبردست ہے، اور حکمت والا ہے) وہ دیکھتا ہے، کیوں لے گیا؟ اس کی حکمت ہوگی، ہمیں کیا معلوم؟ بس ہمیں تو اس نے یہ کہہ دیا کہ یہ معاملہ یوں ہوا ہے اور تم اس کا عقیدہ رکھو۔

اہل جنت کے کپڑے کہاں سے آتے ہیں؟

اب رہا یہ کہ وہاں وہ کپڑے کہاں سے پہنتے ہیں؟ مرزائیوں سے پوچھو کہ اہل جنت کہاں سے کپڑے پہنیں گے؟ کیا وہاں نواز شریف کی ٹیکسٹائل لگی ہوئی ہے؟ اہل جنت بھی ٹٹی کریں گے؟

اب میری بات کو سمجھو! قادیانی شبہ کرتے ہیں کہ وہ ٹٹی کہاں کرتے ہیں؟... نعوذ باللہ... ان سے پوچھو کیا جنتی بھی ٹٹی کریں گے؟ انبیائے کرام اہل جنت کی صفت پر:

ترجمان السنہ میں حضرت مولانا بدر عالم میرٹھی رحمۃ اللہ علیہ نے ایک باب کا عنوان یہ قائم کیا ہے کہ انبیائے کرام علیہم السلام دنیا میں رہتے ہوئے اہل جنت کی صفت پر ہوتے ہیں، وہ عبدیت کی بنا پر کھاتے بھی ہیں، پیتے بھی ہیں، قضائے حاجت بھی فرماتے ہیں، اور جب اللہ کو منظور ہو تو صوم وصال بھی رکھتے ہیں، یہ تو انبیائے کرام ہیں۔

جب ادنیٰ اُمتیوں کا یہ حال ہے تو...:

آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے اُمتیوں کا حال یہ ہے کہ چالیس چالیس دن کا مراقبہ کیا، نہ کچھ کھایا، نہ پیا، نہ پیشاب کیا، نہ کوئی قضائے حاجت کی، جب ادنیٰ اُمتیوں کو یہ شرف حاصل ہو سکتا ہے، تو عیسیٰ علیہ السلام کے بارے میں سوال کرنے کا کیا مطلب؟

## دجال کے زمانے میں مسلمانوں کی خوراک:

دجال کے زمانے کے بارے میں حدیث شریف میں آتا ہے، جنہوں نے حدیث پڑھی ہے ان کو معلوم ہوگا کہ حضرت اسماء بنت یزید رضی اللہ عنہا فرماتی ہیں کہ:

”کان رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم فی بیتی

فذكر الدجال فقال: ان بین یدیه ثلاث سنین، سنة

تمسک السماء فیها ثلاث قطرها والأرض ثلاث نباتها،

والثانية تمسک السماء ثلاثی قطرها والأرض ثلاثی

نباتها، والثالثة تمسک السماء قطرها كله والأرض

نباتها كله، فلا یبقى ذات ظلف ولا ذات ضرس من

البهائم الا هلك، ان من اشد فتنته انه یأتی الأعرابی

فیقول: أرأیت ان احيیت لك ابلک الست تعلم انه

ربک؟ فیقول: بلی! فیمثل له الشیطان نحو ابله

کأحسن ما یكون ضروراً وأعظمه أسمة، قال: ویأتی

الرجل قد مات اخوه ومات ابوه فیقول: أرأیت ان

أحيیت لك أباک وأخاک ألت تعلم انی ربک؟

فیقول: بلی! فیمثل له الشیاطین نحو أبیه ونحو أخیه.

قالت: ثم خرج رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم لحاجته

ثم رجع والقوم فی اهتمام وغم مما حدثهم. قالت:

فأخذ بلحمتی الباب فقال: مَهِیْمَ اسماء! قالت: یا رسول

اللہ! لقد خلعت افئدتنا بذكر الدجال. قال: ان ینخرج

وأنا حی فانا حجیجہ وآلا فان ربی خلیفتی علی کل

مؤمن. فقلت: یا رسول اللہ! واللہ انا لنعجن عجیننا فما

نخبزہ حتی نجوع، فکیف بالمؤمنین یومئذ؟ قال:

يُجزِيهِمْ مَا يَجْزِي أَهْلَ السَّمَاءِ مِنَ السَّيِّحِ  
وَالْتَقْدِيسِ۔“ (مشکوٰۃ ص: ۴۷۷)

ترجمہ:۔۔۔ ”رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم میرے گھر تشریف فرما تھے، آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے دجال کا ذکر فرمایا، اور فرمایا کہ: اس کے ظہور سے پہلے تین قحط پڑیں گے، ایک سال آسمان کی ایک تہائی بارش رُک جائے گی، اور زمین کی پیداوار بھی ایک تہائی کم ہو جائے گی۔ دوسرے سال آسمان کی دو حصے بارش رُک جائے گی اور زمین کی پیداوار دو حصے کم ہو جائے گی۔ اور تیسرے سال آسمان سے بارش بالکل نہ برے گی اور زمین کی پیداوار بھی کچھ نہ ہوگی، حتیٰ کہ جتنے حیوانات ہیں خواہ وہ کھر والے ہوں یا داڑھ سے کھانے والے، سب ہلاک ہو جائیں گے، اور اس کا سب سے بڑا فتنہ یہ ہوگا کہ وہ ایک گنوار آدمی کے پاس آکر کہے گا: اگر میں تیرے اُونٹ کو زندہ کر دوں تو کیا اس کے بعد بھی تجھ کو یہ یقین نہ آئے گا کہ میں تیرا رب ہوں؟ وہ کہے گا: ضرور! اس کے بعد شیطان اس کے اُونٹ کی سی شکل بن کر اس کے سامنے آئے گا، جیسے اچھے تھن اور بڑے کوہان والے اُونٹ ہوا کرتے ہیں۔ اسی طرح ایک اور شخص کے پاس آئے گا، جس کا باپ اور سگا بھائی گزر چکا ہوگا، اور اس سے آکر کہے گا: بتلا! اگر میں تیرے باپ و بھائی کو زندہ کر دوں تو کیا تجھے پھر بھی یقین نہ آئے گا کہ میں تیرا رب ہوں؟ وہ کہے گا: کیوں نہیں! پس اس کے بعد شیطان اس کے باپ اور بھائی کی صورت بنا کر آجائے گا۔ حضرت اسماء کہتی ہیں کہ: یہ بیان فرما کر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ضرورت کے لئے باہر تشریف لے گئے، اس کے بعد لوٹ کر دیکھا کہ لوگ آپ کے اس بیان کے بعد سے بڑے فکر و غم میں پڑے



ہوئے تھے۔ حضرت اسماء کہتی ہیں کہ: آپ نے دروازے کے دونوں کواڑ پکڑ کر فرمایا: اسماء کہو کیا حال ہے؟ میں نے عرض کیا: یا رسول اللہ! دجال کا ذکر سن کر ہمارے دل تو سینے سے نکلے پڑتے ہیں۔ اس پر آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: اگر وہ میری زندگی میں ظاہر ہوا تو میں اس سے نمٹ لوں گا، ورنہ میرے بعد ہر مؤمن کا نگہبان میرا رب ہے! میں نے عرض کیا: یا رسول اللہ! ہمارا حال جب آج یہ ہے کہ ہم آنا گوندھ کر رکھتے ہیں اور اس کے پکنے میں دیر ہو جاتی ہے تو بھوک سے بے تاب ہو جاتے ہیں، تو اس وقت کے مسلمانوں کی کیا حالت ہوگی جبکہ اتنا قحط اور سختی ہوگی؟ فرمایا: ان کو وہی چیز کافی ہوگی جو ملائکہ کو کافی ہو جاتی ہے یعنی تسبیح و تقدیس۔“

حق تعالیٰ شانہ جب اپنے بندوں کو اس زمین پر رکھتے ہوئے بھی تسبیح و تہلیل کے ذریعے زندہ رکھ سکتے ہیں تو آسمان کی تو بات ہی کیا ہے؟ تو یہ شبہ کرنا کہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام کہاں سے کھاتے ہیں؟ -نعوذ باللہ- کہاں پیشاب کرتے ہیں؟ کپڑے کہاں سے پہنتے ہیں؟ لغویات میں سے ہے۔

پیر فرتوت والے شبہ کا جواب:

اب رہی یہ بات کہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام... نعوذ باللہ ثم نعوذ باللہ... غلام احمد قادیانی دجال کے بقول پیر فرتوت ہو گئے ہوں گے... یہ اس کے الفاظ ہیں... کھوسٹ بڑھا، جو کسی کام کا نہ رہے، کیونکہ جب سو سال کی عمر ہو جائے تو باباجی کا سر ہلنے لگتا ہے، آنکھوں سے دکھائی نہیں دیتا، ہاتھ کام نہیں کرتے، پاؤں کام نہیں کرتے، معدہ کام نہیں کرتا، حضرت عیسیٰ علیہ السلام کو تو دو ہزار سال ہو گئے ہیں، وہ کس قدر بوڑھے ہو گئے ہوں گے؟

آسمان کا ایک دن ہزار سال کے برابر ہے:

جواب:... خوب یاد رکھو کہ: ”إِنَّ يَوْمًا عِنْدَ رَبِّكَ كَأَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا



تَعْدُوْنَ“ (تیرے رب کے ہاں کا ایک دن تمہارے یہاں کے ایک ہزار سال کے برابر ہوگا)۔ چونکہ اب ۱۹۹۶ء چل رہا ہے، اس لئے حضرت عیسیٰ علیہ السلام کی پیدائش کو انیس سو چھیانو اں سال شروع ہوا ہے، کیونکہ یہ میلادی سن کہلاتا ہے، پیدائش کے چالیس سال بعد ان کو نبوت عطا کی گئی، چالیس سال وہ زمین پر رہے، دعوت دیتے رہے، چالیس سال کے بعد اللہ تعالیٰ نے ان کو آسمان پر اٹھالیا، قرب قیامت میں جب دجال نکلے گا، تو وہ بحکم الہی زمین پر تشریف لائیں گے، اور چالیس سال تک وہ پھر زمین پر رہیں گے، ان کی کل عمر ایک سو بیس سال ہوگی، چنانچہ مستدرک حاکم میں ہے کہ: آپ کی عمر ایک سو بیس سال کی ہوگی۔

ہر مقام کے پیمانے جدا ہیں:

رہا وہ زمانہ جو ان کا آسمان پر گزرا ہے یا گزر رہا ہے، اس کے بارہ میں عرض ہے کہ یہ اصول یاد رکھیں کہ جہاں آدمی موجود ہوتا ہے اس کے لئے وہاں کے پیمانے چلتے ہیں، دوسری جگہ کا پیمانہ وہاں نہیں چلتا، تو چونکہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام آسمان پر ہیں، اور اللہ تعالیٰ فرماتا ہے کہ ایک دن تمہارے رب کے پاس تمہارے ایک ہزار سال کے برابر ہے۔

حضرت عیسیٰؑ کو آسمان پر گئے دو دن نہیں ہوئے!

تو ان کو ابھی تک پورے دو دن بھی نہیں ہوئے، کیونکہ سن دو ہزار میں ان کی ولادت کو دو ہزار سال پورے ہو جائیں گے نہ کہ رفع الی السماء کو، کیونکہ رفع تو ان کی ولادت کے اسی سال بعد ہوا ہے، ہاں! جب دو ہزار اسی میلادی ہوگا، تو حضرت عیسیٰ علیہ السلام کی عمر شریف جو آسمان پر گزر رہی ہے، وہ دو دن کی پوری ہو جائے گی۔

بھلا بتلاؤ کہ میں یہاں (چناب نگر میں) دو دن کے لئے آیا ہوں، کیا میرے پیچھے میری بیوی کو نکاح کر لینا چاہئے؟ کہ مولوی صاحب تو فارغ ہو گئے اور مفقود الخبر ہو گئے، کیا وہ عدالت میں بیان دے دے کہ ان کا کچھ پتہ نہیں چل رہا؟

## غلام احمد کی حماقت!

غلام احمد قادیانی کی حماقت یہ ہے کہ ایک آدمی (حضرت عیسیٰ علیہ السلام) جس کے غائب ہوئے صرف دو دن ہوئے بلکہ دو دن بھی پورے نہیں ہوئے، کیونکہ دوسرا دن ابھی تک گزر رہا ہے، پھر غائب ہونے والے کا پتہ اور نشان بھی بتا دیا گیا ہے کہ وہ فلاں جگہ موجود ہے، مگر اس نے عوام کی عدالت میں یہ مقدمہ دائر کر دیا کہ وہ لاپتہ ہے، بلکہ مر گیا ہے، طرفہ تماشایہ کہ چند گدھوں نے تصدیق بھی کر دی کہ ہاں جی مر گئے، اس نے کہا کہ اب گدی خالی ہے، لہذا مجھے بٹھا دو، سمجھے بھائی!

قادیانی احباب سے کہو کہ جب تم عیسیٰ علیہ الصلوٰۃ والسلام کے بارے میں بات کرتے ہو تو حضرت عیسیٰ علیہ الصلوٰۃ والسلام ہی کی جائے قیام کے پیاناہ سے ناپو، نہ کہ اپنے پیانے سے۔

## آسمان کی آب و ہوا کی خاصیت:

بھائی! پنجاب کی آب و ہوا اور ہے، کراچی کی اور ہے، فرنیئر کی اور ہے، اور بلوچستان کی اور! جہاں آدمی موجود ہوتا ہے، وہاں کی آب و ہوا کا اعتبار ہوتا ہے، کسی جگہ کے لوگوں کی عمریں کم ہوتی ہیں اور کسی جگہ والوں کی زیادہ ہوتی ہیں، حضرت عیسیٰ علیہ السلام تو وہاں رہ رہے ہیں، جہاں کسی کے مرنے کا سوال ہی نہیں پیدا ہوتا، جب وہ یہاں آئیں گے تو مریں گے۔ وہاں تو جبرائیل و میکائیل رہتے ہیں۔

## ارواح کا مستقر آسمان ہے، اور آپؑ روح اللہ ہیں:

اور ارواح کا آسمان پر جانا تو مرزا یوں کو بھی مسلم ہے۔ اور عیسیٰ علیہ السلام کا لقب ہے ”روح اللہ“ یعنی اللہ کی روح، یوں تو ساری کی ساری روحیں اللہ ہی کی ہوتی ہیں، لیکن ایک خاص معجزانہ طریقے سے اللہ تعالیٰ نے ان کی روح بھیجی تھی، اس لئے ان کا لقب ہی روح ہو گیا، گویا ان کا جسم تابع ہے ان کی روح کے، اس لئے ان کو یہ لقب دیا گیا ہے، جب قرآن کہتا ہے کہ وہ روح اللہ ہیں، اور تمام دنیا بھی مانتی ہے کہ وہ روح اللہ

ہیں، اور پوری دنیا یہ بھی مانتی ہے کہ رُوحیں آسمان پر جاتی ہیں، تو جب وہ رُوح ہیں، تو ان کے آسمان پر جانے پر تعجب کیوں ہو؟ ہاں! اگر وہ آسمان پر نہ جاتے تو تعجب ہوتا کہ اللہ نے ان کو رُوح کیوں کہا تھا؟ ارواح کو تو آسمان پر جانا چاہئے۔

حضرت عیسیٰؑ کو رُوح اللہ کہنے کی کوئی تو حکمت ہوگی؟

بڑے بڑے انبیائے کرام علیہم الصلوٰۃ والسلام دُنیا میں مبعوث ہوئے ہیں، خود حضرت عیسیٰ علیہ السلام سے بھی بہت سے افضل انبیاء ہوئے ہیں، مثلاً: آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے بعد تمام انبیاء کی جماعت میں حضرت ابراہیم علیہ السلام افضل ہیں، پھر حضرت موسیٰ علیہ السلام ان کے بعد دوسرے نمبر پر ہیں، حضرت موسیٰ علیہ السلام تو خود حضرت عیسیٰ علیہ السلام کے بھی مقتدا ہیں، کیونکہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام ان کی شریعت پر عمل کرتے تھے، ظاہر ہے وہ افضل ہوئے، اسی طرح ہمارے آقا حضرت محمد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم تو سب سے افضل ہیں، اللہ تعالیٰ نے اپنے انبیائے کرام علیہم السلام کے بے شمار فضائل بیان کئے، لیکن کسی کو رُوح اللہ نہیں کہا، تو سوال پیدا ہوتا ہے کہ جب اللہ نے صرف حضرت عیسیٰ علیہ السلام کو رُوح اللہ کہا تو کوئی معنی تو تھے؟ تو ان پر رُوح کے احکام جاری ہونے چاہئے ناں! پھر جب سب رُوحیں آسمان پر جاتی ہیں اب اگر حضرت عیسیٰ علیہ السلام بھی آسمان پر چلے گئے، تو اس میں تعجب کی کون سی بات ہے؟

دیر تک زندہ رہنا افضل ہونے کی دلیل نہیں:

ایک اور شبہ! جب میں نے افضل کا ذکر کیا، اس پر بھی مرزائی ایک شبہ کیا کرتے ہیں، اور غلام احمد قادیانی دجال نے بھی اپنی مختلف کتابوں میں اس شبہ کو اتنا پھیلا پھیلا کے رنگ آمیزی کی اور اس کو ایسا مرجح مسالہ لگا کر پیش کیا ہے کہ آدمی حیران ہو جاتا ہے، چنانچہ وہ کہتا ہے کہ:

”دیکھو ان لوگوں کو شرم بھی نہیں آتی کہ حضرت عیسیٰ علیہ

السلام کو تو زندہ آسمان پر مانتے ہیں، اور رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم

کے بارہ میں کہتے ہیں کہ وہ مر گئے، حالانکہ زندہ رہنا تو حضور صلی اللہ علیہ وسلم کو لائق تھا۔“

آج مرزا طاہر بھی یہی بات کہتا ہے، یعنی اپنے دادے کی بات دہراتا ہے۔  
الزامی جواب:۔۔۔ ہم کہتے ہیں کہ مرزا طاہر کو بالکل شرم نہیں آتی کہ وہ اپنے آپ کو تو زندہ کہتا ہے، اور غلام احمد کے بارہ میں کہتا ہے کہ وہ مر گئے، اس کو بالکل شرم نہیں آتی، حالانکہ مرزا غلام احمد اس کے عقیدے کے مطابق اس سے بڑا (دجال) تھا، تو اس کو زندہ رہنا چاہئے تھا، کیوں بھائی! غلط کہہ رہا ہوں یا صحیح کہہ رہا ہوں؟  
وہ کہتا ہے کہ عیسیٰ تو آسمان پر چلے گئے، اور آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم زیر زمین مدفون ہیں؟

اس پر میں مرزا طاہر سے کہتا ہوں کہ تم ہوائی جہاز پر جاتے ہو اور مرزا غلام احمد تحت الثریٰ میں دوزخ کے آخری طبقوں میں مدفون ہے، آخر کیوں؟ خیر یہ تو ان کا الزامی جواب ہوا۔

**تحقیقی جواب:**۔۔۔ یہ ہے کہ کسی کا پہلے چلا جانا، فوت ہو جانا اور کسی کا بعد میں چلے جانا یا فوت ہو جانا، یہ افضلیت و مقضولیت کی کوئی دلیل نہیں ہے، کسی شخص کا اونچی جگہ ہونا اور کسی کا نیچے ہونا یہ بھی افضلیت اور مقضولیت کی علامت نہیں ہے۔  
ہمارا عقیدہ:

اس لئے کہ ہمارا عقیدہ ہے کہ جہاں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم تشریف فرما ہیں اور اس وقت جہاں آپ تشریف فرما ہیں آپ کے آستانہ عالی پر ساری کائنات گردش کر رہی ہے، بلکہ خود حضرت عیسیٰ علیہ السلام جس آسمان پر بیٹھے ہیں، وہ آسمان بھی آپ کے روضہ کے ارد گرد طواف کر رہا ہے۔

کیا ابوبکرؓ حضور صلی اللہ علیہ وسلم سے افضل تھے؟

اسی طرح قادیانیوں سے کوئی پوچھے کہ اگر کسی کا دیر تک زندہ رہنا افضلیت کی



دلیل ہے، تو وہ اس سوال کا کیا جواب دیں گے کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم تو فوت ہو گئے تھے، مگر حضرت ابو بکر صدیق رضی اللہ عنہ دو سال کچھ ماہ بعد بھی زندہ رہے اور بعد میں فوت ہوئے؟ اگر ان کے اس اصول کو مان لیا جائے تو کیا - نعوذ باللہ - حضرت صدیق اکبر رضی اللہ عنہ آپ سے افضل ہو گئے؟ حالانکہ اکثر ایسا بھی ہوتا ہے کہ ایک آدمی پہلے پیدا ہوا، دوسرا اس کے بعد پیدا ہوا، مگر جو بعد میں پیدا ہوا، وہ اللہ کے پاس پہلے چلا گیا اور فوت ہو گیا، اور جو پہلے پیدا ہوا تھا وہ بعد تک زندہ رہا۔

شاہ ولی اللہ کے صاحبزادگان کی ترتیب وفات:

شاہ ولی اللہ محدث دہلوی رحمۃ اللہ علیہ کے چار صاحبزادے تھے، شاہ عبدالعزیز محدث دہلوی، شاہ رفیع الدین، شاہ عبدالقادر اور شاہ عبدالغنی، یہ ان کی ترتیب ولادت ہے، جبکہ ان کی ترتیب وفات اس کے بالکل برعکس ہے، چنانچہ سب سے پہلے شاہ عبدالغنی گئے، ان کے بعد شاہ عبدالقادر، ان کے بعد شاہ رفیع الدین اور سب سے بڑے حضرت شاہ عبدالعزیز صاحب سب سے آخر میں گئے۔

جس طرح پانچ نمازوں اور تعداد رکعات کا انکار کفر ہے، ایسے ہی نزول مسیح کا:

شبہ: ... قادیانی کہتے ہیں کہ قرآن مجید میں حضرت عیسیٰ علیہ الصلوٰۃ والسلام کے

نزول کا بتصریح ذکر ہے یا نہیں؟ اگر ہے تو کہاں ہے؟

جواب: ... ان سے پوچھو کہ قرآن کریم میں پانچ نمازوں کا بتصریح ذکر ہے یا

نہیں؟ پھر ان پانچ نمازوں کی تعداد رکعات، مثلاً: فجر کی دو، ظہر، عصر اور عشاء کی چار، چار اور مغرب کی تین رکعتیں ہیں، سوال یہ ہے کہ اس کا ذکر قرآن کریم میں بتصریح ہے...؟ اگر قرآن کریم میں ذکر نہیں تو کیا اس کا انکار کرنا جائز ہوگا؟ کیوں یہ عقیدہ اور ایمان ہے؟ نہیں، ہرگز نہیں! بلکہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے وقت سے لے کر آج تک جس پوری کی پوری امت، جس نے قرآن نقل کیا ہے، وہی پوری کی پوری امت، پانچ نمازوں کو اور ان کی رکعات کو بھی نقل کرتی چلی آ رہی ہے، ٹھیک ہے ناں! اگر اس عقیدہ میں امت پر



اعتماد نہیں، تو کیا قرآن نقل کرنے میں اُمت پر اعتماد ہے؟

ایک گواہ ایک بات میں سچا ہے تو دوسری میں جھوٹا کیوں؟

اُصول کی بات ہے کہ اگر ایک گواہ آکر دو باتیں کہتا ہے، اس کی ایک بات میں تو تم کہتے ہو کہ سچا ہے، اور دوسری میں کہتے ہو کہ جھوٹا ہے، سوال یہ ہے کہ ایک میں سچا ہے تو کیوں؟ اور دوسری میں جھوٹا ہے تو کیوں؟

دوسری بات یہ ہے کہ قرآن کریم میں حضرت عیسیٰ علیہ السلام کے آنے کی تصریح بھی ٹھیک اسی طرح ہے جس طرح قرآن کریم میں پانچ نمازوں کی تصریح ہے، یعنی دو رکعت فجر اور چار رکعت ظہر، عصر و عشاء، اور تین رکعت مغرب کی تصریح ہے، کیونکہ قرآن میں ہے:

”وَمَا آتَاكُمُ الرَّسُولُ فَخُذُوهُ وَمَا نَهَاكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوا۔“  
(الحشر: ۵۹)

ترجمہ: ”رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم جو چیز دے دیں

لے لو، اور جس چیز سے منع کریں اس سے رُک جاؤ!“

تو جس طرح ہم پانچ نمازوں کے اوقات اور تعدادِ رکعات کو ارشادِ الہی: ”وَمَا آتَاكُمُ الرَّسُولُ فَخُذُوهُ“ کے پیش نظر تصریحِ قرآنی سمجھتے ہیں، ٹھیک اسی طرح حیات و نزولِ عیسیٰ علیہ السلام کے عقیدہ کو بھی تصریحِ قرآنی مانتے ہیں۔

نزولِ مسیح کی تصریح موجود ہے، مگر چشمِ نبوت چاہئے!

تیسرے عنوان سے یوں کہو: ... ایک ہی بات ہے جو مختلف عنوانوں سے ذکر کر رہا ہوں.... کہ قرآن کریم میں اس کی تصریح موجود ہے، لیکن اس کو دیکھنے کے لئے حضرت محمد صلی اللہ علیہ وسلم کی چشمِ نبوت چاہئے! اور جو شخص اس نورِ نبوت سے اُندھا ہو گیا ہو، ہم اقرار کرتے ہیں کہ ہم اس کو کچھ بھی نہیں دکھا سکتے!

نخے سے بیج میں برگد کا درخت موجود ہے:

میں نے ایک موقع پر کہا تھا کہ: یہ جو ہمارے ہاں برگد یعنی بڑ کا درخت ہوتا ہے اور جس کو پنجابی میں ”بوہڑ“ کہتے ہیں، اس برگد کے درخت پر، بطور شمرہ اور پھل کے، ننھی ننھی سی گولیاں لگتی ہیں اور ان کے اندر ننھے ننھے بے دانے ہوتے ہیں، دراصل انہی دانوں میں سے ایک دانہ اس برگد یعنی بوہڑ کے درخت کا بیج ہوتا ہے، دیکھو! بیج اتنا چھوٹا سا ہے اور درخت اتنا بڑا ہے، قدرت الہی کا کرشمہ دیکھو کہ خالق کائنات نے برگد کا پورا درخت اس بیج کے اندر رکھا ہوا ہے، لیکن نظر نہیں آتا، ہاں! جن کو چشم بصیرت حاصل ہوتی ہے ان کو نظر آتا ہے کہ اس برگد کے بیج میں برگد کا اتنا بڑا درخت سما ہوا ہے۔

کیا کوئی اپنے جسم میں اپنی اولاد کا وجود دکھا سکتا ہے؟

سنو! تم میں سے کچھ شادی شدہ بھی ہوں گے، بھائی! ہے تو ”غیر پارلیمانی“ (غیر موزوں) بات، مگر کیا کوئی اپنے جسم میں اپنی اولاد کی موجودگی تصریح دکھا سکتا ہے؟ کیا انسانی مادہ کے کسی جرثومہ میں موجود انسان کو دکھایا جاسکتا ہے؟

چلو تمہیں دوسری طرف لے چلیں: وہ یہ کہ تم کس چیز سے پیدا ہوئے تھے؟ پانی کے ایک قطرے سے! سائنس، جدید اطباء اور ڈاکٹروں کی تحقیق یہ ہے کہ اس قطرہ پانی کے اندر ہزاروں جرثومے موجود ہوتے ہیں، اور ایک ایک جرثومہ انسان کا بیج ہے، قدرت ایسا کرتی ہے کہ جب یہ مادہ رحم میں جاتا ہے تو صرف ایک جرثومہ کو لے کر باقی سب کو تلف کر دیتی ہے، یاد کو لیتی ہے تو دو جڑواں بچے پیدا ہو جاتے ہیں، اور کبھی اس سے بھی زیادہ جیسا کہ اخبار میں آیا تھا کہ ایک عورت کے گیارہ جڑواں بچے پیدا ہوئے تھے، اور اگر اللہ چاہیں تو بے شمار بھی ہو سکتے ہیں، لیکن کیا کیا جائے، ماں کا پیٹ اس کا تحمل کیسے کرے؟ یہ فطرت کا ایک نظام ہے کہ ان میں سے ہر جرثومہ مکمل آدمی بننے کی صلاحیت رکھتا ہے۔

اب اگر کسی جرثومہ کی طرف اشارہ کر کے ہم سے کہو کہ تم تصریح دکھاؤ کہ اس کے اندر انسان موجود ہے! سوال یہ ہے کہ ہم کیسے دکھائیں گے تمہیں؟

## قادیانیوں کو احکام کی تصریح کہاں نظر آئے گی؟

بھائی! تمہیں قرآن تو پڑھنا آتا نہیں! تو تمہیں قرآن کے اندر تصریح کیسے دکھائیں؟ ارے میاں! تم تو قرآن ہی صحیح نہیں پڑھ سکتے تو تمہیں احکام کی تصریح کہاں نظر آئے گی؟ حالانکہ اگر غور کیا جائے تو پورا دین اسلام، جتنا کا جتنا ہے، اس کے اصول و فروع سارے کے سارے قرآن کریم کے بیج کے اندر موجود ہیں، یہ مسئلہ میں نے اس لئے ذکر کیا ہے کہ تمہیں منکرین حدیث سے بھی واسطہ پڑتا ہوگا اور درحقیقت یہ لوگ بھی منکرین حدیث ہیں۔

## رفع و نزول عیسیٰ کا ذکر قرآن میں:

اب سنو! قرآن کی سورہ نساء کی آیت: ۱۵۷، ۱۵۸ آپ نے پڑھی ہوگی اور حضرات اساتذہ اور علمائے کرام نے بتایا ہوگا، جس میں نزول عیسیٰ علیہ السلام کا تصریح ذکر موجود ہے:

”وَقَوْلُهُمْ إِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيحَ عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُولَ اللَّهِ، وَمَا قَتَلُوهُ وَمَا صَلَبُوهُ وَلَكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ، وَإِنَّ الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِيهِ لَفِي شَكٍّ مِنْهُ، مَا لَهُمْ بِهِ مِنْ عِلْمٍ إِلَّا اتِّبَاعَ الظَّنِّ، وَمَا قَتَلُوهُ يَقِينًا، بَلْ رَفَعَهُ اللَّهُ إِلَيْهِ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا.“  
(النساء: ۱۵۷، ۱۵۸)

ترجمہ: ”اور ان کے اس کہنے پر کہ ہم نے قتل کیا مسیح مریم کے بیٹے کو رسول تھا اللہ کا، اور انہوں نے نہ اس کو مارا اور نہ سولی پر چڑھایا، لیکن وہی صورت بن گئی ان کے آگے، اور جو لوگ اس میں مختلف باتیں کرتے ہیں تو وہ لوگ اس جگہ شبہ میں پڑے ہوئے ہیں، کچھ نہیں ان کو اس کی خبر صرف اُنکل پر چل رہے ہیں، اور اس کو قتل نہیں کیا، بے شک، بلکہ ان کو اٹھالیا اللہ نے اپنی طرف اور اللہ

ہے زبردست حکمت والا۔“ (ترجمہ حضرت شیخ الہند)

یعنی اللہ تعالیٰ فرماتے ہیں کہ: یہودی ملعون ہوئے اپنے اس قول کی بنا پر کہ ہم نے قتل کر دیا مسیح ابن مریم، اللہ کے رسول کو، اللہ تعالیٰ فرماتے ہیں کہ: نہ ان کو قتل کیا، نہ ان کو صلیب کیا، لیکن ان کو اشتباہ ہو گیا، اور جو لوگ کہ اس معاملہ میں شک و تردید میں ہیں اور اس میں اختلاف کر رہے ہیں، وہ حقیقت میں شک اور تردید میں ہیں، ان میں سے کسی کے پاس بھی قطعی علم نہیں، قطعی علم تو اللہ کے پاس ہے اور وہ تمہیں بتاتا ہے، اور وہ کیا ہے؟ وہ یہ کہ ان لوگوں نے حضرت عیسیٰ علیہ السلام کو قطعاً قتل نہیں کیا، یقیناً قتل نہیں کیا، یقینی بات یہ ہے کہ انہوں نے ان کو قتل نہیں کیا، سوال پیدا ہوا کہ پھر ہوا کیا؟ اس کا جواب یوں دیا گیا: بلکہ اللہ نے ان کو اپنی طرف اٹھالیا۔

”کیا اللہ تعالیٰ آسمان پر ہے؟“ کا جواب:

بیچ میں ایک مسئلہ اور بھی سن لو! وہ یہ کہ ابھی تین چار دن پہلے ایک صاحب مجھ سے بات کر رہے تھے کہ مرزائی کہتے ہیں: اللہ آسمان پر رہتا ہے، اللہ نے عیسیٰ علیہ السلام کو اپنی طرف اٹھالیا، کیا اللہ آسمان پر بیٹھا ہے؟ میں نے کہا: ہاں آسمان پر بیٹھا ہے! کیونکہ قرآن کہتا ہے، پھر میں نے کہا: سورہ ملک پڑھتے ہو؟ اس میں اس کا تذکرہ ہے، چنانچہ سورہ ملک کا دوسرا کوغ ہی یہاں سے شروع ہوتا ہے:

”هُوَ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ ذُلُولًا فَامْشُوا فِي  
مَنَاكِبِهَا وَكُلُوا مِنْ رِزْقِهِ وَإِلَيْهِ النُّشُورُ۔ ءَأَمِنتُمْ مِّنْ فِي  
السَّمَاءِ أَنْ يَخْسِفَ بِكُمُ الْأَرْضَ فَإِذَا هِيَ تَمُورُ۔“

(الملک: ۱۵، ۱۶)

ترجمہ: ”وہی ہے جس نے کیا تمہارے آگے زمین کو  
پست، اب چلو پھرو اس کے کندھوں پر اور کھاؤ کچھ اس کی دی ہوئی  
روزی اور اسی کی طرف جی اٹھنا ہے۔ کیا تم نڈر ہو گئے ہو اس سے جو



آسمان میں ہے، اس سے کہ دھنسا دے تم کو زمین میں، پھر تب ہی وہ  
لرزنے لگے۔“ (ترجمہ حضرت شیخ الہند)

اس کے بعد اگلی آیت میں پھر فرمایا: ”أَمْ آمَنْتُمْ مِّنْ فِي السَّمَاءِ“ (کیا تم نڈر  
ہو گئے ہو اس ہستی سے جو آسمان میں ہے؟)۔

یہاں ”سمااء“ اور ”ارض“ کا مقابلہ بھی کیا ہے، تو معلوم ہوا کہ اللہ تعالیٰ آسمان  
میں ہے، لہذا ہم نہیں کہتے کہ اللہ تعالیٰ آسمان میں بیٹھا ہے، بلکہ اللہ تعالیٰ خود فرماتے ہیں۔

صفات الہیہ اور عقیدہ اہل سنت والجماعت

ہاں! یہ بات یاد رکھو کہ قرآن و حدیث میں اللہ تعالیٰ کی جتنی صفات آئی ہیں ان  
کے بارہ میں اہل سنت والجماعت کا عقیدہ یہ ہے کہ: ”نُؤْمِنُ بِهِ وَلَا نُنْكَيْفُ“ یعنی ہم ان  
پر ایمان تو رکھتے ہیں، مگر ان کی کیفیت نہیں جانتے۔ لہذا ہم یہ جانتے ہیں کہ قرآن نے کہا  
ہے: ”فِي السَّمَاءِ“ یعنی اللہ تعالیٰ آسمان میں ہیں، مگر یہ کہ وہ آسمان میں کیسے بیٹھا ہے؟  
توبہ! توبہ! ہم نہیں جانتے، وہ اللہ کو معلوم ہے، ہمیں جتنی چیز کا پابند کیا گیا ہے ہم اس پر  
کار بند ہیں اور وہ یہ کہ: ”فِي السَّمَاءِ“ کہو!

خدا کی نسبت آسمان کی طرف، حدیث سے:

چنانچہ حدیث میں ہے:

”عن معاوية بن الحكم السلمي .... قال:

وكانت لي جارية ترعى غنماً لي قبل أحد والجوانية،

فاطلعت ذات يوم فاذا الذئب قد ذهب بشاة عن غنمها

وانا رجل من بني ادم اُسف كَمَا يأسفون، لكني

صككتها صكة فأتيت رسول الله صلى الله عليه وسلم

فعظم ذلك عليّ، قلت: يا رسول الله! أفلا أعتقها؟ قال:

اثنى بها، فأتيته بها، فقال: اين الله؟ قالت: في السماء!



قال: من أنا؟ قالت: أنت رسول الله! قال: اعتقها فانها مؤمنة۔“

(صحیح مسلم ج: ۱ ص: ۲۰۳، ۲۰۴، ابوداؤد، نسائی، مسند احمد، دارمی، طبرانی)

ترجمہ:...” حضرت معاویہ بن الحکم سلمی رضی اللہ عنہ سے

روایت ہے کہ..... میری ایک لونڈی اُحد پہاڑ اور جوانیہ کی طرف

بکریاں چرایا کرتی تھی، ایک دن کیا ہوا کہ اس کے ریوڑ میں سے

بھیڑیا ایک بکری اٹھا لے گیا، اور میں بھی انسان ہوں اور انسانوں

کی طرح مجھے بھی دکھ ہوتا ہے، لیکن میں نے اس کو ایک زوردار تھپڑ

مار دیا، پھر میں رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کے پاس آیا اور عرض کیا: کیا

میں اسے آزاد نہ کر دوں؟ آپ نے فرمایا: اُسے میرے پاس لاؤ! میں

اُسے آپ صلی اللہ علیہ وسلم کے پاس لے گیا، آپ صلی اللہ علیہ وسلم

نے اس سے پوچھا: اللہ کہاں ہے؟ اُس نے آسمان کی طرف اشارہ

کر کے کہا: آسمان میں! پھر آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے اس سے پوچھا:

میں کون ہوں؟ اس نے کہا: آپ اللہ کے رسول ہیں! تب آپ صلی

اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: اس کو آزاد کر دو، بے شک یہ مؤمنہ ہے!“

جیسے چھوٹے بچے ہوتے ہیں ناں! اور ہم ان چھوٹے بچوں کو آسمان کی طرف

اشارہ کرتے ہوئے کہتے ہیں: وہ اللہ! بھلا بتلاؤ کہ کیا ہم اس وقت نیچے کی طرف اشارہ کیا

کرتے ہیں یا اوپر کی طرف؟

”سماء“ علو کا نام ہے، اور اللہ تعالیٰ کے لئے علو کی صفت ثابت ہے، لہذا تم یہ تو

کہہ سکتے ہو کہ اللہ تعالیٰ آسمان میں ہیں، البتہ تم یہ نہیں کہہ سکتے کہ زمین میں ہیں، حالانکہ اللہ

تعالیٰ تو ہر جگہ ہے، اللہ تعالیٰ کی کوئی جگہ نہیں، وہ لامکان ہے۔

یعنی حضرت معاویہ بن حکم سلمیٰ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی خدمت میں آئے

فرمانے لگے کہ: یا رسول اللہ! میری لونڈی بکریاں چرا رہی تھی، ایک بھیڑیا آکر ایک بکری کو

لے گیا، میں نے غصے میں آکر اس کے ایک طمانچہ مار دیا، اب اس کا کفارہ کیا ادا کروں؟ اور پھر خود ہی فرمایا: میں نے برا کیا، میں نے اچھا نہیں کیا! آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: اس کو آزاد کر دو! عرض کیا: یا رسول اللہ! میرے ذمہ ایک کفارہ بھی ہے، کیا میں اس کو اس کفارے میں آزاد کر دوں؟ آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: اس کو میرے پاس لے آؤ! چنانچہ وہ لے آئے، آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے لونڈی سے پوچھا: ”ایسن اللہ؟“ (اللہ کہاں ہے؟) اس نے آسمان کی طرف اشارہ کر دیا، زبان سے بھی نہیں بولی۔

پھر آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے اس سے فرمایا کہ: ”ومن أنا؟“ (میں کون ہوں؟) اس نے کہا: ”انت رسول اللہ!“ (آپ اللہ کے رسول ہیں!) آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: ”أعتقها فانها مؤمنة!“ (اس کو آزاد کر دے کہ یہ مؤمنہ ہے)۔ اب دیکھئے وہ لونڈی اللہ تعالیٰ کے بارہ میں صرف آسمان کی طرف اشارہ کرنے سے مؤمنہ ہو گئی، کیا یہ اس کا ثبوت نہیں کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم بھی اسی کے قائل تھے کہ اللہ تعالیٰ آسمان میں ہیں؟ مگر افسوس کہ مرزائی، قرآن و سنت اور آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی تصریحات کی ہمیشہ اور ہر معاملہ میں مخالفت کرتے ہیں۔

اللہ تعالیٰ آسمان میں ہیں، مرزائی کتب کی تصریح:

پھر مرزائی کہتے ہیں کہ: حضرت عیسیٰ علیہ السلام کون سے آسمان پر چلے گئے تھے؟ جواب: ... میں نے کہا کہ: جہاں سے غلام احمد کا بیٹا خدا بن کر نیچے نازل ہوا تھا، کیونکہ مرزا اپنے بیٹے کے بارہ میں خود کہتا ہے: ”مظهر الحق والعلاء كأن الله نزل من السماء۔“ (ہیئتہ الوحی ص: ۹۸، ۹۹)

تم جانتے ہو کہ ”من“ اور ”الی“ دونوں متقابل ہیں، چنانچہ ”من“ کا معنی ہے ”سے“، اور ”الی“ کا معنی ہے ”تک“، یعنی فلاں جگہ سے فلاں جگہ تک۔

اب سنئے! کہ قرآن نے کہا کہ: اللہ تعالیٰ نے انہیں اپنی طرف اٹھالیا اور اللہ آسمان میں ہے، اور خود مرزا کا الہام بھی خدا کو آسمان سے نازل کر رہا ہے۔ نعوذ باللہ۔ اللہ کا

بیٹا بنا کر، اور مرزائی بھی اس پر ایمان رکھتے ہیں، چونکہ مرزائیوں کا مرزا کے الہاموں پر ایسا ہی ایمان ہے، جیسا کہ مسلمانوں کا قرآن پر ایمان ہے۔ نعوذ باللہ! استغفر اللہ!

”کائن“ اور گویا کی مرزائی تعبیر کے تحت اگر خدا آسمان سے اتر کر غلام احمد کا بیٹا بن جائے تو کوئی حرج لازم نہیں آتا، اور مرزائیوں کو اس کے ماننے میں کوئی اشکال نہیں ہوتا، اور اگر حضرت عیسیٰ علیہ السلام آسمان پر چلے جائیں تو کہتے ہیں کہ: کہاں آسمان پر؟ انصاف تو کرو!

تمام مفسرین کی تصریح:

تو میں بات کر رہا تھا کہ اللہ تعالیٰ نے حضرت عیسیٰ علیہ السلام کو آسمان کی طرف اٹھالیا، اور آیت پڑھی تھی: ”بَلْ رَفَعَهُ اللَّهُ إِلَيْهِ“ (اللہ نے ان کو اپنی طرف اٹھالیا)۔ جتنے بھی مفسرین ہیں، ان کی تمام تفسیروں اٹھا کر دیکھو، ان میں ہے: ”يَعْنِي إِلَى السَّمَاءِ، مَحَلُّ مَلٰٓئِكَتِهِ وَمَقَرُّ مَلٰٓئِكَتِهِ وَمَقَرُّ الْأَرْوَاحِ، وَمَحَلُّ الْمَلٰٓئِكَةِ“ یعنی اللہ تعالیٰ نے ان کو آسمان کی طرف اٹھالیا جو ملائکہ اور ارواح کے ٹھہرنے کی جگہ ہے۔

رہا یہ سوال کہ کیسے اٹھالیا اور کیوں اٹھالیا؟ ”وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا“ اس

لئے کہ اللہ زبردست ہے اور حکمت والا ہے۔

نزول و حیات عیسیٰ کی قرآنی تصریح:

قرآن کریم میں قرب قیامت میں نزول عیسیٰ علیہ السلام کے بارہ میں یہ پیش

گوئی کی گئی ہے:

”وَإِنْ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ إِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهِ قَبْلَ مَوْتِهِ

وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ يَكُونُ عَلَيْهِمْ شَهِيدًا۔“ (النساء: ۱۵۹)

ترجمہ: ”... اور جتنے بھی فرقے ہیں اہل کتاب کے سو عیسیٰ

پر یقین لاویں گے اس کی موت سے پہلے، اور قیامت کے دن ہوگا

(ترجمہ حضرت شیخ الہند)

ان پر گواہ۔“

تو اس آیت میں بتلایا گیا کہ عیسیٰ علیہ السلام کی موت اس وقت آئے گی جب سارے اہل کتاب مؤمن ہو جائیں گے، گویا ان کے نزول کا وقت بھی بتادیا اور وہ چونکہ ابھی نہیں ہوا تو اس کا مطلب یہ ہے کہ وہ ابھی زندہ ہیں۔

ایک سو بیس سال والی حدیث:

مرزائی ایک اور حدیث کے لفظ ”عاش“ سے وفات عیسیٰ پر استدلال کیا کرتے ہیں، اس حدیث کی حقیقت سے متعلق عرض ہے کہ اگر کوئی مرزائی اس حدیث کو پیش کرے تو اس سے کہو کہ پوری حدیث پڑھے، اور وہ پوری حدیث یہ ہے کہ:

”انہ لم یکن نبی کان بعدہ نبی الا عاش نصف

عمر الذی کان قبلہ، وان عیسیٰ بن مریم عاش عشرين

ومائة سنة، وانی لا ارانی الا ذاهبا علی رأس الستین۔“

(کنز العمال ج: ۱۱ ص: ۴۷۹ حدیث: ۳۲۲۶۲)

ترجمہ: ”... ہر نبی کی عمر پہلے نبی سے آدھی ہوتی ہے، اور

عیسیٰ ابن مریم علیہ السلام ایک سو بیس سال جئے، تو میرا خیال ہے کہ

میں ساٹھ سال جیوں گا۔“

تو مرزائی کہا کرتے ہیں کہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام کی عمر ایک سو بیس سال کی تھی

اور وہ ایک سو بیس سال جئے۔

جواب: ... قادیانیوں سے کہو کہ اس حدیث میں حضرت عیسیٰ علیہ السلام کی

موت کا تذکرہ کہاں ہے؟ اس میں تو ان کی موت کا کوئی ذکر نہیں البتہ صرف اتنا ہے کہ ایک

سو بیس سال کی ان کی زندگی ہے۔

اس حدیث کی روشنی میں مرزائی نہیں ہو سکتا:

تاہم اگر ان کو اس حدیث کے ظاہر ہی سے استدلال کرنا ہے تو ان سے کہو کہ

سب سے پہلی بات تو یہ کہ تم کہتے ہو کہ ہر نبی کی زندگی پہلے نبی کی زندگی سے آدھی ہوتی ہے،

اب جب حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی زندگی تریسٹھ سال ہے تو تمہارے عقیدہ اجرائے نبوت کی روشنی میں متنبی قادیان غلام احمد کی کتنی ہونی چاہئے؟ ساڑھے اکتیس سال! حالانکہ اس کی عمر ساڑھے اکتیس سال نہیں، بلکہ ۷۱، ۷۲ سال تھی، ملاحظہ ہو سیرۃ المہدی ج: ۲ ص: ۱۵۰، معلوم ہوا کہ وہ نبی نہیں بلکہ جھوٹا ہے۔

### قادیانی استدلال کا بطلان:

اسی طرح عیسیٰ علیہ الصلوٰۃ والسلام کی عمر ایک سو بیس سال ہو تو ان سے پہلے نبی کی دو سو چالیس سال، اور اس سے پہلے کی چار سو اسی سال، اور اس سے پہلے کی نو سو ساٹھ سال، تو حضرت آدم علیہ السلام تک پہنچتے پہنچتے ان کی عمر کتنی بنے گی؟ جبکہ حضرت آدم علیہ السلام کی عمر حدیث صحیح کے مطابق ایک ہزار سال تھی، ملاحظہ ہو:

”عن ابن عباس رضی اللہ عنہ عن النبی صلی اللہ علیہ وسلم قال: کان عمر ادم الف سنة، قال ابن عباس: وبين ادم ونوح الف سنة، وبين نوح و ابراهيم الف سنة، وبين ابراهيم وموسى سبع مائة سنة، وبين موسى وعيسى خمس مائة سنة، وبين عيسى ومحمد صلی اللہ علیہ وسلم ست مائة سنة....“

(متدرک حاکم ج: ۲ ص: ۵۹۸، درمنثور ج: ۴ ص: ۳۲۶)

ترجمہ:...”حضرت عبداللہ بن عباس رضی اللہ عنہ،

آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم سے روایت فرماتے ہیں کہ: حضرت آدم علیہ السلام کی عمر ایک ہزار سال تھی۔ حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ: حضرت آدم اور حضرت نوح کے درمیان ایک ہزار سال، حضرت نوح اور حضرت ابراہیم کے مابین ایک ہزار سال، حضرت ابراہیم اور حضرت موسیٰ کے درمیان سات سو سال، حضرت موسیٰ اور حضرت عیسیٰ کے درمیان پانچ سو سال اور حضرت عیسیٰ اور



حضرت محمد صلی اللہ علیہ وسلم کے درمیان چھ سو سال کا فاصلہ تھا۔“  
ہاں! زیادہ سے زیادہ یہ کہا جاسکتا ہے کہ اس سے صاحب شریعت اور صاحب کتاب نبی مراد ہے۔

اگر حضرت عیسیٰ زندہ ہیں تو لفظ ”عاش“ کیوں لایا گیا؟

شبہ: ... قادیانی کہتے ہیں کہ اگر حضرت عیسیٰ علیہ السلام زندہ تھے تو حضور صلی اللہ علیہ وسلم نے سابقہ انبیاء کے بارہ میں ”عاش“ ماضی کا صیغہ کیوں استعمال فرمایا؟

جواب: ... لفظ ”عاش“ ماضی لانے کی وجہ یہ ہوئی کہ دیگر انبیاء کے حق میں تو ماضی ہی صادق تھا اور بحق عیسیٰ علیہ السلام ان کی زندگی کے دو حصوں یعنی زمانہ قبل از بعثت اور زمانہ بعد از بعثت اور قبل از رفع کے اعتبار سے تو ماضی صادق آتی ہے، مگر چونکہ اس کے ساتھ ہی حضور صلی اللہ علیہ وسلم کو صرف تنصیف عمر بیان کرنا منظور تھی، لہذا حصہ ثالثہ یعنی زمانہ بعد نزول کو ماضی ہی میں لپیٹ دیا تا کہ بیان تنصیف عمر میں تطویل لا طائل (خواہ مخواہ کی طوالت) نہ اختیار کرنی پڑے اور تنصیف کل عمر اور تنصیف عمر نبوت ہر دو اعتبار سے مع رعایت اختصار مستقیم ہو جائے اور سلسلہ نظم عبارت بھی بحال رہے، لہذا یہ بات صاف ہو گئی کہ کل عمر جو زمین پر گزرے گی وہ ایک سو بیس برس ہے۔

رفع الی السماء کا ذریعہ؟

رفع عیسیٰ علیہ السلام کے بارہ میں قادیانی چند شبہات پیش کیا کرتے ہیں، ان میں سے پہلا شبہ یہ ہے کہ: حضرت عیسیٰ علیہ السلام کو جب اٹھایا گیا تو اس کے لئے کیا ذریعہ استعمال کیا گیا تھا؟

جواب: ... آپ کو فرشتہ کے ذریعہ اٹھایا گیا، چنانچہ خود حضرت عبداللہ بن عباس رضی اللہ عنہما کی ایک روایت میں ان کا اپنا قول ہے کہ حضرت جبریل علیہ السلام آپ کو لے گئے تھے، جس کو امام حافظ ابن کثیر رحمہ اللہ نے کہا: ”وہذا سند صحیح الی ابن عباس“ ابن عباس تک سند صحیح ہے، گویا کہ جبریل علیہ السلام تشریف لائے اور آپ کو اس

مکان کے روشندان سے لے گئے جس میں کہ آپ تھے۔  
چنانچہ تفسیر ابن کثیر میں ہے:

”عن ابن عباس قال: لما أراد الله أن يرفع  
عيسى الى السماء خرج على أصحابه وفي البيت اثنا  
عشر رجلاً من الحواريين، يعني فخرج عليهم في عين  
في البيت ورأسه بقطر، .... قال: ايك يلقى عليه  
شبهى فيقتل مكاني ويكون معى فى درجتى؟ فقام شاب  
من احدثهم سنًا، فقال له: اجلس! ثم أعاد عليهم فقام  
ذاك الشاب، فقال: اجلس! ثم أعاد عليهم فقام  
الشاب، فقال: أنا! فقال: هو انت ذاك! فالقى عليه شبه  
عيسى ورفع عيسى من روزنة في البيت الى السماء.  
قال: وجاء الطلب من اليهود فأخذوا الشبه فقتلوه ثم  
صلبوه .... وهذا اسناد صحيح الى ابن عباس.“

(تفسیر ابن کثیر ج: ۲ ص: ۴۰۹، ۴۱۰، مکتبہ رشیدیہ کوئٹہ)

ترجمہ: ”حضرت عبداللہ بن عباس رضی اللہ عنہ فرماتے

ہیں کہ: جب اللہ تعالیٰ نے حضرت عیسیٰ علیہ السلام کو آسمان پر اٹھانا  
چاہا، تو وہ ان بارہ حواریوں کے پاس تشریف لے گئے جو وہاں گھر  
میں موجود تھے، آپ چشمے سے غسل فرما کر نکلے تو سر سے پانی کے  
قطرے ٹپک رہے تھے۔ .... آپ نے اپنے حواریوں کو مخاطب  
کرتے ہوئے فرمایا: تم میں سے کون اس پر آمادہ ہے کہ اس پر میری  
شباہت ڈال دی جائے، پھر اس کو میری جگہ قتل کیا جائے اور وہ جنت  
میں میرے ساتھ ہو؟ ان میں سے جو سب سے کم عمر حواری تھا، وہ  
کھڑا ہوا، حضرت عیسیٰ علیہ السلام نے فرمایا: بیٹھ جا! آپ نے دوبارہ

حواریوں کو یہ بات فرمائی تو پھر وہی جوان کھڑا ہو گیا، اب بھی آپ نے فرمایا: بیٹھ جاؤ! جب تیسری بار آپ نے اعلان کیا تو پھر بھی یہی کھڑا ہوا اور کہنے لگا: اس کے لئے میں حاضر ہوں! پس آپ علیہ السلام نے فرمایا: وہ آپ ہی ہیں! پس اُس پر حضرت عیسیٰ علیہ السلام کی شبہت ڈال دی گئی اور عیسیٰ علیہ السلام کو گھر کے روشن دان سے آسمان کی طرف اٹھالیا گیا، اتنے میں حضرت عیسیٰ علیہ السلام کی تلاش میں یہودی آئے تو جس پر حضرت عیسیٰ علیہ السلام کی مشابہت ڈالی گئی تھی، اُسے پکڑ کر لے گئے، اسے لے جا کر انہوں نے قتل کیا اور اس کے بعد سولی دے دی۔ یہ سند ابن عباس تک صحیح ہے۔“

یعنی اصل بات یہ ہوئی تھی کہ حضرت عیسیٰ علیہ الصلوٰۃ والسلام اپنے بعض حواریوں کے ساتھ ایک مکان میں تشریف فرما تھے اور مخبر نے ان یہودیوں کو اطلاع کر دی جو آپ کو پکڑنے کا ارادہ کر رہے تھے، انہوں نے مکان کا محاصرہ کر لیا، چونکہ اس مکان کے احاطہ کے اندر ایک چشمہ تھا، وہاں سے حضرت عیسیٰ علیہ الصلوٰۃ والسلام غسل کر کے تشریف لائے، گویا یہ سفر کی تیار ہو رہی تھی، سر مبارک سے پانی ایسے ٹپک رہا تھا جیسے موتی کے قطرے، آپ نے اپنے ان حواریوں سے ارشاد فرمایا کہ: تم میں سے کون ہے جو میری جگہ قتل کیا جائے؟ ”وکان معی فی الجنة“ اور میرے ساتھ جنت میں ہو، ان میں سے جو سب سے چھوٹا اور نوجوان تھا وہ کھڑا ہوا اور کہنے لگا: انا! (میں) آپ نے فرمایا: بیٹھ جاؤ! پھر فرمایا: تم میں سے کون ہے جو میری جگہ قتل کیا جائے اور میرے ساتھ جنت میں ہو؟ پھر یہی نوجوان کھڑا ہوا تب آپ نے فرمایا: بیٹھ جاؤ! تیسری مرتبہ پھر یہی ہوا، پھر تو حضرت عیسیٰ علیہ الصلوٰۃ والسلام نے کہا کہ: تم ہی ہو، چنانچہ اس کے اوپر حضرت عیسیٰ علیہ السلام کی شبہت ڈال دی گئی اور حضرت عیسیٰ علیہ السلام کو روزنہ یعنی کھڑکی سے آسمان پر لے جایا گیا۔

یہ حضرت عبداللہ بن عباس رضی اللہ عنہما کا قول ہے اور حافظ ابن کثیرؒ کہتے ہیں کہ: ”هذا سند صحيح الى ابن عباس“ یہ کیفیت حضرت عبداللہ بن عباس رضی اللہ عنہما

نے بیان فرمائی ہے اور اصول یہ ہے کہ جو بات محض قیاس و اندازہ سے نہ کہی جائے، اگر وہی بات صحابہ کرامؓ کہہ رہے ہوں تو اس کا مطلب یہ ہوتا ہے کہ یقیناً صحابہ کرامؓ نے یہ بات حضور صلی اللہ علیہ وسلم سے سنی ہوگی، تو معلوم ہوا کہ یہ حضرت ابن عباسؓ کا ذاتی قول نہیں بلکہ انہوں نے حضور صلی اللہ علیہ وسلم سے سنا ہوگا۔

**بائبل کی اسرائیلی روایت:**

جن پر شبہات ڈالی گئی تھی وہ یہود اسقروطی کہلاتے ہیں اور عیسائی کتابوں میں اس کو اخر یوطی بھی کہتے ہیں، عام طور سے مسلمان، عیسائی اور یہودی جب بھی اس یہودی حواری کا نام سنتے ہیں تو اس سے نفرت کرتے ہیں، اور کہتے ہیں کہ چونکہ اس نے پتہ بتایا تھا اس لئے وہ غلط آدمی تھا، حالانکہ یہ بات درست نہیں، بلکہ حضرت ابن عباسؓ کی روایت بالکل صحیح ہے۔

پھر سوال یہ ہے کہ جب یہی حضرت عیسیٰ علیہ السلام کا وہ جاں نثار صحابی ہے، جس نے قربانی دی تو پھر یہ کیا تماشا ہوا کہ یہی بدنام ہو گئے؟

بات دراصل یہ ہے کہ بائبل میں ایک اسرائیلی روایت ہے کہ جب یہ سب حواری جمع تھے تو حضرت عیسیٰ علیہ السلام نے اس یہود سے فرمایا: جا تو اپنا کام کر! یہ گیا اور یہودیوں کے بڑوں کو یہ کہہ کر لایا کہ آؤ میں تمہیں حضرت عیسیٰ علیہ السلام کا پتہ بتاتا ہوں! بتاؤ کیا انعام دو گے؟ وہ کہنے لگے کہ چار آنے یا جتنا بھی ہو، خیر وہ تو ایک بہانہ تھا، وہ ان کو بلا کے لایا، اتنے میں حضرت عیسیٰ علیہ السلام جا چکے تھے، تو اسی کے اوپر حضرت عیسیٰ علیہ السلام کی شبہات ڈال دی گئی، اور ان کو پکڑ کر سولی دے دی گئی۔

**اصل حقیقت:**

اصل حقیقت یہ ہے کہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام کے نوجوان اور مخلص حواری کو صلیب دی گئی تھی، یہ صحیح واقعہ ہے، اسی پر قرآن کہتا ہے کہ: ”وَلَكِنْ شَبَّهَ لَهُمْ“ یعنی ان کو اشتباہ ہو گیا تھا، وہ عیسیٰ نہیں تھا، ان کے درمیان خود اختلاف ہو گیا کہ اگر یہ عیسیٰ ہے تو



ہمارا ساتھی کہاں ہے؟ اور اگر یہ ہمارا ساتھی ہے تو عیسیٰ کہاں ہے؟ پھر یہ کہ اس کا چہرہ مہرہ تو حضرت عیسیٰ علیہ السلام کا بن گیا، مگر پورا وجود ان جیسا نہیں بنا، اگر یہودی چاہتے تو شناخت ہو سکتی تھی، لیکن یہودی حضرت عیسیٰ علیہ السلام کو پکڑنے کے لئے آئے ہوئے تھے، اور ناکام و نامراد واپس جانا ان کی شکست تھی، لیکن انہوں نے کہا چلو اسی کو پکڑو، اس لئے اس مرد خدا نے حضرت عیسیٰ علیہ السلام کی بشارت کے لئے کہ: ”میرے ساتھ جنت میں ہوگا“ اللہ کی اس تقدیر کو قبول کیا، لہذا اس کو سولی چڑھا دیا، ”ایکم یلقی علیہ شبھی فیقتل مکانی؟“ یہ الفاظ حضرت عیسیٰ علیہ السلام کے ہیں کہ: ”تم میں سے کون ہے جو میری جگہ قتل کیا جائے اور میرے ساتھ جنت میں ہو؟“

اور دوسری بات یہ کہ آج تک عیسائی بھی اور مسلمان بھی یہود کو برے الفاظ کے ساتھ یاد کرتے ہیں، حالانکہ یہی تو مجاہد ہے جس نے حضرت عیسیٰ علیہ السلام کے لئے جان دی۔ پیسے لے کر پتہ بتانے والی روایت:

سوال: ... پیسے لے کر حضرت عیسیٰ علیہ السلام کا پتہ بتلانے والی روایت کیسی ہے؟

جواب: ... یہ ہماری روایت نہیں ہے، یہ اہل کتاب کی اسرائیلی روایت ہے، ہماری روایت وہ ہے جو میں نے بتادی یعنی حضرت ابن عباسؓ والی، میں تطبیق دے رہا ہوں کہ یہ روایت اہل کتاب کی ہے کہ یہود نے حضرت عیسیٰ علیہ السلام کا پتہ و نشان بتلایا تھا۔ حالانکہ بائبل میں یہ بھی لکھا ہوا ہے کہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام نے اسی حواریوں کی مجلس میں اس سے کہا کہ: جا تو اپنا کام کر!

یہود اس سقروطی حضرت عیسیٰؑ کا وزیر خزانہ تھا:

یہ یہود کوئی معمولی آدمی نہیں تھا بلکہ یہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام کا وزیر خزانہ تھا۔  
مرزا قادیانی کی گستاخی:

مرزا غلام احمد قادیانی نے عیسیٰ علیہ الصلوٰۃ والسلام کا مذاق اڑانے کے لئے یہ کہا



کہ کہاں گئی وہ بارہ تختوں کی پیش گوئی؟ دراصل حضرت عیسیٰ علیہ السلام نے بارہ حواریوں کے لئے جنت کے بارہ تختوں کی پیش گوئی کی تھی کہ جنت میں تخت ملیں گے، مطلب یہ تھا کہ تم جنتی ہو گے، جیسے ہمارے ہاں عشرہ مبشرہ ہیں اسی طرح سیدنا مسیح علیہ الصلوٰۃ والسلام نے بھی اپنے بارہ حواریوں کو یہ خوشخبری دی تھی۔ مگر غلام احمد قادیانی، حضرت عیسیٰ علیہ السلام کا مذاق اڑاتا ہے کہ یہی وہ یہود تھا جس کو حضرت عیسیٰ علیہ السلام نے خوشخبری دی تھی۔

خیر یہ تو میں نے تمہیں چار باتیں بتا دیں، اصل باتیں تو تین ہی تھیں۔

حضرت عیسیٰ کا آسمان پر جانا معراج کی طرح ہے:

اب سنو! تمہارے سوالوں کا جواب یہ ہے کہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام کو حضرت جبریل علیہ السلام کے ساتھ لے جایا گیا، جیسا کہ معراج کی شب آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کو لینے کے لئے بھی یہی آئے تھے، اسی طرح حضرت عیسیٰ علیہ السلام کو لینے کے لئے بھی حضرت جبریل علیہ السلام آئے تھے۔ یوں کہو کہ آسمان پر جانے والے مسافروں کے میزبان یہی حضرت جبریل علیہ السلام بنتے ہیں۔

حضرت عیسیٰ بھی براق پر گئے تھے؟

سوال: ... کیا حضرت عیسیٰ علیہ السلام بھی آسمان پر براق پر گئے تھے؟

جواب: ... میرے عزیز! آسمانوں پر تو براق نہیں چلتی، آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم تو مکے سے بیت المقدس تک براق پر آئے تھے، باقی آسمانی براق تو کوئی اور ہوگی، یہ ہوائی جہاز اس آسمانی براق کی مثال ہے، گویا وہ کوئی ہوائی جہاز جیسی شے ہوگی۔

ہاں! ہم اس کو برقی سیڑھی کہہ سکتے ہیں، لیکن یہ برقی سیڑھی بیچاری بھی آہستہ آہستہ چلتی ہے، کیونکہ یہ تو رسیوں سے بندھی ہوئی ہوتی ہے، اور بہت آہستہ رفتار سے چلتی ہے، یعنی آدمی کی رفتار سے تو تیز چلتی ہے مگر چلتی آہستہ آہستہ ہے، لیکن وہ تو جبریل تھا، یہ انگریزوں کی ایجاد کی ہوئی بس بھی نہیں تھی، بلکہ آسمانی سیڑھی تھی جو جبریل علیہ السلام کے لئے مہیا کی گئی ہوگی، اس کو معراج کہتے ہیں۔

## معراج کا معنی؟

معراج کس کو کہتے ہیں؟ معراج سیڑھی کو کہتے ہیں، عروج کا ذریعہ اور آلہ، عروج کہتے ہیں اوپر چڑھنے کو اور معراج اسم آلہ کا صیغہ ہے، معراج اسم آلہ کبریٰ ہے، جیسے منصاق چیرنے کا آلہ اسی طرح معراج چڑھنے کا آلہ دراصل رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کا اوپر جانا کسی ذریعہ سے بھی ہو، خواہ آپ صلی اللہ علیہ وسلم قدرت خداوندی کے دوش پہ گئے ہوں، یا کسی اور ذریعہ سے، ہمیں اس سے بحث ہی کیا؟ تو اسی کا نام معراج رکھ دیا گیا، چونکہ قرآن کریم میں ذکر صرف اسراء کا ہے معراج کا نہیں اور احادیث متواترہ میں ذکر ہے معراج کا۔

حضرت عیسیٰ جبریل کے ہمراہ آسمان پر گئے تھے:

تو خیر یہ مسئلہ تو طے ہو گیا کہ عیسیٰ علیہ السلام کو جبریل علیہ السلام لینے آئے تھے، جیسا کہ ہمارے رسول حضور اکرم صلی اللہ علیہ وسلم کو لینے آئے تھے، گویا حضرت عیسیٰ علیہ السلام حضرت جبریل امین کی پھونک کے ساتھ پیدا ہوئے تھے اور آپ کی معیت میں آسمان پر تشریف لے گئے۔

## حضرت عیسیٰ کی نبی اکرم صلی اللہ علیہ وسلم سے نسبت؟

حضرت مولانا قاری محمد طیب صاحب رحمہ اللہ کے بقول: وہ ایک اعتبار سے حضرت جبریل علیہ السلام کے بیٹے کی حیثیت رکھتے ہیں۔ اور قاری صاحب نے تو ایک اور بات بھی کہی ہے، جو ہمارے ذہنوں سے اونچی ہے، اور وہ یہ کہ وہ حقیقت محمدیہ تھی جس کا لفظ کیا گیا تھا، اس لئے آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی حقیقت محمدیہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام کے لئے بمنزلہ باپ کے تھی، یوں حضرت عیسیٰ علیہ السلام بمنزلہ بیٹے کے ہوئے، اور چونکہ بیٹا باپ کا جانشین ہوتا ہے، اس لئے حضرت عیسیٰ علیہ السلام کا دوبارہ آپ کی امت میں آنا لازم اور ضروری ٹھہرایا گیا تا کہ وہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم کی وراثت سنبھالیں، لیکن یہ تو اونچی باتیں ہیں، حقائق و معارف کی باتیں ہیں، جو حضرات صوفیائے کرام کے قلب پر وارد ہوتی ہیں، لیکن علمائے ظاہر کے لئے وہی بات ہے جو قرآن و سنت سے ثابت ہے اور بس!

## قادیانی اعتراضات کے جوابات

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَسَلَامٌ عَلٰی عِبَادِهِ الَّذِیْنَ اصْطَفٰی!

جناب حضرت جبرائیل علیہ السلام اماں حضرت مریم سے گفتگو کر رہے تھے اور وہ کہہ رہی تھیں کہ:

”اِنِّیْ اَعُوْذُ بِالرَّحْمٰنِ مِنْكَ اِنْ كُنْتَ تَقِیًّا۔ قَالَ  
اِنَّمَا اَنَا رَسُوْلُ رَبِّكَ لَا هَبْ لَكَ غُلَامًا زَكِیًّا۔ قَالَتْ  
اَنِّیْ یَكُوْنُ لِیْ غُلَامٌ وَلَمْ یَمَسِّنِیْ بَشَرٌ وَلَمْ اَكُ بَغِیًّا۔  
قَالَ كَذٰلِكَ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلٰی هٰیۡنٍ وَّلِنَجْعَلَهُ اٰیَةً  
لِّلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِّنَّا وَكَانَ اَمْرًا مَّقْضِیًّا۔“ (مریم: ۲۱ تا ۲۸)

یعنی حضرت مریم نے کہا کہ: میرا بیٹا کیسے ہو سکتا ہے؟ اس لئے کہ مجھے تو کسی بشر نے آج تک ہاتھ نہیں لگایا، اور میں بدکار اور گندی بھی نہیں ہوں، مطلب یہ ہے کہ مجھے کسی نے جائز طریقہ پر اور ناجائز طریقہ پر بھی ہاتھ نہیں لگایا، حضرت جبرائیل علیہ السلام نے کہا کہ: اسی طرح یعنی بغیر مرد کے ہاتھ لگائے ہوئے، بیٹا ہو جائے گا، کیونکہ تیرے رب نے فرمایا کہ یہ مجھ پر آسان ہے، اور یہ اس لئے کہ ہم اس کو لوگوں کے لئے نشان بنائیں گے۔ ایک تو یہ کہ جس طرح اور جب اللہ تعالیٰ جس کو چاہتا ہے پیدا کر دیتا ہے، اور اللہ تعالیٰ پیدا کر سکتا ہے۔

اور دوسرے یہ کہ اس کو قیامت کا بھی نشان بنانا ہے، یعنی وہ علامات قیامت میں سے ہوگا کہ اس کو لوگوں کے لئے نشان بنائیں گے اور اپنی جانب سے علامت کا ذریعہ

بنائیں گے، اور ایسا کرنے کا فیصلہ ہو چکا ہے، خواہ کچھ بھی ہو، پس وہ حاملہ ہو گئیں۔

حضرت مریم کو پھونک مارنے والے کون تھے؟

یہ گفتگو ہو رہی تھی کہ حضرت جبرائیل علیہ السلام نے پھونک مار دی، یہاں اب دریافت طلب امر یہ ہے کہ یہ پھونک مارنے والے کون تھے؟ اس کے بارہ میں دو قول ہیں: پہلا اور مشہور قول: ... ایک تو یہ ہے کہ پھونک مارنے والے حضرت جبرائیل علیہ السلام تھے، جیسا کہ ارشاد الہی ہے: ”فَارْسَلْنَا إِلَيْهَا رُوحَنَا“ (ہم نے بھیجا ان کے پاس اپنی روح کو یعنی روح الامین کو)۔ غالباً یہ حضرت زید بن سالم کا قول ہے یا کسی اور صحابی کا ہے۔

دوسرا اور غیر مشہور قول: ... امام العصر حضرت مولانا محمد انور شاہ کشمیری رحمۃ اللہ علیہ نے اپنی کتاب ”مشکلات القرآن“ میں نقل کیا ہے کہ ”فَارْسَلْنَا إِلَيْهَا رُوحَنَا“ کا معنی یہ ہے کہ ہم نے حضرت مریم کی طرف بھیجا اپنی جانب سے ایک روح کو، اس کا معنی یہ ہے کہ ان کی اپنی روح کو بھیجا یعنی وہ خود روح اللہ (حضرت عیسیٰ) تھے، اور بیٹا ماں سے باتیں کر رہا تھا، تب معنی ہو گا کہ ہم نے بھیجا مریم کی طرف اپنی روح کو یعنی حضرت عیسیٰ علیہ السلام کی روح کو اور یہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام کی روح اس وقت انسانی شکل میں مجتہد ہو کر آئی تھی، یعنی جسم کی شکل میں حضرت عیسیٰ علیہ السلام کی روح آئی تھی، گویا یہ خود حضرت عیسیٰ علیہ الصلوٰۃ والسلام ماں جان سے یہ باتیں فرما رہے تھے، اور بیٹا اپنی ماں سے باتیں کر رہا تھا، اسی وجہ سے فرمایا گیا: ”رُوحَنَا“ (ہم نے اپنی روح کو بھیجا) ”فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا“ پس وہ روح اس کے سامنے آئی یعنی وہ روح اس کے سامنے ایک تام الخلق جو ان انسان کی شکل میں متماثل ہو کر آئی، لیکن حضرت مریم نے سمجھا یہ کوئی اور ہے، اس لئے اس سے کہا: ”إِنِّي أَعُوذُ بِالرَّحْمَنِ مِنْكَ إِنْ كُنْتَ تَقِيًّا“ میں رحمن کی پناہ لیتی ہوں اگر تیرے دل میں اللہ کا خوف ہے! اس پر اس روح نے کہا: ”إِنَّمَا أَنَا رَسُولُ رَبِّكِ“ میں تو تیرے رب کا قاصد ہوں ”لَا هَبَ لَكِ غَلَامًا زَكِيًّا“ تاکہ میں تجھ کو پاکیزہ بیٹا دے



دوں، گویا وہ بتلانا چاہتے ہیں کہ چونکہ یہ روح آپ کے بدن میں منتقل ہوگی، اس پر انسانی بدن کا غلاف چڑھے گا، اور تیرے جسم سے انسان اور بشر بن کر نکلے گا اور تیرا بیٹا کہلائے گا، اس لئے فرمایا: ”لَا هَبْ لَكَ غُلَامًا“ بہر حال وہ روح جب مریم کے جسم میں منتقل ہوگئی تو وہ حاملہ ہو گئیں۔

کوئی ضروری نہیں کہ ہم اس قول پر عقیدہ رکھیں۔ بہر حال یہ دونوں تفسیریں ہو سکتی ہیں، ایک یہ کہ روح سے مراد روح الامین ہو، اور یہی مشہور تفسیر ہے کہ اللہ تعالیٰ نے حضرت مریم کی طرف جبرائیل علیہ السلام کو بھیجا تھا، اور ایک تفسیر یہ ہے کہ خود حضرت عیسیٰ علیہ السلام کی روح اپنی اماں جان کے سامنے متمثل ہوگئی تھی، کیونکہ روح تو لطیف چیز ہے، نکلتی بھی ہے اور داخل بھی ہوتی ہے، اس لئے وہ ان کے رحم میں منتقل ہوگئی اور اس سے وہ حاملہ ہو گئیں۔

قادیانی، معراج جسمانی کے قائل نہیں:

سوال: ... حضرت آپ نے ایک درس میں معراج کے بارے میں فرمایا تھا کہ جس طرح نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم کو اللہ تعالیٰ معراج پر لے گئے، اسی طرح حضرت عیسیٰ علیہ السلام کو بھی لے گئے، قادیانی تو معراج کے قائل ہی نہیں، اسی لئے وہ رفع عیسیٰ کا انکار کرتے ہیں، اگر وہ معراج کو مان لیں تو حضرت عیسیٰ علیہ السلام کے رفع کو ماننا پڑے گا، تو ان کو جواب دینے کے لئے ہم کیا کہیں گے؟

جواب: ... بھائی! میں اس کا جواب تو دے چکا ہوں کہ عیسیٰ علیہ السلام کو آسمان پر اٹھالے جانے کو تو غلام احمد قادیانی بھی مانتا اور لکھتا ہے، اور قرآن کریم نے بھی کہا ہے: ”رَفَعَهُ اللَّهُ إِلَيْهِ“ یعنی اللہ لے گئے ان کو اپنی طرف، تو گویا رفع کے تو قادیانی بھی قائل ہیں، البتہ قادیانیوں کے ساتھ ہمارا جھگڑا یہ ہے کہ ہم کہتے ہیں ”رَفَعَهُ اللَّهُ“ سے رفع روح مع الجسد ہوا ہے، مگر قادیانی کہتے ہیں یہ رفع روحانی تھا، رفع روحانی کا معنی روح کا اٹھانا ہے، تو ہماری بیان کردہ تقریر سے ہماری یہ بات تو پوری ہوگئی وہ چونکہ خود روح ہیں، اس لئے



ان کا رفع روح مع الجسد ہی ہوگا، اور اگر قادیانی قول کے مطابق اس کا معنی رفع درجات ہو تو سوال یہ ہے کہ رفع درجات کو رفع روحانی کون کہتا ہے؟ اور رفع درجات کو رفع روحانی کس نے کہا ہے؟ ”وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجَاتٍ“ قرآن کریم میں دوسری جگہ موجود ہے، تو کیوں یہاں اللہ تعالیٰ نے درجات کے قبیل میں ذکر کر دیا۔

قادیانی اشکال، کیا حضرت عیسیٰ جھوٹ بولیں گے؟

یہاں ایک اور قادیانی اشکال کا جواب بھی سمجھ لیں، قادیانی کہا کرتے ہیں جب

خدا پوچھے گا کہ:

”...أَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُونِي وَأُمِّي الْهَيْئِ  
مِنْ دُونِ اللَّهِ قَالَ سُبْحَانَكَ مَا يَكُونُ لِي أَنْ أَقُولَ مَا لَيْسَ  
لِي بِحَقٍّ، إِنْ كُنْتُ قُلْتُهُ فَقَدْ عَلِمْتَهُ، تَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِي وَلَا  
أَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِكَ، إِنَّكَ أَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ۔ مَا قُلْتُ  
لَهُمْ إِلَّا مَا أَمَرْتَنِي بِهِ أَنْ اعْبُدُوا اللَّهَ رَبِّي وَرَبَّكُمْ، وَكُنْتُ  
عَلَيْهِمْ شَهِيدًا مَّا دُمْتُ فِيهِمْ، فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنْتُ أَنْتَ  
الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ وَأَنْتَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيدٌ۔“

(المائدہ: ۱۱۶، ۱۱۷)

ترجمہ: ”... اور جب کہے گا اللہ: اے عیسیٰ مریم کے بیٹے!  
تو نے کہا لوگوں سے کہ ٹھہراؤ مجھ کو اور میری ماں کو دو معبود سوا اللہ  
کے؟ کہا: تو پاک ہے! مجھ کو لائق نہیں کہ کہوں ایسی بات جس کا مجھ کو  
حق نہیں، اگر میں نے یہ کہا ہوگا تو تجھ کو ضرور معلوم ہوگا، تو جانتا ہے  
جو میرے جی میں ہے اور میں نہیں جانتا جو تیرے جی میں ہے، بے  
شک تو ہی ہے جاننے والا چھپی باتوں کا۔ میں نے کچھ نہیں کہا ان کو  
مگر جو تو نے حکم کیا کہ بندگی کرو اللہ کی، جو رب ہے میرا اور تمہارا، اور  
میں ان سے خبردار تھا جب تک ان میں رہا، پھر جب تو نے مجھ کو

اٹھالیا تو تو ہی خبر رکھنے والا ان کی، اور تو ہر چیز سے خبردار ہے۔“

(ترجمہ حضرت شیخ الہند)

یعنی اس کا معنی یہ ہے کہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام فوت ہو گئے تھے جب ہی تو ان سے برأت کا اظہار کریں گے؟

جواب: ... قادیانیوں سے پوچھو کہ اللہ تعالیٰ حضرت عیسیٰ علیہ السلام سے یہ کب پوچھے گا؟ قیامت کے دن یا اس سے پہلے؟ ظاہر ہے اللہ تعالیٰ عیسیٰ علیہ السلام سے قیامت کے دن پوچھیں گے، کیونکہ خود قرآن کریم میں ہے:

”يَوْمَ يَجْمَعُ اللَّهُ الرُّسُلَ فَيَقُولُ مَاذَا أُجِبْتُمْ“

(المائدہ: ۱۰۹)

ترجمہ: ... ”جس دن کہ اللہ تعالیٰ جمع کریں گے رسولوں کو،

پس اللہ تعالیٰ ان سے پوچھیں گے کہ تمہیں کیا جواب ملا؟“

پھر حیات و نزول عیسیٰ علیہ السلام کے مسئلہ کو الجھانے کے لئے قادیانی یہ کہا کرتے ہیں کہ عیسیٰ علیہ السلام سے جب اللہ تعالیٰ قیامت کے دن پوچھیں گے کہ کیا تم نے کہا تھا کہ مجھے اور میری والدہ کو معبود بناؤ؟ تو وہ کہیں گے مجھے نہیں پتہ! اب اگر وہ دوبارہ زمین پر آئیں گے اور لوگوں کو دیکھیں گے کہ لوگ گمراہ ہو رہے تھے اور حضرت عیسیٰ اور ان کی ماں کو خدا بنا رہے تھے تو وہ یہ کیوں کہیں گے؟ کہ مجھے نہیں پتہ! کیا وہ جھوٹ بول دیں گے؟ یہ بات مرزا غلام احمد نے بیسیوں جگہ اپنی کتابوں میں لکھی ہے۔

غلام احمد قادیانی ایسا بد بخت اور شقی ترین انسان ہے کہ جھوٹ بولنے سے بھی باز نہیں آتا، چنانچہ اس بات میں بھی وہ جھوٹ بولتا ہے۔

ہاں تو قرآن کریم میں کہاں لکھا ہے کہ انہوں نے کہا کہ مجھے قوم کی گمراہی کا علم نہیں؟ البتہ قرآن کریم میں تو یہ ہے:

”وَإِذْ قَالَ اللَّهُ يٰعِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ ءَأَنْتَ قُلْتَ

لِلنَّاسِ اتَّخِذُونِي وَأُمِّيَ إِلَهَيْنِ مِنْ دُونِ اللَّهِ قَالَ سُبْحَانَكَ

مَا يَكُونُ لِي أَنْ أَقُولَ مَا لَيْسَ لِي بِحَقٍّ، إِنْ كُنْتُ قُلْتُهُ فَقَدْ عَلِمْتَهُ۔“

ترجمہ:۔۔۔ ”میں ایسی بات کہوں جس کا مجھے علم نہیں، (توبہ! توبہ!) اگر میں نے ایسی بات کہی ہوگی تو وہ آپ کے علم میں ہوگی۔“

مرزائیوں سے سوال!

میں کہتا ہوں کہ مرزائیوں سے پوچھو کہ اس سے ایک رکوع پہلے:  
”يَوْمَ يَجْمَعُ اللَّهُ الرُّسُلَ فَيَقُولُ مَاذَا أُجِبْتُمْ“

(المائدہ: ۱۰۹)

ترجمہ:۔۔۔ ”جس دن اللہ تعالیٰ رسولوں کو جمع کریں گے اور پوچھیں گے کہ تمہیں کیا جواب ملا تھا؟“

اس کا کیا مطلب ہے؟ یعنی رسولوں سے کہا جائے گا کہ جب تم نے اپنی قوم کو دعوت دی تو انہوں نے تمہیں کیا جواب دیا تھا؟ اس آیت کا یہی مطلب ہے یا کچھ اور؟ دریافت طلب امر یہ ہے کہ اس کے جواب میں جو انبیاء کہیں گے: ”لَا عَلِمَ لَنَا“ (ہمیں پتہ نہیں) اس کا کیا جواب ہے؟ اب مرزائیوں سے اس کا جواب لو کہ اس کا کیا مطلب ہے؟ مرزائیو! چلو! مجھے اس کا جواب دو! کیوں بات سمجھ آئی کہ نہیں؟

مرزائی کہتے ہیں کہ جب عیسیٰ علیہ السلام آئیں گے اور دیکھیں گے کہ ان کی قوم گمراہ ہوگئی تو معلوم ہوا کہ ان کو علم تو ہو گیا کہ میری قوم گمراہ ہوگئی ہے، تو پھر وہ اللہ کو کیوں کہیں گے کہ مجھے پتہ نہیں؟ میں نے کہا ناں کہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام نے یہ کب کہا ہے کہ مجھے پتہ نہیں؟ یہ ان پر تہمت و افترا ہے، ٹھیک ہے کہ نہیں؟

اس کے علاوہ میں قادیانیوں سے پوچھتا ہوں کہ تمام رسولوں اور انبیاء سے جب قیامت کے دن کہا اور پوچھا جائے گا کہ: ”مَاذَا أُجِبْتُمْ“، تمہیں کیا جواب ملا؟ تو وہ تو کہیں

گے: ”لَا عَلَمَ لَنَا“ اس کا کیا مطلب ہے؟ قادیانیو! تم تو تہمت لگانے جا رہے تھے حضرت عیسیٰ علیہ السلام پر مگر خود پھنس گئے، اس کا جواب دو کہ انبیاء علیہم السلام ایسا کیوں کہیں گے؟ اور اگر قرآن کو مانتے ہو تو بتلاؤ اس کا کیا مطلب ہے؟ کیا نعوذ باللہ! قرآن ہم سے جھوٹ بول رہا ہے؟ دیکھو اس کو کہتے ہیں: ”جادو وہ جو سر چڑھ کر بولے!“

حضرت عیسیٰ سے قوم کی گمراہی کا سوال ہی نہیں ہوگا:

حضرت عیسیٰ علیہ السلام نے تو کہا ہی نہیں کہ مجھے پتہ نہیں، مگر قادیانی ان پر افترا باندھتے ہیں کہ وہ کہیں گے مجھے پتہ نہیں، حضرت عیسیٰ علیہ السلام سے تو صرف یہ پوچھا جائے گا کہ کیا تم نے ان کو یہ کہا تھا؟ وہ فرمائیں گے: توبہ! توبہ! میں ایسی بات کیسے کہہ سکتا تھا جس کا مجھ کو خود علم نہیں، قوم کے کفر و شرک کے بارے میں وہ یہ نہیں کہیں گے کہ مجھے کچھ پتہ نہیں، اس لئے ان سے تو پوچھا ہی یہ جائے گا کہ تم نے ان کو کہا تھا یا ان کو یہ تعلیم دی تھی؟ دراصل قوم کو ڈانٹنا مقصود ہوگا، حضرت عیسیٰ علیہ السلام کو ڈانٹنا مقصود نہیں ہوگا، لیکن بایں ہمہ حدیث شریف میں آتا ہے کہ جب حق تعالیٰ شانہ کی طرف سے یہ پُر جلال خطاب ہوگا کہ کیا تم نے اپنی قوم کو یہ کہا تھا؟ تو حضرت عیسیٰ علیہ السلام کے رونگٹے کھڑے ہو جائیں گے اور ان پر لرزہ طاری ہو جائے گا، تب وہ کہیں گے: سبحانک! توبہ توبہ، پہلے توبہ اور پھر سبحانک، یعنی میری توبہ بھلا میں ایسی بات کہہ سکتا ہوں اور وہ بھی آپ کی ذات کے بارہ میں، اس لئے کہ آپ کی ذات تو پاک ہے، اس لئے فرمایا: ”أَنْ أَقُولَ مَا لَيْسَ لِي بِحَقِّ“ اے اللہ! میں آپ کو پاک سمجھتا ہوں اس بات سے کہ میں کہوں ایسی بات جس کا مجھ کو علم نہیں، یعنی حق نہیں اور میرے علم میں نہیں، مجھے یہ کہنے کا حق ہی نہیں۔ ”إِنْ كُنْتُ قُلْتُه فَقَدْ عَلِمْتَهُ“ اگر میں نے یہ بات کہی ہے تو آپ کے علم میں ہوگی، یعنی آپ کے علم میں نہیں تو میں نے نہیں کہی، ”تَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِي وَلَا أَعْلَمُ مَا فِي نَفْسِكَ“ (اس لئے کہ)

آپ میرے دل کی بات جانتے ہیں، اور میں آپ کے دل کی بات نہیں جانتا۔

سوال پیدا ہوتا ہے کہ کیا اللہ کا بھی دل ہوتا ہے؟ جواب مشاکلت (لفظی



مشابہت) کے طرز پر استعمال کیا ہے۔

آپ ہی بتلائیں کہ اس پوری تفصیل میں کہیں آیا ہے کہ عیسیٰ علیہ السلام کہیں گے کہ مجھے پتہ نہیں کہ قوم گمراہ ہو گئی تھی؟ اگر قرآن میں کہیں نہیں آیا تو مرزا ملعون، حضرت عیسیٰ علیہ السلام پر یہ تہمت کیوں لگاتا ہے؟ اور یہ کیوں کہتا ہے کہ: ”اگر وہ آئیں گے تو کیا جھوٹ بولیں گے؟“ نعوذ باللہ! یہ تو خالص جھوٹ اور افترا ہے۔

مرزائی مغالطہ اور اس کا جواب:

مرزائی یہ جھوٹ بولتے ہیں کہ اگر عیسیٰ علیہ السلام آئیں گے تو ان کا جھوٹ بولنا لازم آئے گا، جبکہ جھوٹ بولنا ان کی شان کے خلاف ہے، یہ مرزائیوں کا خود ساختہ مغالطہ ہے کہ اگر وہ دوبارہ آئیں گے اور قوم کی حالت دیکھ جائیں گے اور پھر جب اللہ تعالیٰ ان سے قیامت کے دن پوچھیں گے: ”ءَاَنْتَ قُلْتُ لِلنَّاسِ“ اور وہ کہیں گے کہ میں نہیں جانتا، تو یہ ان کا جھوٹ ہوگا۔

جواب:۔۔۔ اس قادیانی مغالطہ کا حکیم الامت حضرت مولانا محمد اشرف علی تھانوی

قدس سرہ نے ”بیان القرآن“ میں نہایت نفیس جواب دیا ہے، چنانچہ حضرت لکھتے ہیں:

”پس اس باب میں (حضرت عیسیٰ علیہ السلام) یوں

عرض کریں گے کہ میں ان کی حالت پر مطلع رہا جب تک ان میں

موجود رہا، سو اس وقت تک کا حال تو میں نے مشاہدہ کیا ہے، اس کے

متعلق بیان کر سکتا ہوں، پھر جب آپ نے مجھ کو اٹھالیا، یعنی اول

بار میں تو زندہ آسمان کی طرف، اور دوسری بار میں وفات کے طور پر،

تو اس وقت صرف آپ ان کے احوال پر مطلع رہے، اس وقت کی مجھ

کو کچھ خبر نہیں کہ ان کی گمراہی کا سبب کیا ہوا؟ اور کیونکر ہوا؟“

(بیان القرآن ج: ۳ ص: ۷۵ مطبوعہ ایچ ایم سعید کمپنی کراچی)



## مرزا غلام احمد کا نزول مسیح کا اقرار:

اس کے علاوہ مرزا غلام احمد قادیانی اپنی کتاب ”آئینہ کمالات اسلام“ یعنی اسلام کے کمالات کا آئینہ، جس کا دوسرا نام ”دفع الوسواس“ بھی ہے، اسی کتاب کے بارہ میں مولانا محمد حسین بٹالوی مرحوم فرمایا کرتے تھے کہ: ”آئینہ کمالات اسلام“ کے بجائے اس کا نام ہونا چاہئے ”آئینہ وسواس“ کیونکہ اس میں سارے وسواس ہی جمع ہیں۔ میرے خیال میں بھی اس کا یہی نام ہونا چاہئے تھا، خیر تو مرزا قادیانی اپنی اس کتاب میں کہتا ہے کہ:

”یہاں پر یہ بات بھی ذکر کر دینا ضروری ہے کہ حضرت

مسیح کی روحانیت نے تین بار جوش مارا، ایک مرتبہ جب ان کو بتایا

گیا کہ تیری قوم گمراہ ہو گئی ہے، تو وہ اللہ تعالیٰ کے گھر میں سر بسجود

ہوئے اور اللہ تعالیٰ نے ان کی اس گریہ وزاری کو سن کر محمد رسول اللہ

صلی اللہ علیہ وسلم کو بھیج دیا، اور دوسری مرتبہ جب انہوں نے گریہ

زاری کی تو پھر فقیر کو بھیج دیا اور مجھے بتایا گیا ہے کہ تیسری مرتبہ پھر

حضرت مسیح کی روح، اللہ تعالیٰ کے سامنے تڑپے گی اور وہ خود ہی

آجائیں گے۔“ (ملخصاً: روحانی خزائن ج: ۵ ص: ۳۳۱، ۳۳۲)

مجھے اس خبیث کی اس واہیات اور لغویات سے بحث نہیں، البتہ مجھے یہ بتانا ہے

کہ وہ خود لکھتا ہے کہ: ”ایک دفعہ پھر آئیں گے“ یہ خود اس کا کشف ہے کہ مسیح کے ساتھ تین

دفعہ یہ واقعہ پیش آیا، گویا وہ یہ کہنا چاہتا ہے کہ جب حضرت عیسیٰ علیہ السلام کو قوم کی گمراہی کا

پتہ چل گیا تو اب ان کا یہ کہنا کہ ”مجھے معلوم نہیں کہ میری قوم گمراہ ہوئی ہے“ جھوٹ ہوگا۔

لیکن جیسا کہ میں نے پہلے حضرت تھانویؒ کے بیان القرآن کے حوالہ سے

عرض کیا ہے کہ ان کے خود ساختہ تضاد کا حل یہ ہے کہ جتنا عرصہ وہ قوم کے پاس نہیں رہے

اس کے بارہ میں فرمادیں گے کہ مجھے نہیں معلوم، اس طرح یوں وہ تضاد حل ہو گیا۔

لیکن اگر قادیانیوں میں ذرا بھی عقل و فہم ہو تو وہ مرزا کے اس کشف سے بخوبی

سمجھ سکتے ہیں کہ مرزا خود بھی نزول مسیح کا قائل ہے، چنانچہ وہ لکھتا ہے کہ: ”ایک دفعہ پھر آئیں گے۔“

غلام احمد، امام ضلالت تھا:

سوال: ... مرزائی یہ بھی کہتے ہیں کہ جب اماموں کی اتباع ضروری ہے تو ان میں سے ایک غلام احمد قادیانی بھی تو ہے۔

جواب: ... پہلی بات یہ ہے کہ مرزا کو سوائے قادیانیوں کے کون امام مانتا ہے؟

دوم: ... اللہ تعالیٰ نے قرآن کریم میں دو قسم کے اماموں کا تذکرہ فرمایا ہے، ایک

ائمہ ہدایت اور دوسرے ائمہ ضلالت، چنانچہ ائمہ ہدایت کا ذکر کرتے ہوئے ارشاد ہے:

”وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ أَيْمَةً يَهْتَدُونَ بِأَمْرِنَا لَمَّا صَبَرُوا“

(سجده: ۲۴)

ترجمہ: ... ”اور بنایا ہم نے ان کو امام کہ وہ ہدایت دیتے

ہیں ہمارے حکم سے جبکہ انہوں نے صبر کیا۔“

اسی طرح ائمہ ضلالت کا ذکر کرتے ہوئے ارشاد ہے:

”وَجَعَلْنَاهُمْ أَيْمَةً يَدْعُونَ إِلَى النَّارِ“ (الانبیاء: ۷۳)

ترجمہ: ... ”اور ہم نے بنایا ان کو (فرعون اور فرعون کے

لوگوں ہامان وغیرہ کو) ائمہ ضلالت وہ لوگوں کو بلاتے تھے جہنم کی

آگ کی طرف۔“

گویا فرعون، ہامان وغیرہ کا تذکرہ کرتے ہوئے فرمایا گیا کہ وہ اہل نار کے امام

تھے کہ لوگوں کو جہنم کی آگ کی طرف بلاتے تھے، تو گویا قرآن میں دو قسم کے اماموں کا

تذکرہ ہے، ایک ائمہ ہدایت اور دوسرے ائمہ ضلالت و گمراہی کا۔

ائمہ ہدایت تو لوگوں کو جنت کی طرف راہ نمائی کرتے اور بلاتے تھے، جبکہ ائمہ

ضلالت یعنی گمراہی کے امام لوگوں کو کھینچتے تھے دوزخ کی طرف، لہذا ہم یہ تو کہتے ہیں کہ

اماموں کی اقتدا کرنی چاہئے، لیکن ائمہ ہدایت کی نہ کہ ائمہ ضلالت کی، اب چونکہ مرزا امام ضلالت ہے، اس لئے اس کی اقتدا کی بجائے اس سے دور بھاگنا چاہئے، کیونکہ قرآن کریم میں ہے کہ ائمہ ضلالت قیامت کے دن خود گرفتار عذاب ہوں گے اور ”یَوْمَ الْقِيَامَةِ لَا يُنْصَرُونَ“ کے مصداق وہ کسی کے کام نہیں آئیں گے، لہذا ائمہ ہدایت کی اتباع کرو نہ کہ ائمہ ضلالت کی۔

حدیث میں ”آسمان“ کا لفظ نہیں:

سوال: ... مرزائی، حضرت عیسیٰ علیہ السلام کے بارہ میں کہتے ہیں کہ حدیث میں نزول کا ذکر ہے، اور ”امامکم منکم“ کے لفظ بھی ہیں، مگر اس میں ”آسمان“ کا لفظ نہیں ہے، ہاں البتہ یہی ”نزول من السماء“ کا لفظ ہے، مگر بخاری شریف میں ”نزول من السماء“ کا لفظ نہیں ہے۔

جواب: ... حضرت عیسیٰ علیہ السلام کے بارے میں دو لفظ آئے ہیں، ایک ”رفع“ کا اور ایک ”نزول“ کا، مرزائی کہتے ہیں کہ حدیث میں ”نزول من السماء“ کا لفظ تو نہیں ہے، البتہ ”ینزل عیسیٰ بن مریم“ کے الفاظ ہیں، اس قادیانی شبہ کے کئی جواب ہیں:

الف: ... مرزا غلام احمد قادیانی خود ”نزول من السماء“ کا قائل ہے، چنانچہ مرزا غلام احمد قادیانی نے خود کہا ہے کہ: ”دیکھو حدیث میں آتا ہے کہ جب مسیح آسمان سے نازل ہوگا۔“ (ازالہ اوہام، روحانی خزائن ج: ۳ ص: ۱۳۲) جس سے معلوم ہوا کہ وہ خود بھی مسیح کے نزول من السماء کا قائل ہے، اس کا حوالہ میری کتاب ”تحفہ قادیانیت“ جلد سوم میں ملفوظات کے حوالہ سے موجود ہے۔

ب: ... مرزائیوں کا یہ کہنا کہ حدیث میں ”نزول من السماء“ کے الفاظ نہیں ہیں، جھوٹ ہے، کیونکہ خود مرزا کہتا ہے کہ: ”صحیح مسلم میں ہے کہ جب مسیح آسمان سے نازل ہوں گے“ (ازالہ اوہام، روحانی خزائن ج: ۳ ص: ۱۲۲) معلوم ہوا کہ خود مرزے کے دماغ میں بھی ”نزول من السماء“ ہی ہے۔

ج: ... جب وہ اپنے بیٹے کے بارہ میں خود کہتا ہے: ”کَانَ اللّٰهُ نَزَلَ مِنَ السَّمَاءِ“ (گویا اللہ تعالیٰ آسمان سے نازل ہوئے)، تو ظاہر ہے جہاں سے اس کا بیٹا نازل ہوا تھا، حضرت عیسیٰ علیہ السلام کو بھی وہاں سے ہی آنا چاہئے تھا، خیر یہ تو الزامی جواب ہوا۔  
 د: ... دیکھو بھائی! اگر ”نزول من السماء“ کا لفظ صحیح بخاری، مسلم، صحاح ستہ یا کسی دوسری حدیث کی کتاب میں آجاتا تو قادیانی کہہ سکتے تھے کہ مولوی کی بات ہے، لیکن جب خود ان کے مسیح موعود کی کتاب میں موجود ہے کہ: ”حدیث میں آتا ہے کہ جب مسیح آسمان سے نازل ہوگا“ تو اس سے بڑھ کر کسی مضبوط حوالہ کی ضرورت رہ جاتی ہے؟ لہذا معلوم ہوا کہ خود مرزا اس کا قائل ہے کہ حضرت مسیح آسمان سے نازل ہوں گے، یعنی قطع نظر اس کے کہ صحیح بخاری، مسلم، صحاح ستہ اور حدیث کی دوسری کتابوں میں موجود ہے، مگر قادیانیوں کے نزدیک ان سب سے بڑھ کر قابل اعتماد مرزا غلام احمد قادیانی کا حوالہ تھا، جب میں نے وہ پیش کر دیا تو مزید کسی حوالہ کی ضرورت رہ جاتی ہے؟ نہیں! ہرگز نہیں!

ہ: ... مرزا جی کا دوسرا حوالہ ہے کہ: ”صحیح مسلم میں ہے کہ جب مسیح آسمان سے نازل ہوگا تو دوزر درنگ کی چادریں اس نے پہن رکھی ہوں گی۔“ اگرچہ ہمارے ہاں صحیح مسلم میں یہ الفاظ نہیں ہیں، لیکن غلام احمد قادیانی غلط تو نہیں کہہ سکتے ناں؟ آخر یہ قادیانیوں کے مسیح موعود جو ہوئے!

ز: ... آخری بات جو نہایت غور و فکر اور سمجھنے کی ہے، وہ یہ کہ جیسا کہ میں پہلے بتا چکا ہوں کہ: ”بَلْ رَفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ“ سے مراد رفع الی السماء ہے، اور حدیث میں آتا ہے کہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام آخر زمانہ میں نازل ہوں گے، تو رفع اور نزول (اوپر جانا اور نیچے آنا) کے درمیان طباق یعنی مطابقت تب ہی ہوگی کہ جہاں گئے تھے وہیں سے واپس آئیں، کیونکہ جیسے زمین و آسمان اور ذکروائشی یعنی مرد و عورت کے درمیان مقابلہ ہے ایسے ہی رفع و نزول کے درمیان بھی طباق و مقابلہ ہے، یعنی ایک دوسرے کے مقابل ہیں، چنانچہ اگر رفع سے مراد رفع الی السماء ہے تو نزول سے مراد بھی نزول من السماء ہوگا، یعنی جس طرف رفع ہوا تھا اسی طرف سے نزول ہوگا۔

اب آپ خود ہی سمجھیں اور قادیانیوں سے سوال کریں کہ مرزا کہاں سے آیا تھا؟  
 پھر یہ بھی قابل غور نکتہ ہے کہ ”نزیل“ مہمان کو کہتے ہیں، اور ”تنزل“ بھی نزیل  
 سے مأخوذ ہے، مگر کسی محاورہ عربی میں مہمان کے لئے یززل کا لفظ استعمال نہیں ہوتا، معلوم ہوا  
 کہ نزیل زمین سے آنے والے مہمان کو کہتے ہیں، اور جب یززل کا لفظ بولا جائے تو اس سے  
 مراد ہوتا ہے کہ آسمان سے نازل ہونے والا، کیونکہ تنزل رفع کے مقابلہ میں واقع ہوا ہے۔

شب معراج میں نزول عیسیٰ پر انبیاء کا اجماع:

سنن ابن ماجہ میں بھی حضرت عبداللہ بن مسعود رضی اللہ عنہ کی حدیث ہے کہ  
 آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے شب معراج سے واپسی پر فرمایا کہ:

”شب معراج میں میری ملاقات حضرت ابراہیم،  
 حضرت موسیٰ اور حضرت عیسیٰ علیہم السلام سے ہوئی، اس محفل میں یہ  
 گفتگو ہوئی کہ قیامت کب آئے گی؟ (سب سے) پہلے حضرت  
 ابراہیم علیہ السلام سے دریافت کیا گیا، انہوں نے فرمایا کہ: مجھے  
 اس کا علم نہیں! پھر موسیٰ علیہ السلام کی باری آئی، انہوں نے بھی  
 لاعلمی کا اظہار کیا، پھر عیسیٰ علیہ السلام سے دریافت کیا گیا تو انہوں  
 نے فرمایا کہ: قیامت کب برپا ہوگی؟ اس کا ٹھیک وقت تو اللہ تعالیٰ  
 کے سوا کسی کو بھی معلوم نہیں، البتہ مجھ سے میرے رب کا عہد ہے کہ  
 قیامت سے پہلے دجال نکلے گا تو میں اس کو قتل کرنے کے لئے نازل  
 ہوں گا۔“ (ابن ماجہ ص: ۳۰۹، مسند احمد ج: ۱ ص: ۳۷۵، حاکم ج: ۳  
 ص: ۵۴۵)

تو حدیث کے الفاظ ہیں کہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام نے فرمایا:

”اما وجبتھا، لا يعلمھا الا اللہ! اما دون وجبتھا

وفيما عهد الی ربی ان الدجال خارج وانزل واقتل۔“



یعنی عین وہ وقت جس میں قیامت ہوگی، اس کو تو اللہ تعالیٰ کے سوا کوئی نہیں جانتا، ہاں! قیامت سے پہلے پہلے میرے رب کا مجھ سے ایک وعدہ ہے کہ دجال نکلے گا تو میں نازل ہو کر اس کو قتل کروں گا۔ یہ ہے حضرت عیسیٰ علیہ السلام کا نزول۔

نزول عیسیٰ کا عقیدہ، خداوندی عقیدہ ہے:

میں نے اپنی کتاب: ”حضرت عیسیٰ علیہ السلام کی حیات و نزول کا عقیدہ چودہ صدیوں کے مجددین و اکابر اُمت کی نظر میں“ کے اندر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے لے کر چودہویں صدی بلکہ پندرہویں صدی کے زندہ اور وفات یافتہ اکابر کے عقائد جمع کئے ہیں، میں نے اس کتاب میں صدی وار اکابرین اُمت مثلاً: پیرانِ پیر، امام ابو حنیفہ، امام مالک، امام شافعی اور امام غزالی وغیرہ اکابر اُمت کے حیات و نزول عیسیٰ علیہ السلام کے عقیدہ کو لکھا ہے۔ وہاں میں نے یہ بھی لکھا ہے اور اس نکتہ کو مجھ سے خوب سمجھ لو، بعد میں کتاب بھی دیکھ لینا، ہاں تو میں نے وہاں لکھا کہ: انبیائے کرام علیہم السلام کی محفل میں حضرت عیسیٰ علیہ السلام تقریر فرما رہے ہیں، اور اس میں کہتے ہیں کہ مجھ سے میرے رب کا وعدہ ہے، اور وہ اس کو نقل کر رہے ہیں، اور انبیائے کرام بالا جماع اس کو تسلیم کر رہے ہیں، اور رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اس کی روایت فرما رہے ہیں، تو یہ عقیدہ خداوندی ہوا، کوئی ایک نبی بھی اس سے باہر نہیں سب شامل ہیں، اور خود رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم اس کو روایت فرما کر اس پر مہر تصدیق ثبت فرما رہے ہیں، تو یہ اللہ تعالیٰ کا، حضراتِ انبیائے کرام کا اور پوری اُمت کا عقیدہ ہوا، اس حدیث کی صحت یا اس کے راویوں میں سے کسی ایک راوی پر کوئی کلام نہیں، اس کے کسی راوی پر کسی محدث نے یہ نہیں کہا کہ یہ کمزور ہے۔

حدیث ابن ماجہ اور حافظ ابن حجر:

حافظ ابن حجرؒ نے یہ حدیث اپنی کتاب فتح الباری میں نقل کی ہے، اور کہا ہے کہ یہ روایت صحیح ہے، حالانکہ حافظؒ نے مقدمہ فتح الباری میں وعدہ کیا ہے کہ میں اس کتاب میں جتنی روایتیں نقل کروں گا، صحیح ہوں گی یا حسن، اگر میں کوئی ضعیف روایت نقل کروں گا تو اس

پر تنبیہ کروں گا کہ یہ روایت ضعیف ہے، مگر حافظ ابن حجرؒ نے اس حدیث کو نقل کر کے کہا ہے کہ یہ روایت صحیح ہے، مسند احمد، مستدرک حاکم، ابن ماجہ اور دوسری کتابوں میں موجود ہے، حافظ ابن حجرؒ کے علاوہ دوسرے ائمہ حدیث نے بھی اس کو صحیح کہا ہے۔ اس قدر وضاحت کے بعد میری عقل میں نہیں آتا کہ میں اس سے زیادہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام کے آسمان سے نزول کے بارہ میں اور کیا ثبوت دوں؟

لامہدی الایسیٰ ابن مریم:

”لا مہدی الا عیسیٰ ابن مریم“ یعنی نہیں ہے مہدی مگر عیسیٰ ابن مریم۔ اس روایت کو لے کر قادیانی کہا کرتے ہیں کہ امام مہدی اور حضرت عیسیٰ علیہ السلام ایک ہی شخص کے دو نام ہیں، اور وہ مرزا قادیانی ہے، یعنی مہدی اور عیسیٰ الگ الگ شخصیتیں نہیں ہیں۔

جواب: ... یہ ابن ماجہ کی روایت کا ایک ٹکڑا ہے، پہلی بات تو یہ ہے کہ اگر ہم اس روایت کو صحیح مان بھی لیں تو سوال یہ ہے کہ اس سے قادیانیوں کو کیا فائدہ پہنچے گا؟ اور ہمیں اس سے کیا نقصان ہوگا؟ کیا اس حدیث کے ثبوت سے مرزا غلام احمد قادیانی مہدی یا عیسیٰ بن جائے گا؟ کیا اس میں اس کا کہیں کوئی تذکرہ ہے؟ اگر ہے تو بتلاؤ! اگر ہم اس حدیث کو صحیح مان بھی لیں تو زیادہ سے زیادہ ہمیں یہ نقصان ہوگا کہ مہدی اور عیسیٰ ایک ہی شخصیت کے دو نام ہیں، جبکہ ہمارا احادیث کی روشنی میں عقیدہ ہے کہ مہدی الگ ہے، اور مسیح الگ ہے، اور واقعہ بھی یہی ہے۔

اب سوال یہ ہے کہ قادیانی اس روایت کے زور پر کہتے ہیں کہ وہی مہدی ہے اور وہی عیسیٰ ہے، ہم ان سے کہتے ہیں کہ چلو تم ایک بات ثابت کر دو، دوسری ہم خود بخود مان لیں گے، تمہیں دلیل پیش کرنے کی ضرورت ہی پیش نہیں آئے گی، چلو تم غلام احمد قادیانی میں مہدی کی صفات میں سے کوئی ایک صفت ثابت کر دو، ہم مان لیں گے کہ وہ عیسیٰ بھی تھا، یا حضرت عیسیٰ علیہ السلام کی خاص صفات میں سے کوئی ایک صفت ثابت کر دو، ہم مان لیں

گے کہ وہ مہدی بھی تھا، اور میں اس پر دستخط کرنے کو تیار ہوں، لیکن یاد رکھو! صفات سے مراد وہ خاص امتیازی صفات ہیں، یہ نہیں کہ میرے دوکان ہیں اور عیسیٰ کے بھی دوکان ہوں گے، یہ تو کوئی صفت نہ ہوئی، کیونکہ یہ کسی انسان کے ساتھ خاص نہیں بلکہ ہر ایک میں مشترک ہیں۔

میں کہتا ہوں کہ سورج ادھر سے ادھر نکل سکتا ہے، لیکن قادیانی، غلام احمد میں حضرت عیسیٰ علیہ السلام کی صفات خاصہ میں سے کوئی ایک صفت بھی ثابت نہیں کر پائیں گے۔  
اب سوال یہ ہے کہ پھر ”لا مہدی الا عیسیٰ ابن مریم“ کی بحث کا کیا فائدہ؟

ہم کہتے ہیں کہ مہدی الگ ہے اور عیسیٰ الگ ہے، اور تم کہتے ہو کہ ایک ہی ہے، شاید اسی لئے کہ تمہیں دو آدمی نہ ثابت کرنا پڑیں؟ ہم کہتے ہیں چلو ایک ہی ثابت کر دو۔  
پھر یہ بات بھی قابل توجہ ہے کہ جب سوا حدیث کہتی ہیں کہ عیسیٰ آئیں گے اور ایک روایت کہتی ہے کہ مہدی ہی عیسیٰ ہے، تو اس کا تو یہ مطلب ہوا کہ عیسیٰ آئیں گے! رہی یہ بات کہ مہدی ہے یا نہیں؟ اس کو چھوڑ دو، کیونکہ ہم فی الحال مہدی کی بحث ہی نہیں کرتے، اور یہ تو تم نے بھی تسلیم کر لیا کہ عیسیٰ لازماً آئیں گے، اور خود تم نے اس حدیث میں بھی تسلیم کر لیا، اس لئے اگر بالفرض ہم اس حدیث کو من وعن تسلیم کر لیں اور کسی قسم کی کوئی تاویل نہ کریں تو زیادہ سے زیادہ یہی ہوگا کہ ہمیں مہدی کا انکار کرنا پڑے گا؟ چلو ایک منٹ کے لئے ہم یہ بھی فرض کر لیتے ہیں کہ مہدی نہیں آئے گا، تو سوال یہ ہے کہ عیسیٰ کی صحت پر اس کا کیا اثر پڑے گا؟ کیونکہ احادیث کہتی ہیں کہ عیسیٰ آئیں گے، بھائی! مہدی آئے یا نہ آئے، تمہیں اس سے کیا واسطہ؟

یہ حدیث موضوع ہے:

۲: ... اس شبہ / اشکال کا دوسرا جواب یہ ہے کہ یہ حدیث بہت سے علماء اور محدثین کے نزدیک صحیح نہیں، چنانچہ حضرت مولانا شاہ محمد اسحاق دہلوی قدس سرہ کے شاگرد،

اور حضرت مولانا رشید احمد گنگوہیؒ اور مولانا محمد قاسم نانوتویؒ کے استاذ حضرت مولانا شاہ عبدالغنی مجددی دہلوی رحمۃ اللہ علیہ نے اپنے حاشیہ ابن ماجہ میں اس حدیث کے بارہ میں لکھا ہے کہ یہ روایت صحیح نہیں۔

۳: ... اگر بالفرض یہ مان لیا جائے کہ یہ حدیث صحیح ہے، تو اس کا جواب یہ ہوگا کہ اس ایک روایت کے مقابلہ میں احادیث متواترہ موجود ہیں کہ عیسیٰ، مہدی کے پیچھے نماز پڑھیں گے، تو احادیث متواترہ کی بات قابل اعتماد ہوگی یا ایک ایسی روایت کی جس کی صحت وضعف ہی نہیں بلکہ موضوع ہونے میں بحث ہے؟

فائدہ: ... ہر وہ روایت جو صحاح ستہ میں سے صرف ابن ماجہ میں ہو اور دوسرے صحاح خمسہ میں نہ ہو وہ ضعیف ہوتی ہے، سوائے چند احادیث کے، جو اس قانون سے مستثنیٰ ہیں، اس کے علاوہ ابن ماجہ میں چالیس کے قریب موضوع یعنی من گھڑت حدیثیں بھی ہیں۔

سو (۱۰۰) کی مانیں یا ایک کی؟

اب سنو کہ متواتر احادیث میں موجود ہے کہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام حضرت مہدی کے پیچھے نماز پڑھیں گے، معلوم ہوا کہ دونوں شخصیتیں الگ الگ ہیں، مگر یہ روایت اس کے خلاف ہے، اب دو ہی صورتیں ہو سکتی ہیں یا تو ہم اس روایت میں تاویل کریں، اس کا کوئی صحیح مطلب بتائیں یا اس کو رد کر دیں۔ سو آدمی ایک بات کی گواہی دیتے ہیں، اور بے چارہ ایک آدمی دوسری گواہی دیتا ہے، بتلایا جائے کہ سو کی گواہی معتبر ہوگی یا ایک کی؟ ظاہر ہے ایک کے مقابلہ میں سو کی گواہی معتبر ہوگی، اور ایک کی گواہی مردود ہوگی۔

ہاں! اس ایک کی گواہی کے بارہ میں یہ تو کہہ سکتے ہیں کہ جی اس کا مطلب یہ تھا، یا یہ کہنا چاہتا ہے، گویا اس کی بات میں تاویل کر سکتے ہیں، مگر اس کی بات کو بنیاد بنا کر سو آدمی کی شہادت کو رد نہیں کریں گے، یہ بات ٹھیک ہے ناں؟ کیونکہ یہ عقلی اصول ہے۔



## مرزائیوں کی نرالی عدالت!

مجھے دنیا کی کوئی عدالت بتا دو جو ایک آدمی کے کہنے پر سو آدمیوں کی گواہی کو رد کر دے، چلو ایک کے مقابلہ میں سو کی نہیں، ایک کے مقابلہ میں دس آدمی کی گواہی کو رد کر دے، یا ادھر دس آدمی ہوں اور ادھر چار آدمی، چاہے وہ نہایت ہی ثقہ، معتمد اور قابل اعتماد ہی کیوں نہ ہوں، کہ ایک سو یا دس یا چار آدمی قصہ کچھ بیان کرتے ہوں مگر ان کے مقابلہ میں ایک آدمی کہتا ہے کہ نہیں قصہ یوں ہے، بتلایا جائے کہ کوئی دنیا کی عدالت ایسی ہے جو چار آدمیوں کے مقابلے میں ایک آدمی کی گواہی کو قبول کر لے؟ بلاشبہ مسلم و کافر دنیا کی کوئی عدالت ایسی نہیں جو یہ کہے کہ سو کے مقابلہ میں ایک کی، یا دس کے مقابلہ میں ایک کی، یا چار کے مقابلہ میں ایک کی گواہی معتبر ہے، ہاں! البتہ مرزائیوں کی نرالی عدالت ہے جو یہ کہتی ہے کہ ان کے مطلب کی ایک روایت بھی، ان کے مخالف کی صحیح اور متواتر سو روایات کے مقابلہ میں بھی قابل اعتماد ہے، اس لئے وہ ان تمام صحیح اور متواتر احادیث کو بھی رد کر دیتے ہیں جو ان کے موقف کے متعارض ہوں۔

## حدیث ”لا مہدی الا عیسیٰ“ کی تاویل:

اچھا اب سنو! میں نے کہا تھا کہ یہ روایت مخالف ہے احادیث صحیحہ متواترہ کی، اب اس کی دو صورتیں ہو سکتی ہیں، ایک یہ کہ ہم اس کی تاویل کریں، یا پھر اس کو رد کر دیں، یعنی کنڈم کر دیں، اگر کنڈم کرنے کے قابل تھی تو پیش ہی کیوں کی؟ اور اگر تم اس کی تاویل کرتے ہو تو تم ہی بتاؤ اس کی کیا تاویل کریں؟ ہم قادیانیوں سے پوچھتے ہیں کہ: ہونا تو یہ چاہئے تھا کہ سو کے مقابلہ میں اس کی حیثیت نہیں تھی تو اس کو رد کر دیتے، چلو ہم تمہارے اطمینان کے لئے اس کو رد نہیں کرتے تو اس کی تطبیق کے لئے کیا تاویل کریں؟ بہر حال علماء نے اس کی دو تاویلیں کی ہیں:

## اوّل: کامل مہدی:

ایک تاویل یہ کی ہے کہ: ”لا مہدی الا عیسیٰ“ سے مراد ہے کامل ترین



مہدی جو اس اُمت میں آئے گا وہ عیسیٰ علیہ الصلوٰۃ والسلام ہوں گے، لہذا ”لا مہدی الا عیسیٰ“ میں ”لا“ نفی کمال کے لئے ہے، نفی ذات و اصل کے لئے نہیں، یعنی اس وقت مہدی کا اصطلاحی معنی مراد نہیں ہوگا، بلکہ یہاں مہدی کا لغوی معنی ”ہدایت والا مراد ہوگا۔“

مولانا عبدالرشید نعمانی کا ابن ماجہ پر ایک مقدمہ ہے، جس کا نام ہے ”ما تمس لیہ الحاجة لمن یطالع سنن ابن ماجہ“ یہ بات ذہن میں رہے کہ ایک ہے ’مصبح الزجاجة‘ اور ایک ہے ”ما تمس الیہ الحاجة“ اور ایک ہے ”انجاء لِحاجة“ جو شاہ عبدالغنی رحمۃ اللہ علیہ کا حاشیہ ہے۔

تو اس تاویل کی صورت میں ”لا مہدی“ کے معنی ہوں گے کہ کامل ترین مہدی کوئی نہیں ہے، سوائے عیسیٰ علیہ السلام کے۔

لغوی مہدی ہزاروں ہوئے:

اس اُمت میں لغوی معنی (ہدایت یافتہ) کے اعتبار سے آنے والے مہدی ہزاروں کی تعداد میں ہیں، چنانچہ حضرت ابوبکر صدیق رضی اللہ عنہ بھی ہادی و مہدی ہیں، خلفائے راشدین ہادی و مہدی تھے، حضرت معاویہؓ کے بارے میں بھی فرمایا: ”اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ هَادِیًا مَّهْدِیًّا“، حضرت عمر بن عبدالعزیزؒ کو ساری اُمت مانتی ہے، بلکہ ان کے زمانے کے لوگ تو یہ کہتے تھے کہ یہی مہدی آخر الزمان ہے، اور ایک مہدی جو عیسیٰ علیہ السلام کے زمانے میں آئیں گے وہ بھی مہدی ہوں گے۔

حضرت عیسیٰؑ، کامل ترین مہدی:

تو ان ”مہدیوں“ اور ”ہدایت یافتہ“ لوگوں کے درمیان فرق مراتب ہے، لیکن کامل ترین مہدی جو اس اُمت میں آنے والے ہیں، وہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام ہیں، کہ ان سے افضل ترین اور کامل ترین کوئی شخص نہیں، اس لئے کہ وہ نبی بھی ہیں، صحابی بھی ہیں، ہادی بھی ہیں اور مہدی بھی ہیں، اس تاویل سے اس حدیث پر کوئی اشکال نہیں، احادیث میں ایسی تاویلات کی بے شمار نظیریں موجود ہیں، مثلاً: ارشاد ہے: ”لَا دِیْنَ لِمَنْ لَا اَمَانَةَ لَهُ!“

اس شخص کا دین، دین ہی نہیں ہے جس کے پاس امانت نہیں ہے۔

اسی طرح حضرت انس رضی اللہ عنہ فرماتے ہیں کہ: ”کلما خطبنا رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ألا قال ألا! لا دین لمن لا امانة له!“، یعنی بہت کم ایسا ہوا کہ رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے ہمیں خطبہ دیا ہو اور یہ بات نہ فرمائی ہو کہ اس شخص کا دین، دین ہی نہیں جس کے پاس امانت نہ ہو۔ یعنی اس تاویل میں معنی یہ ہوگا کہ کوئی کامل مہدی سوائے عیسیٰ علیہ السلام کے نہیں ہے، گویا یہاں نفی کمال کی ہوگی۔

دوم: سچا مہدی حضرت عیسیٰ کے زمانہ میں:

دوسرا مطلب یہ ہے کہ جھوٹے مہدی تو بہت سے آتے رہیں گے، مگر سچا مہدی وہ ہوگا جو عیسیٰ علیہ السلام کے زمانہ میں ہوگا، جیسے کہا جاتا ہے کہ: ”آتیک العصر“ ای وقت العصر میں تیرے پاس آؤں گا عصر کے وقت، یعنی عصر کی نماز پر یا عصر کے وقت پر، یہ محاورہ میرا بنایا ہوا نہیں ہے، لغت اٹھا کر دیکھو تو یہی لغت کہے گی، تو ”لا مہدی الا عیسیٰ ابن مریم“ کا یہاں مطلب یہ ہے کہ کوئی سچا مہدی نہیں سوائے اس مہدی کے جو عیسیٰ ابن مریم کے زمانے اور وقت میں آئے گا، یعنی یہاں معنی ہوگا ”الا وقت عیسیٰ ابن مریم“ اور یہ بات واقعی اور بالکل ٹھیک ہے۔

غلام احمد نے بھی مہدی ہونے کا دعویٰ کیا ہے، اور اس سے پہلے بہاء اللہ ایرانی وغیرہ نے بھی کیا اور اس سے پہلے دوسرے لوگوں نے بھی یہ دعویٰ کیا اور ہر زمانے میں کوئی نہ کوئی مہدی کا دعویٰ کرتا رہا ہے، لیکن اللہ کی شان یہ ہے کہ سچا مہدی وہ ہوگا جس کے زمانہ میں عیسیٰ علیہ الصلوٰۃ والسلام آئیں گے، وہی سچا مہدی ہوگا۔ اس تاویل میں بھی کوئی تکلف و تعصب نہیں۔

ظہور مہدی کے بعد دجال کا خروج ہوگا اور دجال سوائے مکہ و مدینہ کے پوری دنیا کا چکر لگائے گا، آخر کار مسلمان دمشق میں محصور ہو جائیں گے تو حضرت عیسیٰ علیہ السلام کا جامع دمشق کے شرقی منارہ پر نزول ہوگا، سوال یہ ہے کہ اس وقت دجال کے ساتھ اس کی

قوم کی کتنی فوج ہوگی؟ حضرت عیسیٰ علیہ السلام اس کا تعاقب کریں گے اور اسے لڈ کے مقام پر قتل کریں گے۔ یہ تنصیلات میں نے اپنے رسالہ شناخت میں لکھ دی ہیں، اس میں آپ حضرات پڑھ لیں۔ مکمل تفصیل دوسری کتابوں میں موجود ہے، بہر حال دجال کے ہمراہ ستر ہزار اصفہان کے یہودیوں کی فوج ہوگی۔ دراصل دجال یہودیوں کا بادشاہ ہوگا، اس کے بعد کچھ اور لوگ بھی اس کے ساتھ شامل ہو جائیں گے، لیکن اصل میں بنیادی طور پر یہودی اس کے ہمراہی اور فوجی ہوں گے، حدیث شریف میں ان کی تعداد ستر ہزار فرمائی گئی ہے۔

کیا ائمہ پر قرآنی آیات کا نزول ہوتا ہے؟

اشکال: ... قادیانیوں کا کہنا ہے کہ علامہ ابن عربی کی تصریح کے مطابق جب ائمہ کرام پر قرآنی آیات نازل ہوتی ہیں، تو اگر مرزے پر قرآنی آیات نازل ہو گئیں تو کیا حرج ہے؟ کیا یہ کہنا صحیح ہے؟

جواب: ... یہ کسی نے نہیں لکھا کہ قرآن کی آیات ائمہ پر نازل ہوتی ہیں، یہ مرزائیوں کا کذب و افتراء اور جھوٹ ہے، یا ان کی بد فہمی ہے۔

قرآنی آیات کا القا ہو سکتا ہے:

ہاں! البتہ بعض حضرات کو قرآن کریم کی آیات کا الہام اور القا ہوتا ہے، جس کا واضح مطلب یہ ہے کہ مثلاً: ہم لوگ کسی معاملے میں تشویش میں تھے اور کوئی صورت حال واضح نہیں ہو رہی تھی، اتنے میں حق تعالیٰ شانہ کی جانب سے اس معاملہ اور صورت حال کی تعیین کے لئے ہمارے ذہن میں قرآن کریم کی کوئی آیت القا کر دی گئی، یعنی یاد دلادی جائے، جو ہمارے سوال کا جواب ہے، اور اس سے ہمیں اطمینان ہو جائے، اس کا نام ہے قرآنی آیات کا القا اور الہام۔

انبیاء کی وحی فرشتے کے ذریعہ اور القافر شتے کے بغیر:

اس کا یہ مطلب نہیں کہ جس طرح حضرت محمد صلی اللہ علیہ وسلم پر بذریعہ جبرائیل علیہ السلام یا فرشتہ وحی نازل ہوتی تھی، اس طرح ان بزرگوں پر بھی... نعوذ باللہ... بذریعہ

جبرائیل یا فرشتہ کے وحی نازل ہوتی ہے۔

یہ جو ابن عربی کا حوالہ دیا گیا ہے، یہ بالکل غلط ہے، کیونکہ علامہ ابن عربی لکھتے

ہیں کہ:

”انبیاء کی وحی اور اولیاء کی وحی میں یہ فرق ہے کہ انبیاء کی

وحی فرشتے کے ذریعہ نازل ہوتی ہے اور یہ بغیر فرشتے کے۔“

یہ عبارت ان کی کتاب ”فتوحات مکیہ“ کی ہے، لیکن یہ بات جو میں ذکر کر رہا ہوں

یہ علامہ شعرانی رحمۃ اللہ علیہ کی کتاب ”ایواقیت والجوہر فی بیان عقائد الاکابر“ کی ہے، یہ

ساری کی ساری کتاب کہنا چاہئے کہ ابن عربی ہی کے حوالوں سے لکھی گئی ہے، اس میں علامہ

کہتے ہیں اور غالباً اس قسم کی عبارت ہے کہ: ”فان قلت ما الفرق بین الوحی والإلهام

ووحی النبوة“ (یعنی اگر تم پوچھو کہ اولیاء کی وحی اور انبیاء کی وحی میں کیا فرق ہے؟)۔

لغوی اور اصطلاحی وحی؟

در اصل لغت میں وحی کہتے ہیں خفی طور پر کسی بات کو دل میں ڈال دینا، چنانچہ

اولیاء اللہ پر جو الہام ہوتا ہے یا ان کے دل میں بات ڈال دی جاتی ہے، لغوی معنی کے طور

پر اس کو بھی وحی کہہ سکتے ہیں، لیکن جب کوئی کہتا ہے کہ فلاں پر وحی نازل ہوتی ہے، تو اس

سے وہ خاص نبوت والی وحی مراد ہوتی ہے، مرزائی لغوی اور اصطلاحی معنی کے فرق کو گڈمڈ

کر دیتے ہیں۔

دیکھو! جب بھی کہا جائے کہ تیرا رب کون ہے؟ اس ”رب“ سے کیا مراد ہوتی

ہے؟ یہی ناں کہ اللہ تعالیٰ! اور جب کہا جائے کہ رب الدار کون ہے یعنی اس مکان کا مالک

کون ہے؟ تو کہا جاتا ہے کہ زید! تو کیا زید کو رب الدار کہنے کے یہ معنی ہیں کہ وہ -نعوذ باللہ-

رب ہے؟

اسی طرح جب یہ کہا جائے کہ وحی کس پر نازل ہوتی ہے؟ تو کہو انبیاء پر، اور جب

کہا جائے کہ وحی الہام کس پر نازل ہوتی ہے؟ تو کہو کہ اولیاء پر، اس وحی اولیاء کو مضاف



کر کے نقل کریں گے، مطلق نہیں، جیسا کہ میں نے کہا کہ جب پوچھا جائے رب کون ہے؟ تو اس سے مراد اللہ تعالیٰ ہے، کیونکہ کسی دوسرے کو رب کہنا جائز نہیں، لیکن جب کہا جائے کہ ”رب الدار“ کون ہے؟ ”رب المال“ کون ہے؟ تو وہاں رب کے معنی مالک کے ہوں گے، یعنی اس مکان کا مالک کون ہے؟ اسی طرح جب کہا جائے کہ ”رب الدابة“ یعنی اس سواری کا مالک کون ہے؟ اس مال کا مالک کون ہے؟ تو اس کا جواب ہوگا فلاں آدمی اس کا مالک ہے، تو ان دونوں میں فرق ہو گیا ناں! تو جس طرح رب، رب کے درمیان فرق ہے، اسی طرح وحی، وحی کے درمیان فرق ہے، چنانچہ جب کہا جائے کہ وحی کس پر نازل ہوتی ہے؟ تو کہا جائے گا: صرف نبی پر! اگر کوئی شخص کہتا ہے کہ مجھ پر وحی نازل ہوتی ہے تو کافر ہے، مدعی نبوت ہے، اور اگر کہا جائے کہ وحی الہام ہوتی ہے، تو اب چونکہ یہ مضاف ہوگئی تو اس کا معنی ہوگا ایک خاص قسم کی وحی، اور یہ سب کے لئے عام ہے۔

تو خیر علامہ ابن عربیؒ نے کہا کہ کیا فرق ہے وحی الہام اور وحی نبوت کے درمیان؟ تو اس کا جواب دیا کہ وحی نبوت فرشتے کے ذریعہ ہوتی ہے، اور وحی الہام فرشتے کے بغیر ہوتی ہے۔

ولی فرشتے کی آواز سنتا ہے، مگر دیکھ نہیں سکتا:

کبھی یوں فرق کرتے ہیں کہ ولی فرشتے کی بات سنتا تو ہے مگر دیکھ نہیں سکتا، یعنی اللہ نے فرشتہ بھیج دیا کہ جا کر فلاں کو آواز دے آؤ، لیکن وہ اس فرشتے کو دیکھتا نہیں، البتہ نبی اس فرشتہ کو دیکھتا اور اس کی آواز کو سنتا ہے۔

تو مرزا یوں کی بات تو غلط ہے کہ اولیاء پر آیات کا نزول ہوتا ہے، کیونکہ وحی نازل ہونے کا معنی یہ ہوتا ہے فرشتہ لے کر آئے، اس کا یہ معنی نہیں کہ جو بات دل میں القا ہو جائے تو کان میں کسی لطیفہ نبی کی طرف سے آواز آجائے۔

دوسری بات یہ کہ جن اللہ کے بندوں کو بعض آیات کا الہام ہوا یعنی ان پر القا ہوا اور ان کے ذہن میں بات ڈال دی گئی، کیا ان میں سے کسی نے نبوت کا دعویٰ کیا؟ اگر نہیں



کیا تو پھر مرزا کیوں کہتا ہے کہ میں نبی ہوں؟

ایک اصولی بات:

یہاں پر مجھ سے ایک اور اصولی بات بھی سن لو، وہ یہ کہ جب بھی کوئی مرزائی ایسی بات کہے تو اس کو کہہ دو کہ خطبہ الہامیہ میں مرزا نے خود لکھا ہے:

”فلا تقیسونی بأحد ولا احدا بی۔“

(خطبہ الہامیہ ص: ۵۲، روحانی خزائن ج: ۱۶ ص: ۵۲)

ترجمہ:...”پس مجھے کسی دوسرے کے ساتھ قیاس مت

کرو، اور نہ کسی دوسرے کو میرے ساتھ۔“

یعنی کسی کو مجھ پر قیاس نہ کرو اور مجھے کسی پر قیاس نہ کرو، لہذا مرزا کی اس تصریح کے بعد تم خود مرزے کے حکم کی خلاف ورزی کر رہے ہو، اس لئے کہ مرزا کہتا ہے کہ مجھ پر کسی کا قیاس نہ کرو، اور تم اولیاء اللہ کی مثالیں دیتے ہو، تو تم مرزے کے حکم کی خلاف ورزی کرتے ہو۔

کیا نبیوں کو غیر نبیوں پر قیاس کرنا درست ہے؟

مرزا، حقیقۃ الوحی ص: ۳۹۱ میں لکھتا ہے:

”نبوت کا نام پانے کے لئے اس امت میں صرف میں

ہی مخصوص کیا گیا ہوں۔“

تو ان قادیانیوں سے پوچھو کہ کیا نبیوں کو غیر نبیوں پر قیاس کرنا چاہئے؟ اگر نہیں تو تم اولیاء اللہ کی مثالیں کیوں دیتے ہو؟

حضرت عیسیٰؑ کی سواری اور ہتھیار کیا ہوگا؟

سوال: ... حضرت عیسیٰ علیہ السلام جب آسمان سے آئیں گے، تو وہ گھوڑے پر سفر کریں گے؟ یا بس اور جہاز میں؟ پھر دجال کو کلاشکوف سے قتل کریں گے؟ تلوار سے یا حربہ سے؟

جواب: ... حضرت عیسیٰ علیہ السلام کے ہاتھ میں دو شاخہ حربہ ہوگا، اس کو نیزہ کہہ لو یا دو شاخی تلوار کہہ دو۔

باقی رہا یہ کہ عیسیٰ علیہ الصلوٰۃ والسلام سفر کس چیز پر کریں گے؟ اس کا ذکر تو کہیں نہیں آتا، البتہ یہ آتا ہے کہ دجال آپ کو دیکھ کر بھاگنا شروع کر دے گا، بھاگنا بھی شروع کرے گا اور پکھلنا بھی شروع ہو جائے گا، چنانچہ حضور اقدس صلی اللہ علیہ وسلم فرماتے ہیں کہ: اگر حضرت عیسیٰ علیہ السلام اس کو چھوڑ بھی دیتے تو وہ نمک کی طرح پگھل کر ختم ہو جاتا، لیکن حضرت عیسیٰ علیہ الصلوٰۃ والسلام فرمائیں گے کہ اللہ تعالیٰ نے میری ایک ضرب تجھ پر مقدر کر رکھی ہے، وہ تو تجھے برداشت کرنی ہی ہے، چنانچہ حضرت عیسیٰ علیہ الصلوٰۃ والسلام اس کے تعاقب میں اس کے پیچھے بھاگیں گے، اور ”باب لد“ پر جو آج کل اسرائیلیوں کا ایئرپورٹ ہے، وہاں جا کر اس کو پالیں گے، اپنے نیزے سے اس کو قتل کر دیں گے، اور اپنے نیزے پر لگا ہوا دجال کا خون مسلمانوں کو دکھائیں گے۔ اب اتنی باریک باریک تفصیلات بھی رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے بیان فرمادیں، تو معلوم ہوا کہ کلاشکوف سے نہیں نیزے سے قتل کریں گے۔

جدید اسلحہ کا دور ختم ہونے والا ہے:

میں تمہیں بتاتا ہوں کہ یہ کلاشکوفوں اور بارودوں کا دور ختم ہونے والا ہے، یہ بم، ایٹم بم اور ہائیڈروجن بم اور فلاں بم یہ سب خود اپنے آپ کو ختم کر دیں گے، خود کشی کر لیں گے، جب عیسیٰ علیہ السلام آئیں گے تو اس وقت وہی پرانی نیزوں کی جنگ ہوگی۔

دجال کی سواری؟

سوال: ... کیا دجال کی سواری گدھا ہوگی یا کوئی اور؟ خرد دجال کا کیا مفہوم ہے؟

جواب: ... جی ہاں! دجال کی سواری گدھا ہوگا، اور دجال گدھے پر سوار ہوگا،

چنانچہ حدیث شریف میں آتا ہے کہ اس کے کانوں کے درمیان کا فاصلہ ستر باع ہوگا، باع اس کو کہتے ہیں کہ دونوں ہاتھوں کو دائیں بائیں پھیلا دیا جائے تو داہنے ہاتھ کی شہادت کی

انگی سے بائیں ہاتھ کی شہادت کی انگی کے سرے تک درمیان کا جو فاصلہ ہے وہ ”باع“ کہلاتا ہے، تو اس کے گدھے کے دو کانوں کے درمیان کا فاصلہ ستر باع کا ہوگا، اس پر کوئی تعجب کرنے کی ضرورت نہیں ہے، کیونکہ وہ دجالی گدھا ہوگا۔

ریل کو خرّ دجال کہنا؟

سوال :-... مرزا نے تو ریل گاڑی کو دجال کا گدھا قرار دیا ہے، کیا یہ صحیح ہے؟

جواب :-... یہ بھی مرزائی عجوبات میں سے ہے، اس لئے کہ کیا کسی نے آج تک ایسی کوئی ریل گاڑی دیکھی ہے جس کی چوڑائی اور منہ ستر باع کے برابر چوڑا ہو؟ میرے خیال میں آج تک ایسی کوئی ریل گاڑی وجود میں نہیں آئی ہے، بھائی! دجال کے گدھے کو ریل گاڑی پر چسپاں کرنا حماقت ہے، دراصل مرزا جی نے یوں ہی کہا ہے، لیکن شاید مرزا غلام احمد کے اپنے دماغ میں بھی یہ بات نہیں آئی تھی، ہاں! البتہ وہ لوگوں کے دلوں میں شیطان کی طرح وسوسے ڈال دیتا تھا۔

مرزا جی کے ریل گاڑی کو خرّ دجال کہنے کی وجہ؟

دراصل حضرت مولانا عین القضاۃ رحمہ اللہ، جنہوں نے میڈی کا حاشیہ لکھا ہے، انہوں نے مہدی جو پوری کے رد میں ”ہدیہ مہدویہ“ لکھی تھی، اس کی ایک کاپی ہمارے مرکزی دفتر ملتان میں موجود ہے، انہوں نے اپنی تصنیف ”ہدیہ مہدویہ“ میں لکھا ہے کہ خرّ دجال سے ریل گاڑی بھی مراد ہو سکتی ہے، اور اس کا احتمال بھی ہے، اصل مہدی جو پوری نے دجال کے گدھے پر اشکال کیا کہ اتنا بڑا گدھا کیسے ہوگا؟ تو مولانا نے جواباً لکھ دیا کہ احتمال کے طور پر یہ دیکھو جیسے ریل گاڑی تمہارے سامنے موجود ہے، اتنا بھاگتی بھی ہے۔

تو جس کو حضرت مولانا عین القضاۃ نے استبعاد دور کرنے کے لئے بطور احتمال کے لکھا، مرزا نے اس کو وحی بنا لیا، اور کہا کہ انگریز دجال ہے اور ریل گاڑی ان کا گدھا ہے، مگر افسوس کہ مرزا قادیانی مرنے کے بعد لاہور سے قادیان اسی گدھے پر لد کر گیا، یعنی اس کی لاش لاہور سے اسی خرّ دجال پر لا کر قادیان پہنچائی گئی۔

## خرودجال پر تعجب کیوں؟

دجال جب ساری دنیا میں پھر سکے گا، جیسا کہ حدیث شریف میں آتا ہے کہ زمینوں کے خزانوں کو حکم دے گا وہ اس کے ساتھ ساتھ چلنے لگیں گے، بادلوں کو حکم دے گا بارش برسائیں گے، اور لوگ اسی سے دھوکا کھائیں گے کہ یہ خدا ہے، خدائی کام کرتا ہے، اگر یہ سب کچھ قابل تسلیم ہے تو پھر اس کے گدھے پر کیوں تعجب ہو؟ یہ وہ وقت ہوگا جو امتحان کی کڑی آزمائش کا وقت ہوگا۔

فتنہ دجال سے پناہ مانگنے کی تعلیم:

حافظ ابن حجر رحمۃ اللہ علیہ نے فتح الباری کی تیرہویں جلد میں ایک تابعی کا قول نقل کر کے لکھا ہے کہ:

”دجال کے فتنے سے بارہ ہزار مرد اور سات ہزار عورتیں محفوظ رہیں گی۔“  
(فتح الباری ج: ۱۳ ص: ۹۲)

اللہ تعالیٰ حفاظت فرمائے، اس سے معلوم ہوا کہ اللہ تعالیٰ کچے لوگوں کو نہیں رہنے دیں گے، بلکہ سب کچھ کو دھکیل دیں گے، یعنی جن کے دل میں صحیح طور پر ایمان نہیں ہے، ان کو چھانٹ دیں گے، سب دجال کے ساتھ مل جائیں گے، نعوذ باللہ! استغفر اللہ! اس لئے اپنے ایمان کی فکر کرنی چاہئے۔

یہی وجہ ہے کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے باقاعدہ امت کو فتنہ دجال سے پناہ مانگنے کی تعلیم فرمائی ہے، اور ام المؤمنین عائشہ صدیقہ رضی اللہ عنہا فرماتی تھیں کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم التزام کے ساتھ یہ دعا کرتے تھے، نماز کے اندر یا نماز سے باہر:

”اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِکَ مِنْ عَذَابِ جَهَنَّمَ،  
وَ اَعُوْذُ بِکَ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ، وَ اَعُوْذُ بِکَ مِنْ فِتْنَةِ  
الْمَسِيْحِ الدُّجَالِ، وَ اَعُوْذُ بِکَ مِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا  
وَالْمَمَاتِ، وَ اَعُوْذُ بِکَ مِنَ الْمَآْثِمِ وَالْمَغْرَمِ۔“

یعنی ان پانچ چیزوں سے آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم التزام کے ساتھ پناہ مانگتے تھے: جہنم کے عذاب سے، قبر کے عذاب سے، مسیح الدجال کے فتنے سے، اور زندگی اور موت کے فتنوں سے، اور آخر میں خصوصیت کے ساتھ گناہ اور قرض سے۔

اللہ تعالیٰ ہماری بھی ان سے حفاظت فرمائے، آمین!

رفع کے وقت حضرت عیسیٰ کی عمر:

سوال: ... کہا جاتا ہے کہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام کو نبوت ۳۳ سال کی عمر میں عطا ہوئی، اس کی تشریح کریں۔

جواب: ... ۳۳ سال کا قول تو مجھے معلوم نہیں ہے، بھائی! میں نے کہیں نہیں پڑھا، البتہ یہ مشہور ہے کہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام ۳۳ سال کی عمر میں اٹھائے گئے، لیکن حافظ ابن قیمؒ نے زاد المعاد کے شروع میں یہ لکھا ہے کہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام کے بارہ میں یہ کہنا غلط ہے کہ وہ ۳۳ سال کی عمر میں اٹھائے گئے، یہ نصاریٰ کا قول ہے، مگر افسوس کہ مرزائی اسی کو نقل کیا کرتے ہیں، علامہ ابن قیمؒ کہتے ہیں کہ ۳۳ سال کی عمر میں اٹھائے جانے کا قول نصاریٰ کا ہے، اس کے برعکس مرزائیوں نے یہ گھڑ لیا کہ عیسیٰ علیہ السلام کے اٹھائے جانے کا عقیدہ نصاریٰ کا ہے، یعنی نعوذ باللہ ابن قیمؒ حضرت عیسیٰ علیہ السلام کے اٹھائے جانے کے منکر ہیں۔

مرزائیوں کا دجل:

دراصل حافظ ابن قیمؒ اس پر بحث کر رہے تھے کہ نبوت چالیس سال کے بعد ملتی ہے، لیکن جب اس پر اعتراض ہوا کہ عیسیٰ علیہ السلام تو ۳۳ سال کی عمر میں اٹھائے گئے تھے، انہوں نے اس کا یہ جواب دیا کہ ۳۳ سال کی عمر میں حضرت عیسیٰ علیہ السلام کے اٹھائے جانے کا قول نصاریٰ کا قول ہے، اصل بات کیا تھی اور مرزائیوں نے کیا بنا دی؟

اسی کو دجل کہتے ہیں، اور اسی سے ”دجال“ بھی ماخوذ ہے، چنانچہ جہاں مرزائی، قرآن کا یا حدیث کا نام لیں گے تو اس میں ضرور دجل کریں گے، دجل کے معنی ہیں فریب



اور دھوکا، لہذا یہ ہو ہی نہیں سکتا کہ قادیانی کسی بزرگ کا قول پیش کریں اور اس میں دجل نہ کریں، کیونکہ قرآن کریم کی کوئی آیت، کوئی ایک صحیح حدیث اور کسی ایک بزرگ کا کوئی مستند قول مرزائیوں کی تائید میں مل ہی نہیں سکتا، جب تک کہ وہ اس میں دجل و فریب کر کے اس کو توڑ موڑ کر چسپاں نہ کر دیں، اسی لئے ہم اس کو دجال اور فریبی کہتے ہیں، یہ چھوٹا دجال ہے، کیونکہ بڑا دجال تو بعد میں آئے گا۔

اس بیچارے کے پاس کچھ بھی نہیں تھا، بیچارہ لوگوں سے چندہ مانگتا رہتا تھا، بڑا دجال تو اس کے کان کترے گا۔

حضرت عیسیٰ کو نبوت کس عمر میں ملی؟

اچھا خیر! تو ۳۳ سال میں نبوت کا ملنا تو ثابت نہیں، البتہ میں نے کہا تھا کہ ہر نبی کو چالیس سال میں نبوت ملتی ہے، اسی طرح حضرت عیسیٰ علیہ السلام کو بھی چالیس سال کی عمر میں نبوت ملی ہوگی۔

لیکن بعض لوگوں نے یہ کہا کہ ان کو بچپن ہی سے نبی بنا دیا گیا تھا، کیونکہ قرآن کریم میں ہے کہ جب ان کی والدہ ماجدہ حضرت مریم ان کو اٹھا کر اپنی قوم کے پاس لے آئیں تو لوگوں نے کہا:

”..... قَالُوا يَا مَرْيَمُ لَقَدْ جِئْتِ شَيْئًا فَرِيًّا۔  
اُخْتِ هَارُونَ مَا كَانَ ابْنُكَ امْرَأًا سَوْءًا وَمَا كَانَتْ اُمُّكَ  
بَغِيًّا۔ فَاسْأَرْتُ اِلَيْهِ، قَالُوا كَيْفَ نُكَلِّمُ مَنْ كَانَ فِي الْمَهْدِ  
صَبِيًّا۔ قَالَ اِنِّي عَبْدُ اللّٰهِ اَتَنبِئُ الْكِتَابَ وَجَعَلْنِي نَبِيًّا۔  
وَجَعَلْنِي مُبَارَكًا اَيْنَ مَا كُنْتُ وَاَوْصِنِي بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ  
مَا دُمْتُ حَيًّا۔ وَبَرًّا بِوَالِدَتِي وَلَمْ يَجْعَلْنِي جَبَّارًا شَقِيًّا۔  
وَالسَّلَامُ عَلَيَّ يَوْمَ وُلِدْتُ وَيَوْمَ اَمُوتُ وَيَوْمَ اُبْعَثُ حَيًّا۔“  
(مریم: ۲۷-۳۳)

ترجمہ: "... وہ اس کو کہنے لگے: اے مریم! تو نے کی یہ چیز طوفان کی، اے بہن ہارون کی! نہ تھا تیرا باپ بُرا آدمی اور نہ تھی تیری ماں بدکار، پھر ہاتھ سے بتلایا اس لڑکے کو، بولے: ہم کیونکر بات کریں اس شخص سے کہ وہ ہے گود میں لڑکا؟ وہ بولا: میں بندہ ہوں اللہ کا! مجھ کو اس نے کتاب دی ہے اور مجھ کو اس نے نبی بنایا، اور بنایا مجھ کو برکت والا جس جگہ میں ہوں اور تاکید کی مجھ کو نماز کی اور زکوٰۃ کی جب تک میں رہوں زندہ، اور سلوک کرنے والا اپنی ماں سے، اور نہیں بنایا مجھ کو زبردست بد بخت، اور سلام ہے مجھ پر جس دن میں پیدا ہوا، اور جس دن مروں اور جس دن اٹھ کھڑا ہوں زندہ ہو کر۔"

(ترجمہ حضرت شیخ الہند)

یعنی حضرت مریم نے بچے کی طرف اشارہ کر دیا کہ اس سے پوچھو! انہوں نے ابھی پوچھا بھی نہیں تھا کہ اور بچہ بول پڑا کہ: حرام زادہ نہیں ہوں، نعوذ باللہ! میں تو اللہ کا بندہ خاص ہوں، اور مجھ کو بنایا ہے برکت والا جہاں کہیں ہوں زمین میں ہوں یا آسمان میں ہوں، اور مجھ کو وصیت فرمائی ہے زکوٰۃ کی اور نماز کی جب تک میں زندہ رہوں۔

حضرت عیسیٰؑ آسمان پر زکوٰۃ اور نماز کیسے ادا کرتے ہیں؟

اشکال: ... مرزائی کہا کرتے ہیں کہ اگر حضرت عیسیٰ علیہ السلام زندہ آسمان پر موجود ہیں تو پھر عیسیٰ علیہ السلام زکوٰۃ کیسے دیتے ہیں؟ حالانکہ وہ تو کہتے ہیں کہ مجھے وصیت فرمائی ہے، اسی طرح وہ نماز کیسے پڑھتے ہیں؟

جواب: ... ہم نے کہا: نماز تو پڑھ لیتے ہوں گے، یہ کوئی اشکال کی بات نہیں، وہاں ان کے لئے فرشتے مصلیٰ بچھا دیتے ہوں گے، باقی رہ گئی زکوٰۃ، تو وہ ہوتی ہے نصاب پر، مرزا سیو! تم نصاب کی تعیین کر دو اور بتا دو کہ عیسیٰ علیہ السلام کے پاس اتنا سونا، چاندی یا نقد رقم یا مال تجارت ہے، تب ہم تمہیں بتا دیں گے کہ وہ زکوٰۃ دیتے ہیں، اور کیسے دیتے ہیں؟

اس میں تعجب کی کیا بات ہے؟

ہمارے آقا پر زندگی بھر زکوٰۃ فرض ہی نہیں ہوئی:

سوال یہ ہے کہ ہمارے آقا حضرت محمد صلی اللہ علیہ وسلم نے ساری عمر زکوٰۃ دی ہے؟  
حضرت جنید بغدادیؒ کے خلیفہ تھے حضرت شبلیؒ، ان سے کسی نے پوچھا کہ  
حضرت! زکوٰۃ کتنی ہے؟ فرمایا کہ: مولوی لوگ فقہ والے کہتے ہیں کہ جب کسی کے پاس دو  
سودرہم چاندی یا ساڑھے باون تولہ چاندی ہو جائے اور اس پر سال گزر جائے تو اس میں  
سے پانچ درہم دے دیں، دوسو میں سے پانچ یعنی چالیس میں سے ایک دے دیا جائے،  
لیکن ہم یوں کہیں کہ: اگر کسی کے پاس چالیس درہم سال بھر پڑے رہیں تو اکتالیس زکوٰۃ  
میں دے دیں، عرض کیا گیا: حضرت! چالیس میں سے اکتالیس کا کیا مطلب؟ فرمایا:  
چالیس تو اس کے پاس موجود ہیں اور پورا سال گزر گیا مگر خرچ نہیں ہوئے تو اس کی  
ضرورت سے زائد ہوئے، وہ تو یوں دے کہ اس کی ضرورت نہیں، اور ایک درہم مزید  
جرمانے کا دے، اس لئے کہ حماقت کیوں کی تھی کہ چالیس درہم بغیر ضرورت کے سارا سال  
رکھے رہا۔

یہ تو اولیاء اللہ کی بات ہے، اور نبیوں کے امام کی بات کیا ہوگی؟ ان پر زکوٰۃ ہی  
فرض نہیں ہوئی ہوگی۔ میرے اللہ کا شکر ہے لاکھوں روپیہ ہاتھ میں آتا ہے جاتا ہے، لیکن  
کبھی مجھ پر زکوٰۃ فرض نہیں ہوئی، اب اس وقت بھی ڈیڑھ لاکھ کا مقروض ہوں، ذاتی طور پر  
مقروض ہوں، اللہ کا شکر ہے میرا اللہ تعالیٰ مجھے دیتا ہے اور ادا کرتا ہوں، مجھے تو اس قرضے کی  
بھی فکر نہیں، اللہ تعالیٰ دے دیں گے تو ادا بھی کر دوں گا۔ اللہ تعالیٰ قرض سے بچائے، اللہ  
تعالیٰ عطا فرمائے گا، کوئی تشویش نہیں۔

روٹی کے لئے پریشان نہ ہو!

تمہیں ایک بات کہتا ہوں کہ روٹی کے مسئلہ کے بارے میں کبھی پریشان نہ ہو  
کرو، لوگوں کو اسی پریشانی نے کھا رکھا ہے، جہان کا جہان اسی روٹی کے مسئلہ میں مبتلا ہے،

میاں! جس نے تمہیں پیدا کیا ہے، تمہیں جان دی ہے، وہ جان کو بچانے کا سامان بھی دے گا، اور جس دن جان لے جانی ہوگی اس دن تمہارا رزق ختم کر دے گا، پھر تم تلاش کرو گے، نہیں ملے گا، اور جب تک تمہارے اندر جان رکھنی ہے، اس نے جان کا سامان بھی رکھنا ہے، چاہے تمہیں کھلانے پلانے کے ساتھ رکھے، چاہے اس کے بغیر رکھے، تم کیوں پریشان ہوتے ہو، ان شاء اللہ کھانے کے لئے روٹی، پہننے کے لئے کپڑے دے گا، اور رہنے کے لئے جیسی کیسی جگہ بھی عطا فرمائے گا۔

شکر کیا کرو!

لیکن جو تمہیں ملی ہوئی ہے اس کا شکر ادا کیا کرو، کیوں میاں! کبھی اس کا شکر بھی کیا ہے؟ اور زیادہ تو مانگتے ہیں، اور ہماری ہوس کی دوزخ ”هَلْ مِنْ مَّزِيدٍ!“ پکارتی ہے، لیکن کبھی اس کا شکر بھی کیا ہے؟

میرے آقا صلی اللہ علیہ وسلم جب بستر پر تشریف لے جاتے تھے تو سب سے پہلے یہ دعا پڑھتے تھے:

”الحمد لله الذى اطعمنا وسقانا وكفانا

واوانا۔“

یعنی میرے اس اللہ کا لاکھ لاکھ شکر ہے جس نے ہمیں کھلایا، پلایا، ہماری کفایت فرمائی اور ہمیں ٹھکانا دیا۔

کیونکہ: ”وَكَمْ مِّنْ لَا كَافِيَ لَهُ وَلَا مُؤْوًى“ یعنی کتنے ایسے لوگ ہیں جن کی کوئی کفایت کرنے والا نہیں اور کوئی ان کو ٹھکانا دینے والا نہیں، تم اللہ کی کفایت اور اللہ کے ٹھکانا دینے میں آ جاؤ، تم کیوں پریشان ہوتے ہو؟

آیت کا صحیح مفہوم:

خیر! تو بعض لوگوں نے کہا کہ عیسیٰ علیہ السلام اس ارشادِ الہی کی بنا پر بچپن ہی سے نبی بنادینے گئے اور پیدا ہوتے ہی وہ نبی تھے، یعنی وہ پیدا ہی نبی ہوئے ہیں۔

اس لئے کہ خود فرماتے ہیں: ”إِنِّي عَبْدُ اللَّهِ اتَّخَذَ اللَّهُ الْكِتَابَ وَجَعَلَنِي نَبِيًّا. وَجَعَلَنِي مُبَارَكًا أَيْنَ مَا كُنْتُ وَأَوْصَانِي بِالصَّلَاةِ وَالزَّكَاةِ مَا دُمْتُ حَيًّا. وَبَرًّا بِوَالِدَتِي وَلَمْ يَجْعَلْ لِي جَبَارًا شَقِيًّا. وَالسَّلَامُ عَلَيَّ يَوْمَ وُلِدْتُ وَيَوْمَ أَمُوتُ وَيَوْمَ أُبْعَثُ حَيًّا.“

لیکن صحیح بات یہ ہے کہ اس ارشاد کا یہ مطلب نہیں کہ ابھی مجھے کتاب ملی ہے، کیونکہ یہ ایک روز اور ایک دن کا بچہ کہہ رہا ہے، اس لئے کہ بچہ پیدا ہوا، اماں اٹھا کے لے آئیں قوم کے پاس، فرشتہ نے کہا: لے جاؤ اس کو تم کہہ دینا میں نے روزہ رکھا ہوا ہے، میں نہیں بولوں گی، اپنے منہ کی طرف اشارہ کر دینا، اس بچے کی طرف اشارہ کر دینا، خود ہی بتائے گا، تو ایک دن کا بچہ یہ کہہ رہا ہے، تو ظاہر ہے کہ اس آیت کا معنی یہ ہے کہ اللہ تعالیٰ نے آئندہ ان کے بارے میں جو فیصلے کر رکھے ہیں، ان کی اطلاع دینی مقصود ہے، مگر اللہ تعالیٰ ان کی زبان سے بلوار ہے ہیں۔

نبوت ملنے کی اطلاع پہلے اور ظہور بعد میں:

تو گویا نبوت چالیس سال کے بعد ملی، اور نبوت کا ظہور بھی چالیس سال کے بعد ہوا، البتہ اس کی اطلاع پیشگی دے دی گئی۔

جیسے ہمارے نبی صلی اللہ علیہ وسلم اور ہمارے آقا صلی اللہ علیہ وسلم سے جب پوچھا گیا کہ: یا رسول اللہ! آپ کو نبوت کب ملی؟ آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا: آدم علیہ السلام ابھی اپنے آب و گل، مٹی اور پانی میں گوندھے ہوئے تھے کہ میں اس وقت بھی نبی اور خاتم النبیین تھا، چنانچہ فرمایا:

”وَكُنْتُ نَبِيًّا خَاتِمَ النَّبِيِّينَ وَآدَمَ مِنْجِدًا بَيْنَ

الطِّينَةِ.“

یعنی میں نبی اور آخری نبی تھا جبکہ آدم علیہ السلام ابھی گندھے ہوئے تھے اپنی مٹی

گارے میں۔



لیکن اس کا یہ معنی تو نہیں کہ آپ صلی اللہ علیہ وسلم اس وقت عالم ظہور میں بھی نبی تھے، بلاشبہ آپ صلی اللہ علیہ وسلم اس وقت سے نبی بنا دیئے گئے تھے، مگر اس عالم میں نہیں، اُس عالم میں بنائے گئے تھے، البتہ چالیس سال کے بعد اس کا ظہور اس وقت ہوا جب اعلان نبوت فرمایا۔

جنتی جوان اور نبوت ملنے کی عمر:

سوال: ... حدیث میں تو آتا ہے کہ جنتی جوان ہوں گے اور عمر ۳۳ سال کی ہوگی، جنت کی جوانی کی عمر ۳۳ سال کہی گئی ہے، تو نبوت کی عمر چالیس سال کیوں رکھی گئی ہے؟

جواب: ... وہ تو یہ آتا ہے کہ سب کے سب جنتی جوان ہوں گے، اور بے ریش ہوں گے، داڑھیاں نہیں ہوں گی، اس لئے کہ ہمارے جو پرانے بزرگ تھے وہ بھی بیس، بیس، پچیس، پچیس سال تک لڑکے لڑکیاں ساتھ کھیلا کرتے تھے، ان کو کسی چیز کا پتہ ہی نہیں ہوتا تھا، جس کی عمر کا پیمانہ ایک ہزار سال کا ہو وہ بالغ کب ہوگا؟ یہ تم خود ہی دیکھ لو! اب چونکہ عمریں بھی چھوٹی چھوٹی ہو گئی ہیں، اس لئے بلوغت بھی جلدی ہو جاتی ہے، اور یہ چڑے چڑیوں کی طرح جلدی جلدی بالغ بھی ہو جاتے ہیں۔

اہل جنت کی عمر ۳۳ سال کی ہوگی: اس کا مطلب یہ ہے کہ وہ ابھی تک اس عمر کو نہیں پہنچے کہ ان کی داڑھی آجائے، وہ ہے ۳۳ سال، اب آپ خود ہی اندازہ لگالیں ان کی زندگی کتنی لمبی ہوگی؟ اس کے مطابق وہ سدا بہار جوان رہیں گے اور بے ریش ہوں گے۔

جنت میں دو داڑھیاں!

بعض روایتوں میں آتا ہے... واللہ اعلم... ان روایتوں کی صحت کہاں تک ہے؟ کہ صرف دو داڑھیاں جنت میں ہوں گی، ایک آدم علیہ السلام کی وہ جد الانبیاء ہیں، یعنی اولادِ آدم کے باپ اور ابوالبشر ہیں، اور دوسرے حضرت محمد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی، بس مردوں کی حد تک یہی دو پہنچے، یعنی باقی سب بچے ہی بچے ہیں۔

## فریب خوردہ قادیانیوں کی خدمت میں

محترم جناب مولوی محمد یوسف صاحب!

سلام علی من اتبعی الہدی۔

ج: ... الملاحیح کیجئے لفظ ”اتبع“ ہے۔

۲: ... خدا کرے آپ بخیر و عافیت ہوں، آمین!

ج: ... الحمد للہ! بعافیت ہوں اور آپ کی عافیت و ہدایت کا دُعا گو۔

۳: ... آپ کا نوازش نامہ ملا ہے، معافی چاہتا ہوں جواب کچھ تاخیر سے دے رہا

ہوں، کیونکہ میں جلسہ سالانہ پر ربوہ گیا ہوا تھا۔

ج: ... تحریف فی الاسم ہے، کیونکہ مسیح کذاب کی ہر بات میں کذب ہوتا ہے۔

۴: ... یہ تو اچھا ہی ہوا کہ آپ نے خط میں یہ اقرار کر لیا کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ

م نے ہر صدی کے سر پر مجدد کے آنے کی اطلاع دی ہوئی ہے، ورنہ آپ نے جن الفاظ کو

بار میں شائع کیا ہوا ہے، اس سے تو قارئین کو یہی تاثر اور تصور ملتا ہے کہ جیسے وہ الفاظ حضور

ﷺ کی حدیث کے نہ ہوں، بلکہ صرف حضرت مرزا صاحب کے ہی ہوں۔

ج: ... یہ عبارت یہاں سے شروع ہوتی ہے کہ: ”آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کا

دے: ...“ کیا اتنی کھلی بات کے سمجھنے سے بھی آپ معذور ہیں؟

۵: ... حقیقتاً یہ بھی ایک وجہ تھی جس سے مجھے آپ کی خدمت میں خط لکھنا پڑا، جس

س عاجز نے یہی سوال تو کیا تھا کہ آپ خواہ مخواہ حضرت مرزا صاحب کو جھوٹا بنانے پر

ہوئے ہیں۔

ج: ... جھوٹے لے کو جھوٹا بنانے کی ضرورت نہیں، ہاں! بتانے کی ضرورت ہے۔

۶:۔۔۔ آپ نے میرے عریضہ کو صرف کانٹے دار کر کے واپس کر دینے سے اپنے کسی اچھے اخلاق کا ثبوت نہیں دیا، واضح طور پر یہ آپ کی جھنجھلاہٹ ظاہر کرتا ہے۔

ج:۔۔۔ نبوت کا ذبہ کے ساتھ اخلاق بھی اسی قسم کے ہوں گے۔

۷:۔۔۔ اصولاً تو چاہئے تھا کہ آپ میری معروضات یا وضاحتوں کے جواب میں کوئی مثبت باتیں بہ دلائل لکھتے، وہ آپ سے نہ ہو سکا۔

ج:۔۔۔ آپ نے میری بات کا جواب ہی کیا دیا کہ اس کو رد کرتا؟

۸:۔۔۔ اگر کچھ آپ نے کیا بھی تو یہ کہ شیخی بھگاردی کہ ”ورنہ مرزا قادیانی کی جو عبارتیں آپ نے (یعنی میں نے) نقل کی ہیں، اس میں مرزا جی نے خدا و رسول پر افترا کئے ہیں، اور آپ ایسے (یعنی مجھ سے) سمجھدار اور خوش فہم لوگوں کو کس کس طرح احمق بنایا ہے، اس کی تشریح کروں تو ایک ضخیم رسالہ بن جائے گا۔“

اول تو آپ نے طرزِ مخاطب میں کوئی اچھا نمونہ پیش نہیں کیا، اس سے تو ہر سمجھ دار قاری اندازہ لگا سکتا ہے۔

ج:۔۔۔ طرزِ مخاطب کا اچھا نمونہ اور کیا ہو سکتا ہے کہ میں نے مسیح کذاب کے ماننے والوں کو صرف فریب خوردہ کہنے پر اکتفا کیا۔

۹:۔۔۔ دوم آپ نے یہ لکھتے ہوئے اتنا بھی نہیں سوچا کہ جس بات کو آپ مرزا صاحب کا افترا گردان رہے ہیں، وہ تو حضرت مرزا صاحب سے کئی صدیوں پہلے بھی کئی بزرگانِ دین سے ہو چکا ہے۔

ج:۔۔۔ مثلاً کون کون سے بزرگوں نے؟ اور پھر بزرگانِ دین سے آپ کا کیا تعلق؟

۱۰:۔۔۔ سوم یہ کہ آپ تشریح کریں تو ایک ضخیم رسالہ بن سکتا ہے، میں باادب یہ عرض کرنے میں حق بجانب ہوں گا کہ آپ سے بھی یہ نہ ہو سکے گا۔

ج:۔۔۔ جی ہاں! مجھ سے کیا، بلکہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم سے بھی فرمایا گیا:

”اِنَّكَ لَا تَهْدِي مَنْ اَحْبَبْتَ“۔

۱۱:۔۔۔ آپ کے کئی ہم مسلک ایسی تعلیمات اور شیخیاں بگھارتے بگھارتے راہی

ملکِ عدم ہو گئے۔

ج:۔۔۔ لیکن الحمد للہ! مرزا غلام احمد کی طرح راہی ملکِ عدم نہیں ہوئے کہ ان کے دونوں راستوں سے نجاست نکل رہی ہو، اور نہ مرزا محمود کی طرح شکلِ مسخ ہو کر۔

۱۲:۔۔۔ مگر وہ بالمقابل کوئی مفید اور مُسَلَّم جواب نہ لکھ سکے۔

ج:۔۔۔ مُسَلَّم جواب ان شاء اللہ مرنے کے بعد ملے گا، وہاں فرشتوں سے بھی یہی

کہئے گا!

۱۳:۔۔۔ ہاں! البتہ گالیوں سے بھری کتابیں ضرور شائع کر گئے۔

ج:۔۔۔ جی ہاں! قرآن بھی تو بقول مرزا گالیوں سے بھرا ہوا ہے۔

۱۴:۔۔۔ بھلا ایسی باتوں سے بھی کبھی ابلاغِ دین کے کام ہوا کرتے ہیں؟

ج:۔۔۔ صحیح فرمایا، لاتوں کے بھوت باتوں سے نہیں مانتے، سچی بات تو یہ ہے کہ

ابلاغِ دین ”..... فاقتلوہ“ سے ہوتا ہے!

۱۵:۔۔۔ چلئے! آپ احمدیوں کے مسلک اور رویہ کو تو چھوڑئیے، کیونکہ آپ کا ذہن

ان کے خلاف کافی سے زیادہ زہر آلودہ ہو چکا ہے، مگر خدا کے لئے اپنے اسی عقیدہ کی خبر تو

لیجئے جیسا کہ آپ نے خود تسلیم کیا ہے کہ تجدیدِ دین کے لئے آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی یہ

پیش گوئی مُسَلَّمہ چلی آرہی ہے کہ ہر صدی کے سر پر اللہ تعالیٰ کسی نہ کسی کو مجدد کے طور پر

مبعوث فرماتا رہے گا۔

ج:۔۔۔ الحمد للہ! مجھے تو مُسَلَّم ہے، مگر افسوس کہ مرزا غلام احمد اور ان کے ماننے

والے اس کو نہیں مانتے، چنانچہ آپ ہی بتائیں کہ اگر آپ اس کے قائل ہیں تو پھر چودھویں

صدی کے بعد یہ سلسلہ بند کیوں ہو گیا؟

۱۶:۔۔۔ تو آپ بیچارے احمدیوں کے پیچھے لٹھ لئے پھرنے کی بجائے خود اپنا موازنہ

کریں کہ مکمل تیرہ صدیوں میں تو مجددِ دین کرام آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی پیش گوئی کے

مطابق اللہ تعالیٰ کی طرف سے مبعوث ہوتے رہے، مگر اس چودھویں صدی کا کوئی مجدد کیوں

نہ آیا؟ یہ صدی کیوں اور کن حضرات کی بدولت خالی چلی گئی؟

ج:۔۔۔ یہ آپ سے کس نے کہا کہ یہ صدی مجدد سے خالی چلی گئی؟ اگر مرزا مجدد نہیں تو کیا دوسرا بھی کوئی نہیں؟

ج:۔۔۔ یا یوں کہئے کہ محض آپ کی ضد نے کسی کو بھی مجدد ہونے کا مستحق نہ سمجھا، تو کیا آپ کا ضمیر اور ذہن اس بات کو گوارا کرتا ہے کہ پیش گوئی ہو خاتم الانبیاء صلی اللہ علیہ وسلم کی اور وہ پوری تیرہ صدیوں میں تو پوری ہوتی چلی آئی ہو، مگر جب چودھویں صدی آئی جس میں آپ جیسے علماء ہوں تو وہ (نعوذ باللہ) بے کار چلی گئی؟

ج:۔۔۔ محض جھوٹ! کسی نے بے کار نہیں کہا، لیکن قادیانیوں نے پندرہویں صدی کے لئے اس کو بے کار کر دیا، کیونکہ الف آڑے آتا ہے، کون کہتا ہے کہ پوری نہیں ہوئی؟ ہاں! البتہ غلام احمد قادیانی کو ملت اسلامیہ مجدد نہیں مانتی اس لئے کہ مجدد تو کیا وہ ایک شریف انسان کہلانے کا مستحق بھی نہیں ہے۔

فقط والسلام

عبدالرؤف لودھی



## ختم نبوت اور اجرائے نبوت سے متعلق شبہات کا جواب

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

”بخدمت جناب مولانا مفتی احمد الرحمن صاحب، مولانا

محمد یوسف لدھیانوی اور ڈاکٹر عبدالرزاق اسکندر کراچی۔

نہایت مؤدبانہ اور عاجزانہ التماس ہے کہ خاکسار کی  
دیرینہ الجھن قرآن پاک کی روشنی میں حل کر کے ممنون فرمائیں، قبل  
ازیں ۳۵ حضرات سے رجوع کر چکا ہوں، تسلی بخش جواب نہیں ملا،  
آپ رحمۃ للعالمین صلی اللہ علیہ وسلم کے صدقے میں ایسا نہ کرنا۔

سوال: ۱: ... آیت مبارکہ ۴۰/۳۳ سورہ احزاب کی  
روشنی میں حضرت محمد صلی اللہ علیہ وسلم کو کب سے یعنی کس وقت سے  
خاتم النبیین تسلیم کیا جائے؟

آیا: قبل پیدائش حضرت آدم علیہ السلام؟ یا حضور کی  
پیدائش مبارک سے؟ یا آیت ۴۰/۳۳ خاتم النبیین کے نزول کے  
وقت سے؟ یا حضور کی وفات کے بعد سے؟

جس وقت یا مقام مبارک سے حضور کا خاتم النبیین ہونا  
قرآن کریم سے ثابت کریں گے، اسی وقت مبارک یا مقام مبارک  
سے حضور کا خاتم النبیین ہونا تسلیم ہوگا، اور اسی وقت یا مقام سے وحی

الہی کا انقطاع تا قیامت تسلیم ہوگا۔

سوال: ۲: ... آیت مبارکہ ۶/۱۱۲ اور ۶/۱۲۱ سورہ

الانعام میں شیطان مردود کے لئے دو دفعہ وحی کا لفظ ”یوحی“ اور ”لیوحون“ آیا ہے، تمام اُمت کا خیر سے ایمان و اتفاق ہے کہ شیطانی وحی بغیر انقطاع تا قیامت جاری و ساری رہے گی، لیکن رحمانی وحی کا انقطاع تا قیامت رہے گا، یعنی رحمانی بند اور شیطانی وحی تا قیامت جاری ہے، کیا ایسی تفسیر سے قرآن کی عالمگیر تعلیم میں کوئی تضاد اور تعارض تو نہیں پیدا ہوگا؟ کیا انقطاع شیطانی وحی کا موجب رحمت ہدایت و راحت ہوگا، یا رحمانی وحی کا؟

سوال: ۳: ... اب دنیا کے کل مذاہب میں وحی الہی

مبارک کا انقطاع تا قیامت تسلیم کیا جاتا ہے، یہودیوں، عیسائیوں، ہندوؤں اور مسلمانوں میں وحی الہی مبارک بند ہے، اگر کوئی بد بخت یہ کہہ دے کہ وحی مبارک الہی جاری ہے تو فوراً کافر ہو جاتا ہے، موجودہ تفسیرات میں ہم کو ایسا ہی ملتا ہے، اب جبکہ انقطاع وحی کا عقیدہ تا قیامت تسلیم ہے تو سچے دین کی شناخت کیا ہے؟

سوال: ۴: ... ارشاد باری تعالیٰ ہے کہ: ”وَلَا

تفرقوا“ یعنی فرقہ بندی کفر و ضلالت ہے، اس کے باوجود فرقہ بندی کو کیوں قبول کیا ہوا ہے؟ یعنی کفر کیوں کمایا جا رہا ہے جبکہ کوئی تکلیف بھی نہیں ہے؟ خدا و رسول اور کتاب موجود ہیں، یہ تینوں فرقہ بندی سے بیزار ہیں، ارشاد باری تعالیٰ ہے: ”هُوَ الَّذِي خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَمِنْكُمْ مُّؤْمِنٌ“ ۶۴/۲ اور: ”وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُشْرِكِينَ مِنَ الَّذِينَ فَرَّقُوا دِينَهُمْ“ (الروم: ۳۱) آج ہم

علمائے دین کی بدولت ایک مسجد میں، ایک امام کے پیچھے نماز ادا کرنے کو ترس رہے ہیں، اور اسلامی آئین کو بھی۔

سوال: ۵:۔۔۔ قرآن پاک سے ثابت ہے کہ مؤمن کے پاس کفر بالکل نہیں ہوتا، اس کے باوجود مسلمانوں یعنی خدا اور رسول کے حامیوں نے ایک دوسرے کلمہ گو کو پکا کافر قرار دے رکھا ہے، جبکہ مؤمن کے پاس کفر نہیں ہوتا، تو ان علمائے دین نے کفر کے فتوے لگا کر باہم کفر کیوں تقسیم کیا اور وہ کفر کہاں سے حاصل کیا ہے؟ اسلام اور کفر تو متضاد ہیں، اور کل فرقے برخلاف تعلیم عالمگیر کتاب اپنی اپنی جگہ ڈٹے ہوئے ہیں، یہ کفر کہاں سے درآمد کیا گیا ہے؟ اور کیوں کیا گیا ہے؟ اس کا لائسنس کس فرقے کے پاس ہے؟ قرآن پاک سے نشاندہی کریں، نہایت مہربانی ہوگی، اس گنہگار کے کل پانچ سوال ہیں، ازراہ شفقت صدقہ رحمت للعالمین کا صرف قرآن پاک سے حوالہ و دلیل دے کر جواب سے مستفیض فرمائیں، کیونکہ خدا کا کلام خطا سے پاک ہے، کسی بڑے سے بڑے عالم کا کلام خطا سے کبھی بھی پاک قرار نہیں دیا جاسکتا، والسلام۔ رانا عبدالستار، لاہور۔“

الجواب

حامداً ومصلیاً!

جناب سائل نے اپنے تمہیدی خط میں لکھا ہے کہ قبل ازیں پینتیس حضرات سے رجوع کر چکے ہیں، مگر تسلی بخش جواب نہیں ملا، سوالوں کے جواب سے پہلے اس ضمن میں ان کی خدمت میں دو گزارشیں کرنا چاہتا ہوں:

۱:۔۔۔ ایک یہ کہ سوالات و شبہات کا صحیح و معقول جواب دینا تو علمائے امت کی ذمہ داری ہے، لیکن کسی کے دل میں بات ڈال دینا اور اسے اطمینان و تسلی دلانا ان کی

قدرت سے خارج ہے اور وہ اس کے مکلف بھی نہیں، کسی کے دل کو پلٹ دینا صرف اللہ تعالیٰ کے قبضہ قدرت میں ہے، اس ناکارہ نے اپنی بساط کے مطابق خلوص و ہمدردی سے جناب سائل کے شبہات اور غلط فہمیوں کو دور کرنے کی کوشش کی ہے، ان کا کوئی شبہ حل نہ ہوا ہو تو دوبارہ رجوع فرما سکتے ہیں، لیکن اس کے باوجود خدا نخواستہ اطمینان و تسلی نہ ہو تو معذوری ہے۔

۲۔۔۔ دوسری گزارش یہ ہے کہ کسی جواب سے تسلی نہ ہونا اس کی دو وجہیں ہو سکتی ہیں، ایک یہ کہ جواب میں کوئی ایسا نقص ہو کہ وہ موجب اطمینان و تسلی نہ ہو، دوم یہ کہ جواب تو تسلی بخش تھا، مگر سائل کا مقصد تسلی حاصل کرنا نہیں تھا، شرح اس کی یہ ہے کہ کبھی تو سوالات و شبہات اس لئے پیش کئے جاتے ہیں کہ سائل ان شبہات کی وجہ سے بے چین ہو اور وہ خلوص دل سے چاہتا ہے کہ اس کے شبہات دور ہو جائیں تاکہ اسے اطمینان و تسلی کی کیفیت نصیب ہو جائے، مگر وہ خود اتنا علم نہیں رکھتا کہ ان شبہات کے حل کرنے پر قادر ہو، اس لئے وہ کسی ایسے شخص سے رجوع کرتا ہے جو اس کے خیال میں ان شبہات کے دور کرنے میں اس کی مدد کر سکتا ہے، ایسے شخص کا سوال چونکہ احتیاج و خلوص پر مبنی ہوتا ہے اور وہ دل و جان سے اس کا خواہشمند ہوتا ہے کہ اس کے شبہات دور ہو جائیں، اس لئے صحیح جواب ملنے پر اس کی غلط فہمی دور ہو جاتی ہے، اور اسے ایسی تسلی ہو جاتی ہے گویا کسی نے زخم پر مرہم رکھ دیا۔ اس کے برعکس معاملہ یہ ہوتا ہے کہ سائل اپنے سوال میں جن شبہات کو پیش کرتا ہے وہ ان سے مضطرب اور بے چین نہیں ہوتا، بلکہ وہ ان شبہات کو قطعی و یقینی سمجھ کر ان پر دل و جان سے راضی ہوتا ہے، ایسا شخص سوال کی شکل میں جب اپنے شبہات کسی کے سامنے پیش کرتا ہے تو اس کا مقصد ان شبہات کو دور کرنا نہیں ہوتا، اور نہ وہ اس کی ضرورت سمجھتا ہے، اسے اپنے شبہات سے پریشانی یا قلق و اضطراب نہیں ہوتا، بلکہ وہ اپنے سوالات کو لایخل اور حرف آخر سمجھتے ہوئے پیش کرتا ہے، جس سے مقصد اس امر کا اظہار ہوتا ہے کہ اس کے سوالات ایسے مضبوط ہیں کہ اہل علم میں سے کوئی اس کا جواب نہیں دے سکتا، بلکہ تمام

علمائے اُمت اس کے جواب سے عاجز و قاصر ہیں، گویا وہ رفع شبہات کے لئے سوال نہیں کرتا، بلکہ علمائے اُمت کو چیلنج دینے کے لئے کرتا ہے، ایسے شخص کے سوالوں کا خواہ کیسا ہی معقول اور صحیح جواب دے دیا جائے، مگر اس کو کبھی تسلی نہیں ہوتی، یہ حالت بہت ہی خطرناک ہے، اللہ تعالیٰ ہر مسلمان کو اس سے محفوظ رکھیں۔

بہر حال اگر جناب سائل کا مقصد واقعی اپنے شبہات کو دور کرنا ہے تو مجھے توقع ہے کہ ان شاء اللہ العزیز ان کو ان جوابات سے شفا ہو جائے گی، اور آئندہ انہیں کسی اور کو زحمت دینے کی ضرورت نہیں رہے گی، اور اگر ان کا یہ مقصد ہی نہیں تو یہ توقع رکھنا بھی بے کار ہے، بہر حال اپنا فرض ادا کرنے کی غرض سے ان کے پانچ سوالوں کا جواب بالترتیب پیش خدمت ہے۔

جواب: ۱: ... آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے خاتم النبیین ہونے کے معنی یہ ہیں کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم آخری نبی ہیں، آپ کے بعد کوئی نبی نہیں ہوگا، اور کسی کو نبوت نہیں دی جائے گی، چنانچہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کا ارشاد ہے:

”كانت بنو إسرائيل تسوسهم الأنبياء كلما

هلك نبي خلفه نبي وإنه لا نبي بعدى.“

(صحیح بخاری و مسلم کتاب الامارۃ ج: ۲ ص: ۱۲۶)

ترجمہ: ... ”بنو اسرائیل کی سیاست انبیائے کرام علیہم

السلام فرماتے تھے، جب ایک نبی کا انتقال ہو جاتا تو دوسرا نبی اس کی

جگہ لیتا، اور میرے بعد کوئی نبی نہیں۔“

اس مضمون کی دوسو سے زائد متواتر احادیث موجود ہیں، اور یہ اسلام کا قطعی عقیدہ

ہے، چنانچہ مرزا غلام احمد قادیانی ازالہ اوہام (خورد ص: ۵۷) میں لکھتے ہیں:

”ہر ایک دانا سمجھ سکتا ہے کہ اگر خدائے تعالیٰ صادق الوعد

ہے اور جو آیت خاتم النبیین میں وعدہ دیا گیا ہے اور جو حدیثوں میں



بتصریح بیان کیا گیا ہے کہ اب جبرائیل کو بعد وفات رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم ہمیشہ کے لئے وحی نبوت لانے سے منع کیا گیا ہے، یہ تمام باتیں صحیح اور سچ ہیں تو پھر کوئی شخص بحیثیت رسالت ہمارے نبی صلی اللہ علیہ وسلم کے بعد ہرگز نہیں آ سکتا۔“

(ازالہ اوہام ص: ۵۷۷، روحانی خزائن ج: ۳ ص: ۴۱۲)

الغرض آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کا خاتم النبیین ہونا اسلام کا ایسا قطعی و یقینی عقیدہ ہے جو قرآن کریم، احادیث متواترہ اور اجماع اُمت سے ثابت ہے، اور جو شخص اس کے خلاف عقیدہ رکھے کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے بعد بھی کسی کو نبوت مل سکتی ہے، ایسا شخص باجماع اُمت کافر اور دائرۃ اسلام سے خارج ہے، چنانچہ ملا علی قاریؒ (م ۱۰۱۴ھ) شرح فقہ اکبر میں لکھتے ہیں:

”التحدی فرع دعوی النبوة ودعوی النبوة

بعد نبینا صلی اللہ علیہ وسلم کفر بالاجماع۔“

(شرح فقہ اکبر ص: ۲۰۲)

ترجمہ: ”...معجزہ دکھانے کا دعویٰ، دعویٰ نبوت کی فرع

ہے، اور ہمارے نبی صلی اللہ علیہ وسلم کے بعد نبوت کا دعویٰ کرنا

بالاجماع کفر ہے۔“

رہا یہ کہ آیت خاتم النبیین کی روشنی میں آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کو کس وقت سے خاتم النبیین تسلیم کیا جاوے، اس کا جواب یہ ہے کہ علم الہی میں تو ازل سے مقدر تھا کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم تمام انبیائے کرام علیہم السلام کے بعد تشریف لائیں گے، اور یہ کہ آپؐ کی ذات گرامی پر انبیاء علیہم السلام کی فہرست مکمل ہو جائے گی، آپ کے بعد کسی شخص کو نبوت نہیں دی جائے گی، چنانچہ ایک حدیث میں ہے:

”انی عند اللہ مکتوب خاتم النبیین وان ادم

لمنجدل فی طینۃ۔“ (مشکوٰۃ ص: ۵۱۳)

ترجمہ: ”بے شک میں اللہ کے نزدیک خاتم النبیین لکھا

ہوا تھا، جبکہ آدم علیہ السلام ہنوز آب و گل میں تھے۔“

اس حدیث سے معلوم ہوا کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کا خاتم النبیین کی حیثیت سے مبعوث ہونا اس وقت تجویز کیا جا چکا تھا جبکہ ابھی آدم علیہ السلام کی تخلیق نہیں ہوئی تھی، پھر جب تمام انبیائے کرام علیہم السلام اپنی اپنی باری پر تشریف لائے اور انبیائے کرام علیہم السلام کی فہرست میں صرف ایک آپ صلی اللہ علیہ وسلم کا نام باقی رہ گیا تھا، تب اللہ تعالیٰ نے آپ کو خاتم النبیین کی حیثیت سے دنیا میں مبعوث فرمایا، چنانچہ صحیحین کی روایت میں ہے کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا:

”مثلی ومثل الأنبياء من قبلی کمثل رجل بنی

بنیاناً فاحسنه واجمله الا موضع لبنة من زاوية من زواياه

فجعل الناس يطوفون به ويعجبون له ويقولون هلا

وضعت هذه اللبنة۔ قال: فانا اللبنة وانا خاتم النبیین۔

وفی رواية: فکنت انا سدود موضع اللبنة، ختم بی

البنیان وختم بی الرسل۔ وفی رواية: فانا موضع اللبنة،

جئت فختمت الانبياء علیهم السلام۔“ (صحیح بخاری ج: ۱)

ص: ۵۰۱، صحیح مسلم ج: ۲ ص: ۲۳۸، مشکوٰۃ ص: ۵۱۱)

ترجمہ: ”میری اور مجھ سے پہلے انبیائے کرام کی مثال

ایسی ہے کہ ایک شخص نے بہت ہی حسین و جمیل محل تیار کیا، مگر اس کے

کونے میں ایک اینٹ کی جگہ چھوڑ دی، پس لوگ اس محل کے گرد

گھومنے لگے اور اس کی خوبصورتی پر عیش عیش کرنے لگے، اور کہنے

لگے کہ یہ ایک اینٹ بھی کیوں نہ لگا دی گئی، فرمایا: پس میں وہ آخری

اینٹ ہوں اور میں خاتم النبیین ہوں۔ ایک روایت میں ہے کہ پس میں نے اس ایک اینٹ کی جگہ پر کردی، مجھ پر عمارت مکمل ہوگئی اور مجھ پر رسولوں کا سلسلہ ختم کر دیا گیا۔ ایک اور روایت میں ہے کہ پس اس اینٹ کی جگہ میں ہوں، میں نے آ کر انبیائے کرام علیہم السلام کے سلسلہ کو ختم کر دیا۔“

اور اُمت کو آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے خاتم النبیین ہونے کا علم اس وقت ہوا جب کہ قرآن کریم اور احادیث نبویہ میں یہ اعلان فرمایا گیا کہ آپ خاتم النبیین ہیں۔ اس تفصیل سے واضح ہوا کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے خاتم النبیین کی حیثیت سے دنیا میں تشریف لانے کا فیصلہ تو حضرت آدم علیہ السلام کی تخلیق سے قبل تسلیم کیا جائے گا، کیونکہ یہ فیصلہ ازل ہی سے ہو چکا تھا کہ آپ کا اسم گرامی انبیائے کرام علیہم السلام کی فہرست میں سب سے آخر میں ہے، اور آپ کی بعثت سب سے آخر میں ہوگی، اور اس دنیا میں آپ کا خاتم النبیین ہونا آپ کی بعثت سے تسلیم کیا جائے گا، اور اُمت کو آپ کے خاتم النبیین اور آخری نبی ہونے کا علم اس وقت ہوا جب قرآن کریم میں اور احادیث نبویہ میں اس کا اعلان و اظہار فرمایا گیا۔

۲: سوال نمبر ۲ میں وحی شیطانی سے متعلق جن آیات کا حوالہ دیا گیا ہے، ان میں ”وحی“ سے مراد وہ شیطانی شبہات و وساوس ہیں جو دین حق سے برگشتہ کرنے کے لئے شیطان اپنے دوستوں کے دلوں میں القا کرتا ہے، گویا شیطانی القا کو ”یوحون“ سے تعبیر کیا گیا ہے، اور القائے شیطانی کے مقابلہ میں القائے رحمانی ہے، جس کی کئی شکلیں ہیں، مثلاً الہام، کشف، تحدیث اور وحی نبوت۔ وحی نبوت کے علاوہ الہام و کشف وغیرہ حضرات اولیاء اللہ کو بھی ہوتے ہیں اور ان کا سلسلہ قیامت تک جاری ہے، لیکن ”وحی نبوت“ چونکہ حضرات انبیائے کرام علیہم السلام کے ساتھ مخصوص ہے اور نبوت کا سلسلہ حضور پر ختم ہو چکا ہے، اس لئے وحی نبوت کا دروازہ حضرت خاتم النبیین صلی اللہ علیہ وسلم کے بعد بند ہو چکا

ہے، چنانچہ حدیث میں ہے:

”ان الرسالة والنبوة قد انقطعت فلا رسول

بعدي ولا نبي۔“ (الجامع الصغير ج: ۱ ص: ۸۰)

ترجمہ: ”رسالت و نبوت بند ہو چکی پس نہ کوئی رسول

ہوگا میرے بعد اور نہ نبی۔“

مرزا غلام احمد قادیانی ازالہ اوہام خورد (ص: ۷۶۱) میں لکھتے ہیں:

”رسول کو علم دین بتوسط جبرائیل ملتا ہے اور باب نزول

جبرائیل بہ پیرایہ وحی رسالت مسدود ہے اور یہ بات خود ممتنع ہے کہ

رسول تو آوے مگر سلسلہ وحی رسالت نہ ہو۔“

(ازالہ اوہام ص: ۷۶۱، روحانی خزائن ج: ۳ ص: ۵۱۱)

ایک اور جگہ لکھتے ہیں:

”رسول کی حقیقت اور ماہیت میں یہ امر داخل ہے کہ دینی

علوم کو بذریعہ جبرائیل حاصل کرے اور ابھی ثابت ہو چکا ہے کہ اب

وحی رسالت تا بقیامت منقطع ہے۔“

(ازالہ اوہام ص: ۶۱۳، روحانی خزائن ج: ۳ ص: ۴۳۲)

ایک اور جگہ لکھتے ہیں:

”حسب تصریح قرآن کریم، رسول اسی کو کہتے ہیں جس

نے احکام و عقائد دین، جبرائیل کے ذریعہ سے حاصل کئے ہوں،

لیکن وحی نبوت پر تو تیرہ سو برس سے مہر لگ گئی ہے۔“

(ازالہ اوہام ص: ۵۳۴، روحانی خزائن ج: ۳ ص: ۳۸۷)

چونکہ وحی نبوت صرف انبیائے کرام علیہم السلام کو ہو سکتی ہے اور حضرت خاتم

النبین صلی اللہ علیہ وسلم کے بعد نبوت کا دروازہ بند ہو چکا ہے، اس لئے ملت اسلامیہ کا اس

پر اتفاق اور اجماع ہے کہ جو شخص آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے بعد وحی کا دعویٰ کرے وہ مرتد اور خارج از اسلام ہے، چنانچہ قاضی عیاض القرطبی المالکی (م ۵۴۴ھ) اپنی مشہور کتاب ”الشفایہ تعریف حقوق المصطفیٰ صلی اللہ علیہ وسلم“ میں لکھتے ہیں:

”و کذا لک من ادعی نبوة احد مع نبینا صلی اللہ علیہ وسلم او بعده ..... او من ادعی النبوة لنفسه او جوز اکتسابها والبلوغ بصفاء القلب الی مرتبتها ..... و کذا لک من ادعی منهم انه یوحی الیه وان لم یدع النبوة ..... فهو لاء کلهم کفار مکذبون للنبی صلی اللہ علیہ وسلم لأنه اخبر صلی اللہ علیہ وسلم انه خاتم النبیین لا نبی بعده، واخبر عن اللہ تعالیٰ انه خاتم النبیین وانه ارسل الی كافة للناس۔ واجمعت الأمة علی حمل هذا الکلام علی ظاهره وان مفهومه المراد به دون تاویل ولا تخصیص فلا شک فی کفر هؤلاء الطوائف کلها قطعاً اجماعاً وسمعاً۔“ (ج: ۲ ص: ۲۴۶)

ترجمہ: ”اسی طرح وہ شخص بھی کافر ہے جو ہمارے نبی صلی اللہ علیہ وسلم کے ساتھ یا آپ کے بعد کسی کی نبوت کا قائل ہو ..... یا خود اپنے حق میں نبوت کا دعویٰ کرے، یا اس کا قائل ہو کہ نبوت کا حاصل کرنا اور صفائے قلب کے ذریعہ نبوت کے مرتبہ تک پہنچنا ممکن ہے ..... اور اسی طرح جو شخص یہ دعویٰ کرے کہ اسے وحی ہوتی ہے اگرچہ نبوت کا دعویٰ نہ کرے ..... پس یہ سب لوگ کافر ہیں اور آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی تکذیب کرتے ہیں کیونکہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے خبر دی ہے کہ آپ خاتم النبیین ہیں،



آپ کے بعد کوئی نبی نہیں ہوگا اور آپ نے اللہ تعالیٰ کی طرف سے خبر دی ہے کہ آپ خاتم النبیین ہیں اور یہ کہ آپ تمام انسانوں کی طرف مبعوث کئے گئے ہیں اور پوری اُمت کا اس پر اجماع ہے کہ یہ کلام اپنے ظاہر پر محمول ہے اور یہ کہ اس کا ظاہری مفہوم ہی مراد ہے، پس اس بات میں کوئی شک نہیں کہ قرآن و سنت اور اجماع اُمت کی رو سے مذکورہ بالا گروہ قطعاً کافر اور مرتد ہیں۔“

الغرض نصوص قطعیہ کی بنا پر ”وحی نبوت“ کا دروازہ تو بند ہے اور اس کا مدعی کافر اور زندیق ہے، البتہ کشف والہام اور مبشرات کا دروازہ کھلا ہے، پس سائل کا یہ کہنا کہ: ”جب شیطانی وحی جاری ہے تو ضروری ہے کہ رحمانی وحی بھی جاری ہو۔“ اگر رحمانی وحی سے اس کی مراد کشف والہام اور مبشرات ہیں تو اہل اسلام اس کے قائل ہیں کہ ان کا دروازہ قیامت تک کھلا ہے، لہذا اس کو بند کہنا ہی غلط ہے، البتہ ان چیزوں کو ”وحی“ کے لفظ سے تعبیر کرنا درست نہیں، کیونکہ وحی کا لفظ جب مطلق بولا جائے تو اس سے وحی نبوت مراد ہو سکتی ہے، اور اگر مندرجہ بالا فقرے سے سائل کا مدعا یہ ہے کہ ”وحی نبوت“ جاری ہے تو اس کا یہ قیاس چند وجوہ سے باطل ہے۔

اول: اس لئے کہ اسلامی عقائد کا ثبوت نصوص قطعیہ سے ہوا کرتا ہے، قیاس آرائی سے اسلامی عقائد ثابت نہیں ہوا کرتے، اور سائل محض اپنے قیاس سے ”وحی نبوت“ کے جاری ہونے کا عقیدہ ثابت کرنا چاہتا ہے۔

دوم: یہ کہ اس کا یہ قیاس کتاب و سنت کے نصوص قطعیہ اور اجماع اُمت کے خلاف ہے اور قیاس بمقابلہ نص کے باطل ہے، محض اپنے قیاس کے ذریعہ نصوص قطعیہ کو توڑنا کسی مدعی اسلام کا کام نہیں ہو سکتا۔

شفائے قاضی عیاض میں ہے:

”و کذا لک وقع الإجماع علی تکفیر کل من

دافع نص الكتاب او خص حديثاً مجمعاً على نقله  
مقطوعاً به، مجمعاً على حملہ علی ظاہرہ۔“

(ج: ۲ ص: ۲۴۷)

ترجمہ: ”... اور اسی طرح ہر اس شخص کے کافر ہونے پر بھی  
اجماع ہے جو کتاب اللہ کی کسی نص کو توڑے یا ایسی حدیث میں  
تخصیص کرے جو قطعی اجماع کے ذریعہ منقول ہو، اور اس کے ظاہر  
مفہوم کے مراد ہونے پر اجماع ہو۔“

حکم خداوندی کے مقابلہ میں قیاس سب سے پہلے ابلیس نے کیا تھا، جب حق  
تعالیٰ شانہ نے اس کو حکم دیا کہ وہ آدم کو سجدہ کرے، تو اس نے یہ کہہ کر اس حکم کو رد کر دیا کہ میں  
اس سے بہتر ہوں اور افضل کا مفضل کے آگے جھکنا خلاف حکمت ہے، محض شبہات و  
وساوس اور بر خود غلط قیاس کے ذریعہ کتاب و سنت کے نصوص کو رد کرنا ابلیس لعین کا کام ہے،  
اور یہی خیالات و وساوس وہ شیطانی وحی ہے جس کا حوالہ سوال میں دیا گیا ہے۔

ایک مؤمن کی شان یہ ہے کہ جب اس کے سامنے خدا اور رسول کا کوئی حکم آئے  
تو فوراً گردن اس کے آگے جھک جائے اور وہ عقل و قیاس کی ساری منطق بھول جائے،  
پس جب خدا و رسول اعلان فرماتے ہیں کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم خاتم النبیین ہیں، آپ  
کے بعد نبوت و رسالت اور وحی نبوت کا دروازہ بند ہے اور اس عقیدے پر پوری امت کا  
اجماع ہے تو اس کے مقابلہ میں کوئی قیاس اور منطق قابل قبول نہیں۔

سوم: ... اس سے بھی قطع نظر کیجئے تو یہ قیاس بذات خود بھی غلط ہے کہ ”جب  
شیطانی وحی جاری ہے تو رحمانی وحی بھی جاری ہونی چاہئے۔“ کیونکہ یہ بات تو قریباً ہر شخص  
جانتا ہے کہ شیطانی وحی ہر وقت جاری رہتی ہے، اور کوئی لمحہ ایسا نہیں گزرتا کہ شیطان لوگوں کو  
غلط شبہات و وساوس نہ ڈالتا ہو۔ پس اگر شیطانی وحی کے جاری ہونے سے وحی نبوت کا  
جاری رہنا بھی لازم آتا ہے تو ضروری ہے کہ جس طرح شیطانی وحی تسلسل کے ساتھ جاری

ہے، اسی طرح وحی نبوت بھی ہر لمحہ جاری رہا کرے، اور ایک لمحہ بھی ایسا نہ گزرے جس میں وحی نبوت کا انقطاع ہو گیا ہو، اور چونکہ وحی نبوت صرف انبیائے کرام علیہما السلام کو ہوتی ہے تو وحی نبوت کے بلا انقطاع جاری رہنے کے لئے یہ بھی لازم ہوگا کہ ہر وقت کوئی نہ کوئی نبی دنیا میں موجود رہا کرے، گویا حضرت آدم علیہ السلام سے لے کر حضرت محمد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم تک اور آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم سے لے کر اب تک جتنا زمانہ گزرا ہے اس کے ایک ایک لمحہ میں کسی نبی کا وجود تسلیم کرنا ہوگا، میرا خیال ہے کہ دنیا کا کوئی عاقل بھی اس کا قائل نہیں ہوگا اور خود جناب سائل بھی اس کو تسلیم نہیں کریں گے، پس جب خود سائل بھی اپنے قیاس کے نتائج کو تسلیم کرنے کے لئے تیار نہیں تو اس سے واضح ہو جاتا ہے کہ ان کا یہ قیاس قطعاً غلط ہے۔

چہارم:.... یہ قیاس ایک اور اعتبار سے بھی باطل ہے کیونکہ سائل نے یہ فرض کر لیا ہے کہ وحی شیطانی کا توڑ کرنے کے لئے وحی نبوت کا جاری ہونا ضروری ہے، اور ظاہر ہے کہ شیطان کے وساوس ہر فرد بشر کو آتے ہیں، پس لازم ہوگا کہ ان کا توڑ کرنے کے لئے ہر فرد بشر کو وحی نبوت ہوا کرے، خصوصاً کفار اور مشرکین اور فساق و فجار جن کے بارے میں قرآن کریم نے فرمایا ہے کہ شیطان ان کو وحی کرتا ہے، ان پر تو وحی نبوت ضرور نازل ہونی چاہئے تاکہ وہ وحی شیطانی کا مقابلہ کر سکیں، پس سائل کے قیاس سے لازم آئے گا کہ ہر فرد بشر نبی ہوا کرے اور ہر شخص پر وحی نبوت نازل ہوا کرے، خصوصاً کفار و فجار پر تو ضرور نازل ہوا کرے اور اگر یہ کہا جائے کہ شیطانی وحی کے توڑ کے لئے ہر شخص پر وحی نبوت کا نازل ہونا ضروری نہیں کیونکہ تمام افراد انسانی، شیطانی وساوس کا توڑ کرنے کے لئے نبی کی وحی کی طرف رجوع کر سکتے ہیں تو ہم کہیں گے کہ وحی نبوت کا جاری ہونا بھی ضروری نہیں، بلکہ تمام انسانیت، محمد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی وحی کی طرف رجوع کر کے شیطانی وحی کا توڑ کر سکتی ہے، اور شیطانی وساوس سے شفا یاب ہو سکتی ہے، اور جب محمد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم پر نازل شدہ وحی من و عن تر و تازہ موجود ہے، اس میں نہ کوئی تغیر آیا ہے اور نہ اس میں

کوئی کہنگی پیدا ہوئی ہے، تو شیطانی وحی کے مقابلہ میں ”وحی محمدی“ کیوں کافی نہیں؟ اور کسی نئی وحی کی کیا ضرورت رہ جاتی ہے؟

اسی تقریر سے سائل کا یہ شبہ بھی غلط ثابت ہوتا ہے کہ ”وحی رحمانی تو رحمت ہے وہ کیوں بند ہوگئی؟“ کیونکہ جب ”وحی محمدی“ کی شکل میں اس اُمت کو ایک کامل و مکمل رحمت، اللہ تعالیٰ نے مرحمت فرمادی ہے اور یہ کامل و مکمل رحمت اُمت کے پاس موجود ہے اور قیامت تک قائم و دائم رہے گی، یہ رحمت اُمت سے نہ کبھی منقطع ہوئی، نہ آئندہ منقطع ہوگی، تو سائل کو مزید کون سی رحمت درکار ہے جس کے بند ہونے کو وہ انقطاع رحمت سے تعبیر کرتا ہے، یہ کس قدر کفرانِ نعمت ہے کہ ”وحی محمدی“ کو رحمت نہ سمجھا جائے، یا اس کامل و مکمل رحمت پر قناعت نہ کی جائے، اور اس کو کافی نہ سمجھا جائے، بلکہ ہر کس و ناکس اس کی ہوس کرے کہ ”وحی نبوت“ کی نعمت براہِ راست اس کو ملنی چاہئے، اگر خدا نخواستہ ”وحی محمدی“ دنیا سے ناپید ہوگئی ہوتی، یا اس میں کوئی رد و بدل ہو گیا ہوتا کہ وہ لائقِ استفادہ نہ رہتی، تب تو یہ کہنا صحیح ہوتا کہ اس اُمت کو ”نئی وحی“ کی ضرورت ہے، یا یہ کہ یہ اُمت ”وحی نبوت“ کی رحمت سے محروم ہے، لیکن اب جبکہ اللہ تعالیٰ نے اکمالِ دین اور اتمامِ نعمت کا اعلان فرمادیا ہے اور قیامت کے لئے وحی محمدی کی حفاظت کا ذمہ خود لے لیا، اس اُمت کو ”وحی نبوت“ سے محروم کہنا صریح بے انصافی نہیں تو اور کیا ہے؟ میں جناب سائل کی توجہ اس نکتہ کی طرف مبذول کرانا چاہتا ہوں کہ ”وحی محمدی“ کے بعد ”وحی نبوت“ کا جاری رہنا عقلاً محال ہے اس لئے کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے بعد اگر ”وحی نبوت“ کو جاری فرض کیا جائے تو سوال ہوگا کہ یہ بعد کی وحی، وحی محمدی سے اکمل ہوگی یا اس کے مقابلہ میں ناقص ہوگی؟ پہلی صورت میں ”وحی محمدی“ کا ناقص ہونا لازم آتا ہے اور یہ اعلانِ خدائے بزرگ و برتر ”الیوم اکملت لکم دینکم و اتممت علیکم نعمتی“ کے خلاف ہے۔

اور اگر بعد کی وحی، وحی محمدی کے مقابلہ میں ناقص ہو تو کامل کے ہوتے ہوئے ناقص کی کیا ضرورت رہ جاتی ہے؟ کامل کی موجودگی میں ناقص کو بھیجنا خلافِ حکمت اور



کا رعبث ہے جو حق تعالیٰ شانہ کے حق میں عقلاً محال ہے، اس لئے یہ ممکن ہی نہیں کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے بعد کسی کو منصب نبوت عطا کیا جائے اور اس پر وحی نبوت نازل کی جائے، الغرض امت محمدیہ (علیٰ صاحبہا الف الف تحیۃ و سلام) کے پاس ”وحی محمدی“ کی شکل میں کامل اور مکمل اور کافی و شافی رحمت موجود ہے، جو اس امت کے ساتھ اب تک قائم و دائم ہے، جو شخص اس رحمت کو کافی نہیں سمجھتا بلکہ کسی اور ”وحی“ کی تلاش میں سرگرداں ہے اس کا منشا اس کے سوا کچھ نہیں کہ دین اسلام کے کامل و مکمل اور ”وحی محمدی“ کے کافی و شافی ہونے پر ایمان نہیں رکھتا، انصاف کیا جائے کہ کیا ایسے شخص کے لئے امت محمدیہ کی صفوں میں کوئی جگہ ہو سکتی ہے؟ اور کیا وہ: ”رضیت باللہ رباً و بالاسلام دیناً و بمحمد صلی اللہ علیہ وسلم رسولاً و نبیاً“ کا قائل ہے؟

۳: ... جناب سائل نے ہندوؤں، عیسائیوں، یہودیوں اور مسلمانوں کو ایک ہی صف میں کھرا کر کے یہ تاثر دینے کی کوشش کی ہے کہ جس طرح دیگر مذاہب باطلہ کی طرف سے انقطاع وحی کا دعویٰ غلط ہے، اسی طرح مسلمانوں کا یہ دعویٰ بھی غلط ہے کہ محمد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم خاتم النبیین ہیں، آپ کے بعد نبوت اور وحی نبوت کا دروازہ بند کر دیا گیا ہے، گویا سائل کی نظر میں اسلامی عقیدہ بھی اسی طرح باطل ہے جس طرح ہنود و یہود اور نصاریٰ کا عقیدہ باطل ہے، نعوذ باللہ!

اوپر سوال نمبر دو کے جواب میں جو کچھ لکھا گیا ہے جو شخص اس پر غور کرے گا، بشرطیکہ حق تعالیٰ نے اسے فہم و بصیرت کا کچھ بھی حصہ عطا فرمایا ہو، اسے صاف نظر آئے گا کہ اسلام کا یہ دعویٰ کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے بعد ”وحی نبوت“ کا دروازہ بند ہے، بالکل صحیح اور بجا ہے، لیکن دیگر مذاہب ایسا دعویٰ کرنے کے مجاز نہیں اور اس کی متعدد وجوہ ہیں:

ایک: ... یہ کہ گزشتہ انبیائے کرام علیہم السلام میں سے کسی نے یہ دعویٰ نہیں کیا کہ وہ ”آخری نبی“ ہیں، اور یہ کہ ان کے بعد نبوت اور وحی نبوت کا سلسلہ بند کر دیا گیا ہے، بلکہ انبیائے گزشتہ میں سے ہر نبی اپنے بعد آنے والے نبی کی خوشخبری دیتا رہا ہے، چنانچہ



انبیائے بنی اسرائیل کے سلسلہ کے آخری نبی حضرت عیسیٰ علیہ السلام بھی اپنے بعد ایک عظیم الشان رسول کے مبعوث ہونے کی خوشخبری سنارہے ہیں:

”وَإِذْ قَالَ عِيسَىٰ بْنُ مَرْيَمَ يَا بَنِي إِسْرَآئِيلَ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرَةِ وَمُبَشِّرًا بِرَسُولٍ يَأْتِيهِ مِنْ بَعْدِي اسْمُهُ أَحْمَدُ۔“ (الصف: ۶)

ترجمہ:...” اور جب عیسیٰ بن مریم نے کہا اے بنی اسرائیل! میں تمہاری طرف اللہ کا رسول ہوں، تصدیق کرتا ہوں جو میرے سامنے تورات ہے اور خوشخبری دیتا ہوں ایک رسول کی جو میرے بعد آئے گا اس کا نام احمد ہے۔“

یہ تو قرآن کریم کا صادق و مصدوق بیان ہے، جبکہ موجودہ بائبل میں بھی اس کے محرف و مبدل ہونے کے باوجود اس بشارت کی تصدیق موجود ہے، ملاحظہ فرمائیے:

الف:...” اور میں باپ سے درخواست کروں گا تو وہ تمہیں دوسرا مددگار بخشے گا جو اب تک تمہارے ساتھ رہے گا۔“

(یوحنا: ۱۴، ۱۶)

ب:...” میں تم سے سچ کہتا ہوں کہ میرا جانا تمہارے لئے فائدہ مند ہے، کیونکہ اگر میں نہ جاؤں تو وہ مددگار تمہارے پاس نہ آئے گا، لیکن اگر جاؤں گا تو اسے تمہارے پاس بھیج دوں گا، اور وہ آکر دنیا کو گناہ اور راستبازی اور عدالت کے بارے میں قصور وار ٹھہرائے گا۔“

(یوحنا: ۱۶، ۸)

ج:...” مجھے تم سے اور بھی بہت سی باتیں کہنا ہے، مگر اب تم ان کی برداشت نہیں کر سکتے، لیکن جب وہ یعنی سچائی کا روح آئے گا تو تم کو تمام سچائی کی راہ دکھائے گا، اس لئے کہ وہ اپنی طرف سے

نہ کہے گا لیکن جو کچھ سنے گا وہی کہے گا اور تمہیں آئندہ کی خبریں دے گا، وہ میرا جلال ظاہر کرے گا۔“ (یوحنا: ۱۶، ۱۲، ۱۴)

د:۔۔۔ ”میں نے یہ باتیں تمہارے ساتھ رہ کر تم سے کہیں، لیکن مددگار یعنی روح القدس جسے باپ میرے نام سے بھیجے گا، وہی تمہیں سب باتیں سکھائے گا اور جو کچھ میں نے تم سے کہا ہے وہ سب تمہیں یاد دلانے گا۔“ (یوحنا: ۱۴، ۲۵، ۲۶)

ہ:۔۔۔ ”لیکن جب وہ مددگار آئے گا جس کو میں تمہارے پاس باپ کی طرف سے بھیجوں گا، یعنی سچائی کا روح جو باپ سے صادر ہوتا ہے، تو وہ میری گواہی دے گا۔“ (یوحنا: ۱۵، ۲۶)

بائبل کے ان فقرات میں جس ”مددگار“ اور ”سچائی کی روح“ کے آنے کی خوشخبری دی گئی ہے اس سے آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی ذات گرامی مراد ہے، گویا عیسیٰ علیہ السلام اپنے بعد ایک عظیم الشان رسول کے مبعوث کئے جانے کا اعلان کر رہے ہیں جو خاتم النبیین ہوگا، اور ”ابد تک تمہارے ساتھ رہے گا۔“

لیکن حضرت خاتم النبیین صلی اللہ علیہ وسلم تشریف لائے تو آپ نے گزشتہ انبیاء کی طرح اپنے بعد کسی نبی کے آنے کی خوشخبری نہیں دی، بلکہ صاف صاف اعلان فرمایا کہ آپ آخری نبی ہیں، آپ کے بعد کوئی نبی نہیں ہوگا:

”انا آخر الانبیاء وانتم آخر الامم۔“

(ابن ماجہ ص: ۲۹۷)

ترجمہ:۔۔۔ ”اور میں آخری نبی ہوں اور تم آخری امت ہو۔“

اور خطبہ حجۃ الوداع کے عظیم الشان مجمع میں اعلان فرمایا:

”ایہا الناس انه لا نبی بعدی ولا امة بعدکم۔“

(مجمع الزوائد ج: ۸ ص: ۲۶۳ مطبع دارالکتاب بیروت)

ترجمہ: "...اے لوگو! بے شک میرے بعد کوئی نبی نہیں

اور تمہارے بعد کوئی اُمت نہیں۔"

نیز آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے اُمت کو اس سے بھی آگاہ فرمایا کہ آپ کے بعد جو شخص نبوت کا دعویٰ کرے وہ جھوٹا ہے:

"وانہ سیکون فی امتی کذابون ثلاثون کلہم

یزعم انہ نبی اللہ، وانا خاتم النبیین لا نبی بعدی۔"

(رواہ ابوداؤد و الترمذی مشکوٰۃ ص: ۴۶۵)

ترجمہ: "...میری اُمت میں تیس جھوٹے ہوں گے ان

میں سے ہر ایک دعویٰ کرے گا کہ وہ اللہ کا نبی ہے، حالانکہ میں آخری

نبی ہوں، میرے بعد کوئی نبی نہیں۔"

پس دیگر مذاہب اگر انقطاع وحی کا دعویٰ کرتے ہیں تو ان کا دعویٰ اپنے پیشواؤں

کی تعلیم کے خلاف ہے، اور اہل اسلام اگر یہ عقیدہ رکھتے ہیں کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم خاتم النبیین ہیں، آپ کے بعد نبوت اور وحی نبوت کا دروازہ بند ہے تو ان کا دعویٰ قرآن اور ارشادات نبویہ کی روشنی میں بالکل صحیح اور بجا ہے۔

دوم: ... یہ کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم سے قبل جس قدر انبیائے کرام علیہم السلام

مبعوث ہوئے ان میں سے کسی نبی کی اصل کتاب اور ان کی صحیح تعلیم دنیا میں موجود نہیں رہی، بلکہ دستبرد زمانہ کی نذر ہو گئی۔

لیکن حضرت محمد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم پر نازل شدہ کتاب کا ایک ایک شوشہ

اور آپ کی تعلیمات کا ایک ایک حرف محفوظ ہے، اس کتاب اور اس تعلیم پر ایک لمحہ بھی ایسا نہیں گزرا کہ وہ دنیا سے مفقود ہو گئی ہو، قرآن کریم میں ارشاد ہے:

"إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحَافِظُونَ۔" (الحجر: ۹)

ترجمہ: "...بے شک ہم نے ہی اس نصیحت نامے کو نازل

کیا اور ہم خود ہی اس کی حفاظت کریں گے۔“

اور زمانہ قرآن کریم کے اس اعلان کی صداقت پر گواہ ہے کہ آج تک قرآن کریم ہر تغیر سے پاک ہے اور اسلام کے کٹر سے کٹر دشمن بھی اس حقیقت کا اعتراف کرنے پر مجبور ہیں اور ان شاء اللہ رہتی دنیا تک اس کی تعلیم دائم و قائم رہے گی۔

پس جب آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے علاوہ کسی نبی کی اصل آسمانی تعلیم باقی نہیں رہی تو ان مذاہب کے پرستاروں کا انقطاع وحی کا دعویٰ بھی حرف غلط ٹھہرتا ہے، اور جب آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی کتاب اور آپ کی تعلیمات جوں کی توں محفوظ ہیں تو اہل اسلام کا یہ دعویٰ بالکل بجا اور درست ہے کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے بعد انسانیت کسی نئی نبوت اور وحی نبوت کی محتاج نہیں۔

سوم: ... یہ کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم سے پہلے انبیائے کرام علیہم السلام مخصوص قوم و خاص وقت اور خاص علاقے اور خطے کے لئے مبعوث کئے جاتے تھے، لیکن اللہ تعالیٰ نے آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کو خاتم النبیین کی حیثیت سے مبعوث فرمایا تو قیامت تک ساری دنیا آپ کے زیر نگیں آگئی، زمان و مکان کی وسعتیں مٹ گئیں، عرب و عجم اور اسود و احمر کی تفریق مٹ گئی اور آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کا دامن رحمت تمام ملکوں، تمام خطوں اور تمام قوموں اور تمام زمانوں پر قیامت تک کے لئے محیط ہو گیا، پس آپ کی بغثت عامہ کے بعد کسی علاقے اور کسی زمانے کے لئے نبی اور نئی ”وحی نبوت“ کی ضرورت ہی باقی نہیں رہ گئی، اور یہ آپ کا ایسا خصوصی شرف و امتیاز ہے جو آپ کے سوا کسی کو نصیب نہیں ہوا، چنانچہ صحیح مسلم میں حضرت ابو ہریرہؓ سے روایت ہے کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے ارشاد فرمایا:

”فضلت علی الأنبياء بست، اعطيت جوامع

الكلم، ونصرت بالرعب، واحلت لي الغنائم، وجعلت

لي الأرض مسجدا و طهورا، وارسلت الى الخلق كافة،

(مشکوٰۃ ص: ۵۱۲)

و ختم بي النبون۔“

ترجمہ: "...مجھے چھ باتوں میں دیگر انبیائے کرام علیہم السلام پر فضیلت دی گئی ہے، مجھے جامع کلمات عطا کئے گئے، رعب کے ساتھ میری مدد کی گئی ہے، میرے لئے مال غنیمت حلال کر دیا گیا، روئے زمین کو میرے لئے مسجد اور پاک کرنے والی بنا دیا گیا، مجھے ساری مخلوق کی طرف مبعوث کیا گیا اور میرے ذریعہ نبیوں کو ختم کر دیا گیا۔"

اور صحیحین میں حضرت جابرؓ سے روایت ہے کہ آپؐ نے فرمایا:

"وكان النبي يبعث الى قومه خاصة وبعث الى الناس عامة۔"

(مشکوٰۃ ص: ۵۱۲)

ترجمہ: "...مجھ سے پہلے ہر نبی صرف اپنی قوم کی طرف مبعوث کیا جاتا تھا، اور مجھے تمام انسانوں کی طرف مبعوث کیا گیا۔"

اور مسند احمد میں حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہ کی روایت سے آپؐ کا ارشاد نقل کیا ہے:

"اعطيت خمسا لم يعطهن احد قبلي، ولا ا قوله فخرا، بعث الى كل احمر واسود..... الخ۔"

(مسند احمد ج: ۱ ص: ۲۵۰)

ترجمہ: "...مجھے پانچ چیزیں ایسی عطا کی گئی ہیں جو مجھ سے پہلے کسی نبی کو عطا نہیں کی گئیں، اور میں یہ بات بطور فخر کے نہیں کہتا، مجھے تمام انسانوں کی طرف مبعوث کیا گیا ہے خواہ گورے ہوں یا کالے..... الخ۔"

الغرض آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کا ساری انسانیت کی طرف مبعوث ہونا اس حکمت کی بنا پر تھا کہ ساری دنیا آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے دامن رحمت کے نیچے



آجائے، اور آپؐ کے بعد کسی دوسری نبوت اور وحی نبوت کی احتیاج باقی نہ رہے گی، قرآن کریم میں آپؐ کی زبان وحی ترجمان سے اعلان کرایا گیا ہے:

”قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ

(الاعراف: ۱۵۸)

جَمِيعًا۔“

ترجمہ:...” آپؐ کہہ دیجئے میں تم سب کی طرف اللہ تعالیٰ

کا رسول ہوں۔“

اس کی تفسیر میں حافظ ابن کثیرؒ لکھتے ہیں:

”يقول الله تعالى لنبيه ورسوله محمد صلى الله

عليه وسلم (قل) يا محمد (يا ايها الناس) وهذا خطاب

للأحمر والأسود والعربي والعجمي (اني رسول الله

اليكم جميعا) اي جميعكم وهذا من شرفه وعظمته

صلى الله عليه وسلم انه خاتم النبيين وانه مبعوث الى

(ج: ۲ ص: ۲۷۳ طبع قاہرہ)

الناس كافة۔“

ترجمہ:...” اللہ تعالیٰ اپنے نبی و رسول حضرت محمد صلی اللہ

علیہ وسلم سے فرماتے ہیں کہ اے محمدؐ! آپؐ کہہ دیجئے کہ اے لوگو! یہ

خطاب گورے، کالے اور عربی و عجمی سب کو ہے، میں تم سب کی

طرف اللہ تعالیٰ کا رسول ہوں اور یہ بات آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم

کے شرف و عظمت میں سے ہے کہ آپؐ خاتم النبیین ہیں اور آپؐ کو

تمام انسانوں کی طرف مبعوث کیا گیا ہے۔“

پس جب آپؐ سے قبل کسی نبی کی بعثت عام نہیں ہوئی تو کوئی قوم اس دعویٰ کی

مجاز نہیں کہ ان کے نبی کے بعد وحی کا دروازہ بند ہو چکا ہے اور آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم

کی نبوت اور رسالت چونکہ زمان و مکان کی تمام وسعتوں پر محیط ہے اس لئے اہل اسلام

کا یہ عقیدہ قطعاً برحق ہے کہ آپؐ خاتم النبیین ہیں اور یہ کہ آپؐ کے بعد نبوت و وحی کا دروازہ بند ہے۔

چہارم:۔۔۔ یہ کہ ہر نبی کی وحی اور اس کی شریعت بلاشبہ اس کی قوم کی ضروریات کو مکمل کرتی تھی، مگر دین کی تکمیل کا اعلان کسی نبی کے زمانے میں نہیں کیا گیا، لیکن جب نبی آخری الزماں حضرت محمد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم خاتم النبیین کی حیثیت سے تمام انسانوں کی طرف مبعوث ہوئے اور آپؐ کی وحی و شریعت سے قیامت تک انسانیت کی کامل و مکمل رہنمائی اور رشد و ہدایت کا سامان کر دیا گیا تو حجۃ الوداع کے موقع پر دین کی تکمیل کا اعلان کر دیا گیا، چنانچہ قرآن مجید میں ارشاد خداوندی ہے:

”الْيَوْمَ اكْمَلْتُ لَكُمْ دِينَكُمْ وَاتَّمَمْتُ عَلَيْكُمْ

نِعْمَتِي وَرَضِيتُ لَكُمُ الْإِسْلَامَ دِينًا۔“ (المائدہ: ۳)

ترجمہ:۔۔۔ ”آج میں نے تمہارے لئے دین کامل کر دیا اور تم پر اپنی نعمت پوری کر دی اور تمہارے لئے دین اسلام کو (ہمیشہ کے لئے) پسند کر لیا۔“

حافظ ابن کثیرؒ اس آیت کے ذیل میں لکھتے ہیں:

”هذه اكبر نعم الله تعالى على هذه الأمة حيث

اكمل تعالى لهم دينهم فلا يحتاجون الى دين غيره ولا

الى نبي غير نبيهم صلوات الله وسلامه عليه، ولهذا

جعل الله تعالى خاتم الانبياء وبعثه الى الانس والجن۔“

(تفسیر ابن کثیر ج: ۲ ص: ۱۲)

ترجمہ:۔۔۔ ”یہ اس اُمت پر اللہ تعالیٰ کا سب سے بڑا انعام

ہے کہ اللہ تعالیٰ نے ان کے لئے ان کا دین کامل کر دیا، پس وہ اس

دین کے سوا کسی اور دین کے اور اپنے نبی صلی اللہ علیہ وسلم کے سوا کسی

اور نبی کے محتاج نہیں، اس بنا پر اللہ تعالیٰ نے آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کو خاتم النبیین بنایا، اور آپؐ کو جن دافس کی طرف مبعوث فرمایا۔“

پس جب پہلے کسی نبی کے زمانے میں تکمیل دین کا اعلان نہیں ہوا تو دیگر مذاہب کے پیرو کیسے کہہ سکتے ہیں کہ ان کے نبی کے بعد نبوت کا دروازہ بند ہے اور جب آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے ذریعہ دین کی تکمیل ہو چکی اور حق تعالیٰ شانہ کی نعمت اس اُمت پر تمام ہو چکی تو اہل اسلام آپؐ کے بعد کسی نئی نبوت اور وحی نبوت کے دست نگر کیوں ہوں۔

اس آیت کریمہ سے یہ بھی معلوم ہوا کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کا خاتم النبیین ہونا اور آپؐ کے بعد وحی نبوت کا دروازہ بند ہو جانا اس اُمت کے حق میں کمال نعمت ہے جس کو حق تعالیٰ شانہ بطور امتنان کے ذکر فرما رہے ہیں، جو لوگ اس کو انقطاع رحمت سے تعبیر کرتے ہیں یہ ان کی ناحق شناسی ہے، اس نعمت کا ایک پہلو یہ بھی ہے کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے بعد کوئی نبی مبعوث کیا جاتا تو اس پر ایمان نہ لانے والے لوگ کافر ٹھہرتے، اور اس میں آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی تنقیص ہوتی کہ ایک شخص آپؐ پر ایمان لاتا ہے اور آپؐ کے لائے ہوئے دین کی ایک ایک بات کو مانتا ہے، اس کے باوجود کافر قرار پاتا ہے، گویا آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کو ماننا بھی کفر سے بچانے کے لئے کافی نہیں ہوا، پس جب آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی نبوت قیامت تک کے لئے ہے اور ساری انسانیت کی راہنمائی اور رشد و ہدایت کی تنہا کفیل ہے تو لازم تھا کہ آپؐ کے بعد کوئی نبی مبعوث نہ کیا جائے تاکہ اس کے انکار سے امتیان محمدؐ کافر نہ ٹھہریں، اس لئے واضح ہو جاتا ہے کہ اس اُمت کے حق میں نبوت کا جاری ہونا رحمت نہیں، بلکہ نبوت کا بند ہونا رحمت ہے، کیونکہ آپؐ کے بعد نبوت کا جاری ہونا آپؐ کی تنقیص اور اُمت کی تکفیر کو مستلزم ہے، مرزا غلام احمد قادیانی لکھتے ہیں:

”خدائے تعالیٰ ایسی ذلت اور رسوائی اس اُمت کے لئے

اور ایسی ہتک اور کسر شان اپنے نبی مقبول خاتم الانبیاء کے لئے ہرگز

روا نہیں رکھے گا کہ ایک رسول کو بھیج کر جس کے آنے کے ساتھ  
جبرائیل کا آنا ضروری امر ہے، اسلام کا تختہ ہی الٹ دیوے، حالانکہ  
وہ وعدہ کر چکا ہے کہ بعد آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے کوئی رسول  
نہیں بھیجا جائے گا۔“

(ازالہ اوہام ص: ۵۸۶، روحانی خزائن ج: ۳ ص: ۴۱۶)

مذکورہ بالا چار وجوہ سے واضح ہوا ہوگا کہ سائل کا مسلمانوں کے عقیدہ ختم نبوت  
اور انقطاع وحی کو ہندوؤں، یہودیوں اور عیسائیوں کے غلط دعوؤں کی صف میں شمار کرنا ایک  
ایسا ظلم ہے جس کی توقع کسی صاحب بصیرت عاقل و منصف سے نہیں کی جانی چاہئے۔  
رہا جناب سائل کا یہ کہنا کہ جب مسلمانوں کے علاوہ باقی قومیں بھی انقطاع وحی کا  
دعویٰ کرتی ہیں تو ”سچے دین کی شناخت کیسے ہوگی؟“ یہ سوال درحقیقت اس دعوے پر مبنی  
ہے کہ سچے اور جھوٹے مذہب کی شناخت کا بس ایک ہی معیار ہے اور وہ یہ کہ جو مذہب ”وحی  
نبوت“ کے جاری ہونے کا دعویٰ کرے وہ سچا ہے، اور جو اس کا انکار کرے وہ جھوٹا ہے، کیا  
میں جناب سائل سے بادب دریافت کر سکتا ہوں کہ ان کا یہ خود تراشیدہ معیار قرآن کریم کی  
کس آیت میں، یا آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے کس ارشاد میں ذکر کیا گیا ہے کہ جو مذہب  
”وحی نبوت“ کے جاری ہونے کا قائل ہو وہ سچا ہے اور جو قائل نہ ہو وہ جھوٹا ہے؟ کیا مذہب  
کی حقانیت خود تراشیدہ اور من گھڑت معیاروں سے جانچی جاسکتی ہے؟

اب اگر اس معیار کو ایک لمحہ کے لئے صحیح فرض کر لیا جائے تو اس کی رو سے بانی،  
بہائی اور دیگر جھوٹے مدعیان نبوت کا مذہب سچا قرار پاتا ہے، کیونکہ یہ سب لوگ آنحضرت  
صلی اللہ علیہ وسلم کے بعد ”وحی نبوت“ کے جاری ہونے کے قائل تھے، کیا جناب سائل اپنے  
مقرر کردہ معیار کی رو سے مسلمانوں کو کذاب سے لے کر بہاء اللہ ایرانی تک کے تمام مذاہب کو سچا  
تسلیم کرنے کے لئے تیار ہوں گے؟ مجھے توقع ہے کہ جناب سائل خود بھی اس بوجھ کے  
اٹھانے پر آمادہ نہیں ہوں گے، اس سے واضح ہو جاتا ہے کہ ان کا پیش کردہ معیار خود ان کی



نظر میں بھی غلط ہے کہ جو مذہب وحی نبوت کے جاری ہونے کا قائل ہو وہ سچا ہے اور جو قائل نہ ہو وہ جھوٹا ہے۔ کسی مذہب کی حقانیت کا معیار اس کی پیش کردہ تعلیمات ہیں اور یہ بات میں اوپر عرض کر چکا ہوں کہ اسلام کے سوا کوئی مذہب ایسا نہیں جو اپنے بانی مذہب کی صحیح تعلیم پیش کرنے کی جرأت کر سکے، کوئی مذہب ایسا نہیں جو اپنی مذہبی تعلیمات کو مخصوص قوم اور مخصوص خطہ کے دائرے سے نکال کر انسانیت کی عالمگیر برادری کی ہر شعبہ زندگی میں رہنمائی کے فرائض انجام دے سکے، کوئی مذہب ایسا نہیں جس کے اصول و فروع عقل سلیم کے ترازو پر پورے اترتے ہوں، اور کوئی مذہب ایسا نہیں جس نے خارجی پیوند کاری کے بغیر انسانی مشکلات کا حل پیش کیا ہو، اسلام اپنے امتیازی اوصاف و خصائص کی بنا پر فطری دین ہے، جیسا کہ ارشاد الہی ہے: ”فِطْرَةَ اللَّهِ الَّتِي فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا“ کیا یہ کھلے حقائق بھی جناب سائل کو سچے مذہب کی شناخت کے لئے کارآمد نہیں ہو سکتے؟

۴:۔۔۔ جناب سائل مسلمانوں کی فرقہ بندی سے پریشان ہیں، لیکن انہوں نے یہ نہیں بتایا کہ وہ اس سے کیا نتیجہ اخذ کرنا چاہتے ہیں؟ اور ہم سے کیا دریافت کرنا چاہتے ہیں؟ ”اختلاف اُمت“ کی بقدر ضرورت بحث میں اپنی کتاب ”اختلاف اُمت اور صراطِ مستقیم“ میں عرض کر چکا ہوں، خلاصہ یہ کہ اختلاف کی دو قسمیں ہیں، ایک فروعی مسائل میں اختلاف، یہ ایک ناگزیر فطری امر ہے اور اس کو کوئی معیوب قرار نہیں دے سکتا۔ دوسری قسم نظریاتی اختلاف کی ہے، یہ بلاشبہ مذموم ہے لیکن اس کی ذمہ داری اسلام پر یا اہل حق پر عائد نہیں ہوتی بلکہ وہی لوگ مورد الزام ہیں جو نئے نظریات تراش کر اُمت میں افتراق و انتشار پیدا کرنا چاہتے ہیں، مثلاً اُمت میں مرزا غلام احمد قادیانی اور ان کے پیرو کھڑے ہوئے اور اُمت کو افتراق و انتشار کی بھٹی میں جھونک کر چلتے بنے، منکرین حدیث کھڑے ہوئے اور ایک نئے فتنے کا دروازہ کھول کر اُمت میں تفرقہ پیدا کر گئے، اہل بدعت کھڑے ہوئے اور انہوں نے طرح طرح کی بدعات پھیلا کر فرقہ بندی کو ہوا دی۔

ظاہر ہے کہ اس طرح جس قدر فرقہ بندیاں وجود میں آئیں، ان کے لئے نہ



اسلام مورد الزام ہے اور نہ وہ حضرات جو سلف صالحین، صحابہ و تابعین کے نقش قدم پر گامزن ہیں۔ فرقہ بندیوں کا اہل حق کو الزام دینا عقل و دانش کے خلاف بدترین ظلم ہے اور اس کی مثال ایسی ہوگی کہ کسی شریف کے گھر چور نقب زنی کرے، مقدمہ عدالت میں جائے، تو جج صاحب بجائے چور کو ملزم ٹھہرانے کے، دونوں فریقوں کو ”مجرم“ ٹھہرا کر جیل بھیج دے، ظاہر ہے کہ اس کو انصاف نہیں کہا جائے گا، ٹھیک اسی طرح جب مختلف قسم کے نقب زنوں نے اسلامی نظریات میں نقب لگا کر فرقہ بندیوں کو جنم دیا، تو عقل و انصاف کا تقاضا یہ ہے کہ ان چوروں کی نشاندہی کی جائے اور ان کی خیانتوں کی نشاندہی کی جائے، یہ نہیں کہ ان کی چوری و سینہ زوری کا الزام الٹا اہل حق کو بھی دیا جائے۔ اور اگر سائل کا خیال یہ ہے کہ امت کے ان فرقوں میں سے کوئی فرقہ بھی حق پر قائم نہیں، تو یہ خیال غلط اور نصوص شرعیہ کے خلاف ہے، آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کا ارشاد گرامی ہے:

”لَا يَزَالُ مِنْ أُمَّتِي أُمَّةٌ قَائِمَةٌ بِأَمْرِ اللَّهِ لَا يَضُرُّهُمْ  
مَنْ خَذَلَهُمْ وَلَا مَنْ خَالَفَهُمْ حَتَّى يَأْتِيَ أَمْرُ اللَّهِ وَهُمْ عَلَى  
ذَلِكَ.“ (صحیح بخاری و مسلم، مشکوٰۃ ص: ۵۸۳)

ترجمہ: ”میری امت میں ایک جماعت اللہ تعالیٰ کے  
حکم پر ہمیشہ قائم رہے گی، ان کو نقصان نہیں دے گا وہ شخص جو ان کی  
مدد چھوڑ دے اور نہ وہ جو ان کی مخالفت کرے، یہاں تک کہ اللہ تعالیٰ  
کا حکم آ جائے گا درنحالیکہ وہ اسی پر ہوں گے۔“

ایک اور حدیث میں ہے:

”لَا تَزَالُ طَائِفَةٌ مِنْ أُمَّتِي يُقَاتِلُونَ عَلَى الْحَقِّ  
ظَاهِرِينَ إِلَى يَوْمِ الْقِيَامَةِ، قَالَ: فَيَنْزِلُ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ  
عَلَيْهِ السَّلَامُ، فَيَقُولُ أَمِيرُهُمْ: تَعَالِ صَلِّ لَنَا، فَيَقُولُ: لَا!  
إِنْ بَعْضُكُمْ عَلَى بَعْضٍ كَرَمَةٌ مِنَ اللَّهِ هَذِهِ الْأُمَّةُ.“

(صحیح مسلم ج: ۱ ص: ۸۷، مسند احمد ج: ۳ ص: ۳۱۵)

ترجمہ: ”میری امت کا ایک گروہ حق پر لڑتا رہے گا اور وہ غالب رہیں گے قیامت تک، پس عیسیٰ علیہ السلام نازل ہوں گے اور ان کا امیر آپ سے کہے گا کہ: آئیے نماز پڑھائیے، وہ فرمائیں گے: نہیں! بلکہ تمہی پڑھاؤ، بے شک تم میں سے بعض، بعض پر امیر ہیں، یہ اللہ تعالیٰ کی طرف سے اس امت کا اعزاز ہے۔“

(ہفت روزہ ختم نبوت کراچی ج: ۱ ش: ۲۰)

# قادیانی دہشت گرد

---

## ربوہ سے تل ابیب تک (حصہ اول)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ وَحْدَهُ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی مَنْ لَا نَبِیَّ بَعْدَهُ!

صیہونیت اور قادیانیت عالم اسلام کے لئے سب سے بڑا چیلنج ہیں، مشرق وسطیٰ میں ”اسرائیل“ کی ستم رانیوں سے جبین تاریخ، عرق آلود ہے۔ ادھر پاکستان میں قادیانی خلافت کے پایہ تخت ”ربوہ“ کی لہر ترائیاں عالم اسلام کا مذاق اڑا رہی ہیں۔ یہ دونوں سفید سامراج کی پیداوار اور اس کے آلہ کار ہیں، دونوں کے درمیان اتحاد و تعاون اور یک جہتی و ہم آہنگی پائی جاتی ہے، لیکن ہمارے ارباب اقتدار نے ابھی تک سنجیدگی سے اس سنگین مسئلہ کا نوٹس ہی نہیں لیا۔

ناچیز مؤلف کو یہ خوش فہمی نہیں کہ وہ ان سطور کے ذریعہ آپ کی معلومات میں اضافہ کرنا چاہتا ہے، خواہش بس یہ ہے کہ کسی بندہ خدا کے دل میں احساس کی چنگاری روشن ہو جائے اور وہ عالم اسلام کو ان خطرات سے بچانے کے لئے کمر ہمت باندھ لے تو یہ صرف مؤلف کی نہیں بلکہ تمام مسلمانوں کی سعادت ہوگی:

گوئے توفیق و سعادت درمیاں افکنده اند

کس بہ میداں در نمی آید سواراں راچہ شد

صیہونیت اور قادیانیت وجوہ مماثلت:

شاعر مشرق علامہ محمد اقبال مرحوم نے قادیانیت پر تبصرہ کرتے ہوئے لکھا تھا:

” (قادیانیت) اسلام کی روح اور مقاصد کے لئے مہلک ہے۔ (۱) اس کا حاسد خدا کا تصور کہ جس کے پاس دشمنوں کے لئے لاتعداد زلزلے اور بیماریاں ہوں... (۲) اس کا نبی کے متعلق نجومی تخیل... (۳) اور اس کا روح مسیح کے تسلسل کا عقیدہ وغیرہ، یہ تمام چیزیں اپنے اندر یہودیت کے اتنے عناصر رکھتی ہیں گویا یہ تحریک ہی یہودیت کی طرف رجوع ہے۔“

(حرف اقبال ص: ۱۲۳)

اقبال مرحوم نے قادیانیت اور یہودیت کے تین بنیادی وجوہ مماثلت کی طرف اشارہ کیا ہے، ان پر اگر مزید غور کیا جائے تو قادیانی تحریک اور صیہونی تحریک کے درمیان یک رنگی کا میدان خاصا وسیع نظر آتا ہے، مثلاً:

۱: ... قادیانی تحریک کے بانی (مرزا غلام احمد قادیانی) کا یہ دعویٰ کہ وہ نسا اسرائیلی ہے، (ایک غلطی کا ازالہ) درحقیقت اس امر کا برملا اظہار ہے کہ قادیانیت، صیہونیت ہی کی ایک ذیلی شاخ ہے۔

۲: ... یہودیت کی بنیاد انکار عیسیٰ (علیہ السلام) پر قائم کی گئی ہے، اور قادیانیت بھی اس مسئلہ میں اس سے پیچھے نہیں رہنا چاہتی، اہل نظر واقف ہیں کہ قادیانی تحریک کے بانی کا دعویٰ ہی انکار عیسیٰ علیہ السلام پر مبنی ہے۔

۳: ... یہودیت بڑی بلند آہنگی سے دعویٰ کرتی ہے کہ ”اس نے مسیح بن مریم رسول اللہ کو قتل کر دیا۔“ اور قادیانی تحریک کے بانی کو بھی اس دعویٰ کا فخر حاصل ہے کہ: ”میرا وجود ایک نبی (یعنی عیسیٰ علیہ السلام) کو مارنے

کے لئے ہے۔“ (ملفوظات ج: ۱۰ ص: ۶۰)

۴: ... یہودیت، حضرت عیسیٰ علیہ السلام روح اللہ کو صحیح النسب نہیں سمجھتی، اسی نوعیت کے خیالات کا اظہار قادیانیت کے بانی نے بھی کیا ہے۔ (انجام آتھم وغیرہ)

۵: ... یہودی عقیدہ کے مطابق حضرت مسیح صلیب پر مرے تھے، قادیانیت قصہ



صلیب کشی کو من وعن تسلیم کرتے ہوئے صرف اتنی ترمیم کرتی ہے کہ وہ مرے نہیں تھے، البتہ ”مردہ کی طرح“ ہو گئے تھے۔

۶:۔۔۔ یہودیت، حضرت عیسیٰ علیہ السلام کے معجزات کو لہو و لعب یا مسمریزم قرار دیتی ہے، ٹھیک وہی موقف قادیانیت بھی پیش کرتی ہے۔

۷:۔۔۔ یہودی تحریک اسلام اور اسلامی اداروں کی بدترین دشمن ہے۔ اور ملت اسلامیہ کی عداوت میں قادیانیت اس سے بھی چار قدم آگے ہے، اس کا سرکاری آرگن روزنامہ ”الفضل“ پوری ملت اسلامیہ کو چیلنج کرتا ہے:

”ہم فتیاب ہوں گے، ضرور تم مجرموں کی طرح ہمارے سامنے پیش ہو گے، اس وقت تمہارا حشر بھی وہی ہوگا جو فتح مکہ کے دن ابو جہل اور اس کی پارٹی کا ہوا۔“ (الفضل ۳ جنوری ۱۹۵۲ء، ملخص)

جس گروہ کے نزدیک تمام عالم اسلام ”ابو جہل اور اس کی پارٹی“ کی حیثیت رکھتا ہو، اور وہ اپنے آپ کو ”محمد رسول اللہ کا بروز“ قرار دیتا ہو اس کی عداوت مسلمانوں کے ایک ایک فرد سے کس قدر ہو سکتی ہے؟ اس کو سمجھنے کے لئے غیر معمولی فہم و ذکاوت کی ضرورت نہیں۔

۸:۔۔۔ صیہونی تحریک دنیا میں... اور بالخصوص اسلام کے مقامات مقدسہ میں ”اسرائیل کی حکومت“ قائم کرنے کی خواہشمند ہے، عین قلب اسلام میں اس کی جارحیت، اس کے خطرناک ارادوں کی غماز ہے، اور مسلمانوں کے قبلہ اول پر ان کا تسلط عالم اسلام کی غیرت کے لئے کھلا چیلنج ہے، اور وہ کسی صلاح الدین کے لئے چشم براہ ہے، اور قادیانیت بھی انگریز اور یہود کے زیر سایہ پوری دنیا کو کھا جانے کا عزم رکھتی ہے، قادیان کا خلیفہ کھل کر اعلان کرتا ہے کہ:

”اس وقت ایک ہی جماعت ایسی ہے جو کمزوری کے لحاظ سے دنیا میں سب سے گری ہوئی ہے، مگر ارادہ کے لحاظ سے سب سے بڑھی ہوئی ہے، پھر وہ منہ سے دعویٰ ہی نہیں کرتی، اس کی بنیاد

ہی اس پر ہے کہ دنیا کو کھا جانا ہے۔“

(الفضل ۱۷ اپریل ۱۹۲۸ء بحوالہ قادیانی مذہب فصل: ۱۶ نمبر: ۶۰)

”۱۹۵۲ء کو گزرنے نہ دیجئے جب تک کہ احمدیت کا

رعب، دشمن اس رنگ میں محسوس نہ کرے کہ اب احمدیت مٹائی نہیں جاسکتی، اور وہ مجبور ہو کر احمدیت کی آغوش میں آگرے۔“

(الفضل ۱۶ جنوری ۱۹۵۲ء)

”اس وقت تک کہ تمہاری بادشاہت قائم نہ ہو جائے،

تمہارے راستے میں یہ کانٹے ہرگز دور نہیں ہو سکتے۔“

(الفضل ۸ جولائی ۱۹۳۵ء بحوالہ قادیانی مذہب فصل: ۱۶ نمبر: ۵۵)

۹:.... یہودی، امریکہ و برطانیہ کی سازش سے ”اسرائیل اسٹیٹ“ قائم کرنے میں

کامیاب ہوئے، اسی طرح قادیانیوں کے لئے انگریز گورنر کی سازش سے پاکستان میں ربوہ اسٹیٹ قائم کی گئی، جس کے تمام ممالک سے روابط ہیں۔

۱۰:.... یہودی اسٹیٹ عالم اسلام کے عین قلب میں امریکی امداد کے سہارے

زندہ ہے، اور اگر اس کا یہ سہارا ختم ہو جائے تو وہ ایک دن بھی باقی نہیں رہ سکتی، اسی طرح ”قادیانی اسٹیٹ“ بھی اپنے مغربی آقاؤں کے بل بوتے پر عالم اسلام کے مایہ ناز ملک پاکستان کے عین قلب میں باقی ہے، اگر اس کا یہ سہارا ختم ہو جائے تو وہ ایک دن بھی باقی نہیں رہ سکتی۔

فلسطین پر قادیانیت اور صیہونیت دونوں کا دعویٰ:

صیہونیت، اسلام کے مقامات مقدسہ خصوصاً بیت المقدس کو اپنی آبائی میراث

سمجھتی ہے، اور وہ وہاں مسلمانوں کے وجود کو برداشت نہیں کرتی، ٹھیک یہی دعویٰ قادیانیت کا ہے، وہ بھی مسلمانوں کو فلسطین اور بیت المقدس کی تولیت کا مستحق نہیں سمجھتی، کیونکہ وہ قادیانی نبوت کے منکر اور کافر ہیں، قادیانیت کا آرگن ”الفضل“ لکھتا ہے:

”اگر یہودی اس لئے بیت المقدس کی تولیت کے مستحق نہیں کہ وہ جناب مسیح اور حضرت نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم کی رسالت و نبوت کے منکر ہیں، اور عیسائی اس لئے غیر مستحق ہیں کہ انہوں نے خاتم النبیین کی رسالت و نبوت کا انکار کر دیا تو یقیناً غیر احمدی (یعنی مسلمان) بھی مستحق تولیت بیت المقدس نہیں۔“

(جلد: ۹ نمبر: ۳۶ ص: ۴، ۷ نومبر ۱۹۲۱ء)

”الفضل“ کی اس منطق کا حاصل یہ ہے کہ بیت المقدس کی سر زمین کے مستحق یا تو قادیانی ہیں، ورنہ یہودی۔ گویا قادیانی نبوت، صیہونیت کے لئے نئی الہامی سند مہیا کرتی ہے۔

ربوہ اور تل ابیب:

برطانیہ کے وزیر خارجہ مسٹر بالفور کے اعلان ۱۹۱۷ء کے نتیجہ میں ۱۹۴۸ء میں فلسطین میں ”اسرائیل اسٹیٹ“ وجود میں آئی۔ جیسا کہ آپ سن چکے ہیں یہودیت اور قادیانیت دونوں کا دعویٰ تھا کہ مسلمان بیت المقدس اور فلسطین کے مستحق نہیں، یہ سوال کہ ”اسرائیل اسٹیٹ“ کے قیام میں قادیانی گروہ کا کتنا حصہ ہے؟ بڑی اہمیت رکھتا ہے، ۱۹۱۷ء سے قیام اسرائیل تک فلسطین پر قادیانی ”تبلیغ“ کی یورش رہی اور قادیانیوں کے ممتاز افراد ”سفید سامراج“ کے گماشتوں کی حیثیت سے فلسطین میں کام کرتے رہے، اور سب سے بڑھ کر یہ کہ خود خلیفہ قادیان نے دورہ لندن سے واپسی پر قادیانی سازش کی نگرانی کے لئے بیت المقدس کا دورہ ضروری سمجھا۔

۱۹۳۴ء میں خلیفہ قادیان نے دنیا میں تبلیغ کا جال پھیلانے کے لئے جو درحقیقت انگریز کے محکمہ جاسوسی کی ذیلی شاخ تھی۔ ”تحریک جدید“ کا اعلان کیا، اور اس کے لئے مالیات کا مطالبہ کیا، تو سب سے زیادہ رقم فلسطین کی قادیانی جماعت نے مہیا کی۔ یہاں اہم ترین سوال یہ ہے کہ خطیر رقم جو فلسطین سے خلیفہ قادیان کو وصول ہوئی،

کہاں سے آئی؟ اور کس نے مہیا کی؟ کیا یہ رقم ان معدودے چند افراد نے مہیا کر دی تھی جو اسلام سے مرتد ہو کر قادیانی اُمت میں شامل ہو گئے تھے؟ کیا ان کی مالی حیثیت اس قدر مستحکم تھی کہ وہ اپنے علاقے میں وسیع اخراجات برداشت کرنے کے بعد ایک بہت بڑی رقم خلیفہ قادیان کی خدمت میں نذر کر دیتے؟ جو شخص واقعات کو عقل و فہم کی میزان میں تولنے کی صلاحیت رکھتا ہے وہ اس کا جواب نفی میں دے گا، میں یہاں مشرق وسطیٰ کے ایک وسیع النظر مصنف محمد محمود الصواف کا حوالہ دوں گا، وہ اپنی وقیع کتاب ”المخططات الاستعمارية لمكافحة الاسلام“ میں قادیانیت پر تبصرہ کرتے ہوئے لکھتے ہیں:

”قادیانی سب سے اکفر اور خسیس تر جماعت ہے، جسے ستم پیشہ انگریز نے ہندوستان پر اپنے تسلط کے دوران پروان چڑھایا۔ یہ کافر لولہ ہمیشہ زمین میں فساد برپا کرتا رہا ہے، اور ہر میدان میں اسلام کی عداوت و مخالفت اس کا شعار رہا۔ خصوصاً افریقہ میں ان کی سرگرمیاں بڑی تیزی سے بڑھ رہی ہیں۔ مجھے افریقہ کے ملک ”یوگنڈا“ سے خط ملا ہے جس کے ساتھ مرزا غلام احمد کذاب قادیان کی کتاب ”حملة البشرى“ بھی تھی، جو وہاں بڑی تعداد میں تقسیم کی گئی، اور جو کفر و ضلال سے بھری پڑی ہے۔

یہ خط مجھے مسلمانوں کے ایک بہت بڑے داعی اور راہنما نے وہاں سے لکھا تھا، جس میں انہوں نے تحریر کیا تھا کہ:

یہاں قادیانیوں کی سرگرمیاں ہمارے لئے اور اسلام کے لئے سخت تشویش کا باعث ہیں، ان کا معاملہ یہاں نہایت سنگین صورت اختیار کر گیا ہے، اور ان کی تبلیغی سرگرمیاں نہایت شدت اختیار کر گئی ہیں، یہ لوگ یہاں اتنی دولت خرچ کر رہے ہیں جس کا حساب نہیں، اور اس امر میں ذرا بھی شبہ نہیں کہ یہ مال و دولت ہمارا ج اور اس کے مشنری اداروں کا ہے، اور مجھے باوثوق ذریعہ

سے یہ اطلاع ملی ہے کہ وہاں حبشہ کے ”عدیس بابا“ میں ان کا ایک مضبوط مشن کام کر رہا ہے، جس کا سالانہ میزانیہ ۳۵ ملین ڈالر ہے، اور یہ مشن وہاں اسلام کا مقابلہ کرنے کے لئے قائم کیا گیا ہے۔“

(المخططات الاستعمارية لمكافحة الاسلام ص: ۳۴۴ طبع اول)

۳۵ کروڑ ڈالر سالانہ تو صرف حبشہ کے مسلمانوں کی تباہی و بربادی کے لئے صرف کئے گئے، اب غور کیا جاسکتا ہے، فلسطین کی تباہی و بربادی کے لئے قادیانیت کا تیس سالہ بجٹ کتنا ہوگا؟ اور یہ ساری رقم کہاں سے آئی؟

دوسرا اہم ترین سوال یہ ہے کہ ان تیس سالوں میں (۱۹۱۷ء سے ۱۹۴۸ء تک) قادیانیت کا تبلیغی زور اس خطہ پر کیوں مرکوز رہا؟ اور قادیانی سرگرمیوں کا یہی سب سے بڑا اڈہ کیوں بنا رہا؟ جس کے نتیجہ میں فلسطینیوں کی خانہ ویرانی اور ”اسرائیل اسٹیٹ“ کا قیام عمل میں آیا؟ اور پھر جن جن کروہاں قادیان کے سازشی دماغوں کو کیوں جمع کیا جاتا رہا؟ یہ سوالات تاریخ کا ایک معمہ اور ”قادیانی، یہودی سازش“ کا قفل ابجد ہیں، جن کو ان دونوں تحریکوں کے دوستانہ روابط کی کلید سے حل کیا جانا چاہئے۔

ہم دیکھتے ہیں کہ ۱۹۴۸ء میں فلسطین میں ”اسرائیل“ کا اعلان ہوا، ٹھیک ان ہی دنوں میں قادیانی گروہ کی ”ربوہ اسٹیٹ“ قائم ہوئی۔ اور سب سے پہلے ربوہ اسٹیٹ کا ”اسرائیل اسٹیٹ“ سے رابطہ قائم کیا گیا، ربوہ اسٹیٹ کے مطلق العنان حکمران قادیانی خلیفہ کے آرگن نے بڑے تزک و احتشام اور فخر و مباہات سے اعلان کیا:

”عربی ممالک میں بے شک ہمیں اس قسم کی اہمیت حاصل نہیں جیسی ان (یورپی و افریقی) ممالک میں ہے، لیکن پھر بھی ایک طرح کی اہمیت ہمیں حاصل ہوگئی ہے، اور وہ یہ کہ فلسطین کے عین مرکز میں اگر مسلمان رہے ہیں تو وہ صرف احمدی ہیں۔“

(الفضل ۳۰ اگست ۱۹۵۰ء)

”الفضل“ کا یہ جگر خراش اعلان اگر ایک طرف فلسطین کے خانماں برباد



مسلمانوں پر خندہ استہزا کی حیثیت رکھتا ہے تو دوسری طرف ”ربوہ اسٹیٹ“ کے ”اسرائیلی اسٹیٹ“ سے تعلقات و روابط کی شرح و تفسیر بھی مہیا کرتا ہے۔

عالم اسلام — اور بالخصوص پاکستان — کے نزدیک ”اسرائیل“ استعماری سازش کی ناجائز اولاد ہے، جس کی پرورش امریکی ایٹم کے زور سے کی جا رہی ہے، یہی وجہ ہے کہ تعلقات و روابط استوار کرنا کیا معنی؟ کسی اسلامی حکومت نے استعمار کے اس ”ناجائز بچہ“ کو ابھی تک زندہ رہنے کی اجازت بھی نہیں دی ہے، لیکن قادیانیوں کی ”ربوہ اسٹیٹ“ خود بھی چونکہ استعمار کی ناجائز اولاد کی حیثیت رکھتی ہے، اس لئے ان دونوں کے نہ صرف باہمی روابط استوار ہوئے، بلکہ دونوں توام ”بہن بھائی“ کی حیثیت میں عالم اسلام کو چیلنج کر رہے ہیں۔

یہاں اس لطیفہ کا ذکر بھی خالی از دلچسپی نہیں ہوگا کہ ۱۹۴۷ء سے ۱۹۵۳ء تک پاکستان کا وزیر خارجہ مسٹر ظفر اللہ خاں قادیانی رہا، جو لفظی طور پر حکومت پاکستان کا وزیر خارجہ تھا، مگر معنوی طور پر ”ربوہ اسٹیٹ“ کی وزارت خارجہ کے فرائض انجام دے رہا تھا۔ اس نے رسمی طور پر پاکستان سے وفاداری کا حلف اٹھایا تھا مگر حقیقی طور پر وہ قادیان کے خلیفہ ربوہ کا مطیع و فرمانبردار اور وفادار تھا، اسی کے عہد وزارت میں ”ربوہ اسٹیٹ“ کا ”اسرائیل“ سے رابطہ مستحکم ہوا — جسے میں سفارتی تعلقات کہنا پسند کروں گا — لیکن جب مسٹر ظفر اللہ خاں سے اس سلسلہ میں سوال کیا گیا کہ کیا اسرائیل میں ربوہ کا مشن قائم ہے؟ تو پاکستان کے وزیر خارجہ نے جواب دیا: ”حکومت پاکستان کو تو اس کی اطلاع نہیں۔“

مسٹر ظفر اللہ خاں کا یہ جواب بالکل صحیح تھا، انہوں نے حکومت پاکستان کے نمائندہ کی حیثیت سے اسرائیل کے ساتھ سفارتی رابطہ قائم نہیں کیا تھا، بلکہ قادیان کے خلیفہ ربوہ کے وزیر خارجہ کی حیثیت سے اسرائیل سے سفارتی رابطہ قائم کیا تھا، بلاشبہ حکومت پاکستان کو اس کا کوئی علم نہیں تھا، اور مسٹر ظفر اللہ خاں کو اگرچہ اس کا علم تھا مگر وہ حکومت پاکستان کے وزیر صرف رہتا تھا، درحقیقت ان کی حیثیت تو ”ربوہ اسٹیٹ“ کے محکمہ امور خارجہ کے افسر اعلیٰ کی تھی۔

قادیانی گروہ، چالاکی و عیاری میں اپنے سفید آقاؤں کا بھی استاد ہے۔ جب ”ربوہ اسٹیٹ“ کے سفارتی روابط ”اسرائیل“ کے ساتھ قائم کئے گئے تو ابتدا میں اسے صیغہ راز میں رکھنے کی کوشش کی گئی، لیکن جب یہ راز طشت از بام ہو کر رہا، تو تاویل کی گئی کہ ”اسرائیل“ میں جو قادیانی مشن کام کر رہا ہے اس کا ”ربوہ اسٹیٹ“ سے رابطہ نہیں بلکہ وہ انڈیا کے مرکز قادیان کے ماتحت ہے۔

لیکن کچھ دنوں بعد جب ”ربوہ اسٹیٹ“ کا بجٹ شائع ہوا، تو اس میں ”اسرائیل مشن“ کا میزانیہ بھی موجود تھا۔ اب یہ تاویل کی گئی کہ ”اسرائیل“ میں قادیانی مشن تو قائم ہے، اور ہے بھی ربوہ اسٹیٹ کے ماتحت، لیکن وہ کوئی سیاسی مشن نہیں، بلکہ تبلیغی مشن ہے۔ میں پہلی تاویل کی طرح اس تاویل کی صحت کو تسلیم کرنے میں بھی تامل نہیں کروں گا، بشرطیکہ یہ ثابت کر دیا جائے کہ قادیانیوں کے ”سیاسی مشن“ اور ”تبلیغی مشن“ الگ الگ ہوتے ہیں۔ جہاں تک ہم نے قادیانی تحریک کا مطالعہ کیا ہے — اور اگر مجھے اجازت دی جائے تو میں کہوں گا کہ میں نے خود قادیانیوں سے زیادہ اس تحریک کا وسیع و عمیق مطالعہ کیا ہے — ہم اس نتیجے پر پہنچے ہیں کہ قادیانیوں کی تبلیغ عین سیاست ہے اور ان کی سیاست ہی ”تبلیغ“ ہے، کم از کم قادیانی تحریک کی حد تک تبلیغ اور سیاست کے جداگانہ تصور سے ہم نا آشنا ہیں، قادیانی تحریک کو ہم مذہبی تحریک نہیں سمجھتے، بلکہ یہ خالص سیاسی تحریک ہے، جس پر مذہب کا خول بڑی عیاری سے چڑھا دیا گیا ہے۔ اس لئے اگر قادیانی یہ تسلیم کرتے ہیں کہ ”اسرائیل“ میں ان کا ”تبلیغی مشن“ کام کر رہا ہے، تو دوسرے لفظوں میں وہ صاف اعتراف کرتے ہیں کہ ”ربوہ اسٹیٹ“ کے سفارتی تعلقات اسرائیل سے مستحکم ہیں۔

ربوہ اسٹیٹ اور اسرائیل کے مابین فوجی تعاون:

دو آزاد اور خود مختار ریاستوں کے درمیان سیاسی، اقتصادی، فنی اور معاشرتی شعبوں میں تعاون ایک قابل فہم چیز ہے۔ بسا اوقات فوجی تعاون کی صورتیں بھی پیدا ہوتی ہیں، لیکن ”ربوہ اسٹیٹ“ نے ”اسرائیل“ کے ساتھ ہمہ جہتی تعاون کا ایک نیا باب رقم کیا

ہے، اور وہ یہ کہ ”ربوہ اسٹیٹ“ کے قادیانی سپاہی اسرائیلی فوج میں بھرتی کئے جاتے ہیں، یہ فوجی تعاون کا وہ عالمی ریکارڈ ہے جو ربوہ اسٹیٹ نے قائم کر دکھایا ہے۔ ہمارے ملک کے موقر جریدہ روزنامہ ”نوائے وقت“ لاہور نے یہ خبر شائع کر کے پورے ملک میں سنسنی پھیلا دی ہے کہ:

”لندن سے شائع ہونے والی کتاب ”اسرائیل اے پروفائل“ میں انکشاف کیا گیا ہے کہ حکومت اسرائیل نے اپنی فوج میں پاکستانی قادیانیوں کو بھرتی ہونے کی اجازت دے دی ہے، یہ کتاب پولیٹیکل سائنس کے ایک یہودی پروفیسر آئی آئی نو مائی نے لکھی ہے، اور اسے ادارہ پال مال لندن نے شائع کیا ہے۔ اس کتاب میں یہ بھی بتایا گیا ہے کہ ۱۹۷۲ء تک اسرائیلی فوج میں چھ سو پاکستانی قادیانی شامل ہو چکے ہیں۔“

(نوائے وقت لاہور ص: ۵، ۲۹ دسمبر ۱۹۷۵ء)

مسلمانوں کے لئے یہ انکشاف جس قدر کرب انگیز ہو سکتا ہے اس کا اندازہ نہیں کیا جاسکتا، پاکستان کے متعدد اہل فکر اس پر تشویش کا اظہار کر چکے ہیں، پاکستان کی قومی اسمبلی کے ایک معزز رکن مولانا ظفر احمد انصاری نے ہفت روزہ ”طاہر“ لاہور کو انٹرویو دیتے ہوئے بتایا کہ وہ قومی اسمبلی میں اس مسئلہ کو زیر بحث لانا چاہتے ہیں، یہاں ان کے انٹرویو کا اقتباس پیش کر دینا مناسب ہوگا۔

مولانا ظفر احمد انصاری ایم این اے کا اہم انکشاف:

”س: ... اسرائیلی فوج میں ”احمدیوں“ کی موجودگی ایک خوف ناک انکشاف ہے، یہودیوں اور ”احمدیوں“ میں اس تعاون کی کیا تفصیل ہے اور آپ اسے پاکستان کی قومی اسمبلی میں کیوں زیر بحث لانا چاہتے ہیں؟

ج: ... پاکستان مسلم مملکت ہے اور یہودی ہر مسلم مملکت کو

نہایت و نابود کرنے کا عہد کر چکے ہیں۔ وہ اس کے لئے ہر ذریعے اور واسطے کو استعمال میں لا رہے ہیں۔ اور ان کے آلہ کار بننے والوں میں یہ مرزائی یا قادیانی بھی شامل ہیں، جو اپنے آپ کو ”احمدی“ کہتے ہیں۔ اسرائیل یہودی صیہونیت کا ہتھیار ہے۔ جس کے ذریعے یہودی عالم اسلام کو زیر کرنا چاہتے ہیں، ۱۹۷۲ء تک اسرائیل میں موجود ”احمدیوں“ کی تعداد چھ سو تھی، جن پر اسرائیلی فوج میں ”خدمت“ کے دروازے کھول دیئے گئے تھے۔ یہ تفصیل پولیٹیکل سائنس کے یہودی پروفیسر آئی آئی نو مائی کی کتاب ”اسرائیل اے پروفائل“ (ISRAEL-A-PROFILE) کے صفحہ نمبر ۷۵ پر موجود ہے، یہ کتاب پال مال لندن سے ۱۹۷۲ء میں چھپی ہے، دلچسپ چیز یہ ہے کہ اس کتاب کے صفحہ نمبر ۵۴ پر واضح طور پر بتایا گیا ہے کہ عربوں پر یہ پابندی اب بھی ہے کہ وہ کسی سرحدی گاؤں میں نہیں رہ سکتے، اور اسرائیلی فوج میں بھرتی بھی نہیں ہو سکتے۔ اس کتاب کے صفحہ نمبر ۷۵ پر یہ بھی موجود ہے کہ یہ ”احمدی“ پاکستان سے ہیں۔ ایک مسلمان بالخصوص پاکستانی مسلمان کے لئے یہ بات یوں بھی انتہائی اضطراب کا موجب ہے کہ ان ”احمدیوں“ کو پاکستانی قرار دیا گیا ہے۔ اس لئے بھی میں تحریک التوا کے ذریعے اسے پاکستان کے مقتدر ترین ایوان میں زیر بحث لانا چاہتا ہوں۔

س:۔۔۔ آپ اس تحریک التوا میں حکومت کی توجہ کن پہلوؤں پر مبذول کرانا چاہتے ہیں؟

ج:۔۔۔ میں قوم کو بھی آگاہ کرنا چاہتا ہوں اور حضرات اقتدار سے بھی دریافت کرنا چاہتا ہوں کہ جب یہ انہیں بھی معلوم

ہے کہ ”احمدی“ دنیا کے کسی خطے میں بھی ہوا اپنے ”خلیفہ“ کے حکم پر کام کرتا ہے، اس ”خلیفہ“ کا ہیڈ کوارٹر پاکستان کے قصبے ربوہ میں ہے، اگر اسرائیل میں رہنے والے ”احمدیوں“ کو ربوہ سے یہ ہدایت ہے کہ عرب ممالک پر قبضے اور انہیں تاراج کرنے میں اسرائیل کی مدد کریں، اور جیسا کہ جنگ ۱۹۶۷ء کے زمانہ کے اخبارات میں آیا کہ اسرائیلی، پاکستان کو بھی ختم کرنا چاہتے ہیں اور پاکستان کے خلاف جس دشمنی اور نفرت کا اظہار بابائے اسرائیل بن گوریان نے کیا تھا، اس کے پیش نظر کیا یہ اندیشہ صحیح نہ ہوگا کہ اسرائیل جیسے ”احمدیوں“ کو عربوں کے خلاف استعمال کر رہا ہے، انہیں پاکستان کے خلاف آسانی سے استعمال کرے گا۔ جب کہ ”احمدیوں“ کے ”خلیفے“ کا ہیڈ کوارٹر بھی یہیں ہے یہ بھی معلوم کرنا چاہتا ہوں کہ آخر یہ چھ سو ”احمدی“ پاکستان کی شہریت رکھتے ہیں؟ ان کے پاس دوہری شہریت تو نہیں؟ ان میں سے کتنے پاکستانی پاسپورٹ پر گئے ہیں؟ کیا وہ پاکستانی پاسپورٹ پر تھے؟ اور پھر اسرائیل بھاگ گئے۔ ایسے لوگوں کے بارے میں ہماری وزارت خارجہ اور پاسپورٹ جاری کرنے والی وزارت داخلہ کو کیا علم ہے اور کیا علم نہیں ہے؟ کیا ان ”احمدیوں“ کی وہاں فرار کی روک تھام بھی کی جا رہی ہے؟ کیونکہ ان کے پاکستانی کہلانے سے عربوں سے ہمارے تعلقات مجروح ہو سکتے ہیں۔ حکومت پاکستان کو اس صورت حال کی (CLARIFICATION) صفائی کرنا چاہئے۔

س:۔۔۔ اسرائیل کے عربوں کے خلاف عزائم ہیں تو ایسے

ہی ناپاک عزائم ہمارے بارے میں بھی ہیں؟

ج:۔۔۔ جی!!!... (بہت لمبی سی ”جی“) یہی وہ بات ہے جس



پر میں زور دینا چاہتا ہوں۔ ۱۹۶۷ء میں اسرائیل کی توسیع پسندی اور بیت المقدس پر غاصبانہ قبضے کے بعد پاکستان میں جو رد عمل پیدا ہوا تھا، اس نے یہودیوں کے دل و دماغ کو ہلا کر رکھ دیا تھا۔ چنانچہ بابائے اسرائیل ڈیوڈ بن گوریان نے جون ۱۹۶۷ء میں عرب اسرائیل جنگ کے بعد پیرس کی لوربون یونیورسٹی میں تقریر کرتے ہوئے کہا تھا، جس کی رپورٹ ۹ اگست ۱۹۶۷ء کو صیہونی رسالے ”جیوش کرائیکل“ میں چھپی تھی۔ بابائے اسرائیل نے اعلان جنگ کرتے ہوئے کہا تھا: ”عالمی صیہونی تحریک کو پاکستان کے خطرے سے لاپرواہی نہیں برتنی چاہئے، اور اب پاکستان اس کا پہلا نشانہ ہونا چاہئے کیونکہ یہ نظریاتی مملکت ہمارے وجود کے لئے خطرہ ہے۔ سارے پاکستانی، یہودیوں سے نفرت کرتے ہیں اور عربوں سے محبت کرتے ہیں، عربوں کے لئے یہ محبت ہمارے لئے خود عربوں سے بھی بڑھ کر خطرناک ہے۔ اسی خاطر عالمی صیہونیت کے لئے یہ ضروری ہو چکا ہے کہ اب پاکستان کے خلاف فوری اقدام کیا جائے۔ جہاں تک ہندوستانی سطح مرتفع کے باشندوں کا تعلق ہے وہ ہندو ہیں، جن کے دل پوری تاریخ میں مسلمانوں کے خلاف نفرت سے بھرے ہوئے ہیں، لہذا ہندوستان ہمارے لئے پاکستان کے خلاف کام کرنے کا اہم ترین مرکز (فوجی اصطلاح BASE استعمال کی گئی) ہے، یہ ضروری ہے کہ ہم اس مرکز کا پورا استعمال کریں اور تمام ڈھکے چھپے اور خفیہ منصوبوں کے ذریعے یہودیوں کے دشمن پاکستانیوں پر ضرب لگائیں اور انہیں کچل دیں۔

(مولانا ظفر احمد انصاری نے یہ اقتباس ایک کتاب سے

انگلش میں پڑھ کر سنایا، پھر سلسلہ کلام جاری رکھا) شاید بہت سے

لوگوں کو معلوم نہ ہوگا کہ اس کے سوا چار سال بعد دسمبر ۱۹۷۱ء میں اندرونی سازش اور بیرونی جارحیت کے ذریعے ڈھاکہ میں داخل ہونے والی ہندو افواج کا ڈپٹی کمانڈر ایک یہودی تھا۔

(ہفت روزہ ”طاہر“ لاہور ۲۲/۲۸ دسمبر ۱۹۷۵ء)

### طوفان کا رخ:

قادیانی ”ربوہ اسٹیٹ“ مغرب کی استعماری و طاغوتی طاقتوں کی آلہ کار بن کر عالم اسلام کے خلاف سازشوں کا جو طوفان برپا کرنا چاہتی ہے، اس کا کچھ اندازہ خلیفہ ربوہ کے ان متواتر اعلانات سے کیا جاسکتا ہے۔ جن میں قادیانی گروہ کو بار بار تلقین کی جاتی ہے کہ ”نئی صدی (جس کے طلوع میں صرف پانچ سال باقی ہیں) ”احمدیت“ کے غلبہ کی صدی ہے، اس صدی میں ”احمدیت“ تمام عالم پر غالب آئے گی۔“

”احمدیت“ تمام عالم اسلام پر غالب کرنے کے لئے ”ربوہ اسٹیٹ“ خفیہ دہشت پسند سرگرمیوں کی تیاری میں مصروف ہے۔ اس کا پہلا انکشاف تو اسرائیلی فوج میں قادیانیوں کی شرکت سے ہوتا ہے، اور مزید انکشاف یہ کیا جاتا ہے کہ چار ہزار قادیانی مغربی جرمنی میں گوریلا تربیت حاصل کر رہے ہیں، ہفت روزہ ”چٹان“ (۵ جنوری ۱۹۷۶ء) کی روایت ہے کہ مجلس تحفظ ختم نبوت پاکستان کے زیر اہتمام چنیوٹ میں منعقد ہونے والی ”۲۳ ویں سالانہ ختم نبوت کانفرنس“ سے خطاب کرتے ہوئے، مجلس تحفظ ختم نبوت کے راہنما حضرت مولانا تاج محمود صاحب نے ان سازشوں کو بے نقاب کیا جو مرزائی، پاکستان کی سالمیت کو نقصان پہنچانے اور اسے ”عجمی اسرائیل“ بنانے کے لئے کر رہے ہیں:

”مولانا تاج محمود صاحب نے یہ بھی کہا کہ چار ہزار

قادیانی نوجوان مغربی جرمنی میں گوریلا تربیت حاصل کر رہے ہیں، انہوں نے حکومت کو خبردار کیا کہ وہ قادیانیوں کی سازشوں سے آگاہ رہے اور اس فتنے کا تدارک کرے، مولانا تاج محمود نے مطالبہ کیا کہ

حکومت اس بات کا پتہ لگائے کہ قادیانی جماعت کے موجودہ سربراہ مرزا ناصر احمد نے حال ہی میں انگلستان کا جو دورہ علالت کے بہانے کیا، وہاں اس کی مصروفیات کیا تھیں؟ انہوں نے الزام لگایا کہ مرزا ناصر احمد پاکستان کی سالمیت کے خلاف سازشیں کر رہا ہے۔“ (ہفت روزہ چٹان ۵ جنوری ۱۹۷۶ء)

اسرائیل کی طرح قادیانی جماعت کا وجود ہی سراپا سازش ہے، اور اس کی سازش کا نشانہ صرف پاکستان نہیں بلکہ پورا عالم اسلام، خصوصاً ایشیا اور مشرق وسطیٰ ہے، قادیانی اسرائیل گٹھ جوڑ پاکستان کے ایک بازو کو کاٹ چکا ہے۔ اور دوسرے بازو کی تخریب میں اس کی سرگرمیاں روز افزوں ہیں۔ قادیانی دہشت پسند تنظیم کو ہر اس قوت سے قلبی تعلق ہے جو عالم اسلام کی تخریب کے مقاصد میں اس کی معاون ثابت ہو سکے، خواہ وہ یہودیوں کی ”صیہونی تحریک ہو“ یا ”دہریت پسندوں کی سوشلسٹ تحریک“۔ ہندوستان کی ”جارجیت“ ہو یا پاکستان کی امن پسند مسیحی اقلیت — میں یہاں پاکستان کی مسیحی اقلیت کے صدر جناب صوبہ خان کے دھمکی آمیز بیان کا حوالہ دوں گا، جسے روزنامہ ”امن“ کراچی نے ۲۹ ستمبر ۱۹۷۴ء کی اشاعت میں شائع کیا تھا:

صوبہ خان کا بیان:

”ساتھ لاکھ کی بھاری محبت وطن اہل کتاب مسیح اقلیت کے حقوق و مفادات کا عملی تحفظ نہ کیا گیا تو ملک کی بنیادیں ہل جائیں گی، اور قادیانی فرقہ کو اقلیت قرار دینے کی پاداش میں پاکستان کی مسلم اکثریت کو اپنی خوش فہمی کا خمیازہ بھگتنا پڑے گا۔“ (بحوالہ ”پاکستان، عیسائیت کی زد میں“ ص: ۶۰۹، ۴۔ شائع کردہ دفتر مرکزی مجلس دعوة الحق پاکستان (ملتان) و دمام تھلیٹ)

میں یہاں جناب صوبہ خان صاحب کے بیان کا منطقی تجزیہ نہیں کرنا چاہتا، نہ میں

اس بحث میں الجھنا چاہتا ہوں کہ ”پاکستان کی محبت وطن مسیحی اقلیت“ کے صدر نے مسیحی اقلیت کے جو مرعوب کن اعداد و شمار پیش کئے ہیں، وہ صحیح ہیں یا جعلی اور مصنوعی؟

ہماری دلچسپی سے متعلق محبت وطن صوبہ خان صاحب کے بیان کا وہ حصہ ہے جس میں ان کے نزدیک قادیانی فرقہ کو غیر مسلم اقلیت قرار دینے کو اتنا سنگین جرم قرار دیا ہے کہ اس کی پاداش میں ملک کی بنیادیں ہلادینا اور مسلم اکثریت کو اس کی خوش فہمی کا خمیازہ بھگتا دینا، اہل کتاب مسیحیوں کی حب الوطنی کا مظاہرہ قرار پاتا ہے۔ گویا دنیا بھر کا ہر ہندو، ہر یہودی، ہر مسیحی اور ہر دہریہ، قادیانی فرقہ سے دلچسپی رکھتا ہے، اس کے تحفظ کے لئے اپنی طاقت کی چھتری مہیا کرنا ضروری فرض سمجھتا ہے، اور قادیانیوں کی خاطر عالم اسلام کو ڈائنامیٹ سے اڑا دینے کا عزم رکھتا ہے، ایسا کیوں ہے؟ اس لئے کہ — ”الکفر ملۃ واحده“ کفر کے تمام فرقوں کی باہمی لڑائی انہیں اسلام دشمنی کے مقصد پر جمع ہونے سے نہیں روکتی۔ تمام طاغوتی طاقتیں عالم اسلام کے خلاف قادیانی جماعت کی معاون و محافظ ہیں، اور قادیانی گروہ ان سارے طاغوتوں کی شطرنج کا مہرہ ہے، جسے اسلام کو زک پہنچانے کے لئے بہ لطائف الخیل حرکت میں لایا جاتا ہے۔

ربوہ اسٹیٹ کا جاسوسی نظام:

ربوہ کی قادیانی شہنشاہیت، اسرائیلی فوج کے لئے صرف پاکستان کے قادیانی سپاہی مہیا نہیں کرتی، اور نہ صرف مغربی جرمنی میں ہزاروں گوریلوں کی تربیت کے انتظامات کرتی ہے، بلکہ اس سے بڑھ کر وہ کفر کے مواصلاتی نظام میں ایک نئے باب کا اضافہ بھی کرتی ہے۔ پاکستان کے فوجی اور انتظامی خفیہ راز ہندوستان کو اور مشرق وسطیٰ کے اندرونی خفیہ راز، اسرائیل کو کس طرح پہنچائے جاتے ہیں اس کی تفصیل میرے لئے ناخوشگوار موضوع ہے۔ میں اس موضوع پر بحث کرنے کو پاکستان اور عالم اسلام کی توہین کے مترادف سمجھتا ہوں، اس لئے تفصیلات سے قطع نظر کرتے ہوئے میں ریاست ربوہ کے محکمہ ”ایٹیلی جنس“ کی طرف قائدین ملت کی توجہ مبذول کرانے پر اکتفا کروں گا۔



۱۹۵۷ء میں حکومت پاکستان نے ملک کے اعلیٰ حکام کے نام ایک گشتی مراسلہ جاری کیا تھا جس میں ریاست ربوہ کے محکمہ سی آئی ڈی سے ہوشیار رہنے کی تلقین کی گئی تھی۔ اس گشتی مراسلہ کی صدائے بازگشت اخبارات میں گونجی اور اخبارات نے اس پر ادارے لکھے، مراسلہ کا مفہوم یہ تھا:

”حکومت کے پاس اس کی معتبر اطلاع ہے کہ ربوہ کی احمدیہ جماعت نے خبر رسانی کا ایک خصوصی عملہ ملازم رکھا ہے جو ایسی سرکاری اور غیر سرکاری اطلاعات فراہم کرے گا جو احمدیہ فرقہ کے مفاد میں ہوں گی۔“

حکومت کو یہ بھی معلوم ہوا ہے کہ وہ سرکاری ملازم جو احمدیہ فرقہ سے متعلق ہیں ان کے ذریعہ سرکاری اطلاعات مہیا کی جا رہی ہیں، ایک اور ذریعہ جس سے کام لے کر احمدیہ جماعت کا خبر رسانی عملہ سرکاری اطلاعات جمع کرتا ہے وہ حکومت کے پنشن یافتہ ملازم ہیں، جن کا ابھی تک اپنے دور کے ساتھیوں اور ماتحتوں پر اثر ہے، حکومت کے علم میں یہ بھی آیا ہے کہ بعض احمدیوں نے غیر احمدی ہونے کا اعلان کر دیا ہے تاکہ ان کی طرف سے شک و شبہ جاتا رہے، اور وہ آزادی سے تمام مسلمانوں میں خلط ملط ہو سکیں اور معلومات حاصل کر سکیں:

”حکومت نے بتایا ہے کہ احمدیہ جماعت کے لئے یہ عملہ

عام طور پر جو معلومات حاصل کرنا چاہتا ہے ان میں ربوہ کی احمدیہ جماعت کے باغیوں کی، جن کا نام ”حقیقت پسند پارٹی“ ہے، سرگرمیاں، مجلس تحفظ ختم نبوت اور جماعت اسلامی کی سرگرمیوں کا پتہ چلانا شامل ہے۔

(یہاں یہ لطیفہ بھی ایک مستقل ”انکشاف“ کی حیثیت

رکھتا ہے کہ مجلس تحفظ ختم نبوت پاکستان کے مرکزی دفتر ملتان میں ایک قادیانی نوجوان جاسوسی کے لئے متعین کیا گیا۔ ”طالب علم“ بن کر اس نے متواتر تین مہینے تک دفتر میں قیام کیا، اسی سے اندازہ کیا



جاسکتا ہے کہ قادیانیوں کے جاسوسی نظام کی زد میں کون کون آیا ہوگا؟... ناقل)

نیز اس میں احمدیہ فرقہ اور شیعہ سنی تعلقات سے متعلق حکومت کی پالیسی میں تبدیلی کی خبر رکھنا بھی شامل ہے۔ حکومت کے اس گشتی مراسلہ میں بتایا گیا ہے کہ ربوہ کی احمدیہ جماعت کا یہ خبر رسانی عملہ فی الحال ربوہ اور لاہور میں تعینات ہے، اور جماعت احمدیہ کی تجویز ہے کہ اس عملہ کی شاخیں راولپنڈی اور کراچی میں قائم کی جائیں۔ اس عملہ کو ہدایت دینا اور اس کی نگرانی کرنا احمدیہ فرقہ کے امام (خلیفہ ربوہ) کے بیٹے مرزا ناصر احمد کے سپرد ہے (اور آجکل یہ حضرت خودریاست ربوہ کے سربراہ ہیں... ناقل)۔“

(۶ دسمبر ۱۹۵۷ء روزنامہ امروز) (بحوالہ ”ربوہ کا پوپ“ ص: ۱۳۷، ۱۳۸۔

شائع کردہ دفتر بیت القرآن پوسٹ بکس نمبر: ۱۰۴۸ لاہور)

گورنمنٹ پاکستان کے اس مراسلہ پر تبصرہ کرتے ہوئے روزنامہ ”آفاق“ لاہور نے اپنے ادارتی نوٹ میں لکھا:

”صوبائی حکومت کا یہ سرکلر ایک اہم مسئلہ سے فرار کی مضحکہ خیز کوشش ہے، حکومت کو یہ چھوٹا سا تنکا نظر آ گیا کہ ربوہ کی انجمن نے حکومت کے راز حاصل کرنے کے لئے ایک جاسوسی نظام قائم کر رکھا ہے۔ لیکن یہ بہت بڑا شہتیر نظر نہیں آیا کہ ربوہ کی انجمن نے مذہبی تقدس کی آڑ میں ایک خفیہ متوازی حکومت کی صورت اختیار کر لی ہے، اور وہ ایسے تمام حربے استعمال کرنے پر مجبور ہے جو سیاسی طاقت ہاتھ میں لینے کے لئے ضروری ہیں.....“

اگر اس ملک میں واقعی ایسے حالات پیدا ہو جائیں اور ایک جماعت اپنی تنظیم اور اپنے وسائل کے ذریعہ قانون و انصاف

کی مشینری کو جب چاہے شل کر دے، تو حکومت کو طفلانہ سرکلر جاری کرنے کے بجائے ان حالات سے عہدہ برآ ہونے کی مؤثر تدبیر سوچنی چاہئے یا بصورت دیگر اقتدار کے عہدہ سے مستعفی ہو جانا چاہئے۔

اصل یا اہم سوال یہ نہیں کہ نظام ربوہ کے جاسوس، حکومت کے راز چرانے کی کوشش کر رہے ہیں۔ حکومت کے پاس راز ہی کون سے ہیں، جنہیں وہ (قادیانیوں سے) محفوظ رکھ سکتی ہے۔ اصل سوال یہ ہے کہ جاسوسی کے علاوہ ربوہ کے خلافتی نظام کے کارکن اور بھی بہت کچھ کر رہے ہیں، جو ایک ”دہشت پسند خفیہ سیاسی نظام“ کی سرگرمیوں کی ذیل میں آتا ہے، اس کا علاج کیا ہے؟“ (روزنامہ ”آفاق“ ۷ دسمبر ۱۹۵۷ء بحوالہ ”ربوہ کا پوپ“ ص: ۱۳۹، ۱۴۰)

اس پر روزنامہ ”تسنیم“ لاہور کا تبصرہ اس سے بھی زیادہ دلچسپ ہے: ”افسوس ہے کہ معاصر (روزنامہ آفاق) نے علاج تجویز کرنے کا مسئلہ حکومت پر چھوڑ کر سکوت اختیار کر لیا ہے، حالانکہ یہ مسئلہ کچھ بھی پیچیدہ نہیں، ضرورت اس بات کی ہے کہ حکومت قادیانی جماعت کی اصل حیثیت کو مشخص کر دے، اور پردہ فریب کو چاک کر دے، جو اس نے اپنے چہرے پر ڈال رکھا ہے۔

یہ جماعت بالکل اسی طرح کی ایک خفیہ سیاسی جماعت ہے، جس طرح کوئی خفیہ سیاسی جماعت ہو سکتی ہے، لیکن اس نے خود کو محض ایک مذہبی جماعت قرار دے رکھا ہے، اس کا نتیجہ یہ ہے کہ اس کے افراد پر سرکاری دفاتر کے دروازے چو پٹ کھلے ہوئے ہیں اور بڑے سے بڑے عہدے پر وہ فائز ہیں۔

ان کی اصل وفاداریاں پاکستان کے نظام حکومت سے

وابستہ نہیں ہیں بلکہ ربوہ کے خلافتی نظام سے — وہ خلافت ربوہ کے راز تو سینے میں چھپا سکتے ہیں مگر سرکاری اطلاعات کو عقیدہ چھپا نہیں سکتے، اگر چھپائیں تو انہیں نظام خلافت کا باغی قرار دیا جاتا ہے۔

معاصر موصوف (روزنامہ آفاق) نے پولیس اور قانون کی جس بے بسی کا ذکر کیا ہے وہ اسی صورتحال کا نتیجہ ہے، اس خرابی کا علاج یہ ہے کہ قادیانی جماعت کو خفیہ سیاسی جماعت قرار دیا جائے اور اس کے ساتھ وہی معاملہ کیا جائے، جو ایسی جماعتوں کے ساتھ کیا جاتا ہے، اس کے بغیر یہ دو عملی ختم نہیں ہو سکتی اور اس گشتی مراسلے کے اجرا کا کچھ حاصل نہیں بجز اس کے کہ ”چور“ کو آگاہ کر دیا جائے کہ جاگ ہو گئی ہے، اور وہ اپنا کام زیادہ ہوشیاری کے ساتھ کرے۔

ہمیں اندیشہ ہے کہ جن افسروں کے نام یہ گشتی مراسلہ جاری کیا گیا ہے، ان میں کتنے ہی لوگ ہوں گے جو اس فہرست میں آتے ہوں گے جن سے خبردار رہنے کی تلقین کی گئی ہے۔“

(روزنامہ ”تسنیم“ ۸ دسمبر ۱۹۵۷ء بحوالہ ”ربوہ کا پوپ“ ص: ۱۴۱)

### ایک امتحان، ایک آزمائش:

اب قلم کا مسافر اپنی منزل تک رسائی کے آخری مراحل میں ہے، وہ اپنے ہم سفر کو زیادہ زحمت نہیں دینا چاہتا۔ ”قادیانی اسرائیلی اتحاد“ آپ کے سامنے کھل کر آچکا ہے، قادیانیوں کی یہودی فوجی ٹریننگ کا منظر بھی آپ دیکھ چکے ہیں، ریاست ربوہ کے محکمہ انٹیلی جنس کی خفیہ خبریں بھی آپ سن چکے ہیں۔ اب ذرا عالم اسلام میں قادیانیت کے اثر و رسوخ پر بھی نظر ڈال لیجئے۔ پاکستان کے کلیدی شعبے بدستور قادیانیت کے قبضے میں ہیں، پاکستان کی اقتصادیات پر قادیانیوں کا خاصا تسلط ہے، بقول علامہ عزیز انصاری:

”۱۹۵۳ء کی تحریک ختم نبوت کے بعد مرزا یوں نے اپنا

محاذ بدل لیا، اور پاکستان کے سیاسی اور اقتصادی اداروں پر قبضہ کرنے کی کوشش کی، اور امریکہ میں جو مقام یہودیوں کو حاصل ہے، وہی انہوں نے پاکستان میں حاصل کرنا چاہا۔“

(ہفت روزہ چٹان ۵ جنوری ۱۹۷۶ء، ص: ۱۸)

فوج سے لے کر ملک کے ہر چھوٹے بڑے محکمہ کی پالیسی ساز باڈی میں قادیانی اب بھی دخیل ہیں، معلوم ہوا کہ سب سے بڑے اسلامی ملک انڈونیشیا میں مذہبی امور کا وزیر اور اس کا سیکرٹری قادیانی ہیں، اسی طرح دیگر اسلامی ممالک میں بھی — جہاں قادیانیوں کی ملازمت پر پابندی نہیں — اہم ترین مناصب پر قادیانی فائز ہیں۔ اب میں یہ مفروضہ پیش کرتا ہوں — جو محض مفروضہ نہیں بلکہ بڑی حد تک حقائق و واقعات کی صحیح تصویر ہے — کہ قادیانیوں کی عالمی تحریک جس کا ہیڈ کوارٹر ربوہ ہے، اور جس کا ہر فرد ایک واجب الاطاعت ”خليفة“ کے ماتحت کام کرتا ہے، یورپ، یہودیت اور ہندوستان کا آلہ کار اور جاسوس ہے — فرض کیجئے پاکستان کے فوجی اور دفاعی راز قادیانی شاخ کے ذریعہ — جو ہندوستان میں ہے — انڈونیشیا پہنچائے جاتے ہیں۔ عالم اسلام کی رپورٹ مرکز لندن کی وساطت سے استعماری طاقتوں کو مہیا کی جاتی ہے، مشرق وسطیٰ کے خفیہ راز اسرائیل مرکز کے ذریعہ صیہونیوں کو بھیجے جاتے ہیں، اور خلافت ربوہ کا یہ محکمہ اطلاعات تمام اسلام دشمن طاقتوں کی خدمت کے لئے وقف ہے۔ سوال یہ ہے کہ کیا عالم اسلام نے قادیانیوں کی جاسوسی اور خفیہ سازشوں سے تحفظ کا کوئی انتظام کیا ہے؟ اور کیا اس وقت تک اس کی ضرورت بھی کسی کے گوشہ ذہن میں آئی ہے؟

۷ ستمبر ۱۹۷۴ء کے فیصلے سے قادیانی جارحیت کا تدارک نہیں ہوا، بلکہ اس فیصلہ نے عالمی سطح پر قادیانی تحریک کو پاکستان اور دیگر اسلامی ممالک کے خلاف اور بھی برا فروختہ کر دیا ہے۔ ہم تسلیم کرتے ہیں کہ پاکستان اسمبلی نے قادیانیوں کو غیر مسلم اقلیت قرار دے کر مسلمانوں کو آگاہ کر دیا ہے کہ وہ قادیانیوں کی ”تبلیغ اسلام“ کے مصنوعی خول سے ہوشیار رہیں، پاکستان کے اس فیصلہ کے احترام میں بعض دیگر اسلامی ممالک نے بھی

کچھ اقدامات کئے ہیں، یہ فیصلہ اپنی جگہ لائق صد تحسین ہے، لیکن سوال یہ ہے کہ پاکستان، مشرق وسطیٰ اور عالم اسلام کو قادیانیت کی زیر زمین سرگرمیوں سے جو خطرہ لاحق ہے، کیا یہ فیصلہ اس کا شافی جواب ہو سکتا ہے؟

جس کافر اور باغی گروہ کے روابط اعداء اسلام سے موجود ہوں، جو تنظیم طاغوتی سامراج کی آلہ کار ہو، جس کے سپاہی صیہونی فوج میں شامل ہو کر مسلمانوں پر آگ برسا رہے ہوں، جو عالم اسلام کو ڈائنامیٹ سے اڑا دینے کا فیصلہ کئے ہوئے ہو، جس کا جاسوسی نظام کسی اسلامی ملک کی پوری مشینری کو مفلوج کر دینے کے درپے ہو، جس کے افراد اسلامی ممالک میں کلیدی عہدوں پر فائز ہو کر بھی ایک واجب الطاعت خلیفہ کے اشاروں پر کار خاص میں سرگرم عمل ہوں، کیا ایسی جماعت کے لئے صرف ”غیر مسلم اقلیت“ کا کاغذی تعویذ آئین کے گلے میں لٹکا دینا کافی ہے؟ کیا اس ”منتز“ سے ان کی سرگرمیاں بند ہو گئیں؟ کیا انہوں نے اسلامی شعائر کی توہین کا مکروہ عمل ترک کر دیا؟ کیا ان کی وہ کتابیں جن میں انبیائے کرام اور اکابر اُمت کو برہنہ گالیاں دی گئیں ہیں، ان کی اشاعت ختم ہو گئی؟ کیا طاغوتی طاقتوں سے ان کا رابطہ ختم ہو گیا؟ کیا انہوں نے اسلام کش سازشوں سے توبہ کر لی؟ افسوس ہے کہ ان تمام سوالات کا جواب نفی میں ہے، اور اس سے بڑھ کر قابل افسوس یہ ”خوش فہمی“ ہے کہ معرکہ سر کر لیا۔

بلاشبہ قادیانی، کافر ہیں۔ آج سے نہیں بلکہ ۱۳۰۱ھ سے کافر ہیں، جب مرزا غلام احمد قادیانی نے یہ نعرہ لگایا تھا کہ:

”منم مسیح زمان و منم کلیم خدا  
منم محمد و احمد کہ مجتبیٰ باشد“

(تریاق القلوب ص: ۴، خزائن ج: ۱۵ ص: ۱۳۴)

لیکن اگر وہ صرف ”کافر“ ہوتے تو دنیا میں اور بہت سے کافر ہیں، قادیانی تحریک صرف اسلام سے باغی نہیں بلکہ یہ صیہونیت اور فری میسن کی طرح ایک خفیہ سیاسی تنظیم ہے، اور یہودی فوجوں میں قادیانی سپاہیوں کی شمولیت اور مغربی جرمنی میں چار ہزار



قادیانیوں کی گوریلا تربیت نے اسے ایک دہشت پسند تنظیم ثابت کر دیا ہے۔  
 صیہونیت اور قادیانیت کا اتحاد پاکستان اور عالم اسلام کے لئے ایک ہولناک  
 خطرہ کا نشان اور قائدین ملت کی فراست و تدبیر کے لئے ایک آزمائش اور ایک امتحان ہے،  
 قادیانیت نے عالم اسلام سے فیصلہ کن معرکہ آرائی کا منصوبہ طے کر لیا ہے، اور خلیفہ ربوہ  
 نے آئندہ صدی میں (جو پانچ سال بعد شروع ہوگی) تمام دنیا پر چھا جانے اور عالم اسلام کو  
 کھا جانے کا اعلان جنگ کر دیا ہے۔ قادیانی مشینری کے تمام کل پرزے، لندن سے حیفہ  
 تک اور حیفہ سے قادیان تک، اس اعلان مبارزت پر بڑی تیزی سے حرکت میں آچکے ہیں،  
 اور ”آنے والی صدی میں غلبہ احمدیت“ کے لئے سازشوں کا وسیع منصوبہ تیار کر لیا گیا ہے۔  
 پس چہ باید کرد؟

حریم اسلام کی پاسبانی علماء کے قلم اور سلاطین کی تلوار کے سپرد ہے، لیکن افسوس  
 ہے کہ انگریز کے دورِ غلامی نے سلاطین کے ہاتھ سے ”سیف جہاد“ اور علماء کے ہاتھ سے  
 ”قلم خارا شگاف“ چھیننے کی کوشش کی۔

علماء کے قلم نے آج سے ۹۵ سال پہلے یہ فیصلہ رقم کیا تھا کہ: ”قادیانی غیر مسلم  
 ہیں۔“ افغانستان کی حکومت نے نوک تلوار سے اس فیصلے پر دستخط کئے، اور قادیانیوں کو  
 ارتداد کی سزا میں موت کے گھاٹ اتار دیا۔ آج کی مہذب دنیا جو معمولی سی حکومت کے  
 باغی کو گولی سے اڑا دینے کا معمول رکھتی ہے، اس نے شاہِ دو عالم صلی اللہ علیہ وسلم کے  
 باغیوں کی سزائے موت کو وحشیانہ قرار دیا۔ اور ہمارے تہذیب یافتہ طبقہ نے جو انگریز کی ہر  
 بات پر ایمان بالغیب لانے کا خوگر تھا، اس ”وحشیانہ“ پراپیگنڈے کو خوب ہوا دی۔

اگر مسلمان حکمرانوں کی غیرت نے حریمِ نبوت کا تحفظ کیا ہوتا، اور قادیانیوں پر  
 ”من بدل دینہ فاقتلوه“ کی سزائے ارتداد جاری کی ہوتی، تو ۹۵ برس تک عالم اسلام  
 ”تماشائے عبرت“ نہ بنا رہتا، اور آج قادیانی نبوت کے گماشتوں کو یہ حوصلہ نہ ہوتا کہ وہ  
 بیت المقدس اور مکہ و مدینہ پر نظریں جمائیں اور عالم اسلام کو آنکھیں دکھائیں۔ حیرت

وحسرت کا مقام ہے کہ قادیانیت کے بارے میں ۱۳۰۱ھ میں جو فیصلہ علماء نے لکھا تھا، ہمارے ذہین طبقہ نے اس کو سمجھنے کے لئے ایک صدی کی طویل مدت صرف کی، آج میں سوچتا ہوں تو بے چین ہو جاتا ہوں کہ اگر مسلمان کی فہم و فراست اور تدبیر و عاقبت اندیشی کا یہی معیار قائم رہا تو ہمارے ارباب اقتدار کو قادیانیوں کی گہری سازشوں کے سمجھنے اور ان کا صحیح تدارک کرنے کے لئے کتنی صدیوں کا عرصہ درکار ہوگا؟

کاش! میں کہیں سے صورِ اسرافیل مانگ لاتا، جس سے کفر کی زمین میں زلزلہ آجاتا، الحاد و زندقہ کے جگر شق ہو جاتے، صدیوں کے جمود و غفلت کے پردے چھٹ جاتے، مردہ دلوں میں یکا یک زندگی کی لہر دوڑ جاتی، اور ملک و ملت کے محافظ، ان خدایانِ اسلام، باغیانِ محمد اور دشمنانِ ملت قادیانیوں کی ہلاکت آفرین سازشوں کا تدارک کرنے کے لئے: ”أَيُنْقِصُ فِي الدِّينِ وَأَنَا حَيٌّ“ کا نعرہ کفر سوز لگاتے ہوئے کھڑے ہو جاتے:

نوائے تلخ تری زن چوں ذوقِ نغمہ کمیابی

حدی را تیز تر میخوای چو محمل را گراں بینی

ہمیں اسلام کے بارے میں الحمد للہ کوئی تشویش نہیں، اس کی حفاظت کا ذمہ خدا تعالیٰ نے خود لیا ہے، اور وہ اس کی حفاظت کے لئے خود ہی اسباب بھی پیدا فرما دیتا ہے، ہمیں جس چیز نے بے چین کر رکھا ہے وہ یہ ہے کہ مسلمانوں پر یہ کیا جادو چل گیا ہے کہ وہ اپنے گرد و پیش کسی سازش کا نوٹس نہیں لیتے اور ان کی آنکھیں اس وقت کھلتی ہیں جب پانی سر سے گزر چکا ہوتا ہے، اور وقت اپنا انٹ فیصلہ لکھ کر فارغ ہو جاتا ہے۔

ہمارے نزدیک قادیانی، صیہونی سازش کا ایک ہی علاج ہے اور وہ یہ کہ قادیانیت کو صیہونیت کی طرح، ایک دہشت پسند سیاسی تنظیم تسلیم کرتے ہوئے اس کی تمام سرگرمیوں کو خلاف قانون قرار دیا جائے، اس تحریک کا کوئی فرد کسی اسلامی ملک میں کسی سرکاری منصب پر فائز نہ ہو، اس کے ارکان کی نقل و حرکت پر کڑی نظر رکھی جائے، اور جن افراد کا کسی بیرونی سازشی جماعتوں سے رابطہ ثابت ہو جائے، انہیں بغاوت کی سزا دی جائے۔ اور ہر مسلمان یہ نوٹ کر لے کہ کوئی قادیانی کسی حالت میں بھی اسلامی ملک کا وفادار

شہری نہیں ہو سکتا۔ ہرگز نہیں ہو سکتا۔ اس لئے کہ ہر قادیانی اسلام کے قلعہ کو مسمار کر کے اس پر ”احمدیت“ کا قصر تعمیر کرنا اپنا مذہبی فرض سمجھتا ہے۔

حق تعالیٰ شانہ تمام اعدائے اسلام سے ہماری حفاظت فرمائے اور ہمارے ارباب اقتدار کو ان فتنوں سے عہدہ برآ ہونے کی توفیق عطا فرمائے۔

وَالْحَمْدُ لِلّٰہِ اَوَّلًا وَاٰخِرًا

## ربوہ سے تل ابیب تک جواب الجواب (حصہ دوم)

تقریب سخن:

راقم الحروف نے محرم الحرام ۱۳۹۶ھ میں ایک مختصر رسالہ بعنوان ”ربوہ سے تل ابیب تک“ مرتب کیا تھا، جس میں قادیانی یہودی روابط، قادیانی عزائم اور قادیانیوں کی خفی و جلی سرگرمیوں کا نوٹس لیتے ہوئے مسلمانوں کو محتاط اور چوکنا رہنے کا مشورہ دیا گیا تھا، پورے رسالہ کا خلاصہ یہ تھا کہ کوئی قادیانی کسی حالت میں بھی اسلامی مملکت کا وفادار شہری نہیں ہو سکتا، اس لئے کہ ہر قادیانی، اسلام کے قلعہ کو مسمار کر کے اس پر ”احمدیت“ کا قصر تعمیر کرنا اپنا مذہبی فرض سمجھتا ہے، قادیانیت کی صد سالہ تاریخ کا ایک ایک سانحہ ثابت کرتا ہے کہ قادیانی امت کبھی بھول کر بھی اسلام کی وفادار اور مسلمانوں کی خیر خواہ نہیں رہی، ان کے اخلاص موذت کے روابط ہمیشہ کفر اور کفار سے پیوستہ رہے ہیں، اور جو طاغوت، مسلمانوں کی ایذا رسانی میں سب سے آگے ہو وہی قادیانی ٹولے کا سب سے گہرا دوست اور حلیف رہا ہے۔ جسٹس منیر کے الفاظ میں:

”جب انہوں نے عقیدہ جہاد کی تاویل میں ”مہربان انگریزی گورنمنٹ“ اور اس کی مذہبی رواداری کی تعریف نہایت ”خوشامدانہ لہجہ“ میں کرنی شروع کی تو اس تاویل پر چند در چند شبہات پیدا ہونے لگے۔ پھر جب مرزا صاحب نے اسلامی ممالک

کی عدم رواداری اور انگریزوں کی فراخ دلانہ مذہبی پالیسی کا مقابلہ و موازنہ توہین آمیز انداز میں کیا تو مسلمانوں کا غیظ و غضب اور بھی مشتعل ہو گیا۔ احمدی (مرزائی) جانتے تھے کہ ان کے عقائد دوسرے اسلامی ممالک میں ”اشاعت ارتداد“ پر محمول کئے جائیں گے، اور یہ خیال اس وقت اور بھی پختہ ہو گیا جب افغانستان میں عبداللطیف احمدی (مرزائی) کو سنگسار کیا گیا۔ (مرزائی عبداللطیف کی سنگساری کے علل و اسباب پر مرزا بشیر الدین نے اپنے ایک خطبہ میں روشنی ڈالی ہے اور اطالوی مصنف کے حوالے سے کہتے ہیں:

”وہ (اطالوی مصنف) لکھتا ہے کہ صاحبزادہ عبداللطیف صاحب کو اس وجہ سے ”شہید“ کیا گیا کہ وہ جہاد کے خلاف تعلیم دیتے تھے، اور حکومت افغانستان کو خطرہ لاحق ہو گیا تھا کہ اس سے افغانوں کا جذبہ حریت کمزور پڑ جائے گا، اور اس پر انگریزوں کا اقتدار چھاجائے گا۔

اگر ہمارے آدمی افغانستان میں خاموش رہتے اور وہ جہاد کے باب میں جماعت احمدیہ کے مسلک کو بیان نہ کرتے تو شرعی طور پر ان پر کوئی اعتراض نہ تھا، مگر وہ اس بڑھتے ہوئے جوش کا شکار ہو گئے، جو انہیں حکومت برطانیہ کے متعلق تھا، اور وہ اسی ہمدردی کی وجہ سے مستحق سزا ہو گئے جو قادیان سے لے کر گئے تھے:

بحرم عشق تو ام می کشند و غوغا نیست

تو نیز بر سر بام آ کہ خوش تماشا نیست

(اخبار ”الفضل“، قادیان، مورخہ ۶ اگست ۱۹۳۵ء، ص: ۴،

کالم: ۴، ۵... ناقل)

جب پہلی جنگ عظیم میں (جس میں ترکوں کو شکست ہو گئی



تھی) بغداد پر ۱۹۱۸ء میں انگریزوں کا قبضہ ہو گیا، اور قادیان میں اس ”فتح“ پر جشن مسرت منایا گیا تو مسلمانوں میں شدید برہمی پیدا ہوئی، اور احمدی، انگریزوں کے پٹھو سمجھے جانے لگے۔“

(منیر انکوائری رپورٹ ص: ۲۰۸، ۲۰۹)

بغداد پر انگریز کا تسلط ہوا تو اس المناک سانحہ پر پورا عالم اسلام خون کے آنسو بہا رہا تھا۔ مگر قادیانیوں نے اس کو ”فتح“ قرار دے کر گھی کے چراغ جلائے، اور جس ناشائستہ انداز میں عالم اسلام کے زخموں پر نمک پاشی کی اس کا اندازہ ذیل کے اقتباس سے کیجئے، اخبار ”الفضل“ قادیان مورخہ ۷ دسمبر ۱۹۱۸ء کی اشاعت میں لکھتا ہے:

”حضرت مسیح موعود (مرزا آنجہانی) فرماتے ہیں کہ میں مہدی ہوں اور گورنمنٹ برطانیہ میری وہ تلوار ہے جس کے مقابلہ میں ان علماء کی کچھ پیش نہیں جاتی (بحمد اللہ جھوٹے مہدی کی یہ ناپاک تلوار ٹوٹ گئی... ناقل) اب غور کرنے کا مقام ہے کہ پھر ہم احمدیوں کو اس ”فتح“ سے کیوں خوشی نہ ہو، عراق، عرب ہو یا شام ہم ہر جگہ اپنی تلوار کی چمک دیکھنا چاہتے ہیں۔“

”فتح بغداد“ کے وقت ہماری فوجیں مشرق سے داخل ہوئیں، دیکھئے کس زمانے میں اس ”فتح“ کی خبر دی گئی، ہماری گورنمنٹ برطانیہ نے جو بصرہ کی طرف چڑھائی کی اور تمام اقوام کے لوگوں کو جمع کر کے اس طرف بھیجا، دراصل اس کے محرک خدا تعالیٰ کے وہ فرشتے تھے (مرزا آنجہانی نے اپنے خدا کے دو الہامی نام بتائے ہیں، عاجی، اور یلش۔ تذکرہ ص: ۱۰۵، ۳۸۹... ناقل) جن کو اس گورنمنٹ کی مدد کے لئے اس نے اپنے وقت پر اتارا تا کہ وہ لوگوں کے دلوں کو اس طرف مائل کر کے ہر قسم کی مدد کے لئے تیار کریں۔“ (قادیانی مذہب ص: ۳۱، طبع پنجم فصل: ۱۳ نمبر: ۳۱)

اس لئے علامہ اقبال مرحوم نے قادیانیت کا خلاصہ ایک چھوٹے سے فقرے میں ادا کر دیا تھا کہ ”قادیانی، اسلام اور وطن دونوں کے غدار ہیں۔“ قادیانی اس معاملہ میں بڑے حساس ہیں کہ ان کا اصل چہرہ مسلمانوں کے سامنے عریاں ہو، چنانچہ راقم الحروف کے متذکرہ بالا رسالہ سے قادیانی بے حد پریشان ہوئے، اور قادیانی خلافت کے رکن رکین جناب مرزا طاہر احمد صاحب نے بنفس نفیس اس کے جواب میں خامہ فرسائی فرمائی، یہ جواب رسالہ کی شکل میں میرے سامنے ہے، جس کے سرورق پر یہ نام مرقوم ہے: ”جناب محمد یوسف بنوری صاحب کے رسالہ ”ربوہ سے تل ابیب تک“ پر مختصر تبصرہ۔“

بدحواسی:

قارئین کو شاید تعجب ہوگا کہ رسالہ ”ربوہ سے تل ابیب تک“ محمد یوسف لدھیانوی کی تالیف ہے، رسالہ کے ابتدائیہ میں (صفحہ ۳ پر) مرتب رسالہ کے دستخط ثبت ہیں، صفحہ ۲ پر جہاں طباعتی تفصیلات درج ہیں، وہاں بھی مؤلف کے آگے محمد یوسف لدھیانوی کا نام نمایاں طور پر درج ہے، مگر ان تمام تصریحات کے علی الرغم صاحبزادہ مرزا طاہر احمد صاحب اس کو میرے شیخ و مربی حضرت مولانا سید محمد یوسف بنوری مدظلہ العالی کی تالیف بنا کر انہیں نازیبا الفاظ میں مخاطب فرماتے ہیں۔ کیا صاحبزادہ صاحب نے رسالہ پڑھے بغیر ہی جواب کے لئے قلم اٹھالیا تھا؟ یا ان کے خیال میں دمشق اور قادیان کی طرح لدھیانہ اور بنور بھی ایک ہی چیز ہے؟ کہیں یہ اس بدحواسی کا اثر تو نہیں جو اس رسالہ کی اشاعت سے قادیانی ٹولے کو لاحق ہو گئی ہے؟ تعجب بالائے تعجب یہ کہ ربوہ میں یہ رسالہ جناب مرزا طاہر احمد کے علاوہ ان کے اعوان و انصار نے بھی ملاحظہ فرمایا ہوگا، مگر افسوس ہے کہ کسی نے صاحب کو متنبہ نہ کیا کہ حضرت! جب آپ مؤلف کا نام تک صحیح پڑھنے سے معذور ہیں، ”لدھیانوی“ کا ”بنوری“ بنا رہے ہیں، تو رسالہ کے مندرجات کو کیا سمجھیں گے؟ اور آپ کے جواب کی قیمت کیا ہوگی؟ کتنی عجیب بات ہے کہ قادیانی امت میں ایسے لوگوں کو امامت و زعامت کا شرف حاصل ہے۔

## قادیانی سنت:

مگر قارئین کو تعجب نہیں ہونا چاہئے، صاحبزادہ صاحب نے جو کچھ کیا یہ ان کا موروثی ورثہ اور آبائی سنت ہے، کسی چھوٹے آدمی کی تحریر کو کسی بڑے کی طرف منسوب کر کے جلے دل کے پھپھولے پھوڑنا ان کی پرانی ریت ہے۔ مثلاً حضرت مولانا اشرف علی تھانویؒ نے ۱۳۲۰ھ میں قادیانی وساوس کے جواب میں ایک رسالہ ”الخطاب الملیح فی تحقیق المہدی والمسیح“ کے نام سے تحریر فرمایا تھا، جس کی لوح پر مصنف کا نام ”حضرت مولانا اشرف علی صاحب تھانوی مدظلہ“ درج ہے۔ مرزا غلام احمد قادیانی اس لا جواب رسالہ سے ایسے مبہوت ہوئے کہ بدحواسی میں مصنف کا نام ہی ذہن سے اتر گیا اور رسالہ کو حضرت گنگوہی قدس سرہ، کی جانب منسوب کر کے لکھا کہ:

”جواب شبہات ”الخطاب الملیح فی تحقیق المہدی والمسیح“

جو مولوی رشید احمد گنگوہی کے خرافات کا مجموعہ ہے۔“

(ضمیمہ براہین پنجم ص: ۱۹۹، روحانی خزائن ج: ۲۱ ص: ۳۷۱)

لطف یہ کہ صاحبزادہ طاہر احمد کی طرح مرزا آنجنہانی نے اپنے فرضی مصنف کو گالیاں تو خوب پیٹ بھر کر دیں، مگر جواب ”الخطاب الملیح“ کی ایک سطر کا بھی نہ دے سکے۔ (کسی کو اس دعویٰ میں شک ہو تو اس رسالہ کا اور مرزا صاحب کے نام نہاد جواب کا مطالعہ کر کے فیصلہ کر سکتا ہے) بہر حال صاحبزادہ صاحب نے اپنے جد بزرگوار کی سنت ایک بار پھر تازہ کر دکھائی، قادیان کے مرزائی خاندان کی ”مراقی روایات“ (ڈاکٹر شاہنواز مرزائی کے ایک فقرے کی طرف اشارہ ہے، وہ مرزائی قادیانی کے ”مراق“ پر بحث کرتے ہوئے لکھتے ہیں: ”جب خاندان سے اس کی ابتدا ہوئی تو پھر اگلی نسل میں بے شک یہ مرض منتقل ہوا، چنانچہ حضرت خلیفۃ المسیح ثانی (صاحبزادہ طاہر احمد کے والد گرامی) نے فرمایا کہ مجھ کو بھی کبھی کبھی مراق کا دورہ ہوتا ہے۔“ (رسالہ ریویو ص: ۱۱ بابت اگست ۱۹۲۶ء) صاحبزادہ مرزا طاہر احمد کو بھی اس موروثی ورثہ سے خاصا حصہ ملا ہوگا۔ ناقل) انہی لطیفوں سے زندہ ہیں۔

قادیانی اُمت ان پر جتنا بھی ناز کرے بجا ہے:

وزیرے چنیں شہر یارے چنیں

قادیانی لغت:

اور ”لدھیانوی“ کو ”بنوری“ بنا دینے پر تعجب اس لئے بھی نہ ہونا چاہئے کہ مرزائیوں کا باوا آدم ہی نرالا ہے۔ مرزائیوں کا باوا آدم خود مرزا غلام احمد قادیانی ہے، آنجہانی کو دور جدید کے آدم ہونے کا بھی دعویٰ تھا، تریاق القلوب، تحفہ گولڑویہ اور دیگر تصنیفات میں انہوں نے اس کی تصریحات کی ہیں، مرزائی عقیدہ کے مطابق ”یا آدم اسکن انت وزوجک الجنة“ کا خطاب مرزا آنجہانی کو ہے۔ (دیکھئے تذکرہ ص: ۷۰)

مرزائیوں کی اصطلاحات و لغات سب سے جدا ہیں، جن لوگوں کی ڈکشنری میں مرزا کا ترجمہ عیسیٰ ہو، مریم کے معنی چراغ بی بی کے ہوں، ”آسمان سے اترنے“ کے معنی ماں کے پیٹ سے نکلنا ہو، دو چادروں کا ترجمہ مراق اور کثرت بول ہو، جیسا کہ مرزا غلام احمد نے لکھا ہے:

”دیکھو میری بیماری کی نسبت بھی آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے پیش گوئی کی تھی جو اسی طرح وقوع میں آئی، آپ نے فرمایا تھا کہ مسیح آسمان پر سے جب اترے گا تو دو زرد چادریں اس نے پہنی ہوئی ہوں گی، تو اسی طرح مجھ کو دو بیماریاں ہیں، ایک اوپر کے دھڑکی اور ایک نیچے کے دھڑکی، یعنی مراق اور کثرت بول۔“

(ملفوظات ج: ۸ ص: ۴۴۵)

اسی طرح جن کے ہاں دمشق کا ترجمہ قادیان ہو، میحاج سے مراد ہسٹریا کا مریض ہو، احمد کے معنی غلام احمد ہوں وغیرہ وغیرہ۔ وہ اگر ”اشرف علی تھانوی“ کا ترجمہ ”رشید احمد گنگوہی“ کریں، یا ”لدھیانوی“ کے معنی ”بنوری“ بتائیں تو قادیانی لغت کے عین مطابق ہے، اُلٹے کو سیدھا، سیدھے کو اُلٹا کر نا ہی قادیانی مذہب کا بنیادی اصول ہے۔ اس لئے مرزا

طاہر احمد صاحب اپنے مذہبی فلسفہ کی رو سے لدھیانوی کو بنوری پڑھنے پر مجبور ہیں۔  
جب پچاس کا قرض پانچ سے یہ کہہ کر چکایا جاسکتا ہے کہ پانچ اور پچاس کے  
درمیان صرف ایک نقطے کا فرق ہے تو لدھیانوی کا قرض بنوری سے کیوں وصول نہیں کیا  
جاسکتا؟ یہاں بھی ایک نقطہ کا تو فرق ہے۔

چنانچہ مرزا غلام احمد قادیانی نے ”براہین احمدیہ“ کے نام سے ایک ایسی کتاب  
لکھنے کا وعدہ کیا تھا جس کے پچاس حصے ہوں گے، اور جس میں اسلام کی حقانیت کے تین سو  
دلائل ہوں گے، مرزا نے پوری کتاب کی رقم پیشگی وصول کر کے ہضم کر لی، مگر پانچ سو صفحے کی  
ایک جلد میں چار حصے پورے کر کے چپ سادھ لی۔ ۲۳ سال بعد ”نصرۃ الحق“ نامی کتاب  
لکھی تو اسی کا دوسرا نام ”براہین حصہ پنجم“ رکھ دیا، ”بیک کرشمہ دوکار“ اور پانچ سے پچاس  
بنانے کی ترکیب یہ ارشاد فرمائی کہ:

”پہلے پچاس حصے لکھنے کا ارادہ تھا، مگر پچاس سے پانچ پر  
اکتفا کیا گیا، اور چونکہ پچاس اور پانچ کے عدد میں صرف ایک نقطہ کا  
فرق ہے، اس لئے پانچ سے وعدہ پورا ہو گیا۔“

(دیباچہ براہین پنجم ص: ۷، روحانی خزائن ج: ۲۱ ص: ۹)

پانچ سے پچاس کا قرض چکانے کا کتنا آسان نسخہ ہے؟

اخلاقی جرأت:

قادیانی مسیحائی سے غلام احمد کا احمد، اشرف علی تھانوی کا رشید احمد گنگوہی اور  
لدھیانوی کا مولانا بنوری بن جانا تو خیر قادیانی معجزہ ہے، تاہم مرزا طاہر احمد صاحب کی  
اخلاقی جرأت (جوان کے خاندان کا طرہ امتیاز ہے) کی داد نہ دینا بے انصافی ہوگی،  
موصوف نے اپنے ”تبصرہ“ میں جگہ جگہ مولانا بنوری کو مخاطب فرمایا، جواب طلبی فرمائی، چیلنج  
پر چیلنج دیئے، مگر اخلاقی جرأت کا یہ عالم کہ اپنے مخاطب تک اپنی بات پہنچانے کی ضرورت  
نہیں سمجھی، نہ اس کا تکلف فرمایا، غالباً جناب صاحبزادہ صاحب کے نزدیک مولانا بنوری کسی



عالم الغیب ہستی کا نام ہے، جسے آپ سے آپ ان کی نگارشات کا علم حضوری ہوگا، یا ان کے خیال میں متکلم کا یہ فرض نہیں کہ وہ اپنی بات اپنے مخاطب تک پہنچانے کا بھی اہتمام کرے، بلکہ شاید یہ فرض ان کے مخاطب ہی پر عائد ہوتا ہے کہ وہ ہمیشہ گوش برآواز رہے کہ عالی مقام مرزا طاہر احمد صاحب اس سے کیا کیا دریافت فرمانا چاہتے ہیں۔

دنیا میں اہل عقل کا دستور تو یہی دیکھا، سنا کہ جب کسی خاص شخص کو مخاطب کیا جائے تو وہ خطاب سب سے پہلے اسی تک پہنچایا جائے، مثلاً مولانا سید مرتضیٰ حسن چاند پوری نے ”اول السبعین علی الواحد من الثلاثین“ لکھی، جس میں قادیانیوں سے ستر سوال کئے گئے تھے، تو ان کے دونوں مرکزوں کو (لاہور اور قادیان) رجسٹرڈ بھیجی گئی (جس کے جواب سے آج تک قادیانی امت عہدہ برآ نہیں ہو سکی، نہ ان شاء اللہ قیامت تک ہوگی)، البتہ قادیانی دستور ساری دنیا سے نرالا ہے۔

### قادیانی جواب:

جوابدہی کے سلسلے میں بھی قادیانی لیڈروں کی ایک مخصوص الیبلی ادا ہے، بطور اصول موضوعہ اسے بھی نوٹ کر لینا چاہئے۔ سب سے پہلے تو وہ اپنی کتاب کے حوالوں سے انکار کیا کرتے ہیں، مناظروں اور مباحثوں میں بسا اوقات ایسا بھی ہوا کہ کتاب کھول کر انہیں حوالہ دکھایا گیا تو کہہ دیا کہ کتاب ہی ہماری نہیں، اور یہ انکار و گریز صرف غیر معروف کتابوں سے متعلق نہیں بلکہ ”حقیقۃ الوحی“ اور ”سیرۃ المہدی“ جیسی معروف کتابوں کے بارے میں بھی یہی انداز اختیار کیا گیا۔

اگر کسی حوالے میں کوئی لفظ آگے پیچھے ہو گیا یا کتاب کے صفحوں اور اخبار کی تاریخوں کے نقل کرنے میں کسی سے ذرا بھی فروگزاشت ہو گئی، پھر تو سمجھنا چاہئے کہ اس غریب کی شامت ہی آگئی، اب اسے قادیان کی خاص نکسالی زبان میں سب و شتم سننے کے لئے تیار رہنا چاہئے۔ ہلکے سے ہلکا خطاب جو اسے قادیانی سرکار سے عطا ہوگا وہ ”یہودی“ کا ہے (صاحبزادہ صاحب نے بھی علامہ اقبال کو یہی خطاب دیا ہے)، اور اگر کوئی حوالہ

نا قابل انکار ہو تو اسے تاویل کے پردے میں چھپانے کی کوشش کی جائے گی۔ تاویل ان کے گھر کی لونڈی ہے، ہر کفر و زندقہ کو تاویل کے ذریعہ عین اسلام ثابت کر دیا جاتا ہے اور گھناؤنی سے گھناؤنی بات کو تاویل کے حسین غلاف میں لپیٹ کر عالی فہم مریدوں کو مطمئن کر لیا جاتا ہے۔ مراق، ہسٹریا، ذیابیطس، سلس البول، حمل، دروزہ وغیرہ تاویل کے زور سے مسیح کے معجزے بن جاتے ہیں۔

کسی صاف اور سیدھی بات کے مفہوم کو الٹ دینا، قطعی و یقینی امور کو مشکوک بنادینا، دن کو رات اور رات کو دن ثابت کرنا، ایاز کو محمد و داور زنگی کو کافور بنا کر پیش کرنا بھی قادیانی لیڈروں کا خاص کرشمہ ہے۔ جناب مرزا طاہر احمد صاحب نے زیر بحث ”تبصرہ“ میں ان تمام قادیانی کرشموں کو نبھایا ہے، جن کی تفصیل آئندہ سطور میں ان شاء اللہ قارئین کی نظر سے گزرے گی۔

### قادیانی تحفہ:

جھوٹ، بہتان، افتراء اور لعنت کی گردان قادیانیوں کا خاص تحفہ ہے، جو ان کی جانب سے عطا کیا جاتا ہے، مرزا طاہر احمد صاحب نے بھی اپنے ”تبصرہ“ میں یہ قادیانی تحفہ بڑی فیاضی سے مولانا بنوری کو عطا فرمایا ہے۔ جھوٹ اور بہتان تو خیر مرزا صاحب کے گھر کی دولت ہے، اس رواں صدی میں قادیان اور ربوہ اس دولت کے سب سے بڑے معدن ہیں، وہ ساری دنیا پر بھی اسے تقسیم کر دیں تب بھی ختم نہ ہوگی۔ جہاں جھوٹ اور افتراء کے چشمے ابلتے ہوں وہاں دو چار چلو اگر راہ چلوں پر بھی پھینک دیئے جائیں تو کیا کمی واقع ہوتی ہے۔ دنیا کا سب سے بڑا جھوٹ، جھوٹی نبوت کا دعویٰ ہے، جو لوگ اس کو ہضم کر چکے ہوں، ظاہر ہے کہ جھوٹ ان کے گوشت، پوست میں سرایت کئے ہوئے ہوگا، اور انہیں ہر سو جھوٹ ہی جھوٹ نظر آئے گا۔

باقی رہی لعنت! تو یہ جھوٹ کا خاصہ لازمہ ہے، یہی وجہ ہے کہ مرزا آنجنمانی کے گھر اس کی بھی بڑی فراوانی تھی، اور اس کی داد و دہش میں بھی وہ بڑے نجی تھے، دس دس،

بیس بیس لعنتیں تو معمولی بات پران کا معمول تھا، اور کبھی موج میں آتے تو گن گن کر ہزار ہزار لعنتیں ایک بمانس میں تقسیم کر کے اٹھتے، افسوس ہے کہ اس دولت کی تقسیم میں مرزا آنجمانی جیسی فیاضی اب مرزائی خاندان میں نہیں رہی، غالباً یہ دولت مرزا صاحب کے خاندان اور متعلقین میں تقسیم ہو کر رہ گئی، جناب مرزا طاہر احمد صاحب کو بھی حصہ رسدی ملی ہوگی، اس لئے انہوں نے مولانا بنوریؒ کو اس کا عطیہ دینے میں اپنے جد بزرگوار کی سی فیاضی کا مظاہرہ تو نہیں کیا، تاہم بخل سے بھی کام نہیں لیا، اپنی بساط اور مقدور کے موافق انہوں نے خوب لعنت برسائی ہے، دعا کرنی چاہئے کہ حق تعالیٰ ان کی اس خاندانی دولت میں دن دوئی رات چوگنی ترقی فرمائے اور دنیا و آخرت میں انہیں اس بیش بہا دولت سے مالا مال رکھے۔

باران لعنت کے سلسلہ میں جناب مرزا طاہر احمد صاحب کو ایک بہت ہی مخلصانہ و نیازمندانہ مشورہ دینا چاہتا ہوں، مشورہ ذرا دقیق سا ہے، امید ہے اس پر توجہ فرمائیں گے۔ مشورہ یہ ہے کہ وہ لوگوں پر لعنت برسانے کا شوق تو ضرور فرمایا کریں کہ یہ ان کا آبائی ترکہ ہے، اور کسی کو حق نہیں کہ انہیں اس میراث سے محروم کر دے، مگر اس کے لئے قرآن کریم کی آیت: ”لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الْكَاذِبِينَ۔“ نہ پڑھا کریں، وجہ اس کی یہ ہے کہ حدیث میں آتا ہے:

”رب قارئ قرآن والقرآن یلعنہ۔“ (مشکوٰۃ)

ترجمہ: ”...بہت سے قرآن پڑھنے والے ایسے ہیں کہ

قرآن ان پر لعنت کرتا ہے۔“

اس حدیث کے مفہوم میں یہ بھی داخل ہے کہ ایک شخص خود ظالم ہے اور وہ قرآن مجید کی تلاوت کرتے ہوئے پڑھتا ہے: ”الَّا لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الظَّالِمِينَ۔“ (ظالموں پر خدا کی لعنت) تو درحقیقت وہ قرآن کی زبان سے خود اپنے آپ پر لعنت کر رہا ہے۔ اسی طرح ایک شخص خود جھوٹا ہے اور وہ آیت کریمہ: ”لَعْنَةُ اللَّهِ عَلَى الْكَاذِبِينَ۔“ پڑھتا ہے، تو نادانستہ اپنے اوپر لعنت کرتا ہے۔

یہ تو سب جانتے ہیں کہ مرزا آنجنمانی کو نبی، مسیح، احمد اور محمد رسول اللہ کہنا یکسر خلاف واقعہ ہے (اسی کو جھوٹ کہتے ہیں)، اس لئے ان عقائد کے باوجود صاحبزادہ صاحب کا اس آیت کی تلاوت کرنا، حدیث بالا کا مصداق ہے۔ بزعم خود وہ یہ دولت دوسروں کو تقسیم کرتے ہیں مگر یہ آیت خود ان کے حق میں اس دولت کے اضافہ کا باعث بنتی ہے۔ گویا صاحبزادہ صاحب اس آیت کو پڑھ کر خود اپنے اوپر بددعا کرتے ہیں۔ میرے خیال میں یہ اچھی بات نہیں، امید ہے وہ یہ خیر خواہانہ مشورہ قبول کر کے آئندہ: "لعنة الله على الكاذبين" کا مورد بننے سے احتراز فرمائیں گے، جتنی اب تک انہیں مل چکی ہے، وہی بہت ہے۔

چڑنے کا فلسفہ:

ان تمہیدی معروضات کے بعد اب جناب مرزا طاہر احمد صاحب کے "تبصرہ" کا حال سنئے! راقم الحروف نے اپنے رسالہ میں "قادیانی" اور "قادیانیت" کا لفظ استعمال کیا، مجھے خیال تک نہ تھا کہ اس سے کسی کو چڑ ہوگی، مجھے افسوس ہے کہ مرزا طاہر احمد صاحب اس سے چڑ گئے، وہ لکھتے ہیں:

"غالباً قادیانیت سے مولانا کی مراد، احمدیت ہے، اور مولانا، احمدیت کو قادیانیت لکھتے وقت اس ارشاد خداوندی سے یا تو ناواقف تھے کہ "وَلَا تَنَابَزُوا بِالْأَلْقَابِ"

ترجمہ: "ایک دوسرے کو (چڑانے کی خاطر) غلط ناموں سے نہ پکارا کرو۔" یا پھر عمداً اس ارشاد کی تعمیل ضروری نہیں سمجھتے (بہر حال یہ ان کا ذاتی فیصلہ ہے)۔"

(ربوہ سے تل ایب تک پر مختصر تبصرہ ص: ۲)

الف: ... میرا مقصد چڑانا تھا یا نہیں، یہ بحث تو الگ رہی، اور یہ بحث بھی فی الحال رہنے دیجئے کہ میں ارشاد خداوندی سے ناواقف تھا یا عمداً اس کی تعمیل نہیں کی۔ سب



سے پہلے صاحبزادہ کو یہ تو سوچنا چاہئے تھا کہ وہ قادیانی کے لفظ سے کیوں چڑ جاتے ہیں؟ مرزا آنجہانی کے ماننے والوں کو عموماً ”مرزائی“ یا ”قادیانی“ کہا جاتا ہے، اور کبھی غلام احمد کی نسبت سے ”غلمدی“ بھی کہتے ہیں، ”مرزائی“ مرزا کی طرف نسبت ہے، جو نہ صرف ان کے پیشوا کا خاندانی لقب ہے، بلکہ الہامی بھی ہے (دیکھئے تذکرہ ص: ۱۳۳، طبع دوم)۔ اسی طرح ”قادیانی“ بقول ان کے الہامی بھی ہے اور ان کی مسیحیت کی دلیل بھی۔ (دیکھئے ازالہ اوہام ص: ۱۸۵، روحانی خزائن ج: ۳ ص: ۱۹۰)۔ دنیا کی تمام قومیں اپنے بانیان مذاہب اور اپنے علمی و روحانی پیشواؤں کی طرف انتساب پر فخر کرتی ہیں، مگر دنیا کی تاریخ میں بد قسمتی سے مرزا غلام احمد قادیانی ایک ایسا مذہبی پیشوا ہے، جس کے پیرو ہی نہیں بلکہ اس کی آل اولاد بھی اس کی طرف انتساب کو موجب ننگ و عار سمجھتی ہے، اور اس سے چڑتی ہے، فیما للعجب!

ب:۔۔۔ اہل فہم واقف ہیں کہ الفاظ میں حسن و خوبی یا قباح و شناعة ان کے مفہوم و معنی کی رہن منت ہے، معنی اچھے ہوں تو لفظ حسین ہے، اور معنی برے ہوں تو لفظ قبیح ہے، اور نسبت کی اچھائی برائی منسوب الیہ کی اچھائی برائی پر موقوف ہے، جس کی طرف نسبت کی جائے اگر وہ اچھا ہو تو نسبت قابل فخر ہے، اور اگر برا ہو تو نسبت موجب ننگ و عار سمجھی جاتی ہے، یہی وجہ ہے کہ انبیاء و اولیاء کی طرف نسبت پر ہر شخص فخر کرتا ہے۔ اور رسوائے زمانہ شخصیتوں کی طرف نسبت کو گالی تصور کیا جاتا ہے۔ مرزا طاہر احمد صاحب اگر مرزائی، قادیانی، اور غلمدی کے الفاظ سے چڑتے ہیں تو دراصل لوگوں کو یہ تاثر دیتے ہیں کہ مرزا غلام احمد قادیانی کی شخصیت بہت ہی بدنام اور رسوائے زمانہ تھی، کسی فرد یا جماعت کو اس کی طرف منسوب کرنا مکروہ گالی ہے۔

ج:۔۔۔ مرزا آنجہانی نے ایک الہام میں کہا تھا کہ خدا تعالیٰ نے مجھ سے وعدہ فرمایا ہے کہ تیری رسوا کن باتوں کا ذکر باقی نہیں رکھوں گا۔ ”ولا نبقی من المخذیات ذکراً“ مرزا آنجہانی کا یہ الہامی وعدہ تو کیا پورا ہوتا، خدا کی قدرت کا کرشمہ دیکھو خود مرزا آنجہانی کی ذات، ذلت و رسوائی کا نشان بن کر رہ گئی، اس سے بڑھ کر رسوائی و بدنامی کیا



ہوگی کہ جس طرح فرعون، ابوجہل، میلہ کذاب اور اسود غسی کی طرف منسوب ہونے کو کوئی شخص برداشت نہیں کرتا، اسی طرح قادیانی منتہی کی نسبت بھی کسی کو گوارا نہیں، اسی بنا پر مرزائی ذریت قادیانی کے لفظ سے چڑتی ہے۔

۱:۔۔۔ مرزا طاہر احمد صاحب تو ”مرزائی اور قادیانی“ کے لفظ سے چڑتے ہیں مگر ان کے اسلاف بطور فخر ان الفاظ کو خود استعمال کرتے تھے، اس سلسلہ میں چند حوالے پیش کرتا ہوں:

۱:۔۔۔ اخبار الحکم قادیان جلد: ۱۰ نمبر: ۱۹ ص: ۹ مؤرخہ ۳۱ مئی ۱۹۰۶ء میں حکیم نور دین کا ایک خط ڈاکٹر عبدالحکیم خان صاحب کے نام شائع ہوا جس میں حکیم صاحب نے بار بار ”مرزا“ اور ”مرزائیوں“ کا لفظ استعمال کیا۔

۲:۔۔۔ ۵ جولائی ۱۹۰۷ء کو حکیم صاحب نے کسی سائل کے جواب میں ایک خط لکھا، جسے صاحبزادہ مرزا بشیر احمد ایم اے نے کلمۃ الفصل، (مندرجہ رسالہ ریویو بابت مارچ و اپریل ۱۹۱۵ء) میں نقل کیا ہے، اس کے آخر میں حکیم صاحب لکھتے ہیں: ”میرے خیال میں میں اور اکثر عقلمند مرزائی یہ نہیں مانتے.....“ (ص: ۱۵۲)

اس حوالہ سے معلوم ہوا کہ مرزا کو ماننے والے مرزائی ہیں اور یہ کہ ان کی دو قسمیں ہیں عقلمند اور بے عقل، غالباً مؤخر الذکر قسم میں وہ لوگ شامل ہیں جو مرزائی کہلانے سے چڑتے ہیں۔

۳:۔۔۔ مرزا آنجنہانی کی زندگی میں قادیان کے سالانہ جلسہ کے موقع پر میر قاسم علی نے مرزا کے حواریوں کی مدح میں ایک قصیدہ پڑھا، مسٹر محمد علی لاہوری کی مدح و ثنا میں یہ شعر تھا:

کیا ہے راز طشت از بام جس نے عیسویت کا

یہی وہ ہیں، یہی وہ ہیں، یہی ہیں پکے مرزائی

(اخبار بدر ۱۷ جنوری ۱۹۰۷ء، بحوالہ ترک مرزائیت ص: ۶)

اس حوالے سے دو نکتے معلوم ہوئے ایک یہ کہ جس طرح میر قاسم علی کا عیسویت

کہنا مکمل اعتراض نہیں، اسی طرح مرزائیوں کے دین و مذہب کو ”مرزائیت“، ”قادیانیت“ یا ”غلمدیت“ کہنا بھی کوئی بری بات نہیں، مرزا طاہر احمد صاحب اس سے خواہ مخواہ چڑتے ہیں۔ دوم یہ کہ مرزا کے ماننے والے مرزائی ہیں، ان میں سے کچھ تو مسٹر محمد علی ایم اے کی طرح پکے مرزائی تھے اور کچھ مرزا طاہر احمد صاحب کی طرح کچے مرزائی ہیں، مرزائی کے لفظ سے چڑنا ہی ان کے کچے پن کی دلیل ہے۔

۴:۔۔۔ اخبار بدر جلد: ۲ نمبر: ۳۸ ص: ۴، ۵ مؤرخہ ۲۰ ستمبر ۱۹۰۶ء میں خلیفہ رشید الدین صاحب (مرزا طاہر احمد صاحب کے جد فاسد) کا ایک نصیحت نامہ بنام مرتد ڈاکٹر شائع ہوا، اس میں خلیفہ صاحب لکھتے ہیں:

”اس زمانے میں حضرت محمد مصطفیٰ صلی اللہ علیہ وسلم نے

حضرت اقدس مرزا صاحب سلمہ میں بروز کیا ہے تو اس وقت مرزائی

توحید ہی محمدی توحید ہے، اور اسی سے نجات ہے۔“ (ص: ۵ کالم: ۲)

۵:۔۔۔ مرزائیوں کی احمدی جنتری بابت ۱۹۴۱ء جو قادیان سے شائع ہوئی، اس کے دوسرے صفحہ پر مفتی محمد صادق قادیانی کا ایک مضمون شائع ہوا، جس کا عنوان تھا: ”ہم قادیانی بنیں یا لاہوری؟“ اس میں موصوف نے زور دار دلائل سے ثابت کیا ہے کہ مرزا آنجہانی کو ماننے والے قادیانی ہیں، اسی سلسلہ میں لکھتے ہیں:

”جب ہمارے مرشد، وحی الہی کے مطابق قادیانی تھے تو

ہم بھی قادیانی ہیں نہ کہ لاہوری۔“

ان تمام حوالوں سے واضح ہے کہ مرزا طاہر احمد صاحب کے اسلاف مرزائی اور قادیانی کہلانے میں فخر محسوس کرتے تھے، اب اگر وہ ان ناموں سے چڑتے ہیں تو گویا اپنے سلف کی روایات سے انحراف کرتے ہیں۔

۶:۔۔۔ اب میں اس آیت کو لیتا ہوں جس کا حوالہ صاحبزادہ صاحب نے دیا ہے، یہ تو ہر طالب علم جانتا ہے کہ اس آیت کا خطاب مسلمانوں سے ہے، اور انہی کو یہ ہدایت کی گئی ہے کہ وہ آپس میں ایک دوسرے کو برے القاب سے یاد نہ کیا کریں، ادھر

قادیانی مسلمان ہی نہیں، بلکہ ایک جھوٹے مدعی نبوت کے پیرو ہونے کی وجہ سے دائرہ اسلام سے خارج ہیں، اس لئے آیت کا حکم ان غیر مسلموں کو شامل ہی نہیں، فرض کیا کہ قادیانی بہت ہی برانا نام ہے، جیسا کہ صاحبزادہ صاحب کے کلام سے مترشح ہے، اور قادیانی اس نام سے واقعی چڑتے ہیں، تب بھی اس میں راقم الحروف کا کیا قصور ہے؟ قصور اگر ہے تو مرزا آنجنمانی کا ہے، جس نے نبوت کا دعویٰ کیا، تمیں دجالوں میں نام لکھوایا، اور کفر و ارتداد کی طرح نوڈالی، یا پھر اس کے ماننے والوں کا قصور ہے، جو اسلام کے دائرے سے نکل کر ایک رسوائے زمانہ مدعی نبوت کے کیمپ میں شامل ہوئے، راقم الحروف کا قصور بس اتنا ہے کہ اس نے قادیانی کے ماننے والوں کو ان کے پیشوا کی طرف منسوب کر دیا، اور یہ نسبت عقلاً و شرعاً و عرفاً لازم ہے، قیامت کے دن بھی سب لوگوں کو ان کے پیشوا کی نسبت سے پکارا جائے گا، جیسا کہ ارشاد الہی ہے: ”یوم ندعوا کل اناس بامامہم۔“ (جس دن ہم بلائیں گے ہر فرقہ کو ان کے سرداروں کے ساتھ)۔ مرزا طاہر احمد صاحب شاید خدا کو بھی یہی کہیں گے کہ آپ ہمیں جلانے کے لئے قادیانی کی نسبت سے پکار رہے ہیں (بہر حال یہ ان کا ذاتی فیصلہ ہے)۔

و: صاحبزادہ صاحب کو شاید علم ہوگا کہ عمرو بن ہشام کا لقب جاہلیت میں ابوالحکم تھا، مگر رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے اس کا لقب ابو جہل رکھا، اور یہ لقب ایسا مشہور ہوا کہ بہت سے لوگوں کو اس کا اصل نام بھی یاد نہ رہا۔ آپ صلی اللہ علیہ وسلم کے ایک چچا کا نام عبدالعزیٰ تھا، قرآن کریم نے اس کا لقب ابولہب رکھا، ظاہر ہے کہ یہ لوگ ان القاب سے خوش نہیں ہوتے ہوں گے بلکہ مرزا طاہر احمد صاحب کی طرح ضرور چڑتے ہوں گے، افسوس ہے مرزا طاہر احمد صاحب اس وقت نہیں تھے، ورنہ خدا و رسول کو ”ولا تنابزوا بالالقاب۔“ (اور نہ ایک دوسرے کو برے لقب سے پکارو) کی آیت معہ ترجمہ یاد دلاتے۔

ز: ... آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے ابو جہل کے خلاف واقعہ لقب ابوالحکم کو ابو جہل سے تبدیل کر دیا۔ اسی طرح امت اسلامیہ نے سنت نبوی کی پیروی کرتے ہوئے مرزائیوں کے تجویز کردہ خلاف واقعہ نام ”احمدی“ کو ”مرزائی“ اور ”قادیانی“ سے بدل

دیا۔ ”احمد“ ہمارے نبی پاک صلی اللہ علیہ وسلم کا مقدس نام ہے، اور ایک مرتد ٹولے کا اپنے آپ کو اس مقدس نام کی طرف منسوب کرنا اس نام کی بے حرمتی ہے جو کسی طرح قابل برداشت نہیں، نیز مرزائیوں کا احمدی کہلانا دراصل اس عقیدے پر مبنی ہے کہ مرزا احمد ہے، اور یہ کہ قرآن کریم میں جس ”احمد“ کے بارے میں حضرت عیسیٰؑ کی بشارت ہے اس سے مراد یہی غلام احمد قادیانی ہے، اب کوئی ناواقف ہی ہوگا جو مرزائیوں کو احمدی کہہ کر ان کے اس عقیدے کی تصدیق کرے، پس جس طرح ابو جہل کو ابوالحکم کہنا جائز نہیں، اسی طرح مرزا آنجنمانی کے ماننے والوں کو احمدی کہنا بھی قطعاً صحیح نہیں، جو لوگ ایسا کرتے ہیں وہ حقیقت واقعہ سے بے خبر ہیں۔

دامن کو ذرا دیکھ!

قادیانی کا لفظ جو مرزائیوں کے مرشد کا مقدس نام ہے اس پر تو صاحبزادہ صاحب چڑتے ہیں، خفا ہوتے ہیں، قرآن کریم کی آیت یاد دلاتے ہیں، اس کا ترجمہ سناتے ہیں، مگر ان کے باپ دادا نے انبیائے کرام، صحابہ عظامؓ اور علماء و صلحاء پر جو دُرفشائیاں کی ہیں، ان پر بھی صاحبزادہ صاحب کا سرندامت سے کبھی جھکا؟ کبھی جمین خجالت عرق آلود ہوئی؟ کبھی دامن تقدس پر نظر پڑی؟ کبھی آیت: ”وَلَا تَسَابِزُوا بِالْأَلْقَابِ“ یاد آئی؟ کتنی عجیب بات ہے قادیانی کے لفظ پر احتجاج کرتا ہے وہ شخص جس کے باپ دادا کا پیشہ ہی گالی گلوچ تھا، اور جس کی تین پشتوں سے انبیاء و صلحاء کے حق میں فحش کلامی، ہجو گوئی و دشنام طرازی اور پوشتین دری کی روایت چلی آتی ہے، صاحبزادہ صاحب کو بار طبع نہ ہو تو مغالطات مرزا میں اپنے دادا کی دُرفشائیوں کی فہرست ملاحظہ فرمائیں، کتے، گدھے، سور، خنزیر اور گوہ کے کیڑے تو مرزا آنجنمانی کے منہ میں ہمیشہ رہتے تھے، کینے اور حرامزادے بھی بہت مرغوب تھے، منہ کا ذائقہ بدلنے کے لئے کبھی کبھی شتر مرغ، بغال، سانپ، بچھو اور بھیڑیے سے بھی شغل فرمالیا کرتے تھے بطور نمونہ اس شیریں کلامی کے چند جملے یہاں نقل کر دیتا ہوں:

”عیسیٰ علیہ السلام شراب پیا کرتے تھے۔“

(کشتی نوح ص: ۶۵، روحانی خزائن ج: ۱۹ ص: ۷۱)

”مسیح کا چال چلن کیا تھا، ایک کھاؤ، پیو، شرابی، نہ زاہد،

نہ عابد، نہ حق کا پرستار، متکبر، خود بین، خدائی کا دعویٰ کرنے والا۔“

(مکتوبات احمدیہ ج: ۳ ص: ۲۲، ۲۳)

”جس قدر حضرت مسیح کی پیش گوئیاں غلط نکلیں اس قدر صحیح

نہیں نکل سکیں۔“ (ازالہ اوہام ص: ۷، روحانی خزائن ج: ۳ ص: ۱۰۶)

”یسوع درحقیقت بوجہ بیماری مرگی کے دیوانہ ہو گیا

تھا۔“ (ست بجن حاشیہ ص: ۱۷۱، روحانی خزائن ج: ۱۰ ص: ۲۹۵)

”بعض نادان صحابی، جن کو درایت سے کچھ حاصل نہ

تھا۔“ (ضمیمہ براہین پنجم ص: ۱۲۰، روحانی خزائن ج: ۲۱ ص: ۲۸۵)

”ان العدی صاروا خنازیر الفلا ونسانهم من

دونہن الا کلب۔“

”دشمن ہمارے بیابانوں کے خنزیر ہو گئے اور ان کی

عورتیں کتوں سے بڑھ گئی ہیں۔“

(نجم الہدی ص: ۱۰، روحانی خزائن ج: ۱۳ ص: ۵۳)

”جو شخص ہماری فتح کا قائل نہیں ہوگا تو صاف سمجھا

جاوے گا کہ اس کو ولد الحرام بننے کا شوق ہے اور وہ حلال زادہ

نہیں۔“ (انوار الاسلام ص: ۳۰، روحانی خزائن ج: ۹ ص: ۳۱)

اردو کے علاوہ دو جواہر ریزے عربی میں صابزادہ کی نذر ہیں:

و من اللئام أری رجیلاً فاسقاً

غولاً لعیناً نطفة السفہاء



شکس خبیث مفسد و مزور

نحس یسمی السعد فی الجہلاء

(انجام آتھم ص: ۲۸۱، روحانی خزائن ج: ۱۱ ص: ۲۸۱)

أذیتنی خبثا فلست بصادق

ان لم تمت بالخزى یا ابن بغاء

(انجام آتھم ص: ۲۸۲، روحانی خزائن ج: ۱۱ ص: ۲۸۲)

کیا مرزا طاہر احمد صاحب پسند کریں گے کہ یہ پاکیزہ القاب جو مرزا آنجنمانی کے ذہن و قلم سے نکلے، ان کو، ان کی جماعت کو اور ان کے خاندان کو واپس لوٹا دیئے جائیں اور قادیانی کا بر القاب ان سے واپس لے لیا جائے؟ ”دامن کو ذرا دیکھ، ذرا بند قبا دیکھ۔“

قادیانی یہودی عناصر:

راقم الحروف نے اپنے رسالہ میں یہودیت اور قادیانیت کے درمیان مماثلت کی دس وجوہ ذکر کی تھیں (جن میں پہلی تین علامہ اقبال مرحوم سے نقل کی تھیں) مرزا طاہر احمد صاحب نے بزع خود ایک ایک کا جواب دیا ہے، ان کے جوابات کا حال تو ابھی معلوم ہوگا، اس ضمن میں دلچسپ لطیفہ یہ ہے کہ صاحبزادہ صاحب نے صرف قادیانیت کی طرف سے دفاع کی کوشش نہیں کی، بلکہ وہ یہودیت کی طرف سے بھی وکیل صفائی کی حیثیت سے پیش ہوئے ہیں۔ یہ بھی غالباً بقول اقبال ”قادیانیت کے یہودی عناصر کا کرشمہ ہے۔ یہودیت لائق مبارکباد ہے کہ اسے مرزا طاہر احمد کی شکل میں ایک اچھا وکیل ہاتھ آیا، اور صاحبزادہ صاحب مستحق تبریک ہیں کہ انہیں راقم الحروف کے چھوٹے سے رسالہ کی بدولت یہودیت کی وکالت کا شرف نصیب ہوا۔ نعم الوفاق وحبذا الرفاق:

”ہوئے تم دوست جس کے اس کا دشمن آسماں کیوں ہو؟“

قادیانی اور تصور خدا:

علامہ اقبال مرحوم نے قادیانیت کے حاسد خدا کے تصور، نبی کے متعلق نجومی کے

تخیل اور روح مسیح کے تسلسل کا حوالہ دیتے ہوئے کہا تھا کہ:

”قادیانیت اپنے اندر یہودیت کے اتنے عناصر رکھتی

ہے گویا یہ تحریک ہی یہودیت کی طرف رجوع ہے۔“

(حرف اقبال ص: ۱۲۳)

مرزا طاہر صاحب — مرزائی روایات کے عین مطابق — علامہ کے ان لطیف اشارات کو سمجھنے سے قاصر رہے اور اپنی طرف سے کچھ کا کچھ مطلب گھڑ کے اس پر مشق تنقید فرمانے لگے۔ تصور خدا کے بارے میں علامہ مرحوم نے جو کچھ فرمایا ہے وہ یہ ہے کہ اسلام خدا تعالیٰ کا جو تصور پیش کرتا ہے وہ اس تصور سے یکسر مختلف ہے جو یہودیت پیش کرتی ہے، اور جس کی نقالی کا شرف قادیانیت کو حاصل ہے۔ خدا تعالیٰ کی صفات و جمال سے کسی عاقل کو انکار نہیں، نہ ہو سکتا ہے، مگر اسلام ایک ایسے خدائے رحمن و رحیم کا تصور پیش کرتا ہے جس کی رحمت کسی خاص نسل یا طبقہ کے ساتھ مخصوص نہیں، بلکہ اس کی رحمت عامہ ہر چیز کو محیط ہے، اور اس کی رحمت خاصہ بلا امتیاز رنگ و نسل تمام اہل ایمان و تقویٰ کو عام ہے، الغرض اس کی رحمت اس کے غضب پر غالب ہے۔ ”ان رحمۃی سبقت غضبی“ حدیث قدسی ہے۔ برعکس اس کے بگڑی ہوئی یہودیت خدا کا جو تصور پیش کرتی ہے اس کی ساری دلچسپیاں اسرائیل کے ساتھ مخصوص ہیں، اور اس کے دشمنوں کے لئے قہر و غضب اور تباہی و بربادی کے سوا کچھ نہیں۔ یہ ایک ایسی حقیقت ہے جس سے تاریخ ادیان کا کوئی طالب ناواقف نہیں، اسی کو علامہؒ اپنی خاص اصطلاح میں، حاسد خدا کا تصور، قرار دیتے ہیں جس کے پاس دشمنوں کے لئے لاتعداد زلزلوں اور بیماریوں کی بھرمار ہے۔

ادھر قادیانیت جس خدا کا تصور پیش کرتی ہے اس کی ساری دلچسپیاں مرزا اور مرزائی ذریت پر مرکوز ہیں، اور مرزا کے دشمنوں کے لئے اس کے پاس لاتعداد بیماریاں اور زلزلے ہیں۔ بطور نمونہ چند الہامات، ملاحظہ کیجئے:

✽: ”خدا عرش پر سے تیری تعریف کرتا ہے، خدا تیری

تعریف کرتا ہے اور تیری طرف چلا آتا ہے۔“

(انجام آتھم ص: ۵۵، روحانی خزائن ج: ۱۱ ص: ۵۵)

\*:۔۔۔ ”میں تیرے ساتھ ہوں اور تیرے اہل کے ساتھ

ہوں، میں تیرے بوجھ اٹھاؤں گا۔“ (تذکرہ ص: ۴۴ طبع چہارم)

\*:۔۔۔ ”میں تیرے ساتھ اور تیرے تمام پیاروں کے

ساتھ ہوں۔“ (تذکرہ ص: ۴۴ طبع چہارم)

\*:۔۔۔ ”اور تیرے خاص دوست بنی اسرائیل کے نبیوں

کی مانند ہیں۔“ (تذکرہ ص: ۸۰۴ طبع چہارم)

\*:۔۔۔ ”میں چھپ کر آؤں گا، میں اپنی فوجوں کے ساتھ

اس وقت آؤں گا کہ کسی کو گمان بھی نہ ہوگا۔“

(تذکرہ ص: ۵۴۵ طبع چہارم)

\*:۔۔۔ ”جس نے تیری دشمنی اور مخالفت اختیار کی وہ جہنمی

ہے۔“ (تذکرہ ص: ۱۶۳ طبع چہارم)

\*:۔۔۔ ”جو شخص اس (مرزا کی) کشتی میں سوار ہوگا وہ

غرق ہونے سے نجات پا جائے گا، اور جو انکار کرے گا اس کے لئے

موت درپیش ہے۔“ (تذکرہ ص: ۱۶۸ طبع چہارم)

\*:۔۔۔ ”جو شخص تیری پیروی نہیں کرے گا اور تیری بیعت

میں داخل نہیں ہوگا اور تیرا مخالف رہے گا۔ وہ خدا اور رسول کی

نافرمانی کرنے والا اور جہنمی ہے۔“ (تذکرہ ص: ۳۳۶ طبع چہارم)

\*:۔۔۔ ”جو شخص تیرے گھر کی چار دیواری کے اندر ہوگا

اور وہ جو کامل پیروی اور اطاعت اور سچے تقویٰ سے تجھ میں محو

ہو جائے گا وہ سب طاعون سے بچائے جائیں گے۔“

(تذکرہ ص: ۴۲۸ طبع چہارم)

✽:۔۔۔ ”اگر وہ توبہ نہ کریں گے تو خدا ان پر بلا پر بلا

نازل کرے گا۔ یہاں تک کہ وہ نابود ہو جائیں گے۔“

(تذکرہ ص: ۱۴۰ طبع چہارم)

اس سے قطع نظر کہ مرزا کے یہ ”احلام“ حقائق و واقعات کی ترازو میں کیا وزن رکھتے ہیں اور یہ کہ وہ کون سی آفت ہے جو مسلمانوں پر تو نازل ہوئی، مگر مرزا اور مرزائی ذریت اس سے محفوظ و مصون رہی؟ ان ”الہامات“ میں جو چیز توجہ طلب ہے وہ صرف مرزا اور مرزائی ذریت کے لئے خدائی رحمتوں کی الاٹمنٹ ہے۔ قادیانی خدا کی ساری عنایتیں صرف مرزا کے گھر کی چار دیواری تک محدود ہیں، اور محمد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی امت مرحومہ کے لئے اس کے پاس وباؤں، آفتوں اور زلزلوں کے سوا کچھ نہیں۔

قادیانی لٹریچر کا مطالعہ بتاتا ہے کہ قادیانی الہیات کا تانا بانا یہودیت، عیسائیت اور دیگر مذاہب باطلہ کے ملغوبہ سے تیار کیا گیا ہے، جس میں لوگوں کو احمق بنانے کے لئے جابجا اسلام کی پیوندکاری کی کوشش بھی کی گئی ہے۔ یہ موضوع ایک مستقل تصنیف کا متقاضی ہے، تاہم یہاں چند اشارات پر اکتفا کروں گا۔

قادیانی الہامات میں خدا کے لئے ”رب الافواج“ کی تعبیر اختیار کی گئی ہے (دیکھئے تذکرہ ص: ۱۰۲، ۴۰۹، ۶۳۵)، جس سے اسلامی ادب نا آشنا ہے، اور یہ اصطلاح بائبل (عہد عتیق) سے لی گئی ہے۔

بائبل کے بہت سے مقامات میں خدا کے لئے جسمیت ثابت کی گئی ہے، (تفصیل کے لئے اظہار الحق مؤلفہ مولانا رحمت اللہ مہاجر کی، کا باب چہارم دیکھئے) اس کی تقلید میں قادیانیت خدا کا جسمانی تصور اس طرح پیش کرتی ہے:

”قیوم العالمین ایک ایسا وجود اعظم ہے جس کے لئے

بے شمار ہاتھ، بے شمار پیر، اور ہر ایک عضو اس کثرت سے ہے کہ تعداد

سے خارج اور لا انتہا عرض اور طول رکھتا ہے اور تندوی کی طرح اس

وجود اعظم کی تائیں بھی ہیں۔“

(توضیح مرام ص: ۷۵، روحانی خزائن ج: ۳ ص: ۹۰)

(”قیوم العالمین“ کی یہ جاہلانہ تشبیہ بیک وقت دین

و مذہب اور عقل و دانش کا ماتم ہے۔)

”جبریل کو بھی جو سانس کی ہوا یا آنکھ کے نور کی طرح خدا

تعالیٰ سے نسبت رکھتا ہے اس طرف ساتھ ہی حرکت کرنی پڑتی ہے، یا

یوں کہو کہ خدائے تعالیٰ کی جنبش کے ساتھ ہی وہ بھی بلا اختیار و

بلا ارادہ اسی طور سے جنبش میں آجاتا ہے کہ جیسا کہ اصل کی جنبش سے

سایہ کا ہلنا طبعی طور پر ضروری امر ہے... تو معاً اس کی ایک عکسی تصویر

جس کو روح القدس کے ہی نام سے موسوم کرنا چاہئے محبت صادق

کے دل میں منقش ہو جاتی ہے۔“

(توضیح مرام ص: ۷۹، روحانی خزائن ج: ۳ ص: ۹۲)

بائبل میں کہیں خدا کو ملول بتایا گیا ہے، اور کہیں اس کی طرف ”پچھتانا“ منسوب

کیا گیا ہے، قادیانیت اس کی تقلید میں خدا کے لئے خطا و صواب اور صوم و افطار تجویز کرتی

ہے، جیسا کہ مرزا قادیانی لکھتا ہے: ”اخطی و اصیب۔“ (تذکرہ ص: ۲۶۲ طبع چہارم)،

”افطر و اصوم۔“ (تذکرہ ص: ۲۶۰ طبع چہارم)۔

بائبل میں خدا کی طرف سونا جاگنا منسوب کیا گیا ہے (۱۔ زبور ۴۴: ۲۳۔

۳۵: ۲۳۔ ۷: ۶۔ ۵۹: ۴۔ ۵۳: ۲۰۔ یرمیاہ ۳۱: ۶۲)۔ قادیانیت بھی خدا کو جگا کر سلاتی

ہے اور سلا کر جگاتی ہے، جیسا کہ تذکرہ میں ہے:

”اسھر و انام۔ میں سوتا ہوں اور جاگتا ہوں۔“

(تذکرہ ص: ۲۶۰ طبع چہارم)

بائبل، حضرت یعقوب علیہ السلام سے خدا کی کشتی کراتی ہے، (پیدائش ۳۲: ۲۲،

۲۹) تو قادیانیت خدا کو ایسی حالت میں پیش کرتی ہے کہ وہ مرزا غلام احمد سے ٹھٹھا مخول کر رہا



ہے۔ مرزا آنجہانی ”امام الزماں“ کے بارے میں لکھتا ہے کہ ایسے لوگوں سے:  
 ”خدا تعالیٰ ان سے بہت قریب ہو جاتا ہے، اور کسی قدر  
 پردہ اپنے پاک روشن چہرے پر سے جو نور محض ہے اتار دیتا ہے، اور  
 یہ کیفیت دوسروں کو میسر نہیں آتی، بلکہ وہ تو بسا اوقات اپنے تئیں ایسا  
 پاتے ہیں کہ گویا ان سے کوئی ٹھٹھا کر رہا ہے۔“

(ضرورة الامام ص: ۱۳، روحانی خزائن ج: ۱۳ ص: ۳۸۳)

یہ خدا نہیں بلکہ ابلیس کی ذریت شریفہ تھی جو قادیانی امام الزماں کے سامنے نورانی  
 شکل میں متشکل ہو کر اس سے ٹھٹھا کرنے لگی، اور جسے مرزا آنجہانی نے ”خدا کا پاک چہرہ“  
 سمجھ لیا۔ مرزا سے پہلے بھی بہت سے خام عقل اس ”نورانی سراب“ میں بھٹک کر الحاد و زندقہ  
 کی وادیاں عبور کر چکے ہیں۔ قاتلہم اللہ انی یوفکون۔

یہودیت حضرت عزیر علیہ السلام کو ”خدا کا بیٹا“ کہتی ہے اور قادیانیت خدا کو مرزا  
 کے بیٹے کی شکل میں آسمان سے اتارتی ہے، جیسا کہ تذکرہ میں ہے:

”انا نبشرک بغلام حلیم، مظهر الحق و العلا،

کانّ اللہ نزل من السماء، اسمہ عمانوئیل۔“

(تذکرہ ص: ۲۸۱ طبع چہارم)

لطف یہ کہ یہ ”عمانوئیل“ کا لفظ بھی بائبل ہی سے سرقہ ہے۔

یہود بڑے زور سے نعرہ لگاتے تھے کہ ہم خدا کے بیٹے اور اس کے محبوب ہیں،  
 یہی نعرہ بانی قادیانیت نے اپنایا:

”تو مجھ سے بمنزلہ بیٹے کے ہے۔“

(تذکرہ ص: ۵۲۶ طبع چہارم)

”اسمع ولدی۔ اے میرے بیٹے سن!“

(البشری ج: ۱ ص: ۴۹)

”تو مجھ سے ہے، اور تیرا بھید میرا بھید ہے۔“

(تذکرہ ص: ۲۰۰ طبع چہارم)

”تو ہمارے قدیم پانی سے ہے اور لوگ فٹل (بزولی)

سے۔“ (تذکرہ ص: ۲۰۴ طبع چہارم)

باپ بیٹا ہونے کے لئے ازدواجی رشتہ لازم و ملزوم ہے، قادیانیت اس معمہ کا حل اس طرح پیش کرتی ہے:

”جیسا کہ حضرت مسیح موعود (مرزا قادیانی) نے ایک

موقع پر اپنی حالت یہ ظاہر فرمائی ہے کہ کشف کی حالت آپ پر اس

طرح طاری ہوئی کہ گویا آپ عورت ہیں، اور اللہ تعالیٰ نے رجولیت

کی طاقت کا اظہار فرمایا تھا، سمجھنے والے کے لئے اشارہ کافی ہے۔“

(اسلامی قربانی ص: ۱۲ مصنفہ قاضی یار محمد قادیانی بی او ایل پلڈر)

اور کبھی قادیانی خدا کو مرزا آنجہانی پر زیادہ پیارا آتا ہے تو یہ کیفیت ہوتی ہے کہ:

”آواہن (خدا تیرے اندر اتر آیا)۔“ (تذکرہ ص: ۳۱۱ طبع چہارم)

اگر اس ”قادیانی الہیات“ پر کسی کو یہ اشکال ہو کہ ایک ہی شخص قادیانی خدا کا بیٹا،

اس کا باپ، اس کی بیوی اور پھر اس کا مدخول کیسے ہو گیا؟ تو اسے معلوم رہنا چاہئے کہ قادیانی

دین و مذہب کا انحصار ایک نئے ”واحد الوجودی“ فلسفہ پر ہے جس کے مطابق ایک ہی شخص

”مرزا“ بیک وقت مختلف اور متضاد حیثیات کا حامل ہو سکتا ہے۔ مرزا آنجہانی اس فلسفہ کی

تشریح اس طرح کرتے ہیں:

”مریم کی طرح عیسیٰ کی روح مجھ میں نفخ کی گئی، اور

استعارہ کے رنگ میں مجھے حاملہ ٹھہرایا گیا اور آخر کئی مہینے کے بعد، جو

دس مہینے سے زیادہ نہیں، بذریعہ اس الہام کے مجھے مریم سے عیسیٰ بنایا

گیا، پس اس طور سے میں ابن مریم ٹھہرا (یعنی: خود گل و خود کوزہ خود

کوزہ گر۔ ناقل)“ (کشتی نوح ص: ۴۷، روحانی خزائن ج: ۱۹ ص: ۵۰)

اس فلسفہ کی مزید تشریح اخبار ”الفضل“ قادیان (مورخہ ۱۸ فروری ۱۹۳۰ء) اس طرح کرتا ہے:

”آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی امت کا ایک فرد اور  
”واحد وجود“ ایسا بھی ہوگا جو آپ کی اتباع سے تمام انبیاء کا ”واحد  
مظہر“ اور ”بروز“ ہوگا، اور جس کے ایک ہی وجود سے سب انبیاء کا  
جلوہ ظاہر ہوگا۔ اگر وہ حسب ذیل کلام سے اپنے نطق حقیقت کو بیان  
فرمائے تو کچھ خلاف نہ ہوگا، یعنی:

زندہ شد ہر نبی بہ آمدنم

ہر رسولے نہان بہ پیرا ہنم

(نزل المسح ص: ۱۰۰، روحانی خزائن ج: ۱۸ ص: ۴۷۸)

”میں کبھی آدم، کبھی موسیٰ، کبھی یعقوب ہوں

نیز ابراہیم ہوں، نسلیں ہیں میری بے شمار“

(براہین پنجم ص: ۱۰۳، روحانی خزائن ج: ۲۱ ص: ۱۳۳)

”منم مسیح زمان و منم کلیم خدا

منم محمد و احمد کہ مجتبیٰ باشد“

(تریاق القلوب ص: ۴، روحانی خزائن ج: ۱۵ ص: ۳۴)

قادیانیت کا یہی فلسفہ ”واحد الوجود“ ہے، جو مرزا آنجنمانی کو کرشن بھی بناتا ہے  
اور بے سنگھ بہادر بھی، رودر گوپال بھی اور کلغی اوتار بھی، نعوذ باللہ مسیح بھی اور محمد رسول اللہ  
بھی۔ اور پھر یہی ان کو خدا کا بروز بھی بناتا ہے اور خدا کا ظہور بھی، خدا کا اسم اعلیٰ بھی اور خدا  
کی توحید و تفرید بھی، خدا کی روح بھی اور خدا کی آنکھ، کان بھی، خدا کا عرش بھی اور خدا کا  
وقار بھی، خدا کا بیٹا بھی اور خدا کا باپ بھی، خدا کا مدخول بھی اور اس کی قوت رجولیت کا مظہر  
بھی، خدا کی مانند بھی اور عین خدا بھی، نعوذ باللہ ظاہر ہے کہ ”الہیات“ کا یہ قادیانی گورکھ  
دھند اسلام سے کوئی واسطہ نہیں رکھتا، بلکہ یہودیت اور دیگر ادیان باطلہ کا مسروقہ مال ہے

جو قادیان کی دکانِ الہام میں بے قرینہ ڈھیر کر دیا گیا ہے:  
وہ شیفۃ کہ دھوم تھی حضرت کے زہد کی  
میں کیا کہوں؟ کل مجھے کس کے گھر ملے!

### قادیانیت اور تخیلِ نبوت:

علامہ اقبال مرحوم نے قادیانیت پر دوسری تنقید یہ کی کہ وہ نبی کے متعلق نجومی کا تخیل رکھتی ہے جو یہودیت سے مستعار لیا گیا ہے۔ صاحبزادہ طاہر احمد صاحب اپنی موروثی فہم و ذکاوت کی بنا پر — علامہ کے اس اشارے کو بھی نہیں پاسکے۔ علامہ مرحوم کے مدعا کی وضاحت کے لئے سب سے پہلے یہ ضروری ہے کہ ہم مرزا آنجنہانی سے نبوت کے معنی دریافت کریں۔ پھر یہ دیکھیں کہ قادیانی تخیلِ نبوت عقل و شرع کی کسوٹی پر صحیح ثابت ہوتا ہے یا غلط؟ اور یہ کہ مرزا آنجنہانی نے یہ تخیل کہاں سے اخذ کیا؟

مرزا آنجنہانی نے ”نبی اور نبوت“ کا جو مفہوم پیش کیا ہے وہ ان کی حسب ذیل چند عبارتوں سے واضح ہے:

”جس شخص پر پیش گوئی کے طور پر خدا تعالیٰ کی طرف سے

کسی بات کا اظہار بہ کثرت ہوا ہے ”نبی“ کہا جاتا ہے۔“

(ملفوظات احمدیہ ج: ۱۰ ص: ۳۵۱ طبع ربوہ)

”عربی اور عبرانی زبان میں ”نبی“ کے معنی صرف پیش گوئی

کرنے والے کے ہیں، جو خدا تعالیٰ سے الہام پا کر پیش گوئی

کرے..... ہمارا مذہب نہیں ہے کہ ایسی نبوت پر مہر لگ گئی ہے۔

صرف اس نبوت کا دروازہ بند ہے جو احکام شریعت جدیدہ ساتھ

رکھتی ہے۔“ (”سید براہین پنجم“ ص: ۱۸۱، روحانی خزائن ج: ۲۱

ص: ۳۵۱، ۳۵۲)

”یہ ضرور یاد رکھو کہ اس امت کے لئے وعدہ ہے کہ وہ ہر

ایک ایسے انعام پائے گی جو پہلے نبی اور صدیق پائے ہیں، پس منجملہ ان انعامات کے وہ نبوتیں اور پیش گوئیاں ہیں جن کی رو سے انبیاء علیہم السلام نبی کہلاتے رہے۔“

(ایک غلطی کا ازالہ حاشیہ ص: ۵، روحانی خزائن ج: ۱۸ ص: ۲۰۹)

”ہر ایک شخص اپنی گفتگو میں ایک اصطلاح اختیار کر سکتا

ہے، لکل ان یصطلح، سو خدا کی یہ اصطلاح ہے، جو کثرت

مکالمات و مخاطبات کا نام اس نے ”نبوت“ رکھا ہے یعنی ایسے

مکالمات جن میں اکثر غیب کی خبریں دی گئی ہیں۔“

(چشمہ معرفت ص: ۳۲۵، روحانی خزائن ج: ۲۳ ص: ۳۴۱)

ان حوالوں سے پتہ چلتا ہے کہ مرزا کے نزدیک نبوت پیش گوئیوں کا نام ہے اور جس شخص کو پیش گوئیوں کے الہام کثرت سے ہوتے ہوں وہ ”نبی“ ہے، اسی بنا پر پہلے نبی، نبی کہلاتے تھے، یہی قادیانی خدا کی اصطلاح ہے، اور اسی کے مطابق مرزا آنجہانی کو نبوت کا ادعا ہے۔ قادیانیت کا یہ تصور نبوت یکسر لچر اور نبوت کے اعلیٰ و ارفع منصب کی تذلیل ہے۔ کیونکہ اول تو نبوت کو پیش گوئیاں ٹھہرانا ہی غلط ہے۔ پیش گوئیاں نہ تو نبوت کی حقیقت میں داخل ہیں، نہ نبوت کو طرداً و عکساً لازم ہیں (کہ کوئی شخص الہام کے دعویٰ کے ساتھ پیش گوئیاں کیا کرے تو نبی کہلائے، اور نہ کرے تو نبی نہ ہو) کون نہیں جانتا کہ حضرت موسیٰ علیہ السلام کو کوہ طور پر اور آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کو غار حرا میں جب پہلی وحی ہوئی تو وہ منصب نبوت پر فائز تھے حالانکہ انہوں نے نہ پیش گوئیاں کی تھیں، نہ پیش گوئیوں کا انہیں کوئی الہام ہوا تھا۔ قادیانی تخیل نبوت کے مطابق وہ معاذ اللہ نبی نہیں ہوں گے۔

دوم:۔۔۔ قرآن مجید میں حضرات انبیائے کرام کے اوصاف و اخلاق، ان کے فضائل و کمالات ان کے منصب و مرتبہ اور ان کی تعلیمات و ہدایات کی مفصل تشریح فرمائی گئی ہے مگر کسی جگہ ادنیٰ اشارہ تک نہیں کیا گیا کہ نبوت پیش گوئیوں کا نام ہے، نہ کسی نبی نے کبھی دعویٰ کیا کہ چونکہ میں الہام کے ذریعہ بکثرت پیش گوئیاں کرتا ہوں اس لئے مجھے نبی مان لو۔



سوم: ... حدیث و تفسیر اور اصول و کلام کے ضخیم ترین اسلامی ذخیرہ میں بھی اس قادیانی تخیل کا پتہ نشان نہیں ملتا کہ وہ نبی ہے جو الہامی پیش گوئیوں کی بارگاہ لگا دے۔

چہارم: ... اُمتِ مرحومہ میں دورِ صحابہ سے لے کر آج تک ہزاروں افراد موجود رہے ہیں جو الہامِ خداوندی اور مکالمہ و مخاطبہ الہیہ سے سرفراز تھے، ان میں سے بعض حضرات نے بذریعہ الہام بہت سی پیش گوئیاں بھی کیں جو حرفِ بحرف صحیح نکلیں، مگر مرزا آنجمانی کی طرح نہ کسی کے سر میں دعویٰ نبوت کا سودا سایا نہ اُمت کے کسی ذی ہوش نے ان الہامی پیش گوئیوں کی بنا پر انہیں ”نبی“ مانا۔

پنجم: ... قادیانیت کہتی ہے کہ نبی وہ ہے جو بذریعہ الہام کثرت سے پیش گوئیاں کرے، مگر وہ یہ بتانے سے قاصر ہے کہ اس ”کثرت“ سے کیا مراد ہے؟ اور اس کی حد کہاں سے شروع ہوتی ہے؟ ایک شخص کم از کم کتنی الہامی پیش گوئیاں کر کے نبی بن جاتا ہے؟ اس کے لئے قادیانیت کوئی پیمانہ تجویز نہیں کرتی، ایسی صورت میں کثرت الہام کے ہر مدعی کے لئے نبوت کا دروازہ کھل جاتا ہے۔

ششم: ... قادیانی تخیل نبوت کی رو سے ہر کاہن اور نجومی الہام کے دعوے سے نبی بن سکتا ہے، کیونکہ پیش گوئیاں یہ لوگ بھی کرتے رہتے ہیں، انہیں شیطان ”الہام“ بھی کرتا ہے، چنانچہ قرآن کریم میں ہے: ”وان الشیاطین لیوحون الی اولیائہم۔“ اور جیسا کہ احادیثِ نبویہ میں ہے، ان ”الہامات“ میں انہیں آئندہ کی خبریں بھی القا کی جاتی ہیں۔ یہ ہے قادیانیت کا نبی کے بارے میں نجومی کا تخیل — جس کی علامہ اقبال مرحوم شکایت فرما رہے ہیں۔

اسلامی نقطہ نظر کے مطابق رسالت و نبوت صرف پیش گوئیاں کرنے کا نام نہیں، جیسا کہ مرزا صاحب نے سمجھا ہے، بلکہ یہ اس رفیع الشان منصب کا نام ہے، جسے ہمارے علم عقائد میں ”سفارۃ بین اللہ و بین الخلق“ سے تعبیر کیا گیا ہے۔ مطلب یہ کہ اللہ تعالیٰ کی ذاتِ غیب الغیب ہے، اس کے احکام و مرضیات کی اطلاع ہر کس و نا کس کو نہیں ہو سکتی۔ خدا تعالیٰ کے احکامات و مرضیات بندوں تک پہنچانے کے لئے جن برگزیدہ

شخصیتوں کو چن لیا جاتا ہے، انہیں نبی اور رسول کہتے ہیں۔ اور اس پیغام رسانی کے منصب پر فائز کرنے کا نام نبوت و رسالت ہے۔ نبی صرف پیش گوئیاں کرنے کے لئے نہیں بنائے جاتے بلکہ بندوں کو دنیا و آخرت کے تمام مصالح (جوان کی عقل سے بالاتر ہیں) بتانے کے لئے ان کو مبعوث کیا جاتا ہے۔ ان مصالح میں احکام شرعیہ، مرضیات الہیہ اور مبدا و معاد کی وہ تمام چیزیں داخل ہیں جن کا تعلق بندوں کی صلاح و فلاح سے ہے اور یہی وہ امور غیبیہ ہیں جن کو آیت: ”وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ“ اور ”فَلَا يَظْهَرُ عَلَى غَيْبِهِ أَحَدًا“ میں ارشاد فرمایا ہے۔ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے ذریعہ چونکہ دین کی تکمیل ہو چکی، مرضیات الہی کا مکمل دستور انسانیت کو عطا کر دیا گیا، اور دنیا و آخرت کے تمام مصالح بیان فرمادیئے گئے، اس لئے منصب نبوت کے بند ہو جانے کا اعلان عام کر دیا گیا:

”ان الرسالة و النبوة قد انقطعت، فلا رسول

بعدي ولا نبي بعدي۔“ (ترمذی ج: ۲ ص: ۶۲ ابواب الروایا)

ترجمہ: ”رسالت و نبوت قطعاً بند ہو چکی، پس میرے

بعد نہ کوئی رسول ہو گا نہ نبی۔“

مرزا غلام احمد صاحب چونکہ منصب نبوت سے نا آشنا تھے، ادھر بائبل میں کہیں دیکھ لیا کہ نبوت کا لفظ پیش گوئی کے معنی میں استعمال کیا گیا ہے (بائبل میں کئی جگہ یہ اصطلاح استعمال ہوئی ہے اور مرزا صاحب کو ازالہ ص: ۶۲۹ میں اسی اصطلاح سے غلطی لگی ہے) اس سے انہوں نے سمجھا کہ بس نبوت وہ پیش گوئیاں ہیں جن کی رو سے انبیاء علیہم السلام نبی کہلاتے ہیں۔ (ایک غلطی کا ازالہ) ”چوں ندیدند حقیقت رہ افسانہ زدند۔“ مرزا صاحب کی مقام نبوت سے اسی بے خبری کا نتیجہ تھا کہ مرزا صاحب ایک زمانہ تک تو مدعی نبوت پر لعنتیں بھیجتے رہے، بعد میں خود نبوت کے مدعی بن بیٹھے اس تبدیلی کی وجہ بیان کرتے ہوئے مرزا بشیر الدین صاحب لکھتے ہیں:

”حضرت مسیح موعود (مرزا صاحب) دو مختلف اوقات

میں نبی کی دو مختلف تعریفیں کرتے رہے ہیں، ۱۹۰۱ء سے پہلے آپ

نبی کی اور تعریف کرتے تھے، اور بعد میں آپ نے جب اللہ تعالیٰ کی متواتر وحی پر غور فرمایا، اور قرآن کریم کو دیکھا تو اس سے نبی کی تعریف اور معلوم ہوئی۔“ (حقیقۃ النبوة ص: ۱۲۲)

”اس سے معلوم ہوا کہ نبوت کا مسئلہ آپ پر ۱۹۰۰ء یا ۱۹۰۱ء میں کھلا۔“ (حقیقۃ النبوة ص: ۱۲۱)

یعنی ۱۹۰۱ء تک نہ تو مرزا صاحب کو اپنی ”متواتر وحی“ پر غور کرنے کا موقع میسر آیا تھا، نہ انہیں کبھی قرآن کریم کو کھول کر دیکھنے کا اتفاق ہوا تھا، نہ ان پر مقام نبوت کھلا تھا، یہ ساری سعادتیں مرزا صاحب کو، بقول میاں صاحب، ۱۹۰۱ء کے بعد میسر آئیں، کیسے آئیں؟ اس کی سرگزشت میاں صاحب یوں بیان فرماتے ہیں:

”اس عقیدہ کے بدلنے کا پہلا ثبوت ”اشتہار ایک غلطی کا ازالہ“ سے معلوم ہوتا ہے جو پہلا تحریری ثبوت ہے، ورنہ مولوی عبدالکریم صاحب کے خطبات جمعہ سے معلوم ہوتا ہے کہ ۱۹۰۰ء سے اس خیال کا اظہار شروع ہو گیا تھا، گو پورے زور اور پوری صفائی سے نہ تھا، چنانچہ اسی سال میں مولوی صاحب نے اپنے ایک خطبہ میں حضرت مسیح موعود (مرزا صاحب) کو مرسل الہی ثابت کیا، اور ”لا نفرق بین احد منهم“ والی آیت کو آپ پر چسپاں کیا اور حضرت مسیح موعود نے اس خطبہ کو پسند بھی فرمایا، اور یہ خطبہ اسی سال کے الحکم میں چھپ چکا ہے لیکن معلوم ہوتا ہے کہ پورا فیصلہ اس عقیدہ کا ۱۹۰۱ء میں ہی ہوا ہے۔“ (حقیقۃ النبوة ص: ۱۲۳)

”اس سے ثابت ہوتا ہے کہ ۱۹۰۱ء میں آپ نے اپنے عقیدے میں تبدیلی کی ہے (القول الفصل، میں میاں صاحب نے ایک سال کی اور توسیع فرمادی ہے، اور تبدیلی عقیدہ کا سال ۱۹۰۱ء یا ۱۹۰۲ء تجویز فرمایا ہے۔ ناقل) اور ۱۹۰۰ء ایک درمیانی عرصہ ہے

جودونوں خیالات کے درمیان برزخ کے طور پر حد فاصل ہے۔“

(حقیقۃ النبوة ص: ۱۲۱)

میاں صاحب کی ساری تقریر کا حاصل یہ ہے کہ مرزا صاحب ۱۹۰۱ء یا ۱۹۰۲ء تک نبوت کی حقیقت اور ”نبی“ کی تعریف سے ناواقف تھے، اس لئے اپنے نبی ہونے سے انکار فرماتے تھے، مولوی عبدالکریم کے خطبات کے دوران نبوت کے خیالات کا اظہار شروع ہوا، ایک دو سال برزخی کیفیت رہی، کہ نہ کھل کر نبوت کا اقرار، نہ صاف انکار، بالآخر ۱۹۰۱ء یا ۱۹۰۲ء میں مرزا صاحب پر مسئلہ نبوت منکشف ہوا، یوں ان کی نبوت کا فیصلہ ہوا، اور وہ پورے زور اور صفائی سے نبی کہلانے لگے۔ میاں صاحب کی اس تقریر سے مرزا صاحب کی علمی برتری کا جو نقش قاری کے ذہن پر مرتسم ہوتا ہے، اسے مرزائی لاہوری جماعت کے آرگن ”پیغام صلح“ کی زبانی سننا بہتر ہوگا:

”جناب میاں صاحب کے اس اعلان کے مطابق حضرت مسیح موعود (مرزا صاحب) کی یہ کم علمی اور نادانی ایسی نادانی کے ذیل میں آتی ہے جسے — تو بہ توبہ، نقل کفر، کفر نباشد — نعوذ باللہ، جہل مرکب کہتے ہیں کہ باوجود اس بات کے کہ آپ نبی کی تعریف تو نہ جانتے تھے، مگر حالت یہ تھی کہ جہاں کسی نے آپ کی طرف دعویٰ نبوت منسوب کیا اور آپ لگے مدعی نبوت پر لعنتیں کرنے، جو شخص ایک بات کو نہیں جانتا (جیسا کہ بقول میاں صاحب، مرزا صاحب نبوت کو نہیں جانتے تھے... ناقل) اور پھر اس کے علم پر اس قدر اصرار کرے کہ لعنتوں اور مباہلوں پر اتر آئے، اس سے بڑھ کر دنیا میں ”جہل مرکب کا وارث“ کون ہو سکتا ہے؟ خود نبی ہیں اور خیر سے پتہ نہیں کہ میں نبی ہوں، اور باوجود اس لاعلمی اور ”جہل مرکب“ کے آپ (مرزا صاحب) مدعی نبوت پر یا دوسرے لفظوں میں خود اپنے آپ پر لعنتیں بھیجنے میں ذرا تامل نہیں کرتے



— یہ بھونڈی اور قابل شرم تصویر جو جناب میاں صاحب نے حضرت مسیح موعود (مرزا صاحب) کی کھینچی ہے کیا اس قابل ہے کہ کسی عقل مند کے سامنے پیش کی جاسکے؟“

(پیغام صلح ۲۷ اپریل ۱۹۳۴ء، ص: ۶، کالم: ۱)

بہر حال مرزا بشیر الدین صاحب کے نزدیک مرزا صاحب ۱۹۰۱ء یا ۱۹۰۲ء تک نبوت کی حقیقت سے نا آشنا اور نبی کی صحیح تعریف سے ناواقف تھے، ہم دیکھتے ہیں کہ بعد کے چھ سات سالوں میں بھی ان کے علم میں کوئی اضافہ نہیں ہوا، اس لئے اگر وہ بائبل کی تقلید میں نبوت کے معنی ”الہامی پیش گوئیاں کرنا“ بتاتے ہیں تو وہ اپنی ناواقفی (یا ”پیغام صلح“ کے الفاظ میں ”جہل مرکب“) کے ہاتھوں مجبور ہیں، اور یہ ارشاد نبویؐ (جو آپؐ نے ابن صیاد کے بارے میں فرمایا تھا) ان پر پوری طرح صادق آتا ہے: ”اُحْسَاءُ فُلْنِ تَعْدُو قَدْرَکَ“۔

مرزا آنجہانی نبی تھے یا نجومی:

مرزا صاحب نے ”نبی“ اور ”نجومی“ کے درمیان جو فرق و امتیاز بیان کیا ہے اس کا خلاصہ صاحبزادہ مرزا طاہر احمد صاحب حسب ذیل نقل کرتے ہیں:

”اگرچہ نجومی بھی اٹکل پچو سے پیش گوئیاں کرتے ہیں اور بعض پیش گوئیاں ان کی سچی بھی نکل آتی ہیں، لیکن انہیں انبیاء کے برعکس کبھی غیب پر غلبہ عطا نہیں کیا جاتا، اور ان کی اکثر پیش گوئیاں جھوٹی اور خیالی نکلتی ہیں، نیز ان میں تائید الہی اور نصرت باری تعالیٰ کی کوئی علامتیں نہیں پائی جاتیں۔ جبکہ انبیاء علیہم السلام کی پیش گوئیوں میں ان کے غلبہ کے اٹل وعدے اور اللہ تعالیٰ کی نصرت اور تائید کے روشن نشانات ملتے ہیں۔ مزید برآں نجومی غیب کی خبریں خدا کی طرف منسوب نہیں کرتے، جبکہ انبیاء علیہم السلام غیب کی خبریں اپنی



طرف نہیں بلکہ اللہ تعالیٰ کی طرف سے سناتے ہیں اور تائید الہی کے  
بکثرت نشان اپنے ساتھ رکھتے ہیں۔“

(ربوہ سے تل ایب تک پر مختصر تبصرہ ص: ۲۱)

اس سے قطع نظر کہ مرزا صاحب کی اس عبارت میں کتنی غلط فہمیاں ہیں، جناب  
صاحبزادہ مرزا طاہر احمد اور ان کی جماعت کی توجہ صرف ایک نکتہ کی جانب مبذول کرانا  
چاہتا ہوں، وہ یہ کہ مرزا صاحب خود اپنے مقرر کردہ معیار پر ”نبی“ ثابت ہوتے ہیں یا  
”نجوی“؟ مرزا طاہر احمد صاحب اپنے جد بزرگوار کی ایسی تحدی آمیز پیش گوئیاں پیش  
کریں جو اپنے معنی و مفہوم کے لحاظ سے بالکل واضح اور قطعی ہوں، اور جن کو مرزا صاحب  
نے اپنے صدق و کذب کا معیار ٹھہرایا ہو، اور پھر وہ بغیر کسی تاویل و حیلہ کے پوری ہوگئی  
ہوں۔ میں بحول اللہ قوتہ ایک ایک کے مقابلہ میں ان کی ایسی دو دو پیش گوئیاں پیش کرتا  
جاؤں گا جو کبھی شرمندہ وقوع نہیں ہوئیں، نہ قیامت تک ہوں گی، اس کے بعد میں جناب  
مرزا طاہر احمد صاحب ہی کو منصف ٹھہراؤں گا کہ آیا مرزا صاحب کی حیثیت ایک نبی کی  
ثابت ہوتی ہے یا ایک نجوی، کاہن، اڑڑ پوپ کی؟ کیا صاحبزادہ اور ان کے رفقاء جماعت  
کے لئے اس میں عبرت و موعظت اور کوئی سبق ہے؟

بندہ پرور منصفی کرنا خدا کو دیکھ کر!

### تسلل روح مسیح کا عقیدہ:

مرزا غلام احمد قادیانی ”آئینہ کمالات اسلام“ میں لکھتے ہیں:  
”حضرت مسیح علیہ السلام کو دو مرتبہ یہ موقع پیش آیا کہ ان  
کی روحانیت نے قائم مقام طلب کیا، اول جبکہ ان کے فوت ہونے  
پر چھ سو برس گزر گیا..... تب بہ اعلام الہی مسیح کی روحانیت جوش میں  
آئی..... اور خدا تعالیٰ سے اپنا قائم مقام چاہا، تب ہمارے نبی  
مبعوث ہوئے۔ دوسری مرتبہ مسیح کی روحانیت اس وقت جوش میں

آئی..... اور انہوں نے دوبارہ مثالی طور پر دنیا میں اپنا نزول چاہا..... تو خدا تعالیٰ نے اس خواہش کے موافق..... ایسا شخص بھیج دیا جو ان کی روحانیت کا نمونہ تھا، وہ نمونہ مسیح علیہ السلام کا روپ بن کر مسیح موعود کہلایا، کیونکہ حقیقت عیسویہ کا اس میں حلول تھا..... اس لئے وہ عیسیٰ کے نام سے موسوم کیا گیا کیونکہ حضرت عیسیٰ کی روحانیت نے قادر مطلق عز اسمہ سے بوجہ اپنے جوش کے اپنی ایک شبیہ چاہی، اور چاہا کہ حقیقت عیسویہ اس شبیہ میں رکھی جائے تا اس شبیہ کا نزول ہو..... اور یہ بھی کھلا کہ یوں مقدر ہے کہ ایک زمانہ گزرنے کے بعد..... پھر مسیح کی روحانیت سخت جوش میں آکر جلالی طور پر اپنا نزول چاہے گی، تب ایک قہری شبیہ میں اس کا نزول ہو کر اس زمانہ کا خاتمہ ہو جائے گا۔ تب آخر ہوگا، اور دنیا کی صف لپیٹ دی جائے گی، اس سے معلوم ہوا کہ..... مسیح کی روحانیت کے لئے یہی مقدر تھا کہ تین مرتبہ دنیا میں نازل ہو۔“

مرزا آنجنمانی کے اس اقتباس سے واضح ہے کہ وہ مسیح کی روحانیت کے تین بار دنیا میں نازل ہونے اور تین مختلف قابلوں میں حلول کرنے کا عقیدہ رکھتے ہیں، اسی کی طرف اشارہ کرتے ہوئے علامہ اقبال مرحوم نے کہا تھا کہ قادیانیت، یہود کی تقلید میں روح مسیح کے تسلسل کا عقیدہ رکھتی ہے، صاحبزادہ طاہر احمد صاحب اس کو سراسر لغو، مہمل اور بے بنیاد عقیدہ قرار دیتے ہوئے لکھتے ہیں:

”روح مسیح کے تسلسل کا عقیدہ محض ایک فرضی قصہ ہے،

جو معترض کا ایجاد کردہ ہے، ورنہ نہ تو یہود اس کے قائل ہیں، نہ

مسلمان، نہ عہد نامہ قدیم میں اس کا کوئی ذکر ملتا ہے، نہ قرآن و

حدیث میں۔“ (ربوہ سے تل ابیب تک پر مختصر تبصرہ ص: ۲۶)

ہمیں صاحبزادہ صاحب کی اس تحقیق سے اتفاق ہے البتہ ہم معترض کی جگہ ”مرزا

آنجمانی“ کا لفظ تجویز کرتے ہیں۔ کیونکہ وہی اس فرضی عقیدہ کا بہ تقلید یہود موجد ہے۔

### قادیانی نظریات اور قرآن و حدیث:

روح مسیح کے تسلسل کی بحث میں صاحبزادہ صاحب نے چند نئے نکات بھی اٹھائے ہیں، بے انصافی ہوگی اگر ان کے ان جدید نکات کا تجزیہ نہ کیا جائے، سب سے پہلا نکتہ موصوف کا یہ ادعا ہے کہ:

”احمدیت کے نظریات چونکہ اسرار قرآن و حدیث پر مبنی

ہیں، لہذا احمدیت کے لئے ایسے غیر اسلامی عقیدہ پر ایمان رکھنے کا

سوال ہی پیدا نہیں ہوتا۔“ (ربوہ سے قل ایب تک پر مختصر تبصرہ ص: ۲۶)

صاحبزادہ صاحب کے اس خلاف واقعہ ادعا کی مثال ایسی ہے جیسا کہ عیسائی صاحبان تین خدا ماننے کے باوجود یہ دعویٰ کیا کرتے ہیں کہ ہم توحید کا عقیدہ رکھتے ہیں۔ ورنہ واقعہ یہ ہے کہ قادیانیوں کو نہ قرآن کریم پر ایمان ہے، نہ حدیث نبوی پر، نہ اجماع اُمت پر۔ قرآن کریم پر ان کو اس لئے ایمان نہیں کہ ان کے عقیدہ کے مطابق محمد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم پر جو قرآن نازل ہوا تھا وہ ۱۸۵۷ء (مطابق ۱۲۷۴ھ) میں دنیا سے اٹھ گیا تھا۔ (دیکھئے ازالہ اوہام ص: ۲۵ حاشیہ، روحانی خزائن حاشیہ ج: ۳ ص: ۲۹۰)

مرزا طاہر احمد صاحب کے چچا جناب صاحبزادہ مرزا بشیر الدین احمد ایم اے نے قرآن کی گمشدگی کا نو ح یوں کیا ہے:

”ہم کو یہ کہا جاتا ہے کہ قرآن کے ہوتے ہوئے کسی شخص

کو ماننا ضروری کیسے ہو گیا ہم کہتے ہیں کہ قرآن کہاں موجود ہے اگر

قرآن موجود ہوتا تو کسی کے آنے کی کیا ضرورت تھی، مشکل تو یہی

ہے کہ قرآن دنیا سے اٹھ گیا ہے۔ اسی لئے تو ضرورت پیش آئی کہ محمد

رسول اللہ کو بروزی طور پر دوبارہ دنیا میں مبعوث کر کے آپ پر قرآن

شریف اتارا جاوے۔“

(کلمۃ الفصل ص: ۱۷۳، مندرجہ رسالہ ریویو مارچ، اپریل ۱۹۱۵ء)

قادیانی صاحبان کو قرآن کریم پر ایمان کیونکر ہو سکتا ہے جبکہ ان کے پیشوا مرزا آنجہانی، قرآن کریم کی غلطیاں نکالنے کے لئے تشریف لائے تھے، جو بقول گلاب شاہ مجذوب کے تفسیروں کی وجہ سے پیدا ہو گئی ہیں۔ (دیکھئے ازالہ ادہام ص: ۷۰۸)

قرآن کریم کی طرح حدیث نبوی پر بھی قادیانی صاحبان کو ایمان نہیں، مرزا آنجہانی نے لکھا ہے:

۱: "... خدا نے مجھے اطلاع دے دی ہے کہ یہ تمام حدیثیں جو پیش کرتے ہیں تحریف معنوی یا لفظی میں آلودہ ہیں، اور یا سرے سے موضوع ہیں اور جو شخص حکم ہو کر آیا ہے (یعنی خود مابدولت مرزا آنجہانی۔ ناقل) اس کا اختیار ہے کہ حدیثوں کے ذخیرہ میں سے جس انبار کو چاہے خدا سے علم پا کر قبول کرے، اور جس ڈھیر کو چاہے خدا سے علم پا کر رد کر دے۔"

(اربعین ۳ ص: ۵۹، روحانی خزائن ج: ۱۷ ص: ۴۰۱)

۲: "... اور ہم... خدا تعالیٰ کی قسم کھا کر بیان کرتے ہیں کہ میرے اس دعویٰ کی حدیث بنیاد نہیں، بلکہ قرآن اور وہ وحی ہے جو میرے پر نازل ہوئی ہے، ہاں تائیدی طور پر ہم وہ حدیثیں بھی پیش کرتے ہیں جو قرآن شریف کے مطابق ہیں اور میری وحی کے معارض نہیں، اور دوسری حدیثوں کو ہم ردی کی طرح پھینک دیتے ہیں۔"

(اعجاز احمدی ص: ۳۰، روحانی خزائن ج: ۱۹ ص: ۱۴۰)

۳: "... جبکہ مجھے اپنی وحی پر ایسا ہی ایمان ہے جیسا کہ توریت اور انجیل اور قرآن کریم پر، تو کیا انہیں مجھ سے یہ توقع ہو سکتی ہے کہ میں ان کے ظنیات بلکہ موضوعات کے ذخیرہ کو سن کر اپنے یقین کو چھوڑ دوں، جس کی حق الیقین پر بنا ہے۔"

(اربعین ۴ ص: ۱۱۲، روحانی خزائن ج: ۱۷ ص: ۴۵۴)

ان حوالوں سے واضح ہے کہ قادیانی نظریات کی اصل بنیاد مرزا آنجنمانی کی وحی ہے، جو بقول ان کے ”حق الیقین“ ہے، اس کے مقابلہ میں احادیث متواترہ اور دین اسلام کے اجماعی عقائد کی ان کے نزدیک کوئی قیمت نہیں، نہ ان پر کسی قادیانی کا ایمان ہو سکتا ہے۔ ہاں! مرزا طاہر احمد صاحب اس قرآن پر اپنے نظریات کو مبنی قرار دیتے ہیں جو قادیان کے قریب نازل ہوا اور اس حدیث پر جو بذریعہ ٹیچی وغیرہ مرزا آنجنمانی پر ”وحی“ کی جاتی تھی تو بجا اور درست ہے۔ کیونکہ مرزا قادیانی کو دعویٰ ہے کہ اس پر قرآن دوبارہ نازل ہوا ہے، اسی لئے قادیانی صاحبان یہ گیت گایا کرتے ہیں:

”پہلی بعثت میں محمد ہے تو اب احمد ہے

تجھ پہ پھر اترتا ہے قرآن رسول قدنی“

(الفضل ٹائٹل ۱۶ اکتوبر ۱۹۲۲ء)

یہی قادیانی قرآن ہے جس کے بارے میں قادیانی خدا کہتا ہے: ”انا انزلناہ

قریباً من القادیان“۔ (حقیقۃ الوحی ص: ۸۸، روحانی خزائن ج: ۲۲ ص: ۹۱)

اور یہی قادیانی قرآن ہے جس میں مرزا غلام قادر کی قرأت کے مطابق قادیان کا نام لکھا ہوا مرزا آنجنمانی نے پکشم خود ملاحظہ فرمایا۔

(ازالہ ص: ۷۷ حاشیہ، روحانی خزائن ج: ۳ ص: ۱۳۰ حاشیہ)

اسی قادیانی قرآن میں یہ دو آیتیں درج ہیں، جو مسلمانوں کے قرآن میں نہیں:

”خسف القمر والشمس فی رمضان فبأی الاء

ربکما تکذبان۔“ (تذکرہ ص: ۴۴۱ طبع چہارم)

اسی قادیانی قرآن کی شان میں مرزا آنجنمانی قصیدہ خوانی کرتے ہیں:

”آنچه من بشنوم زوجی خدا

بخدا پاک دانش ز خطا

ہمچو قرآن منزہ اش دامن

از خطا ہا ہمیں است ایمانم



بخدا ہست ایں کلام مجید  
از دہان خدائے پاک و وحید  
آن یقینے کہ بود عیسیٰ را  
بر کلامے کہ شد برو القا  
واں یقین کلیم بر تورات  
واں یقین ہائے سید السادات  
کم نیم ز اں ہمہ بروے یقین  
ہر کہ گوید دروغ ہست لعین“

(نزل المسح ص: ۱۰۱، روحانی خزائن ج: ۱۸ ص: ۴۷۷، ۴۷۸)

ترجمہ: ”... میں خدا کی جو وحی سنتا ہوں خدا کی قسم اسے خطا سے پاک جانتا ہوں۔ قرآن کی طرح خطاؤں سے منزہ سمجھتا ہوں یہی میرا ایمان ہے۔ بخدا یہ کلام مجید ہے جو خدائے پاک یکتا کے منہ سے نکلا ہے۔ جو یقین عیسیٰ“ کو اپنی وحی پر، موسیٰ کو توریت پر اور حضور کو قرآن پر تھا، میں از روئے یقین ان سب سے کم نہیں ہوں، جو جھوٹ کہے وہ لعنتی ہے۔“ (دریں چہ شک؟... ناقل)

اسی قادیانی قرآن کے بارے میں مرزا آنجمانی نے کہا ہے کہ:

”قرآن شریف خدا کی کتاب اور میرے منہ کی باتیں ہیں۔“ (تذکرہ ص: ۹۹ طبع چہارم)

اور اسی بنا پر مرزا آنجمانی کو خوش فہمی ہے کہ:

”میں تو بس قرآن ہی کی طرح ہوں، اور عنقریب میرے ہاتھ پر ظاہر ہوگا، جو کچھ فرقان سے ظاہر ہوا۔“

(تذکرہ ص: ۶۷۴ طبع چہارم)

ظاہر ہے کہ اس قادیانی وحی کے بعد مرزا طاہر احمد کو مسلمانوں کے قرآن و حدیث

کی ضرورت نہیں رہ جاتی کیونکہ اس کے مقابلے میں ان کے اپنے گھر کا قرآن موجود ہے، لیکن اگر صاحبزادہ صاحب بصد ہوں کہ ان کے نظریات مسلمانوں کے قرآن و حدیث پر مبنی ہیں، تو میں ان سے یہ دریافت کرنے کی اجازت چاہتا ہوں کہ:

الف:۔۔۔ پھر ان کے نظریات مسلمانوں سے علیحدہ کیوں ہیں؟

ب:۔۔۔ قرآن و حدیث کے ہوتے ہوئے انہیں قادیان میں نیانہی گھڑنے کی کیوں ضرورت ہوئی؟

ج:۔۔۔ مرزا آنجنہانی کی قرآن کی مثل وحی پر ایمان لانے کا حکم کس قرآن و حدیث میں لکھا ہے؟

د:۔۔۔ یہ کس قرآن و حدیث کا حکم ہے کہ محمد عربی کی پیروی نجات کے لئے کافی نہیں بلکہ تیرہویں صدی کے بعد مرزا آنجنہانی کی پیروی مدار نجات ہے؟

ہ:۔۔۔ یہ کس قرآن و حدیث میں لکھا ہے کہ ”ہر شخص ترقی کر سکتا ہے اور بڑے سے بڑا مرتبہ پاسکتا ہے، حتیٰ کہ محمد رسول اللہ سے بھی بڑھ سکتا ہے۔“

و:۔۔۔ یہ کس قرآن و حدیث میں لکھا ہے کہ تیرہویں صدی کے بعد مرزا غلام احمد قادیانی کو محمد رسول اللہ تصور کیا جائے اور آنحضرت کی مکی بعثت کو تیرہویں صدی تک محدود سمجھا جائے؟

ز:۔۔۔ یہ کس قرآن و حدیث میں لکھا ہے کہ مرزا کے منکر کافر اور جہنمی ہیں؟

ح:۔۔۔ یہ کس قرآن و حدیث میں لکھا ہے کہ مسیح مرزا غلام احمد کے بروزی روپ میں آئے گا؟

ط:۔۔۔ یہ کس قرآن و حدیث میں ہے کہ مسیح کی روحانیت تین بار دنیا میں نازل ہوگی؟

ی:۔۔۔ یہ کس قرآن و حدیث میں لکھا ہے کہ مرزا غلام احمد اور اس کی ذریت کو دائرہ اسلام سے خارج قرار دیا جائے گا؟

## حضرت عیسیٰ کا مشن:

صاحبزادہ طاہر احمد صاحب لکھتے ہیں:

”احمدیت کا عقیدہ یہود کے عقیدہ کے بالکل برعکس یہ ہے کہ جس مسیح کے ظہور کی خبر بائبل میں دی گئی تھی وہ مسیح تو ظاہر ہو کر اور اپنا مشن پورا کر کے فوت بھی ہو چکے ہیں۔“

(ربوہ سے تل ابیب تک پر مختصر تبصرہ ص: ۲۷)

صاحبزادہ صاحب نے غالباً قسم کھا رکھی ہے کہ وہ جو کچھ لکھیں گے اپنے مرشد کی تحقیق کے قطعاً خلاف لکھیں گے، صاحبزادہ صاحب لکھتے ہیں کہ حضرت مسیح اپنے مشن میں کامیاب ہوئے اس کے برعکس مرزا آنجہانی نے لکھا ہے کہ:

۱:۔۔۔ ”حضرت مسیح تو انجیل کو ناقص کی ناقص ہی چھوڑ کر

آسمانوں پر جا بیٹھے۔“

۲:۔۔۔ ”گو حضرت مسیح جسمانی بیماروں کو اس عمل

(مسمریزم) کے ذریعہ سے اچھا کرتے رہے، مگر ہدایت اور توحید اور دینی استقامتوں کے کامل طور پر دلوں میں قائم کرنے کے بارے میں ان کی کاروائیوں کا نمبر ایسا کم درجہ کا رہا کہ قریب قریب ناکام کے رہے۔“ (ازالہ اوہام ص: ۳۱۰، ۳۱۱ حاشیہ، روحانی خزائن ج: ۳

ص: ۲۵۸ حاشیہ)

۳:۔۔۔ ”مسیح تو صرف ایک معمولی سانبی تھا..... وہ صرف

ایک خاص قوم کے لئے آیا اور افسوس کہ اس کی ذات سے دنیا کو کوئی بھی روحانی فائدہ پہنچ نہ سکا ایک ایسی نبوت کا نمونہ دنیا میں چھوڑ گیا جس کا ضرر اس کے فائدہ سے زیادہ ثابت ہوا اور اس کے آنے سے ابتلا اور فتنہ بڑھ گیا۔“ (اتمام الحجہ ص: ۳۶، روحانی خزائن ج: ۸ ص: ۳۰۸)

صاحبزادہ صاحب! کیا حضرت مسیح کے مشن کی کامیابی یہی ہے جس کا نقشہ مرزا آنجہانی نے مندرجہ بالا اقتباسات میں کھینچا ہے؟ یعنی ان کی کتاب ناقص، تعلیم ناکام، روحانی فائدہ معدوم اور ان کی نبوت مضر اور فتنہ افزا۔ اگر قادیانیت کا مسیح پر یہی ایمان ہے، تو کفر کسے کہتے ہیں؟

حضرت عیسیٰؑ اور مرزا قادیانی:

صاحبزادہ صاحب مزید لکھتے ہیں:

”احمدیت یہود کے اس الزام کو باطل قرار دیتی ہے کہ

حضرت عیسیٰ ابن مریم علیہ السلام اپنے دعویٰ میں جھوٹے تھے۔“

(ربوہ سے تل ایب تک پر مختصر تبصرہ ص: ۲۷)

صاحبزادہ طاہر احمد صاحب کو یہاں غلط فہمی ہوئی ہے یا انہوں نے جان بوجھ کر غلط بیانی سے کام لیا ہے، ورنہ حضرت مسیح کے بارے میں مرزا کا وہی عقیدہ ہے جو یہود کا تھا، ذرا مرزا آنجہانی کی تصریحات ملاحظہ ہوں:

۱: ”ہائے کس کے آگے یہ ماتم لے جائیں کہ حضرت

عیسیٰؑ کی تین پیش گوئیاں صاف طور پر جھوٹی نکلیں، اور آج کون

زمین پر ہے جو اس عقدہ کو حل کر سکے۔“

(اعجاز احمد ص: ۱۲، روحانی خزائن ج: ۱۹ ص: ۱۲۱)

۲: ”یہ بھی یاد رہے کہ آپ کو کسی قدر جھوٹ بولنے کی

بھی عادت تھی۔“

(ضمیمہ انجام آتھم ص: ۵ حاشیہ، روحانی خزائن ج: ۱۱ ص: ۲۸۹)

۳: ”اور نہایت شرم کی بات یہ ہے کہ آپ نے پہاڑی

تعلیم کو جو انجیل کا مغز کہلاتی ہے یہودیوں کی کتاب طالمود سے

چرا کر لکھا ہے اور پھر ایسا ظاہر کیا ہے کہ گویا یہ میری تعلیم ہے، لیکن

جب سے یہ چوری پکڑی گئی عیسائی بہت شرمندہ ہیں۔“

(ضمیمہ انجام آتھم ص: ۶۰ حاشیہ، روحانی خزائن ج: ۱۱ ص: ۲۹۰)

مرزا آنجہانی کے بقول حضرت عیسیٰ علیہ السلام جھوٹے تھے، جھوٹی پیش گوئیاں کرتے تھے اور ان کی تعلیم ظالمود سے سرقہ تھی۔ ٹھیک یہی عقیدہ یہود کا ہے چنانچہ مرزا آنجہانی لکھتے ہیں:

”ایسا ہی یہودی بھی کہتے ہیں کہ انجیل کی عبارتیں ظالمود

میں سے لفظ بہ لفظ چرائی گئی ہیں۔“

(نزل المسیح ص: ۵۹، روحانی خزائن ج: ۱۸ ص: ۴۳۷)

اب صاحبزادہ صاحب فرمائیں کہ کیا حضرت عیسیٰ علیہ السلام کو جھوٹا قرار دینے

میں قادیانی، یہود سے چند قدم آگے نہیں؟

اسلامی عقیدہ درزیوں کے ہاتھ میں

مرزا طاہر احمد صاحب اسلامی عقیدہ حیات عیسیٰ کا مذاق اڑاتے ہوئے لکھتے ہیں:

”یہ خود آپ کا عقیدہ ہے کہ باقی تمام نبیوں کی روحیں تو

جسم عنصری سے پرواز کر چکی ہیں صرف ایک حضرت عیسیٰ کی

روح ہے جو مسلسل بلا انقطاع اسی مادی جسم سے وابستہ چلی آرہی ہے

اب فرمائیے کہ اس عقیدہ کا نام روح مسیح کے تسلسل کا عقیدہ رکھنا کیسا

رہے گا؟ کیا آپ کو یہ دلچسپ اصطلاح اپنے عقیدہ پر نہایت عمدگی

سے چسپاں ہوتی نظر نہیں آتی؟ اس پہلو سے جب اس اصطلاح پر

ایک بار پھر نظر ڈالی جائے تو بے اختیار یوں معلوم ہوتا ہے کہ یہ تو بنائی

ہی آپ کے عقیدہ کے لئے گئی تھی کیسی عمدگی سے ٹھیک بیٹھی ہے جیسے

کسی اچھے درزی نے عین ناپ کا کپڑا سیاہو۔“

(ربوہ سے تل ابیب تک پر مختصر تبصرہ ص: ۲۸)



صاحبزادہ صاحب قادیانی درزیوں کے تعاون سے اسلامی عقائد کے لئے جیسی الٹی سیدھی اصطلاحیں چاہیں تراشتے رہیں مگر ان کی خدمت میں دو گزارشیں ضرور کروں گا۔ اول یہ کہ کسی شخص کے لمبی عمر پانے کو اہل عقل تسلسل روح سے نہیں بلکہ طول حیات سے تعبیر کیا کرتے ہیں۔ ہاں ربوہ میں اب کوئی نئی لغت ایجاد ہوئی ہو تو دوسری بات ہے، آپ فرشتوں کے تو شاید اپنے دادا کی طرح قائل ہی نہیں ورنہ ان کی مثال پیش کرتا کہ وہ آدم علیہ السلام کی تخلیق سے بھی پہلے سے اب تک زندہ ہیں اور قیامت تک زندہ رہیں گے، یہی حال شیطان کا بھی ہے، غالباً آپ یہاں بھی تسلسل روح کی اصطلاح چسپاں کر کے قرآن کریم کا مذاق اڑائیں گے، اور دور کیوں جائے خود آنجناب بھی تو ساٹھ ستر سال سے اسی ”تسلسل روح“ کے عارضہ کا شکار ہیں، اگر حیات عیسیٰ آپ کے نزدیک مضحکہ ہے تو خود آپ کی اپنی زندگی بھی کچھ کم مضحکہ نہیں۔

دوسری گزارش یہ ہے کہ آپ جس عقیدہ کو اپنے گھٹیا مذاق کا نشانہ بنا رہے ہیں وہ صرف میرا عقیدہ نہیں بلکہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم سے لے کر آج تک تمام اکابر امت کا متواتر اور اجماعی عقیدہ ہے، یقین نہ آئے تو اپنے والد مرزا بشیر الدین صاحب کا اعتراف پڑھ لیجئے، وہ لکھتے ہیں:

”پچھلی صدیوں میں قریباً سب دنیا کے مسلمانوں میں مسیح

کے زندہ ہونے پر ایمان رکھا جاتا تھا اور بڑے بڑے بزرگ اسی عقیدہ پر فوت ہوئے..... حضرت مسیح موعود (مرزا آنجنمائی) کے دعویٰ سے پہلے جس قدر اولیاء و صلحاء گزرے ہیں، ان میں سے ایک بڑا گروہ عام عقیدہ کے ماتحت حضرت مسیح کو زندہ خیال کرتا تھا۔“

(حقیقۃ النبوة ص: ۱۴۲)

اللہ تعالیٰ کا لاکھ لاکھ شکر ہے کہ ہمارا عقیدہ وہی ہے جو مرزا محمود کے بقول رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم سے لے کر پچھلی صدی کے تمام مسلمانوں کا تھا، اور جس پر صحابہؓ، تابعینؓ، ائمہ مجتہدینؒ اور بڑے بڑے اولیاء و صلحاء فوت ہوئے اور تو اور خود مرزا آنجنمائی بھی

جب تک مسلمان تھا اسی عقیدہ کا قائل تھا، چنانچہ براہین احمدیہ حصہ چہارم میں قرآن کریم کی آیت: ”هو الذي ارسل رسوله بالهدى ودين الحق ليظهره على الدين كله“ کی تفسیر کرتے ہوئے لکھتا ہے:

”یہ آیت جسمانی اور سیاست ملکی کے طور پر حضرت مسیح کے حق میں پیش گوئی ہے اور جس غلبہ کاملہ دین اسلام کا اس میں وعدہ دیا گیا ہے وہ غلبہ مسیح کے ذریعہ سے ظہور میں آئے گا، اور جب حضرت مسیح علیہ السلام دوبارہ اس دنیا میں تشریف لائیں گے تو ان کے ہاتھ سے دین اسلام جمیع آفاق اور اقطار میں پھیل جائے گا..... حضرت مسیح پیش گوئی متذکرہ بالا کا ظاہری اور جسمانی طور پر مصداق ہے۔“

اسی کتاب میں ایک جگہ اپنا الہام درج کر کے اس کی تشریح اس طرح کرتا ہے:

”یہ آیت اس مقام میں حضرت مسیح کے جلالی طور پر ظاہر ہونے کا اشارہ ہے یعنی..... وہ زمانہ بھی آنے والا ہے کہ جب..... حضرت مسیح علیہ السلام نہایت جلالت کے ساتھ دنیا پر اتریں گے۔“

مگر جب مرزا آنجنہانی نے حلقۂ اسلام سے نکل کر اپنی بروزی نبوت کی پٹری جمائی تو خود مسیح بن بیٹھا، اور قرآن کریم، احادیث متواترہ، اجماع امت اور خود اپنے الہامات کو پس پشت ڈال کر موت مسیح کا عقیدہ ایجاد کر لیا۔ فَضْلٌ وَأَضْلٌ!

انتہائی گستاخانہ اعتراضات:

صاحبزادہ مرزا طاہر احمد صاحب لکھتے ہیں:

”مسیح موعود کے نزول کی پیش گوئی تو خود سید ولد آدم حضرت محمد مصطفیٰ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمائی تھی جس کا بکثرت احادیث صحیحہ میں ذکر ملتا ہے..... اس لئے کسی مسلمان کی طرف سے اس عقیدہ کا محل اعتراض ٹھہرایا جانا ایک انتہائی گستاخانہ امر ہے

اور ایسے شخص کے متعلق دو ہی امکانات ہیں یا تو وہ احادیث نبویہ کا سرے سے منکر ہے اور اہل قرآن کے فرقہ سے تعلق رکھتا ہے جس کے مشہور سربراہ آج کل غلام احمد صاحب پرویز ہیں، یا پھر وہ حدیثوں کو تو صحیح تسلیم کرتا ہے لیکن نعوذ باللہ حضور اکرم صلی اللہ علیہ وسلم پر اعتراض کی جسارت کر کے اپنی عاقبت خراب کر رہا ہے۔“

(ربوہ سے تل ابیب تک پر مختصر تبصرہ ص: ۲۹)

صاحبزادہ صاحب! مرزا آنجمانی کو آپ کس فرقہ میں شمار کرتے ہیں، جس نے آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی نزول مسیح سے متعلق پیش گوئی پر انتہائی گستاخانہ اعتراضات کر کے اپنی اور اپنے مریدوں کی عاقبت خراب کی؟ آپ غلام احمد پرویز کو منکر احادیث ٹھہراتے ہیں، حالانکہ اس کے ہم نام غلام احمد قادیانی نے رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی احادیث پر جو سو قیانہ اعتراضات کئے اس کی مثال غلام احمد پرویز کجا کسی کٹر سے کٹر دہریئے کے یہاں بھی مشکل سے ملے گی، مرزا آنجمانی نے آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی تکذیب جس جس انداز سے کی اس کی تفصیل کے لئے ضخیم دفتر بھی نا کافی ہے، یہاں صاحبزادہ صاحب کی عبرت کے لئے چند اشاروں پر اکتفا کروں گا۔

پہلی صورت:

تکذیب کی ایک صورت یہ ہے کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے جس بات کا اثبات کیا ہو اس کی نفی کی جائے، مثلاً ارشاد نبوی ہے:

”ان عیسیٰ لم یمت، وانه راجع الیکم۔“

(درمنثور ج: ۲ ص: ۳۶)

ترجمہ: ”... یقین رکھو کہ عیسیٰ علیہ السلام مرے نہیں اور وہ

تمہاری طرف لوٹ کر آئیں گے۔“

اب مرزا آنجمانی کی گستاخی دیکھئے کہ وہ حلفاً اس ارشاد کی نفی کرتے ہوئے

لکھتا ہے:

”ابن مریم مرگیا حق کی قسم۔“

(ازالہ اوہام ص: ۶۴، روحانی خزائن ج: ۳ ص: ۵۱۳)

دوسری صورت:

تکذیب کی ایک صورت یہ ہے کہ ارشاد نبوی کو... نعوذ باللہ... تضحیک و تمسخر کا نشانہ بنایا جائے، اس کی چند مثالیں ملاحظہ ہوں:

الف: ... احادیث متواترہ میں ارشاد ہے حضرت عیسیٰ بن مریم تم میں نازل ہوں گے، اس پر مرزا آنجنمانی لکھتا ہے:

”یہ بات بالکل غیر معقول ہے کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے بعد کوئی ایسا نبی آنے والا ہے کہ جب لوگ نماز کے لئے مساجد کی طرف دوڑیں گے تو وہ کلیسا کی طرف بھاگے گا۔ اور جب لوگ قرآن شریف پڑھیں گے تو وہ انجیل کھول بیٹھے گا، اور جب لوگ عبادت کے وقت بیت اللہ کی طرف منہ کریں گے تو وہ بیت المقدس کی طرف متوجہ ہوگا، اور شراب پیئے گا، اور سور کا گوشت کھائے گا، اور اسلام کے حلال و حرام کی کچھ پرواہ نہیں رکھے گا۔“

(حقیقۃ الوحی ص: ۲۹، روحانی خزائن ج: ۲۲ ص: ۳۱)

یہ عبارت اگر ایک طرف آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی بیان فرمودہ پیش گوئی سے خبیث ترین مذاق ہے تو دوسری طرف کذب و افتراء اور کفر و ضلال کا کھلا مظاہرہ ہے، مرزا آنجنمانی نے اس عبارت میں حضرت عیسیٰ علیہ السلام پر شراب پینے، سور کھانے اور حلال و حرام کی پرواہ نہ رکھنے کی بہتان تراشی کی ہے، جو اس کی اپنی سیرت کا آئینہ ہے۔

ب: ... آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم فرماتے ہیں کہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام آسمان سے اتریں گے (کتاب الأسماء و الصفات للبيهقي ص: ۲۲۴) مرزا اس ارشاد مقدس کو یوں ہدف استہزا بناتا ہے:

”صرف ضعیف اور متناقض اور رکیک روایتوں سے کام نہیں چل سکتا، سو یہ امید مت رکھ کہ سچ مچ اور درحقیقت تمام دنیا کو حضرت مسیح ابن مریم آسمان سے فرشتوں کے ساتھ اترتے ہوئے دکھائی دیں گے، اگر اسی شرط سے اس پیش گوئی پر ایمان لانا ہے تو پھر حقیقت معلوم، وہ اتر چکے، تم ایمان لا چکے، ایسا نہ ہو کہ کسی غبارہ (بیلون) پر چڑھنے والے اور پھر تمہارے سامنے اترنے والے کے دھوکہ میں آ جاؤ سو ہوشیار رہنا، آئندہ اس اپنے جسے ہوئے خیال کی وجہ سے کسی ایسے اترنے والے کو ابن مریم نہ سمجھ بیٹھنا۔“

(ازالہ اوہام ص: ۲۸۳، روحانی خزائن ج: ۳ ص: ۲۴۴)

حدیث نبوی سے ایسا سو قیانا مذاق کوئی بدتر سے بدتر دہریہ بھی کر سکتا ہے؟  
ج: ... ارشاد نبوی ہے کہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام بعد از نزول صلیب کو توڑ ڈالیں گے، اور خنزیر کو قتل کریں گے، مرزا آنجمانی اس کا یوں مذاق اڑاتا ہے:

”اب جائے تعجب ہے کہ صلیب کو توڑنے سے اس کا کون سا فائدہ ہے؟ اور اگر اس نے مثلاً دس، بیس لاکھ صلیب توڑ بھی دی تو کیا عیسائی لوگ جن کو صلیب پرستی کی دھن لگی ہوئی ہے، اور صلیبیں بنوا نہیں سکتے؟ اور دوسرا فقرہ جو کہا گیا ہے کہ خنزیروں کو قتل کرے گا، یہ بھی اگر حقیقت پر محمول ہے تو عجیب فقرہ ہے، کیا حضرت مسیح کا زمین پر اترنے کے بعد عمدہ کام یہی ہوگا کہ وہ خنزیروں کا شکار کھیلتے پھریں گے اور بہت سے کتے ساتھ ہوں گے، اگر یہی سچ ہے تو پھر سکھوں اور چماروں اور سانیوں اور گندیلوں وغیرہ کو جو خنزیر کے شکار کو دوست رکھتے ہیں خوشخبری کی جگہ ہے کہ ان کی خوب بن آئے گی..... پھر میں یہ بھی کہتا ہوں کہ اول تو شکار کھیلنا ہی کاربیکاراں ہے اور اگر حضرت مسیح کو شکار ہی کی طرف رغبت ہوگی



اور دن رات یہی کام پسند آئے گا تو پھر کیا یہ پاک جانور جیسے ہرن اور گورخر اور خرگوش دنیا میں کیا کچھ کم ہیں، تا ایک ناپاک جانور کے خون سے ہاتھ آلودہ کریں۔“

(ازالہ اوہام ص: ۴۱، ۴۲، روحانی خزائن ج: ۳ ص: ۱۲۳، ۱۲۴)

ایک اور جگہ ان ارشادات نبویہ کی تضحیک کرتے ہوئے لکھا ہے:

”کیا ان احادیث پر اجماع ثابت ہو سکتا ہے کہ مسیح آ کر جنگلوں میں خنزیروں کا شکار کھیلتا پھرے گا، اور دجال خانہ کعبہ کا طواف کرے گا اور ابن مریم بیماروں کی طرح دو آدمیوں کے کاندھے پر ہاتھ دھر کے فرض طواف کعبہ بجالائے گا، کیا معلوم نہیں کہ جو لوگ ان حدیثوں کی شرح کرنے والے گزرے ہیں وہ کیسے بے ٹھکانہ اپنی اپنی تکمیں ہانک رہے ہیں۔“

(ازالہ اوہام ص: ۴۲۷، ۴۲۸، روحانی خزائن ج: ۳ ص: ۳۲۶)

فرمائیے! احادیث صحیحہ پر ”گستاخانہ اعتراضات“ کر کے اپنا نامہ عمل کون سیاہ کر رہا ہے؟ اور ”سرے سے منکر حدیث“ ہونے میں اولیت کا شرف کس کو حاصل ہے؟

مرزا غلام احمد قادیانی کو یا غلام احمد پرویز کو؟

تیسری صورت:

تکذیب کی ایک صورت یہ ہے کہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے ارشاد کو محض عقلی دھکوسلوں سے مسترد کر دیا جائے، مثلاً قرآن کریم میں ارشاد ہے کہ اللہ تعالیٰ نے عیسیٰ علیہ السلام کو اپنی طرف (آسمان پر) اٹھالیا، جس کے معنی باجماع امت رفع جسمانی کے ہیں۔ خود مرزا آنجنمانی کو بھی اس کا اعتراف ہے، چنانچہ لکھتا ہے:

”ہم بھی کہتے ہیں کہ مسیح بھی مع جسم آسمان پر اٹھایا گیا۔“

(براہین پنجم ضمیمہ ص: ۲۱۴، روحانی خزائن ج: ۲۱ ص: ۳۹۰)

اس کے باوجود قرآنی خبر پر ”گستاخانہ اعتراض“ کرتے ہوئے لکھتا ہے:  
 ”پھر مسیح کے بارے میں یہ بھی سوچنا چاہئے کہ کیا طبعی اور  
 فلسفی لوگ اس خیال پر نہیں ہنسیں گے کہ جب کہ تمیں یا چالیس ہزار  
 فٹ تک زمین سے اوپر کی طرف جانا موت کا موجب ہے تو حضرت  
 مسیح اس جسم غصری کے ساتھ آسمان تک کیونکر پہنچ گئے اور کیا یہ  
 مخالفوں کے لئے ہنسنے کی جگہ نہیں ہوگی۔“

(ازالہ اوہام ص: ۱۴۶، ۱۴۷، روحانی خزائن ج: ۳ ص: ۱۷۴، ۱۷۵)

اس ترقی یافتہ دور میں جبکہ دنیا مرتخ پر کمندیں ڈال رہی ہے، جس شخص کی فکری  
 پرواز تمیں چالیس ہزار فٹ کی بلندی کے تصور سے قاصر ہو اس کی عقل و دانش کا ماتم دنیا کو  
 ضرور کرنا چاہئے، جبکہ وہ نبوت کبریٰ کے ارشادات کا تمسخر بھی اڑاتا ہو۔  
 چوتھی صورت:

تکذیب نبوی کی ایک صورت یہ ہے کہ آدمی قرآن و حدیث کے نصوص میں ایسی  
 رکیک اور دور از کار تاویلیں کرے جو منشاء متکلم کے قطعاً خلاف ہوں اور جن کی طرف  
 بھول کر بھی کسی کا ذہن نہ جاتا ہو، حجت الاسلام امام غزالیؒ لکھتے ہیں:

”وکل مالم یحتمل التأویل فی نفسہ وتواتر  
 نقلہ ولم یتصور أن یقوم برہان علی خلافہ فمخالفتہ  
 تکذیب محض ..... ولا بد من التنبیہ علی قاعدة  
 آخری، وہی أن المخالف قد یخالف نصاً متواتراً  
 ویزعم أنه مؤول ولكن ذکر تأویلہ لا انقداح له أصلاً  
 فی اللسان، لا علی بعد، ولا علی قرب، فذالک کفر،  
 وصاحبہ مکذّب، وان کان یزعم أنه مؤول۔“

(فیصل الفرقۃ فی الاسلام و الزندقة ص: ۱۹۲، ۱۹۷، ۱۹۸ طبع مصر)

ترجمہ: ”ہر ایسی نص جس میں تاویل کی گنجائش نہ ہو اور وہ نقل متواتر سے ثابت ہو، اور اس کے خلاف کوئی قطعی برہان قائم نہ ہو، اس کی مخالفت کرنا تکذیب محض ہے... یہاں ایک اور قاعدہ پر بھی تنبیہ کرنا ضروری ہے اور وہ یہ کہ ایک شخص کسی نص متواتر کی مخالفت کرتا ہے، وہ بزعم خود یہ سمجھتا ہے کہ وہ تاویل کر رہا ہے مگر تاویل ایسی کرتا ہے جس کا زبان اور محاورہ کے اعتبار سے دور و نزدیک کوئی پتہ نشان نہیں ملتا۔ پس ایسی تاویل صریح کفر ہے اور ایسا شخص خدا و رسول کا مکذب ہے خواہ وہ یہی سمجھتا رہے کہ وہ تکذیب نہیں بلکہ تاویل کر رہا ہے۔“

مرزا آنجنمانی نے قرآن و سنت کے نصوص میں ایسی لچر اور لالچ یعنی تاویلیں کی ہیں جنہیں زبان اور محاورے سے دور و نزدیک کا کوئی تعلق نہیں اور جن کے سامنے گزشتہ صدیوں کے بدین زنادقہ کی تاویلیں ماند پڑ جاتی ہیں۔ یہاں قادیان کے اس تاویلاتی گورکھ دھندے کی صرف دو مثالیں پیش کرتا ہوں:

الف: عیسیٰ بن مریم کی تاویل:

احادیث صحیح متواترہ میں ارشاد ہے کہ: ”تم میں عیسیٰ بن

مریم حاکم عادل کی حیثیت سے نازل ہوں گے۔“

انسانی تاریخ ”عیسیٰ بن مریم“ کے نام سے صرف ایک ہی شخصیت کو جانتی ہے، یعنی حضرت روح اللہ مسیح بن مریم علیہ السلام، جو آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم سے قبل مبعوث ہوئے، جن کے نام سے تمام دنیا واقف ہے، جن کے آسمان پر اٹھائے جانے کی خبر قرآن حکیم نے دی ہے اور جن کی دوبارہ تشریف آوری کو قرآن کریم نے قیامت کا نشان بتایا ہے: ”وانہ لعلم للساعة فلا تمترن بها“ (الزخرف) اس لئے امت محمدیہ کے تمام اکابر نے انہی ”عیسیٰ بن مریم“ کا دوبارہ نازل ہونا مراد لیا، اور خود آنحضرت صلی اللہ علیہ

وسلم نے بہت سی احادیث طیبہ میں اپنی مراد واضح فرمادی کہ جس ”عیسیٰ بن مریم“ کے نازل ہونے کی پیش گوئی کی جا رہی ہے اس سے مراد وہی ”عیسیٰ بن مریم“ ہیں جو آپ سے قبل مبعوث ہوئے تھے، لیکن مرزا آنجمانی نے اس متواتر پیش گوئی میں تحریف کرتے ہوئے دعویٰ کیا کہ عیسیٰ بن مریم سے غلام احمد مراد ہے، اور اس کے لئے یہ تاویل ایجاد کی کہ:

”دو برس تک صفت مریمیت میں میں نے پرورش پائی،

اور پردہ میں نشوونما پاتا رہا، پھر جب اس پر دو برس گزر گئے تو... مریم

کی طرح عیسیٰ کی روح مجھ میں نفخ کی گئی، اور استعارہ کے رنگ میں

مجھے حاملہ ٹھہرایا گیا، اور آخر کئی مہینے کے بعد جو دس مہینے سے زیادہ

نہیں... مجھے مریم سے عیسیٰ بنایا گیا، پس اس طور سے میں ابن مریم

ٹھہرا۔“ (کشتی نوح ص: ۴۶، ۴۷، روحانی خزائن ج: ۱۹ ص: ۵۰)

صاحبزادہ صاحب! کیا عیسیٰ بن مریم بننے کی یہ قادیانی تاویل، امام غزالیؒ کے

ارشاد فرمودہ قاعدے کے مطابق مضحکہ خیز تکذیب نہیں؟ کیا قرآن و حدیث، اجماع

متواتر، زبان و محاورہ اور تاریخ انسانی سب کو جھٹلا کر ایک شخص کے اس مرقی دعویٰ کو خدا و

رسول کا منشا قرار دے دیا جائے؟ کہ اب میں (داڑھی مونچھ کے باوجود) مریم بن گیا

ہوں، اب مریمی صفت میں نشوونما پا رہا ہوں، اب مجھے پردہ ہو گیا ہے، اب مجھ میں عیسیٰ کی

روح نفخ کر دی گئی ہے، اب میں امید سے ہوں، اب مجھے درود ہو رہا ہے، لیجئے اب میں

نے عیسیٰ جن دیا ہے، لہذا اب میں ”عیسیٰ بن مریم“ بن گیا ہوں، پس قرآن و حدیث کے وہ

تمام نصوص جو عیسیٰ علیہ السلام کے بارے میں ہیں، اب میرے بارے میں تصور کئے

جائیں، کیونکہ:

”اس زمانہ میں مجھے اس آیت پر اطلاع بھی نہ تھی کہ میں

اس طرح ”عیسیٰ مسیح“ بنایا جاؤں گا بلکہ میں بھی تمہاری طرح بشریت

کے محدود علم کی وجہ سے یہی اعتقاد رکھتا تھا کہ عیسیٰ بن مریم آسمان

سے نازل ہوگا اور باوجود اس بات کے کہ خدا تعالیٰ نے براہین احمدیہ

حصص سابقہ میں میرا نام عیسیٰ رکھا، اور جو قرآن شریف کی آیتیں پیش گوئی کے طور پر حضرت عیسیٰ کی طرف منسوب تھیں، وہ سب آیتیں میری طرف منسوب کر دیں، اور یہ بھی فرمادیا کہ تمہارے آنے کی خبر قرآن اور حدیث میں موجود ہے، مگر پھر بھی میں متنبہ نہ ہوا اور براہین احمدیہ حصص سابقہ میں میں نے وہی غلط عقیدہ اپنی رائے کے طور پر لکھ دیا اور شائع کر دیا کہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام آسمان سے نازل ہوں گے، اور میری آنکھیں اس وقت تک بالکل بند رہیں جب تک خدا نے بار بار کھول کر مجھ کو نہ سمجھایا کہ عیسیٰ بن مریم اسرائیلی تو فوت ہو چکا ہے اور وہ واپس نہیں آئے گا، اس زمانہ اور اس امت کے لئے تو ہی عیسیٰ بن مریم ہے۔“

(براہین پنجم ص: ۸۵، روحانی خزائن ج: ۲۱ ص: ۱۱۱)

یعنی خدا، رسول، صحابہ، تابعین، مجتہدین، مجددین، اولیاء، اقطاب ان سب کا علم تو ”بشریت کا محدود علم“ ہے، فوق البشر اور لامحدود علم صرف مرزا آنجنمانی کے حصہ میں آیا: ”جو بات کی، خدا کی قسم لا جواب کی۔“

صاحبزادہ صاحب اس تاویل کو بھی معرفت سمجھتے ہوں گے، مگر دماغی امراض کے ماہرین سے پوچھئے کہ اس کا صحیح نام کیا ہے؟

ب: دوزر دو چادروں کی تاویل:

آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے حضرت عیسیٰ علیہ السلام کے آسمان سے نازل ہونے کی تمام جزئیات بھی بیان فرمادیں تاکہ کسی قسم کے شک و شبہ کی گنجائش نہ رہے، اور کسی بد دین کو اس پیش گوئی میں تحریف کا راستہ نہ مل سکے۔ منجملہ دیگر بے شمار امور کے آپ نے امت کو یہ بھی بتایا کہ جب وہ نازل ہوں گے تو گہرے زرد رنگ کی دو چادریں ان کے زیب بدن ہوں گی، یہ لفظ ایسا نہیں جس کے لئے کسی لغت کی مدد لینا پڑے، نادان بچے بھی



اس کے مفہوم سے واقف ہیں، مگر مرزا آنجہانی نے اس کی جو مضحکہ خیز تاویل کی وہ یہ ہے:

”دیکھو میری بیماری کی نسبت بھی آنحضرت صلی اللہ علیہ

وسلم نے پیش گوئی کی تھی جو اسی طرح وقوع میں آئی، آپؐ نے فرمایا

تھا کہ مسیح آسمان پر سے جب اترے گا تو دو زرد چادریں اس نے

پہنی ہوئی ہوں گی، تو اسی طرح مجھ کو دو بیماریاں ہیں، ایک اوپر کے

دھڑکی اور ایک نیچے کی دھڑکی، یعنی مراق اور کثرت بول۔“

(ملفوظات احمدیہ ج: ۸ ص: ۴۴۵)

بتائیے کیا آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی یہی مراد تھی کہ عیسیٰ علیہ السلام آسمان سے

نازل ہوتے وقت مراق اور کثرت بول کے مریض ہوں گے؟ کیا چودہ سو سال کی اُمت

اسلامیہ نے آپ صلی اللہ علیہ وسلم کے ارشاد کا یہی مطلب سمجھا تھا؟ کیا زبان و محاورہ میں

اس مراقی تاویل کا کہیں دور دور بھی پتہ ملتا ہے؟ کیا یہ تاویل امام غزالیؒ کے الفاظ میں کفر

خالص اور تکذیب محض نہیں؟

مرزا آنجہانی کی تاویلات باطلہ کی یہاں دو مثالیں پیش کی گئی ہیں، ورنہ نزول

عیسیٰ سے متعلق آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی پیش گوئی کو جھٹلانے کے لئے مرزا آنجہانی نے

جو سیکڑوں تاویلیں کی ہیں وہ سب اسی مراق اور کثرت بول کا کرشمہ ہیں۔

پانچویں صورت:

اور جب تضحیک و استہزا کے یہ تمام حربے اور تاویل و تحریف کے یہ سارے حیلے

بہانے نزول عیسیٰ علیہ السلام کی پیش گوئی پر خاک ڈالنے میں ناکام ثابت ہوئے تو مرزا

آنجہانی نے اپنے ترکش کفر و ضلال کا آخری تیر بھی پھینک دیا اور براہ راست مہبط وحی صلی

اللہ علیہ وسلم کے علم و فہم پر یہ کہہ کر حملہ کر دیا کہ:

”اگر آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم پر ابن مریم اور دجال کی

حقیقت کاملہ — منکشف نہ ہوئی ہو — اور نہ یا جوج ماجوج کی عمیق

تک وحی الہی نے اطلاع دی ہو، اور نہ دابۃ الارض کی ماہیت کما ہی  
ہی ظاہر فرمائی گئی۔ تو کچھ تعجب کی بات نہیں۔“

(ازالہ اوہام ص: ۶۹۱، روحانی خزائن ج: ۳ ص: ۷۳)

یعنی عیسیٰ ابن مریم وغیرہ کی حقیقت واقعہ نہ حضور صلی اللہ علیہ وسلم سمجھ سکے، نہ خدا  
آپؐ کو سمجھا سکا، آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے حضرت عیسیٰ ابن مریم کی قریباً دو سو علامتیں معاذ  
اللہ یوں ہی بے سمجھے بیان کر ڈالیں، آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی ذات اقدس پر ایسے  
خبیث ترین حملہ کے بعد بھی قادیانی اسلام کا نام لیتے نہیں شرماتے۔

آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی ارشاد فرمودہ پیش گوئی کو مرزا آنجنمانی نے جس  
جس انداز میں جھٹلایا اس کا تھوڑا سا نمونہ پیش کر چکا ہوں۔ اب دیکھئے مرزا طاہر احمد صاحب  
خود اپنے مقرر کردہ معیار کے مطابق اپنے دادا مرزا آنجنمانی کو کس صف میں جگہ دیتے ہیں،  
منکرین حدیث کی صف میں، یا جان بوجھ کر اپنی عاقبت خراب کرنے والوں کی صف میں؟  
کیونکہ انہی کا فیصلہ ہے کہ نزول مسیح علیہ السلام کی پیش گوئی کو جس کا ذکر بکثرت احادیث صحیحہ  
میں ملتا ہے، محل اعتراض ٹھہرانا ایک انتہائی گستاخانہ امر ہے، اور:

”ایسے شخص کے متعلق دو ہی امکانات ہیں، یا تو وہ

سرے سے احادیث نبویہ کا منکر ہے اور اہل قرآن کے فرقہ سے  
تعلق رکھتا ہے، جس کے مشہور سربراہ آج کل غلام احمد پرویز  
صاحب ہیں، یا پھر وہ ان حدیثوں کو تو صحیح تسلیم کرتا ہے، لیکن نعوذ  
باللہ حضور اکرم صلی اللہ علیہ وسلم پر اعتراض کی جسارت کر کے اپنی  
عاقبت خراب کر رہا ہے۔“ (ربوہ سے تل ابیب تک پر مختصر تبصرہ ص: ۲۹)

اس بحث کو ختم کرتے ہوئے میں شیخ محی الدین ابن عربیؒ کا ایک اقتباس پیش  
کرتا ہوں، شاید صاحبزادہ طاہر احمد صاحب یا ان کی جماعت کے کسی اور بندہ خدا کے لئے  
عبرت و موعظت کا ذریعہ بنے، شیخ (قدس سرہ) شفی و سعید اور مؤمن و کافر کے درمیان فرق  
بیان کرتے ہوئے لکھتے ہیں:

”ثم لتعلم.... أن الخلق بين شقى وسعيد،....  
 فاذا وردت الأخبار الإلهية على السنة الروحانيين  
 ونقلتها الى الرسل ونقلتها الرسل عليهم السلام اليها،  
 فمن آمن بها وترك فكره خلف ظهره وقبلها بصفة  
 القبول التي في عقله وصدق المخبر فيما أتاه به....  
 فذاك المعبر عنه بالسعيد.... ومن لم يؤمن بها  
 وجعل فكره الفاسد امامه، واقتدى به ورد الأخبار  
 النبوية اما بتكذيب الأصل، واما بالتأويل الفاسد....  
 فذاك المعبر عنه بالشقى، اهد ملخصاً.“

(فتوحات مکیہ باب ۲۸۹ ص: ۶۴۸)

ترجمہ: ”پھر جان رکھو کہ مخلوق کی دو ہی قسمیں ہیں،  
 ایک بد بخت اور دوسری نیک بخت، پس جب خدا تعالیٰ کی جانب  
 سے بواسطہ فرشتوں کے خبریں آئیں اور فرشتوں نے وہ خبریں انبیاء  
 علیہم السلام کی طرف اور انبیاء علیہم السلام نے ہماری طرف منتقل  
 کر دیں پس جو شخص ان پر ایمان لایا اور اپنی فہم و فکر کو پس پشت ڈال  
 دیا اور قبول کرنے کی جو صفت اللہ تعالیٰ نے اس کی عقل میں ودیعت  
 رکھی ہے، اس کے ساتھ ان خبروں کو قبول کر لیا اور خبر دینے والے  
 (نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم) کی ان تمام امور میں تصدیق کی جو آپؐ  
 لے کر آئے ہیں، پس ایسا شخص تو وہ ہے جسے ”سعيد“ کہا جاتا ہے۔  
 اور جو شخص ان خبروں پر یقین نہ لایا اور اس نے اپنی فکر  
 فاسد کو اپنا امام بنا کر اس کی اقتدا کی اور اخبار نبویہ کو رد کر دیا، بایں طور  
 کہ یا تو سرے سے تکذیب کر دی یا ان میں کوئی تاویل فاسد کر ڈالی،  
 پس ایسا شخص تو وہ ہے جس کو ”شقی“ کہا جاتا ہے۔“

شیخ کی اس عبارت سے معلوم ہوا کہ جو خبر بارگاہ نبوت سے حاصل ہو، اس کو رد کرنے کی دو صورتیں ہیں ایک یہ کہ سرے سے اس کی سچائی کا انکار کر دیا جائے اور اسے غلط ٹھہرایا جائے اور یہ دونوں صورتیں کفر و شقاوت کے زمرے میں آتی ہیں، دوسری یہ کہ اس میں کوئی غلط تاویل کر کے اس کا مفہوم مسخ کر دیا جائے اور ایمان و سعادت یہ ہے کہ اپنی فہم و فکر بالائے طاق رکھ کر بے چون و چرا ان کی تصدیق کی جائے۔

کون سا مسیح؟

اس بحث کے آخر میں صاحبزادہ طاہر احمد صاحب لکھتے ہیں:

”مولانا صاحب سے ایک بار پھر موعود بانہ گزارش ہے کہ مسیح موعود کے ظہور کے عقیدہ پر تو ”اہل قرآن“ کے سوا احمدیوں کی طرح تمام مسلمان فرقے ایمان رکھتے ہیں، ان کے درمیان صرف فرق یہ ہے کہ احمدی تو ان پیش گوئیوں کا مصداق امت محمدیہ میں پیدا ہونے والے ایک مصلح کو قرار دیتے ہیں اور جسے بعض مماثلتوں کی بنا پر اللہ تعالیٰ کی طرف سے مسیح کا لقب عطا کیا گیا ہے اور غیر احمدی اسی پرانے مسیح کی آمد کے منتظر ہیں جو آج تک مسلسل آسمان پر زندہ بیٹھا ہوا ہے۔“ مسیح نبی اللہ کی آمد پر تو بہر حال دونوں کو اتفاق ہے۔“

(ربوہ سے تل ابیب تک پر مختصر تبصرہ ص: ۲۹، ۳۰)

صاحبزادہ صاحب کے اس ارشاد کا خلاصہ یہ ہے کہ حضرت عیسیٰ بن مریم کے آنے کی پیش گوئی تو مسلمانوں اور قادیانیوں کو بالاتفاق مسلم ہے، نزاع اس بات میں ہے کہ آنے والا مسیح سچ مچ عیسیٰ بن مریم (علیہ السلام) ہیں، یا مرزا غلام احمد قادیانی؟ مسلمانوں کا عقیدہ ہے کہ یہ پیش گوئی سچ مچ عیسیٰ علیہ السلام کے دوبارہ تشریف لانے کے بارے میں ہے جبکہ قادیانی اس کو مرزا آنجنہانی کے حق میں مانتے ہیں۔ گویا مسلم، قادیانی نزاع مسیح بن مریم کے آنے میں نہیں، بلکہ شخصیت مسیح کے تعین میں ہے کہ مسیح سے کون سا



مسیح مراد ہے۔ اصلی؟ یا جعلی؟

صاحبزادہ صاحب کی اس تضحیح کے بعد اس نزاع کا فیصلہ بہت آسان ہو جاتا ہے، فیصلہ کی صورت یہی ہے کہ احادیث نبویہ میں اس آنے والے مسیح کی جو علامات ذکر فرمائی گئی ہیں انہیں مرزا آنجنمانی کے سراپا سے ملا کر دیکھ لیا جائے، اگر وہ بہ تمام و کمال مرزا آنجنمانی میں ایک ایک کر کے پائی جائیں تو کوئی شک نہیں کہ قادیانی مرزا کو مسیح ماننے میں برحق ہیں، اور اس صورت میں تمام مسلمانوں کو لازم ہوگا کہ آنجنمانی کو مسیح مان لیں، اور اگر مرزا آنجنمانی پر وہ علامات صادق نہیں آتیں تو قادیانی عقیدہ غلط ہے اور ان کو لازم ہے کہ مسلمانوں کی طرح مرزا کو اس کے دعویٰ مسیحیت میں جھوٹا یقین کریں، دیکھئے کیسا عمدہ اصول ہے جو صاحبزادہ صاحب نے بیان فرمایا۔ اب اگر صاحبزادہ طاہر احمد صاحب خود اپنے ہی تجویز کردہ فیصلہ کو جو بے حد منصفانہ ہے تسلیم کرنے پر آمادہ ہوں تو بسم اللہ آگے بڑھیں اور احادیث نبویہ کی ایک ایک علامت اپنے دادا پر منطبق کر کے قادیانی مسلم نزاع کو ہمیشہ کے لئے ختم کر دیں۔

علمائے اُمت نے ایسی احادیث کو جن کا مسیح کی پیش گوئی سے تعلق ہے، یکجا کر دیا ہے، عربی میں امام العصر مولانا محمد انور شاہ کشمیریؒ کی کتاب ”التصریح بما تواتر فی نزول المسیح“ اس سلسلہ کی سب سے جامع کتاب ہے، اس کا اردو ترجمہ بھی ”نزول مسیح اور علامات قیامت“ کے نام سے شائع ہو چکا ہے۔ ان احادیث میں آنے والے مسیح کی جو علامات مذکور ہیں، ان کی فہرست بھی اردو ترجمہ کے ساتھ شامل کر دی گئی ہے۔ صاحبزادہ صاحب ایک ایک حدیث کی ایک ایک علامت مرزا آنجنمانی پر چسپاں کر کے خود ہی انصاف کریں کہ مرزا قادیانی مسیح صادق تھا یا مسیح کذاب؟ اصلی مسیح تھا یا جعلی؟ اگر یہ کام محنت اور فرصت چاہتا ہو تو چلئے سر دست صرف تین احادیث پر فیصلہ کر لیجئے:

اول مشکوٰۃ کی حدیث، جس کو مرزا آنجنمانی نے ”ضمیمہ انجام آہتم“ (ص: ۵۳) میں بطور سند پیش کیا ہے، اس میں مسیح کی آٹھ علامتیں مذکور ہیں۔



دوسری مسند احمد (ج: ۲ ص: ۴۰۶) اور ابوداؤد (ج: ۲ ص: ۳۳۸) کی حدیث، جس کا حوالہ مرزا بشیر الدین صاحب نے ”حقیقۃ النبوة“ (ص: ۱۹۳) میں اور جناب محمد علی صاحب ایم اے نے ”النبوة فی الاسلام“ (ص: ۹۲) میں دیا ہے، اس میں آنے والے مسیح کی بیس علامات مذکور ہیں۔

تیسری صحیح مسلم (ج: ۲ ص: ۴۰۰) کی حدیث جس میں آنے والے مسیح کو چار بار نبی اللہ کہا گیا ہے، مرزا آنجنہانی اور ان کے حواریوں نے اس کا بہت سی جگہ حوالہ دیا ہے، اور وہ لاہوریوں کے مقابلہ میں آنجنہانی کی نبوت پر یہی حدیث پیش کیا کرتے ہیں، اس حدیث میں آنے والے مسیح اور اس کے زمانے کی تقریباً اسی علامات ذکر کی گئی ہیں۔

مرزا طاہر احمد صاحب صرف ان تین احادیث صحیحہ کو مرزا آنجنہانی پر چسپاں کر دکھائیں تو اپنے دین و مذہب پر بڑا احسان فرمائیں گے، مگر میں پیش گوئی کرتا ہوں کہ پوری قادیانی امت مل کر بھی یہ کام نہیں کر سکتی اور قیامت تک نہیں کر سکتی۔

قادیانیت، صیہونیت کی ذیلی شاخ:

مرزا آنجنہانی کا دعویٰ تو یہ ہے کہ وہ مسیح ہیں، اور ان میں مسیح کی روحانیت کا حلول ہوا ہے، لیکن ہم جب اس گستاخانہ رویہ پر نظر کرتے ہیں جو مرزا نے حضرت عیسیٰ علیہ السلام کے بارے میں اختیار کیا تو ذہن بے ساختہ اس طرف جاتا ہے کہ ہونہ ہو اس شخص میں کسی کٹے جلمے پولوس کی روح کا رہنا ہے، اور اس کی ”نومسچی“ تحریک کا مقصد اہل اسلام میں یہودی نظریات کی ترویج ہے، اسی اعتقادی ہمرنگی کا کرشمہ ہے کہ وہ ”اسرائیلی“ کہلانے میں فخر محسوس کرتا ہے۔ اسی مضمون کی طرف اشارہ کرتے ہوئے راقم الحروف نے لکھا تھا:

”قادیانی تحریک کے بانی (مرزا آنجنہانی) کا یہ دعویٰ کہ

وہ نسل اسرائیلی ہے (ایک غلطی کا ازالہ) درحقیقت اس امر کا برملا

اظہار ہے کہ قادیانیت، صیہونیت ہی کی ایک ذیلی شاخ ہے۔“

یہودیت سے مرزا آنجنہانی کے نسبی رشتہ کا صاحبزادہ مرزا طاہر احمد بھی انکار نہیں

کر سکے، مگر ان کا کہنا ہے کہ سلا اسرائیلی ہونے سے عقیدۃ یہودی ہونا لازم نہیں آتا، صاحبزادہ صاحب کا یہ اصول غلط نہیں ہے مگر جس شخص کے عقائد خالص یہودیانہ ہوں، اور اس پر وہ اپنا نسبی رشتہ بھی یہود سے پیوستہ کرے، اس کے یہودی ہونے اور اس کی اٹھائی ہوئی تحریک کے یہودیت کی شاخ ہونے میں کیا شبہ رہ جاتا ہے؟

یہودی لطیفہ:

مرزا آنجمانی نے جس منطق سے اپنا نسبی رشتہ یہود سے جوڑا ہے وہ بھی بجائے خود ایک لطیفہ ہے۔ تفصیل اس کی یہ ہے کہ معجم طبرانی اور مستدرک حاکم کے حوالے سے کنز العمال (مناقب) میں آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کا یہ ارشاد نقل کیا ہے: ”سلمان منا اہل البیت“ یعنی سلمان فارسی کا شمار ہمارے اہل بیت سے ہے۔ حضرت سلمان فارسی کا خویش، قبیلہ نہیں تھا، ان کی دل جوئی کے لئے آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے ازراہ شفقت انہیں اپنے گھرانے کا ایک فرد بنا لیا، یہ تھا حدیث کا مفہوم، مگر اپنے آپ کو ”اسرائیلی“ بنانے کے لئے مرزا آنجمانی نے اس حدیث پر جو ہوائی قلعہ تعمیر کیا وہ یہ ہے:

”یہ بات میرے اجداد کی تاریخ سے ثابت ہے کہ ایک دادی ہماری شریف خاندان سادات اور بنی فاطمہ میں سے تھی، اس کی تصدیق آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے بھی کی اور خواب میں مجھے فرمایا کہ: ”سلمان منا اہل البیت علی مشرب الحسن“ میرا نام سلمان رکھا۔ یعنی دو سلم اور سلم، عربی میں صلح کو کہتے ہیں، یعنی مقدر (افسوس کہ مرزا آنجمانی کے مقدر کھوٹے نکلے، اس کے ہاتھ پر نہ اندرونی صلح ہوئی نہ بیرونی، کیوں صاحبزادہ صاحب؟ ٹھیک ہے نا!... ناقل) یہ ہے کہ دو صلح میرے ہاتھ پر ہوں گی۔ ایک اندرونی کہ جو اندرونی بغض اور شحنا کو دور کرے گی، دوسری بیرونی کہ جو بیرونی عداوت کے وجود کو پامال کر کے اور اسلام کی عظمت دکھا کر غیر مذاہب والوں کو

اسلام کی طرف جھکا دے گی۔ معلوم ہوتا ہے کہ حدیث میں جو سلمان آیا ہے اس سے بھی میں مراد ہوں ورنہ اس سلمان پر دوسلح کی پیش گوئی صادق نہیں آتی اور میں خدا سے وحی پا کر کہتا ہوں کہ میں بنی فارس میں سے ہوں اور بموجب اس حدیث کے جو کنز العمال میں درج ہے، بنی فارس بھی اسرائیل اور اہل بیت میں سے ہیں۔“

(مجموعہ اشتہارات حاشیہ ج: ۳ ص: ۴۳۷، ۴۳۸ طبع ربوہ)

کنز العمال کی جس حدیث کا آنجہانی نے حوالہ دیا ہے وہ وہی ہے جو اوپر نقل کر چکا ہوں، اب دیکھئے کہ آنجہانی نے اپنا یہودی النسل ہونا ثابت کرنے کے لئے کیا کیا کرتب دکھائے؟

الف: ... حدیث نبوی کی حضرت سلمان فارسیؓ سے نفی کر کے اسے اپنے حق میں ٹھہرایا۔

ب: ... حدیث میں ”سلمان“ ایک خاص شخص کا نام تھا، مگر آنجہانی نے اس کو وصف بنا کر دو ”صلح“ بنالیا۔

ج: ... پھر اپنے بنی فارس میں سے ہونے کا الہام گھڑا۔

د: ... پھر بنو فارس کا رشتہ ”اسرائیل“ سے ثابت کرنے کے لئے حدیث کا من گھڑت حوالہ جڑ دیا۔

اتنی فرضی داستانیں تراشنے کے بعد آنجہانی کے اسرائیلی رشتہ کا سراغ مل سکا۔ ”دیوانہ بکار خویش ہوشیار“... مرزا آنجہانی پر ہمیں تعجب نہیں، حیرت ان دانشمندوں کے علم و فہم پر ہے جو ان خود تراشیدہ مفروضوں پر ایمان کی بازی ہار چکے ہیں۔ ان میں سے کوئی عقلمند یہ سوچنے کی زحمت گوارا نہیں کرتا کہ کہنے والا کیا کہنا چاہتا ہے، وہ سب کچھ تیاگ کر اس کی ہر الٹی سیدھی پر آنکھیں بند کر کے ایمان لارہے ہیں: بل طبع اللہ علی قلوبہم واتبعوا اھوائہم!

انکار عیسیٰ علیہ السلام:

راقم الحروف نے لکھا تھا:

”یہودیت کی بنیاد انکار عیسیٰ علیہ السلام پر قائم کی گئی ہے، اور قادیانیت بھی اس مسئلہ میں اس (یہودیت) سے پیچھے نہیں رہنا چاہتی، اہل نظر واقف ہیں کہ قادیانی تحریک کے بانی کا دعویٰ ہی انکار عیسیٰ علیہ السلام پر مبنی ہے۔“ (ربوہ سے تل ابیب تک ص: ۴)

مرزا طاہر احمد صاحب کو میرے پہلے فقرہ پر یہ اعتراض ہے کہ یہودیت تو حضرت عیسیٰ علیہ السلام سے پہلے موجود تھی، اس کی بنیاد انکار عیسیٰ علیہ السلام پر کیونکر ہوئی؟ جناب صاحبزادہ صاحب، یہودیت کو دین موسوی کا مترادف سمجھ کر اعتراض فرما رہے ہیں، جب کہ میری مراد مروجہ یہودیت سے ہے جو حضرت موسیٰ علیہ السلام کے بعد رائج ہوئی، اور جس کا سب سے اہم تر امتیازی نشان حضرت عیسیٰ علیہ السلام کا انکار اور ان سے بغض و عداوت ہے، آج جب یہودیت کا لفظ بولا جاتا ہے تو اس سے یہی مختصر یہودیت مراد ہوتی ہے نہ کہ دین موسوی، اس لئے صاحبزادہ کا یہ اعتراض نا فہمی کا نتیجہ ہے۔

صاحبزادہ صاحب میرے دوسرے فقرے سے کہ ”مرزا آنجنابی کا دعویٰ ہی انکار عیسیٰ علیہ السلام پر مبنی ہے“ تلملا اٹھے ہیں اور برہم ہو کر فرماتے ہیں:

”اللہ سے ڈریں! مولانا، اللہ سے ڈریں!! اتنی بڑی غلط

بیانی اور دن دھاڑے۔“ (ربوہ سے تل ابیب تک پر مختصر تبصرہ ص: ۳۵)

میں اللہ کی پناہ مانگتا ہوں کہ کسی سراپا غلط شخص کی طرف بھی کوئی غلط بات منسوب کروں، میں نے غلط بیانی نہیں کی بلکہ قادیانی عقائد کا آئینہ پیش کیا ہے۔ اب اگر صاحبزادہ صاحب جہشی کی طرح اپنی بد صورتی کا انتقام آئینہ سے لینا شروع کر دیں تو اس کا کیا علاج ہے؟

اب سنئے! قرآن کریم، حدیث نبوی، اور سلف صالحین کے اجماع کے مطابق

سیدنا عیسیٰ علیہ السلام کی حیات طیبہ کے دو دور ہیں۔ ایک ان کے رفع جسمانی سے پہلے کا، اور دوسرا قرب قیامت میں آسمان سے نازل ہونے کے بعد کا، یہود نے دور اول میں ان کو فرضی مسیح کہا، اور مرزائیوں نے دور ثانی میں مسیح سے کفر کے مرتکب دونوں ہوئے۔ وہ دور اول میں حضرت عیسیٰ علیہ السلام کے مسیح ہونے کے منکر، اور یہ دور ثانی میں، وہ نقش اول اور یہ نقش ثانی۔

قبل ازیں عرض کر چکا ہوں کہ مرزا آنجہانی جب تک مسلمان تھا، حضرت عیسیٰ علیہ السلام کے دوبارہ تشریف لانے کا قائل تھا، اور اس کو نہ صرف قرآن کریم سے ثابت کرتا تھا بلکہ اپنے الہامات سے بھی تائید لاتا تھا، مگر جب اس کے سر میں بروزی نبوت کا سودا سمایا اور شیطان نے اسے ”انا جعلناک المسیح ابن مریم“ (ہم نے تجھے مسیح ابن مریم بنادیا۔) کا الہام کر کے مسیحیت کے دعویٰ کی پٹی پڑھائی تو ختم نبوت اور حیات عیسیٰ دونوں کا منکر ہو بیٹھا۔ کیونکہ عیسیٰ علیہ السلام کا اقرار کرنے کی صورت میں مرزا کا دعویٰ مسیحیت حرف غلط ثابت ہوتا تھا اس لئے ان کے حق میں فرضی مسیح کا پروپیگنڈہ شروع کر دیا، الغرض مرزائی مسیحیت کی بنیاد حضرت عیسیٰ علیہ السلام کے دوبارہ آنے سے انکار پر قائم ہے اور یہ ایک ایسی حقیقت ہے جس کے مرزا طاہر احمد صاحب خود بھی معترف ہیں، مگر مریدوں کو مطمئن کرنے کیلئے اسے دن دھاڑے غلط بیانی کا نام دیتے ہیں:

”جو چاہے ترا حسن کر شمرہ ساز کرے۔“

میں یہاں یہ بھی گزارش کر دینا چاہتا ہوں کہ جس تو اتر سے ہمیں نماز، روزہ، حج، زکوٰۃ کی تفصیلات ملی ہیں اور جس تو اتر سے قرآن کریم اور رسول کی نبوت ہم تک پہنچی ہے، اسی تو اتر سے ہمیں حضرت عیسیٰ علیہ السلام کی دوبارہ تشریف آوری کی خبر بھی پہنچی ہے۔ چنانچہ خود مرزا آنجہانی نے لکھا ہے:

”مسیح ابن مریم کے آنے کی پیش گوئی ایک اول درجہ کی پیش گوئی ہے، جس کو سب نے باتفاق قبول کر لیا ہے، اور جس قدر صحاح میں پیش گوئیاں لکھی گئی ہیں کوئی پیش گوئی اس کے ہم پہلو اور



ہم وزن ثابت نہیں ہوتی، تو اتر کا اول درجہ اس کو حاصل ہے۔ انجیل بھی اس کی مصدق ہے۔ اب اس قدر ثبوت پر پانی پھیرنا اور یہ کہنا کہ یہ تمام حدیثیں موضوع ہیں، درحقیقت ان لوگوں کا کام ہے جن کو خدا تعالیٰ نے بصیرت دینی اور حق شناسی سے کچھ بھی بخرہ اور حصہ نہیں دیا، اور باعث اس کے کہ ان لوگوں کے دلوں میں قال اللہ اور قال الرسول کی عظمت باقی نہیں رہی، اس لئے جو بات ان کی اپنی سمجھ سے بالاتر ہو اس کو محالات اور ممتنعات میں داخل کر لیتے ہیں.....“

”..... پس یہ کمال درجہ کی بے نصیبی اور بھاری غلطی ہے کہ یک لخت تمام حدیثوں کو ساقط الاعتبار سمجھ لیں اور ایسی متواتر پیش گوئیوں کو جو خیر القرون میں ہی تمام ممالک اسلام میں پھیل گئی تھیں اور مسلمات میں سے سمجھی گئی تھیں بعد موضوعات داخل کر دیں۔“ (ازالہ اوہام ص: ۵۵۷، روحانی خزائن ج: ۳ ص: ۴۰۰)

الغرض جس تواتر سے ہمیں قرآن پہنچا، نبوت محمد یہ پہنچی، نماز، حج، زکوٰۃ اور دین اسلام کے دیگر اصول و عقائد پہنچے اسی تواتر کے راستہ سے حضرت عیسیٰ بن مریم کے دوبارہ آنے کی پیش گوئی بھی ہم تک پہنچی، پس جو شخص اس کا منکر ہے اور نعوذ باللہ اسے مولویوں کی من گھڑت ٹھہراتا ہے، وہ درحقیقت دین اسلام کی ایک بات کا منکر ہے۔ کیونکہ اس عقیدہ کا انکار دراصل اس تواتر کا انکار ہے جو دین کی اصل بنیاد ہے۔

**قتل مسیح:**

راقم الحروف نے لکھا تھا:

”یہودیت بڑی بلند آہنگی سے دعویٰ کرتی ہے کہ اس نے مسیح بن مریم رسول اللہ کو قتل کر دیا، اور قادیانی تحریک کے بانی کو بھی

اس دعویٰ کا فخر حاصل ہے کہ میرا وجود ایک نبی (یعنی عیسیٰ علیہ السلام) کو مارنے کے لئے ہے۔“ (ربوہ سے تل ابیب تک ص: ۵)

یہاں صاحبزادہ صاحب بالکل ہی بے بس اور لاچار نظر آتے ہیں، ان کی بے بسی ملاحظہ فرمائیں:

”اس بات کو پڑھ کر قارئین خود اندازہ فرما سکتے ہیں کہ مولانا کا ذہن کس قدر الجھا ہوا ہے..... مولانا کے نزدیک یہود کا یہ دعویٰ کہ ہم نے عیسیٰ ابن مریم کو قتل کر دیا اور حضرت مرزا صاحب کا یہ دعویٰ کہ آپ نے قرآن کریم کی بین آیات اور احادیث نبویہ کی رو سے حضرت مسیح علیہ السلام کا طبعی موت سے وفات پا جانا ثابت فرما دیا ہے، ایک ہی نوعیت کا جرم ہے اور دونوں پر قتل مسیح کا الزام عائد ہوگا۔“ (ربوہ سے تل ابیب تک پر مختصر تبصرہ ص: ۳۶)

صاحبزادہ طاہر احمد صاحب کی تاویل کا خلاصہ یہ ہے کہ حضرت مرزا صاحب نے ایک نبی کو مارنے کا جو دعویٰ کیا ہے اس سے مراد ہے مسیح علیہ السلام کی وفات ثابت کرنا۔ مگر موصوف کی یہ تاویل بے بسی کی منہ بولتی تصویر ہے کیونکہ مرزا آنجہانی کے اصل الفاظ یہ ہیں:

”اصل میں ہمارا وجود دو باتوں کے لئے ہے، ایک تو ایک نبی کو مارنے کے لئے، دوسرا شیطان کو مارنے کے لئے۔“

(ملفوظات ج: ۱۰ ص: ۶۰ حاشیہ)

اول تو مارنے کے دعویٰ سے موت ثابت کرنا کسی زبان، محاورہ میں رائج نہیں، قادیان میں دنیا سے نرالی لغت ایجاد ہوئی ہو تو مرزا طاہر احمد کو خبر ہوگی۔

دوسرے مرزا آنجہانی نے اس فقرہ میں ایک نبی کے ساتھ شیطان کو مارنے کا بھی دعویٰ کیا ہے، کیا اس کے معنی بھی یہی ہیں کہ مرزا نے قرآن کریم اور احادیث کی رو سے شیطان کا طبعی موت سے وفات پا جانا ثابت کر دیا؟

تیسرے ایک ہی فقرے میں ایک نبی اور شیطان کو مارنے کا دعویٰ کرنا اور اسی کو

اپنے وجود کی اصل غرض ٹھہرانا، کیا یہ تاثر نہیں دیتا کہ مرزا کے نزدیک شیطان کی طرح نبی بھی قابل گردن زدنی ہے؟

چوتھے، یہود نے بھی حضرت مسیح علیہ السلام کو مارا نہیں تھا، صرف مار دینے کا دعویٰ کیا تھا۔ اسی دعویٰ کی سعادت مرزا آنجہانی کے حصہ میں آئی، دعویٰ ان کا بھی محض لفظی حد تک تھا اور مرزا کا بھی لفظی حد تک مارنے کا ہے۔ باقی یہ حضرت مسیح علیہ السلام کی قسمت ہے کہ وہ نہ یہود کے ہاتھوں سے مرے، نہ قادیانی حربوں سے، یعنی:

قتل ایں خستہ بہ شمشیر تو تقدیر نہ بود

ورنہ از خنجر بے رحم تو تقصیر نہ بود

پانچویں، حضرت مسیح زندہ تھے، مگر یہود نے بے پرکی اڑادی کہ ہم نے مسیح کو قتل کر دیا، ان کی یہی گپ تراشی ان کی ملعونیت کا سبب ٹھہری، ٹھیک یہی المیہ قادیانیت کو پیش آیا کہ حضرت مسیح زندہ ہیں، مگر اس نے یہ ہوائی اڑادی کہ ہم نے مسیح نبی کو مار دیا، واقعہً مارا نہ یہود نے تھا، نہ قادیانی نے، البتہ مارنے کا دعویٰ انہوں نے بھی کیا اور انہوں نے بھی، پس ملعون وہ بھی ہوئے اور یہ بھی۔

حضرت عیسیٰ علیہ السلام کا نسب اور مرزا آنجہانی:

راقم الحروف نے یہودیت سے قادیانیت کی ایک مشابہت یہ لکھی تھی:

”یہودیت حضرت عیسیٰ علیہ السلام روح اللہ کو صحیح النسب

نہیں سمجھتی، اسی نوعیت کے خیالات کا اظہار قادیانیت کے بانی نے

بھی کیا ہے (انجام آتھم وغیرہ)۔“ (ربوہ سے تل ایب تک ص: ۵)

اس پر جناب صاحبزادہ صاحب کی نظر خشمگیں ملاحظہ ہو:

”مولانا کو مماثلتیں تلاش کرنے کا اس قدر شوق ہے کہ

سچ جھوٹ میں کوئی تمیز باقی نہیں رہنے دی۔ چنانچہ حضرت مسیح موعود

(مرزا آنجہانی) پر یہ افترا عظیم کرنے سے بھی نہیں چو کے کہ نعوذ باللہ

حضرت مسیح موعود (مرزا آنجمانی) حضرت مسیح ناصری علیہ السلام کو یہود کی طرح صحیح النسب قرار نہ دیتے تھے اور بغیر صفحے کے حوالے کے کتاب ”انجام آتھم“ کی طرف آپ کا یہ عقیدہ منسوب کیا ہے۔ مولانا! آپ مسلمان کہلاتے ہیں، بلکہ مسلمانوں کے مذہبی رہنما بنتے ہیں، کیا آپ کو اتنا بھی علم نہیں کہ قول ”زور“ ایک گناہ کبیرہ ہے اور قیامت کے دن اس افترا پر دازی پر مواخذہ ہوگا۔ اگر آپ سچے ہیں تو من وعن وہ اقتباس شائع فرمائیے جس سے ثابت ہو کہ حضرت مسیح موعود (مرزا آنجمانی) حضرت مسیح کو صحیح النسب تسلیم نہیں کرتے۔“

(ربوہ سے تل ابیب تک پر مختصر تبصرہ ص: ۳۶، ۳۷)

صاحبزادہ صاحب کی یہ ساری خفگی مریدوں کو مطمئن کرنے کے لئے ہے، ورنہ انہیں بھی معلوم ہے کہ میں نے جو کچھ لکھا ہے، صحیح لکھا ہے۔ لیجئے حوالے پیش خدمت ہیں، پڑھئے اور خود انصاف کیجئے:

۱:۔۔۔ ”آپ کا خاندان بھی نہایت پاک اور مطہر ہے تین دادیاں اور نانیاں آپ کی زنا کار اور کسی عورتیں تھیں جن کے خون سے آپ کا وجود ظہور پذیر ہوا۔“

(ضمیمہ انجام آتھم حاشیہ ص: ۷، روحانی خزائن ج: ۱۱ ص: ۲۹۱)

۲:۔۔۔ ”آپ کا کنجریوں سے میلان اور صحبت بھی شاید اسی وجہ سے ہو کہ جدی مناسبت درمیان ہے ورنہ کوئی پرہیزگار انسان ایک جوان کنجری کو یہ موقع نہیں دے سکتا کہ وہ اس کے سر پر اپنے ناپاک ہاتھ لگاوے اور زنا کاری کی کمائی کا پلید عطر اس کے سر پر ملے اور اپنے بالوں کو اس کے پیروں پر ملے، سمجھنے والے سمجھ لیں کہ ایسا انسان کس چلن کا آدمی ہو سکتا ہے۔“

(ضمیمہ انجام آتھم حاشیہ ص: ۷، روحانی خزائن ج: ۱۱ ص: ۲۹۱)

۳: ”انسان جب حیا اور انصاف کو چھوڑ دے تو جو چاہے کہے اور جو چاہے کرے، لیکن مسیح کی راست بازی اپنے زمانہ میں دوسرے راست بازوں سے بڑھ کر ثابت نہیں ہوتی، بلکہ یحییٰ نبی کو اس پر ایک فضیلت ہے، کیونکہ وہ شراب نہیں پیتا تھا، اور کبھی نہیں سنا گیا کہ کسی فاحشہ عورت نے آکر اپنی کمائی کے مال سے اس کے سر پر عطر ملا تھا۔ یا ہاتھوں اور اپنے سر کے بالوں سے اس کے بدن کو چھوا تھا یا کوئی بے تعلق جوان عورت اس کی خدمت کرتی تھی۔ اسی وجہ سے خدا نے قرآن میں یحییٰ کا نام حضور رکھا، مگر مسیح کا یہ نام نہ رکھا، کیونکہ ایسے قصے اس نام کے رکھنے سے مانع تھے۔“

(دافع البلاء ابتدائیہ حاشیہ ص: ۴، روحانی خزائن ج: ۱۸ ص: ۲۲۰)

ان اقتباسات میں صراحت کے ساتھ تین باتیں کہی گئی ہیں:

اول: ... حضرت عیسیٰ علیہ السلام زنا کاروں کے خون سے وجود پذیر ہوئے۔  
دوم: ... اسی جدی مناسبت کی بنا پر آپ کو کنجریوں سے میلان اور مصاحبت تھی۔  
سوم: ... اور آپ کی شراب نوشی اور زنان بازاری سے صحبت و اختلاط کی بنا پر قرآن نے آپ کو حضور (پاک دامن) کہنے سے گریز کیا۔

مرزا طاہر احمد صاحب! کسی کے نسب میں کیڑے ڈالنے کے لئے اس سے زیادہ فحش اور بازاری زبان چاہئے؟

ایک اور طرز سے:

مرزا آنجنمائی نے لکھا ہے:

۱: ”... اور مفسد اور مفتری ہے وہ شخص جو مجھے کہتا ہے کہ میں مسیح بن مریم کی عزت نہیں کرتا، بلکہ مسیح تو مسیح میں تو اس کے چاروں بھائیوں کی بھی عزت کرتا ہوں کیونکہ پانچوں ایک ہی ماں



کے بیٹے ہیں، نہ صرف اسی قدر بلکہ میں تو حضرت مسیح کی دونوں حقیقی ہمشیروں کو بھی مقدسہ سمجھتا ہوں کیونکہ یہ سب بزرگ مریم بتول کے پیٹ سے ہیں۔“ (کشتی نوح ص: ۱۶، روحانی خزائن ج: ۱۹ ص: ۱۸)

۲:۔۔۔ ”یسوع مسیح کے چار بھائی اور دو بہنیں تھیں یہ سب یسوع کے حقیقی بھائی اور حقیقی بہنیں تھیں۔“ (حاشیہ عبارت بالا)

۳:۔۔۔ ”حضرت مسیح ابن مریم اپنے باپ یوسف نجار کے ساتھ بائیس برس کی مدت تک نجاری کا کام بھی کرتے رہے ہیں۔“

(ازالہ اوہام حاشیہ ص: ۳۰۳، روحانی خزائن حاشیہ ج: ۳ ص: ۲۵۴)

۴:۔۔۔ ”اور مریم کی وہ شان ہے جس نے ایک مدت تک

اپنے تئیں نکاح سے روکا، پھر بزرگان قوم کے نہایت اصرار سے بوجہ حمل کے نکاح کر لیا، گو لوگ اعتراض کرتے ہیں کہ برخلاف تعلیم توریت عین حمل میں کیوں کر نکاح کیا گیا، اور بتول ہونے کے عہد کو کیوں ناحق توڑا گیا، اور تعدد ازواج کی کیوں بنیاد ڈالی گئی، یعنی باوجود یوسف نجار کی پہلی بیوی کے ہونے کے پھر مریم کیوں راضی ہوئی کہ یوسف نجار کے نکاح میں آوے مگر میں کہتا ہوں کہ یہ سب مجبوریات تھیں جو پیش آگئیں اس صورت میں وہ لوگ قابل رحم تھے، نہ قابل اعتراض۔“ (کشتی نوح ص: ۱۶، روحانی خزائن ج: ۱۹ ص: ۱۸)

۵:۔۔۔ ”مریم کی ماں نے عہد کیا تھا کہ وہ بیت المقدس کی

خدمت کرے گی اور ”تارکہ“ رہے گی، نکاح نہ کرے گی، اور خود مریم نے بھی یہ عہد کیا تھا کہ ہیکل کی خدمت کروں گی، باوجود اس عہد کے پھر وہ کیا بلا اور آفت پڑی کہ یہ عہد توڑا گیا، اور نکاح کیا گیا۔ ان تاریخوں میں جو یہودی مصنفوں نے لکھی ہیں اور باتوں کو چھوڑ کر بھی اگر دیکھا جائے تو یہ لکھا ہے کہ یوسف کو مجبور کیا گیا کہ وہ نکاح

کر لے اور اسرائیلی بزرگوں نے اسے کہا کہ ہر طرح تمہیں نکاح کرنا ہوگا اب اس واقعہ کو مد نظر رکھ کر دیکھو کہ کس قدر اعتراض واقع ہوتے ہیں۔“ (الحکم مؤرخہ ۲۲ اپریل ۱۹۰۲ء ج: ۶ ص: ۵ نمبر ۱۵)

ان اقتباسات کا خلاصہ یہ ہے کہ حضرت مسیح کا باپ یوسف نجار تھا، اور مریم کے مشکوک حمل پر پردہ ڈالنے کے لئے بزرگان قوم نے یوسف و مریم کو نکاح پر مجبور کیا۔

واضح رہے کہ یوسف و مریم کے نکاح کا افسانہ محض یہودی گپ ہے، جو عیسیٰ علیہ السلام کے نسب کو مشکوک کرنے کے لئے اڑائی گئی، کوئی مسلمان اس کا قائل نہیں، نہ قرآن و حدیث میں اس کی طرف کہیں ادنیٰ اشارہ تک کیا گیا ہے، مگر مرزا کی یہودی ذہنیت نے اس یہودی گپ کی بنیاد پر حضرت مسیح کو نہ صرف یوسف نجار کا بیٹا بنادیا، بلکہ آپ کے چھ حقیقی بہن بھائیوں کا افسانہ بھی تراش لیا۔

اس سے صاف معلوم ہوا کہ مرزا کو قرآن کریم پر ایمان نہیں، بلکہ یہودی مصنفوں کی تاریخوں پر ایمان ہے اور انہی کی لے میں لے ملا کر کہا جا رہا ہے کہ: ”اس واقعہ کو مد نظر رکھ کر دیکھو کہ (حضرت عیسیٰ علیہ السلام کے نسب پر) کس قدر اعتراض واقع ہوتے ہیں۔“

### مرزا آنجمانی اور معجزات مسیح:

مرزا آنجمانی کو دعویٰ تھا کہ اسے نعوذ باللہ ہر بات میں حضرت عیسیٰ علیہ السلام پر فوقیت حاصل ہے۔ فضیلت کے لحاظ سے بھی، منصب و مرتبہ کے لحاظ سے بھی اور معجزات میں بھی، چنانچہ لکھتا ہے:

ان: ”اور میں عیسیٰ مسیح کو ہر گز ان امور میں اپنے پر کوئی زیادت نہیں دیکھتا، یعنی جیسے اس پر خدا کا کلام نازل ہوا، ایسا ہی مجھ پر بھی ہوا، اور جیسے اس کی نسبت معجزات منسوب کئے جاتے ہیں میں یقینی طور پر ان معجزات کا مصداق اپنے نفس کو دیکھتا ہوں، بلکہ ان

سے زیادہ۔“ (چشمہ مسیحی ص: ۲۳، روحانی خزائن ج: ۲۰ ص: ۳۵۴)  
 ۲: ”ابن مریم کے ذکر کو چھوڑو اس سے بہتر غلام احمد ہے۔“ (دافع البلاء ص: ۲۰، روحانی خزائن ج: ۱۸ ص: ۲۴۰)  
 ۳: ”خدا نے اس اُمت پر مسیح موعود بھیجا جو اس پہلے مسیح سے اپنی تمام شان میں بہت بڑھ کر ہے... مجھے قسم ہے اس ذات کی جس کے ہاتھ میں میری جان ہے کہ اگر مسیح ابن مریم میرے زمانہ میں ہوتا تو وہ کام (کون سا کام؟ انگریزوں کی غلامی، قرآن کی تحریف، انبیاء کی توہین، اُمتِ مسلمہ کی تکفیر؟ ناقل) جو میں کر سکتا ہوں وہ ہرگز نہ کر سکتا، اور وہ نشان جو مجھ سے ظاہر ہو رہے ہیں وہ ہرگز دکھانا نہ سکتا۔“

(حقیقۃ الوحی ص: ۱۳۸، روحانی خزائن ج: ۲۲ ص: ۱۵۲)  
 ۴: ”اس امر میں کیا شک ہے کہ حضرت مسیح علیہ السلام کو وہ فطرتی طاقتیں نہیں دی گئیں جو مجھے دی گئیں، کیونکہ وہ ایک خاص قوم کے لئے آئے تھے، اور اگر وہ میری جگہ ہوتے تو اپنی اس فطرت کی وجہ سے وہ کام انجام نہ دے سکتے جو خدا کی عنایت نے مجھے انجام دینے کی قوت دی ہے۔“

(حقیقۃ الوحی ص: ۱۵۳، روحانی خزائن ج: ۲۲ ص: ۱۵۷)  
 ۵: ”پھر جب کہ خدا نے اور اس کے رسول نے اور تمام نبیوں نے آخری زمانے کے مسیح کو اس کے کارناموں کی وجہ سے افضل قرار دیا ہے تو پھر یہ شیطانی وسوسہ ہے کہ یہ کہا جائے کہ کیوں تم مسیح ابن مریم سے اپنے تئیں افضل قرار دیتے ہو۔“

(حقیقۃ الوحی ص: ۱۵۵، روحانی خزائن ج: ۲۲ ص: ۱۵۹)

مرزا آنجنمانی کی اس لاف و گزاف اور تعلیٰ آمیز دعوؤں پر کسی نے مرزا جی سے

پوچھ لیا کہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام تو عظیم معجزے دکھایا کرتے تھے، مثلاً مردوں کو زندہ کرتے تھے، مٹی سے پرندوں کی شکل بنا کر ان میں پھونک مارتے تھے وہ سچ مچ کے پرندے بن کر اڑ جاتے تھے، مادر زاد اندھوں اور کوڑھیوں پر ہاتھ مبارک پھیرتے تھے تو وہ شفا یاب ہو جاتے تھے۔ (المائدہ: ۱۱۰)

پس اگر تم مسیحائی کے دعوے میں سچے ہو تو تم بھی ایک آدھ پرندہ بنا کر دکھاؤ، کسی بیمار کو اچھا اور کسی مردہ کو زندہ کر دکھاؤ۔ یہ سوال خود مرزا آنجہانی نے ازالہ اوہام میں بالفاظ ذیل نقل کیا ہے:

”بعض لوگ (بعض لوگ نہیں بلکہ کل امت اسلامیہ کا یہی عقیدہ ہے۔ ناقل) موحّدین کے فرقہ میں سے بحوالہ آیت قرآنی یہ اعتقاد رکھتے ہیں کہ حضرت مسیح ابن مریم انواع و اقسام کے پرندے بنا کر اور ان میں پھونک مار کر زندہ کر دیا کرتے تھے، چنانچہ اسی بنا پر اس عاجز پر اعتراض کیا گیا ہے کہ جس حالت میں مثیل مسیح ہونے کا دعویٰ ہے تو پھر آپ بھی کوئی مٹی کا پرندہ بنا کر پھر اس کو زندہ کر کے دکھائیے۔“

(ازالہ اوہام حاشیہ ص: ۲۹۵، روحانی خزائن حاشیہ ج: ۳ ص: ۲۵۱)

مگر یہاں تو مسیح ہونے کا دعویٰ خالی ڈھول کی آواز تھی، یہاں زبانی جمع خرچ اور تعلّی و لفاظی کے سوا کیا رکھا تھا؟ اس لئے خود تو کیا معجزے دکھاتے، النامیسی علیہ السلام کے معجزات کا انکار کر دیا:

خود تو ڈوبے تھے صنم، تجھ کو بھی لے ڈوبیں گے!

مرزا آنجہانی کے دعویٰ میں ایک رتی بھر صداقت ہوتی تو وہ اس چیلنج کو قبول کرتے، اور حضرت مسیح علیہ السلام کے وہ معجزات، جن کو قرآن کریم نے ”آیات بینات“ کہا ہے، دکھا کر لوگوں کو مطمئن کر دیتے اور اگر وہ معجزات دکھانے سے عاجز تھے تو انسانی شرافت کا تقاضا یہ تھا کہ اپنی بے بسی کا اعتراف کر کے اخلاقی جرأت کا ثبوت دیتے، مگر

یہاں نہ صداقت تھی، نہ شرافت، اس لئے آنجہانی نے یہودیوں کی تقلید میں ایک تیسرا راستہ اختیار کیا کہ حضرت مسیح علیہ السلام کے معجزات کو عمل الترب اور مسمریزم کا کرشمہ ٹھہرایا، اس سلسلہ میں مرزا آنجہانی کی تصریحات ملاحظہ فرمائیے:

۱: "...عیسائیوں نے بہت سے آپ کے (حضرت عیسیٰ علیہ السلام) کے معجزات لکھے ہیں مگر حق بات یہ ہے کہ آپ سے کوئی معجزہ نہیں ہوا۔"

(ضمیمہ انجام آتھم حاشیہ ص: ۶، روحانی خزائن حاشیہ ج: ۱۱ ص: ۲۹۰)

۲: "...آپ کی بد قسمتی (صاحبزادہ صاحب! کیا نبی بھی بد قسمت ہوتا ہے؟ اور کیا اس بد قسمتی میں سے مرزا غلام احمد آنجہانی کو کچھ حصہ ملا یا نہیں؟ ناقل) سے اسی زمانہ میں ایک تالاب بھی موجود تھا۔ جس سے بڑے بڑے نشان ظاہر ہوتے تھے۔ خیال ہو سکتا ہے کہ اس تالاب کی مٹی آپ بھی استعمال کرتے ہوں گے۔ اسی تالاب سے آپ کے معجزات کی پوری پوری حقیقت کھلتی ہے اور اسی تالاب نے فیصلہ کر دیا ہے کہ اگر آپ سے کوئی معجزہ بھی ظاہر ہوا ہو تو وہ معجزہ آپ کا نہیں بلکہ اس تالاب کا معجزہ ہے اور آپ کے ہاتھ میں سوا مکرو فریب کے اور کچھ نہیں تھا۔"

(ضمیمہ انجام آتھم حاشیہ ص: ۷، روحانی خزائن حاشیہ ج: ۱۱ ص: ۲۹۱)

۳: "...ما سوا اس کے یہ بھی قرین قیاس ہے کہ ایسے ایسے اعجاز طریق عمل الترب یعنی مسمریزمی طریق سے بطور لعب ولہو، نہ بطور حقیقت ظہور میں آسکیں۔" (ازالہ اوہام حاشیہ ص: ۳۰۵، روحانی خزائن حاشیہ ج: ۳ ص: ۲۵۵، ۲۵۶)

۴: "...اور یہ بات قطعی اور یقینی طور پر ثابت ہو چکی ہے کہ حضرت مسیح بن مریم باذن و حکم الہی الیسع نبی کی طرح اس عمل الترب



(مسمریزم) میں کمال رکھتے تھے۔“

(ازالہ اوہام حاشیہ ص: ۳۰۸، روحانی خزائن حاشیہ ج: ۳ ص: ۲۵۷)  
 ۵: ”... بہر حال مسیح کی یہ تربی (مسمریزم کی) کاروائیاں  
 زمانہ کے مناسب حال بطور خاص مصلحت کے تھیں، مگر یاد رکھنا  
 چاہئے کہ یہ عمل (مسمریزم) ایسا قدر کے لائق نہیں جیسا کہ عوام  
 الناس اس کو خیال کرتے ہیں، اگر یہ عاجز اس عمل کو مکروہ اور قابل  
 نفرت نہ سمجھتا تو خدا تعالیٰ کے فضل و توفیق سے امید قوی رکھتا تھا کہ  
 ان عجوبہ نمایوں میں حضرت مسیح ابن مریم سے کم نہ رہتا۔“ (اس سے  
 معلوم ہوتا ہے کہ مرزا آنجمانی کو بھی مسمریزم میں خاصی مشق حاصل  
 تھی۔ ناقل) (ازالہ اوہام حاشیہ ص: ۳۰۹، روحانی خزائن حاشیہ ج: ۳  
 ص: ۲۵۷، ۲۵۸)

۶: ”... گو حضرت مسیح جنمائی بیماروں کو اس عمل  
 (مسمریزم) کے ذریعہ سے اچھا کرتے رہے، مگر ہدایت اور توحید  
 اور دینی استقامتوں کے کامل طور پر دلوں میں قائم کرنے کے بارے  
 میں ان کی کاروائیوں کا نمبر ایسا کم درجہ کا رہا کہ قریب قریب ناکام  
 رہے۔“ (ازالہ اوہام حاشیہ ص: ۳۱۱، روحانی خزائن حاشیہ ج: ۳ ص: ۲۵۸)  
 ۷: ”... حضرت مسیح کے عمل الترب (مسمریزم) سے وہ  
 مردے جو زندہ ہوتے تھے یعنی وہ قریب الموت آدمی (مردوں کو  
 زندہ کرنے کی یہی تاویل یہودی کرتے تھے، ناقل) جو گویا نئے  
 سرے سے زندہ ہو جاتے تھے وہ بلا توقف چند منٹ میں مر جاتے  
 تھے۔“ (ازالہ اوہام حاشیہ ص: ۳۱۱، روحانی خزائن ج: ۳ ص: ۲۵۸)  
 ۸: ”... اور یہ جو میں نے مسمریزمی طریق کا ”عمل  
 الترب“ نام رکھا، جس میں حضرت مسیح بھی کسی درجہ تک مشق رکھتے

تھے، یہ الہامی نام ہے۔“

(ازالہ اوہام حاشیہ ص: ۳۱۲، روحانی خزائن حاشیہ ج: ۳ ص: ۲۵۹)

۹:۔۔۔ ”حضرت مسیح جو پرندے بناتے تھے..... ان پرندوں میں واقعی اور حقیقی حیات پیدا نہیں ہوتی تھی، بلکہ صرف ظلی اور مجازی اور جھوٹی (کیوں صاحبزادہ صاحب! ظلی، مجازی، اور جھوٹی، یہ تینوں لفظ ایک ہی مفہوم رکھتے ہیں نا۔ ناقل) حیات جو عمل الترب (مسمریزم) کے ذریعہ سے پیدا ہو سکتی ہے ایک جھوٹی جھلک کی طرح ان میں نمودار ہو جاتی تھی۔“ (ازالہ اوہام حاشیہ ص: ۳۱۸، روحانی خزائن حاشیہ ج: ۳ ص: ۲۶۱، ۲۶۲)

۱۰:۔۔۔ ”مسیح کے ایسے عجائب کاموں میں اس کو طاقت بخشی گئی تھی اور خدا تعالیٰ نے صاف فرمادیا ہے کہ وہ ایک فطرتی طاقت تھی جو ہر ایک فرد بشر کی فطرت میں مودع ہے، مسیح سے اس کی کچھ خصوصیت نہیں۔“ (خدا نے کہیں ایسا نہیں فرمایا، مرزا کا سفید جھوٹ ہے۔ ناقل)

(ازالہ اوہام حاشیہ ص: ۳۱۱، روحانی خزائن حاشیہ ج: ۳ ص: ۲۶۳)

۱۱:۔۔۔ ”مسیح کے معجزات تو اس تالاب کی وجہ سے بے رونق اور بے قدر تھے جو مسیح کی ولادت سے بھی پہلے مظاہر عجائبات تھا۔ جس میں ہر قسم کے بیمار اور تمام مجذوم، مفلوج، مبروص وغیرہ ایک ہی غوطہ مار کر اچھے ہو جاتے تھے لیکن بعد کے زمانوں میں جو لوگوں نے اس قسم کے خوارق دکھلائے اس وقت تو کوئی تالاب بھی موجود نہیں تھا۔“

(ازالہ اوہام حاشیہ ص: ۳۲۱، روحانی خزائن حاشیہ ج: ۳ ص: ۲۶۳)

۱۲:۔۔۔ ”غرض یہ اعتقاد بالکل غلط اور فاسد اور مشرکانہ

خیال ہے (جو قرآن کریم نے بیان فرمایا... ناقل) کہ مسیح مٹی کے پرندے بنا کر ان میں پھونک مار کر انہیں سچ مچ کے جانور بنادیتا تھا، نہیں! بلکہ صرف عمل الترب (مسمریزم) تھا جو روح کی قوت سے ترقی پذیر ہو گیا تھا۔“

(ازالہ اوہام حاشیہ ص: ۳۲۲، روحانی خزائن حاشیہ ج: ۳ ص: ۲۶۳)  
 ۱۳: ”یہ بھی ممکن ہے کہ مسیح ایسے کام کے لئے اس تالاب کی مٹی لاتا تھا جس میں روح القدس کی تاثیر رکھی گئی تھی۔“

(ازالہ اوہام حاشیہ ص: ۳۲۲، روحانی خزائن حاشیہ ج: ۳ ص: ۲۶۳)  
 ۱۴: ”بہر حال یہ معجزہ صرف ایک کھیل کی قسم میں سے تھا، اور وہ مٹی درحقیقت ایک مٹی ہی رہتی تھی۔ جیسے سامری کا گوسالہ۔“

(ازالہ اوہام حاشیہ ص: ۳۲۲، روحانی خزائن حاشیہ ج: ۳ ص: ۲۶۳)  
 حضرت عیسیٰ علیہ السلام کے بارے میں مرزا آنجنمانی نے جس پر اگندہ ذہنی کا مظاہرہ کیا ہے، وہ خاص یہودیانہ تکنیک ہے، ایک یہودی ہی یہ جسارت کر سکتا ہے کہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام کے عظیم الشان معجزوں کو مکروفریب، مسمریزم، کھیل تماشہ کہہ کر بے رونق، بے قدر، مکروہ اور قابل نفرت ٹھہرائے۔ اسی بنا پر میں نے یہودیت اور قادیانیت کے درمیان ایک مشابہت یہ لکھی تھی کہ:

”یہودیت حضرت عیسیٰ علیہ السلام کے معجزات کو لہو و لعب یا مسمریزم قرار دیتی ہے، ٹھیک یہی موقف قادیانیت بھی پیش کرتی ہے۔“  
 (ربوہ سے تل ابیب تک ص: ۵)

مرزا طاہر احمد صاحب نے میرے اس فقرہ کو جھوٹ اور بہتان قرار دیا ہے۔ اور قارئین کرام، مرزا آنجنمانی کے مندرجہ بالا اقتباسات پڑھ کر خود فیصلہ کر سکتے ہیں کہ جھوٹ اور بہتان سے میں نے کام لیا ہے یا اس دولت کے چشمے، خود مرزا طاہر احمد صاحب کے گھر میں اُبل رہے ہیں؟

## حضرت مسیح اور صلیب:

اسلام اور یہودیت کے درمیان جن جن مسائل میں نزاع ہے ان میں سے ایک یہودیوں کا یہ دعویٰ ہے کہ انہوں نے سیدنا عیسیٰ علیہ السلام کو دار پر کھینچا اور پولوس نے جو واقعہ یہودی تھا مگر حضرت مسیح علیہ السلام کی تعلیم کو بگاڑنے کے لئے اس نے عیسائیت کا لبادہ اوڑھ لیا تھا، یہود کا یہ دعویٰ علماء کو نہ صرف تسلیم کر دیا بلکہ اس پر صلیب کے تقدس اور کفارہ کا عقیدہ بھی ایجاد کیا، مگر قرآن کریم یہود کے اس دعویٰ کو تسلیم نہیں کرتا، بلکہ ایک بے بنیاد افسانہ قرار دیتے ہوئے اسے مسترد کرتا ہے، چنانچہ ارشاد خداوندی ہے: ”وَمَا صَلْبُوهُ وَلٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ“ (اور وہ نہ تو حضرت مسیح کو قتل کر سکے، نہ آپ کو سولی دے سکے، بلکہ ان کو دھوکہ ہوا) قرآن کریم کی اس آیت کی روشنی میں تمام امت اسلامیہ کا قطعی عقیدہ یہ ہے کہ عیسیٰ علیہ السلام گرفتار نہیں ہوئے، نہ انہیں سولی پر لٹکایا گیا، بلکہ اللہ تعالیٰ نے انہیں آسمان پر اٹھالیا۔ قرآن کریم کے اس صاف صاف اعلان کے بعد کسی مسلمان کو کبھی یہ جرات نہیں ہوئی، نہ ہو سکتی ہے کہ حضرت مسیح علیہ السلام کو سولی دیئے جانے کے یہودی افسانہ کو ایک لمحہ کے لئے بھی تسلیم کرے، مرزا غلام احمد قادیانی آنجہانی کے عقائد و نظریات چونکہ یہودیت کا چربہ ہیں اس لئے اس نے قرآن کریم کی تصریح اور ملت اسلامیہ کے عقیدہ کو پشت انداز کر کے یہودی افسانہ کو اپنا دین و ایمان قرار دیا۔ اور حضرت مسیح علیہ السلام کی صلیب کشی کا وہ ذلت آمیز نقشہ کھینچا جسے پڑھ کر رونگٹے کھڑے ہو جاتے ہیں۔ چنانچہ وہ ازالہ ادہام میں لکھتا ہے:

ا:۔۔۔ ”پھر بعد اس کے مسیح ان (یہودیوں) کے حوالہ کیا گیا، اور اس کے تازیانے لگائے گئے، اور جس قدر گالیاں سننا اور فقیہوں مولویوں کے اشارے سے طمانچہ کھانا اور ہنسی اور ٹھٹھے سے اڑائے جانا اس کے حق میں مقدر تھا۔ سب نے دیکھا، آخر صلیب دینے کے لئے تیار ہوئے... تب یہودیوں نے جلدی سے مسیح کو دو

چوروں کے ساتھ صلیب پر چڑھا دیا۔“

(ازالہ اوہام ص: ۳۸۰، روحانی خزائن ج: ۳ ص: ۲۹۵، ۲۹۶)

۲: ”... مسیح پر جو یہ مصیبت آئی کہ وہ صلیب پر چڑھایا گیا اور کیلیں اس کے اعضا میں ٹھوکی گئیں، جن سے وہ غشی کی حالت میں ہو گیا، یہ مصیبت درحقیقت موت سے کچھ کم نہیں تھی۔“

(ازالہ اوہام ص: ۳۹۲، روحانی خزائن ج: ۳ ص: ۳۰۲)

۳: ”... چونکہ مسیح ایک انسان تھا اور اس نے دیکھا کہ تمام سامان میرے مرنے کے موجود ہو گئے ہیں، لہذا اس نے برعایت اسباب گمان کیا کہ شاید آج میں مرجاؤں گا، سو باعث ہیبت تجلی جلالی حالت موجودہ کو دیکھ کر ضعف بشریت اس پر غالب ہو گیا تھا۔ تبھی اس نے دل برداشتہ ہو کر کہا: ایلسی ایلسی لما سبقتنی، یعنی اے میرے خدا اے میرے خدا تو نے مجھے کیوں چھوڑ دیا اور کیوں اس وعدہ کا ایقانہ کیا جو تو نے پہلے سے کر رکھا تھا۔“

(ازالہ اوہام ص: ۳۹۳، روحانی خزائن ج: ۳ ص: ۳۰۳، ۳۰۴)

مرزا آنجمانی کی یہ ایمان سوز تحریر، یہودیت کی پس خوردہ ہے، ورنہ جیسا کہ ابھی عرض کر چکا ہوں امت اسلامیہ میں سے ایک فرد بھی حضرت مسیح علیہ السلام کی اس ذلت آمیز گرفتاری اور صلیب کشی کا قائل نہیں، مرزا آنجمانی کی اسی یہودیت کی طرف اشارہ کرتے ہوئے میں نے لکھا تھا کہ: ”یہودی دعویٰ کے مطابق حضرت عیسیٰ علیہ السلام کو سولی دی گئی۔ قادیانیت، یہودیوں کی تقلید میں اس قصہ کو من وعن تسلیم کر کے صرف اتنی ترمیم کرتی ہے کہ وہ صلیب پر مرے نہیں تھے، بلکہ انہیں نیم مردہ حالت میں اتار لیا گیا تھا۔“ مرزا طاہر احمد صاحب نے میرے اس فقرہ کا جو جواب دیا ہے وہ یہ ہے:

”اصل بحث تو تھا ہی یہی کہ یہودی، حضرت مسیح کو صلیبی

موت دینے میں کامیاب ہوئے کہ نہیں۔ اس بنیادی نزاع میں



احمدیت اور یہودیت کے عقائد میں قطبین کا فرق ہے، محض صلیب پر چڑھانے کی تاریخی اور ثابت شدہ حقیقت میں اتفاق کو ایک قابل اعتراض مماثلت کے طور پر پیش کرنا لغویت کی انتہا ہے۔“

(ربوہ سے قل ایب تک پر مختصر تبصرہ ص: ۳۷)

مرزا طاہر احمد صاحب، حضرت مسیح کے صلیب پر چڑھائے جانے کو تاریخی اور ثابت شدہ حقیقت کہہ کر گویا یہ تسلیم کرتے ہیں کہ راقم الحروف نے جو کچھ لکھا، صحیح ہے، مگر ان کے نزدیک یہ کوئی قابل اعتراض بات نہیں، کیونکہ بقول ان کے حضرت مسیح علیہ السلام کا یہودیوں کے ہاتھ میں گرفتار ہونا، گالیاں کھانا، ان کو تازیانے لگایا جانا، کانٹوں کا تاج پہنایا جانا، ان کے منہ پر تھوکا جانا، انہیں صلیب پر چڑھایا جانا، ان کے جسم میں کیلیں ٹھونکا جانا، ان کا ایللی ایللی پکارنا... ان پر غشی طاری ہو جانا اور بالآخر مجازی طور پر ان کا صلیب پر مر جانا، یہ سب کچھ ایک ”ثابت شدہ تاریخی حقیقت“ ہے اور یہ جو لوگ حضرت مسیح علیہ السلام کی اس حیا سوز ذلت و رسوائی کے قائل ہیں ان پر اعتراض کرنا، صاحبزادہ صاحب کے نزدیک ”لغویت کی انتہا ہے۔“

یہودی افسانوں کو (جن کی قرآن کریم واضح طور پر تردید کر چکا ہے) ”ثابت شدہ تاریخی حقیقت“ کہنے پر میں مرزا طاہر احمد صاحب کو معذور سمجھتا ہوں، کیونکہ ان کے گھر جب نبی سازی کی جعلی نمسال موجود ہے تو تاریخ سازی کی نمسال کا ہونا کچھ تعجب خیز نہیں، اس لئے وہ جس بے بنیاد افسانے کو جب چاہیں ”تاریخی حقیقت“ بنا سکتے ہیں۔ مگر میں ان سے گزارش کرنے کی اجازت چاہوں گا کہ ان کی اس مزعومہ تاریخی حقیقت کا وجود نہان خانہ مرزائیت کے سوا کہیں نہیں، اس کا نہ قرآن و حدیث میں ذکر ہے، نہ کسی اسلامی تاریخ میں۔ مرزا آنجنمانی کا یہ تخیلاتی کرشمہ ہے کہ اس نے یہودیت، عیسائیت اور اسلام کا ایک ایسا ملغوبہ تیار کرنے کی سعی مذموم کی جسے قرآن کریم اور ملت اسلامیہ قبول کرنے کے لئے تیار نہیں۔ آئیے دیکھیں کہ اس مبحث میں مرزا آنجنمانی کو اللہ میاں سے کن کن نکات میں اختلاف ہے، اور قرآن کریم، آنجنمانی کی خود تراشیدہ ”تاریخی گپ“

کی کس طرح تردید کرتا ہے۔

۱:۔... مرزا آنجہانی بتقلید یہود، یہ دعویٰ کرتا ہے کہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام، یہود کے ہاتھوں میں گرفتار ہوئے۔ اس کے برعکس قرآن کریم حضرت عیسیٰ علیہ السلام پر انعامات خداوندی شمار کرتے ہوئے یہ اعلان کرتا ہے: ”وَإِذْ كَفَفْتُ بَنِي إِسْرَائِيلَ عَنْكَ“ (اور یاد کر جب میں نے ہٹائے رکھانی اسرائیل کو تجھ سے۔) یعنی یہود، حضرت مسیح کو گرفتار تو کیا کرتے، اللہ تعالیٰ نے انہیں آپ کے قریب تک پہنچنے نہیں دیا۔

۲:۔... مرزا آنجہانی کا کہنا ہے کہ یہود، حضرت عیسیٰ علیہ السلام کو پکڑ کر صلیب دینے کا جو منصوبہ بنا رہے تھے اس میں وہ کامیاب ہوئے۔ مگر قرآن کریم اس مرزائی دعویٰ کی تردید کرتے ہوئے تصریح کرتا ہے کہ یہود کے تمام منصوبے خاک میں مل کر رہ گئے اور حضرت عیسیٰ علیہ السلام کی حفاظت و صیانت کے متعلق خدائی تدبیر کامیاب ہوئی۔

”وَمَكُرُوا وَمَكَّرَ اللَّهُ وَاللَّهُ خَيْرُ الْمَاكِرِينَ۔“

۳:۔... مرزا آنجہانی کہتا ہے کہ یہود کے ناپاک ہاتھوں نے نعوذ باللہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام کے مقدس چہرہ پر طمانچے رسید کئے، مگر قرآن کریم اعلان کرتا ہے کہ یہ قطعاً غلط ہے، ہوا یہ کہ اللہ تعالیٰ نے حضرت عیسیٰ علیہ السلام کو اپنے قبضہ میں لے لیا۔ انہیں اپنی طرف اٹھالیا اور کافروں کے نجس ہاتھوں سے انہیں پاک رکھا: ”إِذْ قَالَ اللَّهُ يٰعِيسَىٰ إِنِّي مُتَوَفِّيكَ وَرَافِعُكَ إِلَيَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا“۔

۴:۔... مرزا آنجہانی کہتا ہے کہ یہود کے ہاتھوں حضرت عیسیٰ علیہ السلام کی تذلیل مقدرتھی، انہیں گالیاں دی گئیں، ان کے منہ پر تھوکا گیا، انہیں کانٹوں کا تاج پہنایا گیا، ان کے مقدس جسم کو چھیدا گیا۔ مگر قرآن کریم کہتا ہے کہ وہ دنیا و آخرت میں ذو وجاہت تھے اور مقرب بارگاہ خداوندی تھے، ناممکن تھا کہ یہود کی جانب سے حضرت مسیح کی وجاہت کے خلاف کوئی حرکت ان سے کی جاتی: ”وَجِئْهَا فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِينَ“۔

۵:۔... مرزا آنجہانی کہتا ہے کہ انہیں دو چوروں کے ساتھ صلیب پر چڑھایا گیا۔ مگر قرآن کریم اعلان کرتا ہے کہ دنیا کی کوئی طاقت نہیں تھی جو انہیں صلیب پر چڑھا سکے:

”وَمَا قَتَلُوهُ وَمَا صَلَبُوهُ وَلَٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ“ اس لئے مسیح کو صلیب دیئے جانے کا افسانہ محض جھوٹ ہے۔

۶: ... مرزا آنجمانی کہتا ہے کہ اللہ تعالیٰ نے حضرت عیسیٰ علیہ السلام کو یہودی دست درازیوں سے بچانے کا وعدہ کیا، مگر یہ وعدہ پورا نہیں کیا۔ اس لئے خدا کی وعدہ خلافی کی شکایت، حضرت عیسیٰ علیہ السلام کو ایلی ایلی لما سبقتنی کہہ کر کرنی پڑی۔  
 ”یعنی اے میرے خدا اے میرے خدا تو نے مجھے کیوں چھوڑ دیا اور کیوں اس وعدہ کا ایقانہ کیا جو تو نے پہلے سے کر رکھا تھا۔“  
 (ازالہ اوہام ص: ۳۹۴، روحانی خزائن ج: ۳ ص: ۳۰۳، ۳۰۴)

مگر قرآن کریم اس مرزائی افترا کی تردید کرتا ہے کہ نہیں بلکہ اللہ تعالیٰ نے اپنا وعدہ ٹھیک ٹھیک پورا کیا اور اسی وعدہ کے مطابق بحفاظت تمام ان کو اپنی طرف آسمان پر اٹھالیا: ”بَلْ رَفَعَهُ اللَّهُ إِلَيْهِ“۔

۷: ... مرزا آنجمانی کہتا ہے کہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام دیار غربت میں مر گئے۔  
 قرآن کریم اس مرزائی افسانے کی تردید کرتا ہے کہ وہ مرے نہیں بلکہ زندہ ہیں، ابھی دنیا میں ان کی دوبارہ آمد مقدر ہے اور ان کی تشریف آوری قیامت کا نشان ہے۔ اس لئے اے مسلمانو! ان قادیانی ہفتوات کی وجہ سے شک و شبہ میں مت پڑو: ”وَإِنَّهُ لَعِلْمٌ لِلسَّاعَةِ فَلَا تَمْتَرُنَّ بِهَا“۔

قرآن کریم یہ بھی بتاتا ہے کہ ان کی وفات اس وقت ہوگی جب کہ ان کی موت سے پہلے تمام اہل کتاب ان پر ایمان لائے ہوں گے، اور ایک تنفس بھی کفر کا مرتکب نہیں رہے گا۔ ”وَإِنْ مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ إِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهِ قَبْلَ مَوْتِهِ“ صاحب! یہ ہے وہ ”تاریخی حقیقت“ جو عیسیٰ علیہ السلام کے بارے میں قرآن کریم پیش کرتا ہے، اور اسی حقیقت کو آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم سے لے کر آج تک تمام امت اسلامیہ ”ثابت شدہ“ تسلیم کرتی آئی ہے۔

حافظ ابن کثیر نے بسند صحیح حضرت ابن عباس رضی اللہ عنہما سے یہ ”تاریخی

حقیقت "ان الفاظ میں نقل کی ہے:

"لما أراد الله أن يرفع عيسى إلى السماء خرج إلى أصحابه وفي البيت اثنا عشر رجلاً من الحواريين فخرج عليهم من عين في البيت ورأسه يقطر ماءً، فقال: أن منكم من يكفر بي اثنتي عشرة مرة بعد أن آمن بي، ثم قال: أيكم يلقي عليه شبهي فيقتل مكاني ويكون معي في درجتي (وفي رواية: ويكون رفيقي في الجنة) فقام شاب من أحدثهم سنًا، فقال له: اجلس، ثم أعاد عليهم، فقام الشاب، فقال: اجلس، ثم أعاد فقام الشاب، فقال: أنا، فقال: أنت ذاك. فألقى عليه شبه عيسى، ورفع عيسى من روضة في البيت إلى السماء، وجاء الطلب من اليهود، فأخذوا الشبّه، فقتلوه ثم صلبوه."

ترجمہ: "...جب اللہ تعالیٰ نے حضرت عیسیٰ علیہ السلام کو (اپنے پیشگی وعدہ کے موافق) آسمان کی طرف اٹھانے کا ارادہ کیا تو آپ اپنے شاگردوں کے پاس تشریف لائے، مکان میں بارہ حواری تھے، پس آپ ایک چشمے سے، جو مکان میں تھا، غسل کر کے اس حالت میں ان کے پاس آئے کہ آپ کے سر مبارک سے پانی کے قطرے ٹپک رہے تھے، (حدیث میں آتا ہے کہ جب قرب قیامت میں آسمان سے نازل ہوں گے تو اس وقت بھی یہی کیفیت ہوگی۔ مشکوٰۃ ص: ۴۸۳) پس آپ نے فرمایا: تم میں سے بعض مجھ پر ایمان لانے کے بعد میرے ساتھ بارہ مرتبہ کفر کریں گے۔ پھر فرمایا: تم میں سے کون (پسند کرتا) ہے کہ اس پر میری شہادت ڈال دی جائے، پس اسے میرے بجائے قتل کر دیا جائے اور وہ جنت میں



میرا رفیق ہو؟ یہ سن کر ان میں سب سے کم عمر نو جوان کھڑا ہوا، آپ نے اس سے فرمایا: تم بیٹھ جاؤ، پھر آپ نے دوبارہ یہی بات دہرائی تو وہی نو جوان پھر کھڑا ہو گیا۔ آپ نے فرمایا: تم بیٹھ جاؤ، تیسری بار پھر فرمایا۔ اب کے بھی اسی نو جوان نے سبقت کی، آپ نے فرمایا: ”ہاں تم ہی وہ شخص ہو۔“ پس اس نو جوان پر حضرت عیسیٰ علیہ السلام کی شبابت ڈال دی گئی۔ اور حضرت عیسیٰ علیہ السلام کو مکان کے روشن دان سے آسمان کی طرف اٹھالیا گیا۔ اور یہودیوں کی ایک جماعت تلاش کرتی ہوئی آئی، انہوں نے اس نو جوان کو جس پر حضرت عیسیٰ کی شبابت ڈالی گئی تھی پکڑ کر قتل کر دیا۔“

یہ تو ہے مسلمانوں کی مسلمہ تاریخی حقیقت — کیا اس کے مقابلہ میں مرزا طاہر احمد صاحب اس مضمون کی کوئی آیت، کوئی حدیث، کسی صحابی یا تابعی کا ارشاد، کسی فقیہ و محدث کا قول پیش کر سکتے ہیں کہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام کو گرفتار کیا گیا، ان سے رسوا کن سلوک کیا گیا، ان کو سولی پر لٹکایا گیا اور بالآخر یہودیوں نے یہ سمجھ کر کہ اب یہ مرچکا ہے ان کو صلیب پر سے اتار کر دفن کر دیا۔ اگر مرزا طاہر احمد صاحب اس مزعومہ ”تاریخی حقیقت“ کو اسلامی لٹریچر سے ثابت کر دیتے تو ان کا اپنے دادا کی قبر پر بے حد احسان ہوتا، لیکن جب وہ یہ ثابت نہیں کر سکے اور نہ قیامت تک کر سکتے ہیں تو انہیں اس یہودی مرزائی افسانہ کو ”تاریخی حقیقت“ کہتے ہوئے کچھ تو شرمانا چاہئے تھا۔

قادیانیت کی اسلام دشمنی:

میں نے لکھا تھا کہ یہود کی طرح قادیانیت بھی اسلام اور مسلمانوں کی بدترین دشمن ہے، اس کے لئے میں نے ”الفضل“ ۳ جنوری ۱۹۵۲ء کا حوالہ بایں الفاظ دیا تھا:

”ہم فتح یاب ہوں گے، اور تم ضرور مجرموں کی طرح ہمارے سامنے پیش ہو گے، اس دن تمہارا حشر بھی وہی ہوگا جو فتح مکہ



کے دن ابو جہل اور اس کی پارٹی کا ہوا تھا۔“

صاحبزادہ مرزا طاہر احمد صاحب کو شکایت ہے کہ میں نے بقول ان کے دیانتداری سے کام نہیں لیا۔ ”الفضل“ کا ”اصل اقتباس“ نقل نہیں کیا، صرف اس کا خلاصہ نقل کر دیا۔ اس کے بعد انہوں نے قارئین کی توجہ کے لئے ”اصل اقتباس“ نقل کر دیا ہے، جو حسب ذیل ہے:

”یہ محض اکثریت میں ہونے کا نتیجہ ہے کہ ایسی باتیں کر رہے ہو، لیکن غور کرو کیا ابو جہل کی بھی یہی دلیل نہ تھی کہ (محمد صلی اللہ علیہ وسلم) کو کوئی حق نہیں کہ وہ ہمارے ملک کی نناوے فیصد آبادی کے خیالات کے خلاف کوئی بات کہے۔ آخر آج جو دلیل تم دیتے ہو کیا وہی دلائل ابو جہل نہیں دیا کرتا تھا؟ تمہارے کہنے پر بے شک حکومت مجھے پکڑ سکتی ہے، قید کر سکتی ہے، مار سکتی ہے، لیکن میرے عقیدہ کو وہ دبا نہیں سکتی کہ میرا عقیدہ جیتنے والا عقیدہ ہے، وہ یقیناً ایک دن جیتے گا۔ (جی ہاں! نوے سال سے جیت ہی رہا ہے، اور ۷ ستمبر ۱۹۷۴ء کو تو قومی اسمبلی میں بالکل ہی جیت گیا، قادیانیوں کی اصطلاح میں ذلت اور رسوائی کا نام ہی جیت ہے، اور یہ ان کا ازلی مقدر ہے... ناقل) تب ایسا تکبر کرنے والے لوگ پشیمان ہونے کی حالت میں آئیں گے اور انہیں کہا جائے گا، بتاؤ، تمہارا فتویٰ اب تم پر عائد کیا جائے۔ جب محمد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم نے مکہ فتح کیا اور اکثریت کا گھمنڈ کرنے والے لوگ آپ کے سامنے پیش ہوئے تو آپ نے انہیں فرمایا اب تمہارے ساتھ کیا سلوک کیا جائے؟ آپ کا مقصد کہنے سے یہی تھا کہ وہ اپنی اکثریت کے زعم میں جو کہا کرتے تھے وہ انہیں یاد دلایا جائے۔“

صاحبزادہ صاحب کا نقل کردہ ”اصل اقتباس“ اور میرا پیش کردہ خلاصہ دونوں

قارئین کے سامنے ہیں، وہ خود فیصلہ کر سکتے ہیں کہ اس طویل اقتباس میں جو کچھ کہا گیا ہے، کیا میں نے دو جملوں میں اسی مضمون کو بلام و کاست نقل نہیں کر دیا؟ یعنی قادیانیت کو محمد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی اور مسلمانوں کو کفار مکہ کی حیثیت دینا۔ قادیانیت کا محمد رسول اللہ صلی اللہ علیہ وسلم کی طرح فتیاب ہونا اور مسلمانوں کا کفار مکہ کی طرح قادیانی دربار میں مجرموں کی طرح پیش ہونا۔ یہی نتیجہ میں نے اپنے رسالہ میں اخذ کیا تھا کہ:

”جس گروہ کے نزدیک تمام عالم اسلام ”ابو جہل اور اس کی پارٹی“ کی حیثیت رکھتا ہو، اور وہ اپنے آپ کو ”محمد رسول اللہ کا بروز“ قرار دیتا ہو، اس کی عداوت مسلمانوں کے ایک ایک فرد سے کس قدر ہو سکتی ہے؟ اس کو سمجھنے کے لئے غیر معمولی فہم و ذکاوت کی ضرورت نہیں۔“ (ربوہ سے تل ابیب تک ص: ۵)

لطف یہ کہ یہی نتیجہ خود مرزا طاہر احمد صاحب نے اپنے نقل کردہ طویل اقتباس سے اخذ کیا ہے، چنانچہ وہ لکھتے ہیں:

”جماعت احمدیہ کی مثال حضرت محمد مصطفیٰ صلی اللہ علیہ وسلم اور آپ کے متبعین کی اس حالت سے دی گئی ہے۔ جب کہ آپ کمزور تھے اور دشمن بھاری اکثریت میں تھے، اس کے باوجود چونکہ مسلمانوں کا عقیدہ جیتنے والا عقیدہ تھا (اسے کہتے ہیں: ”حق برزباں شود جاری“) صاحبزادہ صاحب! اطمینان رکھئے اب بھی ان شاء اللہ مسلمانوں کا عقیدہ ہی جیتنے والا ہے، اور قیامت تک رہے گا۔ اسلام کے مقابلہ میں قادیانیت کے یہودیانہ عقائد کو ان شاء اللہ شکست پر شکست ہی ہوگی۔ ناقل) اس لئے اللہ تعالیٰ نے آپ کی قلت کو کثرت میں بدل دیا، اور آپ کے نظریہ کو مخالفین پر غالب کر دیا۔“ (ربوہ سے تل ابیب تک پر مختصر تبصرہ ص: ۴۱)

قادیانی لیڈر خود کو محمد رسول اللہ بتائیں، دنیا بھر کے مسلمانوں کو ”کفار مکہ“

ٹھہرائیں، اور انہیں قادیانی شہنشاہیت کے دربارِ معلیٰ میں پابجولاں پیش ہونے کی دھمکی دیں یہ تو ”بددیانتی“ نہیں، اور اگر مسلمان اس گیدڑ بھکی پر ذرا بھی شکایت کریں تو یہ صاحبزادہ صاحب کے نزدیک ”بددیانتی“ ہے۔ چہ خوب! خرد کا نام جنون اور جنون کا خرد رکھنے کی کیسی اچھی مثال ہے؟

قادیانی رحم و بخشش:

جناب مرزا طاہر احمد صاحب نے اس بحث کے ضمن میں یہ لطیف نکتہ بھی ارشاد فرمایا ہے کہ جس طرح آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے فتح مکہ کے دن ”لا تشریب علیکم الیوم“ کہہ کر بخشش عام کا اعلان فرمادیا تھا، اسی طرح قادیانیوں کو جب ”فتح مکہ“ نصیب ہوگی تو وہ بھی اس سنت نبوی کا مظاہر کریں گے، وہ لکھتے ہیں:

”جب احمدی اپنے لئے ”فتح مکہ“ کی مثال اور حضرت محمد مصطفیٰ صلی اللہ علیہ وسلم کا اسوہ اختیار کرتے ہیں تو اس سے اپنے دشمنوں کے لئے ان کی ہمدردی ثابت ہوتی ہے نہ کہ عداوت، غفو ثابت ہوتا ہے نہ کہ انتقام، محبت ثابت ہوتی ہے نہ کہ نفرت۔“

(ربوہ سے تل ابیب تک پر مختصر تبصرہ ص: ۴۲)

میں جناب صاحبزادہ صاحب کا ممنون ہوں کہ وہ تمام عالم اسلام کو کفار مکہ کہہ کر بھی ان سے عداوت و نفرت اور انتقام کے بجائے محبت و ہمدردی اور غفو و درگزر کی پیش کش کرتے ہیں۔ مگر مجھے افسوس ہے کہ قادیانیت کی تاریخ ان کے اس دعویٰ کو جھٹلاتی ہے۔ آج تک قادیانیت کا کردار یہ رہا ہے کہ وہ اپنے دشمنوں کے حق میں سراپا انتقام، سراپا نفرت اور سراپا عداوت رہی ہے۔ قادیانی ذہنیت، مرزا محمود احمد صاحب کے مندرجہ ذیل الفاظ سے عریاں ہو کر سامنے آ جاتی ہے:

”اب زمانہ بدل گیا ہے، دیکھو! پہلے جو مسیح آیا تھا اسے دشمنوں نے صلیب پر چڑھایا، (میں اوپر بتا چکا ہوں کہ مسیح علیہ السلام

کا صلیب پر لٹکایا جانا یہودی، قادیانی گپ ہے۔ ناقل) مگر اب مسیح  
(یعنی مرزا آنجمانی) اس لئے آیا کہ اپنے مخالفین کو موت کے گھاٹ  
اتار دے۔“ (الفضل ۶ اگست ۱۹۳۷ء)

دوسری جگہ اپنے مریدوں کو ”رحم و کرم“ پر اکساتے ہوئے مرزا محمود صاحب  
انہیں بایں الفاظ غیرت دلاتے ہیں:

”اگر تم میں رائی کے دانہ کے برابر بھی حیا ہے اور تمہارا سچ  
مجھ یہ عقیدہ ہے کہ ”دشمن کو سزا“ دینی چاہئے، تو پھر یا تم دنیا سے مٹ  
جاؤ یا گالیاں دینے والوں کو مٹا ڈالو.....، اگر کوئی انسان سمجھتا ہے کہ  
اس میں ”مارنے کی طاقت“ ہے تو میں اسے کہوں گا کہ اے بے شرم!  
تو آگے کیوں نہیں جاتا اور اس منہ کو کیوں توڑ نہیں دیتا۔“

(الفضل ص: ۶ مؤرخہ ۵/ جون ۱۹۳۷ء)

یہ ہے مرزا طاہر احمد اور ان کے باپ دادا کا جذبہ بغض و درگزر۔ وہ تو خیر ہوئی کہ  
”خدا گنہگار نہ دے“ کے مطابق قادیانی لیڈروں کو کبھی لیلائے اقتدار سے ہم آغوشی  
نصیب نہ ہوئی بلکہ یہودیوں کی طرح ہمیشہ محکوم و مجبور، مطرود و مقہور اور ذلیل و رسوا ہی رہا  
کئے، ورنہ خدا جانے دشمن کو کس کس طرح کی سزائیں دی جاتیں اور مخالفین کو کس کس طرح  
موت کے گھاٹ اتارا جاتا۔ تاہم مرزائی خانوادہ کو اپنی جماعت میں پورا اقتدار حاصل رہا  
اسی کے نشہ میں بدست ہو کر اپنے مخلص ساتھیوں کو جس ظلم و ستم اور بے ہمتی و بربریت کا  
نشانہ انہوں نے بنایا اس سے ہٹلر اور اسٹالن کی روح بھی کانپ اٹھی ہوگی، مثلاً:

✽:...”فخر الدین ملتانی کو دن دھاڑے بھرے بازار میں قتل کیا گیا، اور قادیان  
کی ”شریف بستی“ میں ایک شخص بھی اس کے قتل کی شہادت دینے کے لئے آگے نہ بڑھا۔ یہ  
وہی فخر الدین ہے جس نے سالہا سال اپنے خون پسینہ سے قادیانیت کے شجرہ خبیثہ کی  
آبیاری کی تھی، اور مرتے وقت بھی قادیانیت پر مرنے کا اعلان کر رہا تھا، اسے اس درندگی کا  
نشانہ محض اس لئے بنایا گیا کہ اسے بد قسمتی سے قادیان کے شاہی خانوادہ کے راز ہائے



دروں پردہ کا علم ہو گیا تھا۔“

\*:۔۔۔“ اسی نوعیت کا سلوک محمد امین پٹھان سے کیا گیا، اور اس کے قاتل کو پھانسی کی سزا ہوئی تو قومی ہیرو کی حیثیت سے اس کی لاش کا اعزاز و اکرام کیا گیا۔“

\*:۔۔۔“ مولوی عبدالکریم مہابلہ پر قاتلانہ حملہ کیا گیا، جس کے نتیجے میں اس کا رفیق، محمد حسین ہلاک ہوا۔“

\*:۔۔۔“ مولوی عبدالکریم کا مکان جلایا اور ڈھایا گیا، مہابلہ مرحوم کو قادیان بدر ہونے پر مجبور کیا گیا۔ اس کا جرم یہ تھا کہ اس نے اپنی بہن کی حمایت میں قادیانی خلیفہ کو مہابلہ کی دعوت دی تھی۔“

\*:۔۔۔“ فخر الدین ملتانی، عبدالرحمن مصری، عبدالکریم مہابلہ، عبدالمنان عمر اور دیگر بے شمار افراد کا سماجی بائیکاٹ کیا گیا، کیونکہ اپنی دست درازیوں پر پردہ ڈالنے کے لئے خلافت قادیان نے ان پر ”منافق“ کا فتویٰ صادر کیا تھا۔“

\*:۔۔۔“ مرزا آنجمانی کے مخلص رفیق مسٹر محمد علی کی بیوی پر جاسوسی کا الزام لگایا گیا۔“

\*:۔۔۔“ عبدالمنان عمر کی بیوی کو اسپرین کی جگہ چوہے مار گولیاں سپلائی کی گئیں۔“

\*:۔۔۔“ لاہوری جماعت کو دوزخ کی چلتی پھرتی آگ، دنیا کی بدترین قوم اور سنڈاس میں پڑے ہوئے چھلکے کا خطاب دیا گیا۔“

میں نے صاحبزادہ طاہر احمد صاحب کی چشمِ عبرت کے لئے چند اشارے کئے ہیں جن کے معنی شاید آج بھی زندہ ہیں، ورنہ مرزا طاہر احمد صاحب کے خاندان کے رحم و کرم اور عفو و درگزر کی اتنی طویل داستان ریکارڈ پر موجود ہے کہ اس کے لئے ایک ضخیم دفتر بھی ناکافی ہے۔

مسٹر جی ڈی کھوسلہ سیشن جج گورداسپور کے مندرجہ ذیل الفاظ قادیانی ”عفو و درگزر“ پر بلغ تبصرہ کی حیثیت رکھتے ہیں:

”مرزائی طاقت اتنی بڑھ گئی تھی کہ کوئی سامنے آکر سچ بولنے کے لئے تیار نہ تھا۔ ہمارے سامنے عبدالکریم کے مکان کا



واقعہ بھی ہے۔ عبدالکریم کو قادیان سے نکالنے کے بعد اس کا مکان جلا دیا گیا، قادیانی سال ٹاؤن کمیٹی سے حکم حاصل کر کے نیم قانونی طریقے سے اسے گرانے کی کوشش بھی کی گئی، یہ افسوس ناک واقعات ظاہر کرتے ہیں کہ قادیان میں طوائف الملوکی (ریاست در ریاست) تھی، جس میں آتش زنی اور قتل تک ہوتے تھے۔ مقامی افسروں کے پاس کئی مرتبہ شکایات کی گئیں، لیکن کوئی انسداد نہ ہوا..... قادیان میں ظلم و جور جاری ہونے کے متعلق غیر مشتبہ الزام عائد کئے گئے، لیکن معلوم ہوتا ہے کہ ان کی طرف مطلق توجہ نہ دی گئی..... مرزا نے مسلمانوں کو کافر، سوراوران کی عورتوں کو کیتوں کا خطاب دے کر ان کے جذبات کو مشتعل کر دیا تھا۔“

صاحبزادہ صاحب! ”لا تشریب علیکم الیوم“ کہہ کر عفو و درگزر کا اعلان کرنا سنت یوسفی ہے، یہ جھوٹے نبی کے چیلوں اور قادیان کے مدعی کاذب کا کام نہیں، بقول سعدی:

شنیدم کہ مردان راہ خدا  
دل دشمنان ہم نہ کردند تنگ  
ترا کے میسر شود ایں مقام  
کہ بادوستانت خلاف است و جنگ

قادیانیت کا روحانی چارج:

میں نے لکھا تھا کہ یہودی بھی ساری دنیا پر حکمرانی کے خواب دیکھتے ہیں اور قادیانی بھی، قادیانیوں کی حکمرانی کے لئے بے تابی پر میں نے چار حوالے پیش کئے تھے، اول مرزا بشیر الدین کا یہ اعلان کہ:

”پس نہیں معلوم ہمیں کب خدا کی طرف سے دنیا کا چارج سپرد کر دیا جاتا ہے، ہمیں اپنی طرف سے تیار رہنا چاہئے۔“  
(الفضل ۷۷ فروری ۱۹۲۲ء بحوالہ قادیانی مذہب ص: ۱۳۶ تمہید پنجم طبع پنجم)

صاحبزادہ صاحب اس کی یہ تاویل کرتے ہیں کہ اس سے مراد حکمرانی نہیں بلکہ روحانی ذمہ داری ہے۔ (ربوہ سے تل ابیب تک پر مختصر تبصرہ ص: ۴۴) ان کی یہ تاویل قادیانی تاویلات کا ایسا عمدہ نمونہ ہے جس سے جناب مرزا صاحب کی روح بھی عیش عرش کر اٹھی ہوگی۔ مگر افسوس! انہیں یاد نہیں رہا کہ روحانی چارج، تو ان کے خاندان کو اسی دن الاٹ کیا جا چکا تھا جب ان کے دادا نے چودھویں صدی کے محمد رسول اللہ کی حیثیت سے ساری دنیا کو اپنی رسالت و نبوت پر ایمان لانے کی دعوت دی تھی، اور جب بیک جنبش قلم ساری اُمت کو کافر اور دائرۃ اسلام سے خارج قرار دیا گیا تھا، اب یہ نیا روحانی چارج، کون سا ہے، جس کا ان کے سپرد کیا جانا ابھی باقی ہے۔

اور پھر قادیانی لیڈر جس بلند پایہ روحانیت سے سرفراز تھے اس کی حقیقت چند تعلق آمیز دعوؤں کے سوا کچھ نہیں، نہ عبادت الہی کی توفیق، نہ ڈھنگ سے نماز روزہ کی، نہ حج و زکوٰۃ کی، نہ مال حرام سے پرہیز کی، نہ غیر محرموں سے اجتناب کی...! جناب مرزا طاہر احمد صاحب ہی اس روحانی چارج پر فخر کر سکتے ہیں، مسلمانوں کو اس سے پناہ مانگنی چاہئے، لیجئے قادیانی لٹریچر سے اس روحانی چارج کی چند جھلکیاں ملاحظہ فرمائیے:

عبادت الہی:

”مولوی رحیم بخش صاحب ساکن تلوٹڈی ضلع گورداسپور نے بذریعہ تحریر مجھ سے بیان کیا کہ جب حضرت مسیح موعود علیہ السلام (مرزا غلام احمد صاحب) امرتسر، براہین احمدیہ کی طباعت دیکھنے کے لئے تشریف لے گئے تو کتاب کی طباعت کے دیکھنے کے بعد مجھے فرمایا میاں رحیم بخش چلو سیر کر آئیں۔ جب آپ باغ کی سیر کر رہے تھے تو خاکسار نے عرض کیا کہ حضرت آپ سیر کرتے ہیں، ولی لوگ تو سنا ہے کہ شب و روز عبادت الہی کرتے رہتے ہیں، آپ نے فرمایا ولی اللہ دو طرح کے ہوتے ہیں۔ ایک مجاہدہ کش جیسے حضرت

باوا فرید گنج شکر اور دوسرے محدث جیسے ابوالحسن خرقانی، محمد اکرم ملتانی، مجدد الف ثانی وغیرہ، یہ دوسری قسم کے ولی بڑے مرتبہ کے ہوتے ہیں، اللہ تعالیٰ ان سے بہ کثرت کلام کرتا ہے، میں بھی ان میں سے ہوں (گویا عبادت کے بجائے صرف مہیب دعوے کافی ہیں... ناقل) اور آپ کا اس وقت محدثیت کا دعویٰ تھا (جو بعد میں ترقی کر کے مسیحیت، نبوت، اور خدائی بروز تک جا پہنچا... ناقل)۔“  
(سیرۃ المہدی ج: ۳ ص: ۲۱۴)

### تصنیف اور نماز:

ڈاکٹر میر محمد اسماعیل صاحب نے مجھ سے بذریعہ تحریر بیان کیا کہ سیرۃ المہدی کی روایت ۴۶۷ میں سنین کے لحاظ سے جو واقعات درج ہیں ان میں سے بعض میں مجھے اختلاف ہے جو درج ذیل ہے..... (۱۳) آپ نے ۱۹۰۱ء میں ۲ ماہ تک مسلسل نمازیں جمع کرنے کا ذکر نہیں کیا۔ خاکسار عرض کرتا ہے کہ یہ بھی درست ہے کہ ایک لمبے عرصہ تک نمازیں جمع ہوئی تھیں (کیونکہ مرزا صاحب ان دنوں ایک کتاب کی تصنیف میں مشغول تھے اس لئے ظہر و عصر اکٹھی پڑھ لیتے تھے تا کہ وقت ضائع نہ ہو... ناقل)۔“

(سیرۃ المہدی ج: ۳ ص: ۱۹۹، ۲۰۲)

### مسنون وضع:

”نماز تکلیف سے بیٹھ کر پڑھی جاتی ہے، بعض وقت درمیان میں توڑنی پڑتی ہے اکثر بیٹھے بیٹھے ریٹنگن ہو جاتی ہے اور زمین پر قدم اچھی طرح نہیں جمنا قریب چھ سات ماہ یا زیادہ عرصہ گزر گیا ہے کہ نماز کھڑے ہو کر نہیں پڑھی جاتی اور نہ بیٹھ کر اس وضع

پر پڑھی جاتی ہے جو مسنون ہے اور قرأت میں شاید قل هو اللہ بمشکل  
پڑھ سکوں کیونکہ ساتھ ہی توجہ کرنے سے تحریک بخارات کی ہوتی  
ہے۔“ (مکتوبات احمدیہ ج: ۵ نمبر: ۲ ص: ۸۸)

مشہور فقہی مسئلہ:

”ڈاکٹر میر محمد اسماعیل صاحب نے مجھ سے بیان کیا کہ  
حضرت مسیح موعود علیہ السلام کو میں نے بارہا دیکھا کہ گھر میں نماز  
پڑھاتے تو حضرت ام المؤمنین کو اپنے دائیں جانب بطور مقتدی کے  
کھڑا کر لیتے، حالانکہ مشہور فقہی مسئلہ یہ ہے کہ خواہ عورت اکیلی ہی  
مقتدی ہو تب بھی اسے مرد کے ساتھ نہیں بلکہ الگ پیچھے کھڑا ہونا  
چاہئے، ہاں اکیلا مرد مقتدی ہو تو اسے امام کے ساتھ دائیں طرف  
کھڑا ہونا چاہئے، میں نے حضرت ام المؤمنین سے پوچھا تو انہوں  
نے بھی اس بات کی تصدیق کی مگر ساتھ ہی یہ بھی کہا کہ حضرت  
صاحب نے مجھ سے یہ بھی فرمایا تھا کہ مجھے بعض اوقات کھڑے ہو کر  
چکر آجایا کرتا ہے، اس لئے تم میرے پاس کھڑے ہو کر نماز پڑھ لیا  
کرو۔“ (سیرۃ المہدی ج: ۳ ص: ۱۳۱)

منہ میں پان:

”ڈاکٹر میر محمد اسماعیل صاحب نے مجھ سے بیان کیا کہ  
ایک دفعہ حضرت صاحب کو سخت کھانسی ہوئی ایسی کہ دم نہ آتا تھا البتہ  
منہ میں پان رکھ کر قدرے آرام معلوم ہوتا تھا اس وقت آپ نے اس  
حالت میں پان منہ میں رکھے رکھے نماز پڑھی، تاکہ آرام سے پڑھ  
سکیں۔“ (سیرۃ المہدی ج: ۳ ص: ۱۰۳)

## امامت کا شرف:

”ڈاکٹر میر محمد اسماعیل نے مجھ سے بیان کیا کہ ایک دفعہ کسی وجہ سے مولوی عبدالکریم صاحب مرحوم نماز نہ پڑھا سکے۔ حضرت خلیفۃ المسیح اول (حکیم نور دین صاحب) بھی موجود نہ تھے تو حضرت صاحب نے حکیم فضل الدین صاحب مرحوم کو نماز پڑھانے کے لئے ارشاد فرمایا۔ انہوں نے عرض کیا کہ حضور تو جانتے ہیں کہ مجھے بوا سیر کا مرض ہے اور ہر وقت رتخ خارج ہوتی رہتی ہے۔ میں نماز کس طرح سے پڑھاؤں، حضور نے فرمایا۔ حکیم صاحب آپ کی اپنی نماز باوجود اس تکلیف کے ہو جاتی ہے یا نہیں؟ انہوں نے عرض کیا۔ ہاں حضور! فرمایا کہ پھر ہماری بھی ہو جائے گی، آپ پڑھائیے۔ خاکسار عرض کرتا ہے کہ بیماری کی وجہ سے اخراج رتخ جو کثرت کے ساتھ جاری رہتا ہو نواقض وضو میں نہیں سمجھا جاتا۔“

(سیرۃ المہدی ج: ۳ ص: ۱۱۱)

## رکوع کے بعد:

”ڈاکٹر میر محمد اسماعیل صاحب نے مجھ سے بیان کیا کہ ایک دفعہ گرمیوں میں مسجد مبارک میں مغرب کی نماز پیر سراج الحق صاحب نے پڑھائی حضور علیہ السلام (مرزا صاحب) بھی اس نماز میں شامل تھے تیسری رکعت میں رکوع کے بعد انہوں نے بجائے مشہور دعاؤں کے حضور کی ایک فارسی نظم پڑھی جس کا یہ مصرعہ ہے:

”اے خدا اے چارہ آزار ما۔“

خاکسار عرض کرتا ہے کہ یہ فارسی نظم نہایت اعلیٰ درجہ کی مناجات ہے جو روحانیت سے پر ہے مگر معروف مسئلہ یہ ہے کہ نماز



میں صرف مسنون دعائیں بالجبر پڑھنی چاہئیں۔“

(سیرۃ المہدی ج: ۳ ص: ۱۳۸)

مسئلہ وغیرہ کچھ نہیں:

”ایک دفعہ کا ذکر ہے کہ مولوی عبدالکریم صاحب نماز پڑھا رہے تھے وہ جب تیسری رکعت کے لئے قعدہ سے اٹھے تو حضرت صاحب کو پتہ نہ لگا، حضور التحیات میں ہی بیٹھے رہے (شاید قبر مسیح کی تلاش میں کشمیر پہنچے ہوئے ہوں گے... ناقل) جب مولوی صاحب نے رکوع کے لئے تکبیر کہی تو حضور کو پتہ لگا، اور حضور اٹھ کر رکوع میں شریک ہوئے، نماز سے فارغ ہونے کے بعد حضور نے مولوی نور دین صاحب اور مولوی محمد احسن صاحب کو بلوایا اور مسئلہ کی صورت پیش کی اور فرمایا کہ میں بغیر فاتحہ پڑھے رکوع میں شامل ہوا ہوں اس کے متعلق شریعت کا کیا حکم ہے؟ مولوی محمد احسن صاحب نے مختلف شقیں بیان کیں کہ یوں بھی آیا ہے اور یوں بھی ہو سکتا ہے کوئی فیصلہ کن بات نہ بتائی (بتاتے بھی کیسے؟ معاملہ خود ”حضور“ کا تھا۔ ناقل) مولوی عبدالکریم صاحب مرحوم کے آخری ایام بالکل عاشقانہ رنگ پکڑ گئے تھے وہ فرمانے لگے مسئلہ وغیرہ کچھ نہیں جو حضور نے کیا بس وہی درست ہے۔“ (تقریر مفتی محمد صادق صاحب قادیانی مندرجہ اخبار ”الفضل“ قادیان جلد: ۱۲ نمبر: ۷۷ مورخہ ۱۷ جنوری ۱۹۲۵ء)

طہارت:

”ڈاکٹر میر محمد اسماعیل صاحب نے مجھ سے بیان کیا کہ حضرت مسیح موعود علیہ السلام (مرزا غلام احمد) صاحب پیشاب کر کے ہمیشہ پانی سے طہارت فرمایا کرتے تھے، میں نے کبھی

ڈھیلے کرتے نہیں دیکھا۔“ (سیرۃ المہدی ج: ۳ ص: ۲۴۳)

ڈھیلے جیب میں:

”آپ کو (یعنی مرزا صاحب کو) شیرینی سے بہت پیار ہے، اور مرض البول بھی عرصہ سے آپ کو لگی ہوئی ہے، اس زمانہ میں آپ مٹی کے ڈھیلے بعض وقت جیب میں ہی رکھتے تھے اور اسی جیب میں گڑ کے ڈھیلے بھی رکھ لیا کرتے تھے۔“ (مرزا صاحب کے حالات مرتبہ معراج الدین عمر قادیانی مشمولہ براہین احمدیہ ج: ۱ ص: ۶۷)

تیز گرم پانی:

”میرے گھر سے یعنی والدہ عزیز مظفر احمد نے مجھ سے بیان کیا کہ حضرت مسیح موعود علیہ السلام عموماً گرم پانی سے طہارت فرمایا کرتے تھے اور ٹھنڈے پانی کو استعمال نہ کرتے تھے۔ ایک دن آپ نے کسی خادمہ سے فرمایا کہ آپ کے لئے پاخانہ میں لوٹا رکھ دے، اس نے غلطی سے تیز گرم پانی کا لوٹا رکھ دیا، جب حضرت مسیح موعود علیہ السلام فارغ ہو کر باہر تشریف لائے تو دریافت فرمایا کہ لوٹا کس نے رکھا تھا جب بتایا گیا کہ فلاں خادمہ نے رکھا تھا۔ (جس کو آپ نے خود حکم فرمایا تھا... ناقل) تو آپ نے اسے بلوایا اور اسے اپنا ہاتھ آگے کرنے کو کہا اور پھر اس کے ہاتھ پر آپ نے اس لوٹے کا بچا ہوا پانی بہا دیا تا کہ اسے احساس ہو کہ یہ پانی اتنا گرم ہے کہ طہارت میں استعمال نہیں ہو سکتا۔“ (سیرۃ المہدی ج: ۳ ص: ۲۴۳)

حفظ قرآن:

”ڈاکٹر میر محمد اسماعیل صاحب نے مجھ سے بیان کیا کہ حضرت مسیح موعود علیہ السلام (غلام احمد صاحب) کو قرآن مجید کے

بڑے بڑے مسلسل حصے یا بڑی بڑی سورتیں یاد نہ تھیں۔ بے شک آپ قرآن کے جملہ مطالب پر حاوی تھے، مگر حفظ کے رنگ میں قرآن شریف کا اکثر حصہ یاد نہ تھا، ہاں کثرت مطالعہ اور کثرت تدبر سے یہ حالت ہو گئی تھی کہ جب کوئی مضمون نکالنا ہوتا تو خود بتا کر حفاظ سے پوچھا کرتے تھے کہ اس معنی کی آیت کون سی ہے یا آیت کا ایک ٹکڑا پڑھ دیتے یا فرماتے کہ جس آیت میں یہ لفظ آتا ہے وہ آیت کون سی ہے (باوجود اس کے قرآن کی آیتیں اکثر غلط نقل کرتے تھے... ناقل)۔“ (سیرۃ الہدی ج: ۳ ص: ۴۴ روایت نمبر: ۵۵۱)

### رمضان کے روزے:

”بیان کیا مجھ سے حضرت والدہ صاحبہ نے کہ جب حضرت مسیح موعود علیہ السلام کو دورے پڑنے شروع ہوئے تو آپ نے اس سال سارے رمضان کے روزے نہیں رکھے اور فدیہ ادا کر دیا۔ دوسرا رمضان آیا تو آپ نے روزے رکھنے شروع کئے مگر آٹھ نو روزے رکھے تھے کہ پھر دورہ ہوا۔ اس لئے باقی چھوڑ دیئے، اور فدیہ ادا کر دیا اس کے بعد جو رمضان آیا تو اس میں آپ نے دس گیارہ روزے رکھے تھے کہ پھر دورہ کی وجہ سے روزے ترک کرنے پڑے اور آپ نے فدیہ ادا کر دیا اس کے بعد جو رمضان آیا تو آپ کا تیسرا روزہ تھا کہ مغرب کے قریب آپ کو دورہ پڑا اور آپ نے روزہ توڑ دیا اور باقی روزے نہیں رکھے اور فدیہ ادا کر دیا اس کے بعد جتنے رمضان آئے آپ نے سب روزے رکھے مگر پھر وفات سے دو تین سال قبل کمزوری کی وجہ سے روزے نہیں رکھ سکے اور فدیہ ادا فرماتے رہے خاکسار نے دریافت کیا کہ جب آپ نے ابتداء

دوروں کے زمانہ میں روزے چھوڑے تو کیا پھر بعد میں ان کو قضا کیا؟ والدہ صاحبہ نے فرمایا کہ نہیں! صرف فدیہ ادا کر دیا تھا۔ خاکسار عرض کرتا ہے کہ جب شروع شروع میں حضرت مسیح موعود کو دوران سر اور برد اطراف کے دورے پڑنے شروع ہوئے تو اس زمانہ میں آپ بہت کمزور ہو گئے تھے اور صحت خراب رہتی تھی (خصوصاً رمضان میں... ناقل)۔“

(سیرۃ المہدی ج: ۱ روایت نمبر: ۸۱ ص: ۶۵، ۶۶ طبع دوم)  
 ”ڈاکٹر میر محمد اسماعیل صاحب نے مجھ سے بیان کیا کہ ایک دفعہ لدھیانہ میں حضرت مسیح موعود علیہ السلام (مرزا قادیانی) نے رمضان کا روزہ رکھا ہوا تھا کہ دل گھٹنے کا دورہ ہوا اور ہاتھ پاؤں ٹھنڈے ہو گئے اس وقت غروب آفتاب کا وقت بہت قریب تھا۔ مگر آپ نے فوراً روزہ توڑ دیا (اور توڑے ہوئے روزے کی قضا کا معمول تو تھا ہی نہیں... ناقل)۔“ (سیرۃ المہدی ج: ۳ ص: ۱۳۱)

### اعتکاف:

”ڈاکٹر میر محمد اسماعیل صاحب نے مجھ سے بیان کیا کہ حضرت مسیح موعود علیہ السلام نے حج نہیں کیا، اعتکاف نہیں کیا، زکوٰۃ نہیں دی، تسبیح نہیں رکھی، میرے سامنے ضرب یعنی گواہ کھانے سے انکار کیا... خاکسار عرض کرتا ہے کہ... اعتکاف ماموریت کے زمانہ سے قبل غالباً بیٹھے ہوں گے، مگر ماموریت کے بعد بوجہ قلمی جہاد اور دیگر مصروفیات کے نہیں بیٹھ سکے کیونکہ یہ نیکیاں اعتکاف سے مقدم ہیں (مگر آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے تو کبھی اعتکاف ترک نہیں فرمایا... ناقل)۔“ (سیرۃ المہدی ج: ۳ ص: ۱۱۹)

زکوٰۃ:

”اور زکوٰۃ اس لئے نہیں دی کہ آپ کبھی صاحب نصاب نہیں ہوئے (گویا ساری عمر فقیر رہے، مگر لقب تھارنیکس قادیان، اور ٹھانٹھ شاہانہ... ناقل)۔“ (سیرۃ المہدی ج: ۳ ص: ۱۱۹)

ج:

”مولوی محمد حسین بٹالوی کا خط حضرت مسیح موعود (مرزا صاحب) کی خدمت میں سنایا گیا جس میں اس نے اعتراض کیا تھا کہ آپ حج کیوں نہیں کرتے؟ اس کے جواب میں حضرت مسیح موعود نے فرمایا کہ: میرا پہلا کام خنزیروں کا قتل اور صلیب کی شکست ہے، ابھی تو میں خنزیروں کو قتل کر رہا ہوں، بہت سے خنزیر مر چکے ہیں اور بہت سخت جان ابھی باقی ہیں ان سے فرصت اور فراغت ہو لے (افسوس ہو کہ مرزا صاحب کو مدۃ العمر خنزیروں کے شکار سے فرصت نہ مل سکی، ان کے خنزیر مرے نہ انہیں حج کی توفیق ہوئی... ناقل)۔“ (ملفوظات احمدیہ ج: ۵ ص: ۲۶۳، ۲۶۴ مرتبہ محمد منظور الہی قادیانی)

جب کہ وہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام کے قتل خنزیر کے عمل کی نہایت بھونڈے انداز میں یوں پھبتی اڑاتے ہیں:

”میاں امام دین صاحب سیکھوانی نے مجھ سے بیان کیا کہ حضرت مسیح موعود علیہ السلام اکثر ذکر فرمایا کرتے تھے کہ بقول ہمارے مخالفین کے جب مسیح آئے گا اور لوگ اس کو ملنے کے لئے اس کے گھر پر جائیں گے تو گھر والے کہیں گے کہ مسیح صاحب باہر جنگل میں سو رہا ہے گئے ہوئے ہیں۔ پھر وہ لوگ حیران ہو کر کہیں گے کہ یہ کیسا مسیح ہے کہ لوگوں کی ہدایت کے لئے آیا ہے



اور باہر سوروں کا شکار کھیلتا پھرتا ہے، پھر فرماتے تھے کہ ایسے شخص کی آمد سے تو سانبھیوں اور گنڈیلوں کو خوشی ہو سکتی ہے جو اس قسم کا کام کرتے ہیں، مسلمانوں کو کیسے خوشی ہو سکتی ہے یہ الفاظ بیان کر کے آپ بہت ہنستے تھے یہاں تک کہ اکثر اوقات آپ کی آنکھوں میں پانی آجاتا تھا۔“ (سیرۃ المہدی ج: ۳ ص: ۲۹۱، ۲۹۲)

”خاکسار عرض کرتا ہے کہ حج نہ کرنے کی تو خاص وجوہات تھیں کہ شروع میں تو آپ کے لئے مالی لحاظ سے انتظام نہیں تھا۔ کیونکہ ساری جائیداد وغیرہ اوائل میں ہمارے دادا صاحب کے ہاتھ میں تھی، اور بعد میں تایا صاحب کا انتظام رہا اور اس کے بعد حالات ایسے پیدا ہو گئے کہ ایک تو آپ جہاد کے کام میں منہمک رہے (غالباً جہاد منسوخ کرنے کے کام میں... ناقل) دوسرے آپ کے لئے حج کا راستہ بھی مخدوش تھا۔ تاہم آپ کی خواہش رہتی تھی کہ حج کریں (تیسرے، حکمت الہیہ کہ آپ کو حج کی توفیق سے محروم رکھنا چاہتی تھی تاکہ مسیح کی ایک علامت بھی آپ پر صادق نہ آئے اور ہر عام و خاص کو معلوم ہو جائے کہ ان کا دعویٰ مسیحیت غلط ہے۔ ناقل)۔“ (سیرۃ المہدی ج: ۳ ص: ۱۱۹)

”حضرت مرزا صاحب پر حج فرض نہیں تھا کیونکہ آپ کی صحت درست نہ تھی ہمیشہ بیمار رہتے تھے (اور یہ قدرت کی جانب سے آپ کو حج سے روکنے کی پہلی تدبیر تھی... ناقل) حجاز کا حاکم آپ کا مخالف تھا، کیونکہ ہندوستان کے مولویوں نے مکہ معظمہ سے حضرت مرزا صاحب کے واجب القتل ہونے کے فتاویٰ منگائے تھے، اس لئے حکومت حجاز آپ کی مخالف ہو چکی تھی (اور یہ قدرت کی جانب سے دوسری تدبیر تھی... ناقل) وہاں جانے پر آپ کو جان کا خطرہ تھا

(دجال بھی اسی خطرہ سے مکہ مکرمہ نہیں جاسکے گا... ناقل) لہذا آپ نے قرآن شریف کے اس حکم پر عمل کیا کہ اپنی جان کو جان بوجھ کر ہلاکت میں مت پھنساؤ مختصر یہ کہ حج کی مقررہ شرائط آپ میں نہیں پائی گئیں اس لئے آپ پر حج فرض نہیں ہوا (اور خلاصہ یہ کہ اللہ تعالیٰ نے آپ کو حج کی توفیق ہی نہ دی... ناقل)۔“

(اخبار الفضل قادیان جلد: ۱۷ نمبر: ۲۱ ص: ۷ مورخہ ۱۰ ستمبر ۱۹۲۹ء)

### چھٹا سوال و جواب:

”سوال ششم:... (از محمد حسین صاحب قادیانی) حضرت اقدس (مرزا غلام احمد قادیانی) غیر عورتوں سے ہاتھ پاؤں کیوں دبواتے ہیں؟

جواب:... (از حکیم فضل دین قادیانی) وہ نبی معصوم ہیں، ان سے مس کرنا اور اختلاط منع نہیں بلکہ موجب رحمت و برکات ہے۔“ (الحکم جلد: ۱۱ نمبر: ۱۳ ص: ۱۳ مورخہ ۱۷ اپریل ۱۹۰۷ء)

### جمالیاتی حس:

”ڈاکٹر میر محمد اسماعیل صاحب نے مجھ سے بیان کیا کہ مولوی محمد علی صاحب ایم اے لاہور کی پہلی شادی حضرت مسیح موعود علیہ السلام (مرزا غلام احمد صاحب) نے گورداسپور میں کرائی تھی جب رشتہ ہونے لگا تو لڑکی کو دیکھنے کے لئے حضور نے ایک عورت کو گورداسپور بھیجا تا کہ وہ آکر رپورٹ کرے کہ لڑکی صورت و شکل وغیرہ میں کیسی ہے اور مولوی صاحب کے لئے موزوں بھی ہے یا نہیں... یہ کاغذ میں نے لکھا تھا اور حضرت صاحب نے بمشورہ حضرت ام المؤمنین لکھوایا تھا، اس میں مختلف باتیں نوٹ کرائی

تھیں۔ مثلاً یہ کہ لڑکی کا رنگ کیسا ہے، قد کتنا ہے، اس کی آنکھوں میں کوئی نقص تو نہیں، ناک، ہونٹ، گردن، دانت، چال، ڈھال وغیرہ کیسے ہیں، غرض بہت ساری باتیں ظاہری شکل و صورت کے متعلق لکھوادیں تھیں کہ ان کی بابت خیال رکھے اور دیکھ کر واپس آ کر بیان کرے، جب وہ عورت واپس آئی اور اس نے سب باتوں کی بابت اچھا یقین دلایا تو رشتہ ہو گیا۔ اسی طرح جب خلیفہ رشید الدین صاحب مرحوم نے اپنی بڑی لڑکی حضرت میاں صاحب (یعنی خلیفہ المسیح ثانی) کے لئے پیش کی تو ان دنوں میں یہ خاکسار ڈاکٹر صاحب موصوف کے پاس چکراتہ پہاڑ پر، جہاں وہ متعین تھے بطور تبدیلی آب و ہوا کے گیا ہوا تھا۔ واپسی پر مجھ سے لڑکی کا حلیہ وغیرہ تفصیل سے پوچھا گیا۔“ (سیرۃ الہدی ج: ۳ ص: ۲۹۶)

عائشہ:

”میری بیوی... پندرہ برس کی عمر میں دارالامان میں حضرت مسیح موعود کے پاس آئیں... حضور کو مرحومہ کی خدمت حضور کے پاؤں دبانے کی بہت پسند تھی۔“ (عائشہ کے شوہر غلام محمد صاحب قادیانی کا مضمون مندرجہ ”الفضل“ ۲۰ مارچ ۱۹۲۸ء ص: ۷، ۶)

بھانوی:

”ڈاکٹر میر محمد اسماعیل صاحب نے مجھ سے بیان کیا کہ حضرت ام المؤمنین (نصرت جہاں بیگم زوجہ مرزا غلام احمد) نے ایک دن سنایا کہ حضرت صاحب کے ہاں ایک بوڑھی ملازمہ مسماۃ بھانوی وہ ایک رات جب کہ خوب سردی پڑ رہی تھی حضور کو دبانے بیٹھی، چونکہ وہ لحاف کے اوپر سے دباتی تھی اس لئے اسے یہ پتہ نہ لگا

کہ جس چیز کو میں دبا رہی ہوں وہ حضور کی ٹانگیں نہیں بلکہ پنگ کی پٹی ہے۔ تھوڑی دیر کے بعد حضرت صاحب نے فرمایا: ”بھانو! آج بڑی سردی ہے۔“ بھانو کہنے لگی: ”ہاں جی! تدے تے تہاڈی لتاں لکڑی وانگر ہویاں ہویاں ایں۔“ یعنی جی ہاں جی تو آج آپ کی لاتیں لکڑی کی طرح سخت ہو رہی ہیں۔

خاکسار عرض کرتا ہے کہ حضرت صاحب نے جو بھانو کو سردی کی طرف توجہ دلائی تو اس میں بھی غالباً یہ جتنا مقصود تھا کہ آج شاید سردی کی شدت کی وجہ سے تمہاری حس کمزور ہو رہی ہے۔“

(سیرۃ المہدی ج: ۳ ص: ۲۱۰)

”خاکسار عرض کرتا ہے کہ حدیث سے پتہ لگتا ہے کہ آنحضرت صلعم (صلی اللہ علیہ وسلم... ناقل) بھی عورتوں سے بیعت لیتے ہوئے ان کے ہاتھ کو نہیں چھوتے تھے، دراصل قرآن شریف میں جو یہ آتا ہے کہ عورت کو کسی غیر محرم پر اظہار زینت نہیں کرنا چاہئے اسی کے اندر لمس کی ممانعت بھی شامل ہے کیونکہ جسم کے چھونے سے بھی زینت کا اظہار ہو جاتا ہے۔“ (سیرۃ المہدی ج: ۳ ص: ۱۵)

زینب بیگم:

”ڈاکٹر سید عبدالستار شاہ صاحب نے مجھ سے بذریعہ تحریر بیان کیا کہ مجھ سے میری لڑکی زینب بیگم نے بیان کیا کہ میں تین ماہ کے قریب حضرت اقدس (مرزا غلام احمد صاحب) کی خدمت میں رہی ہوں گرمیوں میں پنکھا وغیرہ اور اسی طرح کی خدمت کرتی تھی، بسا اوقات ایسا ہوتا کہ نصف رات یا اس سے زیادہ مجھ کو پنکھا ہلاتے گزر جاتی تھی مجھ کو اس اثنا میں کسی قسم کی تھکان و تکلیف محسوس نہیں

ہوتی تھی، بلکہ خوشی سے دل بھر جاتا تھا، دو دفعہ ایسا موقع آیا کہ عشاء کی نماز سے لے کر صبح کی اذان تک مجھے ساری رات خدمت کرنے کا موقع ملا۔ پھر بھی اس حالت میں مجھ کو نہ نیند نہ غنودگی اور نہ تھکان معلوم ہوئی بلکہ خوشی اور سرور پیدا ہوتا تھا۔“

(سیرۃ المہدی ج: ۳ ص: ۲۷۳)

”ڈاکٹر سید عبدالستار شاہ صاحب نے مجھ سے بذریعہ تحریر بیان کیا کہ میری لڑکی — زینب بیگم نے مجھ سے بیان کیا کہ ایک دفعہ جب حضور علیہ السلام (مرزا صاحب) سیالکوٹ تشریف لے گئے تھے تو میں رعیت سے ان کی خدمت میں حاضر ہوئی، ان ایام میں مجھے مراق کا سخت دورہ تھا۔ میں شرم کے مارے آپ سے عرض نہ کر سکتی تھی مگر میرا دل چاہتا تھا کہ میری بیماری سے کسی طرح حضور کو علم ہو جائے، تاکہ میرے لئے حضور دعا فرمائیں، میں حضور کی خدمت کر رہی تھی کہ حضور نے اپنے انکشاف اور صفائی باطن سے خود معلوم کر کے فرمایا زینب تم کو مراق کی بیماری ہے، ہم دعا کریں گے۔“

(سیرۃ المہدی ج: ۳ ص: ۲۷۵)

”ڈاکٹر سید عبدالستار شاہ صاحب نے مجھ سے بذریعہ تحریر بیان کیا کہ میری بڑی لڑکی زینب بیگم نے مجھ سے بیان کیا کہ ایک دفعہ حضرت مسیح موعود علیہ السلام (مرزا غلام احمد صاحب) قہوہ پی رہے تھے کہ حضور نے مجھ کو اپنا بچا ہوا قہوہ دیا اور فرمایا زینب یہ پی لو، میں نے عرض کی حضور یہ گرم ہے اور مجھ کو ہمیشہ اس سے تکلیف ہو جاتی ہے، آپ نے فرمایا یہ ہمارا بچا ہوا قہوہ ہے، تم پی لو کچھ نقصان نہیں ہوگا۔ میں نے پی لیا۔“

(سیرۃ المہدی ج: ۳ ص: ۲۶۶)



## مائی تابی:

”میرے گھر سے یعنی والدہ عزیز مظفر احمد نے مجھ سے بیان کیا کہ ایک دفعہ ہم گھر کی چند لڑکیاں تربوز کھا رہی تھیں، اس کا ایک چھلکا مائی تابی کو جا لگا۔ جس پر مائی تابی بہت ناراض ہوئی، اور ناراضگی میں بددعائیں دینی شروع کر دیں، اور پھر خود ہی حضرت مسیح موعود کے پاس جا کر شکایت بھی کر دی اس پر حضرت صاحب نے ہمیں بلایا اور پوچھا کہ کیا بات ہوئی ہے، ہم نے سارا واقعہ سنایا، جس پر آپ مائی تابی سے ناراض ہوئے کہ تم نے میری اولاد کے متعلق بددعا کی ہے خاکسار عرض کرتا ہے کہ مائی تابی قادیان کے قریب ایک بوڑھی عورت تھی جو حضرت مسیح موعود کے گھر میں رہتی تھی، اور اچھا خاصا اخلاص رکھتی تھی۔“

(سیرۃ المہدی ج: ۳ ص: ۲۴۴)

## مائی کا کو:

”مائی کا کو نے مجھ سے بیان کیا کہ ایک دفعہ میرے سامنے میاں عبدالعزیز صاحب پٹواری سیکھواں کی بیوی حضرت مسیح موعود علیہ السلام کے لئے کچھ تازہ جلیبیاں لائی۔ حضرت صاحب نے ان میں سے ایک جلیبی اٹھا کر منہ میں ڈالی۔ اس وقت ایک راولپنڈی کی عورت پاس بیٹھی تھی۔ اس نے گھبرا کر حضرت صاحب سے کہا: حضرت یہ تو ہندو کی بنی ہوئی ہیں۔ حضرت صاحب نے کہا تو پھر کیا ہے ہم جو سبزی کھاتے ہیں وہ گوہر اور پاخانہ کی کھاد سے تیار ہوتی ہے۔ اور اسی طرح بعض اور مثالیں دے کر اسے سمجھایا۔“

(سیرۃ المہدی ج: ۳ ص: ۲۴۴، ۲۴۵)

## نیم دیوانی کی حرکت:

”حضرت مسیح موعود کے اندرون خانہ ایک نیم دیوانی سی عورت بطور خادمہ کے رہا کرتی تھی، ایک دفعہ اس نے کیا حرکت کی کہ جس کمرے میں حضرت صاحب بیٹھ کر لکھنے پڑھنے کا کام کرتے تھے وہاں ایک کونے میں کھرا تھا جس کے پاس پانی کے گھڑے رکھے تھے۔ وہاں اپنے کپڑے اتار کر اورنگی بیٹھ کر نہانے لگ گئی۔ حضرت صاحب اپنے کام تحریر میں مصروف رہے اور کچھ خیال نہ کیا کہ وہ کیا کرتی ہے۔“ (ذکر حبیب مؤلف مفتی محمد صادق ص: ۳۸)

## رات کا پہرہ:

”مائی رسول بی بی صاحبہ بیوہ حافظ حامد علی صاحب مرحوم نے بواسطہ مولوی عبدالرحمن صاحب جٹ مولوی فاضل نے مجھ سے بیان کیا کہ ایک زمانہ میں حضرت مسیح موعود (مرزا صاحب) کے وقت میں میں اور اہلیہ بابوشاہ دین رات کو پہرہ دیتی تھیں، اور حضرت صاحب نے فرمایا ہوا تھا کہ اگر میں سونے میں کوئی بات کیا کروں تو مجھے جگا دینا، ایک دن کا واقعہ ہے کہ میں نے آپ کی زبان پر کوئی الفاظ جاری ہوتے سنے اور آپ کو جگا دیا، اس وقت رات کے بارہ بجے تھے ان ایام میں عام طور پر پہرہ پر مائی فجو، منشیانی اہلیہ منشی محمد دین گوجرانوالہ اور اہلیہ بابوشاہ دین ہوتی تھیں۔

خاکسار عرض کرتا ہے کہ مائی رسول بی بی صاحبہ میری رضاعی ماں ہیں (اور مرزا صاحب کی؟... ناقل) اور حافظ حامد علی صاحب مرحوم کی بیوہ ہیں جو حضرت مسیح موعود کے پرانے خادم تھے۔ مولوی عبدالرحمن صاحب ان کے داماد ہیں۔“

(سیرۃ المہدی ج: ۳ ص: ۲۱۳)

## جوان عورت، بغلگیر، الحمد للہ:

۲۵ جولائی ۱۸۹۲ء مطابق ۲۰ رزی الحجہ ۱۳۰۹ھ روز  
دوشنبہ۔ آج میں نے بوقت صبح صادق ساڑھے چار بجے دن کے  
خواب میں دیکھا کہ ایک حویلی ہے اس میں میری بیوی والدہ محمود اور  
ایک عورت بیٹھی ہے تب میں نے ایک مشک سفید رنگ میں پانی بھرا  
ہے اور اس مشک کو اٹھا کر لایا ہوں اور وہ پانی لا کر ایک اپنے گھرے  
میں ڈال دیا ہے میں پانی کو ڈال چکا تھا کہ وہ عورت جو بیٹھی ہوئی تھی  
یکا یک سرخ اور خوش رنگ لباس پہنے ہوئے میرے پاس آگئی کیا  
دیکھتا ہوں کہ ایک جوان عورت ہے۔ پیروں سے سر تک سرخ لباس  
پہنے ہوئے۔ شاید جالی کا کپڑا ہے۔ میں نے دل میں خیال کیا کہ  
وہی عورت ہے جس کے لئے اشتہار دیئے تھے (یعنی محمدی بیگم  
... ناقل)۔ لیکن اس کی صورت میری بیوی کی صورت معلوم ہوئی۔  
گویا اس نے کہا، یا دل میں کہا کہ میں آگئی ہوں۔ میں نے کہا یا اللہ  
آجاوے، اور پھر وہ عورت مجھ سے بغلگیر ہوئی۔ اس کے بغلگیر  
ہوتے ہی میری آنکھ کھل گئی۔ فالحمد للہ علی ذالک۔

اس سے دو چار روز پہلے خواب میں دیکھا تھا کہ روشن بی  
بی میرے دالان کے دروازے پر آکھڑی ہوئی ہے اور میں دالان  
کے اندر بیٹھا ہوں۔ تب میں نے کہا کہ آ، روشن بی بی اندر آ جا۔“  
(تذکرہ ص: ۱۹ طبع چہارم)

## ناکامی کی تلخی:

”فرمایا چند روز ہوئے کہ کشفی نظر میں ایک عورت مجھے  
دھلائی گئی اور پھر الہام ہوا... اس عورت اور اس کے خاوند کے

لئے ہلاکت ہے (یعنی انکور کھٹے ہیں!... ناقل)۔“

(تذکرہ ص: ۶۱۰ طبع چہارم)

### خواب: دماغی بناوٹ:

”۱۳؎ اگست ۱۸۹۲ء مطابق ۲۰ محرم ۱۳۰۹ھ۔ آج خواب میں، میں (مرزا غلام احمد) نے دیکھا کہ محمدی (بیگم) جس کی نسبت پیش گوئی ہے، باہر کسی تکیہ میں مع چند کس کے بیٹھی ہوئی ہے، اور سر اس کا شاید منڈا ہوا ہے، اور بدن سے ننگی ہے اور نہایت مکروہ شکل ہے میں نے اس کو تین مرتبہ کہا کہ تیرے سر منڈی ہونے کی یہ تعبیر ہے کہ تیرا خاوند مر جائے گا اور میں نے دونوں ہاتھ اس کے سر پر اتارے ہیں... اور اسی رات والدہ محمود نے خواب میں دیکھا کہ محمدی (بیگم) سے میرا نکاح ہو گیا ہے اور ایک کاغذ مہران کے ہاتھ میں ہے جس پر ہزار روپیہ مہر لکھا ہے، اور شیرینی منگوائی گئی ہے اور پھر میرے پاس وہ خواب میں کھڑی ہے۔“

(تذکرہ ص: ۱۹۸، ۱۹۹ طبع چہارم)

”خاکسار عرض کرتا ہے کہ خوابوں کا مسئلہ بھی بڑا نازک ہے، کئی خوابیں انسان کی دماغی بناوٹ کا نتیجہ ہوتی ہیں۔ اور اکثر ان کی حقیقت کو نہیں سمجھتے۔“

(سیرۃ المہدی ج: ۳ ص: ۱۱۶ مؤلفہ صاحبزادہ مرزا بشیر احمد)

### پاک مال، پاک مصرف:

”بیان کیا مجھ سے میاں عبداللہ صاحب سنوری نے کہ ایک دفعہ انبالہ کے ایک شخص نے حضرت صاحب سے فتویٰ دریافت کیا کہ میری ایک بہن کنچنی تھی، اس نے اس حالت میں

\* بہت سارے پیہ کمایا، پھر وہ مر گئی، اور مجھے اس کا ترکہ ملا، مگر بعد میں مجھے اللہ تعالیٰ نے توبہ اور اصلاح کی توفیق دی، اب میں اس مال کو کیا کروں؟ حضرت صاحب نے جواب دیا کہ ہمارے خیال میں اس زمانہ میں ایسا مال اسلام کی خدمت میں خرچ ہو سکتا ہے (اور اسلام کی روح خود مرزا صاحب تھے، ان سے بہتر اس مال کا مصرف اور کون ہو سکتا تھا۔ ناقل)۔“

(سیرۃ المہدی ج: ۱ ص: ۲۶۱ روایت نمبر: ۲۷۲)

### النوار خلافت

دس جوتے:

۱:۔۔۔ مرزا صاحب قادیان: میاں محمود احمد صاحب خلیفہ

قادیان۔

۲:۔۔۔ ابوبکر صدیق: عزیزہ بیگم اور مسماۃ سلمیٰ کے والد۔

۳:۔۔۔ عزیزہ بیگم: میاں محمود احمد صاحب خلیفہ قادیان کی

بیوی۔

۴:۔۔۔ مسماۃ سلمیٰ: ابوبکر صدیق کی لڑکی، جس کا عدالتی

بیان ذیل میں درج ہے۔

۵:۔۔۔ احسان علی: ایک قادیانی دوا فروش، قادیان میں۔

”میرے باپ کا نام ابوبکر صدیق ہے، وہ مرزا صاحب

قادیان کا خسر ہے، میں بھی مرزا صاحب قادیان کے گھر میں تقریباً

(۵) سال رہی ہوں، میں مستغیث احسان علی کو جانتی ہوں چار سال

ہوئے میں مرزا صاحب کے لڑکے کی دوائی لینے احسان علی کی دوکان

پر گئی تھی، میں نسخہ لے کر اس کی دوکان پر گئی تھی، اول احسان علی نے



میرے ساتھ مخول کرنا شروع کیا اور پھر مجھ سے کہا کہ میں مضروبوں کے کمرہ میں جاؤں، اس دوسرے کمرہ میں اس نے مجھے لٹا دیا اور میرے ساتھ بد فعلی کرنے کی کوشش کری، لوگ میرے رولا کرنے پر اکٹھے ہو گئے اور دروازہ کھلایا اور احسان علی کو لعنت اور ملامت کری تھی۔ احسان علی نے میرے ساتھ بد فعلی کرنی شروع کری تھی۔ میں نے گھر میں جا کر عزیزہ بیگم کے پاس شکایت کری تھی اور اس وقت مرزا صاحب وہاں موجود تھے، ان ایام میں میں عزیزہ بیگم کے پاس رہتی تھی، مرزا صاحب نے احسان علی کو بلایا اور لعنت ملامت کری اور احسان علی کو کہا کہ قادیان سے نکل جاؤ۔ احسان علی نے معافی مانگی اور مرزا صاحب نے حکم دیا کہ اگر احسان علی دس جوتے کھالیوے تب اس کو معاف کیا جاتا ہے، اور ٹھہر سکتا ہے، چنانچہ احسان علی نے اس کو قبول کیا، اور میں نے اس کو دس جوتے لگائے تھے، یہ جوتیاں مرزا صاحب کے سامنے ماری تھیں... جب کہ میں نے احسان علی کو جوتیاں ماریں تھیں تو تین چار آدمی اکٹھے ہو گئے تھے ان ایام میں میں بغیر پردہ کے باہر پھرا کرتی تھی... اس کے بعد میں سودا لینے بازار نہیں گئی۔“ (مساءۃ سلمیٰ کی حلفیہ شہادت جو اس نے بتاریخ ۱۰ جولائی ۱۹۳۵ء ایڈیشنل ڈسٹرکٹ مجسٹریٹ ضلع امرتسر کی عدالت میں ادا کی۔ بمقدمہ ازالہ حیثیت عرفی زیر دفعہ ۵۰۰ احسان علی بنام محمد اسماعیل، نمبری ۲/۸۶ مرجوعہ ۱۷ جولائی ۱۹۳۵ء، منصفہ ۲۱ ستمبر ۱۹۳۵ء، ”قادیانی مذہب“ مؤلفہ پروفیسر محمد الیاس برنی ص: ۸۲۴ طبع پنجم)

خصوصی دلچسپی:

”جب میں ولایت گیا تو مجھے خصوصیت سے خیال تھا کہ

یورپین سوسائٹی کا عیب والا حصہ بھی دیکھوں گا، مگر قیام انگلستان کے دوران مجھے اس کا موقع نہ ملا۔ واپسی پر جب ہم فرانس آئے تو میں نے چوہدری ظفر اللہ خاں صاحب سے، جو میرے ساتھ تھے کہا کہ مجھے کوئی ایسی جگہ دکھائیں جہاں یورپین سوسائٹی عریانی سے نظر آ سکے، وہ بھی فرانس سے واقف تو نہ تھے مگر مجھے اوپیرا میں لے گئے جس کا نام مجھے یاد نہیں رہا، اوپیرا سینما کو کہتے ہیں چوہدری صاحب نے بتایا کہ یہ اعلیٰ سوسائٹی کی جگہ ہے جسے دیکھ کر آپ اندازہ لگا سکتے ہیں، میری نظر چونکہ کمزور ہے اس لئے دور کی چیز اچھی طرح نہیں دیکھ سکتا۔ تھوڑی دیر کے بعد میں نے جو دیکھا کہ تو ایسا معلوم ہوا کہ سیکڑوں عورتیں بیٹھی ہیں میں نے چوہدری صاحب سے کہا کیا یہ ننگی ہیں۔ انہوں نے بتایا کہ یہ ننگی نہیں بلکہ کپڑے پہنے ہوئے ہیں مگر باوجود اس کے وہ ننگی معلوم ہوتی تھیں (معلوم نہیں ان سے تعارف کا شرف بھی حاصل ہوا یا نہیں... ناقل)۔“

(مرزا بشیر الدین صاحب کا ارشاد، مندرجہ "الفضل" ۲۸ جنوری ۱۹۳۴ء)

### اطالوی رقاصہ:

”مرزا بشیر الدین کی آمد اور سلسل ہوٹل کی منظمہ کی گمشدگی تلاش کے باوجود اس کا کوئی پتہ نہیں مل سکا۔“ (اخبار کی سرخی) ”کیم مارچ۔ سلسل ہوٹل کی طرف سے مشتہر ہوا تھا کہ جمعرات کیم مارچ پانچ سے ساڑھے نو بجے رات تک ناچ اور رسٹ ڈرائیو ہوگا بڑے بڑے انعامات بدستور سابق تقسیم کئے جائیں گے، تماشا شام چار بجے سے جمع ہونے شروع ہو گئے، اور پانچ بجے اچھا خاصا مجمع ہو گیا۔ ہر ایک شخص کھیل شروع ہونے کا منتظر تھا، مگر

خلاف توقع رسٹ ڈرائیو شروع نہ ہوا، ناچ کا بینڈ بجنا شروع ہوا، آخر  
پر سلسل ہوٹل کے ایک بیرے سے معلوم ہوا کہ رسٹ ڈرائیو کا تمام  
سامان منظمہ کے کمرے میں ہے، اور منظمہ کو مرزا بشیر الدین محمود موٹر  
میں بٹھا کر لے گئے ہیں۔“ (روزنامہ آزاد ۱۳ مارچ ۱۹۳۴ء)

قادیان شکن:

اخبار زمیندار کا منظوم تبصرہ  
اے کشور اطالیہ کے باغ کی بہار  
لاہور کا دامن ہے تیرے فیض سے چمن  
پیغمبر جمال! تیری دل ربا ادا  
پروردگار عشق! تیرا چلبلا چلن  
الجھے ہوئے ہیں دل تیری زلف سیاہ میں  
ہیں جس کے ایک تار سے وابستہ سوختن  
پروردہ فسوں ہے تیری آنکھ کا خمار  
آوردہ جنوں ہے تیری بوئے پیرہن  
پیما نہ نشاط تیری ساق صندلی  
بیعانہ سرور ہے تیرا مرمری بدن  
رونق ہے ہوٹلوں کی ترا حسن بے حجاب  
جس پر فدا ہے شیخ، تو لٹو ہے برہمن  
جب قادیاں پہ تیری نشیلی نظر پڑی  
سب نشہ نبوت ظلی ہوا ہرن  
میں بھی ہوں تیری چشم پر فسوں کا معترف  
جادو وہی ہے آج جو ہو قادیاں شکن  
(ارمغان قادیان ص: ۴۸، ۴۹)

## وہ قادیان گئی:

عشاق شہر کا ہے زمیندار سے سوال  
 ہوٹل سلسل کی رونق عریاں کہاں گئی  
 اس کے جلو میں جاں گئی ایماں کے ساتھ ساتھ  
 کیا کیا نہ تھا جو لے کے وہ جان جہاں گئی  
 خوف خدائے پاک دلوں سے نکل گیا  
 آنکھوں سے شرم سرور کون و مکاں گئی  
 بن کر خروش حلقہ رندان لم یزل  
 لے کر گئی وہ حشر کا ساماں، جہاں گئی  
 روما سے ڈھل کے برق کے سانچے میں آئی تھی  
 اب کس حریم ناز میں وہ جان جہاں گئی  
 یہ چیتاں سنی تو زمیندار نے کہا  
 اتنا ہی جانتا ہوں کہ وہ قادیاں گئی  
 (ارمغان قادیان ص: ۵۰)

## مس رونو:

تمہیں ”مشی فی النوم“ کی بھی خبر ہے  
 زمانے کے اے بے خبر فیلسوفو!  
 ملے گا تمہیں یہ سبق قادیاں سے  
 جہاں چل کے سوتے میں آئی مس رونو  
 (ارمغان قادیان ص: ۴۹)

اخبارات میں اس کا چرچا ہوا تو مرزا بشیر الدین صاحب  
 نے اپنے خطبہ میں یہ وضاحت فرمائی کہ میں اس لیڈی کو اپنی بیویوں

اور لڑکیوں کو انگریزی لہجہ سکھانے کے لئے لایا تھا۔

(الفضل ۱۸ مارچ ۱۹۳۴ء)

پردے کا حکم:

”سوال ہفتم: ... حضرت کے صاحبزادہ غیر عورتوں میں بلا تکلف اندر کیوں جاتے ہیں، کیا ان سے پردہ درست نہیں؟ (سائل محمد حسین قادیانی)

جواب: ... ضرورت حجاب صرف احتمال زنا کے لئے ہے جہاں ان کے وقوع کا احتمال کم ہو ان کو اللہ تعالیٰ نے مستثنیٰ کر دیا ہے، اسی واسطے انبیاء، اتقیا، لوگ مستثنیٰ بلکہ بطریق اولیٰ مستثنیٰ ہیں، پس حضرت کے صاحبزادے اللہ کے فضل سے متقی ہیں ان سے اگر حجاب نہ کریں تو اعتراض کی بات نہیں..... حکیم فضل دین از قادیان۔“

(اخبار الحکم جلد: ۱۱ نمبر: ۱۳ ص: ۱۳ مورخہ ۱۷ اپریل ۱۹۰۷ء)

کبھی کبھی اور ہمیشہ:

ایک خط میں، جس کے متعلق اس نے تسلیم کیا ہے کہ وہ اسی کا لکھا ہوا ہے، اس پر یہ تحریر کیا ہے کہ:

”حضرت مسیح موعود“ مرزا غلام احمد صاحب قادیانی“ ولی اللہ تھے اور ولی اللہ بھی کبھی کبھی زنا کر لیا کرتے ہیں۔ اگر انہوں نے کبھی کبھار زنا کر لیا تو اس میں کیا حرج ہوا۔“ پھر لکھا ہے: ”ہمیں حضرت مسیح موعود پر اعتراض نہیں کیونکہ وہ کبھی کبھی زنا کیا کرتے تھے، ہمیں اعتراض موجودہ خلیفہ (مرزا محمود احمد صاحب) پر ہے، کیونکہ وہ ہر وقت زنا کرتا رہتا ہے۔“ اس اعتراض سے پتہ لگتا ہے کہ یہ شخص پیغامی طبع ہے (یعنی قادیانیوں کی لاہوری پارٹی سے تعلق رکھتا



ہے۔ ناقل) اس لئے کہ ہمارا حضرت مسیح موعود کے متعلق یہ اعتقاد ہے کہ آپ نبی اللہ تھے مگر پیغمبی (لاہوری) اس بات کو نہیں مانتے اور وہ آپ کو صرف ولی اللہ سمجھتے ہیں۔“

مرید کا شکوہ:

(۱۹۲۷ء میں سکینہ وزاہد کے قصے گلی کوچوں میں پھیلے، اخباروں کی زینت بنے، عدالتوں میں گونجے مگر خلیفہ کے غالی مرید شیخ عبدالرحمن صاحب مصری کو اپنے پیر کے تقدس کا یقین تب آیا جب ان ترک تازیوں کا سلسلہ شیخ صاحب کے گھر تک آپہنچا، تاہم مرید نے پیر کا راز فاش کرنے کے بجائے نجی خطوط کے ذریعہ اصلاح احوال کی ناکام کوشش کی، ان کے پہلے مطبوعہ خط کے، جو خاصا طویل ہے، چند فقرے باضافہ عنوانات درج ذیل ہیں... ناقل)

دونوک بات:

”بسم اللہ الرحمن الرحیم۔ نحمدہ و نصلی علی رسولہ الکریم... سیدنا۔ السلام علیکم ورحمۃ اللہ وبرکاتہ۔“

میں ذیل کے چند الفاظ محض آپ کی خیر خواہی اور سلسلہ کی خیر خواہی کو مد نظر رکھتے ہوئے لکھ رہا ہوں، مدت سے میں یہ چاہتا تھا کہ آپ سے دونوک بات کروں مگر جن باتوں کا درمیان میں ذکر آنا لازمی تھا وہ جیسا کہ آپ اچھی طرح جانتے ہیں ایسی تھیں کہ ان کے ذکر سے آپ کو سخت شرمندگی لاحق ہونی لازمی تھی اور جن کے نتیجہ میں آپ میرے سامنے منہ دکھانے کے قابل نہیں رہ سکتے تھے۔“

تقدس کا پردہ:

”اگر میں بھی آپ کے اس اشتعال انگیز طریق سے متاثر ہو کر جلد بازی سے کام لیتا اور ابتدا میں ہی اپنا مبنی بر حقیقت بیان شائع کر دیتا اور جو تقدس کا بناوٹی پردہ آپ نے اپنے اوپر ڈالا ہوا ہے اس کو اٹھا کر آپ کی اصل شکل دنیا کے سامنے ظاہر کر دیتا تو آج نہ معلوم آپ کا کیا حشر ہوتا۔“

تعجب کی بات:

”تعجب ہے مجھے تو ان دیرینہ تعلقات کا اس قدر پاس ہو کہ آپ کے گندے افعال کا ذکر آپ کے سامنے کرنے سے بھی شرم محسوس کروں، اور محض اس خیال سے کہ میرے سامنے آنے سے آپ کو شرم محسوس ہوگی آپ کے سامنے آنے سے حتی الوسع اجتناب کرتا رہا ہوں لیکن ان تعلقات کا آپ کو اتنا بھی پاس نہ ہوا جتنا کہ ایک ”معمولی قماش کے بدچلن انسان“ کا ہوتا ہے، میں نے سنا ہے کہ بدچلن سے بدچلن آدمی بھی اپنے دوستوں کی اولاد پر ہاتھ ڈالنے سے احتراز کرتا ہے لیکن افسوس آپ نے اتنا بھی نہ کیا اور اپنے ان مخلص دوستوں کی اولاد پر ہی ہاتھ صاف کرنا چاہا، جو آپ کے لئے اور آپ کے خاندان کے لئے جانیں تک قربان کر دینا بھی معمولی قربانی سمجھتے تھے (جان کے ساتھ عزت و ناموس اور ضمیر کی قربانی بھی سہی، وہ اخلاص ہی کیا ہوا جو ایسی قربانیوں کا بھی متحمل نہ ہو۔۔۔ ناقل)۔“

ناجائز فائدہ:

”میں دیکھ رہا ہوں کہ ایک طرف تو آپ نے اپنی عیاشی کو انتہا تک پہنچایا ہوا ہے، جس لڑکی کو چاہا اپنی عجیب و غریب عیاری

سے بلایا اور اس کی عصمت دری کر دی، اور پھر ایک طرف سے اس کی طبعی شرم و حیا سے ناجائز فائدہ اٹھالیا اور دوسری طرف دھمکی دے دی کہ ”اگر تو نے کسی کو بتایا تو تیری بات کون مانے گا، لوگ تجھے پاگل اور منافق کہیں گے، میرے متعلق تو کوئی یقین نہیں کرے گا“ اور اگر کسی نے جرأت سے اظہار کر دیا تو مختلف بہانوں سے ان کے خاوندوں یا والدین کو ٹال دیا۔“

جال اور ماتم:

”لڑکیوں اور لڑکوں کو پھنسانے کے لئے جو جال آپ نے ایجنٹ مردوں اور ایجنٹ عورتوں کا بچھایا ہوا ہے اس کا راز جب فاش کیا جائے گا تو لوگوں کو پتہ لگے گا کہ کس طرح ان کے گھروں پر ڈاکہ پڑتا ہے، مخلص جو آپ کے ساتھ اور آپ کے خاندان کے ساتھ تعلق پیدا کرنا فخر سمجھتے ہیں ان کے گھروں میں سب سے زیادہ ماتم پڑے گا (بشرطیکہ عقل اور حس بھی خلیفہ پر ”قربان“ نہ ہو چکی ہو... ناقل)۔“

انتقام، انتقام، انتقام:

”دوسری طرف جن لوگوں کو آپ کی غلط کاریوں کا علم ہو جاتا ہے یا وہ کسی کے سامنے اظہار کر بیٹھتے ہیں اور آپ کو اس کا علم ہو جائے تو پھر آپ اسے کچلنے کے درپے ہو جاتے ہیں، اور اس کچلنے میں رحم آپ کے نزدیک تک نہیں پھٹکتا، اور پتھر سے بھی زیادہ سخت دل کے ساتھ اس پر گرتے ہیں اور آپ کی سزا دہی میں اصلاحی پہلو بالکل مفقود اور انتقامی پہلو نمایاں ہوتا ہے (چنانچہ مثال کے طور پر سیکرٹری بیگم زوجہ مرزا عبدالحق صاحب کو ہی لے لو جس نے خلیفہ کی اخلاقی دراز دستی کی شکایت ۱۹۲۷ء میں کی تھی... ناقل)۔ کس قدر

ظلم اس پر آپ کی طرف سے کیا جاتا ہے جو کچھ اس نے کہا تھا اس کی سچائی تو اب بالکل ثابت ہو چکی ہے، لیکن وہ بیچاری باوجود سچی ہونے کے قیدیوں سے بدتر زندگی بسر کر رہی ہے، اس کی صحت تباہ ہو چکی ہے۔“

قادیانی چال:

”آپ نے یہ چال چلی ہوئی ہے کہ لوگوں کو ایک دوسرے سے ملنے نہ دیا جائے اور منافقوں سے بچو، منافقوں سے بچو کے شور سے لوگوں کو خوفزدہ کیا ہوا ہے اور ہر ایک کو دوسرے پر بدظن کر دیا ہوا ہے، اب ہر شخص ڈرتا ہے کہ میرا مخاطب کہیں میری رپورٹ ہی نہ کر دے، اور پھر فوراً مجھ پر منافق کا فتویٰ لگ کر جماعت سے اخراج کا اعلان کر دیا جائے، اور یہ سب کچھ آپ نے اس لئے کیا ہوا ہے کہ آپ کی سیاہ کاریوں کا لوگوں کو علم نہ ہو سکے، لیکن.....“

ممکن ہے کہ.....

”آپ کی بدچلنی کے متعلق جو کچھ میں نے لکھا ہے اس کے متعلق ایک بات میرے دل میں کھٹکتی رہتی ہے اس کا ذکر کر دینا بھی ضروری سمجھتا ہوں اور وہ یہ کہ ممکن ہے جس چیز کو ہم زنا سمجھتے ہیں، آپ اسے زنا ہی نہ سمجھتے ہوں،... پس اگر ایسا ہے تو مہربانی فرما کر مجھے سمجھا دیں، اگر میری سمجھ میں آگئی تو میں اپنے سارے اعتراضات واپس لے لوں گا۔“

بعض دفعہ نماز:

”میں اس جگہ اس بات کا اضافہ کر دینا بھی ضروری سمجھتا ہوں کہ میں آپ کے پیچھے نماز نہیں پڑھ سکتا، کیونکہ مجھے مختلف ذرائع

سے یہ علم ہو چکا ہے کہ آپ جنبی کی حالت میں ہی بعض دفعہ نماز پڑھانے آ جاتے ہیں۔“ (کمالات محمودیہ ص: ۹۸ تا ۱۱۴ ملخصاً)

عدالت میں گونج:

(۱۹۳۷ء میں شیخ عبدالرحمن مصری کو خلیفہ سے اخلاقی شکایتیں پیدا ہوئیں، نتیجہ یہ ہوا کہ شیخ صاحب جماعت سے الگ ہو گئے، یا کر دیئے گئے، تو خلیفہ سے محاذ آرائی ہوئی بات اشتہاروں اخباروں سے آگے عدالتوں تک پہنچی، ذیل میں ان کا حلفیہ عدالتی بیان درج ہے، جسے عدالت عالیہ لاہور نے اپنے ۲۳ ستمبر ۱۹۳۸ء کے فیصلہ میں شامل کیا:)

”موجودہ خلیفہ (مرزا محمود احمد صاحب) سخت بد چلن ہے، یہ تقدس کے پردے میں عورتوں کا شکار کھیلتا ہے، اس کام کے لئے اس نے بعض مردوں اور بعض عورتوں کو بطور ایجنٹ رکھا ہوا ہے، ان کے ذریعہ یہ معصوم لڑکیوں اور لڑکوں کو قابو کرتا ہے، اس نے ایک سوسائٹی بنائی ہوئی ہے، جن میں مرد اور عورتیں شامل ہیں اور اس سوسائٹی میں زنا ہوتا ہے۔“ (شیخ عبدالرحمن مصری کا عدالتی بیان، مندرجہ فیصلہ ہائی کورٹ لاہور مورخہ ۲۳ ستمبر ۱۹۳۸ء ص: ۲)

ماہرانہ شہادت:

”بڑا الزام یہ لگایا جاتا ہے کہ خلیفہ (مرزا محمود احمد صاحب خلیفہ قادیان) عیاش ہے، اس کے متعلق میں کہتا ہوں کہ میں ڈاکٹر ہوں اور میں جانتا ہوں کہ وہ لوگ جو چند دن بھی عیاشی میں پڑ جائیں وہ وہ ہو جاتے ہیں جنہیں انگریزی میں Wreck کہتے ہیں۔ ایسے انسان کا نہ دماغ کام کارہتا ہے نہ عقل درست رہتی ہے،



نہ حرکات صحیح طور پر کرتا ہے، غرض سب قوی اس کے برباد ہو جاتے ہیں اور سر سے لے کر پیر تک اس پر نظر ڈالنے سے فوراً معلوم ہو جاتا ہے کہ وہ عیاشی میں پڑ کر اپنے آپ کو برباد کر چکا ہے اس لئے کہتے ہیں ”الزنا یخرّب البنا“ کہ زنا انسان کو بنیاد سے نکال دیتا ہے۔“  
(ڈاکٹر محمد اسماعیل صاحب کا مضمون، مندرجہ ”الفضل“ ۱۰ جولائی ۱۹۳۷ء)

### شہادت کی تصدیق:

”ڈاکٹروں کا خیال تھا کہ چند ہفتوں میں دماغی حالت اپنے معمول پر آجائے گی، لیکن اب تک جو ترقی ہوئی ہے اس کی رفتار اتنی تیز نہیں..... آدمیوں کے سہارے سے دو ایک قدم چل سکتا ہوں مگر وہ بھی مشکل سے دماغ اور زبان کی کیفیت ایسی ہے کہ میں تھوڑی دیر کے لئے بھی خطبہ نہیں دے سکتا اور ڈاکٹروں نے دماغی کام سے قطعی طور پر منع کر دیا ہے۔“  
”مجھ پر فالج کا حملہ ہوا اور اب میں پاخانہ پیشاب کے لئے امداد کا محتاج ہوتا ہوں۔“

(میاں محمود احمد صاحب کا ارشاد، مندرجہ ”الفضل“ ۲۴ اپریل ۱۹۵۵ء)  
”۲۶ فروری کو مغرب کے قریب مجھ پر بائیں طرف فالج کا حملہ ہوا اور تھوڑے سے وقت کے لئے میں ہاتھ پاؤں چلانے سے معذور ہو گیا..... دماغ کا عمل معطل ہو گیا اور دماغ نے کام کرنا چھوڑ دیا..... میں اس وقت بالکل بے کار ہوں اور ایک منٹ نہیں سوچ سکتا۔“  
(الفضل ۲۶ اپریل ۱۹۵۵ء ص: ۳-۵)

میں نے اس دعویٰ پر کہ یہودیوں کی طرح قادیانی بھی ساری دنیا پر حکمرانی کے خواب دیکھ رہے ہیں، دوسرا حوالہ ”الفضل“ ۱۶ جنوری ۱۹۵۲ء سے نقل کیا تھا کہ:

”۵۲ء کو گزرنے نہ دیجئے جب تک احمدیت کا رعب،  
دشمن اس رنگ میں محسوس نہ کرے کہ اب احمدیت مٹائی نہیں جاسکتی  
اور وہ مجبور ہو کر احمدیت کو گود میں آگرے۔“

اس فقرہ کی اشتعال انگیزی محتاج وضاحت نہیں، اس میں تمام سلامیان  
پاکستان کو دشمن، قرار دے کر ان پر ”احمدیت کا رعب“ جمانے کا الٹی میٹم دیا گیا اور تمام  
مسلمانوں کو مجبور ہو کر ”احمدیت کی گود“ میں گرنے کا چیلنج بھی کیا گیا۔ قادیانیوں کا یہی  
اشتعال انگیز پروپیگنڈہ تھا جو ۱۹۵۲ء کی تحریک پر منتج ہوا، لیکن مرزا طاہر احمد صاحب کس  
سادگی سے لکھتے ہیں کہ یہ اعلان خدام الاحمدیہ کے مہتمم تبلیغ کی طرف سے تھا۔ (گویا اس کی  
کوئی ذمہ دارانہ حیثیت نہیں کہ اس پر مسلمان احتجاج کریں) اور یہ کہ:

”یہاں رعب سے مراد کوئی توپ و تفنگ اور شمشیر و سنان  
کا رعب نہیں بلکہ احمدی نوجوانوں کو محض تبلیغ کی تلقین کی گئی ہے اور یہ  
کوئی قابل اعتراض بات نہیں۔“

(ربوہ سے تل ایب تک پر مختصر تبصرہ ص: ۴۳)

یعنی قادیانی صاحبان تمام مسلمانوں کو مرتد کرنے کی اسکیمیں بنائیں، ان کے  
دشمن ہونے کا اعلان کریں، ان پر رعب جمانے کا چیلنج دیں اور انہیں مجبور ہو کر قادیانیت کی  
گود میں آگرنے کی دھمکی دیں یہ تو صاحبزادہ صاحب کے خیال میں کوئی قابل اعتراض  
بات نہیں، ہاں اگر کوئی مسلمان، قادیانیوں کی اس جارحیت پر احتجاج کرے تو صاحبزادہ  
صاحب کے نزدیک یہ اس کی بے عقلی ہے۔

صاحبزادہ صاحب کا یہ نکتہ بھی خاصا پر لطف ہے کہ:

”ہر مذہب و ملت اور ہر فرقہ اسلام (خواہ وہ کیسا ہی گمراہ  
ہو۔ ناقل) کا حق بلکہ فرض ہے کہ وہ جن نظریات کو برحق اور باعث  
نجات سمجھتا ہے ان کی تبلیغ کر کے دنیا کو ہدایت کی طرف بلائے، اس

موقف پر کوئی صحیح العقل انسان اعتراض نہیں کر سکتا۔“

(ربوہ سے تل ایب تک پر مختصر تبصرہ ص: ۴۳)

گویا کسی مذہب و ملت یا کسی نام نہاد فرقہ اسلام کا واقعتاً حق پر ہونا مرزا طاہر احمد صاحب کے نزدیک ضروری نہیں بلکہ اپنے آپ کو حق پر سمجھنا کافی ہے۔ پس دنیا کا جو شخص بھی اپنے نظریات کو برحق اور باعث نجات سمجھتا ہو وہ مرزا طاہر احمد کے مطابق دنیا کو ہدایت کی طرف ہی بلاتا ہے۔ اس لئے اس دعوت ہدایت پر اعتراض کرنا ان کے خیال میں کسی صحیح العقل آدمی کا کام نہیں۔ اور چونکہ راقم الحروف نے قادیانیوں کے اپنے دشمن پر رعب جمائے اور اسے مجبور کر کے احمدیت کی گود میں گرانے پر نکتہ چینی کی ہے اس لئے اسے مرزا طاہر احمد صاحب کے دربار معلیٰ سے ”صحیح العقل انسان“ کہلانے کا سر ٹیفکیٹ نہیں مل سکتا۔

جناب صاحبزادہ صاحب کے اس ارشاد پر مجھے حیرت نہیں ہوئی، کیونکہ میں جانتا ہوں کہ مختلف لوگوں کے ذہن میں ”صحیح العقل انسان“ کا معیار مختلف ہوتا ہے۔ مثلاً لاہوری پارٹی جو مرزا قادیانی کو چودہویں صدی کا مجدد مانتی ہے، اس کے مطابق قادیانی عقیدہ کی رو سے مرزا غلام احمد قادیانی بھی ایک ”صحیح العقل انسان“ ثابت نہیں ہوتے کیونکہ وہ بڑی شد و مد سے اپنی نبوت کا انکار بھی کرتے ہیں اور قادیانیوں کے بقول وہ نبی بھی ہیں۔ چنانچہ لاہوری پارٹی کے ایک معزز رکن مکرم چوہدری مسعود اختر ایڈووکیٹ، مرزا صاحب کے تین اشعار، جن میں ختم نبوت کا اظہار ہے، نقل کرنے کے بعد رقمطراز ہیں:

”مندرجہ بالا اشعار۔ حضرت مسیح موعود (مرزا صاحب)

کے عقیدہ دربارہ نبوت اور ان کے دعویٰ کی ایسی مکمل تصویر کھینچتے ہیں جو شروع سے آخر تک ان کا عقیدہ رہا۔ جناب مجدد زماں حضور نبی صلعم (صلی اللہ علیہ وسلم... ناقل) پر ہر نبوت اور ہر پیغمبری کے ختم ہونے کا عقیدہ رکھتے تھے اور اس عقیدہ پر ہمیشہ قائم رہے۔ زمانہ کی ستم ظریفی دیکھئے کہ جناب میاں محمود احمد صاحب نے محض اپنی گدی قائم کرنے کے لئے (گدی کا طعنہ کچھ پھبتا نہیں، باپ کی

گدی بیٹے ہی کو ملنی تھی، مثلاً مولوی محمد علی کے والد نے یہ گدی بنائی ہوتی تو اس پر میاں محمود احمد تھوڑی بیٹھتے، ہاں اولاد جسماً یا ذہناً نابالغ ہو تو کچھ عرصہ کے لئے کسی ”معمتد“ کا سربراہ بن کر گدی نشین ہو جانا اور بات ہے... ناقل) نبوت، نبوت کی ایسی رٹ لگائی کہ وہ الزام جو حضرت مجدد زمان پر ان کے مخالفین لگاتے تھے (اور اس کے لئے مرزا صاحب کے سیکڑوں الہامات اور قطعی عبارتیں پیش کرتے تھے... ناقل) اور جس الزام کو حضرت مسیح موعود (مرزا صاحب) بہتان عظیم اور دجل قرار دیتے تھے، وہ خود ان کے صاحبزادے صاحب نے ان پر لگا دیا (گویا صاحبزادے نے تسلیم کر لیا کہ مخالفین کا الزام غلط نہیں تھا، بلکہ مرزا صاحب کی تاویلیں غلط تھیں یا غلط فہمی پر مبنی تھیں... ناقل) اور ایک کثیر تعداد لوگوں کی اس گدی نشین کی حاشیہ بردار بن کر ان پر دعویٰ نبوت کا الزام دینے لگی (اس گدی نشین کے حاشیہ نشینوں کی بیشتر تعداد ان لوگوں کی تھی جو اس کے باپ کے حاشیہ نشین رہ چکے تھے اور اس کے طلسمی دعوؤں کو اپنے کانوں سے سن چکے تھے... ناقل)۔ کیونکہ حضرت مجدد زمان کی تحریروں سے ثابت ہے کہ آپ کی طرف کسی قسم کی نبوت منسوب کرنا اتہام و الزام ہے اور دجل عظیم ہے (مرزا صاحب کی طرف نبوت سب سے پہلے ان کے الہامات میں منسوب کی گئی، اس لئے اس اتہام و الزام اور دجل عظیم کا پہلا مرتکب مرزا صاحب کا الہام کنندہ ہے۔ مرزا صاحب نے اس کی تقلید میں یہ اتہام و الزام اور دجل عظیم اپنی تقریر و تحریر میں بیان کرنا شروع کر دیا اور دوسرے لوگوں نے مرزا صاحب سے سن کر یہ بات پلے باندھ لی، موافقوں نے بھی اور مخالفوں نے بھی۔ پس اس کی پہلی ذمہ داری تو مرزا صاحب کے ملہم صاحب پر عائد ہوتی

ہے۔ دوسرے نمبر پر خود مرزا صاحب اس کے ذمہ دار ہیں، رہے مخالفین! سو وہ بے چارے اس اتہام، الزام اور دجل عظیم کو محض مرزا صاحب کے حوالے سے نقل کرتے ہیں اور ”نقل کفر کفر نباشد“... (ناقل) حضور امام زمان کا دعویٰ محض ملہم من اللہ، محدث، مجدد اور مسیح موعود ہونے کا تھا اور ان میں سے کوئی دعویٰ بھی نبوت کا دعویٰ قرار نہیں دیا جاسکتا۔ (مگر مرزا صاحب تو یہی قرار دیتے تھے، شاید وہ سمجھے نہ ہوں گے... ناقل) حضور کے مندرجہ بالا اشعار سے ہی ظاہر ہے کہ جناب ہر قسم کی نبوت اور ہر قسم کی پیغمبری کو حضور نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم پر ختم ہونے کا عقیدہ رکھتے تھے (مگر ایک قسم کی نبوت کو جاری بھی کہتے تھے... ناقل) لہذا ایسا عقیدہ رکھنے کے بعد کسی قسم کی نبوت کا دعویٰ چہ معنی دارد؟ کوئی صحیح العقل انسان بیک وقت یہ نہیں کر سکتا کہ ایک طرف تو ہر قسم کی نبوت اور ہر قسم کی پیغمبری کو حضور رسول کریم صلعم (صلی اللہ علیہ وسلم... ناقل) پر ختم قرار دے اور دوسری طرف کسی قسم کی نبوت کا دعویٰ دے (اور جناب مرزا صاحب نے بیک وقت یہ دونوں کام کر دکھائے، جو ریکارڈ پر موجود ہیں۔ لہذا اب یہ عقدہ قادیانیوں کے لئے ہمیشہ لاینحل رہے گا کہ کیا ان کا مسیح موعود ”صحیح العقل انسان“ تھا؟... ناقل)۔“ (قادیانیوں کی لاہوری جماعت اخبار ”پیغام صلح“ جلد: ۶۴ نمبر: ۲۱، ۲۰ ”مسیح موعود نمبر“ ۱۹۱۸/۵۲ء مئی ۱۹۷۷ء)

پس جس طرح لاہوری معیار سے از روئے عقیدہ قادیانی ”صحیح العقل انسان“ کی تعریف مرزا صاحب پر صادق نہیں آسکتی، اسی طرح ممکن ہے کہ صاحبزادہ طاہر احمد صاحب نے بھی ”صحیح العقل انسان“ کی کوئی نئی تعریف ایجاد فرمائی ہو، مثلاً یہ کہ ایک ”صحیح العقل انسان“ میں ان تمام اوصاف و اخلاق کا پایا جانا ضروری ہے جو ان کے جد بزرگوار



مرزا غلام احمد صاحب میں پائے جاتے تھے، یعنی وہ مراق، ہسٹریا، دماغی بیہوشی، دوران سر، درد سر، دق، سل، ذیابیطس، تشنج، ضعف اعصاب، بدخوابی کے عوارض میں مبتلا ہو، روزانہ سو سو بار پیشاب کا معجزہ اسے حاصل ہو، سوء ہضم اور کثرت اسہال اس کے دائمی معمولات میں شامل ہوں، حافظہ بہت خراب ہو، دائیں بائیں کی تمیز سے قاصر ہو، سیدھے کوالٹا اور اٹلے کو سیدھا پہنا کرے، اوپر کا بٹن نیچے کے کاج میں لگائے پھرے، جرابوں کی ایڑیاں پاؤں کے اوپر کی طرف کرے، گڑ کھانے کا شوقین اور سلس البول کا مریض ہو اور کفایت شعاری کے لئے گڑ کے ڈھیلے اور استنجا کے ڈھیلے ایک ہی جیب میں رکھا کرے، وغیرہ وغیرہ۔

اور شاید ”صحیح العقل انسان“ کے لئے یہ بھی لازم ہے کہ نامحرم عورتوں سے بدن دہلاتا ہو، عورتوں کے پہرے میں شب بیداری کرتا ہو، ناکتدائیں رات کی تنہائیوں میں اس کی ”خدمت“ کرتی ہوں، نیم دیوانی عورتیں بے تکلف و بے حجاب اس کے سامنے غسل کرتی ہوں، وہ خواب میں نامحرموں سے معانقہ پر کلمہ شکر بجالاتا ہو، وغیرہ وغیرہ۔

اور شاید صحیح العقل ہونے کی ایک شرط یہ بھی ہو کہ آدمی متضاد اور مناقض دعوے کرے۔ کبھی عیسیٰ ہو کبھی مریم، کبھی مرد ہو کبھی عورت، کبھی انسان ہو کبھی کرم خاکی، کبھی بندہ ہو، کبھی خدا، کبھی احمد ہو، کبھی غلام احمد، کبھی قرآن کھول کر بتائے کہ فلاں نبی زندہ ہے دوبارہ دنیا میں آئے گا اور کبھی الہام سنائے کہ وہ مر گیا ہے، اب نہیں آئے گا۔ وغیرہ وغیرہ۔

اور ممکن ہے کہ ”صحیح العقل انسان“ کی تعریف میں یہ بھی داخل ہو کہ وہ محمد رسول ہونے کا دعویٰ کرے، اپنی روحانیت کو آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی روحانیت سے اکمل بتائے، قرآنی معجزات کو مکروہ اور قابل نفرت کرشمے ٹھہرائے، انبیاء و اولیاء پر سب دشتم کرے، تمام مجددین امت کو فوج اعوج اور گمراہ قرار دے، صحابہ کرام رضی اللہ عنہم کو احمق اور نادان کہے، اپنے نہ ماننے والوں کو خنزیر، کتے، شیطان، ولد الحرام، ذریۃ البغایا اور نطفۃ السفہاء ایسے مہذب الفاظ سے یاد کرے۔ تمام امت مسلمہ کو کافر، یہودی، مشرک اور جہنمی کا خطاب دے وغیرہ وغیرہ۔

الغرض اگر کسی شخص کے صحیح العقل ہونے کے لئے ان اوصاف کا کُلّا یا بعضا پایا

جانا مرزا طاہر احمد صاحب کے نزدیک ضروری ہے، جو قدرت نے بیک وقت ان کے دادا جناب مرزا غلام احمد صاحب میں جمع کر دیئے تھے، تو مجھے اعتراف ہے کہ میں ان کے اس معیار پر پورا اترنے سے قاصر ہوں، (الحمد لله الذي عافاني مما ابتلاه به)۔

تاہم صاحبزادہ صاحب کا یہ خود ساختہ اصول کہ ”کسی فرقہ کی ملحدانہ تعلیم و تبلیغ پر اعتراض کرنا کسی صحیح العقل انسان کا کام نہیں ہو سکتا“، محل بحث ہے۔ کون نہیں جانتا کہ مرزا غلام احمد قادیانی کے پیشرو، مسلمانہ یمامہ کی تبلیغ پر اعتراض کرتے ہوئے آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے اسے ”الکذاب“ کا لقب دیا تھا، جو آج تک مرزا قادیانی کی طرح اس کے نام کا جز ہے۔ پھر کون نہیں جانتا کہ اسود غنسی کے نظریات کی تبلیغ پر قدغن لگانے کے لئے صحابہ کرام رضوان اللہ تعالیٰ علیہم اجمعین کو آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا تھا۔ پھر کون نہیں جانتا کہ آپ صلی اللہ علیہ وسلم نے مشرکین کو جزیرہ عرب سے نکال دینے کا حکم فرمایا تھا۔ مرزا طاہر احمد صاحب کے نزدیک آپ صلی اللہ علیہ وسلم کی حیثیت صحیح العقل انسان کی تھی یا نہیں؟ پھر کون نہیں جانتا کہ سیدنا ابوبکر صدیق رضی اللہ عنہ نے مدعی نبوت مسلمانہ کذاب کے نظریات کا صفایا کرنے کے لئے اکابر صحابہؓ کا لشکر بھیجا اور انہوں نے ”حذیقۃ الموت“ میں اس کے بیس ہزار ساتھیوں سمیت اسے واصل جہنم کیا اور اس معرکہ میں سات سو اشراف صحابہؓ شہید ہوئے۔ کیا یہ تمام اکابر صحابہؓ مرزا طاہر احمد صاحب کے نزدیک عقل و خرد سے کورے تھے؟

اور پھر کون نہیں جانتا کہ سیدنا صدیق اکبرؓ نے مانعین زکوٰۃ کو اپنے نظریات پھیلانے اور ان کی تبلیغ کرنے کا حق نہیں دیا، بلکہ ان کے خلاف فوج کشی کی اور جزیرہ عرب کو فتنہ ارتداد سے پاک کیا۔ کیا ان کا یہ اقدام صحت عقل کے منافی تھا؟

اور پھر کون نہیں جانتا کہ سیدنا فاروق اعظمؓ نے یہود کی ریشہ دوانیوں کا قلع قمع کرنے کے لئے انہیں جلا وطنی کا حکم دیا۔ کیا ان کا یہ عمل غیر عاقلانہ تھا؟

اور پھر کون نہیں جانتا کہ علمائے ربانین نے ہر دور میں گمراہ فرقوں کے نظریات پر اعتراض کیا اور اسلامی معاشرہ میں ان کے پھیلنے کو برداشت نہیں کیا۔ کیا مرزا طاہر احمد

صاحب کے نزدیک یہ سب عقل و خرد سے محروم تھے؟

اگر مرزا طاہر احمد صاحب اپنے اس نرالی اصول کے ذریعہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم سے لے کر تمام اکابر اُمت پر ”صحیح العقل انسان“ نہ ہونے کا فتویٰ صادر فرما سکتے ہیں تو راقم الحروف بھی ان کے اس فتویٰ سے محروم نہیں رہنا چاہتا۔

ان شواہد و نظائر سے معلوم ہوا ہوگا کہ مرزا طاہر احمد صاحب کا یہ اصول غلط اور قطعاً غلط ہے کہ ہر مذہب و فرقہ کو خواہ وہ کتنا ہی باطل پرست ہو، اپنے نظریات پھیلانے کا حق ہے، ان کے اس مخترع اصول سے پوری اسلامی تاریخ کی نفی ہو جاتی ہے۔ سوال پیدا ہوتا ہے کہ صاحبزادہ صاحب کو ایسے باطل اصولوں کا سہارا لینے کی ضرورت کیوں پیش آئی؟ اس کی وجہ یہ ہے کہ مرزا طاہر احمد کے باپ دادا نے جو دین و مذہب ایجاد کیا ہے، وہ کسی ٹھیکہ اسلامی معاشرے میں پنپ نہیں سکتا۔ اس کی نشو و نما یا تو خالص غیر اسلامی معاشرہ میں ہو سکتی ہے یا کم از کم ایسے معاشرہ میں جس میں گمراہی و بددینی کی گھٹائیں چھائی ہوئی ہوں اور جو اپنے تاریک ماحول کی بدولت حق و باطل کی تمیز سے معذور ہو۔ یہی وجہ ہے کہ قادیانی لیڈروں نے اپنی بقا و حفاظت کے لئے اسلامی حکومت کے مقابلہ میں ہمیشہ کفر کے ظلم حمایت کو ترجیح دی ہے، ملاحظہ ہو:

”سو اس نے مجھے بھیجا اور میں اس کا شکر کرتا ہوں کہ اس نے مجھے ایک ایسی گورنمنٹ (برطانیہ) کے سایہ رحمت کے نیچے جگہ دی جس کے زیر سایہ میں بڑی آزادی سے اپنا کام نصیحت اور وعظ کا ادا کر رہا ہوں۔ اگرچہ اس محسن گورنمنٹ کا ہر ایک پر رعایا میں سے شکر واجب ہے مگر میں خیال کرتا ہوں کہ مجھ پر سب سے زیادہ واجب ہے کیونکہ یہ میرے اعلیٰ مقاصد جو جناب قیصرہ ہند کی حکومت کے سایہ کے نیچے انجام پذیر ہو رہے ہیں ہر گز ممکن نہ تھا کہ وہ کسی اور گورنمنٹ کے زیر سایہ انجام پذیر ہو سکتے، اگرچہ وہ کوئی اسلامی

گورنمنٹ ہی ہوتی۔“

(تحفہ قیصریہ ص: ۳۱، ۳۲، روحانی خزائن ج: ۱۲ ص: ۲۸۳، ۲۸۴)  
 ”میں اپنے اس کام کو نہ مکہ میں اچھی طرح چلا سکتا ہوں،  
 نہ مدینہ میں، نہ روم میں، نہ شام میں، نہ ایران میں، نہ کابل میں، مگر  
 اس گورنمنٹ میں جس کے اقبال کے لئے دعا کرتا ہوں، لہذا وہ  
 اس الہام میں اشارہ فرماتا ہے کہ اس گورنمنٹ کے اقبال اور  
 شوکت میں تیرے وجود اور تیری دعا کا اثر ہے۔ اور اس کی فتوحات  
 تیرے سبب سے ہیں۔ کیونکہ جدھر تیرا منہ ادھر خدا کا منہ۔“ (مرزا  
 غلام احمد قادیانی کا اشتہار... ۲۲ مارچ ۱۸۹۷ء مندرجہ تبلیغ رسالت ج: ۶  
 ص: ۶۹ طبع قادیان بار اول)

”قدیم سے میں نے اپنی بہت سی کتابوں میں بار بار یہی  
 شائع کیا ہے کہ اس گورنمنٹ کے ہمارے سر پر احسان ہیں، اس کے  
 زیر سایہ ہم آزادی سے اپنی خدمت تبلیغ پوری کرتے ہیں اور آپ  
 جانتے ہیں کہ ظاہری اسباب کی رو سے آپ کے رہنے کے لئے اور  
 بھی ملک ہیں اور اگر آپ اس ملک کو چھوڑ کر مکہ میں یا مدینہ میں یا  
 قسطنطنیہ میں چلے جائیں تو سب ممالک آپ کے مذہب اور مشرب  
 کے موافق ہیں، لیکن اگر میں جاؤں تو میں دیکھتا ہوں کہ وہ سب لوگ  
 میرے لئے بطور درندوں کے ہیں۔ الا ماشاء اللہ، اس صورت میں  
 ظاہر ہے کہ یہ خدا تعالیٰ کا میرے پر احسان ہے کہ ایسی گورنمنٹ کے  
 زیر سایہ مجھے مبعوث فرمایا ہے جس کا مسلک دل آزاری نہیں اور اپنی  
 رعایا کو امن دیتی ہے۔“

(براہین احمدیہ ج: ۵، ضمیمہ ص: ۱۲، روحانی خزائن ج: ۲۱ ص: ۲۹۳)

”یہ میرا دعویٰ ہے کہ تمام دنیا میں گورنمنٹ برطانیہ کی

طرح کوئی دوسری ایسی گورنمنٹ نہیں جس نے زمین پر ایسا امن قائم کیا ہو، میں سچ سچ کہتا ہوں کہ جو کچھ ہم پوری آزادی سے اس گورنمنٹ کے تحت میں اشاعت حق کر سکتے ہیں یہ خدمت ہم مکہ معظمہ یا مدینہ منورہ میں بیٹھ کر بھی ہرگز بجا نہیں لا سکتے۔“

(ازالہ اوہام حاشیہ ص: ۵۴، روحانی خزائن ج: ۳ ص: ۱۳۰)

”گورنمنٹ برطانیہ کے ہم پر بڑے احسان ہیں اور ہم بڑے آرام اور اطمینان سے زندگی بسر کرتے اور اپنے مقاصد کو پورا کرتے ہیں... اور اگر دوسرے ممالک میں تبلیغ کے لئے جائیں تو وہاں بھی برٹش گورنمنٹ ہماری مدد کرتی ہے۔“

(برکات خلافت ص: ۶۵ از مرزا محمود احمد)

گویا قادیانی لیڈر یہ چاہتے ہیں کہ وہ جیسے چاہیں اسلام کے نام پر الحاد و زندق کے طومار تیار کریں، کوئی ان کو روک ٹوک کرنے والا نہ ہو۔ اکبر الہ آبادی مرحوم کے بقول:

گورنمنٹ کی یارو خیر مناؤ

انا الحق کہو اور سولی نہ پاؤ

ظاہر ہے کہ یہ نعمت کسی بے دین ملک میں ہی میسر آ سکتی ہے، کوئی اسلامی حکومت اور اسلامی معاشرہ اس انار کی کوکب برداشت کر سکتا ہے؟

قادیانیوں کی حکومت طلبی کے سلسلہ میں میں نے تیسرا حوالہ ”الفضل“

۱۴ فروری ۱۹۲۲ء سے پیش کیا تھا، صاحبزادہ مرزا طاہر احمد صاحب اس کے بارے میں تحریر فرماتے ہیں:

”اس اقتباس کے متعلق ہم صرف اتنا ہی کہنا کافی سمجھتے

ہیں کہ جس الفضل کا مولانا نے حوالہ دیا ہے وہ دنیا میں کبھی شائع ہی نہیں ہوا، خدا جانے مولانا نے یہ حوالہ کیسے ایجاد فرمالیا۔“

(ربوہ سے تل ایب تک پر مختصر تبصرہ ص: ۴۳، ۴۴)



صاحبزادہ صاحب کو بین السطور اس امر کا اعتراف ہے کہ ”الفضل“ کے جس مضمون کا حوالہ دیا گیا ہے وہ اقتباس تو موجود ہے، البتہ جس ”الفضل“ کا حوالہ دیا گیا ہے اس میں نہیں بلکہ کسی دوسرے ”الفضل“ میں ہے، اور حوالہ اسی ”الفضل“ کا دینا چاہئے تھا، نہ کہ اس ”الفضل“ کا جو دنیا میں کبھی شائع ہی نہیں ہوا۔

میں اس تصحیح پر صاحبزادہ صاحب کا شکریہ ادا کرتا ہوں، واقعی مجھ سے سہو ہوا ہے مجھے فروری کے بجائے مارچ کے ”الفضل“ کا حوالہ دینا چاہئے تھا۔ رہا مرزا طاہر احمد صاحب کا یہ سوال کہ ”خدا جانے مولانا نے یہ حوالہ کیسے ایجاد فرمالیا ہے۔“ جواباً گزارش ہے کہ مرزا غلام احمد صاحب نے حدیث: ”هذا خليفة الله المهدى“ کے لئے بخاری شریف کا حوالہ کیسے ایجاد فرمالیا تھا؟ مرزا صاحب لکھتے ہیں:

”اگر حدیث کے بیان پر اعتبار ہے تو پہلے ان حدیثوں پر عمل کرنا چاہئے جو صحت اور وثوق میں اس حدیث پر کئی درجہ بڑھی ہوئی ہیں۔ مثلاً صحیح بخاری کی وہ حدیثیں جن میں آخری زمانہ میں بعض خلیفوں کی نسبت خبر دی گئی ہے، خاص کر وہ خلیفہ جس کی نسبت بخاری میں لکھا ہے کہ: آسمان سے اس کی نسبت آواز آئے گی کہ ”هذا خليفة الله المهدى“ اب سوچو کہ یہ حدیث کس پایہ اور مرتبہ کی ہے جو ایسی کتاب میں درج ہے جو اصح الکتاب بعد کتاب اللہ ہے۔“ (شہادۃ القرآن ص: ۳۱، روحانی خزائن ج: ۶ ص: ۳۳۷)

جناب مرزا طاہر احمد صاحب کو راقم الحروف کا ممنون ہونا چاہئے کہ اس نے سہواً ”الفضل“ کے ایک مہینہ کی جگہ دوسرا مہینہ لکھ دیا۔ صحیح بخاری شریف کا حوالہ نہیں دے دیا، ورنہ شاید انہیں راقم الحروف پر بھی ”مسح موعود“ ہونے کا شبہ ہوتا۔ بہر حال جناب صاحبزادہ صاحب کا تصحیح شدہ حوالہ درج ذیل ہے:

”احمدیوں کے پاس ایک چھوٹے سے چھوٹا ٹکڑا بھی نہیں

جہاں احمدی ہی احمدی ہوں، کم از کم ایک علاقہ کو مرکز بنا لو اور جب

تک ایسا مرکز نہ ہو جس میں کوئی غیر نہ ہو اس وقت تک تم مطلب کے مطابق امور جاری نہیں کر سکتے اور نہ اخلاق کی تعلیم ہو سکتی ہے، نہ پورے طور پر تربیت کی جاسکتی ہے۔ اس لئے نبی کریم صلی اللہ علیہ وسلم نے حکم دیا تھا کہ مکہ اور حجاز سے مشرکوں کو نکال دو، ایسا علاقہ اس وقت تک ہمیں نصیب نہیں جو خواہ چھوٹے سے چھوٹا ہو مگر اس میں غیر نہ ہوں۔ جب تک یہ نہ ہو اس وقت تک ہمارا کام بہت مشکل ہے، اگر یہ نہ ہو تو کام اور مشکل ہو جائے گا (مطلب یہ کہ کسی نہ کسی جگہ خالص قادیانی حکومت ہونی چاہئے، خواہ ایک قصبہ میں ہی کیوں نہ ہو... ناقل)۔ (خطبہ میاں محمود احمد صاحب، مندرجہ اخبار الفضل ج: ۹ نمبر: ۹۷، ۱۲ مارچ ۱۹۲۲ء بحوالہ قادیانی مذہب فصل: ۱۶ نمبر: ۵۰ ص: ۹۰۰ طبع پنجم)

آج جناب مرزا طاہر احمد صاحب ”قادیانی حکومت“ کا نام سن کر کانوں پر ہاتھ رکھتے ہیں اور اسے دشمن کی اڑائی ہوئی ہوئی باور کراتے ہیں، حالانکہ یہ سالہا سال تک ان کے والد محترم جناب مرزا بشیر الدین صاحب کے خطبوں کا موضوع رہا ہے اور وہ اسی کو اصل قادیانی ہدف ظاہر کرتے رہے ہیں۔ ایک صدی کی کروٹ کے بعد آج اگر ان کے یہ خیالات ”مجدوب کی بڑ“ تصور کئے جائیں تو تعجب نہیں۔ مگر وہ اس کو مسیح موعود کی بعثت کی اصل غرض قرار دیتے رہے ہیں۔ ان کی بے شمار تحریروں اور تقریروں سے چند اقتباسات درج ذیل کئے جاتے ہیں:

قادیانی غرض اور مقصد:

”ہمیں خدا تعالیٰ نے اس غرض کے لئے دنیا میں کھڑا کیا ہے کہ ہم بادشاہتوں کو الٹ دیں حکومتوں کو بدل دیں اور سلطنتوں میں انقلاب پیدا کر دیں، اور پھر ان بادشاہتوں، حکومتوں اور

سلطنتوں کی جگہ نئی حکومتیں اور نئی سلطنتیں قائم کریں، اور دنیوی حکومتوں کو اپنے ماتحت لا کر انہیں مجبور کریں کہ وہ اس تعلیم کو جاری کریں جو اسلام (قادیانی اسلام... ناقل) دنیا میں قائم کرنا چاہتا ہے۔“ (ارشاد: میاں محمود احمد صاحب، مندرجہ اخبار الفضل ج: ۳۴ نمبر: ۲۴۹ مورخہ ۲۴/اکتوبر ۱۹۴۶ء)

### دنیا کو کھا جانا:

”ہماری جماعت ظاہری حالت کے لحاظ سے کمزور ترین نہیں بلکہ ایک ہی کمزور جماعت ہے دنیا میں کوئی ایک بھی منظم امت جو کام کر رہی ہو ہم سے کمزور نہیں، مگر باوجود اس کے کسی کے ارادے ایسے بلند اور ایسے وسیع نہیں ہیں، اور ان میں سے کوئی بھی یہ امید نہیں رکھتی کہ وہ دنیا کے موجودہ نظام کو توڑ کر ایک نیا نظام جاری کرے گی۔ سوائے ہماری (احمدی) جماعت کے... اس وقت ایک ہی جماعت ایسی ہے جو کمزوری کے لحاظ سے دنیا میں سب سے گری ہوئی ہے، مگر ارادہ کے لحاظ سے سب سے بڑھی ہوئی ہے، پھر وہ منہ سے دعوے ہی نہیں کرتی اس کی بنیاد ہی اس پر ہے کہ دنیا کو کھا جانا ہے، کیونکہ اس کی بنیاد یہ ہے کہ ہم کو خدا تعالیٰ نے حضرت مسیح موعود (مرزا غلام احمد قادیانی) کے متعلق فرمایا ہے: دنیا میں ایک نذیر آیا پر دنیا نے اس کو قبول نہ کیا، لیکن خدا اس کو قبول کرے گا اور بڑے زور آور حملوں سے اس کی سچائی دنیا پر ظاہر کرے گا (چنانچہ آخری بار ۷ ستمبر ۱۹۷۴ء کو ساری دنیا پر اس کی ”سچائی“ ظاہر ہو چکی ہے... ناقل)۔“ (خطبہ میاں محمود احمد خلیفہ قادیان، مندرجہ الفضل ج: ۱۵ نمبر: ۸۲ مورخہ ۱۷/اپریل ۱۹۴۸ء)

## دنیا میں تہلکہ:

”خوجہ قوم بے شک بہت مالدار قوم ہے، مگر یہ امنگ کبھی ان کے دل میں پیدا نہیں ہو سکتی کہ ساری دنیا پر چھا جائیں۔ بے شک میمن اور بورے بہت مالدار ہیں مگر ان کے دماغ کے کسی گوشے میں بھی کبھی یہ بات نہیں آ سکتی کہ ہم دنیا کے بادشاہ ہو جائیں گے اور نظام عالم میں تبدیلی پیدا کر دیں گے، ان کی دولتیں اتنی زیادہ ہیں کہ ان میں سے کئی ایسے ہیں جو اس زمانہ میں بھی جب کہ مال و دولت کی کثرت ہے اس قدر مالدار ہیں کہ انفرادی طور پر مدینہ کو خریدنے کی طاقت رکھتے ہیں (مدینہ کو خریدنے کے بجائے قادیان کو خریدنے کی بات کرنی تھی... ناقل) مگر ان کے دماغ کے کسی گوشے میں بھی کبھی نہ یہ خیال آیا کہ ہم نے دنیا کو فتح کرنا ہے اور دنیا کے نظام کو درہم برہم کر کے ایک نیا نظام جاری کرنا ہے۔ مگر اس کے مقابلہ میں ایک اور قوم ہے جو اپنے مال، اپنی دولت اپنی عزت اور اپنی تعداد اور اپنے اثر و رسوخ کے لحاظ سے دنیا کی شاید تمام منظم جماعتوں سے کمزور اور تھوڑی ہے، مگر باوجود اس کے اس کے دل میں یہ امنگ ہے اور اس کے ارادے اس قدر پختہ اور بلند ہیں کہ اس کا دعویٰ ہے کہ وہ تمام کمزوریوں کے باوجود اور سامان کی کمی کے باوجود ساری دنیا میں تہلکہ مچا دے گی۔ اور موجودہ نظام کو توڑ کر اور موجودہ دستور کو تہ و بالا کر کے نیا نظام اور نیا کام جاری کرے گی، اور وہ جماعت احمدیہ ہے (جس کی سب سے بڑی خصوصیت یہ ہے کہ اس کے لیڈر ہمیشہ ہوائی قلعے تعمیر کرتے ہیں، اور اپنے خوش فہم مریدوں کو سبز باغ دکھایا کرتے ہیں... ناقل)۔“

## تجارت اور حکومت پر قبضہ:

”جب احمدیت ترقی کرے گی، ہماری جماعت کے لوگوں کی آمدنیاں زیادہ ہوں گی، ہمارے ہاتھ میں حکومت آجائے گی، احمدی امراء اور بادشاہ ہوں گے، تو اس وقت ۱/۱۰ حصہ کی وصیت کافی نہ ہوگی۔“

”ایک زمانہ ایسا آنے والا ہے جب ۱/۱۰ حصہ تو کنچنیاں بھی داخل کرنے کے لئے تیار ہو جائیں گے۔ اس وقت حکومت احمدیت کی ہوگی۔ آمدنی زیادہ ہوگی، مال و اموال کی کثرت ہوگی، اور ۱/۱۰ حصہ داخل کرنا کوئی بات ہی نہ ہوگی، مگر اب تھوڑی جماعت ہے۔ جس نے بہت بوجھ اٹھانا ہے۔ احمدیہ کی وجہ سے ہمارے آدمیوں کی ملازمتیں رکی ہوئی ہیں۔ ترقیاں رکی ہوئی ہیں، تجارتیں رکی ہوئی ہیں، ان باتوں کو مد نظر رکھتے ہوئے ۶۰ یا ۶۵ فیصدی جو چندہ دیتے ہیں وہی بڑا سمجھا جاتا ہے، لیکن جب تجارت اور حکومت ہمارے قبضہ میں ہوگی اس وقت اس قسم کی تکلیفیں نہ ہوں گی۔“

(خطبہ میاں محمود احمد صاحب خلیفہ قادیان، مندرجہ الفضل ج: ۱۳ نمبر: ۱۱)

ص: ۸ مورخہ ۸ جون ۱۹۲۶ء)

## اورنگ زیب بادشاہ:

”ہندو ہیرالد کا نامہ نگار سب کو مسلمان بنانے کا ذکر کرتا ہوا لکھتا ہے: ”بھلا جس کام کو اورنگ زیب جیسا بادشاہ نہ کر سکا اسے تم کس طرح کر لو گے۔“ بندہ خدا! اورنگ زیب کی ہستی ہی کیا تھی میرے سامنے؟ اورنگ زیب بادشاہ تھا اور دنیا کا بادشاہ تھا، وہ دنیا کی بہتری کے لئے جو کچھ کر سکتا تھا وہ اس نے کیا، میں ایک مصلح کا



خلیفہ ہوں۔ اگر آج اورنگ زیب زندہ ہوتا اور خدا تعالیٰ حق کی شناخت کے لئے اس کی آنکھیں کھول دیتا تو وہ بھی میرے ماتحتوں میں اسی طرح کام کرتا جس طرح اور کر رہے ہیں (غالب یہ ہے کہ مجاہد فی سبیل اللہ اورنگ زیب رحمہ اللہ، مسلمان پنجاب کی ذریت سے وہی سلوک کرتے جو حضرت صدیق اکبر رضی اللہ عنہ نے مسلمان کذاب اور اس کی ذریت سے کیا تھا... ناقل)۔“ (خطبہ میاں محمود احمد صاحب، مندرجہ الفضل ج: ۱۴ نمبر: ۹۵ ص: ۷ مورخہ ۳ جون ۱۹۲۷ء)

بے ایمانی اور بے وقوفی:

”تجربہ ہے کہ (قادیانی) جماعت کے لوگوں کو یہ خیال نہیں آتا کہ چونکہ اللہ تعالیٰ نے ہمیں چنا ہے اس لئے ہم ضرور کامیاب ہوں گے، ہم سے کتنے ہیں جو مایوس ہیں، کتنے ہیں جن کو خیال ہے کہ ہمارے اندر کچھ قابلیت نہیں۔ مگر اس سے زیادہ بے ادبی اور گستاخی کیا ہو سکتی ہے کہ خدا کہتا ہے کہ تم دنیا کو فتح کرو گے، لیکن تم کہتے ہو نہیں، ہم نہیں کر سکتے۔ غور تو کرو کب خدا نے کسی قوم کو اس لئے چنا ہے کہ وہ دنیا کو فتح کرے گی اور اس نے نئی زمین اور نیا آسمان نہ پیدا کر دیا۔ کیا اب خدا تعالیٰ (نعوذ باللہ) بوڑھا ہو گیا ہے کہ اس کی قوت انتخاب کمزور ہو گئی ہے۔ اس نے حضرت نوحؑ، حضرت ابراہیمؑ، حضرت کرشن، حضرت رام چندر، حضرت بدھ، حضرت موسیٰؑ، حضرت عیسیٰؑ اور حضرت محمد صلی اللہ علیہ وسلم کے ذریعہ قوموں کو چنا اور وہ کامیاب ہوئیں پھر کیا اب خدا کی عقل کمزور ہو گئی ہے کہ اس نے ہم کو چنا اور ہم ناکام رہ جائیں گے۔ یہ انتہا درجہ کی بے ایمانی اور بے وقوفی ہے (جس میں ایک صدی سے قادیانی

جماعت مبتلا ہے... ناقل)۔“ (خطبہ میاں محمود احمد صاحب، مندرجہ اخبار الفضل ج: ۱۸ نمبر: ۷۳ ص: ۷ مورخہ ۱۸ دسمبر ۱۹۳۰ء)

### زندگی اور موت:

”غرض ہر قوم یا ہر طبقہ اور ہر ملک میں گھبراہٹ اور بے چینی پائی جاتی ہے۔ اگر کوئی ایسی جماعت ہے جو اپنے مذہب پر پکی اور امید و یقین سے پر ہے تو وہ احمدی جماعت ہے وہ لوگ جو واقع میں حضرت مسیح موعود (مرزا غلام احمد قادیانی) پر ایمان لاتے ہیں سمجھتے اور یقین رکھتے ہیں کہ سب کچلے جائیں گے صرف ہم باقی رہ جائیں گے۔ ہر ایک کو موت نظر آرہی ہے اور صرف ہم کو زندگی دکھائی دے رہی ہے کیونکہ ہمارے متعلق ہی کہا گیا ہے ”آسمان سے کئی تخت اترے پر تیرا تخت سب سے اوپر بچھایا گیا“ پس دوسری بادشاہتوں کو خطرہ ہے کہ وہ ٹوٹ جائیں گی، مگر ہمیں امید ہے کہ بادشاہت دی جائے گی، حکمران ڈر رہے ہیں کہ ان کی حکومت جاتی رہے گی مگر ہم خوش ہیں کہ ہمارے ہاتھ میں دی جائے گی۔“ (خطبہ میاں محمود احمد خلیفہ قادیان، مندرجہ الفضل ج: ۱۵ نمبر: ۷۸ ۱۳ اپریل ۱۹۲۸ء)

### قادیانی رحم:

”فرمایا (مرزا محمود احمد صاحب خلیفہ قادیان نے کہ) مجھے تو ان غیر احمدی مولویوں پر رحم آیا کرتا ہے جب میں یہ خیال کیا کرتا ہوں کہ ان کی تو اب ذلت و رسوائی کے سامان ہو رہے ہیں اور خدا نے ہمیں قوت اور سطوت عطا کرنی ہے۔ یہ لوگ زیادہ سے زیادہ ایک سو سال تک اور بمشکل اس رنگ میں گزارہ کر سکیں گے، پھر جب خدا تعالیٰ احمدیوں کو حکومت دے گا، احمدی بادشاہ تختوں پر بیٹھے ہوں

گے، الفضل کے پرانے فائل نکال کر پیش ہوں گے تو اس وقت ان بے چاروں کا کیا حال ہوگا؟ (بحمد اللہ ابھی تک تو ”الفضل کے پرانے فائل“ خود قادیانیوں کے لئے درد سر بنے ہوئے ہیں... ناقل) مجھے خطرہ ہے کہ اس وقت کے احمدی ان کے مظالم کو پڑھ پڑھ کر اور ان کے قتل اور سنگ ساری کے جرائم کے حالات کو دیکھ کر ان سے کیا سلوک کریں گے؟ (غالباً جو قادیان اور ربوہ میں مخالفین سے ہوتا رہا ہے... ناقل) اس وجہ سے مجھے ان پر رحم آتا ہے اور پھر اپنے اوپر بھی آتا ہے کہ اگر خدا نخواستہ وہ لوگ کوئی ایسی حرکت کر بیٹھیں گے تو پھر وہ بھی اسی سزا کے مستوجب ہوں گے۔“

(ارشاد: میاں محمود احمد صاحب مندرجہ اخبار الفضل ۱۵ اکتوبر ۱۹۲۳ء)

### قادیانی یہودی:

”فرمایا: جب تک حضرت مسیح موعود (مرزا غلام احمد قادیانی) دنیا میں نہ آئے تھے وہ یہود، یہود تھے اور ان پر وہ لعنت تھی جو حضرت مسیح علیہ السلام کو نہ ماننے کی وجہ سے ان پر نازل ہوئی۔ مگر جب سے حضرت مسیح موعود (مرزا صاحب) آگئے ہیں تب سے ان کی اور ان مولویوں کی پوزیشن برابر ہو گئی ہے بلکہ یہ ان سے بھی گر گئے ہیں۔ اور زیادہ قابل مواخذہ ہیں اور یہی وجہ ہے کہ اب وہ یہود ابھرتے نظر آتے ہیں اور یہ مثیل یہود بیٹھتے چلے جا رہے ہیں (نقلی مسیح اگر کافروں کو مسلمان نہیں بنا سکتا تو مسلمانوں کو یہودی بنانے کا کام ہی سہی۔ یعنی الٹی مسیحیت۔ ناقل)۔“ (ارشاد: میاں محمود

احمد صاحب خلیفہ قادیان، مندرجہ اخبار الفضل ۱۵ اکتوبر ۱۹۲۳ء)

### قادیانی یتیم اور ان کی دیوار:

”ایک صاحب نے عرض کیا کہ بعض لوگ سوال کرتے

ہیں کہ انگریزوں کی سلطنت کی حفاظت اور ان کی کامیابی کے لئے حضرت مسیح موعود (مرزا غلام احمد قادیانی) نے کیوں دعائیں کیں؟ حضور (مرزا محمود احمد صاحب) بھی ان کی کامیابی کے لئے دعا کرتے ہیں اور اپنی جماعت کے لوگوں کو جنگ میں مدد دینے کے لئے بھرتی ہونے کا ارشاد فرماتے ہیں۔ حالانکہ انگریز مسلمان نہیں۔ اس کے جواب میں حضور (مرزا محمود احمد صاحب خلیفہ قادیان) نے جو ارشاد فرمایا اس کا خلاصہ عرض کیا جاتا ہے۔

فرمایا: اس سوال کا جواب قرآن کریم میں موجود ہے۔ حضرت موسیٰ علیہ السلام کو جو نظارے دکھائے گئے ان میں سے ایک یہ تھا کہ ایک گری ہوئی دیوار بنا دی گئی، جس کی وجہ بعد میں یہ بیان کی گئی کہ اس کے نیچے خزانہ تھا جس کے مالک چھوٹے بچے تھے دیوار اس لئے بنا دی گئی کہ ان لڑکوں کے بڑے ہونے تک خزانہ کسی اور کے ہاتھ نہ لگے اور ان کے لئے محفوظ رہے۔ یہ دراصل حضرت مسیح موعود (مرزا غلام احمد قادیانی) کی جماعت کے متعلق پیش گوئی ہے۔ جب تک جماعت احمدیہ نظام حکومت سنبھالنے کے قابل نہیں ہوتی اس وقت تک ضروری ہے کہ اس دیوار (یعنی انگریزی حکومت ... ناقل) کو قائم رکھا جائے تاکہ یہ نظام کسی ایسی طاقت کے قبضہ میں نہ چلا جائے جو احمدیت کے مفادات کے لئے زیادہ مضر اور نقصان رساں ہو۔ جب جماعت میں قابلیت پیدا ہو جائے گی اس وقت نظام اس کے ہاتھ میں آجائے گا۔ یہ وجہ ہے انگریزوں کی حکومت کے لئے دعا کرنے اور ان کو فتح حاصل کرنے میں مدد دینے کی۔ (افسوس ہے کہ ۱۹۴۷ء میں قادیانی قیموں کی یہ دیوار گر گئی اور ان کا مدفون دوسروں کے ہاتھوں میں چلا گیا... ناقل)۔“ (میاں محمود احمد

صاحب کی ”مجلس علم و عرفان“ مندرجہ اخبار الفضل ج: ۳۳ نمبر: ۳ موریخہ

۳ جنوری ۱۹۳۵ء)

یہاں اس لطیفے کا ذکر بھی دلچسپی سے خالی نہ ہوگا کہ انگریزوں کے ابتدائی دور تسلط میں یہی ذہنیت ہندوؤں کی تھی۔ چنانچہ جناب قمر الدین احمد چائنا ہاؤس، میٹھادر چوک، کراچی نمبر: ۲ کی کتاب ”ابوالفریب“ (حصہ اول ص: ۱۰۲) میں ایک بنگالی ناول نگار بنکم چندر کے مشہور ناول ”آنند مٹھ“ (مسرت کی خانقاہ) سے حسب ذیل کا اقتباس نقل کیا ہے:

”سچے مذہب کی تجدید کی اس وقت تک امید نہیں کی جاسکتی جب تک اہل برطانیہ ہمارے حکمران نہ ہو جائیں... ہندوؤں (ناپاک لوگوں) نے ہمارے مذہب کا نام ہندو رکھا ہے... انگریز سائنس میں بہت ترقی یافتہ ہیں اور قابل استاذ ہیں۔ اس واسطے انہیں کو ہمارا بادشاہ ہونا چاہئے... جب تک ہندو علم، صداقت اور طاقت اور کمال پر نہ پہنچ جائیں اس وقت تک برطانوی سلطنت کو قائم رکھنا ضروری ہے، اس کے ماتحت عوام پر مسرت زندگی بسر کر سکیں گے اور بغیر مداخلت اپنے مذہبی شعائر کو پورا کر سکیں گے ہمارا دشمن (اسلامی حکومت) اب کہاں ہے؟ وہ اب ختم ہو چکا ہے۔ برٹش اقتدار ہمارے لئے دوست ہے۔“

دیکھئے وہی ذہنیت، وہی فلسفہ، وہی تکنیک، غالباً قادیانیت کی یہی ہندوانہ ذہنیت تھی جس کی بنا پر مرزا قادیانی کو ”کرشن جی مہاراج“، ”رودر گوپال“، ”سورمار“ اور ”جے سنگھ بہادر“ کے خطابات عطا کئے گئے۔

تحریک حریت اور نادان احمدی:

”ہندوستان میں انقلاب پیدا ہونے والا ہے اور ہندوستانیوں میں اس وقت جو جذبہ حریت پیدا ہو رہا ہے،



(انگریزی) گورنمنٹ زیادہ دیر تک اس کا مقابلہ نہیں کر سکتی بے شک وہ مقابلہ تو کرے گی لیکن آہستہ آہستہ وہ خود بخود ہندوستانیوں کو حقوق دینے پر آمادہ ہو جائے گی اور وہ نادان احمدی جو ایک حد تک تحریک حریت کو ہندوستان کے لئے مفید سمجھتے ہیں اس وقت دیکھیں گے کہ وہ لوگ جن کی ظاہرداری کو دیکھ کر وہ انہیں اپنا ہمدرد سمجھتے ہیں ان کی مثال بعینہ اس بلی کی طرح ہے جس کا جسم نہایت ملائم اور پشیم بہت نرم لیکن ناخن خوفناک ہوتے ہیں اور وہ دیکھیں گے کہ کس طرح ان کی آنکھوں کو نکالنے اور چہرہ کو نوچنے کی کوشش کرتے ہیں... اگر تم بھی اللہ کے پیارے ہو تو اس وقت تک کہ تمہاری بادشاہت نہ قائم ہو جائے تمہارے راستے سے یہ کانٹے ہرگز دور نہیں ہو سکتے اور تمہیں کبھی بھی امن و امان حاصل نہیں ہو سکتا۔ اور اگر آج کسی وجہ سے سکھ ہے تو کل یقیناً پھر دکھ کی حالت ہو جائے گی۔“ (خطبہ میاں محمود احمد صاحب، مندرجہ اخبار الفضل ج: ۱۷ نمبر: ۸۶ مورخہ ۲۵ اپریل ۱۹۳۰ء بحوالہ قادیانی مذہب ص: ۹۰۳ فصل: ۱۶ نمبر: ۵۵ طبع پنجم)

دشمن:

”ہمیں جن کا اعتقاد ہے کہ کسی وقت بدلہ لینا بھی ضروری ہوتا ہے۔ اس خیال سے مطمئن نہیں ہونا چاہئے کہ ہم کسی کا کچھ نہیں بگاڑتے اس لئے ہمیں بھی کوئی نقصان نہیں پہنچائے گا۔ ہماری بھلائی کی صرف ایک ہی صورت ہے اور وہ یہ کہ تمام دنیا کو اپنا دشمن سمجھیں۔ تا ان پر غالب آنے کی کوشش کریں کیونکہ جب تک مخالفت نہ ہو ترقی بھی نہیں ہو سکتی تمام انبیاء کی جماعتیں ایک ہی جیسی ہوتی ہیں۔ پہلوں میں ہم سے زیادہ ایمان نہ تھا۔“

ان کی سستی کو دیکھ کر اللہ تعالیٰ نے ہماری جماعت کے لئے چند ایک ابتلا پیدا کئے ہیں تاکہ اگر جماعت کے دوست دوسروں کی ہدایت کے لئے احمدیت کو نہیں پھیلاتے تو یہ سمجھ کر کہ ساری دنیا ہماری دشمن ہے اور جب تک ہم ساری دنیا کو احمدیت میں داخل نہ کر لیں ہمارا کوئی ٹھکانہ نہیں۔ اور کبھی چین سے زندگی بسر نہیں کر سکتے۔ تبلیغ کی طرف متوجہ ہوں۔“ (خطبہ میاں محمود احمد، مندرجہ اخبار الفضل ج: ۷ نمبر: ۸۶ مورخہ ۲۵ اپریل ۱۹۳۰ء بحوالہ قادیانی مذہب ص: ۹۰۲ فصل: ۱۶ نمبر: ۵۳، ۵۴ طبع پنجم)

چوہڑے چمار:

”حضرت خلیفہ مسیح الثانی ایدہ اللہ بنصرہ العزیز نے جلسہ سالانہ ۱۹۳۲ء کی افتتاحی تقریب میں فرمایا تھا:

اللہ تعالیٰ کے فضل سے وہ بنیاد جو اس وقت بہت کمزور نظر آتی ہے اس پر عظیم الشان عمارت تعمیر ہوگی۔ ایسی عظیم الشان کہ ساری دنیا اس کے اندر آ جائے گی اور جو لوگ باہر رہیں گے ان کی کوئی حیثیت نہ ہوگی۔ جیسا کہ اللہ تعالیٰ سے خبر پا کر حضرت مسیح موعود (مرزا غلام احمد صاحب) نے فرمایا ہے کہ ایسے لوگوں کی حیثیت چوہڑے چماروں کی ہوگی... اس عبارت کا مطلب تو یہ ہے کہ احمدیت کا پودا جو اس وقت بالکل کمزور نظر آتا ہے، اللہ تعالیٰ کے فضل سے ایک دن ایسا تناور درخت بن جائے گا کہ اقوام عالم اس کے سایہ میں آرام پائیں گی اور جماعت احمدیہ جو اس وقت بالکل معمولی اور بے حیثیت سی نظر آتی ہے اس قدر اہمیت اور طاقت حاصل کر لے گی کہ دنیا کے مذہب تہذیب و تمدن اور سیاست کی باگ اس کے

ہاتھ میں ہوگی۔ ہر قسم کا اقتدار اسے حاصل ہوگا اور اپنے اثر و رسوخ کے لحاظ سے یہ دنیا کی معزز ترین جماعت ہوگی۔ دنیا کا کثیر حصہ اس میں شامل ہو جائے گا۔ ہاں جو اپنی بد قسمتی سے علیحدہ رہیں گے وہ بالکل بے حیثیت سمجھے جائیں گے۔ سوسائٹی کے اندران کی قدر و قیمت نہ ہوگی، دنیا کے مذہبی، تمدنی یا سیاسی دائرے کے اندران کی آواز ایسی غیر مؤثر اور ناقابل التفات ہوگی جیسی کہ موجودہ زمانہ میں چوہڑے چماروں کی ہے (گویا مرزا صاحب کی پیش گوئی کے مطابق قادیانی حکومت میں غیر قادیانیوں کی یہی حیثیت ہوگی... ناقل)۔“ (الفضل قادیان مؤرخہ ۲۹ جنوری ۱۹۳۳ء)

ہٹلر اور مسولینی:

”حکومت ہمارے پاس نہیں کہ ہم جبر کے ساتھ لوگوں کی اصلاح کریں اور ہٹلر یا مسولینی کی طرح جو شخص ہمارے حکموں کی تعمیل نہ کرے اسے ملک سے نکال دیں اور جو ہماری باتیں سننے اور ان پر عمل کرنے کے لئے تیار نہ ہو اسے عبرتناک سزا دیں۔ اگر حکومت ہمارے پاس ہوتی تو ہم ایک دن کے اندر اندر یہ کام کر لیتے۔“ (تقریر میاں محمود احمد صاحب، مندرجہ الفضل ج: ۲۳ نمبر: ۲۷۹ مؤرخہ ۲ جون ۱۹۳۶ء)

غلبہ اسلام:

گزشتہ بالا اقتباسات سے اندازہ کیا جاسکتا ہے کہ قادیانی لیڈر ”دنیا کو کھا جانے“ کے خواب کتنی مدت سے دیکھ رہے ہیں اور مسلمانوں کو ”یہودی“ ٹھہرا کر دنیا بھر میں ان کی حکومتوں کے زوال کے کس شدت سے متمنی ہیں؟ اس کے باوجود اگر مرزا طاہر احمد صاحب قادیانیوں کی اس گھناؤنی ذہنیت پر انکار و گریز کے پردے ڈالنا چاہیں تو یہ

ان کی مجبوری ہے، ان کی یہ حالت زار واقعاً لائق رحم ہے جس پر سب کو ترس آنا چاہئے، کجا وہ دن تھے کہ انگریز بہادر کے سائے میں ان کا طوطی بولتا تھا، ملازمتیں اور نوکریاں انہی کے اشارہ سے ملا کرتی تھیں، وہ دنیا بھر کے مسلمانوں پر دھونس جمایا کرتے تھے۔ انہیں یقین تھا کہ ہمارا مرشد و مربی (انگریز بہادر) جائے گا تو زمام حکومت ہمارے سپرد کر کے جائے گا۔ وہ ترنگ میں آکر کہا کرتے تھے:

”ہم میں سے ہر ایک شخص یہ یقین رکھتا ہے کہ تھوڑے عرصہ کے اندر ہی (خواہ ہم اس وقت زندہ رہیں یا نہ رہیں لیکن بہر حال وہ عرصہ غیر معمولی طور پر لمبا نہیں ہو سکتا) ہمیں تمام دنیا پر نہ صرف عملی برتری حاصل ہوگی بلکہ سیاسی اور مذہبی برتری بھی حاصل ہو جائے گی۔ اب یہ خیال ایک منٹ کے لئے بھی کسی سچے احمدی کے دل میں غلامی کی روح پیدا نہیں کر سکتا۔ جب ہمارے سامنے بعض حکام آتے ہیں تو ہم اس یقین اور وثوق کے ساتھ اس سے ملاقات کرتے ہیں کہ کل یہ نہایت ہی عجز و انکسار کے ساتھ ہم سے استمداد کر رہے ہوں گے۔“ (الفضل ۲۲ اپریل ۱۹۳۸ء)

کجا آج یہ دن کہ ملت اسلامیہ کے معدہ نے انہیں مردہ مکھی کی طرح باہر اگل دیا۔ وہ تمام مسلمانوں کو ”چوہڑے چمار“ کی حیثیت دینے پر ادھار کھائے بیٹھے تھے مگر خدا کی قدرت کا تماشا دیکھو! کہ آج خود ان ہی کا نام آئین میں شیڈول کا سٹ (چوہڑے چماروں) کے ساتھ درج ہے، ایسے میں مرزا طاہر احمد صاحب اپنے باپ دادا کے افعال و اقوال اور تحریروں پر انکار و تاویل کے پردے ڈال کر خفت مٹانے کی کوشش نہ کریں تو آخر کیا کریں؟

”حذر! اے چیرہ دستاں! سخت ہیں فطرت کی تعزیریں“

لیکن طرفہ تماشا یہ ہے کہ صاحبزادہ صاحب ایک طرف تو یہ فرما رہے ہیں کہ قادیانی لیڈروں کا حکومت پر قابض ہونے کا کوئی ارادہ نہیں، دوسری طرف خوش فہم

مریدوں کو یہ کہہ کر دلاسا دیتے ہیں کہ قادیانی جماعت غلبہ اسلام کے لئے کھڑی کی گئی ہے اور یہ کہ اسی جماعت کے ذریعہ اسلام ساری دنیا پر غالب آئے گا، چنانچہ وہ قرآن مجید کی آیت: ”هُوَ الَّذِي أَرْسَلَ رَسُولَهُ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ“ کا حوالہ دے کر لکھتے ہیں:

”احمدیت کا تو دعویٰ ہی یہی ہے کہ یہ تحریک تمام ادیان پر اسلام کے غلبہ کے لئے جاری کی گئی ہے، قرآن کریم میں اللہ تعالیٰ نے حضرت محمد مصطفیٰ صلی اللہ علیہ وسلم سے جو سچا اور اٹل وعدہ فرمایا تھا کہ وہ آپ کو اور آپ کے دین کو تمام دوسرے ادیان پر غالب فرمادے گا اسی وعدہ کے ایفا کا سامان تحریک احمدیت کو جاری کر کے فرمایا گیا ہے۔“

(مرزا طاہر احمد صاحب کاربوہ سے تل ابیب تک پر ”مختصر تبصرہ“ ص: ۴۵)

اس سلسلے میں صاحبزادہ صاحب کی خدمت میں چند گزارشات پیش کرنا چاہتا ہوں:

اول: ... عربی میں ایک مثل ہے: ”پہلے عمارت بنا لو، پھر نقش و نگار بھی کر لینا“ صاحبزادہ صاحب کی تحریک احمدیت دنیا میں اسلام کو جب غالب کرے گی سو دیکھا جائے گا، مگر میرا مخلصانہ مشورہ ہے کہ پہلے وہ خود تو مسلمان ہو لیں۔ صاحبزادہ صاحب کو یہ لکھتے وقت احساس نہیں رہا کہ ان کی تحریک احمدیت شریعت و آئین کی رو سے غیر مسلم ہے اور ایک غیر مسلم کا یہ دعویٰ کرنا کہ وہ اسلام کو دنیا پر غالب کرے گا، دراصل اسلام اور مسلمانوں سے بدترین مذاق ہے۔ نامسلم ہونے کے باوجود اسلام کو غالب کرنے کا دعویٰ کتنا عجیب ہے؟ یہ تو وہی لطیفہ ہوا جو احمقوں کی بستی کے مؤذن کے بارے میں مشہور ہے، کہتے ہیں کہ کسی بستی کے لوگوں کو کوئی مسلمان مؤذن نہ ملا تو انہوں نے ایک پڑھے لکھے یہودی کو اس خدمت کے لئے کرائے پر رکھ لیا۔ اذان کے کلمات، ظاہر ہے کہ خود اس کے اپنے عقیدے کے خلاف تھے، ان کا پنجوقتہ اعلان کیسے کرتا؟ ادھر ڈیوٹی بجالانا بھی ضروری،



اس مشکل کا حل اس نے یہ تلاش کیا کہ اذان میں بجائے ”اشہد ان محمدا رسول اللہ“ کے وہ یہ اعلان کرتا کہ: ”اشہد ان اہل القریۃ یقولون ان محمدا رسول اللہ“ یعنی بستی کے لوگوں کا کہنا ہے کہ محمد (صلی اللہ علیہ وسلم) اللہ کے رسول ہیں۔ وہی مثال مرزا طاہر احمد صاحب کی ہے کہ خود تو مسلمان نہیں، مگر اذان دی جا رہی ہے کہ اسلام کو غالب کرنے کے لئے ہماری خدمات حاضر ہیں۔ چندہ دو اور اسلام کو غالب کراؤ۔ شاید مرزا صاحب نے عالم اسلام کو بھی ”اجتہاد کی بستی“ سمجھ رکھا ہے۔ میں ان سے مؤدبانہ گزارش کروں گا کہ وہ اسلام اور مسلمانوں سے یہ مذاق بند کر دیں، اللہ کا شکر ہے اہل اسلام ابھی زندہ ہیں، وہ اسلام کی جیسی کیسی بری بھلی خدمت خود ہی کر لیں گے، انہیں اسلام کی خدمت کے لئے کسی کرائے کے یہودی کی ضرورت نہیں، ہاں! صاحبزادہ صاحب اور ان کی ”تحریک احمدیت“ کو اگر واقعتاً اسلام کی خدمت کا شوق ہے تو بسم اللہ، تشریف لائیں اسلام کا دروازہ بند نہیں، وہ پہلے خود دائرہ اسلام میں داخل ہو لیں اور پھر خدمت اسلام کے ارمان جتنے چاہیں نکالیں۔ قرآن کریم نے ان کے پیشروؤں کو پہلے سے تلقین کر رکھی ہے: ”آمنوا کما آمن الناس“ ایسا ایمان لاؤ جیسا دوسرے مسلمان ایمان لائے ہیں، وہ قرآن کریم کے اس ارشاد کو بگوش ہوش سن کر پلے باندھ لیں۔

دوم: ... صاحبزادہ صاحب کا کہنا ہے کہ قادیانی تحریک تمام ادیان پر اسلام کے غلبہ کے لئے جاری کی گئی ہے۔ اب فرض کیجئے کہ ان کا نام نہاد اسلام بقول ان کے ساری دنیا پر غالب ہو جائے۔ دنیا کے چپہ چپہ پر بس ان ہی کا دین و مذہب نظر آنے لگے، تو سوال یہ ہے کہ اس وقت صاحبزادہ صاحب زمام حکومت کیا سکھوں کے حوالے کر دیں گے؟ کیونکہ وہ خود تو حکومت کا نام سن کر ہی بدکتے ہیں۔

غلبہ اسلام اور حکومت آپس میں لازم و ملزوم ہیں۔ جب آپ یہ دعویٰ رکھتے ہیں کہ قادیانی تحریک غلبہ اسلام (یعنی غلبہ قادیانی دین) کے لئے جاری کی گئی ہے تو اس سے خود بخود یہ دعویٰ بھی لازم آتا ہے کہ قادیانی تحریک کا مقصد ساری دنیا پر ”قادیانی راج“ قائم کرنا ہے، اس صورت میں میں نے وہ کون سا سنگین الزام آپ پر عائد کر دیا تھا جس کی

تردید کے لئے آپ کو بنفس نفیس زحمت اٹھانا پڑی؟ آپ کا ایک طرف غلبہ اسلام (جس سے قادیانیت کا غلبہ مراد ہے) کے دعوے کرنا اور دوسری طرف لوگوں کو یہ باور کرانے کی کوشش کرنا کہ ہمارا حکومت پر قبضہ کرنے کا کوئی ارادہ نہیں ہے، کیا ان دونوں باتوں میں تناقض نہیں؟ یا آپ اس تناقض کو سمجھنے سے قاصر ہیں۔ آپ کے دادا مرزا غلام احمد صاحب تو متضاد اور متناقض باتیں کیا ہی کرتے تھے، مگر تعجب ہے کہ یہ ریت ان کے خاندان میں ابھی تک باقی ہے، سچ ہے کہ:

”جھوٹے کے کلام میں تناقض ضرور ہوتا ہے۔“

(ضمیمہ براہین پنجم ص: ۱۱۱، روحانی خزائن ج: ۲۱ ص: ۲۷۵)

سوم: ... صاحبزادہ صاحب تو قرآن کریم کی آیت نقل کر کے ہمیں یہ بتاتے ہیں کہ اس آیت کے سچے اور اٹل وعدہ کو پورا کرنے کے لئے تحریک احمدیت جاری کی گئی ہے، مگر ان کے دادا مرزا غلام احمد صاحب اسی آیت کو اپنی ذات پر چسپاں کر کے بیاں گ دہل اعلان فرمایا کرتے تھے کہ یہ غلبہ ان کے ہاتھ سے ہوگا۔ اور یہ کہ ان کی زندگی میں یہ وعدہ پورا نہ ہو تو وہ جھوٹے ہیں۔ سوال یہ ہے کہ مرزا طاہر احمد صاحب کا بیان صحیح ہے یا ان کے دادا مرزا غلام احمد صاحب کا؟

واقعہ یہ ہے کہ مرزا غلام احمد صاحب کو اپنے دعاوی کے ساتھ دنیا سے رخصت ہوئے پون صدی گزر رہی ہے، مگر ہنوز روز اول ہے، اسلام کے غلبہ کی قرآنی پیش گوئی نہ مرزا صاحب کے ہاتھ پوری ہوئی، نہ ان کے پون صدی کے بعد تک ان کے کسی جانشین کے ہاتھ پر... کیا کامل ایک صدی کے تجربہ کے بعد دنیا یہ سمجھنے پر مجبور نہیں کہ ”غلبہ اسلام، غلبہ اسلام“ کی سو سالہ رٹ محض دکان مسیحیت چمکانے اور عالی فہم مریدوں سے چندے بٹورنے کے لئے تھی، ورنہ قادیانیت کے ذریعہ نہ اسلام کو غالب ہونا تھا، نہ ہوا، اور نہ یہ ممکن ہے۔ قادیانیت کے ذریعہ دنیا پر اسلام تو کیا غالب آتا، الٹا یہ ہوا کہ جو لوگ پہلے سے مسلمان تھے، قادیانیت کی سبز قدمی سے وہ بھی مسلمان نہ رہے، کچھ عیسائی ہو گئے، کچھ بہائی، کچھ مرزائی اور کچھ دہریئے بن گئے اور جو مسلمان اپنے دین پر قائم رہے انہیں قادیانی

الہام نے بیک جنبش لب کا فر بنا دیا، ملاحظہ فرمائیے:

۱:۔۔۔ ”خدا تعالیٰ نے میرے پر ظاہر کیا ہے کہ ہر ایک شخص جس کو میری دعوت پہنچتی ہے اور اس نے مجھے قبول نہیں کیا وہ مسلمان نہیں ہے۔“

(مرزا غلام احمد قادیانی کا ارشاد، مندرجہ الذکر الکلیم نمبر: ۴ ص: ۲۳)  
۲:۔۔۔ ”جو شخص تیری پیروی نہیں کرے گا اور تیری بیعت میں داخل نہیں ہوگا اور تیرا مخالف رہے گا وہ خدا اور رسول کی نافرمانی کرنے والا اور جہنمی ہے۔“

(الہام مرزا قادیانی، مندرجہ تذکرہ ص: ۳۳۶ طبع چہارم)  
۳:۔۔۔ ”جس نے تجھے شناخت کرنے کے بعد تیری دشمنی اور تیری مخالفت اختیار کی وہ جہنمی ہے۔“

(الہام مرزا آنجنابی، مندرجہ تذکرہ ص: ۱۶۳ طبع چہارم)  
۴:۔۔۔ ”علاوہ اس کے جو مجھے نہیں مانتا وہ خدا اور رسول کو بھی نہیں مانتا، کیونکہ میری نسبت خدا اور رسول کی پیش گوئی موجود ہے۔“ (حقیقۃ الوحی ص: ۱۶۳، روحانی خزائن ج: ۲۲ ص: ۱۶۸)  
۵:۔۔۔ ”کفر دو قسم پر ہے۔ (اول) ایک یہ کفر کہ ایک شخص اسلام سے ہی انکار کرتا ہے اور آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کو خدا کا رسول نہیں مانتا۔ (دوم) دوسرے یہ کفر کہ مثلاً وہ مسیح موعود (یعنی خود مابدولت مرزا قادیانی۔ ناقل) کو نہیں مانتا،... اگر غور سے دیکھا جائے تو یہ دونوں قسم کے کفر ایک ہی قسم میں داخل ہیں۔“

(حقیقۃ الوحی ص: ۱۷۹، روحانی خزائن ج: ۲۲ ص: ۱۸۵)  
۶:۔۔۔ ”کل مسلمان جو حضرت مسیح موعود کی بیعت میں شامل نہیں ہوئے، خواہ انہوں نے حضرت مسیح موعود کا نام بھی نہیں

سنا، وہ کافر اور دائرۃ اسلام سے خارج ہیں۔“

(آئینہ صداقت ص: ۳۵ از میاں محمود احمد قادیانی)

۷:۔۔۔ ”ہر ایک ایسا شخص جو موسیٰ کو تو مانتا ہے مگر عیسیٰ کو نہیں مانتا۔ یا عیسیٰ کو مانتا ہے مگر محمد کو نہیں مانتا۔ اور یا محمد کو مانتا ہے پر مسیح موعود (مرزا غلام احمد) کو نہیں مانتا وہ نہ صرف کافر بلکہ پکا کافر اور دائرۃ اسلام سے خارج ہے۔“

(کلمۃ الفصل ص: ۱۱۰ از مرزا بشیر احمد قادیانی)

وہ غلبہ اسلام جس کے لئے قادیانی تحریک جاری کی گئی اور جو قادیانی تحریک کی بدولت ظہور میں آیا۔ گویا روئے زمین سے اسلام کا صفایا کر دینے کا نام قادیانی اصطلاح میں ”غلبہ اسلام“ ہے:

بریں عقل و دانش بباہر گریست

اس کے باوجود مرزا طاہر احمد صاحب کی صفائی دیکھئے کہ وہ اب تک غلبہ اسلام کا ڈھول پیٹ رہے ہیں۔ کوئی شریف آدمی ان سے یہ نہیں پوچھتا کہ:

۱:۔۔۔ حضرت! آپ کے دادا صاحب غلبہ اسلام کی مہم میں ناکام کیوں رہے؟

۲:۔۔۔ اب آپ نے مرزا غلام احمد کو غلبہ اسلام کے منصب سے معزول کر کے...

اس کا چارج ”تحریک احمدیت“ کے حوالے کیوں فرما دیا؟

۳:۔۔۔ آپ کی ”تحریک احمدیت“ کے ذریعہ اب تک جو کچھ ظہور میں آیا ہے اگر

اسی کا نام ”غلبہ اسلام“ ہے تو غلبہ کفر کسے کہتے ہیں؟

چہارم:۔۔۔ جناب مرزا غلام احمد صاحب نے اپنے منصب کی وضاحت اور ”غلبہ

اسلام“ کی تشریح کرتے ہوئے اخبار ”قلقل“ کے ایڈیٹر کے نام اپنے خط میں بڑے

طمع اراق اور تحدی سے لکھا تھا:

”میرا کام، جس کے لئے میں اس میدان میں کھڑا

ہوں، یہی ہے کہ میں عیسیٰ پرستی کے ستون کو توڑ دوں، اور بجائے



تثلیث کے توحید کو پھیلاؤں اور آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کی جلالت اور عظمت اور شان دنیا پر ظاہر کروں۔ پس اگر مجھ سے کروڑوں نشان بھی ظاہر ہوں اور یہ علت غائی ظہور میں نہ آئے تو میں جھوٹا ہوں۔ پس دنیا مجھ سے کیوں دشمنی کرتی ہے، وہ میرے انجام کو کیوں نہیں دیکھتی۔ اگر میں نے اسلام کی حمایت میں وہ کام کر دکھایا جو مسیح موعود اور مہدی موعود کو کرنا چاہئے تھا تو پھر میں سچا ہوں اور اگر کچھ نہ ہوا اور میں مر گیا تو پھر سب گواہ رہیں کہ میں جھوٹا ہوں۔ والسلام، فقط غلام احمد۔“ (اخبار بدر ج: ۲ نمبر: ۲۹ ص: ۴ مورخہ ۱۹ جولائی ۱۹۰۶ء)

مرزا صاحب کو یہ غلط فہمی تھی کہ اشاعت اسلام کے راستہ میں سب سے بڑی رکاوٹ حیات مسیح کا مسئلہ ہے، اگر وہ لوگوں کو کاغذی پتنگ بازی کے ذریعہ اس جھوٹ کو بیج باور کرانے میں کامیاب ہو گئے کہ عیسیٰؑ مر چکے ہیں تو عیسیٰؑ پرستی کا ستون ٹوٹ جائے گا۔ تثلیث کی جگہ توحید پھیل جائے گی۔ عیسائی دنیا فوراً آمنا و صدقنا کہہ کر ان کے قدموں میں آگرے گی اور سیدنا عیسیٰؑ علیہ السلام کے بجائے ”مریض قادیان“ کو ”مسیحا“ مان لے گی۔ یہی وجہ ہے کہ مرزا صاحب نے سرسید کے شاگردوں کی مدد سے (جو پہلے ہی اسلامی عقائد سے منحرف تھے) اس موضوع پر طومار تیار کرنے شروع کر دیئے اور اسی (۸۰) سے زائد کتابیں خود لکھ ڈالیں، جن میں سے بقول شخصے: ”انگریز کی مدح و ستائش، مرزائی تعلیمات اور وفات مسیح کو نکال دیا جائے تو پیچھے صفر رہ جاتا ہے۔“ الغرض مرزا صاحب نے اپنے حواریوں سمیت وفات مسیح کا افسانہ اڑانے کے لئے خوب پروپیگنڈہ کیا، مگر سنجیدہ دنیا نے، کیا مسلمان اور کیا عیسائی، مرزائی خیالات کو گوزشتہ کی حیثیت بھی نہ دی۔ نتیجہ سب کے سامنے ہے کہ مرزا صاحب کو رخصت ہوئے پون صدی ہو رہی ہے مگر ان کے کاغذی پروپیگنڈے سے نہ عیسیٰؑ پرستی کا ستون ٹوٹا، نہ تثلیث کے بجائے توحید دنیا میں پھیلی، نہ ان کی مہدویت کا رگر ہوئی، نہ ان کی مسیحیت کا کھوٹا سکہ چلا، بلکہ وہ نکاح آسمانی کی طرح یہ ساری حسرتیں قبر میں ساتھ لے گئے:



”و کم حسرات فی بطون المقابر!“

مگر صاحبزادہ مرزا طاہر احمد صاحب کو اپنے دادا کے قول:

”پس اگر مجھ سے کروڑوں نشان بھی ظاہر ہوں اور یہ

علت غائی ظہور میں نہ آئے تو میں جھوٹا ہوں۔“

”اور اگر کچھ نہ ہوا اور میں مر گیا تو سب لوگ گواہ رہیں کہ

میں جھوٹا ہوں۔“

کی صداقت میں ابھی تک شک ہے اور وہ ابھی تک یہ فرمائے جا رہے ہیں کہ قادیانی تحریک تمام ادیان پر اسلام کے غلبہ کے لئے جاری کی گئی ہے۔ یعنی مرزا غلام احمد کا (خود اپنے ہی قول سے) جھوٹا ہونا آفتاب نصف النہار کی طرح ساری دنیا پر کھل چکا ہے، مگر مرزا طاہر احمد صاحب اور ان کے رفقاء دن کی روشنی میں بھی سیاہ و سفید کے درمیان تمیز کرنے سے معذور ہیں۔ و من لم يجعل الله له نوراً فما له من نور۔

سوال و جواب:

اس بحث کے آخر میں جناب صاحبزادہ صاحب نے راقم الحروف سے ایک

سوال کیا ہے، اس کا جائزہ لینا بھی ضروری ہے، وہ لکھتے ہیں:

”آخر میں مولانا سے صرف یہ سوال کرنے کی جسارت

کرتا ہوں کہ کیا آپ بھی دیگر مذاہب پر اسلام کے غلبہ کے قائل ہیں

یا نہیں؟ اگر ہیں تو کیا اس کے لئے عالمی تبلیغ و تربیت کا پروگرام بنانے

کا ارادہ بھی رکھتے ہیں یا محض قائل ہونے پر ہی اکتفا ہے؟ اگر اس

ضمن میں عملی پروگرام بنانے کا بھی ارادہ ہے تو کیا آپ کی آخری اور

فیصلہ کن عالمی فتح پر بھی جناب کو ایمان ہے کہ نہیں؟ اگر ہے تو

فرمائیے کہ کیا آپ کے اس پروگرام کو صیہونیت کے عالمی غلبہ کے

منصوبہ سے مشابہت تو نہیں؟ ذرا سوچ کر دلیل کے ساتھ جواب

دیجئے۔“ (ربوہ سے تل ابیب تک پر مختصر تبصرہ ص: ۴۶)

جناب صاحبزادہ صاحب کے سوال کا جواب تو بہت ہی مختصر ہے کہ جس غلبہ کی آپ بات کر رہے ہیں اس کے لئے ہمیں کسی منصوبہ بنانے کی ضرورت نہیں۔ مگر یہ جن غلط فہمیوں کی پیداوار ہے، میں چاہتا ہوں کہ ان کے ازالہ کے لئے چند امور کی قدرے وضاحت کر دوں:

الف: ... اسلام اپنے اہل اصولوں، قطعی عقائد، صاف ستھرے قوانین اور موافق فطرت تعلیمات کے ذریعہ دلیل و برہان کے میدان میں تمام ادیان پر ہمیشہ غالب رہا ہے، یقین نہ آئے تو آج بھی کسی قدیم و جدید مذہب کے اصول و فروع کا اسلام سے مقابلہ کر کے دیکھ لیجئے۔ دیگر مذاہب تو پھر کہنہ اور فرسودہ ہو چکے ہیں، مرزا طاہر احمد صاحب کا آبائی دین تو ابھی تازہ ہے، اس پر ایک صدی بھی ابھی پوری نہیں ہوئی، شوق ہو تو اسی کے کسی اصول کو اسلام سے ٹکرا کر دیکھ لیجئے۔

ب: ... اسلام کے ساتھ حاملین اسلام کا گروہ بھی بحمد اللہ ہمیشہ غالب و منصور رہا ہے اور ان کا تسلسل صدر اول سے لے کر آج تک کبھی منقطع نہیں ہوا، صحیحین کی روایت ہے کہ رسول اکرم صلی اللہ علیہ وسلم نے فرمایا:

”لَا يَزَالُ مِنْ أُمَّتِي أُمَّةٌ قَائِمَةٌ بِأَمْرِ اللَّهِ، لَا يَضُرُّهُمْ مَنْ خَذَلَهُمْ وَلَا مَنْ خَالَفَهُمْ حَتَّى يَأْتِيَ أَمْرُ اللَّهِ وَهُمْ عَلَى ذَالِكِ۔“  
(مشکوٰۃ ص: ۵۸۳)

ترجمہ: ”میری امت میں ایک جماعت ہمیشہ امر الہی پر قائم رہے گی ان کے مخالف اور ان کی مدد سے ہاتھ کھینچنے والے انہیں کوئی نقصان نہیں پہنچا سکیں گے اور وہ قیامت تک اسی پر قائم رہیں گے۔“

اور ترمذی شریف میں بسند صحیح یہ روایت ہے:

”وَلَا يَزَالُ طَائِفَةٌ مِنْ أُمَّتِي مُنْصُورِينَ لَا يَضُرُّهُمْ مَنْ خَذَلَهُمْ حَتَّى تَقُومَ السَّاعَةُ۔“  
(مشکوٰۃ ص: ۵۸۳)

ترجمہ: "... اور میری اُمت کا ایک گروہ قیامت تک ہمیشہ

غالب و منصور رہے گا، ان سے الگ ہو کر ان کی نصرت سے کنارہ کشی

کرنے والے، ان کا کچھ نہیں بگاڑ سکیں گے۔"

ان ارشادات سے معلوم ہوا کہ اُمت مرحومہ پر کبھی کوئی دور ایسا نہیں گزرا کہ وہ

مجموعی طور پر جادہ مستقیمہ سے ہٹ گئی ہو، بلکہ حاملین دین کا گروہ ہمیشہ حق پر قائم اور

غالب و منصور رہا ہے۔ اس سے مرزا غلام احمد کا یہ عقیدہ قطعاً غلط ثابت ہوتا ہے کہ قرون

ثلاثہ کے بعد پوری کی پوری اُمت اسلامیہ (معاذ اللہ) گمراہ، کافر و مشرک اور یہودی

ہو گئی تھی۔ ان میں کوئی جماعت بھی عقائد حقہ کی حامل نہیں رہی تھی، نیز مرزا کا یہ عقیدہ بھی

باطل ہو جاتا ہے کہ اسلام اور قرآن دنیا سے اٹھ گئے تھے اس لئے خدا کو قادیان میں دوبارہ

قرآن اتارنا پڑا۔

ج: ... ایک ہزار برس تک اسلام کو دنیا پر سیاسی، معاشرتی اور تہذیبی میدانوں

میں بھی غلبہ حاصل رہا۔ اس لئے آیت: "ليظهره على الدين كله" (تاکہ غالب

کردے اس کو تمام دینوں پر) کا ارشاد الہی ہر پہلو سے پورا ہو چکا۔ مگر ہر کمال کو زوال ہے،

یہ قانون مسلمانوں پر بھی نافذ ہونا تھا، اس لئے چند صدیوں سے مسلمان سیاسی زوال و

اضمحلال کا شکار ہیں (جب کہ دلیل و برہان اور اصولوں کی صداقت کے اعتبار سے اسلام

آج بھی تمام ادیان پر غالب و منصور ہے، اور اس کی فوقیت و برتری آج بھی بمقابلہ تمام

نظریوں کے درخشاں و تاباں ہے) اور مسلمانوں کے سیاسی و تہذیبی زوال کا باعث بھی نام

نہاد مسلمانوں کی غداری اور بہائیت، و بابیت، مہدویت و قادیانیت ایسی اسلام کش منافقانہ

تحریکوں کا ابھرنا ہے جو دشمنان اسلام نے مسلمانوں میں انتشار پیدا کرنے، ان کو اسلام

سے مایوس کرنے اور ان کی جاسوسی کرنے کی غرض سے کھڑی کیں۔

و: ... تاہم مایوسی کی کوئی وجہ نہیں، ان شاء اللہ وقت آئے گا کہ مسلمان پھر سے

اٹھیں گے، وہ دشمنان اسلام کے خود کاشتہ پودوں سے گلشن اسلام کو پاک و صاف کر دیں

گے، اسلامی ممالک میں اسلامی قانون نافذ کریں گے، اسلام کی نشاۃ ثانیہ ہوگی اور اس کی

برکت سے مسلمانوں کو ایک بار پھر پوری دنیا پر سیاسی برتری حاصل ہوگی۔

ھ:۔۔۔ اور تقدیر الہی میں اسلام کا ایک اور رنگ میں غلبہ بھی مقدر ہے، جسے ”غلبہ کاملہ“ سے بھی تعبیر کیا جاسکتا ہے، اس کی صورت یہ ہوگی کہ قرب قیامت میں اللہ تعالیٰ، اسلام کی نصرت و حمایت اور فتنہ و جال کے قلع قمع کرنے کے لئے سیدنا عیسیٰ علیہ السلام کو نازل فرمائیں گے، ان کی تشریف آوری سے تمام مذاہب یکسر مٹ جائیں گے اور صرف اسلام باقی رہ جائے گا، بعض مفسرین نے آیت: ”لیظہرہ علی الدین کلہ“ کی پیش گوئی کا مصداق اسی آخری دور کے غلبہ اسلام کو قرار دیا ہے، خود مرزا غلام احمد صاحب بھی جب تک مسلمان تھے، اسی پر ایمان رکھتے تھے، چنانچہ لکھتے ہیں:

”اور فرقانی اشارہ اس آیت میں ہے: ”ہو الذی

ارسل رسولہ بالہدی و دین الحق لیظہرہ علی الدین کلہ“ یہ آیت جسمانی اور سیاست ملکی کے طور پر حضرت مسیح کے حق میں پیش گوئی ہے اور جس غلبہ کاملہ دین اسلام کا وعدہ دیا گیا ہے وہ غلبہ مسیح کے ذریعہ سے ظہور میں آئے گا اور جب حضرت مسیح علیہ السلام دوبارہ اس دنیا میں تشریف لائیں گے تو ان کے ہاتھ سے اسلام جمیع آفاق اور اقطار میں پھیل جائے گا“ (براہین احمدیہ حصہ چہارم ص: ۴۹۸، ۴۹۹ حاشیہ در حاشیہ، روحانی خزائن ج: ۱ ص: ۵۹۳)

اور اسی غلبہ کاملہ کو آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم نے بایں الفاظ ارشاد فرمایا ہے: ”ویہلک الملل کلہا الا الاسلام“ کہ حضرت عیسیٰ علیہ السلام کی تشریف آوری کے بعد اسلام کے سوا تمام مذاہب مٹ جائیں گے۔ اس سے یہ بات کھل کر سامنے آگئی کہ آیت کریمہ میں اسلام کے جس غلبہ کاملہ کا وعدہ ہے وہ انسانی تدابیر اور منصوبوں سے ظہور پذیر نہیں ہوگا، اس کے لئے نہ کسی انسان کی جاری کی ہوئی تحریک جدید یا قدیم کارگر ہو سکتی ہے، نہ کوئی انسانی منصوبہ سازی مفید و سودمند ہو سکتی ہے، بلکہ اس کا منصوبہ خداوند ذوالجلال کے علم میں پہلے سے تیار رکھا ہے، یعنی سیدنا عیسیٰ بن مریم (علی نبینا وعلیہما



الصلوات والتسلیمات) کا دوبارہ تشریف لانا، جب اس غلبہ اسلام کے ظہور کا وقت آئے گا تب اللہ تعالیٰ اس منصوبہ کو بروئے کار لائیں گے، جس کی پوری تفصیلات اور مکمل نقشہ آنحضرت صلی اللہ علیہ وسلم کے ذریعہ امت کو بتایا جا چکا ہے اور بحمد اللہ وہ امت مرحومہ کے پاس محفوظ ہے۔

اس تحقیق سے معلوم ہوا ہوگا کہ جناب مرزا طاہر احمد صاحب کا یہ مطالبہ سرے سے غلط اور مہمل ہے کہ تم بھی اس موعودہ غلبہ کے لئے پروگرام بنا رہے ہو یا نہیں؟ کیونکہ یہ غلبہ موعودہ جیسا کہ اوپر بتا چکا ہوں، ایک خاص نظام الہی کے تحت بروئے کار آئے گا اور وہ ہے سیدنا عیسیٰ بن مریم (علی نبینا وعلیہ الصلوٰۃ والسلام) کا نازل ہونا۔ جب یہ غلبہ انسانی تدبیروں اور منصوبوں کے تحت ہوگا ہی نہیں بلکہ خاص نظام قدرت کے تحت ہوگا تو اس کے لئے کسی انسانی پروگرام کا سوال ہی نہیں، بلکہ یہ ایک غیر متعلق بات ہے، جو اس امر کی دلیل ہے کہ سائل نہ تو قرآن مجید کی آیت کے مفہوم سے آگاہ ہے، نہ اسے اس غلبہ موعودہ کی ٹھیک ٹھیک تفصیلات معلوم ہیں، نہ وہ نظام الہی سے باخبر ہے اور نہ وہ یہی جانتا ہے کہ یہ غلبہ موعودہ کس وقت، کن حالات میں، کس نظام الہی کے تحت، کس شکل میں، کس مقصد کے لئے ظہور پذیر ہوگا۔

یہاں سے یہ بھی معلوم ہوا کہ مرزا قادیانی کا یہ دعویٰ کہ وہی مسیح موعود ہے جس کے ہاتھ پر اسلام کا غلبہ موعودہ ہونا تھا، قطعاً غلط ہے، اگر وہ واقعۃً مسیح موعود ہوتے تو کوئی وجہ نہ تھی کہ خدا اپنا وعدہ پورا نہ کرتا، اسی طرح قادیانیت کا یہ دعویٰ بھی قطعاً بے بنیاد ہے کہ وہ نظام الہی کے ماتحت غلبہ اسلام کے لئے جاری کی گئی ہے۔ اگر وہ خدائی وعدہ کے ایفا کے لئے وجود میں آئی ہوتی تو ایک صدی تک خدا کو اپنا وعدہ پورا کرنے سے کس نے روک رکھا تھا؟

و:۔۔۔ جہاں تک اس غلبہ موعودہ سے پہلے پہلے اسلام کی تبلیغ و اشاعت اور تعلیم و تربیت کا تعلق ہے، یہ بلاشبہ مسلمانوں کا فرض ہے، اس کے لئے محنت و سعی کرنا، تدبیریں سوچنا، منصوبے بنانا بھی بقدر استطاعت فرض ہے اور اللہ کا شکر ہے کہ مسلمان نہ پہلے کبھی



اس فریضہ سے غافل رہے ہیں نہ اب اس گئے گزرے دور میں اس سے غافل ہیں، قادیانیوں نے کاغذی پروپیگنڈے کے ذریعے مشہور کر رکھا تھا کہ بس وہی ایک جماعت ہے جو اسلام کی تبلیغ کر رہی ہے۔ باقی سب مسلمان سوئے پڑے ہیں، مگر میں سمجھتا ہوں کہ مرزا غلام احمد کی نبوت و مسیحیت کی طرح یہ چودہویں صدی کا سب سے بڑا جھوٹ ہے۔ اول تو جیسا کہ عرض کر چکا ہوں قادیانیوں کو اسلام سے کوئی دور کا بھی واسطہ نہیں، وہ اگر تبلیغ و اشاعت کرتے ہیں تو اسلام کی نہیں، بلکہ اس دین و مذہب کی جو مرزا طاہر احمد کے باپ دادا نے ایجاد کیا ہے، قادیانیوں کے ”تبلیغ اسلام“ کے پروپیگنڈے کی مثال بالکل ایسی ہے کہ کوئی شخص ابرہہ کی طرح ایک مکان بنا کر اس کا نام ”کعبہ“ اور ”بیت اللہ“ رکھ دے، اور پھر لوگوں میں یہ پروپیگنڈہ کرتا پھرے کہ ”بیت اللہ کا طواف جس قدر میں کرتا ہوں اتنا کوئی مسلمان نہیں کرتا۔“ حالانکہ وہ ”بیت اللہ کا طواف“ نہیں کرتا بلکہ وہ اپنے ہی بنائے ہوئے مکان کے گرد چکر لگاتا ہے۔

پھر قادیانی جو تبلیغ کرتے ہیں اس کا حدود اربعہ بھی ہمیں معلوم ہے، کوئی مبلغ صاحب باہر ملک بھیج دیئے اور انہوں نے کسی ہوٹل میں چائے پی لی تو مرکز کو رپورٹ بھیج دی کہ آج ہوٹل میں اتنے لوگوں کو تبلیغ کی گئی۔ کوئی سر بازار متعارف شخص مل گیا، اس سے علیک سلیک ہو گئی، بس ”تبلیغ“ ہو گئی۔ کسی کالج میں چلے گئے وہاں دو چار ”بڑے لوگوں“ کو ایک دو پمفلٹ دے آئے، بس حق تبلیغ ادا ہو گیا۔ کسی تقریب میں چند لوگوں کو بلا لیا وہاں ”گروپ فوٹو“ اتروائے، چلو بھی تبلیغ ہو گئی اور اخباروں میں اس کی خبر چھپوادی۔ اخبار ”پیغام صلح“ کے بقول:

”اب ذرا قادیانی مبلغ کا طریق تبلیغ بھی ملاحظہ ہو: کسی دوست سے ملے، کہیں چائے پر چلے گئے، کسی اور اجتماع میں چند آدمیوں سے ملاقات ہو گئی بس قادیان رپورٹ لکھ دی کہ ہم نے تین سو آدمیوں کو اسلام یا احمدیت کا پیام پہنچا دیا۔“ (لاہوری جماعت کے مبلغ محمد عبداللہ صاحب کا مکتوب، مندرجہ اخبار پیغام صلح لاہور ۳ جون

۱۹۳۶ء بحوالہ قادیانی مذہب، فصل: ۱۶، نمبر: ۴۶، ص: ۸۹۸، ۸۹۹، طبع پنجم)

”ادھر قادیان میں اتنی بڑی جماعت نے کیا خدمت

اسلام کی۔ ظاہر ہے کہ اس قدر قلیل کہ نہ ہونے کے برابر۔ البتہ

اجرائے نبوت اور تکفیر مسلمانان کا مسئلہ نکال کر اسلام کا تختہ پلٹ دیا،

اور مطاع الکمل خلیفہ بنا کر احمدیت کا بیڑا غرق کر دیا۔

ہاں! جماعت کو سیاست کے خوب سبق پڑھائے گئے۔

کبھی سرکار انگریزی کا ہاتھ بٹایا گیا، کبھی اسے دھمکایا گیا، قادیان کو

ایک دارالسلطنت کے رنگ میں دیکھنے کے خواب آنے لگے، مگر

خدمت دین کیا ہوئی؟ کچھ بھی نہیں! اور ہوتی کس طرح، جب شب

وروز یہ کوشش ہو کہ دنیا ہماری خادم بنے اور ہم مخدوم اور مطاع الکمل

بنیں، پھر خدمت دین کی توفیق کا چھن جانا لازمی امر تھا۔“

یہ ہے قادیانی تبلیغ! جس پر ناز کیا جاتا ہے اور ”غلبہ اسلام، غلبہ اسلام“ کے

شورو غوغا سے آسمان سر پر اٹھایا جاتا ہے۔ اس کے مقابلہ میں بلا مبالغہ مسلمانوں کا ایک

ایک ادارہ اسلام کی تبلیغ و اشاعت اتنی کر رہا ہے کہ ساری قادیانیت مل کر بھی اپنے نئے

دین کی اشاعت اتنی نہیں کر سکتی۔ مسلمانوں کی ایک ”تبلیغی جماعت“ کے کام کو اگر سامنے

رکھا جائے تو قادیانیوں کی ”تبلیغی سرگرمیاں“ اس کے مقابلہ میں کیا حیثیت رکھتی ہیں؟

مسلمانوں کے یہاں قرآن کریم، حدیث نبوی، علم فقہ اور دین کے دیگر موضوعات پر جو

تدریسی، تصنیفی اور تحقیقی کام ہو رہا ہے، کیا قادیانی تحریک اس کا ہزارواں حصہ بھی پیش

کر سکتی ہے؟

دراصل قادیانیوں نے ”پتنگ بازی“ اور کاغذی گھوڑے دوڑانے کو غلبہ اسلام

کی مہم سمجھ رکھا ہے، ایک زمانے میں مرزا محمود احمد صاحب نے ”تحفۃ الامیر“ نامی کتابچہ لکھا

تھا، اسے بڑے بڑے امراء و وزراء کے پاس پہنچا کر سمجھ لیا گیا کہ بس ہم نے غلبہ اسلام کی

مہم سر کر لی ہے۔ مرزا غلام احمد صاحب نے ملکہ برطانیہ کو گھٹیا قسم کے خوشامدانہ خطوط لکھے اور

امید باندھ لی کہ بس ملکہ وکٹوریہ مسلمان ہوئی کہ اب ہوئی، اس کی پیش گوئیاں بھی جڑی گئیں۔ چھ چھ زبانوں میں اس کے اسلام قبول کرنے کی دعائیں بھی کی گئیں مگر اس بھگوان نے مرزا آنجنہانی کے خطوط کا جواب دینا بھی اپنی توہین سمجھا۔ قادیانیوں کی ۱۹۷۴ء کی تبلیغی رپورٹ میں ایک فوٹو دیا گیا ہے جس میں ایک قادیانی دوشیزہ امریکی صدر کو قرآن کریم کا قادیانی ایڈیشن پیش کر رہی ہے، اور اس کے نیچے یہ تحریر ہے:

”امریکہ کی ایک احمدی خاتون مبارکہ صاحبہ، صدر

امریکہ جیرالڈ فورڈ کو ترجمہ قرآن کریم انگریزی پیش کر رہی ہے۔“

غالباً قادیانی صاحبان سمجھتے ہوں گے کہ صدر امریکہ اس ”احمدی خاتون“ کے رُخ زیبا کی زیارت کرتے ہی اپنے قادیانی ہونے کا اعلان کر دیں گے۔ قادیانیوں نے تبلیغ کے لئے جو طریقے ایجاد کر رکھے ہیں انہیں زبانِ قلم پر لانا باعثِ شرم ہے۔ قادیانیوں کے نزدیک شاید صنفِ نازک کی حرمت کو پامال کرنا، اور انہیں غیر محرموں کے پاس خلوت میں بھیجنا اور پھر ان کے فوٹو شائع کرنا بھی غلبہٴ اسلام کی مہم کا ایک حصہ ہے مسلمان بحمد اللہ اسلام کی اشاعت و تبلیغ کے لئے پوری طرح مستعد ہیں، اور جگہ جگہ دعوت و تبلیغ اور تحقیق و تصنیف کے مراکز بھی قائم ہیں۔ مگر وہ جو کچھ کرتے ہیں اپنے دین کی خدمت کے لئے کرتے ہیں، کسی پر احسان نہیں دھرتے، نہ اس کا نمائشی پروپیگنڈا ضروری سمجھتے ہیں بلکہ خدا کی رضا جوئی کے لئے اس فریضہ کو انجام دیتے ہیں۔ انہیں قادیانی اُمت کی طرح نہ تو غیر فطری طریقے ایجاد کرنا آتے ہیں، نہ انہیں غلبہٴ اسلام کے لئے کاغذی گھوڑے دوڑانے کی حاجت ہے اور نہ ان کا کوئی گروہ اس بات کا مدعی ہے کہ دنیا میں تبلیغ اسلام کا ٹھیکہ بس اسی کے پاس ہے، یہ سب کچھ قادیانی اُمت ہی کو زیب دیتا ہے۔

ز:۔۔۔ اب میں مرزا طاہر احمد صاحب کے سوال کے آخری حصہ کو لیتا ہوں۔

مسلمانوں کی حکومتیں پہلے بھی رہی ہیں، بحمد اللہ اب بھی موجود ہیں، اور ان شاء اللہ آئندہ بھی رہیں گی، مگر اسلامی حکومت کے قیام کی کوشش کو یہود سے مشابہت قرار دینا مرزا صاحب کی روایتی خوش فہمی ہے، اس لئے کہ راقم الحروف نے جو قادیانی حکومت طلبی پر

گرفت کی تھی اور اسے یہود کی مشابہت ٹھہرایا تھا، اس کا منشا نفس حکومت نہیں تھا (میرے رسالہ کو ایک دفعہ پھر پڑھ لیجئے) بلکہ اسلام کے قصر عالی کی تخریب کر کے اس کے ملبے پر قادیانی محل تعمیر کرنے پر مجھے اعتراض تھا۔ یعنی جس طرح یہود، اسلامی سلطنتوں کو ختم کر کے ان کی جگہ پوری دنیا کو یہودی ریاست میں تبدیل کرنا چاہتے ہیں، اسی طرح قادیانی بھی تمام عالم اسلام کی حکومتوں کو ختم کر کے ان کی جگہ ”قادیانی حکومت“ قائم کرنے کے خواہاں ہیں، گویا دونوں کے درمیان قدر مشترک اسلام دشمنی اور مسلمانوں سے عداوت ہے۔ قادیانی تمام مسلمانوں کو چونکہ یہودیوں سے بدتر سمجھتے ہیں، اس لئے وہ بڑی شدت سے بے چین ہیں کہ کس طرح ساری دنیا سے اسلامی حکومتوں کو ملیا میٹ کر دیا جائے اور کس طرح ان کی جگہ قادیانی ریاست قائم کر دی جائے، جہاں قادیانیوں کے ”امیر المؤمنین“ کا سکھ خلافت جاری ہو اور ساری دنیا کے مسلمان ان کے سامنے چوہڑے چمار بن کر رہ جائیں؟ یہ سب کچھ محض الزام نہیں بلکہ یہ ایک امر واقعہ ہے جس کے مستند حوالے میں اوپر پیش کر چکا ہوں۔ اب دیکھئے کہ مرزا طاہر احمد صاحب میری اس واضح عبارت کے منشا کو تو خود سمجھنے سے قاصر رہے ہیں مگر اپنی خوش فہمی کی بنا پر یہ سوال مجھ سے کر رہے ہیں کہ کیا مسلمانوں کا اسلامی حکومت کے قیام کی کوشش کرنا یہود سے مشابہت نہیں؟ اور اس عقل و فہم کے باوصف آنجناب قادیانیوں کے ”حضرت صاحبزادہ صاحب“ ہیں:

وزیرے چنیں شہر یارے چنیں

صاحبزادہ صاحب! سوال کرنے سے پہلے سوچ لیا کیجئے کہ آپ کا مخاطب کیا کہہ رہا ہے، اور آپ اس کا کیا مطلب سمجھ کر سوال فرما رہے ہیں؟ ورنہ وہی لطیفہ ہوگا کہ امام ابو یوسفؒ نے ایک شاگرد سے فرمایا کہ تم ہمیشہ خاموش رہتے ہو، کچھ پوچھتے پاچھتے نہیں، جب کہ دوسرے طلبہ بڑے دقیق سوال کرتے ہیں۔ شاگرد بولا: حضرت! اب سے پوچھا کروں گا۔ ایک دن امامؒ نے مسئلہ بیان فرمایا کہ سورج غروب ہونے کے بعد روزہ فوراً کھول لینا چاہئے، تاخیر مکروہ ہے۔ شاگرد نے مہر سکوت توڑی اور عرض کیا: حضرت! اگر آدھی رات تک سورج غروب ہی نہ ہو تو...؟ فرمایا: بیٹے! بس تمہارے لئے خاموشی ہی بہتر ہے۔



## قادیانی اور اسرائیل

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَسَلَامٌ عَلٰی عِبَادِهِ الَّذِیْنَ اصْطَفٰی!

سرکاری خبر رساں ایجنسی اے پی پی نے مصر سے شائع ہونے والے اخبار ”عقیدتی“ کے حوالے سے خبر دی ہے کہ اسرائیلی حکومت نے قادیانیوں کے ہیڈ کوارٹر اور ایک ٹی وی چینل کے لئے انہیں عمارات فراہم کر دی ہیں، نیز انٹرنیٹ پر ”یاہودیہ“ کے نام سے صفحہ کھولا گیا ہے، جس میں اسلام کو بدنام کرنے اور مسلمانوں کی کردار کشی کرنے کے لئے اسلام کے حوالے سے متعدد غلط رپورٹیں، قابل اعتراض تصاویر اور لائق شرم نعمات علامات شامل کئے گئے ہیں۔ اسلام کے متعلق فائل کو ”مسلم“ یا ”احمدیہ“ کا نام دیا گیا ہے۔ (روزنامہ ”جنگ“ کراچی اتوار ۱۲ اکتوبر ۱۹۹۷ء)

”الکفر ملّة واحدة“ کے مطابق قادیانی اور اسرائیلی گٹھ جوڑ قطعاً تعجب خیز نہیں ہے، لیکن اس سے قادیانی عزائم اور یہودی عزائم کے درمیان ہم آہنگی واضح ہو جاتی ہے، اور قرآن کریم کے اس اعلان کی صداقت واضح ہو جاتی ہے:

”لَتَجِدَنَّ أَشَدَّ النَّاسِ عَدُوًّا لِلَّذِينَ آمَنُوا الْيَهُودُ  
وَالَّذِينَ أَشْرَكُوا، وَلَتَجِدَنَّ أَقْرَبَهُمْ مَّوَدَّةً لِلَّذِينَ آمَنُوا  
الَّذِينَ قَالُوا إِنَّا نَصْرِي ذَلِكَ بَأَنَّهُمْ قَبْسِيْسِيْنَ وَرُهْبَانَا  
وَأَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُونَ“

ترجمہ: ”تمام آدمیوں سے زیادہ مسلمانوں سے  
عداوت رکھنے والے، آپ ان یہود اور مشرکوں کو پاویں گے، اور ان



میں مسلمانوں کے ساتھ دوستی رکھنے کے قریب تر ان لوگوں کو پائے گا  
 جو اپنے کو نصاریٰ کہتے ہیں، یہ اس سبب سے ہے کہ ان میں بہت  
 سے علم دوست عالم ہیں، اور بہت سے تارک دنیا درویش ہیں  
 اس سبب سے کہ یہ لوگ متکبر نہیں۔“ (ترجمہ: حضرت حکیم الامت تھانوی)  
 جب دجال اُغور کا خروج ہوگا تو اصفہان کے ستر ہزار یہودی اس کی فوج میں  
 شامل ہوں گے، مرزا طاہر احمد نے گویا دجال اُغور کی لائن صاف کر دی ہے۔  
 ہمارے بزرگ حضرت مولانا محمد شریف جالندھری رحمہ اللہ تعالیٰ جو امیر شریعت  
 حضرت مولانا سید عطاء اللہ شاہ بخاری رحمہ اللہ کے دور سے لے کر شیخ الاسلام حضرت اقدس  
 مولانا محمد یوسف بنوری رحمہ اللہ تعالیٰ تک مجلس تحفظ ختم نبوت کے جنرل سیکریٹری رہے، وہ  
 فرمایا کرتے تھے کہ اسلام کا مرکز تو مکہ اور مدینہ ہے، اور وہاں قادیانیوں کو جانے کی اجازت  
 نہیں، تو ان کے ذریعے غلبہ اسلام کیسے حاصل ہوگا؟ اور یہ غالب آنے کے خواب کیونکر  
 دیکھ رہے ہیں...؟

(ماہنامہ ”بینات“ کراچی رجب ۱۴۱۸ھ)